मङ्गलकोष

अर्थात्

संस्कृत भाषा आदि शब्दों का तात्पर्यप्रकाशक

जिसको

श्रीमन्[illegible] [illegible] साहब

[illegible] के समय में

मुंशी मंगलीलाल साहब [illegible] पाठशाला [illegible]

भोलापुर ने अतिपरिश्रम से रचना किया

जो कि विद्यार्थियों व मुदर्रिसों के

उपकारार्थ के लिये

(पांचवीं बार)

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

सन् १८[illegible] ई०

मङ्गलकोष ॥

अर्थात्

संस्कृत भाषा आदि शब्दों का तात्पर्यप्रकाशक

जिसको

श्रीमद्विद्वज्जनमण्डलीमण्डन कालिन् ब्राउनिंग साहब
एम० ए० पूर्व डैरेक्टर वीरेशके समय में

मुंशी मङ्गलीलाल साहब मुख्य पाठक पैंतेपुर प्रदेश
सीतापुर ने अतिपरिश्रम से रचना किया

श्रीयुत विद्याध्यक्षसाहब, एडिज किमदार जान० सी० चर्चर्ड साहब बहादुर
पाठशालाध्यक्ष वीरेश ने पारजानपदाख्यपाठशालान्तर्गत विद्यार्थियों के
उपकारार्थ अङ्गीकार किया

पांचवीं बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापागया
सन् १९०२ ई० ॥

मङ्गलकोष की भूमिका ॥

बन्दि प्रथम परमातमा कारण करना सोय । ग्रन्थकारके अर्थमाँहि करे अनुग्रह सोय ॥ १ ॥
सिधिदाता गुणगण विमल सुमति बढ़ावनहार । करता हरता पालका तासुचरण आधार ॥ २ ॥
गुरुज्ञाता वाणी विशद सुमति समृद्धि सदाहिं । करिप्रणाम तनमनवचन करौं कोषचितचाहिं ॥ ३ ॥
ईशासन विधु मुनि नयन धरा फरवरीमास । संवतविक्रमपञ्चपञ्चनभमहिनपसविलास ॥ ४ ॥
आनँद महल सदनमन पैंतेपुर चटशाल । कोषरच्योलखिग्रन्थबहुशमनशब्दजंजाल ॥ ५ ॥

जानना चाहिये कि यह आधीन मतिमन्द मङ्गलीलाल का-यस्थ श्रीवास्तव सरहीग्राम ज़िलअ शाहजहाँपुर का निवासी १५ मई सन् १८५४ ई० संरिश्तहतालीम में कि २३ वर्षके अनुमान हुये नौकर है और अब मुख्य पाठक अर्थात् अफ़्सर मुदर्रिस मदर्सह पैंतेपुर प्रदेश सीतापुर का है कुछकालसे हिन्दीभाषा के कोष के खोज में यत्न करताथा और बहुधा कोष फ़ारसीभाषा आदि मिलित दृष्टिआये जिनसे कुछ प्रयोजन हिन्दीभाषा के विद्यार्थियों का नहीं निकलसक्ता कोई ग्रन्थ हिन्दीभाषा का ऐसा दृष्टिगोचर न हुआ जिसकी सहायता से हिन्दी भाषानुरागी विद्यार्थी रामायण आदि ग्रन्थों में संस्कृत भाषादि शब्दों का अर्थ शिक्षककी कृपा विना विचार करलेते, यद्यपि बहुतेरे ग्रन्थ नाममाला आदि भाषापद्य में पायेगये तथापि वे सब निरनुप्रास अर्थात् बेरदीफ़ हैं उनमें भी शब्दार्थ शीघ्रता से नहीं मिलता है जबतक समस्त पुस्तक मुखाग्र न हो, इसलिये आधीन ने निम्न लिखित पुस्तकों और बहुत अन्य भाषाग्रन्थों के शब्द जो देखे और स्मृत थे इकट्ठा करना आरम्भकिया कि जिसमें सामान्य भाषा विद्यार्थियों को लाभ हो और जब बहुत से शब्द सार्थ इकट्ठा

होगये तब श्रीमन्निखिलसुखसंभाजन विराजमान विमल धार्मिकानेकसुरसमाज समाम सामन्तोपहारीकृत कनकमय गजाश्व शब्दायित द्वारदेश प्रोद्दण्ड प्रचण्डाखण्ड विपक्षबल प्रोद्भटभटसमूहसंकर्त्तन निर्द्दयातिशय तीक्ष्णधार सहायीकृत खड्ग दिग्विजयी विनोदानन्दित महाभूताधिप शिव श्रीयुत कालिन् ब्रौनिंग साहब एम.ए. अवधदेशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेशकी आज्ञानुकूल वर्णमाला के अक्षरानुहारि निज शिष्य सीताराम और हरदेवबख्श की सहायता पाकर सानुप्रास करके मंगलकोप नाम रख-उक्त साहब वीरेश साहसी की प्रतिष्ठित प्रति।। में निवेदन किया, तब साहब सुजान गुणखानने दृष्टिगोचरकर आज्ञादी कि यह पुस्तक और अधिक कीजावे और सहायता के निमित्त हिन्दीकोप कृपा किया और एक ग्रन्थ तसलीसुल्लुगात द्वितीयभाग जिसमें भाषा शब्दोंकी फ़ारसीभाषा लिखी है हस्तामलक हुआ फिर सन् १८७२ ईसवी में यह कोप और अधिक कियागया परन्तु इसी अवसर में उक्त पाठशालाध्यक्ष वीरेश की नागपुर प्रदेश यात्रा से ग्रन्थकार के मनोरथ हृदय के हृदयमेंही रहगये थे कि दैवयोग से हमलोगों के आनन्ददायी स्वस्ति श्रीमदुद्दाम गुणगणग्राम विस्फुरत्कमल मुख भरत विशदीकृतानेक संगीत प्रकारास्मदीय विद्याप्रचाराग्रणीय गुणिजनजेगीयमान यशोदानन्दकन्दकर्म्म पराक्रम श्रवण रसास्वादानन्दार्थि मनोभिलषित विविध पदार्थ दानसंसक्त मानस श्रीयुत जान. सी. न्यरफ़ील्ड साहब एम. ए. पूर्व्वोक्त, नागपुरगामी के स्थानपर अवधदेशीय पाठशालाओं के डैरेक्टर पबलिक इन्स्ट्रक्शन् वीरेश नियत होय ब्रह्मलोक से सुशोभित हुये और ग्रन्थको कृपाकटाक्ष से अवलोकन करतेही आधीन के

परिश्रम सफल करनेके हेतु सकलकलाध्यक्ष मुन्शी नवलकिशोर वर्म्म के मुद्रालय में सीसाक्षरों से मुद्रित होने के लिये आज्ञादी अब यह ग्रन्थ अतिसावधानता से छपकर श्रीमहाशय की अनुमति से तय्यार हुआ इस कारण सम्पूर्ण विद्वानों की उत्तम सेवा में निवेदन है कि जिस शब्दकी लिपि वा अर्थ आदि में रंचक विभेद वा अशुद्धता पावें उसको कृपादृष्टि से शुद्ध करलेवें मेरी मूर्खतापर ध्यान न देवें क्योंकि इस अज्ञानमूर्त्तिने पूर्व्वोक्त साहब वीरेश पराक्रमी की अभिज्ञता देख अपनी मूढ़ता विदित की॥

यथा सोरठा॥

साहब पाय प्रवीन सब जनावत विज्ञता। पन्नी कर्माधीन मन पावन गसौग मह॥ १॥
जाकर गुणगण चक्र लखि भागत भयमूढ़ता। यथा लेखि शशिबिम्ब तम नहिं आवत निरहीं॥ २॥

दोहा॥

अतिप्रवीण साहब चतुर नितप्रति करत समोद। श्रीउनिवर विज्ञानमय सुयश छयो चहुँकोद॥ ३॥

सवैया छन्द॥

कीरति सोहत देश विदेश प्रसिद्ध महागुण ज्ञान बड़ाई।
साहब कालिन मौनिंगधौ रवि देखिगई छवि रोनि पराई॥
मूढ़स्वगा भि अबूझ निशाकर मन्द रहे मन ठाम छिपाई।
ज्ञान गुणादि सरोज प्रफुल्लित चक्र सरोवर देत दिखाई॥ ४॥

दोहा॥

विद्यमान कीरति विमल करि पण्डित मनुहारि। धन्यवाद भाषत सबे आदरदानि विचारि॥ ५॥
सुनि अभिज्ञता स्वामिनी चितउछाह अभिमान। रच्योकोषमङ्गलसुरुचि निजभललाहि समान॥ ६॥
श्रीकालिन्मौनिंग जू गमन गजपुरहिं कीन। कोष छपनकी आस तब मनसा में तजिदीन॥ ७॥
ग्रन्थ रचत जो श्रम कियो जायहु भा बेकाम। दैवयोग मे तुरतही सजी तासु पुनि साज॥ ८॥
करुणालय ताही समय विद्याचय गुणराशि। नैसफान्डसाहब यहां आये सुयशप्रकाशि॥ ९॥
भे डैरेक्टर अवर थे विद्याकेरि प्रचारि। पावतीचजनतुउन्निसा सबकहँ लीन उबारि॥ १०॥
सुभगसाहब धनदायकहि रोंके मैं निज कोश। जायदिखायहनिजप्रभुहि तासुगरणहरिपेश॥ ११॥

मङ्गलकोष।

ताछु, जगतीं साधहीं भ्रता उन्नत दीन। पण्डित सा अब यह भया आमें निर्मित कीन ॥ १२ ॥
निजस्वामी सों विनय यह करत अहो मनलाइ। करइ प्रजा यहि काम को देशाटन चलिजाइ ॥ १३ ॥
और परिश्रम में बहुत करत ताहि निमाण। सहहेंयाग्योतिषभूविक यहहोस्मागमप्रमाण ॥ १४ ॥
गुणी यातेहि श्रम अधिक नतुर पावहिं भूल। देवप्रसाद सुजन का करिहें दृग्य न सल ॥ १५ ॥

ग्रन्थनामानि।

(१) श्रीरामायण भाषा तुलसीदासकृत ॥
(२) रामचन्द्रिका केशवदासकृत ॥
( ) सजविलास सूबवर्णीदासकृत ॥
(४) नाममाला नन्ददासकृत ॥
(५) अनेकार्थ नन्ददासकृत ॥
(६) रसराज मतिरामकृत ॥
(७) सतसतिका विहारीलालकृत ॥
(८) वैद्यविनोद मदनसिंहकृत ॥
(९) अष्ट याम देवकृत ॥
(१०) हिन्दी पारसीशब्दमकृत ।
(११) अन्य भाषा बहुग्रन्थ ॥

चिह्न॥

नाम पुलिंग=ना॰ पु॰। नाम स्त्रीलिंग=ना॰ स्त्री॰। गुणवाचक=गु॰। सकर्मक क्रिया=स॰ क्रि॰। अकर्मक क्रिया=अ॰ क्रि॰। अव्यय=अव्य॰। सर्वनाम=सर्व॰॥

प्रकट होवे कि बहुत से शब्द अप्रचलित इस ग्रन्थ में लिखगये उनके उदाहरण अनेकार्थादि संस्कृत और भाषा ग्रन्थों में से दिये हैं और जहां २ उचित होवे वहां २ कविताई और उदाहरण देदेवें॥

इस पुस्तक से विद्यानुरागियों का बहुत लाभ हुआ और उनकी ग्राहकता से उत्साहित होकर अबके पँचवारा छपता है आशा है इसको गुणग्राहक अङ्गीकार करें॥

अ० अव्य० देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर जिस शब्द के प्रथम में इसका सम्बन्ध होता है उसका अर्थ उलटा होजाता है यथा अकारण अर्थात् कारणरहित अर स्वरादि शब्द के पहिले जब आवे तब अन् होजाता है यथा अनन्त अर्थात् अन्त ।

अंकवार० ना० स्त्री० गोदी, कौला ।

अंगरखा० ना० पु० पहिरने का वस्त्रविशेष ।

अंगिया० ना० स्त्री० चोली, वस्त्रविशेष ।

अंगीठी० ना० स्त्री० पात्र, जिसमें आग रखते हैं ।

अंगूठी० ना० स्त्री० जो आभूषण अंगुली में पहिनते हैं ।

अंगोछा० ना० पु० देह पोछने का वस्त्र, रूमाल ।

अंत० ना० पु० अन्त, समाप्ति, पूरा ।

अंतर० अ० पु० अन्तर, फरक ।

अंतर्गति० ना० स्त्री० भीतरी चाल ।

अंतरिक्ष० } ना० पु० अन्न ।
अंतरीक्ष० } ऊपर की जगह ।

अंतर्यामी० गु० अन्तर्यामी, जो दिलमें रहे यह शब्द ईश्वरके लिये है ।

अन्तर्धान० गु० अन्तर्धान, छिपजाना, गुप्तहोना ।

अंत पुर० ना० पु० भीतर का वस्त्र ।

अंधाकुँवा० } ना० पु० कुआ, जो कूड़ाआदि
अंधकूप० } से भरगयाहो ।

अन्धेर० ना० पु० अन्याय, उपद्रव ।

अन्धकार० गु० अन्धेरा ।

अम्ब० ना० पु० आम ।

अम्बर० ना० पु० आकाश, कपड़ा ।

अंबारी० ना० स्त्री० हौदा जो हाथीपर रखते हैं ।

अंश० ना० पु० भाग, हिस्सा दर्जा जो ६६ $\frac{1}{2}$ मील का होता है ।

अंशी० गु० भागी अर्थात् हिस्सेदार ।

अंशु० ना० पु० किरण ।

अंशुमती० ना० स्त्री० शालपर्णी ।

अंशुमान्० ना० पु० सूर्य, सूर्यवंशी राजा वि० ।

अंशुमाली० ना० पु० सूर्य, चन्द्रमा ।

अंस० ना० पु० कंधा ।

अऊत० ना० पु० निर्वंशी, बिन ब्याहा ।

अनृण० गु० उद्धार, बेबाक ।

अकच्छ० गु० नंगा, मेहरा, लंकरहित ।

अकधड़क० गु० बेधड़के, बेधड़क ।

अकथ० }
अकथनीय० } गु० जो कहनेके योग्य न हो
अकथ्य० } जो वर्णनरहित होवे ।

अकनि० अ० क्रि० सुनिके, रामायणे यथ (तुरग नचावहिं कुँवर वर अकनि मृदंग निशान)।

अकम्पन० न० पु० राक्षसविशेष, कम्परहित ।

अकर्कश० गु० कोमल, नरम ।

अकर्म० ना० पु० अपराध, कुकर्म ।

अकर्मक० गु० कर्मरहित धातु वा० क्रिया अर्थात् जो कर्त्ता की शक्ति में होवे ।

अकर्मण्य० गु० निकम्मा, बेकाम ।

अकलंक० } गु० निर्दोष, बेदाग ।
अकलंकित० }

अकल्याण० गु० कल्याणरहित, अमंगल ।

अकवार० ना० स्त्री० अकवार ।

अकस० ना० स्त्री० वैर, अदावत ।

अकस्मात्० अव्य० अचानक, निमित्तहीन ।

अकाज० ना० पु० कामका विनाश, खराबी ।

अकाम० ना० पु० व्यर्थ, निष्फल, कामहीन ।

अकारण० ना० पु० निमित्तहीन, बेमतलब, बेसबब ।

अकार्य० गु० व्यर्थ, निष्फल ।

अकारान्त० गु० जिस शब्दके अन्तमें अकार होवे ।

अकाल० ना० पु० दुर्भिक्ष, कुसमय, कहत ।

अकालफल० ना० पु० कुसमय के फल, बेमौसिम की वस्तु, दुर्भिक्ष की वस्तु या फल ।

अकालमृत्यु० ना० पु० कुसमय में मरना, थोड़े में मरना, बेमौत मरना ।

अकाश० ना० पु० आकाश, प्रकाशहीन।
अकिञ्चन० गु० कंगाल, कुछ पास नहीं, केवल भगवान् भरोसे।
अक्रिय० गु० कुछ नहीं करता, करनेके योग्य न होवे।
अकुण्ठ० गु० तीक्ष्ण, तेज, विनाशरहित।
अकुलाना० अ० क्रि० उचना, घबड़ाना।
अकुलाही० गु० ऊबै, घबरावै।
अकुल० गु० कुछ जाति नहीं, नीचघराना, ना० पु० विशेष ईश्वर।
अकुलाना० अ० क्रि० व्याकुल होना, घबड़ाना।
अकुलीन० } गु० पामर, कुलहीन, नीच।
अकुलीना० }
अकेल० } गु० दुखी, एकही।
अकेलो० }
अक्रूर० ना० पु० श्रीकृष्णके दर्शी के चच्चा, गु० जिसका अन्त करण कोमल हो।
अखण्ड० गु० समस्त, सम्पूर्ण, खण्डहीन।
अखर्व० गु० समस्त, बहुत।
अखिल० गु० अखिल, ना० पु० देवता, सुर।
अखाड़ा० } ना० पु० जहां मल्लयुद्ध होता है, अगाई।
अखारा० }
अखिल० गु० समस्त, सम्पूर्ण, बिल्कुल।
अखेट० ना० स्त्री० मृगया, शिकार।
अखयवट } ना० पु० अक्षयवृक्ष।
अखयवृक्ष }
अख्याति० ना० स्त्री० अपयश, अयश, बदनामी।
अग० ना० पु० पर्वत, अगम्य, जहां जा न सके।
अगम० } गु० जहां जाय न सके, जो बूझने के योग्य नहीं।
अगम्य० }
अगर० ना० पु० सुगन्धिप्रसिद्ध।
अगस्त० ना० पु० वृक्षविशेष।
अगस्ति० } ना० पु० मुनिविशेष जिन्होंने समुद्र को सुखा दिया था।
अगस्त्य० }
अगणित० गु० बहुत, जो गिना न जावे, बेहिसाब।
अगवानी० ना० स्त्री० आगे जाकर लेना, पेशवाई।
अगहन० ना० पु० नवयें महीना का नाम।
अगाऊ० अव्य० पहिले से, आगे।
अगाध० गु० अथाह, अत्यन्त गम्भीर।
अगार० ना० पु० घर, आगे।
अगास० ना० पु० अपराध, दोष, नाममालाया, अघ अगास हेलन अहित औगुण जो बहु पीव।
अगुवा० ना० पु० मार्ग दिखानेवाला, सदेशी, आगे चलनेहारा, प्रधान, चौधरी।
अगुण० गु० अवगुण, गुणहीन, ना० पु० ईश्वर।
अगुरु० ना० पु० जिसका गुरु नहीं, नीच, ह्रस्व।
अगूढ़० गु० सुगम, जो गूढ़ नहीं।
अगूढ़गन्धा० ना० स्त्री० हींग।
अगोचर० गु० अदृश्य, अलख, अव्यय।
अगोटना० } स० क्रि० चौकीदेना, रखाना।
अगारना० }
अगौनी० ना० स्त्री० अगवानी।
अग्नि० ना० पु० आगि, अगुआ।
अग्निका० ना० स्त्री० पनिहारी।
अग्निजिह्वा० ना० पु० देवता।
अग्निपाली० ना० स्त्री० चीना, धूनी।
अग्निमन्थ० ना० पु० अरणी।
अग्निमुखी० } ना० पु० भिलवा वृक्ष।
अग्निवक्त्र० }
अग्निवल्लभ० ना० पु० राल, रार।
अग्निशिखा० ना० स्त्री० केसर, जाफरान।
अग्निसंस्कार० ना० पु० दाह देना, मृतक को जलाना वा उसके हेतु क्रियाविशेष।
अग्निहोत्री० ना० पु० अग्नि पूजनेहारा, ब्राह्मण जाति विशेष।
अग्र० ना० पु० मन्त्र, आगे, प्रथमभाग।
अग्रगण्य० गु० जो पहिले होवे, वा गिना जावे।

अग्रगामी० गु० आगे चलनेहारा, पेशवा।

अग्रज० गु० जो पहिले प्रकट हुआ होवे, बड़ा।

अग्रता० } नाο स्त्री० पु० अगुआपन, नाο
अग्रत्व० } पु० पेशवाई।

अग्रशोची० नाο पु० गु० पहिले शोचनेवाला, प्रथमही समझनेहारा, दूर अन्देश।

अग्रसर० गु० वा० पु० मुखिया, प्रधान, पेशवा, आगे चलनेहारा, सरदार।

अग्रहायण० नाο पु० अगहन।

अघ० नाο पु० पाप, दोष, गुनाह, अघासुर दैत्य।

अघटित० गु० अयोग्य, जो पूरा न पड़े।

अघाई० गु० पूरी, भरी।

अघाना० अ० क्रि० अफरना, आसूदह होना गु० सन्तुष्ट, धनवान्।

अघारि० नाο पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।

अघासुर० नाο पु० दैत्यविशेष, जिसको श्री कृष्णचन्द्रने वध किया था।

अघी० गु० पापी, दोषी।

अघोर० नाο पु० भयानक, अक्रूर, शिवकृत मन्त्र, धर्मविशेष, श्रीमहादेवजी।

अघोरपन्थ० नाο पु० धर्मविशेष।

अघोरपन्थी० } नाο पु० जो अघोरपन्थ सेवन करें, मलादियुक्त,
अघोरी० } सर्वभक्षी।

अघ्न० गु० मारनेहारा, नाο पु० मारण, हनन।

अंक० नाο पु० अक्षर, गोदी, चनिया, चिह्न, सङ्ख्या, गिनती के नव अक्षर, निशानी।

अंकदुन० नाο पु० दुःख, पीड़ा, नाममाला, (बिधुरन्दे न अरु अक्दुन गहन कीजिर्ये अघनाउ)।

अङ्कना० अ० क्रि० मोल ठहरना, परीक्षित होना।

अङ्काना० स० क्रि० मोल ठहराना, सौंपना।

अङ्कित० गु० चिह्न किया गया, लिखित, परीक्षित।

अंकुर० नाο पु० बीज बोने से जो अखुआ पहिले निकलता है।

अङ्कुश० नाο पु० आकुसी जिस से महावत हाथी को मारता है।

अङ्कोल० नाο पु० आंकप्रसिद्ध।

अङ्ग० नाο पु० अवयव, शरीर, देह।

अगद० नाο पु० बालिका पुत्र, भूषण, बाजूबन्द।

अगदा० नाο स्त्री० नाम चन्द्रमा की एक कला का, वा शरीर की दाता।

अगन० नाο पु० आगन, सहन।

अगना० नाο स्त्री० पत्नी, जोरू, स्त्री, आगन।

अगवना० अ० क्रि० सहना, गँवारा करना।

अंगराग० नाο पु० उबटन, केसर चन्दनादि का शरीर विषे मर्दन।

अंगारक० नाο पु० मंगल, अंगारा, पौदा।

अंगाङ्गिभाव० नाο पु० शरीर के अवयवों का सम्बन्ध।

अगिरा० नाο पु० मुनिविशेष, बृहस्पति जी के पिता।

अगीकार० नाο पु० स्वीकार, कबूल, मञ्जूर।

अगुल० नाο पु० आंगुल।

अगुली० नाο स्त्री० हाथ का अवयव।

अंगुष्ठ० } नाο पु० अगूठा।
अगुष्ठा० }

अगूठा० नाο पु० अगुष्ठ।

अंगूठी० नाο स्त्री० अंगूठी, मुंदरी।

अंगेठी० नाο स्त्री० अंगीठी।

अचगरी० नाο स्त्री० अनुचित, अन्तरकर्म, अजनिलासे, यथा—सुनो महरि निज सुतकी करनी। करत अचगरी जात न बरनी॥

अचम्भा० }
अचम्भव० } नाο पु० आश्चर्य, तअज्जुब।
अचरज० }

अचल० गु० जा चल नहीं सका ना० पु० पर्वतादि।

अचला ० ना० स्त्री० पृथ्वी धरती।

अचानक० अव्य० अकस्मात् एकाएक ना० पु० कलकत्ता के निकट नगरविशेष।

अचानचक० अव्य० अकस्मात्, नागहान।

अचाना० स० क्रि० भोजन करके मुखधोना।

अचार० ना० पु० आम इत्यादि का जो बनता है और आचार।

अचिन्त० गु० चिन्तारहित, निधड़क।

अचूक० गु० जो न चूके ठीक।

अचेत० गु० सज्ञारहित बेहोश, मूर्च्छित।

अच्छत० ना० पु० अक्षत घावरहित।

अच्छा० गु० भला सुडौल सुन्दर।

अच्युत० गु० स्थिर, अचलविशेष ईश्वर।

अच्युताग्रज० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

अछेह० गु० बहुत, बिहारीलालसतसईकिया धरे रूप गुणको गरब फिरै अछेह उछाह।

अज० अव्य० आज, अब, ना० पु० ब्रह्म बकरा ईश्वर, शिव, यौवन और आभरण गु० जो पैदा न होवे वा उपजा किसीसे न हो।

अजगर० ना० पु० बड़ा सांप, अजदहा सांप।

अजगुत० गु० अद्भुत अनायन।

अजगन्धा० ना० स्त्री० बनरीबौधा।

अजन्म० गु० जिसका जन्म न होय।

अजय० गु० जयरहित जो जीता न जावे ना० स्त्री० वीरभूमि जिले की नदीविशेष।

अजया० ना० स्त्री० अजा।

अजर० गु० जरारहित अर्थात् जो बूढ़ा न हो ना० पु० देवता।

अजलोक० ना० पु० अथवा ज्योनी ब्रह्मलोक।

अजवीथी० ना० स्त्री० रुपरी जो कोई २ घने तारागणा की आकाशमें दीखपड़ती है।

अजहु० अव्य० अबभी अभी।

अजा० ना० स्त्री० बकरी माया।

अजात० गु० जन्मरहित, जो न उपजा।

अजातअरि० }
अजातरिपु० } ना० पु० राजा युधिष्ठिर।

अजान० गु० अज्ञान, मूर्ख, नादान।

अजामिल० }
अजामाल० } ना० पु० नाम एक मनुष्य का जिसका जो नारायण कहके मरा और मुक्ति पाई।

अजित० }
अजीत० } गु० जो जीता न जासके, ईश्वर।

अजिन० ना० पु० सिंहइत्यादि का चर्म जो ब्रह्मचारीलोग बिछाते हैं।

अजिर० ना० पु० आंगन सहन।

अजीर्ण० ना० पु० कुपच, बाई न पचन।

अजौं० अव्य० अबतक, अभी।

अज्झल० ना० पु० अच् और हल् अर्थात् स्वर और व्यञ्जन।

अञ्चल० ना० पु० आंचल अचरा वस्त्रका अन्त।

अञ्जन० ना० पु० काजल, सुरमा।

अञ्जलि० }
अञ्जली० } ना० स्त्री० दोनों हाथका सम्पुट।

अञ्जि० क्रि० अञ्जन लगाकर।

अञ्जित० गु० अञ्जा अर्थात् सुरमा लगाये।

अटक० ना० स्त्री० रोक, प्रतिबन्ध सिन्धुनदी।

अटकना० अ० क्रि० रुकना, लगना।

अटकल० ना० स्त्री० अनुमान, प्रमाण अन्दाज।

अटकलना० स० क्रि० ताड़ना बूझना जाचना।

अटका० ना० पु० श्रीजगन्नाथ जीमें प्रसाद पकाने का पात्र या प्रसाद।

अटकाना० स० क्रि० रोकना ठहराना।

अटकाव० ना० पु० रोक, प्रतिबन्ध।

अटखेल० गु० खिलाड़ चपल।

अटखेली० ना० स्त्री० खिलाड़पन, चपलाहट।

अटन० अ० क्रि० फिरना, घूमना, ना० पु० ऊपर की कोठरी ।
अटना० अ० क्रि० समाना, भरजाना, फिरना ।
अटपट० गु० उलट, पुलट० गोल बात ।
अटपटी० गु० अशौच, अनरीति ।
अटल० गु० पूरा, दृढ़, अचल, जो न टरै ।
अटवी० ना० पु० वन, जंगल ।
अटा० } ना० स्त्री० ऊपरकी कोठरी,
अटारी० } कोठा ।
अटाला० ना० पु० ढेर, सामग्री ।
अटूट० गु० जो टूट न सके ।
अटेक० गु० जो टेकरहित हो, सहाराबिना ।
अटेरन० ना० पु० फेरी, चरखी, घोड़े को चक्कर देनेका स्थान ।
अटेरना० स० क्रि० फेरी बनाना, घोड़े को चक्कर देना ।
अटेरि० ना० पु० नगरविशेष ।
अटोक० गु० टोक बिन, अछेड़ ।
अट्टहास० ना० पु० ठट्ठा मार के हँसना ।
अट्टालिका० ना० स्त्री० अटारी ।
अठतालीस० गु० चालीस और आठ ४८ ।
अठतीस० गु० तीस और आठ ३८ ।
अठवारा० ना० पु० आठवां दिन, सप्ताह ।
अठसठ० गु० साठि और आठ ६८ ।
अठहत्तर० गु० सत्तर और आठ ७८ ।
अठाईस० गु० बीस और आठ २८ ।
अठानवे० गु० नब्बे और आठ ९८ ।
अठारह० गु० दश और आठ १८ ।
अठासी० गु० अस्सी और आठ ८८ ।
अठेल० गु० जो ठेला न जावे ।
अड० ना० स्त्री० झगड़ा, विरोध, हठ ।
अडंगा० ना० पु० मंडी अर्थात् दिसावरकी वस्तु का उतार, गु० झगड़ालू, टर्रा ।
अड़ना० अ० क्रि० रुकना, हठकरना ।
अड़ूसा० ना० पु० बांसा अर्थात् औषधवि० ।

अडोल० गु० जो न डुले, अटल ।
अणि० ना० स्त्री० नोनी, अनी, नोक ।
अणिमा० ना० स्त्री० अन्तर्द्धान होने की शक्ति सिद्धिविशेष ।
अणु० ना० अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु ।
अण्ड० ना० पु० अंडा, आंडा ।
अण्डकोष० ना० पु० अण्डकटाह ।
अण्डज० ना० पु० गु० जो अण्ड से उपजे ।
अण्डा० ना० पु० अण्ड० रण्ड ।
अण्डाकार० } गु० अण्डे के डौल ।
अण्डाकृति० }
अतनु० ना० पु० कामदेव, शरीररहित ।
अतर्क० गु० जो तर्करहित हो, बेदलील ।
अतर्क्य० गु० जो लखा न जावे, बेदलील ।
अतल० ना० पु० सात पातालों में से एक ।
अतलस्पर्श० गु० अथाह, अगाध ।
अतसी० ना० स्त्री० अलसी, जिसका तेल निकालते हैं ।
अति० अव्य० जिस शब्द के प्रथम इसका मेल होताहै उसका अर्थ अधिक लिया जाता है यथा, अतिसुन्दर अर्थात् अधिकसुन्दर ।
अतिकण्टक० ना० पु० जवासा ।
अतिकाल० ना० पु० अबेर ।
अतिकाय० ना० पु० रावणका पुत्र ।
अतिकुचै० अ० क्रि० समिटै, सकुचै, भूलै, रामचन्द्रिकायां, यथा कपै वर वाणी डगै उर डीठि त्वचा तिकुचै सकुचै मतिबेली ।
अतिगुहा० ना० स्त्री० शालपर्णी औषध ।
अतिचंचुल० ना० पु० लाल अरण्ड ।
अतिजिह्वा० ना० स्त्री० कलिहारी
अतिथ० } ना० पु० यात्री, पाहुन, संन्यासी ।
अतिथि० }
अतिपराक्रम० ना० पु० बड़ा प्रताप ।
अतिपान० ना० पु० अधिक मदिराका पीना ।
अतिपार्श्व० गु० बहुत निकट ।

अतिरंडिका० ना० स्त्री० ऊंधाहोली, औषध।

अतिरसा० ना० स्त्री० रास्ना, औषध।

अतिरिक्त० गु० अतिशय, अधिक।

अतिवक्ता० गु० बकवादी, जो बहुत बकै।

अतिबला० स्त्री० बलका औषध।

अतिविकट० गु० बहुत दुर्गम, जिस हाथी में अवगुण हो।

अतिवृष्टि० ना० स्त्री० बहुत वर्षा।

अतिव्ययक गु० उड़ाऊ, बहुत खर्च कर्त्ता।

अतिव्याप्ति० गु० स्त्री० अलक्ष्य में लक्षण का गमन।

अतिशय० गु० बहुत, अधिक।

अतिशीत गु० बहुत शीत।

अतिसार० ना० पु० पेचीसा, संग्रहणी।

अतिस्थूल० गु० बहुत भारी।

अतीत० गु० होचुका, व्यतीत, रहित।

अतीस० ना० पु० औषधविशेष।

अतीसार० ना० पु० अतिसार।

अतुल०
अतुलित०
अतोल० } गु० जो तोला नहीं गया, जो तोलने के योग्य नहीं, बहुत।

अत्यंशु० ना० पु० सूरज।

अत्यन्त० गु० अतिशय, बहुत।

अत्यन्तसुन्दर० गु० बहुत सुन्दर।

अत्यल्पतर० गु० बहुतही थोड़ा।

अत्यावश्यक० गु० बहुत आवश्यक, बहुतजरूरी, जिसके बिना निर्वाह न होसके।

अत्युग्र० गु० बहुत कठिन ना० पु० हींग।

अत्युत्तम० गु० बहुत अच्छा।

अत्युत्तमा० ना० स्त्री० मुख्यअप्सरा।

अथ० अव्य० अनन्तर, आरम्भ, उपरान्त।

अथर्वण० ना० पु० नाम चतुर्थवेदका।

अथवा० अव्य० वा, या, प्रकारान्तर, किंवा।

अथाई० ना० स्त्री० बैठकका स्थान, समूह, चौपाई।

अथान० गु० अचार, खटाई, बेठिकाने।

अथाह० गु० गम्भीर, अपार, गहरा, ना० पु० खोह।

अदत्त० गु० जो नहीं दिया गया, देनेके योग्य नहीं है।

अदत्ता० गु० स्त्री० अविवाहिता।

अदर्शन० ना० पु० दर्शनाभाव गु० लुप्त, अगोचर।

अदवायन० ना० स्त्री० पांइती की रस्सी।

अदाता०
अदानी० } गु० लोभी, अनदेना।

अदिति० ना० स्त्री० कश्यप की स्त्री, देवमाता

अदिष्ट० ना० पु० विपत्ति, भाग्य, कर्म।

अदृश्य० गु० जो देखा न जावे, अगोचर।

अदेय० गु० जो देने के योग्य नहीं।

अदेय० गु० देय जो देने के योग्य न होवे।

अद्धा० ना० स्त्री० दमड़ी का आधा, कपड़ाविशेष।

अद्भुत० गु० अनोखा, अचम्भा।

अद्य० अव्य० आज।

अद्यापि० अव्य० अबतक।

अद्रक० ना० स्त्री० अदरक, कन्दविशेष।

अद्रि० ना० पु० पर्वत।

अद्वितीय० } गु० जिसके समान दूसरा नहीं,
अद्वैत० } गु० एकता-लासानी, भेदरहित

अध० अव्य० नीचे ना० स्त्री० उना औषध

अधकपाली० ना० स्त्री० आधाशीशी अर्थात् आधेशिर की पीड़ा।

अधगो० ना० स्त्री० गुदा, शंका करने की इन्द्रि

अधन०
अधनी० } गु० कंगाल, गरीब।

अधवर० अव्य, आधी दूर अर्थात् मध्य।

अधम० गु० नीच, कुत्सित, धर्मरहित।

अधमाधम० गु० अतिनीच।

अधर० ना० पु० नीचे का होंठ, ओष्ठ, अन्तर गु० मध्य।

अधरबुद्धि० गु० नासमझ नादान।
अधरामृत० ना० पु० होठोंमें की मिठास।
अधर्म० ना० पु० पाप, अनेर, अन्याय, अधर्म धर्मरहित।
अधर्मी० गु० अन्यायी, पापी।
अधि० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में इसका संयोग होताहै उसका अर्थ साहिब वा मालिक वा हाकिम का होता है यथा नराधि अर्थात् नरों का मालिक।
अधिक० गु० बहुत।
अधिकता० ना० स्त्री० } ना० पु० बहुतात।
अधिकत्व० ना० पु० }
अधिकरण० ना० पु० सातवां कारकविशेष।
अधिककोण० ना० पु० कोन जो समकोण से अधिक हो।
अधिकाई० ना० स्त्री० बढ़ती, सरसाई, बहुतात।
अधिकाना० स० क्रि० अधिक करना, बढ़ाना।
अधिकार० ना० पु० पदवी, ओहदा, योग्यता, स्वामित्व, राज्य, बपौती।
अधिकारी० गु० पदवी के योग्य स्वामी, पुजारी, पण्डा।
अधिकार्द्धि० गु० बहुत सम्पदा।
अधिकृत० ना० पु० नियुक्त, देखनेवाला। जाचनेवाला, पदाधिकार।
अधिप० ना० पु० नायक, मालिक, राजनीति प्रतिपालक, वा प्रजापालक।
अधिपति० ना० पु० अधिप।
अधिवास० ना० पु० निवास, सहनन।
अधिभू० ना० पु० नायक, स्वामी, मालिक।
अधिमास० ना० पु० लौंद, मलमास।
अधियाना० स० क्रि० आधा करना।
अधिराज० ना० पु० महाराज, राजाधिराज।
अधिरूढ़० ना० पु० सवार, असवार।
अधीन० गु० वशीभूत, आज्ञाकारी।
अधीनता० ना० स्त्री० आधीनता, पराय, दूसरे के इख्तियार में रहना।
अधीर० गु० उतावल, धीरजरहित, व्याकुल, चचल।
अधीरता० ना० स्त्री० उतावली, व्याकुलता।
अधीश० ना० पु० स्वामी, मालिक।
अधूरा० गु० अधरा, अधबना।
अधेड़० गु० आधा आयुर्दाय व्यतीत भई।
अधेला० ना० पु० पैसेका आधा।
अधेली० ना० स्त्री० रुपया वा मुहरका आधा।
अधो० ना० पु० नरक, नीचे।
अधोबन्धन० ना० पु० जेरबन्द नीचेका बन्धनविशेष।
अधोमुख० गु० शिर झुकाये वा शिर नीचे और पाव ऊपर कियेहुए।
अधोयोनि० गु० नीचयोनि।
अधोलोक० ना० पु० पाताल, नरक।
अध्ययन० ना० पु० पाठ पढ़ना, सीखना।
अध्यक्ष० ना० पु० स्वामी, प्रधान, मालिक।
अध्यातम० ना० पु० आत्मज्ञान, ईश्वरविचार।
अध्यापक० ना० पु० पाठपढ़ानेहारा, शिक्षक।
अध्यापन० ना० पु० पाठ पढ़ाना।
अध्याय० ना० पु० पाठ, पर्व, प्रकरण, टुकड़ा, बाब, हिस्सा।
अध्याहार० ना० पु० वाक्य को पूरा करने के निमित्त बाहर से शब्द लेयाना।
अध्याहृत० गु० अध्याहार किया गया शब्द।
अध्वग० } गु० बटोही, राही, मुसाफिर।
अध्वनी० }
अध्वा० ना० स्त्री० राह, मार्ग, बाट।
अन० अव्य० निषेधवाची शब्द, नहीं।
अनख० ना० पु० क्रोध।
अनखाई० गु० क्रोध भरा [illegible]।
अनखाना० स० क्रि० कोपित होना, [illegible]।
अनगढ़० गु० अनबना, अनगढ़ा, जो वस्तु कहीं गढ़ी नहीं है।
अनगढ़ा० ना० पु० अनगढ़।

अनगढ़ी० ना० स्त्री० अनगढ़।

अनगणित० गु० जो गिना नहीं वा गिना न जासके वा हिसाब में न आवे।

अनघ० गु० निष्पाप, निर्दोष, बेगुनाह।

अनंग० ना० पु० कामदेव, रामाजनक, गु० देहरहित जो तन में न होवे।

अनजाना० गु० बिना पहिचाना।

अनट० ना० स्त्री० गांठि।

अनत० अ०य० अन्यत्र, और स्थान में।

अनधन० ना० पु० सम्पत्ति वा लक्ष्मी अर्थात् अनधनामा लक्ष्मी।

अनंत० गु० जिसका अन्त नहीं वा भाद्र शुक्ल चतुर्दशी को जो सूत में १४ ग्रन्थि देकर पूजते हैं और बाहुपर बांधते हैं बहुत० ना० पु० ब्रह्मा, आकाश, विष्णु और शेष जी, लक्ष्मण जी।

अनंतकाल० गु० बहुत दिन।

अनंतर० ना० पु० अत्यन्त, समीप, पीछे, दूसरा, अन्तररहित।

अनन्ता० ना० स्त्री० धरती, जवासा।

अनन्य० गु० एक भाव, एक भरोसे।

अनपढ़ा० गु० मूर्ख, कुपढ़ा, अजानी।

अनपायन० गु० अचल, दृढ़।

अनबुझ० गु० जो समझा न जावे।

अनमन०
अनमना० } गु० घबरा, उदास, बेदिल।

अनमिल० गु० मेलरहित, नादुरुस्त।

अनमिष० गु० समय, बिना मिस, बेउज्र।

अनमेल० गु० अनमिल।

अनमैल० गु० मैलरहित, उज्ज्वल, साफ़।

अनमोल० गु० जिसका मोल नहीं अर्थात् जो बहुत अपूर्व है।

अनायास० गु० बिना परिश्रम, बेमिहनत।

अनरस० ना० पु० रसरहित, झगड़ा, फीका, मित्रों में अनबनाव।

अनरीति० ना० स्त्री० कुचालि, असन्मान, अनादर।

अनर्गल० गु० निर्बाध, स्वेच्छक।

अनर्घ० गु० अपूल्य, अमूल्य।

अनर्थ० गु० अर्थहीन, अनुचित, बेमतलब।

अनर्थक० गु० निष्प्रयोजन, निष्कारण, झूठा।

अनल० ना० पु० पावक, अग्नि, आग।

अनलपक्ष० ना० पु० पक्षी विशेष जो सर्वदा मात्र आकाश में उड़ा करता है और जब ईश्वरेच्छा से उस के गर्भ होता है तो अण्डे को आकाश से छोड़ देता है और वह अण्डा पृथ्वी पर पहुँचने के पहिलेही मार्ग में पाक फूटकर बच्चा बन जाता है और उड़ने लगता है और अपने माता पिता का स्मरण कर ऊपर लौट जाता है, (यथा विचार-मालायाम्) अनल पक्ष को चेटुवा गिरेउ धरणि थरराय। बहु अलीन यह लीन है मिल्यो तासु को धाय।

अनवकाश० ना० पु० अवकाशरहित।

अनवट० ना० पु० भूषणविशेष जो स्त्रिया पांव के अगूठे में पहनती हैं।

अनवस्थित० गु० बेठिकाने, रग रग की।

अनशन० ना पु० उपवास, लघन।

अनश्वर० गु० जिसका नाश न हो, जो न मिटे।

अनसीखा० गु० अनपढ़ा, अज्ञानी।

अनसुनीकरना० स० क्रि० आनाकानी करना।

अनसूया० ना० स्त्री० अत्रिमुनि की पत्नी।

अनहित० गु० स्नेहरहित, शत्रु, बैर, बुराई।

अनहोना० गु० असम्भव, जो होनहार नहीं।

अनाकुट० ना० पु० वृक्ष, पेड़।

अनाचार० ना० पु० कुचाल, आचाररहित।

अनाज० ना० पु० अन्न, गल्ला।

अनाजक० ना० पु० शालाअगर।

अनाड़ी० गु० भद्देमस, निर्गुणी, नासमझ।

अनाथ० गु० दुःखी, जिसका कोई रक्षक न हो, यथा विधवा, पिताहीन पुत्र।

अनादर० ना० पु० अपमान, तिरस्कार।
अनादि० गु० जिसकी आदि न हो, यथा ईश्वर।
अनामय० गु० रोगरहित, निर्दोष।
अनामिका० ना० स्त्री० तीसरी अंगुली।
अनायास० ना० पु० यत्नबिना, निरुपाय।
अनावृष्टि० ना० स्त्री० सूखा, पानी न बरसे।
अनाश्रम० गु० बिनमरा, बिना ठिकाने और चारों आश्रमरहित।
अनाहत० गु० वह शब्द जो ब्रह्माण्ड में अखण्ड होता है, ना० पु० चक्रविशेष।
अनिरुद्ध० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का पोता।
अनिर्वचनीय० } गु० जो कहने के योग्य
अनिर्वाच्य० } नहीं है।
अनिल० ना० पु० पवन, वायु, हवा।
अनिश्चित० पु० जो निश्चय नहीं कियागया।
अनिश्चितता० ना० स्त्री० जिसका निश्चय नहीं है उसकी स्थिति।
अनिष्ट० गु० अप्रिय, अरुचि।
अनी० ना० स्त्री० सेना, बरछी और बाण आदि की नोक।
अनीक० ना० पु० लड़ाई, ना० स्त्री० सेन, समूह।
अनीकिनी० ना० स्त्री० सेना, फ़ौज।
अनीति० ना० स्त्री० कुचाल, अन्याय।
अनीश० ना० पु० ईशरहित, जीव।
अनीह० गु० चेष्टारहित, तृष्णारहित।
अनु० अ० य० यह जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ, कभी पुनः, कभी सादृश्य, कभी निषेध, कभी संग, कभी पीछे, कभी समीप का होता है।
अनुकम्पा० ना० स्त्री० कृपा, दया, रहम, मेहरबानी।
अनुकरण० ना० पु० किसी के पीछे काम करना, किसीकी प्रति वा नक़ल करना।
अनुक्त० गु० जो उक्त नहीं, ना० पु० दृष्टान्त।
अनुक्रम० ना० पु० क्रमसे, परिपाटी, रीति।
अनुक्रोश० ना० स्त्री० दया, कृपा, रहम।
अनुकारी० ना० पु० नौकर, सेवक।
अनुकूल० गु० प्रसन्न, सहायक, व्याधिहीन।
अनुख० ना० पु० आलस, बुराई।
अनुखाल० ना० पु० किसी नदी का एक भाग किसी देश में प्रविष्ट हो थोड़ी दूर और भेद न करे उसका नाम अर्थात् छोटाखाल।
अनुग० गु० सेवक वा सेवकिन, पीछे चलैया।
अनुगत० ना० पु० आश्रित।
अनुग्रह० ना० पु० कृपा, दया, मेहरबानी।
अनुगामी० गु० सेवक, पीछे चलनेहारा।
अनुचर० ना० पु० साथी, सहचर, दास, सेवक।
अनुचरी० ना० स्त्री० दासी, सेवकिन।
अनुचित० गु० अयोग्य, जो वाजिब न हो।
अनुज० ना० पु० छोटाभाई।
अनुजा० ना० स्त्री० छोटीबहिन।
अनुत्तर० गु० उत्तरहीन, महाजन, श्रेष्ठ।
अनुताप० ना० पु० पश्चात्ताप, शोच।
अनुतारा० ना० पु० तारे के पीछेका तारा
अनुदिन० ना० पु० प्रतिदिन, नितप्रति।
अनुनासिक० ना० पु० जो नासिकासे निकले।
अनुपल० ना० पु० पलका साठिवां अंश।
अनुपस्थित० गु० जो उपस्थित न होवे।
अनुपान० ना० पु० औषध आदि के साथ और जो कुछ मिलाय के पीते हैं।
अनुप्रास० ना० पु० समान जाति के वर्णों से रचितपद, समूह, रदीफ़।
अनुभव० ना० पु० मानसज्ञान, अटकल, विचार, ध्यान।
अनुभूति० ना० व्याकरण के आचार्य का नाम है जिन्होंने सारस्वत बनाई और अपने चित्त के स्थिर निश्चय को भी कहते हैं, जिसका पर्याय अनुभव है।
अनुभाव० ना० पु० महिमा, बड़ाई।
अनुभूत० गु० बीता, जो मनमें जानागया है।
अनुमति० ना० स्त्री० अनुज्ञा, आज्ञा, सम्मति, सलाह।

अनुमरण० ना० पु० एक चिता में निजपति के शरीर का दहन सती होना।

अनुमान० ना० पु० अटकल युक्ति से जो निश्चय होवे।

अनुमति० गु० विचार गया।

अनुमोदन० ना० पु० प्रशंसा वा बड़ाई करना।

अनुयायी० गु० पीछे जानेवाला सेवक।

अनुरक्त० गु० मग्न रत मस्त।

अनुराग० ना० पु० स्नेह प्रीति थोड़ा लड़ा।

अनुरागी० गु० प्रियतम दास।

अनुराधा० ना० स्त्री० सत्रहवां नक्षत्र।

अनुरूप० गु० सदृश समान तुल्य।

अनुरूपक० गु० समान देखनेवाला प्रतिमा।

अनुरोध० गु० अपेक्षा उपकार रोक मनोरथ के अनुरूप होना।

अनुरोधी० गु० विरोधी।

अनुलाप० ना० पु० दु खित वार्त्ता।

अनुवृह० ना० पु० मुखपवन।

अनुवाद० ना० पु० पुन कहना, बातको पक्ष करना हठ करना।

अनुशयना० ना० स्त्री० नायिकाविशेष।

अनुशाखा० ना० स्त्री० निकली डाली प्रमाण।

अनुशासन० ना० पु० आज्ञा हुक्म।

अनुसंधान० ना० पु० खोजना पीछे लगाना।

अनुसरना० अ० क्रि० पीछे चलना वा आना।

अनुसार० ना० पु० सदृश तुल्य अनुरूप होना अथवा अनुरूप मुताबिक।

अनुस्वार० ना० पु० बिंदु जो अक्षर के मस्तक पर रहते हैं।

अनुहर० ना० पु० तुल्य अनुहार।

अनुहरण० ना० पु० उराना उछालना।

अनुहार } गु० तुल्य सदृश समान,
अनुहारि० } भाग्य।

अनुपम० }
अनुपमा० } गु० उपमारहित अर्थात् सब से
अनूप० } भला एकता बानीर।

अनूठा० गु० अपूर्व निराला, यथा अनोखा

अनूठा० गु० सब विलक्षण।

अनृत० ना० पु० झूठ मिथ्या।

अनेक० गु० बहुत एक से अधिक।

अनेकवर्णात्मक० गु० जिस शब्द में एकसे अधिक वर्ण हों।

अनैसी० ना० स्त्री० अनुचित कुदृष्टि।

अनैसे० गु० कुदृष्टि साधदृष्टि रामायणे यथा (अजहुँ अनुज तव चितव अनैसे)

अनौषधि० गु० जिसकी औषधि नहीं लगता

अन्त० ना० पु० समाप्ति शेषभाग सीमा दूसरा जगह अव्य० निदान।

अन्तक० ना० पु० काल, यमराज।

अन्तकाल० ना० पु० मरने का समय।

अन्तःकरण० ना० पु० मन बुद्धि चित्त और अहंकार।

अन्तःकोण० ना० पु० भीतर का कोना।

अन्तःपाती० गु० अन्तर्गत भीतर।

अन्तःपुर० ना० पु० घर जिसमें रानी आदि स्त्रिया रहती हैं।

अन्तःसम्पात० ना० पु० भीतर छूना।

अन्तड़ी० ना० स्त्री० आंत।

अन्तर० अव्य० बीच फर्क ना० पु० भीतर, समय भेद हृदय।

अन्तरंग० ना० पु० आत्मीय अपना।

अन्तर्हित० गु० छुपजाना गायब होना।

अन्तरा० ना० पु० गीत के पहिले पदको छोड़के जो पद हैं अथवा मध्य बाहिर।

अन्तरापत्ति० ना० पु० गर्भ।

अन्तरित० गु० छुपना गायब होना।

अन्तरिया० ना० पु० तिजारी ज्वरविशेष।

अन्तरीप० ना० स्त्री० रास धरती की नोक जो समुद्र में चलागई हो।

अन्तर्वेद० ना० पु० देश जो गंगा यमुना के मध्य में है।

अन्तस्थ० गु० बीच में रहनेवाला अक्षर।

अंतावली० ना० स्त्री० अंत।
अंतिम० गु० अन्तका।
अंतेवासी० ना० पु० पीछे रहनेवाला, दूररहने वाला शिष्य।
अन्त्य० गु० अन्तका, पिछला।
अन्त्यज० ना० पु० धोबी, चमार, नट, बरट, किरात, मेद, भिल्ल, पीछे उपजा, नीचजाति।
अंत्याक्षर० ना० पु० अन्तका अक्षर।
अंध० गु० अंधा।
अंधक० ना० पु० दैत्यविशेष जो सदाशिव से लड़ा था और मारागया।
अंधकारन्ध० ना० पु० दैत्यविशेष।
अंधकरिपु० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
अंधकार० ना० पु० अंधेरा।
अंधकारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
अंधला० गु० अंधा।
अंधसुत० ना० पु० दुर्योधनादि सौ १००।
अंधा० गु० नेत्रहीन।
अन्न० ना० पु० पक्व ओदनादि, अनाज।
अन्नकूट० } ना० पु० अन्नका ढेर लगाना। अन्नपर्वत० } हिंदुओंमें त्योहार दीवालीके दूसरे दिन होता है।
अन्नप्राशन० ना० पु० बालक को पांचवें वा छठेमास खीर चटाना, माड चाटना।
अन्ना० } ना० स्त्री० दाया, दाई, धाय।
अन्नी० }
अन्य० गु० दूसरा, भिन्न, कोई और।
अन्यच्च० गु० अन्य भी, और भी।
अन्यथा० अव्य० और प्रकार, प्रकारान्तर, अशुद्ध, झूठ।
अन्यथाचरण० ना० पु० उलटा व्यवहार।
अन्यथासिद्धि० ना० स्त्री० और प्रकार से ठहराना।
अन्यदेश० ना० पु० और देश, गैरमुल्क।
अन्यदेशीय० गु० परदेशी, विदेशी।
अन्यपुरुष० गु० जो परोक्ष में है, आननर।
अन्यरक्त० ना० पु० लालऊगा।
यथा, (अन्यरक्त वृत्तस्लातासिर कापपिप्पली) इति निघण्टे।
अन्याय० ना० पु० अनीति, उपद्रव।
अन्याय० } गु० अयोग्य, अधर्मी, जालिम।
अन्यायी० }
अन्यत्र० अन्य० और कहीं।
अन्योन्य० गु० परस्पर।
अन्वय० ना० पु० एकका एकके साथ सम्बन्ध, कुल।
अन्वहं० गु० निरंतर, सबदिन।
अन्वित० गु० संयुक्त, मिलित।
अन्वेषण० ना० पु० अनुसन्धान, खोज।
अन्वेषिणी० ना० स्त्री० खोजनेवाला, ढूंढन वाली।
अप० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ, कु० निषिद्धता, विरुद्धता, भिन्नता, आसन्नता इत्यादि होताहै सर्व० आप।
अपकर्म० ना० पु० कुकर्म, बुराकाम।
अपकार० ना० पु० अनिष्ट, बिगाड़, द्वेष, अधर्म।
अपकारी० गु० द्वेषी, कुकर्मी।
अपकृष्ट० गु० अधम, न्यून, छोटा।
अपक्व० गु० जो पका न होय।
अपघात० ना० पु० निज करसों आप को मारना।
अपचय० ना० पु० टोटा, घाटा, हानि।
अपजस० ना० पु० कलंक, अपमान, अपयश।
अपटु० गु० जो काम करने में प्रवीण नहीं, निर्बुद्धि।
अपडर० ना० पु० भयडर, निजओर से डर
अपत० गु० पापी, बेइज्जत।
अपति० ना० स्त्री० अनादर, अपमान।
अपत्य० ना० पु० सन्तान, औलाद।
अपथ० ना० पु० कुमार्ग, मार्गरहित।

अपथ्य० गु० जिसके खानेसे रोग अधिक होवे। अर्थात् जठरानल जिसे न पचा सके।

अपना० सर्व० निजका, स्वकीय।

अपनाहत० ना० स्त्री० घराना, कुटुम्ब, सम्बन्ध।

अपवस० गु० स्वाधीन, अपनेवश में।

अपभय० ना० पु० भूतडर, अपडर।

अपभाषा० ना० स्त्री० गँवारीबोली, वा यवनादिकों की बोली, फारसीआदि।

अपभ्रंश० ना० पु० अपशब्द, अशुद्धशब्द।

अपमान० ना० पु० अनादर, इज्जत घटाना।

अपमानी० गु० जो अपमान के योग्य है।

अपमृत्यु० ना० स्त्री० अनमौत, रोगहीन, मरना, अकालमृत्यु।

अपर० ना० पु० तगर आगर, गु० दूसरा, अन्य, विरुद्ध।

अपरम्पार० गु० जिसका पार नहीं है, अनन्त।

अपरा० ना० स्त्री० जूही।

अपराजय० ना० पु० पराभव, हारना, हारि।

अपराजित० गु० जो जीता न जावे ना० पु० श्रीसदाशिवजी, श्रीविष्णुनारायण।

अपराजिता० ना० स्त्री० देवीविशेष, पुष्पविशेष, जिसको विष्णुक्रान्ता वा कौआ गोड़ी कहते हैं।

अपराध० ना० पु० दोष, पाप, घात, अधर्म।

अपराधी० गु० पापी, दोषी, अधर्मी।

अपराह्ण० ना० पु० तीसरापहर।

अपरिचित० गु० जातिवाचकशब्द, जिससे परिचय न हो, जिसमे पहिचान न हो।

अपरिमित० गु० जो नापा नहीं गया, बहुत।

अपर्णा० ना० स्त्री० पार्वती।

अपलक्षण० ना० पु० अपशकुन, बुरे चिह्न।

अपलोक० ना० पु० अपयश, बदनामी।

अपवर्ग० ना० पु० मुक्ति, मोक्ष, निजात।

अपवाद० ना० पु० निन्दा, अपयश, उलहना, बुरीबात यत्नको कहना, अनियमशब्द।

अपवादी० गु० अधर्मी, जो अपवाद करे।

अपवित्र० गु० अशुद्ध, छुतहरा, नापाक।

अपवित्रता० ना० स्त्री० अशुद्धता, छूत, नापाकी।

अपशकुन० ना० पु० बुरासगुन।

अपशब्द ना पु० शब्द जो अशुद्ध है।

अपश्य० गु० जो देखा न जावे।

अपसव्य० गु० दाहिना भाग अथवा वा दाहिना हाथ वा कांधा वा जलदान में अँगोछा दाहिने कांधेपर रखना, विरुद्ध।

अपस्मार० ना० पु० रोगविशेष, जिसको मिरगी कहते हैं।

अप्सरा० ना० स्त्री० स्वर्वेश्या, परी।

अपहरण० ना० पु० हरलेना, लूटलेना, लूटना।

अपहर्त्ता० }
अपहरता० } गु० चोर, डाकू, लुटेरा।
अपहारी० }

अपह्नव० गु० पु० छिपाव, नकार।

अपक्ष० गु० पक्षरहित।

अपाक० गु० जो पका नहीं है।

अपांग० ना० पु० नेत्रका अन्त भाग, कटाक्ष।

अपादान० ना० पु० पांचवांकारक।

अपान० ना० पु० गुदा, नीचेकी वायु, पादप्राणविशेष, सर्व, अपना।

अपाप० गु० पापरहित।

अपामार्ग० ना० पु० ऊंगा।

अपार० गु० जिसका पारावार नहीं है, अनन्त।

अपावन० गु० अशुद्ध, नापाक।

अपूत० गु० निर्वंश, कुपुत्र, कपूत।

अपूर्ण० गु० जो अभी पूरा नहीं भया है।

अपूर्णभूत० गु० अभी व्यतीत नहीं भया।

अपूरब० }
अपूर्व० } गु० जो पहिले कभी नहीं देखा अनूठा।

अपि० अव्य० निश्चय, ठीक, भी।

अपिधान० ना० पु० पोशाक, वस्त्र।

अपीड़० ना० पु० शिखा, भूषण।

अपेय० गु० जो पीने के योग्य नहीं है।
अपेल० गु० अचल, जो टल न सके।
अपेक्षक० गु० अपेक्षा करनेहारा, निमवतकरने-हारा, अनुरोधक।
अपेक्षा० ना० स्त्री० अनुराग, आशा, भरोसा, रिश्तह, निस्वत।
अपेक्षित० गु० आश्रित, अपक्षा कियागया।
अपौरुष० गु० जिसके सामर्थ्य नहीं है, नाताकत।
अप्रकाश० ना० पु० अधेरा, जो प्रगट नहीं है।
अप्रतिहत० गु० जिसको रोक नहीं है।
अप्रतीत० गु० प्रतीतिरहित अर्थात् जो विश्वास के योग्य नहीं है।
अप्रत्यय० ना० पु० अविश्वास।
अप्रत्यक्ष० गु० जो देखा न जाय।
अप्रधान० गु० मुख्यनहीं है, जो सरदार नहीं है।
अप्रबन्ध० ना० पु० बेबन्दोबस्त, प्रबन्धहीन।
अप्रमाण० गु० बहुत, प्रमाणरहित, असत्य।
अप्रसन्न० गु० जो प्रसन्न नहीं है, गदला, नाखुश।
अप्रसिद्ध० गु० जिसको कोई नहीं जानता है, गुप्त।
अप्राकृत० गु० जो प्राकृत नहीं है।
अप्राप्तयौवन० ना० पु० लड़का, नाबालिग।
अप्रिय० गु० अहित, जो प्रिय नहीं है।
अफरना० अ० क्रि० अधिकभोजन से पेट फूलना, अधिक धनवान् होना।
अफराना० स० क्रि० अधिक भोजन कराना।
अफल० गु० निष्फल, व्यर्थ, बेफायदह।
अब० अव्य० इससमय, इस्नानी, ना० पु० पानी।
अबतक० } अव्य० अभीतक, इससमयतक।
अबतलक० }
अब्भरण० ना० पु० पानीभरना।
अबल० गु० निर्बल, पौरुषरहित।
अबला० ना० स्त्री० नारी, स्त्री० गु० बलहीना।
अबस० गु० निर्बल, यशरहित।
अबार० ना० स्त्री० विलम्ब, देर, कुसमय।
अबुध० गु० मूर्ख, मूढ़, अहमक, दल।
अबूझ० गु० नासमझ, नादान।
अबूझा० गु० बिना समझा, अनजाना।
अबूझित० गु० जो बूझा नहीं गया।
अबेर० ना० स्त्री० अबार।
अबै० अव्य० अभी० गु० अनिश्चित।
अब्ज० ना० पु० कमल, अर्ब, चन्द्रमा, देव-वैद्य, शख, दृढ़शिरीष।
अब्द० ना० पु० वर्ष, साल, सम्वत्।
अब्धि० ना० स्त्री० मद्दकी, सीपी, समुद्र।
अभक्त० गु० जो भक्त नहीं, भक्तिहीन, जो हिस्सह नहीं हुआ है।
अभंग० गु० जिसका नाश न हो।
अभय० गु० निर्भय, निडर।
अभया० ना० स्त्री० हर्र।
अभरण० ना० पु० गहना, आभूषण, जेवर।
अभरम० गु० पतिहीन, निडर।
अभाग० } ना० पु० दुर्गति, विपत्ति।
अभाग्य० }
अभागा० ना० पु० } गु० भाग्यहीन, निपट।
अभागी० ना० स्त्री० }
अभाय० ना० पु० अनहोना।
अभार० गु० हलका।
अभाव० ना० पु० अविद्यमान, नाश, मृत्यु, अनहोना।
अभास० ना० पु० छाया, प्रतिबिम्ब।
अभि० अव्य० सब दिशियें, यह जिस शब्दके प्रथममें संयुक्त होताहै उसका अर्थ यथा, आगे, प्रत्येक इत्यादि होताहै।
अभिगम्य० अ० क्रि० आपुजाकर।
अभिचार० ना० पु० मन्त्र जिससे वधकिया जाता है।
अभिजित्० ना० पु० मुहूर्त्त विशेष, इक्कीसवाँ नक्षत्र।

अभिधान० ना० पु० नाम, कोश।
अभिनव० गु० नया, नूतन, नवीन।
अभिनन्दन० ना० पु० सराहे, सम्मति, सलाह।
अभिप्राय० ना० पु० मतलब, सारार्थ, अर्थ, आशय, कारण।
अभिभूत० गु० पराजित, बलहीन।
अभिमत० गु० वाञ्छित, इच्छानुसार, सम्मत।
अभिमान० ना० पु० अहंकार, घमण्ड, गरूर।
अभिमानी० } अभिमान्य० } गु० अहंकारी, मगरूर।
अभिमुख० गु० सन्मुख, सामने, वर्त्तमान।
अभिरत० गु० संयुक्त, मिलित।
अभिराम० गु० सुन्दर, सुखद, रम्य।
अभिरामी० गु० रमनेवाला।
अभिलाष० } अभिलाषा० } ना० स्त्री० इच्छा, मनोरथ, तमन्ना।
अभिवन्दन० ना० पु० नमस्कार करना।
अभिवाद० ना० पु० दुर्वचन, बुराचार और बुरा बकवाद।
अभिवादन० ना० पु० चरण सहपूर्वक नमस्कार।
अभिषिक्त० गु० जिसका अभिषेक भया हो।
अभिषेक० ना० पु० जल छिरकना, शान्ति स्नान, पदकी प्राप्ति के लिये पहिली क्रिया जिसे राज्यतिलक।
अभिसार० ना० पु० नायक, रति।
अभिसारिका० ना० स्त्री० नायिका, छिनारी।
अभिसारिणी० ना० स्त्री० नायिका।
अभिज्ञ० गु० प्रवीण, बहुदर्शन, गुणग्राहक।
अभी० अव्य० इसीसमय।
अभीत० गु० निडर, अभय।
अभीप्सित० गु० वियवाञ्छित, मनभावित।
अभीशु० ना० पु० जीव, प्राण।
अभीष्ट० गु० प्रियवाञ्छित, मनभावित।
अभूत० गु० जो प्रगट नहीं भया, अभाव।
अभूतरिपु० गु० शत्रुरहित।

अभेद० } अभेव० } गु० ऐक्य, परस्पर सम्बन्ध, प्रकट।
अभ्यन्तर० ना० पु० भीतरी, भीतरका।
अभ्यास० ना० पु० साधन, चिन्तन, कर्तव्य।
अभ्र० ना० पु० आकाश, मेघ।
अभ्रक० ना० पु० अबरक, धातुविशेष।
अमंगल० गु० मङ्गलरहित, अशोभा।
अमत्त० गु० सीधा, सावधान, होशमें।
अमर० गु० जो न मरे, ना० पु० देवता, निर्विकार, अविनाशी।
अमरपुर० ना० पु० ब्रह्मदेशका नगरविशेष, इन्द्र, विष्णु, शिव, लोक, स्वर्ग।
अमरस० ना० स्त्री० आमका रस।
अमरावती० ना० स्त्री० इन्द्रपुरी।
अमरोहत० ना० पु० कचनार वृक्ष।
अमर्याद० } अमर्यादा० } ना० स्त्री० अनीति, अवज्ञा, असम्मान।
अमल० गु० निर्मल, उजला, मादकवस्तु, राज्य।
अमलतास० ना० पु० बन्दर, लाठी, औषध विशेष।
अमात्य० ना० पु० मन्त्री, दीवान।
अमान० गु० सीधेस्वभाव, मानरहित।
अमाना० अ० क्रि० समाना, भरना, खपना।
अमान्य० गु० जो मानने के योग्य नहीं है।
अमानुष० गु० मनुष्यतारहित, बिना मनुष्य।
अमावस० } अमावस्या० } अमावास्या० } ना० स्त्री० कृष्णपक्षकी समाप्ति की तिथि वदी १५।
अमर्ष० } अमार्ष० } गु० ईर्षारहित, अक्रोध।
अमिट० गु० जो मिट न जावे या मेटा न जासके।
अमित० गु० जो नापा नहीं गया, बहुत।
अमिय० ना० पु० अमृत, आबहयात।
अमियमूरि० ना० स्त्री० सञ्जीवन बूटी।
अमिल० गु० सहा, जो न मिले।

अमी० ना० पु० अमृत ।
अमुक० सर्व० कोई, वह, अमुका, फलाना ।
अमूल० गु० जिसकी जड़ नहीं है ।
अमृत० ना० पु० पीयूष, सुधा, विष, पानी, देवता, गु० जो न मरे ।
अमृतफल० ना० पु० आंवला ।
अमृतवल्लरी० ना० स्त्री० गुरच, गिलोय ।
अमृता० ना० स्त्री० हर्र, गुरच, फटकरी, नाम चन्द्रमा की एक कला का ।
अमृताङ्ग० ना० पु० खरबूजा, यथा (अमृताङ्गी दशाङ्गुली) इति निघट ।
अमृतेश० ना० पु० देवता, इन्द्र ।
अमेध्य० ना० पु० विष्ठा, मल ।
अमेय० गु० अप्रमाण, यथा श्रीभगवान् जिसका प्रमाण कोई न जानसके ।
अमोघ० गु० जो व्यर्थ नहो, सफल, अचूक, फलदाता, ना० स्त्री० नदीविशेष ।
अमोघा० ना० स्त्री० हर्र ।
अमोल० गु० मोलरहित, अपूर्ववस्तु, बेकीमत ।
अम्बत० गु० खट्टा ।
अम्बक० ना० पु० नेत्र, आंख, यथा त्र्यम्बक, अर्थात् शिव ।
अम्बर० ना० पु० बादर, आकाश, वस्त्र ।
अम्बरमणि० ना० पु० सूर्य्य ।
अम्बरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।
अम्बरीष० ना० पु० राजाविशेष ।
अम्बष्ठकी० ना० स्त्री० माई औषध ।
अम्बा० ना० स्त्री० माता, महतारी ।
अम्बारी० ना० स्त्री० हाथी परका आसन विशेष ।
अम्बिका० ना० स्त्री० माई औषध, माता, देवी, पार्वती ।
अम्बिष्ठा० ना० स्त्री० रायलता ।
अम्बु० ना० पु० जल, पानी ।
अम्बुज० ना० पु० कमल ।
अम्बुद० ना० पु० मेघ ।
अम्बुधि० ना० पु० समुद्र ।
अम्बुपति० ना० पु० वरुणदेव ।
अम्बुवल्लरी० ना० स्त्री० जलपिप्पल ।
अम्बुवह० ना० पु० मेघ ।
अम्बुवासिनी० ना० स्त्री० कदली, कुम्भी ।
अम्बुभृत्० ना० पु० मेघ ।
अम्भ्य० ना० पु० कमल ।
अम्भफल० ना० पु० नार्गिय, यथा (अम्भफल चाप) इति निघट ।
अम्भोज० / अम्भोरुह० ना० पु० कमल ।
अम्मा० ना० स्त्री० माता, मा, चची, यह शब्द अरबी का है
अम्र० ना० पु० आम्र, आम ।
अम्ल० गु० खट्टा, खटाई ।
अम्लान० गु० निर्मल ।
अम्लिका० ना० स्त्री० इमलीवृक्ष ।
अम्लवेतस० ना० पु० अमलवेत ।
अय० ना० पु० लोहा, शुभावह यथा (अयमय खण्ड ऊरामय अजहूँ नृप अबूझ) ।
अयं० अव्य० सर्व०, यह ।
अयन० ना० पु० वर्ष का आधा अर्थात् उत्तरायन वा दक्षिणायन, मार्ग, घर ।
अयथार्थ० ना० पु० अन्याय, अनीत ।
अयमामा० ना० पु० यह जन ।
अयान० / अयाना० गु० भोला, नादान, मूरख ।
अयुक्त० गु० अनुचित, बिनाठीक ।
अयुत० ना० पु० दश सहस्र १००००
अयोग्य० गु० अनुचित, असमर्थ, बेजा ।
अयोध्या० ना० स्त्री० श्रीराम की राजधानी जहां श्रीरामावतार भया था ।
अयोनि० ना० पु० ब्रह्मा ।
अरघट्ट० ना० पु० कुआं, कूप ।
अरगा० गु० अलग, भिन्न ।

अरगाना स० क्रि० अलगाना, अ० क्रि० अलग होना, ना० पु० घुरलगाना।
अरगानी० ना० स्त्री० घुर, घुरसी।
अरगे० अ० क्रि० हठ किया।
अरझना० अ० क्रि० उलझना, फसना।
अरणना० ना० पु० देशविशेष।
अरणि० ना० स्त्री० अग्निप्रचारक काष्ठविशेष।
अरण्ड० ना० पु० रेंडी का वृक्ष अरण्डवृक्ष।
अरण्य० ना पु० जंगल, वन।
अरना० ना० पु० जगली भैसा।
अरनी० ना० स्त्री० जगली भैंस।
अरबराना० अ० क्रि० घबराना हरबराना।
अरराना० अ० क्रि० गिरनेके गिरनका शब्द।
अरराय० गु० बिसारा विनासहारा।
अरलू० ना० पु० स्यानावृक्ष।
अरविन्द० ना० पु० कमल।
अराजक० गु० राजा बिना देश।
अरि० ना० पु० वैरी शत्रु, दुश्मन।
अरिल० ना० पु० छन्दविशेष।
अरिष्ट० ना० पु० अशुभ, मृत्युदायक, रोग वृक्ष।
अरिष्टक० ना० पु० रीठा।
अरिहा० ना० पु० शत्रुनाशक, शत्रुघ्न।
अरी० अव्य० स्त्रीका सम्बोधन।
अरु० अ० प० और, पु ना० पु० कुम्हड़ा।
अरुचि० ना० स्त्री० मतभेद, अनिच्छा।
अरुण० ना० पु० लालरंग, सूर्य, लालअरण्ड, सूर्य का सारथी।
अरुणचूड़० } अरुणशिखा० } ना० पु० मुर्गा।
अरुण ० ना० स्त्री० जपापुष्प गुड़हलका फूल।
अरुणाई० ना० स्त्री० लाली।
अरुणारे० गु० लाल।
अरुणोदय० ना० पु० सूर्योदय के पहिले दो महूर्त, सूर्योदय।
अरुष्क० ना० पु० भिलावा।
अरे० अव्य० नीच नर का सम्बोधन, गु० अड़ा, हठा।
अरेच० ना० पु० अरारा।
अरोग० गु० भलाचगा, रोगरहित।
अरोग्यशिबी० ना० स्त्री० रसवाली।
अर्क० ना० पु० सूर्य, मदारवृक्ष, स्फटिक।
अर्कपुष्पी० ना० स्त्री० अधाहोली।
अर्कविशाखा० ना स्त्री० बड़ी कटाई।
अर्गजा० ना० पु० सुगन्धि द्रव्यविशेष। अर्गजा० गु० जो अर्गजे से रंगा गया।
अर्घ० ना० पु० पूजा करने की एक रीति, आठ वस्तु को मिलायके ईश्वर हेतु अर्पण, सूर्य की पूजा करके जल देना मोल।
अर्घा० ना० पु० पात्रविशेष जिसमें देवता को स्नान कराते हैं वा जल देते हैं।
अर्चक० गु० पुजा।
अर्चन० } अर्चना० } स० क्रि० आराधना, पूजाकरना।
अर्चा० ना० स्त्री० पूजा।
अर्चि० ना० पु० अ च, देम यानि चमक।
अर्चित० गु० पूजित।
अर्जन० ना० पु० उपार्जन, कमाई, प्राप्ति।
अर्जना० स० क्रि० कमाना, उपार्जन करना।
अर्जुन० ना० पु० वृक्षविशेष, सफेद, सुवर्ण, सहस्रबाहु, पाण्डुका तीसरा पुत्र, ककुभवृक्ष धवल।
अर्णव० ना० पु० सागर, समुद्र।
अर्थ० ना० पु० अभिप्राय, निमित्त, तात्पर्य, धन, दौलत माल, मतलब।
अर्थशास्त्र० ना० पु० धन के उपार्जन करने का शास्त्र, नीतिशास्त्र।
अर्थसाधन० ना० पु० रीति, अर्थ का ठीक करना।
अर्थात्० अव्य० जाना अथ, यह, यानी।

अर्थानुरोध० ना० पु० नाम के अनुरूप होना, अर्थ के अनुरूप।
अर्थान्तर० ना० पु० दूसरा अर्थ।
अर्थी० गु० धनी, वादी, अर्थिका, प्रयोजनयुक्त, ना० पु० याचक, अर्थी, ना० स्त्री० रथी, तावूत, टिकटी।
अर्दावा० ना० पु० मांसपिसान।
अर्द्ध० गु० आधा।
अर्द्धचन्द्र० ना० पु० आधाचन्द्रमा।
अर्द्धचन्द्रिका० गु० बालानिसोत, आधीचांदनी।
अर्द्धजल० गु० आधापानी, मरणकाल।
अर्द्धरात्रि० ना० स्त्री० आधीराति।
अर्द्धाङ्ग० ना० पु० आधाशरीर, शीताङ्ग।
अर्द्धाङ्गी० गु० शीतांगी ना० स्त्री० पत्नी।
अर्पण० ना० पु० दान, देवता को भेटदेना।
अर्पना० स० क्रि० अर्पणकरना।
अर्ब० ना० पु० सौ करोड़ १०००००००००।
अर्बुद० ना० पु० दशकरोड़, पर्वतविशेष।
अर्भक० ना० पु० पुत्र, शिशुगर्भ।
अर्यमा० ना० पु० सूर्य।
अर्वाक्० गु० नीचे, अव्य० पहिली।
अर्हस्पर्श० ना० पु० शुद्ध करने के लिये जल छिड़कना, छूना।
अर्हन्त० ना० पु० जैनी।
अल० अ० गु० अर्थात्, समर्थ, पूरण, ना० पु० आभरण, आलस, बहुतायत।
अलक० ना० स्त्री० बालों की लट, घूधर।
अलक्त० ना० पु० कुसुम्भ, महावरयुत।
अलकावली० ना० स्त्री० एकओर के बालों की लटें।
अलख० गु० अगोचर, अनदेखा, जोन पहिचाना जावे, यथा ईश्वर।
अलग० गु० भिन्न, जुदा, लगाव नहीं।
अलगनी० ना० स्त्री० रस्सी जिसपर कपड़े धरते हैं।
अलगर्द० ना० पु० पनिहासांप, यथा-अलगर्दो जलव्याल इत्यमरः।
अलगा० गु० भिन्न, निर्बन्ध।
अलगाना० स० क्रि० जुदाकरना, अ० क्रि० जुदा होना, अलग होना।
अलंकृत० गु० अलङ्कारयुत, आभूषित।
अलङ्कार० ना० पु० भूषण, गहना और शास्त्र विशेष।
अलंग० ना० स्त्री० ओर, पार।
अलभ्य० गु० जो मिलने के योग्य न हो।
अलम्० अ० र० बहुत, ढेर।
अलम्बुषा० ना० स्त्री० रेखा जो मुख से निकलती है, शब्दसारावल्या यथा-(मुखमवि अलम्बुषा शिखानिव, कुहूलिप, के देश विमित)।
अलबाई० गु० थोड़ेदिनकी ब्यानी, रामचन्द्रिका या यथा-(ज्यौं सुनवो सुरभी अलबाई)।
अलवेला० गु० बहुतायत, अतिशयाकलेश सुरभि मान।
अलस० ना० पु० आलस्य।
अलसाना० अ० क्रि० औंघाना।
अलसी० ना० स्त्री० तीसी, अतसी।
अलसगण० ना० पु० दुराग्रह।
अलात० ना० स्त्री० बनैटी।
अलान० ना० स्त्री० हाथीबांधने की सींकर। जिसको आदू कहते हैं।
अलाप० ना० पु० आलाप, उच्चारण।
अलापना० स० क्रि० आलापना।
अलार० ना० पु० धूनी, पुरा।
अलि० ना० पु० बिच्छू, भ्रमर, वृश्चिकलग्न, स्त्री० सखी।
अलिक० ना० पु० माथा, मूड़।
अलिन० ना० पु० भ्रमर, ना० स्त्री० प्रिया।
अलिनी० ना० स्त्री० भ्रमरी, भौरी।
अली० ना० स्त्री० सखी, दूती, सखी।
अलीक० ना० पु० मूड़, मिथ्या

अलीन० गु० अयोग्य, अनुचित, बेमेल।
अलीह० गु० अयोग्य, मूढ़।
अलेख० गु० अयत, अगणित, बहुत।
अलैयाबलैया० ना० स्त्री० निछावर और दीवाली में पूला जलायके नचौना।
अलीन० } गु० लोनरहित, फीका।
अलोना० }
अलोप० गु० छुपा, बिगाड़ा, नष्ट, प्रकट।
अलोपना० स० क्रि० छुपाना, गुप्तकरना।
अलोल० गु० अचल, थिर, ना० स्त्री० तेलबूद।
अलौकिक० गु० जो लौकिक नहीं है अर्थात् परलोक का लोकातीत।
अल्प० गु० थोड़ा, किंचित्।
अल्पतर० गु० बहुतथोड़ा।
अल्पर्णी० गु० लघुबुद्धा, नामभक्त।
अल्पनिद्रा० गु० स्त्री० थोड़ासोना।
अल्पज्ञ० गु० कमसमझ, थोड़ाजाननेवार।
अलुक० ना० पु० आलूतरकारी।
अव० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी भिन्नता, कभी फैलाव वा होता है कभी नास्ति, कभी अनादर।
अवकाश० ना० पु० औसर, सावकाश।
अवकेशी० गु० बाझ।
अवगति० ना० स्त्री० ज्ञान, वा नरीदशा।
अवगाह० ना० पु० अथाह।
अवगाहन० ना० पु० स्नान, तैरना, थाह लगाना।
अवगाहि० अ० क्रि० थाहलगाके।
अवगीत० गु० निंदित, दुष्ट, ना० पु० निन्दा, दोष।
अवगुण० ना० पु० खोट, दोष।
अवघट० गु० कुघाट।
अवचट० गु० एकाएकि, एकाएक।
अवडेरि० अ० क्रि० बहकाय, धोखा देकर, रामायणे यथा (पच कहे शिव सती बियाही पुनि अवडेरि मरायनि ताही)।
अवतंस० ना० पु०पगैारा, शिरोमणि।
अवतरना० अ० क्रि० उतरना, प्रकट होना।
अवतार० ना० पु० ईश्वर का मनुष्यादि के रूपसे पृथ्वीतलपर प्रकाशित होना,जन्म।
अवतारिक० } गु० परमात्मा, ईश्वरअवतार
अवतारी० } लेनेहारा, यथा राम, कृष्ण।
अवदात० गु० उज्वल, उत्तम, सुंदर।
अवदीच्य० ना० पु० गुजराती ब्राह्मणोंकी जाति।
अवध० } ना० स्त्री० वचन, मर्याद, सीमा,
अवधि० } समय वा श्रीअयोध्याजी वा उस के आर पासका,देश प्रसिद्ध।
अवधान० गु० चौकस, सावधान, ना० पु० चौकसाई, वचन।
अवध्य० गु० जो वधकरने के योग्य नहीं है।
अवधूत० ना० पु० योगी, शिवपूजक।
अवधूतनी० ना० स्त्री० योगिन।
अवनी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन।
अवनीश० ना० पु० राजा, बादशाह।
अवन्तिका० } ना० स्त्री० उज्जैननगरी,
अवन्ती० } नदीविशेष।
अवम० ना० पु० तिथिक्षय, गु० नीच।
अवयव० ना० पु० अंग वा शरीर का भाग।
अवराधक० गु० सेवक,ध्याता।
अवराधित० गु० सेवित, ध्यान कियेगये।
अवराधना० स० क्रि० सेवाकरना।
अवरुद्ध० बँधाहुआ।
अवरेखना० स० क्रि० लिखना, लकीरकरना
अवरेखी० स० क्रि० लिखी, लकीर की।
अवरोध० ना० पु० बंध, रोक, अन्त।
अवलम्ब० ना० पु० आश्रय, आसरा, सहारा।
अवि० ना० पु० पर्वत, शेष, सूर्य, रक्षक।
अविलम्बित० } गु० आश्रित, लटका,
अविलम्बी० } पक्षी।
अविरलि० ना० स्त्री० पांति, पंक्ति, कतार।

अवलोकन० ना० पु० दर्शन, दृष्टि, देखाव।
अवलोकना० स० क्रि० देखना, ताकना।
अवश० गु० पराधीन, असमर्थ।
अवशिष्ट० गु० शेष, उच्छिष्ट, बाकी।
अवशेष० ना० पु० शेषबचा, बाकीरहा।
अवशेषित० गु० जो बाकी रहगया।
अवश्य० अव्य० चाहिये, निश्चय, कर्त्तव्य, जरूरी।
अवसर० ना० पु० सावकाश, घात, समय, मौका, इत्तिफाक।
अवसान० ना० पु० अन्त, समाप्ति, आखिर।
अवसेरि० ना० स्त्री० देर, राहदेखना, बाट हेरना।
अवस्था० ना० स्त्री० दशा, उमर, हालत और दुर्दशा।
अवज्ञा० ना० स्त्री० अपमान, निन्दा, अनादर तुच्छकरना, अबरू उतारना।
अवाई० ना० स्त्री० नागिचाई, आमद।
अवाक० ना० पु० गूंगा, मूक, मानी।
अवाच्य० गु० अकथ्य, मौनी, निरर्थ, कुवाच।
अवाधी० गु० स्व० सुखरूपी, बाधारहित।
अवाध्य० गु० बिना बाध, अतर्क्य।
अवाध्योपकर्म० गु० बाधारहितकर्म, अतर्क्य कर्म।
अवारी० ना० स्त्री० दुआर, पंक्ति, रामायणे यथा (चारु बजार विचित्र अवारी, मणिमय विधि जनु स्वकर सँवारी) अम्बारी।
अवास० ना० पु० घर, मकान।
अविकल० } गु० निश्चिन्त, आनन्द।
अविकलित० }
अविकार० ना० पु० विकाररहित।
अविकारी० गु० जन्मादिविकाररहित।
अविगत० गु० व्यापक।
अविगति० ना० स्त्री० ज्ञान।
अविचल० गु० अचल, थिर, कायम।
अविचार० ना० पु० भूल, अन्याय, नादानी।
अविचारी० गु० विचाररहित, अन्यायी।
अविदूरि० गु० पास, निकट।
अविद्या० ना० स्त्री० भूल, अज्ञानता, माया विद्याहीन।
अविनय० गु० ढिठाई, चञ्चलाहट, गुस्ताखी।
अविनाश० ना० पु० नाशरहित, कुशल।
अविनाशी० गु० कुशल, जिसका नाश न होवे।
अविनीति० गु० चञ्चल, ढीठ।
अविन्दु० गु० बिन्दुरहित।
अविरल० गु० निरन्तर, अभेद।
अविरोध० ना० पु० चैन, सुख आनन्द, गु० विरोधरहित।
अविरोधनी० ना० स्त्री० } गु० सुखी, बेखटक।
अविरोधी० ना० पु० }
अविलम्ब० ना० पु० शीघ्रता, जल्दी, यत्न।
अविलम्बित० गु० शीघ्र, जल्द।
अविवादी० गु० जो विवाद न करे, शान्त।
अविवेक० ना० पु० अविचार, अजानता, गु० जो विवेकरहित हो।
अविवेकी० गु० विचारहीन, अज्ञानी।
अविशेष० समान जो विशेष नहीं।
अविश्वास० गु० ना० पु० अप्रतीत, बेएतबार।
अविश्वासी० गु० जिसकी प्रतीति नहीं वा जो किसीकी प्रतीति न माने।
अविक्षीण० गु० निरन्तर, अखण्ड, पूरा।
अवेगी० ना० पु० विधाताभीपरि गु० जो वेगता रहितहो।
अवेर० ना० स्त्री० ढील, विलम्ब, कुसमय।
अवेला० ना० स्त्री० कुसमय, बेवक्त।
अव्यक्त० गु० जो व्यक्त नहीं अर्थात् मालूम नहीं।
अव्यय० ना० पु० स्वर्ग, अक्षर, गु० जो व्यय न हो, जिस शब्दको कारकका न हो, कृपण।
अव्यवस्था० ना० स्त्री० जो शास्त्रसे सम्मत नहीं है।
अव्यवस्थित० गु० जो ठौर नहीं है।

अव्यवहारित० गु० त्यागित, छोड़ाहुआ।
अव्यवहित० गु० मिला, व्यवधान रहित।
अव्याप्ति० ना० स्त्री० लक्ष्य में लक्षणका जो नहीं जाना, प्रकट में प्रकटतारहित।
अव्याहत० गु० निरोध, मायाजित, रामायणे यथा –(अव्याहत गति शम्भु प्रसादा)।
अशकुन० ना० पु० अपशकुन, बुराशकुन।
अशकुनी० गु० अपशकुनी, बुरे लक्षणयुत।
अशक्त० गु० निर्बल, लाचार, असमर्थ।
अशक्ति० गु० निर्बल, असमर्थता, शक्तिरहित देव।
अशक्य० गु० असाध्य, शक्यतारहित।
अशंक०
अशंका० } गु० निर्भय, निडर, बेशङ्क।
अशन० ना० पु० भोजन, खाना।
अशनि० ना० पु० वज्र।
अशरण० गु० रक्षारहित, पनाहनहीं।
अशास्त्र० गु० जो शास्त्र से बाहर है।
अशास्त्रीय० गु० जो शास्त्र में उक्तनहीं है।
अशिव० गु० मङ्गल रहित, अशुभ।
अशिष्ट० गु० जिसका व्यवहार निन्दित है।
अशुक० गु० अशोर, अद्भुत।
अशुचि० गु० अपवित्र, अशुद्ध, नापाक।
अशुद्ध० गु० अपवित्र, जो ठीक नहीं है, गलती।
अशुद्धता० ना० स्त्री० अपवित्रता, चूक, भूल।
अशुभ० गु० अमङ्गल, जो अच्छा न है, ना० पु० पाप, दोष।
अशेष० गु० सम्पूर्ण, सारा, समस्त, सब।
अशोक० ना० पु० वृक्षविशेष, सुख, चैन।
अशोभा० गु० अनगढ़, कुरूप, ना० स्त्री० सुन्दरतारहित, शोभाहीन।
अशौच० गु० नापाक, अशुद्ध।
अश्म० ना० पु० पत्थर।
अश्मरी० ना० स्त्री० पथरी या मूत्रकृच्छ्ररोग।
अश्मभेद० ना० पु० पाषाणभेद।

अश्रद्धा० ना० स्त्री० घिन, चिढ़, अविश्वास।
अश्रु० ना० पु० आंसू।
अश्रुपात० ना० पु० आंसुओं का गिरना।
अश्लेषा० ना० स्त्री० श्लेषा, नक्षत्र।
अश्व० ना० पु० घोड़ा।
अश्वगन्धा० ना० स्त्री० असगन्ध औषधि।
अश्वतर० ना० पु० खच्चर।
अश्वत्थ० ना० पु० पीपलवृक्ष।
अश्वपति० ना० पु० वह राजा जिसके पास घोड़े वा घुड़चढ़े हों।
अश्वमेध० ना० पु० यज्ञविशेष यह यज्ञ राधिराज करसक्ता है, जो जगत् जीतेहो।
अश्वयुज० ना० पु० कुवारमास।
अश्वरक्षक० ना० पु० साईस।
अश्ववार० ना० पु० असवार, सवार, घुड़च
अश्वशाला० ना० स्त्री० तबेला, घोड़सान।
अश्वहा० ना० स्त्री० कनेरवृक्ष।
अश्व.० ना० स्त्री० असगन्ध।
अश्वारूढ़० ना० पु० असवार, सवार, घुड़चढ़ा।
अश्विनी० ना० स्त्री० प्रथमनक्षत्र।
अषय० गु० जिसका क्षय नहीं, अमिट।
अषयवट० ना० पु० वह बरगद जो प्र में है।
अषाढ़० ना० पु० चतुर्थमास, अषाढ़, असा
अष्ट० ना० पु० आठ ८।
अष्टकुलीसर्प० ना० पु० आठकुली सर्पों अर्थात् अनन्त १ वासुकि २ तक्षक ३ कर्कोट शङ्ख ५ कुलिक ६ पद्मक ७ महापद्मक ८।
अष्टकोण० ना० पु० आठकोने।
अष्टचत्वारिंशत्० गु० अड़तालीस ४८।
अष्टदिशाग्रह० ना० पु० आठो दिशाके अर्थात् सूर्य, शुक्र, मङ्गल, राहु, शनि चन्द्रमा, बुध, गुरु।
अष्टधातु० ना० पु० आठधातु अर्थात् सोना

रूपा, तांबा, पीतल, रांगा, कांसा, सीसा, लोहा।
अष्टपञ्चाशत्० गु० अट्ठावन ५८।
अष्टप्रहर० गु० आठपहर, दिनराति।
अष्टभैरव० ना० पु० आठ-भैरव अर्थात् असिताग रुरु, चण्ड, उन्मत्त, क्रोध, कपाली, भीषण, काल।
अष्टम० गु० आठवां।
अष्टमांश० ना० पु० अठवांभाग ⅛।
अष्टमी० ना० स्त्री० आठवीं तिथि, आठैं।
अष्टवसु० ना० पु० आठवसु अर्थात् आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास।
अष्टविंशदुःखलक्षण० ना० पु० अट्ठाईसदुःखलक्षण अर्थात् काम १ क्रोध २ क्रियाहत ३ दुराद ४ लोभ ५ लम्पटता ६ अप जा ७ अविद्या ८ अशोभा ९ आलस्य १० अतिनिद्रा ११ दुष्टता १२ अदया १३ कृपणता १४ दरिद्रता १५ राग १६ मलिनता १७ कुपात्रदान १८ अकृतज्ञता १९ भोगता २० अग्राह्यग्रह २१ अहङ्कार २२ परनिन्दा २३ कुदार २४ दुर्भाग्यता २५ अप्रतीति २६ मोह २७ ०रागरागता २८।
अष्टविंशति० गु० अट्ठाईस २८।
अष्टसिद्धि० ना० स्त्री० आठसिद्धि अर्थात् अणिमा १ महिमा २ गरिमा ३ लघिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ वशीकरण ७ ईशता ८।
अष्टाङ्गप्रणाम० } ना० पु० स्त्री० आठ अङ्ग से
साष्टाङ्गदण्डवत्० } प्रणाम अर्थात् उर, शिर, दृष्टि, मन, वचन, पद, कर, जानु से नमस्कार करना।
अष्टाङ्गयोग० ना० पु० योगके आठअङ्ग अर्थात् यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८।
अष्टादश० ना० पु० अठारह १८।
अष्टादशपुराण० ना० पु० अठारह पुराण अर्थात् भागवत १ भविष्य २ मार्कण्डेय ३ मत्स्य ४ ब्रह्माण्ड ५ ब्रह्म ६ ब्रह्मवैवर्त ७ विष्णु ८ वायु ९ वामन १० वराह ११ अग्नि १२ स्कन्द १३ पद्म १४ कूर्म १५ गरुड़ १६ लिङ्ग १७ नारद १८।
अष्टादशस्मृति० ना० स्त्री० अठारह स्मृति अर्थात् मनु १ अत्रि २ विष्णु ३ याज्ञवल्क्य ४ हारीत ५ उशना ६ अंगिरा ७ आपस्तम्ब ८ संवर्त ९ यम १० कात्यायन ११ बृहस्पति १२ पाराशर १३ व्यास १४ शङ्खलिखित १५ गौतम १६ वशिष्ठ १७ दक्ष १८।
अष्टापद० ना० पु० कचनार, सुवर्ण, पशु।
अष्टाशीति० गु० अस्सी ८०।
असंख्य० } गु० अगणित, बेशुमार, बहुत।
असंख्यात० }
असंशय० ना० पु० निश्चय, निस्सन्देह।
असकति० ना० स्त्री० आलस्य।
असकती० गु० आलसी।
असगन्ध० ना० पु० औषधविशेष।
असगत० गु० मिथ्या, अनुचित, अयोग्य।
असज्जन० गु० कुपात्र, नीच, दुष्ट।
असत्० गु० असाधु, अधम।
असन० ना० पु० भोजन, खाना, वृक्षविशेष।
असनि० ना० पु० वज्र।
असन्तान० गु० पुत्रहीन, निर्वंश।
असन्तुष्ट० गु० अप्रसन्न, धैर्यरहित।
असन्तोष० गु० अधीरजता।
असभ्य० गु० जो सभाके योग्य नहीं, दुष्ट, गँवार,
असभ्यता० ना० स्त्री० दुष्टता, कुचलन्दा, गँवारपन, बदचाल।
असम० गु० जो बराबर न हो, विषम।
असमञ्जस० ना० पु० दुविधा, सन्देह, विघ्न, लगाव।
असमय० गु० कुसमय, निरवकाश।
असमर्थ० गु० जो समर्थ न हो, निर्बल।
असमशर० ना० पु० कामदेव।
असम्पूर्ण० गु० जो पूरा न हो।
असम्बन्ध० गु० सम्बन्धरहित, असङ्ग।
असम्भव० गु० अनहोना, जो न हो सके।

असम्मत० गु० विरुद्ध, बसलाह ।

असह०
असह्य० } गु० जा सही न जाए, कठिन ।

असमाधि० गु० जो दूर न होसके रामायण यथा (दर्शीव्याधि असाधि बड़ि)।

असाधु० गु० अधर्मी, दुष्पति, कमीना ।

असाध्य० गु० जो कामसिद्धि न होसके, रोगी जो जीवे नहीं ।

असामर्थ० } ना० पु० कुछ सामर्थ्य नहीं,लाचार
असामर्थी० } गु० कुछ सामर्थ्य नहीं रखता ।

असार गु० छूछा पोला सूखा, कच्चा काठ, विनापौरुष, निर्बल ।

असि० ना० स्त्री० तलवार, अव्य० है, एस ।

असिद्ध० गु० अनपका, अनपरा,जो सिद्ध नहीं ।

असिधेनुक० ना० स्त्री० छुरी ।

असिनि० ना० स्त्री० तलवार

असिपत्री० ना० स्त्री० खड्ग ।

असिपुत्री० ना० स्त्री० छुरी कटारी ।

असिदन्त० ना० पु० मगर, मत्स्य ।

असीम० गु० सीमारहित अर्थात् अपार ।

असीस० गु० शिररहित ।

असीस० ना० पु० आशीर्वाद दुआ ।

असु० ना० पु० पञ्चप्राण जीव, प्राण ।

असुग० ना० पु० तीर, बाण ।

असुर० ना० पु० दैत्य, राक्षस ।

असुरविनाशक० ना० पु० नारायण ।

असुरारि० ना० पु० देवता, श्रीरामकृष्णादि ।

असुहर० गु० प्राणहर, मारनवाला ।

असूक्ष्म० गु० अन्तर निरन्तर ।

असूया० ना० स्त्री० कलह दोष ।

असों० अव्य० यह बरष, इस बर्ष ।

असोक० ना० पु० अशोक ।

असोची० गु० पवित्र, जो चिन्ता वा विचार से न होसके, जो पवित्रता न करे नहीं ।

असोच्य० गु० निर्मोह प्रमादी ।

असोस० ना० स्त्री० दुख नहीं ।

असौ० अव्य० यह ।

असौरभ० ना० स्त्री० कुबास, बदबू ।

अस्त० ना० पु० छिपाव, छुपना ।

अस्तव्यस्त० गु० भिन्न भिन्न, उलट पुलट बेमेल ।

अस्ताचल० ना० पु० वह पर्वत जिसके जहां सूर्यनारायण अस्त होते हैं ।

अस्तित्व० ना० पु० मौजूदगी ।

अस्थि० ना० पु० हाड़, हड्डी ।

अस्थिमात्र० गु० हड्डीभर ।

अस्थिर० गु० चचल, चलायमान ।

अस्थिरता० ना० स्त्री० चञ्चलता स्थिरताहीन

अस्थिरशृङ्खला० }
अस्थिसंहार० } ना० स्त्री० हाड़जोड़ ।

अस्थूल० ना० पु० सूक्ष्म, न्यून ।

अस्थूलभद्रा० ना० स्त्री० बड़ीकरन ।

अस्नसार० ना० पु० लोहा ।

अस्वछन्द० } गु० अधीन, पराधीन जो अपने
अस्वतन्त्र० } बश म नहीं है ।

अस्व थामा० ना० पु० द्रोणाचार्य का पुत्र ।

अस्वीकार० ना० पु० नामञ्जूर, अङ्गीकार नहीं ।

अस्त्री० गु० खसी नं० ।

अस्त्र० ना० पु० जिसको फेंकके मारते हैं यथा बाण आदि ।

अह० ना० पु० दिन, अहवार, कम ।

अह० सर्व० मैं, हम, क्रियाबोधक ।

अहङ्कार० ना० पु० गर्व, मद घमण्ड ।

अहङ्कारी० }
अहङ्कृत० } गु० अभिमानी दम्भी, मगरूर ।

अहमित० गु० अहङ्कारयुक्त, मगरूर ।

अहरेणुका० ना० स्त्री० रेणुका, बालू ।

अहर्निश० ना० पु० रातदिन ।

अहलाद० ना० पु० प्रेम, अनुराग ।

अहल्या० ना० स्त्री० गौतमजी की स्त्री ।

अहह० अव्य० आर्त शब्द यथा हाय हाय ।

अहार० ना० पु० आहार, कलुऊ, लई ।

हारना० स० क्रि० मढ़ियाना, चिपकाना, कोई लगाना, जमाना।
हारी० गु० लगानेवाला, लगीहुई लकड़ी, कोई वस्तु जो मढ़ियाई गई ना० स्त्री० कोयल पक्षी।
हि० ना० पु० राहु, सर्प, दैत्यविशेष।
हिंसक० गु० भला, साधु जो हिंसा न करे।
हित० ना० पु० शत्रु, वैर, शत्रुता।
अहिफेन० ना० स्त्री० अफ्यून, अफीम।
अहिमाली० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
अहिर० ना० पु० गोपवर्ण, जातिविशेष।
अहिवल्लरी० ना० स्त्री० नागवेलि, पानआदि।
अहिवान० ना० पु० सुहागन्स्त्रीका।
अहिवेलि० ना० स्त्री० नागवलि, पानआदि।
अहीर० ना० पु० ग्वाला, आभीर।
अहीरणी० ना० स्त्री० ग्वालिन।
अहीला० गु० साहसी, निडर, बहादुर।
अहीश० ना० पु० शेषादि, सर्पादि।
अहे० अव्य० सम्बोधन, थे।
अहेर० ना० स्त्री० आखेट, शिकार।
अहेरिया० } गु० आखेटरी, शिकारी।
अहेरी० }
अहो० अव्य० सम्बोधन वा आश्चर्य वा हर्ष में बोला जाता है, यथा अहोभाग्य।
अहोरात्र० ना० पु० दिनराति।
अहौ० अव्य० अहो।
अक्ष० ना० पु० नेत्र, बहेरावृक्ष, पासा।
अक्षत० ना० पु० चावल, जो पूजाआदि में गु० घावरहित, फोड़ारहित।
अक्षर० ना० पु० ककारादि वर्ण, गु० सूक्ष्म, अविनाशी।
अक्षविद्या० ना० स्त्री० रमल।
अक्षविद्वान्० गु० रम्माल, पासावाला।
अक्षांस० ना० पु० रेखा, भूमिके उत्तर वा दक्षिण के द्रतव नब्बे २ अंश।
अक्षि० ना० पु० नेत्र, आंखि।

अक्षिसंकेत० ना० पु० आंखिसे इशारह करना कटाक्ष, हावभाव।
अक्षुब्ध० गु० स्थिर, शान्त।
अक्षौहिणी० ना० स्त्री० सैन प्रमाण, इसका कथा कई प्रकार का है। यथा (नवनागसह स्रणि नागे नागे शतं रथा, रथे रथे शतंचाश्वा अश्वेअश्वे शतंनरा) अथवा दस वाहिनी अथवा १०९३५० पैदल, ६५६१० सवार, २१८७० रथ, २१८७० हाथी।
अत्र० अव्य० यहां, इस जगह।
अत्रि० ना० पु० चन्द्रमा के पिता, मुनिविशेष।
अत्रिज० ना० पु० चन्द्रमा, दुर्वासा, दत्तात्रेय
अज्ञ० गु० मूर्ख, अजान, नादान।
अज्ञता० ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी।
अज्ञात० गु० अनजान, नामालूम।
अज्ञाता० गु० मूर्ख, भोला, नादान।
अज्ञान० गु० मूर्ख, मूर्खता।
अज्ञानता० ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी।

(आ)

आ० अव्य० जिस० शब्द के प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ न्यून वा उलटा होजाता है और कभी क्रिया० के अवधि का ज्ञापक होताहै।
आं० अव्य० स्वीकृति सूचक शब्द।
आंक० ना० पु० अंक, चिह्न, मदार।
आंकना० स० क्रि० लखना, आंकना।
आंख० ना० स्त्री० चक्षु, नेत्र।
आंग० ना० पु० अंग।
आंगन० } ना० पु० अंगना, सहन।
आंगना० }
आंच० स्त्री० अग्निकी ताप।
आंचर० } ना० पु० अंचला।
आंचल० }
आंसू० ना० पु० आंसू।
आंट० ना० स्त्री० गांठि, विरुद्धता, ताक।
आंटना० अ० क्रि० समाना, पहुंचना।

आंटी० ना० स्त्री० फेंगी, अंटिया।
आंड० ना० पु० वृषण, अण्ड।
आंत० ना० स्त्री० अंतड़ी।
आंधी० ना० स्त्री० झकड़, झञ्झावायु।
आंब० ना० पु० आम्र।
आंब० } ना० पु० फल में राग विशेष, आम,
आंव० } आमातिसार।
आंवला० ना० पु० वृक्ष वा फल विशेष।
आंसू० ना० पु० आंखोंका पानी।
आक० ना० पु० अर्क, मदार।
आकर० ना० स्त्री० खानि अर्थात् धातु वा रत्नादि के उत्पन्न होनेका स्थान।
आकरीय० गु० जो खान से उत्पन्न हो।
आकर्षण० ना० पु० बल से खींचना।
आकर्षित० गु० जो खींचा गया।
आकांक्षा० ना० स्त्री० वांछा, इच्छा, चाह।
आकांक्षित० गु० वांछित, चाहिता।
आकांक्षी० गु० इच्छा करनेवाला चाहक।
आकार० ना० पु० स्वरूप डौल, सैन, सूरति।
आकारान्त० गु० जिसके अन्त में आकार हो।
आकाश० ना० पु० गगन, आसमान, अम्बर।
आकाशपवन० ना० पु० लताविशेष, आकाश बेल वा आकाशको पवन।
आकाशवाणी० ना० स्त्री० वाणी जो आकाश से होती है।
आकाशविलासी० ना० पु० देवता, नक्षत्र, गु० जो आकाशमें विलास करे यथा पक्षी।
आकाशबेलि० ना० स्त्री० अमरबेल।
आकाशी० गु० आकाशका, स्वर्गीय।
आकुल० गु० व्याकुल, कातर।
आकृति० ना० स्त्री० रूप, आकार, सूरति, डौल।
आकृष्ट० गु० खींचा हुआ।
आक्रमण० ना० पु० बलवा प्रकारा वरक विना धान म दूसर से आगन होना, चढ़ाई।
आखण्डल० ना० पु० इन्द्र।
आखण्डलपुर० ना० पु० इन्द्रलोक, स्वर्ग।
आखत० ना० पु० अक्षत।
आखा० ना० पु० चारा, गठिया, चलनी।
आखात० ना० पु० खलाव।
आखु० } ना० पु० मूसा, चूहा।
आखुग० }
आखेट० ना० पु० अहेर, शिकार, मृगया।
आखेटकी० गु० शिकारी, अहेरी।
आख्या० ना० स्त्री० संज्ञा, नाम।
आग० ना० पु० अग्नि।
आगत० गु० उपस्थित।
आगम० ना० पु० वेद व शिवोक्तशास्त्र विशेष भविष्यत् वा देश आवाई।
आगमन० ना० पु० अवाई, आव।
आगमज्ञ० ना० पु० शिव, गु० जो आगमकी बात वेद वा आगम का पाठकहोय।
आगमविद्या० ना० स्त्री० आगम कहने की विद्या।
आगमशानी० ना० पु० तान्त्रिक जो आगमको जानता होय।
आगर० ना० पु० अधिक बेहतर।
आगरा० ना० पु० नगर विशेष।
आगरी० ना० स्त्री० बाउरी।
आगलान्त० अव्य० गललग।
आगा० ना० पु० सामना अगवाड़ा।
आगामी० गु० आनहारा, अवैया।
आगार० ना० पु० घर, मकान।
आगिल० गु० पहिला।
आगू० } अव्य० सामने, बढ़िके, अग्र।
आगे० }
आगोट० ना० स्त्री० चौकसी, क़ैद।
आग्रह० ना० पु० उपकार, निहोरत, मदद।
आघात० ना० पु० चोट मारपीट।

आघार० ना० पु० घृत, घी, छिड़कना।
आघु० ना० पु० मोल, मर्य्याद, यथा विहारीलाल सतसईविलास। दोहा (जन्म जलधि पानिप विमल भाजग आयु अपार, रह गुणा इ गरपर भला न मुक्ताहार)।
आङ्गिरस० ना० पु० बृहस्पति।
आचमन० ना० पु० आचमन अर्थात् भोजन वा पूजा करने के पहिले थोड़ाजल हथेली में रखकर पीना वा कुल्लीकरना।
आचरण० ना० पु० करतूत, चाल, व्यवहार, अचार, शास्त्रोक्त क्रिया।
आचार० ना० पु० विचारकरना, पालरव, परहेज सगर्भ, ग्रारस।
आचारी० गु० जो मनुष्य शास्त्रोक्त क्रिया को समेत करे।
आचार्य्य० ना० पु० वेदका उपदेशक, गुरु।
आच्छादन० ना० पु० वस्त्र, ढकना, धोती, पर्दाव।
आच्छादित० गु० वस्त्रयुत, ढकाभया।
आछे० पु० अच्छका बहुवचन।
आज० अव्य० अद्य, इसरोज़।
आजनेय० ना० पु० घोड़ा यथा (आजनेया कुली न स्यात्रनीता साधुवाहिन इत्यमर)।
आज्ञा० ना० पु० दादा, पितामह पिता।
आजानना० अ० क्रि० अचानकआना, पड़ना।
आजि० ना० पु० युद्ध, समर, लड़ाई।
आजीव० ना० पु० } जीविकानिर्वाह, भरोसा।
आजीविका० स्त्री० }
आटना० स० क्रि० भरना।
आटा० ना० पु० चौस, गुना, पिसान।
आठकों० ना० पु० ... जिनमें से तेल ... लता है।
आड़० ना० स्त्री० आर, पर्दा।
आड़ना० स० क्रि० अन्तरकरना, आड़देना।
आडम्बर० ना० पु० उद्योग, अभिमान, दर्प।
आड़ा० गु० तिरछा, टेढ़ा।
आड़ी० ना० पु० रसिक, ना० स्त्री० गान में स्वर विराम टेढ़ा तिरछा, बेंड़ी।
आड़ेआना० अ० क्रि० रक्षा करना, बचाबहाना।
आढ्य० गु० धनाढ्य, धनी, स्वामी।
आतङ्क० ना० पु० भयभात, दुःख ... डर, प्रताप दबदबा।
आततायी गु० उद्धत, हत्यारा, परद्रोही रव।
आतप० ना० पु० घाम, धूप।
आतपत्र० ना० पु० छत्र।
आतपी० पु० धूप से विन्ध।
आताः ना० पु० सतापल।
आतिथेय० } गु० अतिथिका सत्कार करना,
आतिथ्य० } अतिथिपालन, मननानी।
आतुर० गु० दुःखी रोगी, व्याकुल, घबरा।
आलू० ना० स्त्री० ... गुरुआयिन।
आत्मघात० ना० पु० अपनीहत्या, निजघात।
आत्मघाती० गु० निज जोवहता, अधर्मी, जाव का दुःखदाता।
आत्मज० ना० पु० पुत्र, लड़का।
आत्मनामी० गु० जो आपसे प्रसिद्ध है।
आत्मपालक० पु० आपस्वार्थी, अपकाजी।
आत्मभू० ना० पु० ब्रह्मा।
आत्ममात्र० ना० पु० समस्तजीव, जीवभर।
आत्मरक्षा० ना० स्त्री० निजजीवकी रक्षा, इष्टमात्मा आगाध।
आत्मरक्षक० गु० निजजीवपालक।
आत्मश्लाघा० ना० स्त्री० निज मन से अपनी बड़ाई।
आत्महा० गु० निजजीवघाती, धर्महीन।
आत्मा० ना० पु० स्त्री० जीव, मन, बुद्धि, देह, स्वभाव, धीर, अन्तर, अहङ्कार, आप।
आत्मिक० गु० मनका, अपना।
आत्मिकता० ना० स्त्री० अपनाइत।
आत्मीय० गु० आत्मिक, अपना।
आदर० ना० पु० सत्कार, सन्मान, मनसे लना।
आदरार्थ० गु० जिसमें आदर पाया जाता है।

आदर्श० / आदर्शन० } ना० पु० दर्पण, शीशा।
आद्रक० ना० स्त्री० अदरक।
आदान० ना० पु० लेना।
आदि० गु० पहिला, जड़ वगैरह, शुरूअ।
आदिअन्त० गु० आरम्भ से समाप्तिपर्यन्त या आदि और अन्त, आद्यन्त।
आदिक० अ० प० इत्यादि और सब।
आदित० / आदित्य० } ना० पु० सूर्य्य।
आदित्यवार० ना० पु० प्रथमदिन इतवार।
आदित्यहृदय० ना० पु० ग्रन्थ विशेष।
आदितेय० ना० पु० देवता, अदितिजात।
आदेश० ना० पु० आज्ञा, अनुमति, योगीलोगों का प्रणाम, व्याकरण में एक अक्षर को दूसरे अक्षर से बदलने को कहते हैं।
आदौ० अव्य० प्रथम, पहिले।
आद्य० गु० पहिला, प्रथमका।
आद्योपान्त० गु० पूरा, सब, समस्त।
आधुनिक० गु० इसकालका।
आधर्ष० ना० पु० भय, डर, कठिन।
आधा० गु० अर्द्ध, है।
आधान० ना० पु० गर्भ, गर्भका धारण।
आधार० ना० पु० प्रतिपालक, अधिकरण, सहारा, थालमें एक चक्रका नाम।
आधारी० गु० सहारा पानेवाला।
आधासीसी० ना० स्त्री० अर्धकपाली।
आधि० ना० स्त्री० मनकी पीड़ा, उदासी।
आधिक्य० ना० पु० बढ़ती, अतिशयता।
आधिपत्य० ना० पु० ऐश्वर्य्य, स्वामित्व।
आधीन० [illegible], आज्ञाकारी, तावेदार।
आर्ध [illegible] आशा
आर्ध [illegible]

आन० अ० और, अन्य, न० स्त्री० आज्ञा, मर्याद सौगन्द।
आनक० ना० पु० दुन्दुभी, डंका।
आनदेव० न० पु० और देवता।
आनन० ना० पु० मुख, अ० और नहीं।
आनना० स० क्रि० लाना।
आनन्द० ना० पु० / आनन्दना० स्त्री० } हर्ष, सुख, खुशी
आनन्दित० गु० खुश, हर्षित, निहाल।
आनन्दी० गु० सुखी, खुश।
आनब० / आनिहौं० } क्रि० लाउंगा।
आनुकूल्य० ना० पु० सहायता।
आनुपूर्वी० ना० स्त्री० [illegible], क्रम।
आनुमानिक० गु० युक्ति, सिद्ध।
आन्ध्र० ना० पु० तैलंगदेश।
आप० ना० पु० पानी, सर्व० स्वकीय, निज।
आपकाज० ना० पु० अपनाकाम।
आपकाजी० गु० जो अपने काम में लगा रहता है।
आपण० ना० स्त्री० पण, शर्त।
आपत्ति० ना० स्त्री० विपत्ति, आफ्त दोष।
आपद० / आपदा० } ना० स्त्री० विपत्ति, अभाग, कठिनता।
आपन्न० गु० प्राप्त, शरणय, मरन, अभागा।
आपपत्ति० ना० पु० वरुणदेवता।
आपरूप० गु० आप, विशेष ईश्वर।
आपस० सर्व० अपने, मदिवद।
आपस्तम्भ० ना० स्त्री० स्मृति विशेष।
आपाधान० ना० पु० युद्ध, समर।
आप्त० गु० जो विश्वास के योग्य है, प्राप्त, सच्चा।
आप्लुत० गु० जो नहाया हुआ।
आप्रियो० स० क्रि० दिया, बक्सा, यह शब्द अवधी का है।
आफू० / आफूक० } ना० स्त्री० अफ्यून, अफीम।

आबाल० ना० पु० लड़कापन, बालकता।
आभरण० ना० पु० भूषण, गहना, जेवर।
आभा० ना० स्त्री० भड़क, शोभा, चमक।
आभार० ना० पु० बोझ।
आभास० ना० पु० अभिप्राय, थोड़ासा, क्षेत्र विशेष।
आभीर० ना० पु० भीलादि, गोप, अहीर।
आभूषण० ना० पु० अलंकार, गहना।
आम० ना० पु० कच्चा, आम्रफल।
आमय० ना० पु० रोग।
आमर्ष० ना० पु० क्रोध, गुस्सा, दाह।
आमर्षण० ना० पु० क्रोध करना।
आमर्षि० अ० क्रि०क्रोधयुक्तहोकर।
आमलक० } ना० पु० आमलाफलविशेष।
आमला० }
आमान्न० ना० पु० कोरा अनाज, सीधा।
आमाशय० ना० स्त्री० पेटकी थैली जिसमें खाना रहता है वा इकट्ठा होकर पचता है।
आमिष० ना० पु० मांस, गोश्त।
आमिषाहार० ना० पु० मांसखाना।
आमिषाहारी० गु० मांसखानेवाला।
आमोद० ना० पु० आनन्द, हर्ष, सुगंध, सुवास।
आम्बर० ना० स्त्री० वस्तु विशेष अर्थात् कहरुबा।
आम्र० ना० पु० आमका फल वा वृक्षविशेष।
आय० ना० पु० लाभ, धनागम।
आयत० गु० लंबा, दीर्घ, घर, चौड़ा, ना० पु० घाम, धूप।
आयतन० ना० पु० घर, मकान।
आयत्त० गु० नम्र, अधीन, साज।
आयसु० ना० पु० आज्ञा, हुकम।
आया० ना० स्त्री० लड़कों को खिलानेवाली।
आयास० ना० पु० परिश्रम, मिहनत।
आयु० ना० स्त्री० जीवन, काल, उमर।
आयुध० ना० पु० हथियार, अस्त्रशस्त्र।
आयुर्दा० } ना० स्त्री० जीना, काल, उमर, हयात।
आयुर्दाय० }
आयुर्बल० }
आयुष्० }
आयुस्० }
आरक्त० गु० लाल, सुर्ख।
आरग्वध० ना० स्त्री० किरवाली।
आरज० ना० पु० मर्यादक, मानी, उत्तम जन, श्रेष्ठ, आर्य।
आरण्ड० ना० पु० रण्ड, अरण्डी का वृक्ष।
आरति० ना० स्त्री० दुःख, अतिप्रेम, इश्क वा पूजा प्रसिद्ध।
आरती० ना० स्त्री० दीपक जलायके देवता को दिखाना।
आरम्भ० ना० पु० प्रारम्भ, उपक्रम, उत्थान, शुरूअ, लगा लगाना।
आरा० ना० पु० ताक, आला, लकड़ी चीरने का अस्त्रविशेष।
आराति० } ना० पु० शत्रु, वैरी।
अराति० }
आराधक० गु० सेवक, भजन करनेहारा।
आराधन० ना० पु० पूजा, भजन, सेवा।
आराधना० स० क्रि० पूजा करना, अर्चना।
आराम० ना० पु० उपवन, बगीचह, चैन।
आरि० ना० स्त्री० झगड़ा, जिद्द, हठ, प्रमविलासे यथा (देखत रहो खिलौना चन्दा, आरि न कीजिये बालगोविन्दा)।
आरण्य० } ना० पु० जंगल, वन, पुस्तकविशेष।
अरण्य० }
आरिष्ट० } गु० कठिन, दुःखद, बुरा।
अरिष्ट० }
आरुक० ना० पु० आड़का फल वा वृक्ष।
आरुष्कर० ना० पु० भिलावावृक्ष।
आरूढ़० ना० पु० सवार, गु० जो चढ़ाहोवे।
आरे० ना० पु० आराका बहुवचन।
आरोग्य० ना० पु० क्षेम, कुशल, नीरोग।

आरोपित० गु० कल्पना कियागया, बनाया गया, सौंपागया।

आरोप० ना० पु० कल्पना, बनावट।

आरोह० ना० स्त्री० } ऊपर चढ़ना, सीढ़ी,
आरोहण० ना० पु० } जीना।

आर्त्त० } गु० पीड़ित, दुःखित, व्याकुल।
आरत० }

आर्द्र० गु० गीला, सीला।

आर्द्रा० ना० स्त्री० छठानक्षत्र।

आर्य्य० गु० उत्तमकुलोत्पन्न, कुलीन, उत्तम, श्रेष्ठ।

आर्य्यावर्त्त० ना० पु० वह पवित्रदेश जो पूर्व समुद्रतटसे पश्चिम सिन्धुतट तक और हिमालय से विन्ध्याचल तक है।

आर्सी० ना० स्त्री० भूषणविशेष जो स्त्रियां अंगूठे में पहिनती हैं, दर्पण।

आल० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष, पीला, हरताल।

आलम्ब० ना० पु० सहारा, मदद।

आलम्बन० ना० पु० आश्रय, अवलम्ब।

आलय० ना० पु० घर, मकान।

आलवाल० ना० पु० थाला, थावला।

आलस० ना० पु० ढील, सुस्ती, शिथिलता।

आलसी० गु० ढीला, सुस्त, शिथिल।

आलस्य० ना० पु० आलस।

आला० ना० पु० थारा, ताक, ताख जिसमें चिराग आदि रखते हैं।

आलान० ना० पु० खूंटा जिसमें हाथी बांधा जाताहै, बेड़ी, जंजीर।

आलाप० ना० पु० बातचीत करना, स्वरमिलाप।

आलि० ना० स्त्री० सखी, पंक्ति।

आलिंगन० ना० पु० परस्पर गलेलगाना।

आलिंगित० गु० प्रसंगित, भेंटीहुई।

आली० ना० स्त्री० सखी।

आलु० } ना० पु० विलायती कन्दविशेष।
आलू० }

आलोक० ना० पु० ज्योति, दृष्टि, चांदनी।

आलोकन० ना० पु० दृष्टि देकर देखना।

आवझ० ना० पु० बाजाविशेष।

आवरण० ना० पु० ढाल, आच्छादन, विरूप, भँवर, घेरा।

आवर्त्त० ना० पु० भँवर जो पानीमें होता है।

आवर्दा० ना० स्त्री० आयुर्दाय, उमर।

आवनो० अ० क्रि० आना।

आवभक्ति० }
आवभगत० } ना० स्त्री० मान, सन्मान, आदर।
आवभगति० }

आवलि० ना० स्त्री० पांति, पंक्ति।

आवश्यक० गु० निश्चय कर्त्तव्य, जरूरीकाम।

आवश्यकता० ना० स्त्री० जरूरत।

आवा० ना० पु० ब्रज देशकी राजधानी। कुम्हार जिसमें वर्त्तन पकाताहै, अ० क्रि० आया।

आवाई० ना० स्त्री० चर्चा, समाचार।

आवागमन० } ना० पु० आनाजाना।
आवागवन० }

आवाजाई० ना० स्त्री० फेरेपड़ना, आना जाना।

आवाली० ना० स्त्री० अगाई।

आवाधा० ना० स्त्री० भूमिखण्ड।

आवास० ना० पु० घर।

आवाहन० ना० पु० सादर बुलाना, बुलाना।

आविर्भाव० ना० पु० प्रकटहोना।

आविर्भूत० गु० प्रकटवस्तु।

आविष्ट० गु० जो भूतादिक करके ग्रस्त है।

आवृत० गु० घिराहुआ, वेष्टित।

आवृत्तिक० ना० स्त्री० उद्धरिणी, पढ़ाहुआ, दुहराना, दफ़ै।

आसक्त० गु० मोहित, तत्पर, लीन और अविरत।

आशक्ति० ना० पु० चाह, प्यार।
आशंका० ना० स्त्री० भय, डर, सन्देह, शक।
आशय० ना० पु० अभिप्राय, आश्रय, मतलब, मज़मून।
आशर० ना० पु० निशाचर, दैत्य।
आशा० ना० स्त्री० आसरा, भरोसा।
आशावन्त० गु० आसरिवा, उम्मेदवार।
आशावसन० गु० नगा, तृष्णा रहित।
आशावान्० गु० आशावन्त।
आशिष० ना० पु० } दुआ, भला मनाना,
आशिषा० स्त्री० } अच्छा चाहना।
आशीर्वाद० पु० }
आश्चर्य्य० गु० अद्भुत, ना० पु० अचम्भा, विस्मय।
आश्चर्य्यवन्त० गु० तअज्जुब म, अचम्भित।
आश्रक० ना० पु० रुधिर, लोहू, खून।
आश्रम० ना० पु० हिन्दू लोगों म चारि आश्रम अर्थात् ब्रह्मचारी १ गृहस्थ २ वानप्रस्थ ३ सन्यासी ४ और ऋषियोंके रहनेका स्थान,घर।
आश्रमी० गु० आश्रम धरनेवाला।
आश्रय० ना० पु० आसरा, समीपता, गु० अधीन, शरण, छल।
आश्रित० गु० आधीन, वा परवश।
आश्वास० ना० पु० भरोसा, समाप्ति, अध्याय।
आश्विन० ना० पु० कुवार सातवामास।
आषत० ना० पु० अक्षत चावलादि।
आषर० ना० पु० अक्षर वर्ण।
आषाढ़० ना० पु० आषाढ चौथामहीना।
आस० ना० स्त्री० आशा, भरोसा।
आशंसार्थ० गु० जिससे इच्छा का बोध होता है।
आसक्त० गु० आशक्त, फरेफ्तह।
आसक्ति० ना० स्त्री० आशक्ति, प्रीतिप्रेम।
आसन० ना० पु० बिस्तर, सेज, योगासन, बैठने के लिये कुशा वा काष्ठ वा ऊनकी वस्तु बेठक, जाघ के भीतरी ओर।
आसनगत० गु० बैठाहुआ।
आसनी० ना० स्त्री० ऊन वस्त्रादि बिछौना।
आसन्न० गु० निकट, पास।
आसन्नकोण० ना० पु० पास का कोना।
आसन्नभूत० ना० पु० निकटही व्यतीतभया।
आसपास० गु० लगभग।
आसमुद्र० ना० पु० समुद्रपर्यन्त।
आसय० ना० पु० आशय।
आसर० ना० पु० आशर, दैत्य।
आसव० ना० स्त्री० मदिरा विशेष, शराब।
आसा० ना० स्त्री० आशा।
आसाम० ना० पु० देशविशेष।
आसावरी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, कपोत विशेष, कपड़ा विशेष।
आसिष० ना० स्त्री० आशिष।
आसीन० गु० बैठाहुआ।
आसीविष० ना० पु० साप।
आसीस० ना० स्त्री० आशीर्वाद।
आसु० गु० शीघ्र, शिताबी।
आसुग० गु० बाण, वायु, सूर्य्य।
आसुतोष० गु० शीघ्र प्रसन्न होनेवाला।
आसुर० ना० पु० असुर या कोई असुर।
आसुरी० ना० स्त्री० राक्षसीमाया, निशाचरी।
आस्कत० ना० स्त्री० आलस्य।
आस्कती० गु० आलसी।
आस्ति० ना० पु० वेदधर्मोंकाफल, साधुता, धर्मशक्ति, हस्ती।
आस्तिक० ना० पु० वेद के धर्मों के फलक, विश्वासी, साधु।
आस्था० ना० स्त्री० टव, सभा, परिश्रम।
आस्पद० ना० पु० स्थान, पद, खिताब।
आस्फोत० ना० पु० कचनारवृक्ष।
आस्रप० ना० पु० असुर, दैत्य।
आस्वाद० ना० पु० रसका अनुभव।
आह० ना० स्त्री० साहस,वीरता, धीरज।
आहट० ना० पु० पग, शब्द, आवाज।

आहा॰ अव्य॰ खेदका सूचक शब्द ।
आहार॰ ना॰ पु॰ भोजन, खाना ।
आहारी॰ गु॰ भोजन करनेवाला, भोजन के योग्य ।
आहि॰ अव्य॰ है ।
आहुत॰ } ना॰ स्त्री॰ देवताओं के लिये होमने
आहुति॰ } के लिये जो वस्तु घृतादि ।
आहवनीय॰ ना॰ पु॰ अग्निविशेष ।
आहुक॰ ना॰ पु॰ उग्रसेन राजाका पिता ।
आहुतदान॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मणको बुलाकर घर पर दानदेना इसको मध्यम दान कहते हैं ।
आह्निक॰ ना॰ पु॰ प्रतिदिन धर्मका कार्य ।
आह्निकगति॰ ना॰ स्त्री॰ एक दिनकी चाल, प्रतिएकग्रह या नित्यमचक्र ।
आह्ना॰ ना॰ पु॰ जलार्णव ।
आह्लाद॰ ना॰ पु॰ हर्ष, आनन्द ।
आह्लादित॰ गु॰ हर्षित, आनन्दित ।
आह्वान॰ ना॰ पु॰ आवाहन, पुकारना ।
आक्षेप॰ ना॰ पु॰ दुर्वचन, निन्दा ।
आत्तोदन॰ ना॰ पु॰ आखेट ।
आत्रेय॰ ना॰ पु॰ अत्रिका पुत्र ।
आत्रेयी॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष जो बंगालेमें है ।
आज्ञा॰ ना॰ स्त्री॰ आदेश, हुक्म ।
आज्ञाकार॰ } गु॰ जो आज्ञानुसार चले, सेवक,
आज्ञाकारी॰ } ताबेदार ।
आज्ञाद॰ ना॰ पु॰ जो आज्ञा देवे, हाकिम ।
आज्ञानुयायी॰ गु॰ अ ज्ञावत् वर्तनेहारा ।
आज्ञानुसार॰ ना॰ पु॰ हुक्म के मुताबिक ।
आज्ञानुवर्ति॰ गु॰ ताबेदार, सेवक ।
आज्ञाभिलाषी॰ गु॰ आज्ञाचाहनेवाला ।
आज्ञार्थ॰ गु॰ आज्ञा का बोध जिससे होता है ।
आज्ञालंघन॰ ना॰ पु॰ उदूलहुक्मी, हुक्म न मानना ।

(इ)

इक॰ गु॰ एक १ ।
इकटक॰ ना॰ पु॰ एक ताक से देखना ।
इकट्ठा॰ }
इकट्ठी॰ } गु॰ जो एक जगह में जमाहोवे ।
इकठौरा॰ }
इकठौरी॰ }
इकसार॰ गु॰ सरीखा, सदृश, समान ।
इकारान्त॰ गु॰ जिस शब्दके अन्तमें इकार है ।
इका॰ गु॰ अकेला, अद्वितीय, एका ।
इंगलण्ड॰ ना॰ पु॰ देशविदेश, जिसमें लण्डन नगर प्रसिद्ध है ।
इंगलण्डीय॰ गु॰ जो इंगलण्डका है ।
इंगित्रज्ञ॰ पु॰ इच्छा, समान, चलनेवाला ।
इंगित॰ ना॰ पु॰ सैन, सकेत, आगमन, खोज ।
इच्छा॰ ना॰ स्त्री॰ मनोरथ, चाह ।
इच्छाचारी गु॰ मनोवत्गामी, बन्धरहित ।
इच्छित॰ गु॰ इच्छा समाना, चाहा हुआ ।
इच्छितफल॰ ना॰ पु॰ चाहाहुआ फल वा अर्थ ।
इच्छानुसार॰ ना॰ पु॰ इच्छावत्, चाहना ।
इछन॰ ना॰ पु॰ नेत्र, दृष्टि ।
इडा॰ ना॰ स्त्री॰ धरती, देवी, बाईं श्वास ।
इन॰ }
इतै॰ } अव्य॰ यहां, इधर ।
इतना॰ गु॰ यह शब्द परिमाण या अवधि का ज्ञापक है ।
इतनी॰ ना॰ स्त्री॰ सैन्य, गु॰ इस प्रमाण ।
इतर॰ गु॰ अन्य, रहित नीच ।
इतरलोग॰ ना॰ पु॰ छोटीजाति, लोकान्तर ।
इति॰ अव्य॰ समाप्तिका बोधक है, अधिक, इसप्रकार ।
इत्याल॰ ना॰ पु॰ मिलान,सामाना, मुकाबिलह ।
इत्यादि॰ ना॰ पु॰ आदिक, वगैरह ।
इतिहास॰ ना॰ स्त्री॰ वृत्तान्त, प्राचीन कथा, पुराणादिकी वार्त्ता, तारीख़ ।

इतो० } गु० इतना।
इती० }

इदम्० सर्व० यह।

इदानीम्० अव्य० यहां,इसजगह।

इधर० अव्य० यहां, इसठौर।

इन्दारा० ना० स्त्री० बड़ापक्का कूआ।

इन्दिरा० ना० स्त्री० लक्ष्मी।

इन्दीवर० ना० पु० नील कमल, पौधा विशेष।

इन्दु० ना० पु० चन्द्रमा।

इन्दुर० ना० पु० उन्दुर, चूहा।

इन्दौर० ना० पु० नगरविशेष।

इन्द्र० ना० पु० देवताओं का राजा, प्रधान।

इन्द्रगोप० ना० पु० बीरबहूटी।

इन्द्रजित्० ना० पु० मेघनाद, गु० जो इन्द्रको जीते।

इन्द्रपुरी० ना० स्त्री इन्द्रका नगर।

इन्द्रप्रस्थ० ना० पु० दिल्लीनगर।

इन्द्रवधू० } ना० स्त्री० बीरबहूटी कीड़ा, लाल रङ्गका वर्षा में होताहै, इन्द्र की पत्नी।
इन्द्रवधूटी० }

इन्द्रयव० ना० पु० कुरज का फल, इन्द्र जौ, औषधि विशेष।

इन्द्रवारु० ना० पु० } औषधिविशेष।
इन्द्रवारुणी० स्त्री० }
इन्द्रविषादिनी० }

इन्द्राणी० } ना० स्त्री० शची, इन्द्रकी पत्नी
इन्द्रायणी० }

इन्द्रायन० ना० पु० वृक्षविशेष वा उसकाफल जो अतिसुन्दर और कड़वा होताहै।

इन्द्रासन० ना० पु० इन्द्रका सिंहासन।

इन्द्रिय० } ना० स्त्री० जिनसे रूप रसादिका ज्ञान होताहै वह दोप्रकारकी दश हैं पांच कर्मेंद्रिय अर्थात् हाथ, पांव, गुदा लिंग, मुख और पांच ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा।
इन्द्री० }

इन्धन० ना० पु० जलानेकी लकड़ी आदि [illegible]।

इभ० ना० पु० हाथी।

इभपालक० गु० महावत पीलवान।

इभ्य० ना० पु० स्वामी।

इमम्० सर्व० यह गु० ऐसा, इसप्रकार।

इमि० गु० इसप्रकार।

इला० ना० स्त्री० धरती, नारी, भवानी, देवी, बुद्धि, सरस्वती।

इलायची० ना० स्त्री० फलविशेष, एला।

इलावृत० ना० पु० पृथ्वी के नवखण्डों में से एक।

इल्ला० ना० पु० मसा।

इव० अव्य० तरह, प्रकार, जैसे।

इष्ट० गु० पूजित, प्यारा, वाञ्छित ना० पु० देवता, मनुष्य, चहीता, वस्तुचहीती।

इष्टदेव० ना० पु० पूजित देवता, जिस देवकी सेवाकरैं वा ध्यावै।

इष्टा० ना० स्त्री० प्रिय, प्यारा।

इष्टित० गु० विचारित, जो मांगागया।

इष्वासन० ना० पु० धनुष, कमठा, कमान।

इषु० ना० पु० बाण, तीर, आश्विनमास, और गणित में ५।

इषुधी० ना० स्त्री० पु० धनुष, कमान, कमठा।

इषुधीपति० ना० पु० धनुर्द्धर अर्जुनादि।

इस्त्री० ना० पु० लोहे का यन्त्र जिससे धोबी कपड़े सभालता है।

इस्पात० ना० पु० फौलाद।

इह० सर्व० यह।

इहलोक० ना० पु० [illegible]

इक्षु० ना० ऊख, [illegible]

इक्षुगन्धा० } [illegible]
इक्षुवल्ली० }

इक्षुसार० [illegible]

इक्ष्वाकु० [illegible]

ई

ई० [illegible]

ईडुवा० ना० पु० शिरपर बोझ रखने का टेका जो कपड़ा वा सन मूजआदिक होता है।

ईकारान्त० गु० जिस शब्दके अन्तमें ईकार है।

ईख० ना० स्त्री० ऊख, ऊखारी, इक्षु।

ईठ० गु० इष्ट, प्रिय, मित्र, ना० पु० गगन, देखना।

ईठि० ना० स्त्री० दोस्ती, प्रीति, सखी।

ईढि० ना० स्त्री० अपनेको अधिकजानना, हठ।

ईति० ना० स्त्री० बाधा, दुःख।

ईद० ना० स्त्री० मुसलमानों और यहूदियों में एक पर्व्वहोता है रमज़ान के पीछे, अरबी शब्द है।

ईदृश० गु० ऐसा।

ईर्षा० ना० स्त्री० हिसद, द्वेष, डाह, हसद।

ईश० ना०पु० ईश्वर, प्रभु, स्वामीविशेष, शिवजू, विष्णु, नारायण।

ईशता० ना० स्त्री० प्रधानता, महत्त्व, माया, सिद्धिविशेष।

ईश्वर० ना० पु० प्रभु स्वामीविशेष, परमात्मा, शिवजी, विष्णु, नारायण।

ईश्वरता० ना० स्त्री० } मायायोगमाया, कुदरत।
ईश्वरत्व० ना० पु० }

ईश्वराराधन० ना० पु० परमेश्वरका भजन।

ईशान० ना० पु० सदाशिव, ईशानकोण।

ईशानकोण० ना० पु० पूर्व उत्तर का कोना।

ईषत्० } गु० थोड़ा, २-, स्वल्प, ।.
ईषद्० }

ईस० ना० पु० ईश, मालिक।

ईह० } ना० स्त्री० चेष्टा, इच्छा, उद्यम।
ईहा० }

ईक्षण० ना० पु० चक्षु, आंखि, दृष्टि।

(उ)

उचाई० ना० स्त्री० }
उचान० ना० पु० } उचापा, उन्नति, बलंदी।
उचाव० ना० पु० }
उचाहट० स्त्री० }

उचाना० स० क्रि० ऊँचाकरना, उठाना।

उडेलना० स० क्रि० धक्कादेकर गिराना, डालना।

उकठा० गु० सूखाकाष्ठ वा वृक्ष।

उकत० ना० स्त्री० उक्ति, कहन।

उकताना० अ० क्रि० घबराना, थकना, कुढ़ना

उकतारू० ना० पु० उपजाऊ पक्षी।

उकतारना० स० क्रि० सँभालना, पकड़ना।

उकसना० अ० क्रि० उठना, ऊपरको चढ़ना, वा बढ़ना।

उकसाना० } स० क्रि० उठाना, चढ़ाना।
उकासना० }

उक्त० गु० कथित, कहाहुआ।

उक्ति० ना० स्त्री० कथन, भाषा, चतुराई, कहना।

उखड़ाना० अ० क्रि० उजड़ना, निजस्थान से हटना।

उखड़हा० गु० उखड़ाभया।

उखड़ना० } स० क्रि० उजाड़ना, निजस्थान से हिलाना।
उखाड़ना० }

उगना० अ० क्रि० उत्पन्नहोना, जमना, बढ़ना।

उगलना० स० क्रि० मुख में काई वस्तु डाल कर फिर निकालना।

उगाल० ना० पु० जो चबाय के मुख में से फेंका।

उगाहना० स० क्रि० जमाकरना, तहसीलना।

उगाही० ना० स्त्री० व्याजलेना या वह रुपया जो महाजन आठके नव वा नव के दश दशके ग्यारह प्रतिमास एक २ रुपया कर लेता है।

उग्र० गु० क्रोधी, कठोर, भयङ्कर, तेज, ना० पु० शिवजी।

उग्रगन्धा० ना० स्त्री० अजवायन, बच और लहसुन० गु० जिसकी गन्ध कठिन है।
उग्रसेन० ना० पु० राजा कंस का पिता।
उघटना० स० क्रि० किसी पर उपकार करके कहना वा बात मारना, ताना देना।
उघड़ना० अ० क्रि० नंगा होना, खुलना।
उघरे० गु० खुले, प्रगटे।
उघाड़ना० } स० क्रि० नंगाकरना, खोलना।
उघारना० }
उघारी० गु० नंगी, खुली।
उचकना० अ० क्रि० कूदिके उठाना, उछलना।
उचकाना० स० क्रि० उपर को उठाना वा चढ़ाना।
उचक्का० गु० चोर, उठाईगीर।
उचटना० अ० क्रि० अलगर होना, बिछुड़ना, न लगना, उखड़ना, फिसलना।
उचरङ्ग० ना० पु० पतंगा।
उचरना० अ० क्रि० बात निकलना, उखड़ना।
उचाट० गु० उदासी, जी न लगना।
उचाटना० स० क्रि० उदासकरना, उखाड़ना।
उचारना० स० क्रि० उच्चारणकरना, निकलना।
उचित० गु० योग्य, ठीक, मुनासिब।
उचिलना० अ० क्रि० फटना, छुटिजाना।
उचेलना० स० क्रि० मिलीहुई वस्तु को अलग २ करना, उधेड़ना।
उच्च० गु० ऊंचा।
उच्चाटन० ना० पु० जी भड़कना, जी का न लगना।
उच्चार० ना० पु० पुरीष, मल, पाखाना।
उच्चारण० ना० पु० शब्दकहना वा निकलना।
उच्चारना० स० क्रि० उचारना, मन्त्र कहना।
उच्चैःश्रवा० ना० पु० सूर्य का घोड़ा।
उच्छिन्न० गु० निर्मूल, उखड़ा, खराब।
उच्छलित० गु० उछलता भया।
उच्छिष्ट० ना० पु० जूठनि वा जूठा, भोजन अवशेष।
उच्छ्वास० ना० पु० श्वास, आशा।
उछंग० ना० स्त्री० गोद, कनिया।
उछरना० } अ० क्रि० कूदना, उठाना।
उछलना० }
उछालना० स० क्रि० कुदाना, ऊपर को फेंकना।
उछाह० ना० स्त्री० आनन्द, खुशी।
उजड़ना० अ० क्रि० नाश होना, मिटना, भगना, वेरान होना।
उजला० गु० उज्ज्वल, सफेद, निर्मल।
उजागर० गु० यशवन्त, चटकीला, सुन्दर।
उजाड़० गु० सूना, वनखण्ड, वेरान।
उजाड़ना० स० क्रि० सूनाकरना, नाशकरना, वेरान करना।
उजालना० स० क्रि० उजाला करना।
उजाला० ना० पु० ज्योति, तेज, प्रकाश।
उजाली० ना० स्त्री० चांदनी।
उजास० ना० पु० उजेला।
उज्जल० } गु० निर्मल, चोखा, चमकीला,
उज्ज्वल० } साफ़, सुंदर।
उझकति० गु० झांकति, ताकत।
उझकना० अ० क्रि० देखना, स० क्रि० निकालना।
उटंगन० ना० स्त्री० पौधा विशेष, और नदी जो ग्वालियर के पास है।
उठंगन० ना० पु० टेकन।
उठना० अ० क्रि० खड़ाहोना।
उठबैठ० ना० स्त्री० घबराहट, साधन विशेष।
उठवैया० ना० पु० उठानेवाला।
उठान० ना० पु० उत्थान, दिखाई।
उठाना० स० क्रि० खड़ाकरना, ऊपर लेजाना।
उड़ना० अ० क्रि० भागना।
उड़ान० ना० स्त्री० उड़ने की चाल।
उड़ाना० स० क्रि० उड़ादेना, भगादेना।
उड़ाऊ० ना० पु० लुटेरा, बहुत खर्च करवैया।
उडु० ना० पु० पक्षी, नक्षत्र, मेघ, ग्रह।

उडुगण० ना० पु० तारागण।
उडुप० ना० पु० घरनई, बेड़ा।
उड़िया० ना० स्त्री० उँड़सादेश की भाषा।
उड्डी० ना० स्त्री० नाव।
उड़ैसा० ना० पु० देशविशेष जहां श्रीजगन्नाथ पुरुषोत्तम विराजमान हैं।
उड़ान० ना० स्त्री० उड़ान, संस्कृत में नपुंसक।
उढ़ना० स० क्रि० ओढ़ना, ना० पु० ओढ़ने का वस्त्र।
उढ़ाना स० क्रि० ओढ़ाना, ढापना।
उत० अव्य० उधर, उधर, जिस शब्द के प्रथम में यह युक्त हो उसका अर्थ अधिक लिया जाता है।
उतंग० } गु० ऊंचा, धामायणे यथा (यानि
उत्तुंग० } उतंग जलनिधि चहुपासा)।
उतरना० अ० क्रि० नीचेआना।
उतला० गु० उतावल।
उताना० गु० उलग, ऊपर को पाव किये।
उतार० ना० पु० नीचेआना, नीचला।
उतारना० स० क्रि० नीचेलाना, दूरि करना।
उतारा० ना० पु० ढालू, अपमान, न्युछेती, पारजाना।
उतावल० ना० स्त्री० शीघ्रता, जल्दी।
उतावला० गु० वेगी, शीघ्र, फुर्तीला।
उतावली० ना० स्त्री० शीघ्रता, फुर्ती, गु० फुर्तीली।
उताहिल० गु० शीघ्र, जल्द।
उत्कट० गु० बरजस्त, उसी समय, तेजअधिक।
उत्कण्ठा० ना० स्त्री० अभिलाषा, चाहना।
उत्कर्ष० ना० स्त्री० बड़ाई।
उत्कल० ना० पु० उँड़ैसा देश, उँड़ैसा के वासी।
उत्क्रम० ना० पु० ऊपर चढ़ना।
उत्कृष्ट० गु० अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम।
उत्तमगन्धा० ना० स्त्री० मालती।
उत्तमांग० ना० पु० शिर, शीश।
उत्तमाशा० ना० स्त्री० अफ्रिका के दक्षिण की अन्तरीप, केपगुड्होप।
उत्तर० ना० पु० प्रश्न का नेवरू जवाब दक्षिण के सन्मुख की दिशा, राजाविराट् का पुत्र।
उत्तरकेन्द्र० ना० पु० जिस को भास्कराचार्य शास्त्री ने निज ग्रन्थ में सुमेरु लिखा है, यह स्थान अत्यन्त शीत के कारण अगम्य है।
उत्तरकोशल० } ना० पु० अवधदेश।
उत्तरकोशला० }
उत्तरखण्ड० ना० पु० उत्तर का देश।
उत्तरा० ना० स्त्री० राजाविराट् की कन्या जो अभिमन्यु को विवाही थी।
उत्तराधिकारी० ना० पु० मरने के पीछे जो धनाधिकारी।
उत्तराफाल्गुनी० ना० स्त्री० बारहवानक्षत्र।
उत्तराभाद्रपद० ना० पु० छब्बीसवां नक्षत्र।
उत्तरायण० ना० पु० माघादि छ मास।
उत्तरार्द्ध० गु० पिछिला आधा।
उत्तराषाढ़० ना० स्त्री० इकीसवा नक्षत्र।
उत्तराहा० गु० जो उत्तर दिशा का है।
उत्तरी० गु० उत्तर का।
उत्तरीय० ना० स्त्री० ओढ़नी, रामचंद्रिकाया यथा (पदपद्म की शुभ घूघरी, मणि नीलहाटक सा जरी, पुन उत्तरीय विचारिकै, भुवडारि दी पग टारिकै) गु० उत्तर देश का पदार्थ वा मनुष्यादि।
उत्तरोत्तर० अव्य० आगे आगे।
उत्तानपत्र० ना० पु० दोना अरण्ड।
उत्तानपाद० ना० पु० राजा विशेष, ध्रुव का पिता।
उत्ताल० गु० शीघ्र, जल्दी, वेग।
उत्तीर्ण० गु० पार पहुँचा, निर्मुक्त।
उतू० ना० पु० चुनावट, चुनाई वस्त्रादिकी।
उत्थान० ना० पु० उठान, उद्योग।

उत्थापन० ना० पु० उठाना, न थपना।
उत्थित० गु० उठा हुआ।
उत्पत्ति० ना० स्त्री० जन्म, पैदायश।
उत्पन्न० गु० जन्मा, प्रकटा।
उत्पल० ना० पु० कमल, कोई।
उत्पाटन० ना० पु० जड़समेत उखाड़ना।
उत्पात० ना० पु० अशुभ का सूचक, उपद्रव।
उत्पादन० ना० पु० जन्मावना, पैदाकरना।
उत्प्रेक्षा० ना० स्त्री० ढील, सदृशता।
उत्सर्ग० ना० पु० देवतादि के लिये द्रव्य का त्याग, वितरण, किसी प्रकार की आज्ञा।
उत्सव० ना० पु० आनन्द, यज्ञ, अर्धोत्सव।
उत्साह० ना० पु० उद्योग, आनन्द।
उथपन० ना० पु० उखाड़ना, उठाना।
उथपना० स० क्रि० उठादेना, उखाड़ डालना।
उथपित० गु० उठाया गया।
उथलना० अ० क्रि० उलटना।
उथलपुथल० गु० उलट पुलट।
उथला० गु० छिछला, थोड़ा गहिरा।
उदक० ना० पु० जल, पानी।
उदघाटी० ना० स्त्री० उदयता, उदयाचलकी घाटी।
उदधि० ना० पु० समुद्र।
उदधिनन्द० ना० पु० चन्द्रमा।
उदनपाक्य० ना० पु० पियावासा, पाधा।
उदन्वान्० ना० पु० समुद्र, सागर।
उदमाते० गु० मत्त, मस्त, मतवाला।
उदय० ना० पु० प्रकटना, शोभा, ज्योति।
उदयगिरि०, उदयाचल० } ना० पु० पर्वत विशेष जहां सूर्योदय होता है।
उदयास्त० ना० पु० सूर्योदय से सूर्यास्ततक, उदयाचलसे अस्ताचलतक।
उदर० ना० पु० पेट।
उदरनि० ना० पु० पेटका बहुवचन भाषा में।
उदरवृद्धि० ना० पु० जलधर रोग विशेष।
उदरै० गु० फटे।
उदात्त० ना० पु० ऊंचा स्वर।
उदान० ना० पु० पंच प्राणमेंसे एक।
उदार० गु० पु० दाता, सरो।
उदारता० ना० स्त्री० दातापन, दातव्यता।
उदास० ना० पु० एकान्त, गु० निराला, निर्मोह, दुःखसुखसमानजाता, मनमलिन।
उदासी० ना० पु० एकान्ती, ना० स्त्री० मलिनता, गु० मनमलिन, एक प्रकार के साधु वा धर्म यथा नानकपंथी, जो मनुष्य शत्रुमित्र रहित संसार में विचरे।
उदासीन० गु० जिसका कुल शील नहीं जाना अर्थात् पाहुन, समानवर्ती, गृहस्थाश्रमरहित।
उदाहरण० ना० पु० दृष्टान्त, मिसाल।
उदित० आविर्भूत, प्रकाशित, रोशन।
उदीची० ना० स्त्री० उत्तर दिशा।
उदीच्य० ना० पु० ऐरावती नदी के उत्तर *और पश्चिम का देश।*
उदुम्बर० ना० पु० गूलरवृक्ष, ताम्रधातु।
उदूखल० ना० पु० गूगल।
उद्गार० ना० पु० डकार, वमन, छर्दि।
उद्गारचोची० गु० हो दुःख [illegible] हारा।
उद्घाटन० ना० पु० कूप से पानी निकालने के लिये डाल रस्सी, चम्पा पुरवैया।
उद्दाल० ना० पु० कचनार।
उद्दालक० ना० पु० एकमुनिका नाम है।
उद्दिष्टलोहित० ना० पु० लालचंदन।
उद्दीत० गु० प्रज्वलित, अतिप्रकाशित।
उद्देश०, उद्देश्य० } ना० पु० अन्वेषण, प्रीतिकी कामना निमित्त, व्याकरण में जिसका समाचार कहाजावे।
उद्धत० गु० कचाल, अभिमानी, ना० पु० राजाका मल्ल।
उद्धार० ना० पु० अकम्प, त्राण, रक्षा, छुट्टी।

उद्धारण० ना० पु० छोड़ना, छुटना।
उद्धारना० स० क्रि० छुड़ाना, प्राण देना।
उद्भव० ना० पु० जन्म, पैदायश।
उद्भिज० } ना० पु० वृक्षतृणादि जो पृथ्वी पर
उद्भिद० } उगते हैं
उद्यत० ना० पु० गु० परिश्रमी, तैयार।
उद्यम० ना० पु० उद्योग, उपाय रोजगार।
उद्यान० ना० पु० राजाका उपवन, खाल निमित्त।
उद्योग० ना० पु० उद्यम, उत्थान।
उद्योत० ना० पु० प्रकाश, चमक।
उद्वाह० ना० पु० विवाह।
उद्विग्न० गु० अधीरज, व्याकुल।
उद्वेग० ना० पु० व्याकुलता, घबराहट, गड़बड़, दुःख।
उद्बोध० ना० पु० स्मरण।
उधर० अव्य० वहां।
उधार० ना० पु० करज।
उधारन० ना० पु० छुड़ाने हारा।
उधारना० स० क्रि० छुड़ाना, मुक्तिदेना।
उधेड़ना० स० क्रि० सुलझाना, खोलना।
उनचास० गु० चालीस और नौ ४९।
उनतालीस० गु० तीस और नौ। ३९
उनतीस० गु० बीस और नौ २९।
उनये० गु० घटा दबिआये।
उनसठ० गु० पचास और नौ ५९।
उनासी० गु० सत्तर और नौ ७९।
उनींदे० गु० नींदभरे।
उनीस० गु० दश और नौ १९।
उन्दुर० ना० पु० चूहा, मूस।
उन्नत० गु० ऊंचा, बलंद।
उन्नति० ना० स्त्री० उचाई, बढ़ती।
उन्मत्त० } गु० मतवाला, विक्षिप्त, सिड़ी और
उन्मद० } अष्टभैरव में एक उन्मत्तनामी है।
उन्माद० ना० पु० चित्तभ्रम, सिड़पन।
उन्मादन० ना० पु० रोगविशेष जिसमें चित्त भ्रम होकर सिड़पन होजाता है।
उन्मुख० ना० पु० ऊर्ध्वमुख, ऊपर देखना।
उन्मेष० ना० पु० पलक, झपक।
उन्हार० ना० स्त्री० ढाल, गु० रूप, समान, सदृश।
उप० अव्य० समीप, यह जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी अधिकाई कभी समीपता कभी न्यूनता अधिक हो जाता है।
उपकण्ठ० ना० पु० किनारा, तट।
उपकरण० ना० पु० सामग्री, सामान।
उपकानन० ना० पु० कृत्रिमवन, बाग।
उपकार० ना० पु० कृपा, सहायता, अहसान।
उपकारी० गु० कृपावन्त, सहायक, मुफिद, लाभ युत, फायदमंद।
उपकाञ्चिका० } ना० स्त्री० कलौंजी।
उपकुञ्चिका० }
उपक्रम० ना० पु० प्रारम्भ, धोखा।
उपगति० गु० निमवस्तु के लिये वार्तादिया।
उपग्रह० ना० पु० बंधुआ, कृपा, सहायता, भहसम्बन्धी तारा।
उपचार० ना० पु० उपाय, सेवा, वैद्यकाई, व्यवहार, धूम।
उपज० ना० स्त्री० जो तत्काल में कहाजावे अथवा पायाजावे।
उपजाना० अ० क्रि० उगना, बढ़ना, जन्मना
उपजा० गु० जन्मा, उगा, पैदाहुआ।
उपजाऊ० गु० उपजनेहारा।
उपजाना० स० क्रि० उपसवरना, सिरजना।
उपजित० गु० जो उत्पन्न भया, जमिन।
उपजीविका० ना० स्त्री० जीविका, वृत्ति।
उपड़ना० अ० क्रि० उखड़ना।
उपताप० ना० पु० रोग, पुर्त, उष्मता, पीड़ा।
उपदंश० ना० पु० सनाद, सुजाक।

उपदा० ना० स्त्री० भेंट।
उपदेश० ना० पु० शिक्षा, मन्त्र, दान।
उपदेशक० } गु० जो उपदेश देवे, गुरु।
उपदेशी० }
उपद्रव० ना० पु० उत्पात, अन्याय और विग्रह, बखेड़ा।
उपद्रवी० गु० बखेड़िया, उत्पाती।
उपद्वीप० ना० पु० द्वीप समीप, छोटाटापू।
उपधान० ना० स्त्री० तकिया, रजाई।
उपधि० गु० साथी राहका, धोखा।
उपनन्द० ना० पु० नन्दकी सन्तान वा उनके सम्बंधी।
उपनयन० ना० पु० ब्राह्मणादि तीन वर्णों का यज्ञोपवीत अर्थात् जनेउ धरणके हेतु संस्कार।
उपनाम० ना० पु० पदवी, खिताब वा एकही मनुष्य का द्वितीयनाम अथवा कुटुम्बी यथा लाला, साह, तिवारी।
उपनिषद्० ना० स्त्री० वेदका रहस्यभाग।
उपनेत्र० ना० पु० चश्मह, ऐनक।
उपपति० ना० पु० जार, द्वितीय कन्त स्त्रीका।
उपपत्ति० ना० स्त्री० मुख्यता, सबूत।
उपपातक० ना० पु० महापाप, यथा गोवधादि।
उपमा० ना० स्त्री० समानता, दृष्टान्त, नजीर।
उपमान० ना० पु० सादृश्य, जिसमें उपमा दीजावे यथा कमलनयन यहां कमल उपमान और नयन उपमेय है।
उपमेय० ना० पु० जिसको उपमादीजाती है।
उपयुक्त० गु० योग्य।
उपयोगी० गु० अनुकूल, लाभकारी, मुफ़ीद।
उपराग० ना० पु० चन्द्रमा सूर्य का ग्रहण वा विषयभोग।
उपराजा० ना० पु० युवराज, राजा का नायब।
उपरान्त० अव्य० पीछे, पश्चात्।
उपराम० ना० पु० संसारी सुख की निवृत्ति, वैराग्य, उपरी।
उपराला० ना० पु० सहायता, मदद, अधिक।
उपरि० अव्य० ऊपर।
उपरोध० ना० पु० संकोच, सहायता, बड़ाई, गौरव।
उपर्ना० ना० पु० अंगौछा, एकपट्टा, ओढ़नी।
उपल० ना० पु० पत्थर।
उपलक्षण० ना० पु० थोड़ा जिससे समूचा समझाजावे, गु० जिससे गुणी जानाजावे।
उपला० ना० पु० कण्डा।
उपवन० ना० पु० कृत्रिम वन, आराम, बाग।
उपबर्ह० } ना० पु० तकिया, सिरहाना।
उपबर्हण० }
उपवास० ना० पु० व्रत, लंघन, रोजह।
उपवीत० ना० पु० यज्ञोपवीत, जनेउ।
उपवेद० ना० पु० जो विद्या वेदों से निकली है और चारि उपवेद हैं अर्थात् आयुष्, गान्धर्व, धनुष्, धर्मशास्त्र।
उपशम० ना० पु० शान्ति, समाई।
उपशास्त्र० ना० पु० विद्या जो शास्त्रसे निकलीहै।
उपस० ना० स्त्री० दुर्गंधि, सड़ाहिंद।
उपसना० अ० क्रि० उबसना, सड़ना।
उपसर्ग० ना० पु० क्रिया के साथ संयुक्त जो प्र, परा, अप, सम् इत्यादि।
उपस्थ० ना० पु० स्त्री० लिंग, योनि।
उपस्थित० गु० सम्मुखागत, प्राप्त, तैयार।
उपसागर० ना० पु० छोटा समुद्र, समुद्रका भाग।
उपहार० ना० पु० भेंट, नजर, पूजा।
उपहास० ना० पु० ठट्ठा, हँसी।
उपाख्यान० ना० पु० पुराण की कथा।
उपाटना० स० क्रि० उखाड़ना।
उपादान० ना० पु० विभेदरूप, निमित्त कारण।
उपाधि० ना० स्त्री० उपद्रव, अन्याय, समीप, भ्रम, माया, बाधा, ना० पु० स्वामी, मालिक, धर्मकी चिन्ता, गु० छल, कपट।

उपाधी० गु० अधर्मी, उपद्रवी, अन्यायी।
उपाध्या० ना० पु० ब्राह्मणजाति विशेष।
उपाध्याय० ना० पु० अध्यापक, पढ़ानेहारा।
उपाना० स० क्रि० सिरजना, उत्पन्न करना, उपार्जन करना।
उपानत्० ना० पु० जूता।
उपान्त्य० ना० पु० अन्त्य अक्षर का पूर्ववर्णादि।
उपाय० ना० पु० उद्योग, यत्न, रीति तदबीर।
उपायी० गु० उद्योगी, यत्नी।
उपार्जन० ना० पु० विद्या वा धनादिका सग्रह, कमाई, प्राप्त।
उपार्जित० गु० जो प्राप्त भया, कमाया।
उपालम्भ० ना० पु० उलाहना।
उपास० ना० पु० व्रत, उपवास।
उपासक० } उपासा० } गु० जो उपासना करे, सेवक।
उपासना० ना० स्त्री० सेवा, टहल, अनुवृत्ति देवादि विषय भावना विशेष।
उपास्य० गु० उपासना के योग्य, आराध्य।
उपेक्षा० ना० स्त्री० धोखा, त्याग।
उफना० } उफलाना० } अ० क्रि० उबलना, जोशखाना।
उफाल० ना० पु० कूर्दन, कूदनि, कूदना।
उबकना० अ० क्रि० वमन होना, जीमलकनाई।
उबकाई० ना० स्त्री० वमन जीकी मलक।
उबकाई० अ० क्रि० वमन, करना, उखालकरना।
उबटन० ना० पु० वस्तु आटा वा बेसन वा सरसों जिससे देहका मैल छुड़ाते हैं।
उबटना० स० क्रि० उबटन लगाना।
उबरना० अ० क्रि० बचना।
उबरा० गु० बचा।
उबजना० अ० कि० खलबलाना, खीजना।
उबाल० ना० पु० खलबलाहट के पीछे उफनाना।
उबसना० अ० क्रि० सड़ना, दुर्गन्धि करना।
उबसाना० स० क्रि० सड़ना।
उबारना० स० क्रि० बचाना, छुड़ाना।
उबारु० ना० पु० बचाव, छुटकारा।
उबलाना० स० क्रि० पकाना, उसीजना।
उभक० ना० पु० रीछ, भालू।
उभय० सर्व० गु० दो।
उभरना० अ० क्रि० उठना, निकला, उमड़ना।
उभार० ना० पु० उठान, फुलावट, गुमड़ा।
उभारना० स० क्रि० फूलाना० उठाना।
उभौ० ना० पु० दोनों।
उमगा० गु० फूला, उठा।
उमगाना० स० क्रि० फुलाना, उठाना, मन बढ़ाना।
उमंग० ना० स्त्री० मग्नता, धुन, तृष्णा, चाह।
उमंगना० अ० क्रि० उमगसे आगेजाना।
उमंगी० गु० धुना, अभिलाषी।
उमण्डना० } उमड़ना० } अ० क्रि० उभरना, घिरना।
उमरी० ना० स्त्री० गूलरवृक्ष
उमहाना० अ० क्रि० उमड़ना।
उमा० ना० स्त्री० पार्वती, भवानी।
उमानाथ० ना० पु० श्रीमहादेव जी।
उर० ना० पु० छाती, गोदी, हृदय।
उरग० ना० पु० साप, सर्प।
उरगना० स० क्रि० सहना, जोगवना, रामचन्द्रिकायां यथा (आइ भरथ कहा धौ करे जिय भाय गुनो जो दुख देय तौ लै उरगौं बातसुनौ)।
उरभ्र० ना० स्त्री० भेड़ी।
उरगाद० } उरगारि० } ना० पु० गरुड़, मयूर और न्योला।
उरझना० अ० क्रि० अटकना, लगना।
उरला० गु० इधरका।
उरु० ना० स्त्री० जघका ऊपरीभाग, गु० बहुत।
उर्णा० ना० स्त्री० भेड़ी।

र्मि० ना० स्त्री० लहरी, वीची।
र्द० ना० पु० माष, अन्नविशेष।
र्वरा० ना० स्त्री० उपजाऊ धरती, खेती के योग्य।
उर्विज० ना० पु० जो धरतीमें उपजाहै, मंगल।
उर्विजा० ना० स्त्री० श्रीजानकीजी।
उर्वशी० ना० स्त्री० मुख्यअप्सरा, मनवसी, धुकधुकी, आभरण।
उर्वी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
उरमण्डन० ना० पु० कुच, स्तन, चूंची।
उरहन० ना० पु० गिला, शिकायत।
उरोज० ना० पु० कुच, स्तन।
उलझनि० ना० स्त्री० फँसाव, अटकाव।
उलझना० अ० क्रि० फँसना, लपटना, स० क्रि० झगड़ना।
उलझाना० स० क्रि० फँसाना, अटकाना, भिड़ाना, लपटाना।
उलझेड़ा० ना० पु० उलझन, फँसाव।
उलटना० स० क्रि० पलटना, फेरना, अ० क्रि० औंधा होना, उलटिजाना।
उलटा० गु० औंधा, पलटा।
उलटाना० स० क्रि० औंधाना, पलटना।
उलटापुलटा० गु० गटपट, नीचेऊपर।
उलथना० अ० क्रि० लहराना।
उलथा० ना० पु० उल्था, तर्जुमा, रागिनी विशेष, नृत्यभेद।
उलहना० ना० पु० दोष, निन्दा, गिला, अ० क्रि० उगना, लहलहाना।
उलाहना० ना० पु० गिला, शिकायत।
उलूक० ना० पु० उल्लू, दिवान्ध, घुघुघ्घी।
उलूखल० ना० पु० ओखरी।
उलूपी० ना० स्त्री० मछली, बभ्रुवाहनकी माता।
उल्का० ना० पु० लूका, अग्नि वा तारा जो आकाश से गिरता है वा दीपक का फूल।
उल्कापात० ना० पु० ताराछूटना, लूकागिरना, उपद्रवीय कारण होना, आश्चर्य।
उल्था० ना० पु० उलथा, तर्जुमा, नृत्यविशेष।
उल्मुक० ना० पु० लूका, कोयल, जलीलकड़ी,
उल्लंघन० ना० पु० अन्यथा, या भंग करना या न मानना, लांघिजाना।
उल्लाला० ना० पु० छन्दविशेष।
उल्लास० ना० पु० मेल, लेश।
उल्लू० ना० पु० पक्षीविशेष, मूर्ख, अहमक।
उल्लूपन० ना० पु० मूर्खता, अहमकी।
उशीर० ना० पु० तृणविशेष की जड़ जिस में गन्धि होती है खस।
उशना० ना० पु० शुक्राचार्य्य, स्मृतिविशेष।
उष्ट्र० ना० पु० ऊंट।
उष्ण० ना० पु० गर्म, तैप, तपन, गरमी।
उष्णकटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी का मध्यस्थान अर्थात् मध्यरेखा के उत्तर २३½ अंश और दक्षिण २३½ अंशतक।
उष्णज० ना० पु० वनस्पति जो पृथ्वी पर उगते हैं।
उष्णीष० ना० पु० पगड़ी, मुकुट।
उसन्ना० अ० क्रि० उबलना, पकना
उसरना० अ० क्रि० टलना, पीठदेना।
उसाना० स० क्रि० उबालना, धुरकाना।
उसारा० ना० पु० ओसारा, डेवढ़ी।
उसास० ना० पु० स्वास, दम।
उसासी० ना० स्त्री० फुरसत, कल।
उसाहि० गु० कुसमय, बेमौसम।
उसीजना० स० क्रि० उबलना।
उसीसा० ना० पु० सिरहाना, तकिया।
उस्तर० गु० सेंत बिनमोल।
उहरना० क्रि० बैठना, दबना।

(ऊ)

ऊंघ० ना० स्त्री० सोवना, झपकी, नींद।
ऊंघना० अ० क्रि० नींदआना, झपकी आना।
ऊंघाई० ना० स्त्री० ऊंघ।
ऊंचा० गु० उच्च, बलन्द।
ऊंट० ना० पु० पशुविशेष।

ऊटक्टारा० ना० पु० मरमोंड़।
ऊटक्टीरा० ना० पु० पोधा विशेष।
ऊकारान्त० गु० जिस शब्द के अंत में ऊ-कार है।
ऊख० ना० स्त्री० गन्ना वा गन्नेका खेत।
ऊखल० ना० पु० बड़ीऽउखली।
ऊखाड़ी० ना० पु० गन्ना वा खेत।
ऊत० ना० पु० मनुष्य जो सतानहीन मरे, विरोध, अविवाहित, अतिदुष्ट वा मूर्ख।
ऊतर० ना० पु० उत्तर, जवाब।
ऊत्क्रम० गु० विपरीत क्रम, विना मिलान, बेमिलसिल।
ऊदबिलाव० ना० पु० जलजन्तु विशेष।
ऊदा० गु० भूरा।
ऊदाई० } ना० स्त्री० कपिल भूरापन।
ऊदाहट० }
ऊधौ० ना० पु० श्रीकृष्ण का एक सखा।
ऊन० ना० स्त्री० भेड़ी आदि के बाल, थोड़ा, न्यून।
ऊनविंश० } ना० पु० उन्नीस।
ऊनविंशति० }
ऊना० ना० पु० लक्षविशेष, योग।
ऊनी० गु० जो ऊनसे बना है।
ऊपर० ना० पु० उपरि।
ऊपरिस्थ० गु० ऊपर ठहरा भया।
ऊबट० गु० औघट, अगम्य, कुमार्ग।
ऊमरि० ना० स्त्री० गूलरिका वृक्ष।
ऊर्ज्ज० ना० पु० कार्तिकमास।
ऊर्णा० ना० पु० मेषादि के लोम, ऊन।
ऊर्णनाभि० ना० स्त्री० मकड़ी।
ऊर्णायु० ना० स्त्री० भेड़ी।
ऊर्ध्व० गु० ऊपर।
ऊर्ध्वकण्डा० ना० स्त्री० बड़ी सनावरि।
ऊर्ध्वतिक्त० ना० पु० चिरायता।
ऊर्ध्वपुण्ड० ना० पु० वैष्णवोंतिलक।
ऊर्ध्वरेता० ना० पु० सन्यासी, ऋषि और जितेंद्रिय, जिसका स्त्रीप्रसंग में वाम पतन न हो।
ऊर्ध्वश्वास० } ना० पु० ऊपरकी श्वासा।
ऊर्ध्वसास० }
ऊर्ध्व० अव्य० ऊपर।
ऊर्मिला० ना० स्त्री० सज्ञा विशेष।
ऊलूथा० ना० पु० तृण विशेष।
ऊषण० ना० पु० कालीमिरच और पीपरामूल।
ऊष्मा० ना० स्त्री० गर्मी, क्रोध, रोष।
ऊपर० ना० पु० ऊसर।
ऊपरपा० ना० पु० खरीलोन।
ऊषा० ना० स्त्री० बाणासुर की कन्या।
ऊषाकाल० ना० पु० प्रात काल, तड़का।
ऊसर० ना० पु० वह धरती जिसमें अन्न आदि उत्पन्न नहीं होता है।
ऊह० ना० पु० तर्क।

(ऋ)

ऋक्० } ना० पु० प्रथम वेद।
ऋग्० }
ऋकारान्त० गु० जिस शब्द के अंत में ऋ-कार हो।
ऋचा० ना० स्त्री० वेदके मंत्र।
ऋजु० गु० सरल, सीधा।
ऋजुभुज० गु० सीधीरेखा वा भुजा मेंड़।
ऋजुभुजक्षेत्र० ना० पु० वह क्षेत्र जो कई सूधी रेखाओं से घिरा हो।
ऋण० ना० पु० उधार, कर्जह।
ऋणक० गु० कर्जेदार।
ऋणिया० गु० धरता, करजी।
ऋणी० पु० करजदार।
ऋतु० ना० स्त्री० वसंतादि छ, अर्थात् वसन्त १, ग्रीष्म २, वर्षा ३, शरद ४, हेमन्त ५, शिशिर६, और रज, समय, मौसम।
ऋतुमती० ना० स्त्री० रजस्वला, कपड़ों से।
ऋतुराज० ना० पु० वसंत बहार।

ऋद्धि० } ना० स्त्री० पार्वतीजी, औषधि, पो
ऋधि० } धा विशेष, धन, सम्पदा।
ऋषि० ना० पु० वेदज्ञ, मुनि और तपस्वी।
ऋषिपति० ना० पु० ऋषियों में जो प्रधान, बहु विद्यानिधान, भागवतधर्मी।
ऋषिमित्र० ना० पु० शातमिथ, ऋकारों का दास्त, रामचन्द्रिका में विश्वामित्र बाधर।
ऋषिराज० }
ऋषीश० } ना० पु० ऋषिपति।
ऋषीश्वर० }
ऋषभ० ना० पु० राग, स्वर, विशेष, श्रेष्ठ।
ऋक्ष० ना० पु० भालू, रीछ, तारा।
ऋक्षपति० }
ऋक्षराज० } ना० पु० जाम्बवन्त और चन्द्रमा।
ऋक्षेश० }

[ए]

ए० अव्य० ग्यारहवां अक्षर, सम्बोधनका सूचक।
एक० गु० गिनती का प्रथम अंक, अद्वितीय १।
एककाल० गु० समान समय, और एकसमय।
एककालीन० गु० समानकाल में उत्पन्न भया, हम उमर।
एकटक० ना० पु० एक ताकसे देखना।
एकट्ठा० गु० जो एक स्थान में जमाकिया वा भया है।
एकतराज्वर० ना० पु० अंतरिया, तिजरा वा तिजारी।
एकतही० ना० पु० एक जगह, ना० स्त्री० मि रजाई।
एकता० ना० स्त्री० एकाई, मेल, समानता।
एकतान० गु० एकमति, दुबिधारहित।
एकदा० अव्य० एकसमय।
एकरस० गु० षट्भाव विकाररहित।
एकरूप० ना० समभार।
एकलोटा० } गु० जो लड़का अपने मातापिता
एकलोता० } का अकेलाहोवे।
एकवचन० गु० बात एक मुख्य नर।
एकवर्णात्मक० गु० जिस शब्दमें एक अक्षरहै।
एकसर० गु० एकमति, दुबिधारहित।
एकसा० गु० समान, बराबर।
एकसार० समान, एकरस।
एकछत्र० ना० पु० बिनाझगड़के, एकहीराज्य।
एकत्र० अव्य० एकठौर, एकस्थाने।
एकत्रता० ना० स्त्री० एकठौर होना।
एकाई० ना० स्त्री० एकता।
एकाएकी० अव्य० अचानक, एकबार में।
एकाकार० गु० समान रूप, कलिधर्म, एकजाति, एकाचार, ब्राह्मणादि का विशेष वर्ण धर्मको त्यागिके पश्वादि समान रहना।
एकाकी० गु० अकेला।
एकाग्र० गु० एकमन, एकमति, दुबिधारहित।
एकांक० गु० निश्चयकरि, सत्य।
एकादशी० ना० स्त्री० पखवी ग्यारहवींतिथि।
एकाधिपति० ना० पु० अनेकदेशोंका एकराजा।
एकान्त० गु० निराला, निपट, निर्जनस्थान।
एकान्तर० ना० पु० एकआर।
एकान्तरकोण० ना० पु० एकआरका काना।
एकायन० गु० एकमति, एकमार्ग।
एकारान्त० गु० जिस शब्दके अन्तमें एकारहो।
एकाक्ष० ना० पु० काग, काना।
एकैकांक० अव्य० निश्चयकरि, सत्य।
एकैक० गु० प्रत्येक, हरएक।
एड़० ना० स्त्री० घोड़ेका दौड़ाने वा चलाने के निमित्त पांवके पिछले भागसे ठोकरमारना।
एड़ी० ना० स्त्री० पांवका पिछलाभाग।
एण० ना० पु० पाप, हानि, मृग, हरिण, कपट।
एणी० ना० स्त्री० हरिणी।
एणीन० ना० स्त्री० एणीका बहुवाक्य।
एणमद० ना० पु० कस्तूरी, मुश्क।
एतदर्थ० अव्य० इसलिये।
एतना० गु० इतना, इसकदर।
एतान० गु० इतने, इसकदर, इसप्रकार।

एतादृश० गु० ऐसे, इसप्रकार।
एतावता० अव्य० ईसकरके, इसकारण।
एतावन्मात्र० गु० इतनाही, यही केवल।
एरण्ड० ना० पु० अरण्ड, रेंड।

एलवा०
एलवालुक०
एलवालु०
} ना० पु० औषधि विशेष अर्थात् मुसन्बर।

एला० ना० स्त्री० इलायची।
एलोई० ना० पु० हे हमारे ईश्वर।

एव०
एवं०
एवम्०
} अव्य० इसप्रकार, और।

एवमस्तु० अव्य० ऐसाही हो।

[ऐ]

ऐंच० ना० पु० सकोच, खैंच।
ऐंचना० स० क्रि० खैंचना।
ऐंठ० ना० स्त्री० बल, मड़ोड़।
ऐठना० स० क्रि० मरोड़ना, बलदेना, अ० क्रि० बलखाना, मरुड़िजाना।
ऐकाधिपत्य० ना० पु० अद्वितीय देशाधिपत्य, पदवी।
ऐकाहिक० ना० पु० अंतरिया।
ऐक्य० ना० पु० एकता, समानता।
ऐगुन० गु० औगुण।
ऐनमैन० गु० ज्योंकात्यों।
ऐन्द्रजालिक० ना० पु० नटवर, दिठबंध।
ऐरावत० ना० पु० इन्द्रका हाथी।
ऐरावती० ना० स्त्री० नदी विशेष।
ऐषक्रा० ना० स्त्री० ककरासिंगी।
ऐश्वर्य्य० ना० पु० विभव, माहात्म्य, सम्पत्ति, प्रताप, बढ़ती।

ऐश्वर्यवान्०
ऐश्वर्यशाली०
} गु० सम्पत्ति करके इशो भित।

ऐसा० गु० इसप्रकार, इसके समान।
ऐहिक० गु० इसलोक के भोग, जो इहा ही पै।

[ओ]

ओ० अव्य० सम्बोधन, करुणा, स्मृति।
ओंठ० ना० पु० ओष्ठ, होंठ।
ओंडा० गु० गम्भीर।
ओंधा० गु० औंधा, रस्सी जो ऊपर में बांधते हैं।
ओक० ना० पु० घर, आश्रय ठिकाना, ना० स्त्री० उबकाई।
ओकना० अ० क्रि० वमन करना, उछाल करना।
ओकारान्त० गु० जिसके अंतमें ओकार है।
ओखली० ना० स्त्री० गारी, उलूखल।
ओघ० ना० पु० समूह, बहुतायत।
ओछा० गु० छिछोरा, हलका, छोटा।
ओज० ना० पु० प्रताप, बल, तेज।
ओझ० ना० पु० पचौनी, झाझ, पेट।
ओझड़० ना० स्त्री० झोंक, धक्का।
ओझड़ी० ना० स्त्री० पचौनी, घात।
ओझल० ना० स्त्री० ओट, छुपाव, गु० जो छुपा है।
ओझा० ना० पु० भोपा, टोनहा, यदी या शास्त्रधर्मी।
ओट० गु० स्त्री० आड़, पक्ष।
ओटना० स० क्रि० आड़ करना, बचाना, रेतनी, रुईसे बिनोला निकालना, रोकना।
ओटा० ना० पु० आड़, बेठन।
ओड़न० ना० स्त्री० ढाल, फरी।
ओडना० स० क्रि० सहना रोकना।
ओड़ा० ना० पु० खाचा, बड़ा टोकरा।
ओढ़ना० स० क्रि० पहिरना, ना० पु० रजाई, पट्टू, लोई आदि।
ओढ़नी० ना० स्त्री० स्त्रियों का ओढ़ना।
ओत० ना० स्त्री० बढ़ोतरी, बचती, हीनता
ओतप्रोत० ना० पु० तानाबाना, चौड़ाई, लम्बाई में ग्रथित, पलटे पर विवाह।
ओदन० ना० पु० भात, चावल पके।

ओदा० गु० गीला, भीगा।
ओधे० गु० अधिकारी, लाग।
ओप० ना० स्त्री० सुन्दरता, चमचमाहट, घोट।
ओपना० स० क्रि० घाटना, साफ़करना।
ओपनी० ना० स्त्री० वह पत्थर जिस पर जिला करते हैं।
ओपी० अव्य० उधर, कि, गु० साफ़ की।
ओर० ना० स्त्री० दगर, मार्ग, अलँग।
ओरी० गु० पक्ष, पक्षा, मदद, ना० स्त्री० ओलती।
ओल० ना० पु० शरण, जिम्मेदार, मनाती, बदले।
ओलती० ना० स्त्री० ओरौनी, ओरी।
ओला० ना० पु० जलमय पत्थर और चीनी शक्कर का जो बनता है।
ओषधि० ना० स्त्री० जो पौधा फल भरजाने के पीछे फिर से उत्पन्नहो।
ओष्ठ० ना० पु० दांतों का ढकना, होंठ।
ओस० ना० स्त्री० जो रात्रि समय छोटी २ फुहार पड़ती है, शीत।
ओसर० ना० स्त्री० कलोर भैंस।
ओसरा० ना० पु० } पारी, बारी, पती
ओसरी० ना० स्त्री० }
ओसीसा० ना० पु० उसीसा, सिरहानी।
ओहो० अव्य० वाहवाह, आहा।

[औ]

औ० अव्य० और।
औंगी० ना० स्त्री० चुप्पी, झुकापन, चुपड़ीहुई गाड़ी।
औंघाना० अ० क्रि० झपकी आना।
औंड० ना० पु० बेलदार।
औंडा० गु० गम्भीर।
औंधना० अ० क्रि० उलटना, उमण्डना।
औंधा० गु० उलटा।
औंधाना० स० क्रि० उलटाना।

औकारान्त० गु० जिसके अन्तमें औकारहै।
औघट० गु० अगम्य, जहां जाय न सके।
औचक० } अव्य० अचानक, नागहान।
औचट० }
औछ० ना० पु० जड़विशेष।
औटन० ना० पु० जलाव।
औटना० स० क्रि० जलाना, सुलाना।
औत्तानपादि० ना० पु० ध्रुव, भक्त प्रसिद्ध।
औत्कर्ष्य० ना० पु० श्रेष्ठता, उत्तमता।
औत्सुक्य० ना० पु० चिन्ता, व्याकुलता, पछिताना।
औथरा० गु० उथला कम गहरा।
औदात० गु० अवदात, श्वेत।
औदार्य० ना० पु० दातापन, उदारता।
औदासीन्य० ना० पु० विषयों में वैराग्य।
और० अव्य० पुनः, फिर, गु० अधिक, दूसरा।
औरस० ना० पु० व्याहिताका पुत्र।
और्ध्वदैहिक० ना० पु० मृतकका क्रिया।
औषध० } ना० स्त्री० रोगनाशक द्रव्य, दवा,
औषधि० } इलाज।
औषधिपति० } ना० पु० चन्द्रमा।
औषधीश० }

[क]

क० अव्य० ना० पु० जल, सुख, अग्नि, शिर, काम, सुवर्ण।
ककड़ी० ना० स्त्री० फल वा तरकारी विशेष।
ककरहा० } ना० पु० बारहसखड़ा वर्ण।
ककहरा० }
ककार० ना० पु० क।
ककुभा० ना० स्त्री० दिशा और छन्दविशेष।
ककुद्द० ना० पु० नीबवृक्ष।
ककुस्त० ना० पु० धनिया मसाला कशनीजा।
ककोरना० स० क्रि० खोदना, खरोचना।
कखरी० ना० स्त्री० काख, बगल।
कखवारी० } ना० स्त्री० काखका फोड़ा।
कखौरी० }

कगार० ना० स्त्री० छोर, अन्त, किनारा।

कक० ना० पु० कुईपक्षी।

कंकण० ना० पु० हाथका भूषण विशेष।

कंकर० ना० पु० जिस से चूना बनताहै, बहुत कड़ी मिट्टी, नींव।

कंकाली० ना० स्त्री० डाकिनी।

कंगनी० ना० स्त्री० पौधी विशेष, मालकगुनी।

कंगरोड़० ना० पु० रीड़, पक्षीविशेष।

कंगाल० गु० अधनी, भिखारी, दरिद्री।

कंगालता० ना० स्त्री० दरिद्रता, निर्धनता।

कंगालिन० ना० स्त्री० डाकिनी, डायन, दरिद्रिनि।

कंगनी० ना० स्त्री० कगनी।

कंगरा० ना० पु० गुम्मद, मठादिक, बाकगारः।

कंघा० ना० पु० } बाल झाड़ने के लिये काष्ठादि
कंघी० ना० स्त्री० } की वस्तु।

कच० ना० पु० बाल, केश।

कचकना० अ० क्रि० मुरकना, पिराना।

कचकचाना० अ० क्रि० किरकिराना, भिनभिनाना।

कचकाना० स० क्रि० मुरकाना।

कचनार० ना० स्त्री० वृक्षविशेष।

कचपचिया० ना० पु० गुच्छा तारोंका, कृत्तिका।

कचरा० ना० पु० } फल विशेष।
कचरी० ना० स्त्री० }

कचहरी० ना० स्त्री० सभा, समाज, मजलिस।

कचाई० ना० स्त्री० अजीर्ण, कचापन।

कचालू० ना० पु० कन्दविशेष।

कचियाहट० ना० स्त्री० घिनघिनाना।

कचूर० ना० पु० औषध विशेष।

कचौरी० ना० स्त्री० पूरी पीठी वा घीमें भरी।

कच्चा० गु० खाम, अनाड़ी, अनपका।

कच्छप० ना० पु० कछुवा व द्वितीय विष्णुजी का अवतार, देश जो गुजरातके पासहै कच्छी।

कच्छप० ना० पु० कूर्म, कछुआ।

कच्छी० गु० जो कच्छदेश का घोड़ा आदिहो।

कछु० ना० स्त्री० काछ।

कछना० स० क्रि० धोना, पोछना, ना० पु० काछ।

कछनी० ना० स्त्री० काछवासना।

कछलम्पट० गु० कुकर्मी व्यभिचारी, अजितेन्द्रिय।

कछवाहा० ना० पु० राजपुत का वंश जो श्री रामचन्द्र के पुत्र कुशनामी से उत्पन्न भया।

कछार० ना० स्त्री० नदी की तराई वा किनारा।

कछारना० स० क्रि० छाटना, धोना।

कछु० सर्व० कुछ, किञ्चित्।

कछुरा० ना० पु० जवासा।

कछू० सर्व० कुछ किञ्चित्।

कज० ना० पु० कञ्ज, कमल।

कजरा० ना० पु० काजल, गु० काजललगाये।

कजरारे० गु० काजललगाये हुये।

कजला० गु० काला, काजल लगाये।

कज्जल० ना० पु० काजल, अञ्जन, सुरमा।

कज्जलगिरि० ना० पु० काजलका पर्वत।

कञ्चन० ना० पु० सुवर्ण, धतूर, जातिविशेष।

कञ्चनक० ना० पु० कचनार, मैनफल।

कञ्चनी० ना० स्त्री० कचन जातिकी स्त्री, नौची, पतुरिया, सोनेकी पुतली।

कञ्चु० } ना० स्त्री० चोली, अगिया।
कञ्चुकी० }

कञ्ज० ना० पु० कमल।

कञ्जर० ना० पु० जातिविशेष जो रस्सी वा सिरकी बेचते हैं।

कञ्जा० गु० जिसकी आंखकी पुतली नीली पीली है ना० पु० वृक्ष वा उसका फल।

कञ्जिया० ना० स्त्री० आंखकी पुड़िया, छोटी पुड़िया।

कञ्जूस० गु० सूम, कृपण, लालची।

कञ्जूसी० ना० स्त्री० कृपणता।

कटक० ना० पु० सैन, फौज, दलि, नगर विशेष जो उड़ैसादेश में है।
कटकट० ना० पु० झगड़ा, दांतों से दांतलड़ाना।
कटकटाना० स० क्रि० चबाना किसी वस्तुका।
कटकटेरि० ना० स्त्री० दारुहल्दी।
कटकना० ना० पु० बांधना, उपाय, ठेका।
कटकाया० ना० स्त्री० सेमरवृक्ष।
कटघरा० ना० पु० कटहरा।
कटंकटी० ना० स्त्री० दारुहल्दी।
कटना० अ० क्रि० कटिजाना, लज्जितहोना, घायल होना, मोहित होना।
कटनी० ना० स्त्री० कटाई, अनाज काटने का समय वा काटने की वस्तु यथा कैंची।
कटफल० ना० पु० कायफल।
कटम्भरी० ना० स्त्री० स्यौना वृक्ष।
कटरा० ना० पु० हाट, चौक।
कटहरा० ना० पु० कटहरा, बड़ापिंजड़ा।
कटहु० गु० काटनेवाला।
कटा० ना० स्त्री० माराजाना बहुत लोगोंका।
कटाक० ना० स्त्री० जो दरस दर्दहोकर चलै।
कटाना० स० क्रि० किसी पदार्थ के टुकड़ेकराना।
कटार० ना० पु० खंजर।
कटारा० ना० पु० औषधि, पौधा विशेष।
कटारी० ना० स्त्री० खंजर, छुरी।
कटाह० ना० पु० कड़ाह, कड़ाही।
कटाक्ष० ना० पु० वानरविशेष, ना० स्त्री० तिरछी चितवन।
कटि० ना० स्त्री० लङ्क, कमर।
कटित० गु० लपत।
कटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी के सप्रभाग करने के लिये उसके पांच कटिबन्ध नियत किये अर्थात् शीत कटिबन्ध दो, और सम कटिबन्ध दो २, उष्ण १॥
कटीला० ना० पु० पौधा विशेष, गु० काँटेवाला सजीला, सारन्त।

कटु० } गु० कड़वा, कड़ा, बुरा।
कटुक० }
कटुकी० ना० स्त्री० कटुकी औषधि।
कटुग्रन्थ० ना० स्त्री पिपरामूल।
कटुत्कट० } ना० स्त्री० सोंठि।
कटुभद्र० }
कटुमी० ना० स्त्री० मालकंगुनी।
कटुरोहिणी० ना० स्त्री० कुटकी औषधि।
कटैया० ना० स्त्री० पौधा कांटेवाला विशेष।
कटोरा० ना० पु० } भोजन करने का पात्र
कटोरी० ना० स्त्री० } विशेष।
कट्ठा० ना० पु० काठका जिसपर कपड़ा धोतेहैं।
कठ्यानी० गु० रोमांचित, रोमखड़ेहुये।
कठन्दर० ना० पु० काष्ठोदर, रोगविशेष।
कठड़ा० ना० पु० }
कठड़ी० ना० स्त्री० } काठकी थाली वा पात्र
कठरा० ना० पु० } विशेष।
कठरी० ना० स्त्री० }
कठवत० ना० स्त्री० काठका बर्तन विशेष।
कठारी० ना० स्त्री० काठका बर्तन, कमण्डलु।
कठिन० गु० निष्ठुर, कठोर, कड़ा, मुश्किल।
कठिनता० ना० स्त्री० } कठोरता, निठुरई,
कठिनत्व० ना० पु० } कड़ापन, कड़ाई।
कठिया० ना० स्त्री० काठकी [illegible] काठका छोटासा पात्र।
कठिल्ल० ना० पु० करेला तरकारी।
कठेठी० ना० स्त्री० कड़ी, कठिन।
कठोर० गु० निठुर, कड़ा, असह, ना० पु० बेल वृक्ष वा उसका फल।
कठोरता० ना० स्त्री० निठुरता, निठुराई।
कठोलिया० ना० स्त्री० काठका छोटासा पात्र।
कठौता० ना० पु० } काठका बड़ापात्र।
कठौती० ना० स्त्री० }
कड़क० ना० स्त्री० धमाका, चटक, गर्जनि, रुर्न।
कड़कना० अ० क्रि० चटकना, भड़कना गरजना।

कड़खा० ना० पु० युद्धमें बढ़ावा देनेकी मान वहना।
कड़खैत० गु० भाट जो बढ़ाव देता है।
कड़ुआ० गु० र्तता, तीक्ष्ण, निठुर, थोड़ा।
कड़ुवाहट० ना० स्त्री० तीक्ष्णता।
कड़ा० गु० कठोर, दृढ़, मगरा, ठीठ, निठुर, ना० पु० लोहेका वा चांदीआदि का भूषण जो हाथमें पहिरते हैं।
कड़ाड़ा० ना० पु० नदीका उंचा किनारा।
कड़ाह० ना० पु० दुग्धादि औंटने के लिये लोहे का पात्र, गुरुनानक का भोग।
कड़ाही० ना० स्त्री० छोटा कड़ाह।
कढ़ी० ना० स्त्री० काढ़ी, धरनी, धन्नी।
कड़ु० ना० स्त्री० खुजली, खारिश्त।
कढ़ना० अ० क्रि० निकलना, उठना, खिंचना।
कठिल्लक० ना० पु० लालपुनर्नवा।
कढ़ी० ना० स्त्री० भोजन विशेष जो बेसन औ दही से बनता है।
कढ़ुआ० ना० पु० उधार, कर्ज।
कण० ना० पु० धान्य, अनाज, रा यमात्यद्रव्य, जर्रे।
कणा० ना० स्त्री० पीपरी।
कणामूल० ना० पु० पीपरामूल।
कणाखुफल० ना० पु० अकोल औषधि।
कणिका० ना० स्त्री० सोनजुही, अणु, लेश, टुकड़ा, जर्रे।
कणी० ना० स्त्री० छिनक, टुकड़ा, जर्रे।
कण्टक० ना० पु० कांटा, गोखुरू, शत्रु, कृपण, पित्तपापड़ा।
कण्टकलता० ना० स्त्री० खीरा फलविशेष।
कण्टकारि० } ना० स्त्री० छोटीकटाई, सफेद
कण्टकिनी० } भीड़कारि।
कण्टकिफल० ना० पु० कटहल।
कण्टकी० ना० पु० बिल्व, बेतु।
कण्टफल० ना० पु० गोखुरू।
कण्टार० गु० कटीला।
कण्टारिका० ना० स्त्री० छोटी सफेद कटाई।
कण्टिया० ना० स्त्री० आंकड़ी।
कण्ठ० ना० पु० गला, घाटी, उपस्थित, मुखाग्र।
कण्ठगत० गु० गल में जान या स्वर।
कण्ठमाल० } ना० स्त्री० गलेकीमाला, मुख्य
कण्ठमाला० } रोग जिसमें गला सड़जाता है।
कण्ठला० ना० पु० माला जो लड़कों के लिये बहुयत्न युत बनाते हैं।
कण्ठस्थ० ना० पु० मुखाग्र।
कण्ठा० ना० पु० बड़ी गुरियों का माला।
कण्ठाग्र० गु० मुखाग्र, जबानी।
कण्ठाभरण० ना० पु० गलेका भूषण।
कण्ठी० ना० स्त्री० छोटीमाला तुलसीआदि की।
कण्ठीरव० ना० पु० सिंह, व्याघ्र, शेर।
कण्ठ्य० गु० जिन अक्षरों का उच्चारण कण्ठ से होवे।
कण्डा० ना० पु० उपला।
कण्डी० ना० स्त्री० छोटाउपला।
कण्डुपुष्पी० ना० स्त्री० शतावृला।
कण्डू० ना० पु० रोगविशेष, स्त्री० जमुहाई।
कण्डूम० ना० स्त्री० पत्थर, औषधि।
कण्डेरा० ना० पु० धुनिया, जाति विशेष जो तीर बनाते हैं, कमानगर।
कण्व० ना० पु० मुनिविशेष।
कत० अव्य० कहां, क्योंकर, किसलिये।
कतना० अ० क्रि० काताजाना।
कतरन० } ना० पु० काटना।
कतरा० }
कतरना० स० क्रि० काटना।
कतरनी० ना० स्त्री० कटनी, कैंची।
कतराना० स० क्रि० कटवाना।
कतहु० अव्य० कभी।
कताई० ना० स्त्री० कातने का काम, कातने का पैसा।
कतीरा० ना० पु० गोंदविशेष।
कत्त० अव्य० कहां क्योंकर।

कत्था० ना० पु० खदिर, खैर।
कत्सायल०ना० पु० कालाहरिण।
कथक० गु० पौराणिक, पवांरिया, कथिक।
कथन० ना० पु० कहना, वाक्यें का प्रयोग कहना।
कथना० अ० क्रि० कहना।
कथनीय० गु० कहने के योग्य।
कथा० ना० स्त्री० कहानी, वृत्तांत, पवांरा।
कथित० गु० कहाहुआ।
कथोपकथन० ना० पु० आलाप, परस्पर बात चीत।
कथ्य० ना० स्त्री० हर्रे, गु० कहने योग्य।
कद० अव्य० कब।
कदध्वा० ना० स्त्री० अतिमार्ग, कठिनमार्ग।
कदन० ना० पु० नाशक, बधिक।
कदम्ब०ना० पु० समूह, वृक्षविशेष, कदम।
कदम्बक० ना० पु० समूह, गिरोह।
कदर्य्य० गु० लोभी, कंजूस।
कदली० ना० पु० केलावृक्ष।
कदक्षर० ना० पु० कुत्सित वर्ण।
कदा० अव्य० कब।
कदाचार० गु० शास्त्र से विपरीत व्यवहार।
कदाचित्० अव्य० जो कभी होता हो,

कनागत० ना० पु० आश्विनकृष्णपक्ष में पितरों का श्राद्ध।
कनिक० ना० पु० चून, पिसान, आटा।
कनियाना० सं० क्रि० संकोच से कतराजाना, आंख छुपाना।
कनियाहट० ना० स्त्री० खींच, संकोच।
कनिष्ठ० गु० छोटा।
कनिष्ठा० ना० स्त्री० पांचवीं अंगुली, नीचछी।
कनिष्ठिका० ना० स्त्री० पांचवीं अंगुली।
कनिहा० गु० घूना।
कने० अव्य० पास, साथ।
कनेर० } ना० पु० करवीरवृक्ष जिसका फूल
कनैल० } देवतों को चढ़ता है।
कनैया० ना० पु० कर्णवेधन, ना० स्त्री० टाबी
कनौज० ना० पु० प्राचीन नगर, विशेषदेश,
कनौजिया० गु० कनौज देश का वासी।
कन्त० ना० पु० स्वामी, भर्त्तार, निर्वाहक मालिक।
कन्था० ना० स्त्री० कथड़ी, गुदड़ी, [illegible]
(शनैःकन्था शनैःपन्था शनैः[illegible] शनैर्विद्या शनैर्वित्तमेते पंचशनैः[illegible])
कन्द० ना० पु० जड़ विशेष [illegible] लता है यथा, सूरण, [illegible]

कन्धेली० ना० स्त्री० खोगीर, जो घोड़ों को उढाते हैं।
कन्यका० ना० स्त्री० कुमारी,कन्या।
कन्या० ना० स्त्री० बेटी, छटी राशि, दश वर्षतक की लड़की।
कंस० ना० पु०श्रीकृष्णका मामू।
कन्हाई० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजीका एक
कन्हैया० } नाम।
कपना० अ० क्रि० थरथराना।
कपकपी० ना० स्त्री० थरथराहट, फुरफुरी।
कपट० ना० पु० छल, फरेब, खोटाई और भगल।
कपटभू० ना० स्त्री० मायाभूमि, तिलसमाती जमीन।
कपटी० गु० छली, खोटा, बहुरूपिया।
कपड़ा० ना० पु० वस्त्र।
कपड़ोंसेहोना० अ० क्रि० रजोधर्म होना, ऋतुमती होना।
कपर्दी० ना० पु० श्रीमहादेवजी, बरगद।
कपाट० ना० पु० किवाड़,पट।
कपार० } ना० पु० माथा, ललाट, भाग्य।
कपाल० }
कपालभृत्० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
कपाली० ना० पु० श्रीमहादेवजी और श्रीभैरवजी।
कपास० ना० स्त्री० रुईका वृक्ष, कपास।
कपि० ना० पु० बानर, बन्दर।
कपिकुञ्जर० ना० पु० श्रेष्ठ बानर।
कपितन० ना० पु० पारस, पीपल।
कपित्थ० ना० पु० कैथाका वृक्ष।
कपिध्वज० ना० पु० अर्जुन, पाण्डुपुत्र।
कपिन्द्र० } ना० पु० मुख्य बानर और श्रेष्ठ
कपीन्द्र० } बानर।
कपिपति० ना० पु० सुग्रीव, गु० जो बानरों का राजा होवे।
कपिपिप्पली० ना० स्त्री० सालउन्ना।

कपिभूत० ना० पु० पारस, पीपल।
कपिल० ना० पु० मुनि विशेष, साख्यशास्त्र के वक्ता, पीतलधातु।
कपिला० ना० स्त्री० पिंगलवर्णकीगाय, रेणुका।
कपिलदेव० ना० पु० आदित्यवतार।
कपिल्य० ना० स्त्री० कपाला औषधि।
कपीश० ना० पु० सुग्रीव बानरोंका राजा।
कपूर० ना० पु० सुगन्धि विशेष, काफूर।
कपोत० ना० पु० कबूतर परेवा।
कपोतवर्णा० ना० स्त्री० छोटीइलायची।
कपोताक्ष० ना० पु० नद विशेष।
कपोतिका० ना० स्त्री० मूली तरकारी।
कपोल० ना० पु० गाल।
कफ० ना० पु० खखार, श्लेष्मा, बलगम।
कफोद्भिज० ना० पु० समुद्रफेन।
कब० अव्य० कहा, कदा।
कबड्डी० ना० स्त्री० गवड्डी खेल विशेष।
कबन्ध० ना० पु० बिनामस्तक की देह और पानी, मेघ, राहु, (उभेपूर्वापरेसन्ध्ये नित्य पश्यामिभारत, उदयास्तमयेसूर्य्य कबन्धैःपरिवारित) इतिमहाभारते।
कबरा० गु० कर्बुर, चितला, चितकबरा।
कबाड़० ना० पु० काम, उद्यम, तरकारी।
कभी० } ना० पु० अव्य० कभी, कदापि
कभू० } कधी।
कमठ० ना० पु० कछुवा।
कमठा० ना० पु० धनुष, कमान।
कमठी० ना० स्त्री० कछुई, धतुरी।
कमण्डलु० ना० पु० दण्डियों का बरतन।
कमनीय० गु० सुन्दर, मनोहर।
कमन्दर० ना० स्त्री० सीपी यथा (सुक्ता रत्नोगन्धि मद्वजी शक्ति मौक्तिक मन्दरः) इति निघण्टे।
कमरख० ना० पु० फल विशेष और वृक्ष विशेष।

कमल० ना० पु० पद्म ।

कमलज० } ना० पु० ब्रह्मा ।
कमलभव० }

कमलवायु० ना० पु० कामर, रोगविशेष जिसमें देह और आंखें पीली होजाती हैं ।

कमला० ना० स्त्री० लक्ष्मी, श्री ।

कमलाकर० ना० पु० तालाव ।

कमलासन० ना० पु० ब्रह्मा ।

कमलासिनी० ना० स्त्री० सरस्वती ।

कमलाक्ष० ना० पु० कमलनयन ।

कमलिनी० ना० स्त्री० पद्मिनी ।

कमाई० ना० स्त्री० उपार्जन, प्राप्ति, पैदा,यश ।

कमाऊ० गु० उद्यमी, यत्नी, देशविशेष पु० ।

कमाना० स० क्रि० उपार्जन करना, पैदा करना ।

कमेरा० गु० परिश्रमी, मेहनती ।

कमोदिनी० ना० स्त्री० कमलविशेष जो रातको खिलता है अर्थात् फूल ।

कमोरी० ना० स्त्री० मटकी, हंडी, दुग्धादि ।

कम्प० ना० पु० कपकपी, थरथराहट ।

कम्पना० अ० क्रि० कांपना, थरथराना ।

कम्पवाय० ना० पु० रोगविशेष जिसमें सारा शरीर कम्पा करता है ।

कम्पाहा० गु० थरथराहा ।

कम्पित० गु० कांपता भया ।

कम्पनी० ना० स्त्री० साहिब लोगों के बहुतों का मेल वा साझा, अंगरेज़ी शब्द ।

कम्बल० ना० पु० ऊनका वस्त्र ।

कम्बु० ना० पु० शंख, हाथी, कम्बाहार ।

कम्बुज० ना० स्त्री० हरसिंघाड़ ।

कम्बुमालिनी० ना० स्त्री० शंखहोली ।

कम्बोज० ना० पु० घोड़ा, राजाविशेष ।

कम्भारी० ना० स्त्री० औषधि विशेष ।

कम्बल० ना० पु० रोम वस्त्र, कम्बल ।

कर० ना० पु० हाथ, राजधन, महसूल, किरण, पुष्कर, विषया ।

करक० ना० स्त्री० पीड़ा, दर्द ।

करकस० गु० कर्कश, लड़ाकू ।

करका० ना० पु० ओला, हिमोपल ।

कर्कशा० ना० स्त्री० लड़ाकी ।

करज० ना० स्त्री० अंगुली, नख ।

करट० ना० पु० कौआ ।

करटी० ना० पु० हाथी, ना० स्त्री० कायफली ।

करण० ना० पु० साधन, करणविशेष ।

करणी० ना० स्त्री० कर्म, क्रिया, थवई का एक हथियार करनी सम्बन्धी ।

करणीय० गु० अवश्य कर्त्तव्य ।

करतल० ना० पु० हथेला ।

करतलगत० गु० हाथमें ।

करताल० } ना० स्त्री० बाजा विशेष अथवा
करताली० } हथेली की ताल ।

करतूति० ना० स्त्री० कर्त्तव्य, चाल, करणी ।

करतोया० ना० स्त्री० नदी विशेष जो बङ्गाले में है ।

करना० स० क्रि० बनाना, रचना ।

करनी० ना० स्त्री० करणी, कर्त्तव्य ।

करपल्लव० ना० पु० अंगुली वा उसका पोर ।

करपृष्ठ० ना० स्त्री० हाथकी पीठ ।

करवी० ना० स्त्री० ज्वारका पौधा ।

करभ० ना० पु० हाथी ।

करभप्रिय० ना० पु० पन्नूड ।

करभूषण० ना० पु० कङ्कणादि आभरण ।

करम० ना० पु० कर्म ।

करमर्दी० ना० पु० बड़ाकरौंदा ।

करमूल० ना० पु० कलाई ।

करवार० गु० कलावादि भिन्न मनभिलाषे यथा, नन्द यशोमति भाग बड़ेरी, सुतकी करवर टरा करेरी ।

करवाल० ना० पु० तलवार ।

करवीर० ना० पु० कनैलवृक्ष विशेष ।

करवीरक० ना० पु० कनैलवृक्ष ।

कररुह० ना० पु० नख, नाखून ।

करसम्पुट० ना० पु० हाथजोड़न ।
करहाट० ना० पु० सिफाकन्द, मैनफल ।
करहाटक० ना० पु० सिफाकन्द ।
करान्त० ना० पु० आरा ।
करान्ती० गु० आरेसे चीरनेहारे ।
कराना० स० क्रि० बनाना, रचना ।
करायल० ना० पु० भाजनविशेष जस ।
करार० ना० पु० किनारा, गु० भयङ्कर, कराल ।
करारा० ना० कड़ारा, किनारा ।
कराल० गु० भयङ्कर, टेढ़ा, ना० स्त्री० विडंग औषधि ।
कराली० ना० स्त्री० भयङ्कर, कठिन ।
करावलि० ना० स्त्री० किरणों का समूह ।
कराहना० अ० क्रि० सांसभरना, दु:खकरना ।
करिया० ना० पु० केवट, मल्लाह ।
करिल० ना० पु० मठोर जिसका शिर टूटाहो, बांसका नया पौधा ।
करी० ना० पु० हाथी ।
करीर० } ना० पु० वृक्ष विशेष जो कांटों
करीरक० } वाला होता है ।
करील० }
करीष० ना० पु० गोबर की मांदि या सरैयरएडा और कोई २ कोयला बनाते हैं ।
करुणा० ना० स्त्री० दया, कोमलता ।
करुणाकर० गु० दयाकर, दयाकी राशि, कोमलता की खानि ।
करुणाकरना० स० क्रि० गुण कहिकर रोना, दया करना ।
करेरा० गु० दृढ़, कड़ा, बलवान् ।
करेरी० ना० स्त्री० दृढ़, कड़ी ।
करेला० ना० पु० तरकारी विशेष ।
करैत० ना० पु० सांप विशेष ।
करोड़० गु० सौलाख १००००००० ।
करोड़ा० ना० पु० उगाहनेवाला, प्रधान ।
करौंदा० ना० पु० वृक्ष या उसका फलविशेष ।
कर्क० } ना० पु० चौथीराशि विशेष केकड़ा,
कर्कट० } गंगरा ।
कर्कटशृङ्गिका० ना० स्त्री० काकड़ासिंगी ।
कर्कटा० ना० पु० बेरफलविशेष ।
कर्कटाख्या० ना० स्त्री० काकड़ासिंगी ।
कर्कटी० ना० स्त्री० ककड़ी, पिंडलखजूर ।
कर्कन्धु० ना० पु० बेरका वृक्ष या फल ।
कर्फल० ना० पु० अजमोद, सूदनवायु ।
कर्कश० गु० कड़ा, कठोर, लड़ाका, असह ।
कर्कशछदा० ना० स्त्री० केतरी ।
कर्कार० ना० पु० कुम्हड़ा, खभड़ा ।
कर्कोज० ना० पु० घोड़ा ।
कर्कोटक० ना० पु० मुख्य सर्प ।
कर्कोटिका० ना० स्त्री० ककोड़ी औषधि ।
कर्चूर० ना० पु० कचूर ।
कर्चूरिका० ना० स्त्री० हाथकी चूड़ी, कचूरी ।
कर्छा० ना० पु० कफगीर, चमचा ।
कर्छी० ना० स्त्री० छोटी कर्छा ।
कर्ण० ना० पु० कान, पतवार, सर्यसुत, कमान या रोद, वतर ।
कर्णधार० ना० पु० मांझी, पदनदार ।
कर्णफूल० ना० पु० कानका भूषणविशेष ।
कर्णवेधन० ना० पु० कानका छेदना, कनछेदन ।
कर्णवेष्टन० ना० पु० कुंडल जो कानमें पहिनते हैं ।
कर्णाट० } ना० पु० दक्षिण भरतखण्डका
कर्णाटक० } एकभाग विख्यात ।
कर्णालम्बित० गु० कानतक खींचना ।
कर्णिकार० ना० पु० किदवाली औषधि ।
करणी० ना० स्त्री० क्रिया, कर्म, करण, जाति ।
कर्तव्य० ना० पु० करतूति, करने के योग्य ।
कर्तव्यता० गु० स्त्री० चाल, करतूति ।
कर्ता० } ना० पु० क्रियामें प्रधान होता है,
कर्त्तार० } करनेवाला, सिरजनहार, प्रभु, भर्ता विशेष ब्रह्मा ।
कर्तृकर्मभाव० ना० पु० कर्त्ता और कर्म का सम्बन्ध ।

कर्तृत्व० ना० पु० कर्ताका धर्म ।
कर्तृप्रधान० ना० पु० गु० जिस अर्दमें कर्त्ता प्रधान है ।
कर्तृवाचक० गु० जिस प्रदमें कर्त्ता पायाजावै ।
कर्दम० ना० पु० कीचड़, कादा, लप और ऋषि विशेष ।
कर्दमक० ना० पु० कीचड़ ।
कर्धनी० ना० पु० कटिबन्धन, सूत जो कमर में बांधते हैं ।
कपर्दी० ना० स्त्री० कौड़ी, यथा कपर्दी स्व वरा गि इति निघण्ट ।
कर्पास० ना० स्त्री० कपास, कपासका वृक्ष ।
कर्पूर० ना० पु० कपूर, कापूर ।
कर्म० ना० पु० द्वितीयकारक, काम, भाग्य, प्रारब्ध शास्त्रविहित जप यज्ञादि ।
कर्मकर० गु० सेवक, नोकर ।
कर्मकाण्ड० ना० पु० जप यज्ञादि ।
कर्मकारक० ना० पु० कारक विशेष ।
कर्मच्युत० गु० काम से भ्रष्ट, क्रियाभ्रष्ट ।
कर्मनाशा० ना० स्त्री० नदीविशेष जो काशी ओर गया के मध्य में है ।
कर्मप्रधान० गु० कर्म मुख्य, विविक्त कर्ता ।
कर्मभोग० ना० पु० प्रारब्ध का भाग और तपस्या, पक्षी विशेष ।
कर्मरङ्ग० ना० पु० कमरख ।
कर्मवाच्य० गु० जिस क्रिया पदका कर्म उद्देश्यहो ।
कर्मवाचक० गु० कर्मसूचक ।
कर्मविपाक० ना० पु० कर्मों का फल, ग्रन्थ विशेष ।
कर्मसाक्षी० ना० पु० सूर्य ।
कर्माधर्मी० गु० जपन पैया, भाग्यवान्, दैवागत ।
कर्मार० ना० पु० बांस ।
कर्मिणी० ना० स्त्री० कामना, जघा ।
कर्मी० गु० कर्मोका करनेवाला ।
कर्मेन्द्रिय० ना० स्त्री० इन्द्रिया जिनसे कर्म करते हैं, वह पांच हैं अर्थात् गुदा, लिंग, हाथ, पांव, मुख ।
कर्राना० अ० क्रि० कड़ापड़ना ।
कर्बुक०
कर्व्याद० } ना० पु० निशाचर, क्रव्याद ।
कर्बुर० ना० पु० सुवर्ण, राक्षस ।
कर्ष० ना० पु० प्रमाण, की, धैर ।
कर्षण० ना० पु० खैंच ।
कर्षफल० ना० पु० बहेड़ा ।
कर्षा० ना० स्त्री० ईर्षा, उत्साह ।
कर्षित० गु० खींचागया ।
कल० ना० स्त्री० चैन, सुख, यन्त्र गु० अव्यक्त सुन्दर, मीठा, मधुरशब्द, आजका पहिला वा पिछला दिन ।
कलकण्ठ० ना० स्त्री० कायल पक्षी ।
कलकत्ता० ना० पु० नगर विशेष ।
कलकल० ना० पु० कोलाहल, शोर, झगड़ा ।
कलकाची० ना० स्त्री० नगर विशेष ।
कलङ्क० ना० पु० अपवाद, चिह्न, दाग ।
कलङ्की० गु० दागी, पापी ।
कलङ्किनी० ना० स्त्री० दूषिता, अपवादिनी, जिसको कलङ्क लगा ।
कलधौत० ना० पु० सोना, चांदी ।
कलप० ना० पु० रंग, जिसमें बाल रंगजाते हैं वसमा मांड़ी ।
कलपना० अ० क्रि० कुढ़ना, दुखितहोना, कलपकरना, मांड़ा लगाना ।
कलपाना० स० क्रि० कुढ़ाना दुःखीकरना कलपकराना, मांड़ीलगवाना ।
कलभ० ना० पु० हाथी, धतूरा, उत्तालका सार ।
कलम० ना० स्त्री० लेखनी यह अर्बी शब्द है
कलमलाना० अ० क्रि० कुलबुलाना ।
कलरव० ना० पु० कबूतर, कोकिला ।
कलबल० ना० पु० कलकल, तोतरी बात ।
कलविङ्क० ना० पु० गौरैया पक्षी ।

कलश० ना० पु० घट जो विवाह आदिमें स्थापित करते हैं, घडा, गगरा।
कलस० ना० पु० शूल, कलशे।
कलसी० ना० पु० छोटाकलश, गगरी।
कलह० ना० पु० विरोध, लड़ाई, झगड़ा।
कलहंस० ना० पु० राजहंस, मैलाहंस।
कलहा० } कलहारा० } गु० लड़का, झगड़ालू।
कलही० ना० स्त्री० कर्कशा, लड़ाकी।
कलत्र० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री विवाहिता।
कला० ना० स्त्री० सोलहवां अंश, बाट।
कलाई० ना० स्त्री० पहुंचा, रंगामृत।
कलावंत० ना० पु० गवैया, गायक।
कलाद० ना० पु० सुनारजाति, यथा नाडीधम। स्वर्णकार कलादोरुक्मकारक इत्यमरः।
कलाधर० ना० पु० चन्द्रमा, नृत्यक, बहुरूपी।
कलाना० स० क्रि० भुनाना।
कलानिधि० ना० पु० चन्द्रमा।
कलाप० ना० पु० समूह, व्याकरण विशेष गुण० तर्कश, आभरण, चन्द्रमा, दुःख, हरिद्रूर भजन, भौंरों का समूह, ग्राम विशेष।
कलापी० ना० पु० मयूर, मोर।
कलापशाक० ना० पु० मड़्वा साग।
कलार० } कलाल० } ना० पु० कलवार, सुंडी।
कलि० ना० पु० चौथायुग जो ४६४००० वर्ष का होता है वेदोक्त समय का नाशक, समय कलि युग, युद्ध, पाप, क्लेश, सूर्मा, तर्कश।
कलिकवि० ना० पु० कालिदासादि।
कलिका० ना० स्त्री० सरकोंका, कली, बिना फूला फूल।
कलिकारी० ना० स्त्री० कलिहारी।
कलिंग० ना० पु० इन्द्रयव, तरबूज, कटकरंजका पौधा, देश विशेष, राजा विशेष।
कलित० गु० बद्धाभया, सुन्दर।
कलिद्रुम० ना० पु० बहेरा।
कलिन्द० ना० पु० तरयुक्त पर्वत विशेष।
कलिमल० ना० पु० पाप, दोष।
कलिमलसरि० ना० स्त्री० कर्मनाशानदी।
कलियाना० अ० क्रि० कली निकलना, फूलना।
कलिल० ना० पु० क्लेश, सकट, दुःख।
कली० ना० स्त्री० कलिका, करी।
कलुष० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह।
कलेऊ० ना० पु० बासी रसोई, प्रात काल में थोड़ाभोजन।
कलेजा० ना० पु० अंग विशेष, सूर्माणन, साहस।
कलेवर० ना० पु० देह, तन।
कलेवा० ना० पु० कलेऊ वह जो विवाह में दूलह को खिलाते हैं।
कलेश० ना० पु० क्लेश।
कलोर० ना० पु० ओसर, नई गाय।
कलोल० ना० स्त्री० खेल, मगनता।
कल्की० ना० पु० दशवा अवतार, म्लेच्छान्तक जो कलि के अन्त में सम्भल में होगा।
कल्प० ना० पु० ब्रह्माका दिन रात, प्रलय, कल्पवृक्ष, सामर्थ्य, विचार, रचना, बदलना, शास्त्र विशेष।
कल्पतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष।
कल्पना० अ० क्रि० खेदित होना, मान लेना, फर्ज करना, तर्क, लालसा, कष्ट।
कल्पान्त० ना० पु० कल्पका अन्त, क़यामत।
कल्पित० गु० रचित, विचारित, मानाहुआ।
कल्याण० ना० पु० कुशल, मंगल, बदनी।
कल्लर० गु० ऊसर।
कल्लाना० अ० क्रि० जलनि पड़ना, पिराना।
कल्लोलिनी० ना० स्त्री० तरंगयुत।
कवच० ना० पु० झिलम, बख्तर, रक्षक, मन्त्र विशेष।
कव्य० ना० पु० छन्द विशेष।
कवर्ग० ना० पु० ककारादि पञ्चअक्षर।
कवरी० ना० स्त्री० केशपाश, वेणी, कावरी।

कथ्थ० नाः पु० ग्राम सुषमा।

कवि० नाः पु० भाट, श्लोकवन्धदकर्त्ता, शायर।

कवित० नाः पु० छन्द, पद्य।

कविता० } नाः स्त्री० पद्य, श्लोक, छन्द।
कविताई०

कविमाता० नाः स्त्री० शुक्राचार्यकी माता।

कविपुंगव० नाः पु० बड़ा कवि, श्रेष्ठकवि।

कविराज० } नाः पु० बडाकवि, उत्तमकवि।
कवीश्वर०

कशर० नाः पु० कचनार।

कशेरू० } नाः पु० कसेरु।
कशेरुक०

कश्मीर० नाः पु० काश्मीर।

कश्यप० नाः पु० मुनि, मरीचि, प्रजापति का पुत्र।

कश्यपी० नाः स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन जो कश्यपसे सम्बन्ध रक्खे।

कषाय० गु० कसैला रस।

कष्ट० नाः पु० दुःख, पीड़ा, दर्द।

कष्टनाश० नाः पु० नीलकण्ठ पक्षी जिस को कष्टनाश कहते हैं।

कष्टित० } गु० दुःखित, पीड़ित, रंजदि।
कष्टी०

कस० अव्य० कैसा, किसप्रकार।

कसक० नाः पु० पीड़ा, दुःख।

कसकना० अ० क्रि० दुःखभोगना, दुःखहोना।

कसकसा० गु० बालू मिलाहुआ पदार्थ।

कसन० नाः पु० दृढ़ा, यन्त्रणा।

कसना० स० क्रि० खेंचना, जाचना, घीमेंभूनना, तलना, आजमूदाकरना।

कसा० गु० खेंचाहुआ।

कसाई० नाः स्त्री० खिंचावट।

कसाना० स० क्रि० खिंचाना, जचाना, घी में भुनवाना, तलना।

कसान० नाः पु० वह पदार्थ जिससे कसाजावे।

कसुभिक्क० नाः पु० नींबवृक्ष।

कसेरू० नाः पु० जलका कन्द विशेष।

कसेरुक० नाः पु० कसेरू।

कसेरुका० नाः स्त्री० पीठकी हड्डी।

कसेरा० नाः पु० कांसकारक, कांसगर, जाति विशेष, बर्त्तन बनानेवाला।

कसैला० } गु० कषाय, कसेला।
कसेला०

कसैया० गु० कसनेवाला।

कसौटी० नाः स्त्री० स्वर्णादिपरीक्षपाषाण।

कस्तूरी० नाः स्त्री० मृगमद, मुश्क।

कस्मल० नाः पु० पाप, मूर्च्छा।

कस्मर्या० नाः स्त्री० कम्भार।

कस्मिन्० सर्व० कौन।

कस्य० सर्व० किसकी।

कस्यप० नाः पु० कश्यपमुनि विशेष।

कहतूति० नाः स्त्री० कहावत, मसल।

कहना० स० क्रि० बोलना, जताना, आज्ञा करना, वर्णन करना।

कक्ष० नाः स्त्री० कांख, बगल।

कक्षा० नाः स्त्री० ग्रहों की चालका मडलाकार पन्थ।

कहलाना० स० क्रि० कहलाना, जतलाना, सुनाना।

कहा० सर्व० क्या। नाः पु० आज्ञा।

कहानी० नाः स्त्री० कथा, किस्सा, वृत्तान्त।

कहार० नाः पु० जातिविशेष धीमर।

कहावत० नाः स्त्री० बात, दृष्टान्त, मसल।

का० सर्व० किसी, क्या, संबन्धार्थी।

कांक० नाः पु० ककर।

कांख० नाः स्त्री० कक्ष, बगल, कराह।

कांखना० अ० क्रि० कलाहना, घुरनाना, स० क्रि० छेदना, दबाना।

कांगनी० नाः स्त्री० पौधा विशेष, बीज उसका।

कांच० गु० कच्चा, ना० पु० गुदा में रोग विशेष ना० स्त्री० शीशा।

कांजी० ना० पु० जल विशेष, भात की सड़ाय के बनता है।

कांटा० ना० पु० कंटक, स्वर्णादिक तौलनेका यन्त्र तुला, जलमें गिरीहुई वस्तु निकालने का यन्त्र।

कांठा० गु० किनारा, अन्त, छोर, समीप।

कांड० ना० पु० खण्ड, तीर विशेष।

कांडी० ना० स्त्री० कड़ी, धरन।

कांढू० ना० पु० चीनी पकानेका कड़ाह, भूजाजाति विशेष, भुर्जी।

कांदो० ना० स्त्री० कीच, कीचड़, कादो।

कांधना० अ० क्रि० मचलना, स्वीकारकरना।

कांधा० ना० पु० कन्धा।

कांपना० अ० क्रि० दलदलाना, थरथराना।

कांस० ना० पु० तृण विशेष।

कांसा०
कांस्य० } ना० पु० धातुविशेष।

कांक्षा० ना० स्त्री० इच्छा, मनोरथ।

काई० ना० स्त्री० हरी वस्तु जो तालादि में लगती है।

काऊ० सर्व० जिसको, किसी को।

काक० ना० पु० कौआ, पक्षी विशेष।

काकजघा० ना० स्त्री० पौधा विशेष।

काकटम्बपुष्पी० ना० स्त्री० महामुण्डी।

काकतिक्ता०
काकपदी० } ना० स्त्री० कागजघा।

काकपक्ष० ना० पु० जुल्फ, बावरी, काकुल, कौआ के पर।

काकमुशुण्डि० ना० पु० प्रसिद्ध पक्षी श्रीरामा यण वक्ता।

काकर० सर्व० किसका।

काका० ना० पु० पिताका भाई, चचा।

काकिणी० ना० स्त्री०, २० कौड़ी को कहते हैं, लीलावत्या यथा वराटिकानांदशकद्वयं यत्साका किणीताश्चपणश्चतस्रः, तेषोडशद्रम्मइहावगम्यो द्रम्मैस्तथाषोडशभिश्चनिष्कः।

काकी० ना० स्त्री० काका की पत्नी, चाची।

काकु० ना० पु० व्यंग्यवचन, वक्रोक्ति।

काकोदर० ना० पु० सर्प, कौवाका पेट।

काकोल० ना० पु० विष, हलाहल।

काख० ना० स्त्री० कांख, कच्छ।

काखमलाई० ना० स्त्री० कखौरी।

काग० ना० पु० काक, कौआ।

कागासुर० ना० पु० काकरूपी दैत्य जिसकी चोंच श्रीकृष्णचन्द्रजीने तोड़दीथी।

काच० ना० पु० कांच, गु० कच्चा।

काचक० ना० पु० वास।

काचा० गु० कच्चा, अज्ञानी।

काछ० ना० स्त्री० धोतीका दूसरा सिरा जो पीछे को खोंचते हैं, कमर, जंघाका ऊपरभाग।

काछना० स० क्रि० कछमारना, चढ़ाना, पो छना, बटोरना।

काछनी० ना० स्त्री० काछ विशेष।

काछी० ना० पु० मुराऊ जाति विशेष।

काज० ना० पु० कार्य्य, काम।

काजल० ना० पु० कज्जल, अंजन, सुरमा।

काजी० गु० कार्य्य कर्त्ता, कामी।

कांचन० ना० पु० सुवर्ण, सोनाधातु।

कांचनपुष्पिका० ना० स्त्री० मूसली।

कांचनार० ना० पु० कचनार वृक्ष।

कांचनी० ना० स्त्री० हल्दी, सोनेकी पुतली पर्वती वेश्या।

कांची० ना० स्त्री० पुरीविशेष, जिसके दो भाग हैं एक विष्णुकांची दूसरी शिवकांची।

काट० ना० स्त्री० चीरा, मैल, तीक्ष्णता, तेजी

काटना० स० क्रि० कतरना, टुकडे करना, का टखाना, लवना, अर्थात् लौनी, धाराकरना, रहना, बिताना, रोकना, लज्जित होना, छीलना, लज्जितकरना।

काठमाण्डु० ना० पु० नेपालदेशकीराजधानी।
काठ० ना० पु० काष्ठ, सूखीलकड़ी।
काठिन्य० ना० पु० कठिनता, कठोरपन।
काठियावाड़० ना० पु० देशविशेष।
काठी० ना० स्त्री० घोड़े के उपरका काष्ठ का आसन, मियान जिसमें तलवार रखते हैं, तन, देह, डौल, लकड़ी।
काढ़ना० स० क्रि० निकालना, चमड़ा उधेड़ना, कपड़े में फूल बूटा बनाना, चालमिलाना।
काढ़ा० ना० पु० क्वाथ।
काण०
काणा० } गु० एकाक्ष, एकनयन।
काणी० ना० स्त्री० एक आंखवाला।
काण्ड० ना० पु० खण्ड, प्रकरण।
काण्डरुहा० ना० स्त्री० कुटकी।
कातना० स० क्रि० सूत रुई से बनाना रहँटा के द्वारा।
कातर० गु० डरपोक्ना, व्याकुल, ना० पु० जगल दुर्भिक्ष, कोल्हू की पाटि।
कातिक० ना० पु० आठवां महीना।
कातिकी० ना० स्त्री० कातिक की वस्तुआदि, कातिककी पूर्णमासी।
काती० ना० स्त्री० छोटी तलवार, कत्ती।
कात्यायन० ना० पु० मुनिविशेष, स्मृतिविशेष।
कात्यायनी० ना० स्त्री० देवीविशेष, स्मृति विशेष, कात्यायन वंशी।
कादम्बिनी० ना० स्त्री० मेघमाला।
कादर० गु० डरपोक्ना, व्याकुल।
कादरता०
कादराई० } ना० स्त्री० भय, डर, डरपोकनापन।
काधना० स० क्रि० कांधना, कांधे धरना।
कान० ना० पु० कर्ण, श्रवण, लाज, अदब।
कानन० ना० पु० बन, जंगल, महावाघुल।
कानि० ना० स्त्री० मर्याद, सकोच, अदब, लाज।
काना० ना० पु० अक्षर की खड़ी लकीर, काणा, कड़ाही आदि का गड़ा।
कानी० ना० स्त्री० जो एक आंख की होवे।
कानीन० गु० नीच, क्षुद्र, स्त्री० लड़की, रामचन्द्रिकाशा अथापि आनि नरे वृदिकानीन।
कान्त० ना० पु० पति, स्वामी, सुन्दर।
कान्ता० ना० स्त्री० पत्नी, प्यारी।
कान्ताह्वा० ना० स्त्री० प्रियगु ओषधि।
कान्ति० ना० स्त्री० शोभा, चमक और नम चन्द्रमा की एक कला का।
कान्तिपाषाण० ना० पु० चुम्बक।
कान्दा० ना० पु० जलका कन्द, कलकंदरा।
कान्यकुब्ज० ना० पु० देश विशेष, ब्राह्मण
कान्ह०
कान्हर० } ना० पु० श्रीकृष्ण जी का एकनाम।
कापट्य० गु० शठता, कपट।
कापथ० ना० पु० अतिमार्ग, कठिनमार्ग।
कापुरुष० गु० कुत्सित, मनुष्य, बुरा आदमी कुजन, कुकर्मी, नर।
काम० ना० पु० भोगकार्य्य, अभिलाष, कामदेव, लाज, विषय, बधावा, सुन्दर।
कामक० ना० पु० मेघ।
कामकेलि० ना० स्त्री० दुलार, प्यार, संगम, प्रसग।
कामकञ्चुका० ना० स्त्री० घुघची।
कामतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष।
कामद० गु० कामना दाता।
कामदगो० ना० स्त्री० इन्द्रकी गाय।
कामदूती० ना० स्त्री० बसन्तऋतु, कुम्मी।
कामदेव० ना० पु० मदन, मन्मथ।
कामधेनु० ना० स्त्री० इन्द्रकी गौ, देवगौ।
कामना० ना० स्त्री० इच्छा, कामाभिलाष, मदन।

कामपाल० ना० पु० बलदेवजी।
कामदहन० ना० पु० जिस वनमें श्री सदाशिव ने कामदेव का जलाया था।
कामरी० ना० स्त्री० वम्मत।
कामरूप० ना० पु० इच्छाचारी, सुन्दर, देश विशेष।
कामरूपी० गु० बहुरूपिया, सुंदर, कामरूप वासी।
कामसखा० ना० पु० इन्द्र, वसन्तऋतु।
कामांग० ना० पु० आम्रवृक्ष।
कामातुर० } गु० मदनमत्त, कामी, धूल-
कामार्त्त० } हारा।
कामिनी० ना० स्त्री० उत्तम, सुन्दरी, ना० पु० वृक्ष विशेष, कामातुर स्त्री।
कामी० गु० कामातुर, बहुधन्वी, मनलता माधवी वृक्ष।
कामुक० ना० पु० स्त्री के सुख में आसक्त, कामातुर।
कामोद० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
काम्बोज० ना० पु० देश जो बंगाले के दक्षिण पूर्व है।
काम्य० गु० सुंदर, अच्छा।
काम्यकर्म० ना० पु० स्वर्गादि फल के लिये जो कर्म करना।
काय० ना० स्त्री० देह, तन।
कायक० गु० देही।
कायफल० ना० पु० औषध विशेष।
कायर० गु० भयमान, डरपोक, हेठा।
कायस्थ० ना० पु० जातिविशेष, गु० जो निज काया में स्थितहो अर्थात् सन्तुष्ट।
कायस्था० ना० स्त्री० हर्रे, काकोली।
काया० ना० स्त्री० देह, तन।
कायाकल्प० ना० पु० देहका बदलना।
कारक० ना० पु० क्रियाका साक्षात् निमित्त।
कारज० ना० पु० कार्य, काम।
कारण० ना० पु० निमित्त, लिये, सबब, प्रकृति।
कारणी० गु० कारण, कर्त्ता।
कारवल्ली० } ना० पु० करेला, तरकारी।
कारवेल्ल० }
कारवी० ना० स्त्री० अजमोद, कलौंजी।
कारागार० } ना० पु० बन्दीघर, जेहलखाना।
कारागृह० }
कारु० } ना० पु० शिल्पकार, थवई
कारुकर० }
कारुणिक० गु० दयालु, कृपालु।
कार्त्तस्वर० ना० पु० सुवर्ण, काञ्चन।
कार्तिक० ना० पु० कातिक।
कार्तिकेय० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
कार्पण्य० ना० पु० दरिद्रता, दीनता।
कार्पास० ना० स्त्री० कपास।
कार्मुक० ना० पु० धनुष, महानिंब वृक्ष।
कार्य० ना० पु० प्रयोजन, काम।
कार्षापण० ना० पु० चाँदी के सोलहपण की माप अथवा तोल।
काल० ना० पु० मृत्यु, दुर्भिक्ष, समय, फल काला, धर्मराज, सर्प, सुन्दर, यमराज २।
कालक० ना० पु० कृष्णता, बीजगणित में प्रमाण का बोधक।
कालकूट० ना० पु० विष, हलाहल।
कालपर्णिक० ना० पु० तेंदुआवृक्ष।
कालपर्णी० ना० स्त्री० कालानिसात।
कालमेषिका० ना० स्त्री० मजीठ, बाकुची।
कालमेषी० ना० स्त्री० कालानिसोत।
कालयवन० ना० पुं० नाम एक म्लेच्छ का जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने भस्म किया था।
कालरात्रि० } ना० स्त्री० प्रलयकाल की रात्रि
कालरात्रि० } अर्धरात्रि, देवी विशेष।
कालवाहन० ना० पु० भैंसा।
कालवृत्तिका० ना० स्त्री० तुम्बी जो पानी होती है।
कालदारु० ना० पु० सरफोंका।
कालसार० ना० पु० तेंदुआ वृक्ष।

कालसूत्र० ना० पु० नरक भेद।
कालस्कन्ध० ना० पु० तमालवृक्ष।
कालक्षेप० ना० पु० समय काटना, दुःख भोग करना, गुजरान करना।
कालज्ञ० गु० ज्योतिषी, परिहत, मार्गाश्वर, ज्ञाता, मुर्गापक्षी, शृगाल।
काला० गु० कृष्णवर्ण, श्यामरंग।
कालिका० ना० स्त्री० धनिया, मसाला, काला जीरा, देवीविशेष।
कालिख्याल० ना० स्त्री० किन्दवाली।
कालिन्दी० } ना० स्त्री० यमुनानदी विशेष।
कालिन्द्री० }
कालियङ्क० ना० पु० मलय, चन्दन।
कालिया० ना० पु० कालीनाग, गु० काला।
काली० ना० स्त्री० मसी, देवीविशेष, मिसर देशकी नदी ना० पु० कालीनाग जो यमुना में रहा करता था।
कालीदह० ना० पु० यमुनाजी में विशेषस्थान।
काल्पनिक० गु० आरोपित, कल्पना कियागया, ना० स्त्री० नदी विशेष जो दक्षिण में है।
कावेरी० ना० स्त्री० नदी विशेष।
काव्य० ना० पु० पद, श्लोक, छन्द, पुस्तक, जिसमें कविताई हो, शुक्र।
कास० ना० पु० खांसी, खोंखा।
कासघ्नी० ना० स्त्री० भारंगी औषधि।
कासमर्द० ना० पु० कलौंजी का साग।
काश्मीर० ना० पु० देश विशेष जो पंजाब के उत्तर है, पुष्करमूल।
काश्मीरी० ना० स्त्री० केसर, कम्भारी, काश्मीरदेशवासी।
काश्यप० ना० पु० कश्यपकी सन्तान।
काश्यपी० गु० सूरज का रथवान।
काशी० ना० पु० नगर विशेष।
काष्ठ० ना० पु० काठ, लकड़ी।
काष्ठकेता० ना० पु० मदार।
काष्ठपादुका० ना० स्त्री० कुर्सी।
काष्ठान्तर० ना० पु० काठके भीतर।
काष्ठी० ना० स्त्री० कफरी।
कासार० ना० पु० तालाब, भैंसा।
कासु० सर्व० किसको।
काहन० ना० पु० कार्षापन।
काहे० सर्व० क्यों।
काक्षी० ना० स्त्री० फकरी।
कि० अव्य० प्रथमवाक्य का द्वितीयवाक्य से सम्बन्धकारक।
किंशुक० ना० पु० पलाश, ढाक, टेसू।
किंकर० ना० पु० टहलुआ।
किंकरी० ना० स्त्री० दासी, टहलुइन।
किंकिणी० ना० स्त्री० क्षुद्रघण्टिका घण्टा समेत, चाकसू।
किफ्यान० ना० पु० घाड़ा।
किचकिचाना० अ० क्रि० दांतपीसना।
किचड़ाना० अ० क्रि० आंखों में कीचड़आना।
किचपिचाना० अ० क्रि० गड़बड़ाना।
किंचित्० अव्य० थोड़ा, अल्प, कुछ।
किंचिन्मात्र० गु० कुछ, अतिअल्प।
किंचुक० ना० पु० सनविशेष।
किंचुकी० ना० स्त्री० चोली अंगिया।
किंजरक० ना० पु० किंजल्क।
किटि० ना० पु० शूकर, सूअर, यथा, वराह-सूकरो घृष्टि कालपोनी किरिकिरि इत्यमर।
किड़किड़ाना० अ० क्रि० क्रोधसे दांतपीसना
किड़हा० ना० पु० कुआं, गु० घुना।
कित० अव्य० कहां, किधर।
कितना० }
कितनी० } गु० प्रमाण का प्रश्नकारक
किती० }
कितेक० गु० बहुत।
किते० अव्य० किधर।
कित्ति० ना० स्त्री० कीर्ति, यश, रामचन्द्रिकाया यथा, अस्तव्य कीर्ति लेय भूमि देयमान देखिये

किधर० अव्य० कहां।
किनारा० ना० पु० तट, कूल।
किनारी० ना० स्त्री० गोटा, मगजी।
किन्० ना० पु० घाव, अव्य० क्योंनहीं।
किन्तघ० ना० पु० धतूरा।
किन्तु० अव्य० परन्तु निमपरभी।
किन्नर० ना० पु० यक्षदेवता।
किन्नरी० ना० स्त्री० सारंगी, यक्षिणी।
किपलता० ना० पु० कैथा का वृक्ष।
किम्० सर्व० क्यों किसप्रकार।
किमपि० सर्व० क्योंभी, किसप्रकार।
किमर्थ० सर्व० किसलिये।
किमाञ्च० ना० पु० खड्डा, कीच।
किमि० सर्व० क्यों किमप्रकार।
किम्पुरुष० ना० पु० नवखण्ड धरातल में से एक नामहै, कुवेर पौरुषी।
किंवा० अव्य० अथवा।
किरकिरी० ना० स्त्री० छोटी लकडी।
किरकिरा० गु० रतीला बालुआ।
किरकिराना० अ० क्रि० चिचकियाना, बन्द डाना।
किरण० ना० स्त्री० रश्मि, शुआ।
किरात० ना० पु० भील जातिविशेष, चिरायता।
किरातक० ना० पु० चिरायता।
किराना० स० क्रि० साफ करना, ना० पु० मसाला, औषधि वगैरह।
किरि० ना० पु० किरि शूकर।
किरिच० ना० स्त्री० तलवार टुकड़ा।
किरिया० ना० स्त्री० शपथ, सौगन्द, सौंह क्रिया।
किरीट० ना० पु० मुकुट, ताज।
किरीटी० ना० पु० अर्जुन ना० स्त्री० रत्ता दूसी आषधि, गु० मुकुटधारी।
किल० अव्य निश्चित।
किलनी० ना० स्त्री० कीटविशेष।
किलकिल० ना० पु० वानरों का शब्द।
किलिम० ना० स्त्री० देवदारु।
किलकारी० ना० स्त्री प्रसन्नता से हँसना।
किलकारीमारना० अ० क्रि० प्रसन्नहोके जय जयकार करना, खूब हँसना।
किलकिलाना० अ० क्रि० चिल्चिलाहाना।
किल्ली० ना० स्त्री० गजी कीला।
किल्बिष० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह।
किसलय० ना० पु० नवीनपत्ता।
किशोर० ना० पु० तरुणअवस्था अर्थात् १६ वर्षतक का लड़का।
किसनई० ना० स्त्री० खेतीका काम।
किसान० ना० पु० नागर, मन करनेहारा, जाति विशेष।
कीचड़० ना० पु० बबूल।
कीच०
कीचड़० } ना० पु० कादा, चहला।
कीट० ना० पु० कीड़ा।
कीटमारी०
कीटसारी० } ना० स्त्री० हसपादी पौधा।
कीड़ा० ना० पु० कीट, कृमि, किरम।
कीतनक० ना० पु० मुलहटी।
कीना० स० क्रि० करना।
कीर० ना० प० तोतापक्षी यथा कीरशुकौ समौ स्मृतौ।
कीरत०
कीरति० } ना० स्त्री० कीर्ति, बड़ाई, तारीफ़
कीर्तन० ना० पु० गाना, कीर्तन, कहना।
कीर्त्ति० ना० स्त्री० यश, स्तुति, नेकनामी।
कील० ना० स्त्री० लोहेका काग।
कीलना० स० क्रि० मन्त्र फूककर रोकना।
कीला० ना० पु० लोहका काग।
कीलाल० ना० पु० जल, पानी।
कीश० ना० पु० वानर, बन्दर।
कु० अव्य० यह अक्षर जिस शब्द के प्रथम संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी बुरा, निन्दित, कभी न्यून होताहै, पृथ्वी,

कुंवर० } नां० पुं० कुमार।
कुंवारा० }

कुंवारी० नां० स्त्री० कुमारी।

कुआरा० नां० पुं० बिनाब्याहा लड़का।

कुआरी० नां० स्त्री० कन्या बिना बियाही।

कुकन्या० नां० स्त्री० पृथ्वीकी कन्या विशेष श्री सीताजू, गु० दुष्ट कन्या।

कुकर्म० नां० पुं० बुराकाम।

कुकर्मी० गु० कुकर्म करनेहारा।

कुक्कुट० नां० पुं० मुरगा।

कुक्कुटाण्ड० नां० पुं० सफेदमांदा, कुक्कुटका अण्डा।

कुक्कुटी० नां० स्त्री० मुरगियां, मुरगी।

कुकुरन्द० नां० पुं० जंगली करोंदा।

कुक्रिया० नां० स्त्री० निन्दिताचरण, तुच्छकर्म।

कुगृह० नां० पुं० लडाघर, बुराघर।

कुघाट० नां० पुं० बेडौल, बदसूरत, कुत्सितघाट, जहा घाट न हो।

कुघात० नां० स्त्री० कुसमय मारना, बुरीबात।

कुंकुम० नां० पुं० केसर, जाफरान।

कुंकुमा० नां० पुं० गुलाल भरने के लिये जो लाखका बनता है।

कुच० नां० पुं० स्तन, चूची, उरोज।

कुचन्दन० नां० पुं० पतंग जिससे कपड़ा रँगतेहैं।

कुचलना० स० क्रि० चूरकरना, मसलना।

कुचला० नां० पुं० औषधि विशेष।

कुचिया० नां० स्त्री० तोलकी, कानका अग्रभाग।

कुचैला० गु० मैला।

कुचैना० गु० दुःख, अप्रसन्नता।

कुछ० सर्व० थोड़ा, रंचक।

कुज० नां० पुं० मंगल, वृक्षादि, भौमासुर।

कुजाति० गु० नीचजाति, या नीच।

कुञ्चित० गु० छल्लेदारबाले, गभुवारेबाले।

कुञ्चिका० नां० स्त्री० कुंजी, ताली।

कुञ्ची० नां० स्त्री० कलौंजी।

कुञ्ज० नां० पुं० वृक्ष लतादि रचित रमणीय स्थान, तंगगली, पक्षीविशेष।

कुञ्जर० नां० पुं० हाथी, मुख्यप्रधान, रामायणे यथा, कपि कुंजरहि बोलिलेआये।

कुञ्जिका० } नां० स्त्री० ताली, चाभी।
कुञ्जी० }

कुटकी० नां० स्त्री० औषधि विशेष, कीटविशेष।

कुटज० नां० पुं० इन्द्रयव।

कुटना० नां० पुं० भडुआ, अ० क्रि० पिटना।

कुटनाना० स० क्रि० फुसलाना।

कुटनी० नां० स्त्री० दूती, नायिका।

कुटाना० स० क्रि० पिटाना।

कुटिल० गु० टेढ़ा, क्रूर।

कुटिलता० } नां० स्त्री० टेढ़ापन, क्रूरता।
कुटिलाई० }

कुटी० }
कुटीर० } नां० स्त्री० मढ़ी, झोपड़ी, एकान्त स्थान, समिया।
कुटीरा० }

कुटुम० नां० पुं० कुटुम्ब।

कुटुमी० नां० कुटुम्बी।

कुटुम्ब० नां० पुं० कुनबा, घराना।

कुटुम्बी० नां० पुं० गृहस्थ, घरवाला।

कुटेव० नां० स्त्री० कुभाव, कुचालि, बुरी रीति।

कुट्टनी० नां० स्त्री० कुटनी।

कुठार० नां० पुं० फरसा, कुल्हाड़ी, तबर।

कुठारी० नां० स्त्री० कुल्हाड़ी, टांकी।

कुठाहर० नां० पुं० कुसमय, बे मौका।

कुड़कना० } अ० क्रि० क्रोधयुक्त होकर क-
कुड़कुड़ाना० } हना, रिसाय के बोलना।

कुढ़ना० अ० क्रि० विलापकरना, कलपना, डाहकरना, हसदकरना।

कुढ़ाना० स० क्रि० सताना, छेड़ना।

कुरटन० नां० पुं० श्योनावृक्ष।

कुण्ठित० गु० लज्जित, गठीला, अतीव।

कुण्ड० ना० पु० आगिरखनेके लिये कृत्रिमकुण्ड, जलका विशेष स्थान, पति विद्यमान होते जार-ज पुत्र, गड्हा, तालाव ।

कुण्डल० ना० पु० कर्णभूषण, घेरा, मण्डला मोती।

कुण्डलिया० ना० स्त्री० गोलाई, छन्दविशेष ।

कुण्डलित० गु० गोलाकार, कुंडलयुत ।

कुण्डली० ना० पु० कचनार, गुरच ।

कुण्डी० ना० स्त्री० कोंढ़ी।

कुतुप० ना० पु० दिनका आठवा मुहूर्त ।

कुतर्क० ना० स्त्री० नीचविचार, बुरीदलाल ।

कुतर्की० गु० कुतर्क करनेहारा ।

कुतर्ना० स० क्रि० दांतों से काटना ।

कुत्तल० ना० पु० धराूतल, रूपजमीन ।

कुतिया० ना० स्त्री० कुत्ताकी स्त्री गु० कूतनेहारा ।

कुतुक० ना० पु० कौतुक ।

कुतूहल० ना० पु० कौतुक, चोप, उतावली, खेल, हँसी ।

कुत्ता० ना० पु० कुक्कुर ।

कुत्सा० ना० स्त्री० निन्दा, अवज्ञा ।

कुत्सित० गु० निन्दित, नीच, बुरा, खराब, निषेधित ।

कुदकना० अ० क्रि० उछलना, कूदना ।

कुदरा० ना० पु० अस्त्र विशेष, जिससे लकड़ी चीरते हैं ।

कुदराना० अ० क्रि० उछलना, कूदना ।

कुदाना० स० क्रि० उछलाना, फँदाना ।

कुदारि० } ना० स्त्री० मिट्टी खोदने का अस्त्र
कुदला० } विशेष ।

कुदृष्टि० ना० स्त्री० पापदृष्टि, बदनजर ।

कुदाल० ना० पु० कचनार ।

कुधातु० ना० पु० लोहा रामयथे यथा, पारस परस कुधातु सोहाई ।

कुधि० } गु० निर्बुद्धि, बुरीगति, बेतमीज ।
कुधी० }

कुनटी० ना० पु० मनसिल ।

कुनवा० ना० पु० कुणबा, घराना, खानदान ।

कुनीति० ना० स्त्री० कुचाल, कुरीति, अन्याय ।

कुन्त० ना० पु० पानी, पवन, कमल, भाला, कराल, राजा विशेष ।

कुन्तल० ना० पु० बाल, केश, सूत्रधार, बर्छा, हल, खेतजोतने का, राजा विशेष, बानर विशेष, कपटी ।

कुन्तली० ना० पु० चिरपोटा ।

कुन्तिज० ना० पु० युधिष्ठिरादि पांडव ।

कुन्ती० ना० स्त्री० पाण्डवोंकी माता ।

कुन्द० ना० पु० श्वेतवर्ण, पुष्प विशेष, उज्ज्वल ।

कुन्दन० ना० पु० उत्तमस्वर्ण, अच्छासोना ।

कुपति० गु० दुष्पति, दुष्स्वामी, बुरामालिक ।

कुपथ० ना० पु० कुमार्ग, कुराह, बुरीराह ।

कुपथ्य० गु० जो पदार्थ पाचक न हो वा रोगी का उपकारी न होवे, बदहजम ।

कुपरामर्श० ना० पु० कुमन्त्रण ।

कुपात्र० गु० अयोग्य, नालायक ।

कुपुरुष० गु० पुरुषार्थ रहित, बुरा ।

कुपूत० ना० पु० कपूत, नालायक लड़का ।

कुप्य० ना० पु० चांदी, रूपा ।

कुप्पा० ना० पु० चर्मपात्र, बड़ापात्र चमड़े का जिसमें घी आदि रखते हैं ।

कुप्पी० ना० स्त्री० छोटाकुप्पा ।

कुब० ना० पु० कुबड़ा ।

कुबजा० ना० पु० कुब्ज ।

कुबड़० ना० पु० टेढ़ा ।

कुबड़ा० गु० कुब्जा ।

कुब्ज० गु० कुबड़ा, वक्रपृष्ठ ।

कुब्जा० ना० स्त्री० कुबड़ी, टेढ़ी, कूबरी प्रसिद्ध ।

कुबत० ना० स्त्री० निकृष्टवार्ता, बुरीबात ।

कुमण्डल० ना० पु० धरामण्डल, राज्य ।

कुमति० ना० स्त्री० मूर्खता, अल्पमती गु० उन्मत्त, मूर्ख ।

कुमद० ना० पु० कुमुद।
कुमदिन ना० पु० फूल।
कुमार० ना० पु० बालक, राजपुत्र, स्वामि कार्त्तिक, पापरहित।
कुमारिका० } ना० स्री० कन्या, जिसको रजो
कुमारी० } धर्म नहीं भया, साधारण सुता, घीकुआरिपौधा।
कुमार्ग० ना० पु० कुपथ, बुरीराह।
कुमुद० ना० पु० फूल जो रात्रि को खिलता है और दिनको सम्पुटित होताहै उसको श्वेत कमलभी कहते हैं और रामदल में वानर विशेष था, चादनी, मुदरहित।
कुमुदबन्धु० ना० पु० चन्द्रमा।
कुमुदिनी० ना० स्री० कमलिनी।
कुम्भ० ना० पु० घड़ा, कलस, कलशा।
कुम्भक० ना० पु० कुम्हार, योगक्रियामें पवन पेट या ब्रह्माण्डमें रोकनेको कहते हैं।
कुम्भकर्ण० ना० पु० रावणका छोटाभाई।
कुम्भकार० ना० पु० कुम्हार, कुलाल।
कुम्भज० } ना० पु० अगस्त्यमुनि।
कुम्भजात० }
कुम्भयोनिका० ना० स्री० गोमापौधा।
कुम्भवीर्य्य० ना० पु० रीठा।
कुम्भा० ना० पु० छोटाकुम्भ।
कुम्भिका० ना० स्री० कुम्भी।
कुम्भिनी० ना० स्री० धरती, पृथ्वी।
कुम्भी० ना० स्री० पौधा जो तालावों में पानी पर जमताहै, ना० पु० हाथी, कायफल, अगस्त्यमुनि।
कुम्भीनस० ना० पु० सांप।
कुम्भीपाक० ना० पु० नरकविशेष।
कुम्भीर० ना० पु० मगरमच्छ।
कुम्भोदणा० ना० स्री० निसोत।
कुम्हलाना० प० क्रि० मुरझाना,मूरझना।
कुम्हार० ना० पु० जो मिट्टी के बर्त्तन बनाताहै।
कुम्हारी० ना० स्री० जन्तुविशेष जो अपना घर माटीसे बनाता है।
कुयोग० ना० पु० दुष्टयोग, दुःखदायक ग्रह पड़ जाना, बुरासयोग, बुराउपाय।
कुयोगी० गु० विषय भोगी रामायणे यथा पुत्र कुयोगी ज्यों उरगारी, मोहविटप नहिं सकत उतारी।
कुरङ्ग० ना० पु० हरिण, मृग।
कुरण्टक० } ना० पु० पियावासा।
कुरवक० }
कुरमा० ना० पु० कुनबा, घराना।
कुरारि० ना० स्री० सारसपक्षी।
कुरी० ना० स्री० समूह, घराना।
कुरीति० ना० स्री० कुचालि।
कुरीर० ना० स्री० कुटी, मढ़ा।
कुरु० ना० पु० राजा विशेष जिसकी सन्तान में कौरव और पाण्डव थे, नवखण्ड पृथ्वी में से एक।
कुरुकेतु० ना० पु० दुर्योधन, युधिष्ठिर, राजा परीक्षित।
कुरुचि० ना० स्री० नीचवासना, बदहजमी।
कुरुपति० } ना० पु० दुर्योधन, युधिष्ठिर,
कुरुराय० } परीक्षित।
कुरुबक० ना० पु० फूलविशेष।
कुरुवंश० ना० पु० राजाकुरुकी सन्तान।
कुरुक्षेत्र० ना० पु० पुण्यक्षेत्र जहांभारतभयाथा।
कुरूप० गु० भोंडा, बदसूरत।
कुर्कुटी० ना० पु० सेमर वृक्ष।
कुर्च्चा० ना० पु० कुब्ज।
कुर्याल० ना० स्री० पक्षी जब आनन्द में आकर पंख झाड़ताहै।
कुल० ना० पु० वंश, घर, घराना।
कुलटा० ना० स्री० व्यभिचारिणी, जो स्री परपति रमण करे अर्थात् पतिव्रता नहीं।
कुलचा० ना० पु० यह सम्प्रदा जो कोई घरवालों से भरापके टुकड़ाकरे, पूनी, घर।

कुलतारण० ना० पु० पुत्र जो कुलकी लाज रक्खे या सुपुत्र करके पुरखा को तारे।
कुलतिय० ना० स्त्री० पतिव्रता, सती, यथा बिगरी लाज समाज शान्ति, दाहा, बहुत न दार की कुलत कुलतिय आदि उराय, जिन हरि हिम भ जाराति कुलको सुतान् जाय।
कुलद्रोही० गु० ना० मनुष्य कुकर्म करके वंश वा जातिकरके वा जाति कलंक करीहार।
कुलधर्म० ना० पु० वंशव्यवहार, कुलधर्म।
कुलपूज्य० } ना० पु० कुलका देवता वा मान्य
कुलपूज्य० } या पूजित।
कुलवधू० ना० स्त्री० कुलवधू, सुतिय।
कुलबुलाना० अ० क्रि० कैसमसाना, कुलकुलाना, कुलबुलाना।
कुलवती० ना० स्त्री० कुलवन्ती, पतिव्रता।
कुलहन्त० } गु० जो अधमवंशमें उत्पन्न भया।
कुलहन्न० }
कुलक्षण० ना० पु० दुष्ट चिह्न, कुस्वभाव।
कुलक्षणा० स्त्री० } जिसके लक्षण बुरे हों वा है।
कुलक्षणी० गु० }
कुलथी० ना० स्त्री० मनसिल।
कुलांच० ना० स्त्री० कूद, फांदनि, जस्ते।
कुलांगना० ना० स्त्री० कुलवान् स्त्री अथवा कुलांगना।
कुलाचार० ना० पु० वंशका धर्म, अपने कुलकी रीति।
कुलाल० ना० पु० कुम्हार।
कुलाहल० ना० पु० कोलाहल।
कुलिश० ना० पु० वज्र, हीरा।
कुली० ना० स्त्री० बडीखाई।
कुलीन० ना० पु० अच्छेघर वा वंश में जो उत्पन्न भया।
कुलीनता० } ना० स्त्री० भलवंशका आचार
कुलीनाई० } या बड़ेघर का उत्पत्ति धर्म।
कुलीरशृङ्गी ना० स्त्री० केकड़ाशिंगी।
कुल्हा० ना० पु० } कुल में भलाई रीतिके
कुल्हा० ना० स्त्री० } देवता

कुल्हाड़ी० ना० स्त्री० कटारी जिससे लकड़ी आदि काटते हैं।
कुल्हिया० ना० स्त्री० माटी का छोटा पात्र, कुल्ही।
कुवलय० ना० पु० कमल।
कुवाद्दी० गु० दुष्ट, कुवचनकी
कुविन्द० ना० पु० जोलाहा, बदनुनका।
कुविहंग० ना० पु० जुर्रा, श्येन, बाज
कुवेर० ना० पु० यक्षराज, धनपति।
कुश० ना० पु० तृणविशेष जो अति पवित्र गिना जाता है, सीताजी का पुत्र, दर्भविशेष, पानी, पृथ्वी के सात द्वीपों में से एक।
कुशमुद्रिका० ना० स्त्री० कुशकी मुन्दरी अर्थात् पैंती जो यज्ञादमें पहिनते हैं।
कुशल० ना० पु० भलाई, कल्याण, चतुर
कुशलता० ना० स्त्री० भलाई।
कुशलत्व० पु० कल्याण।
कुशलक्षेम० स्त्री० } खैरआफियत।
कुशलान० }
कुशली० गु० सुखी, प्रसन्न, निपुण।
कुशासन० ना० पु० कुशका आसन।
कुशील० गु० शील रहित, बेमुरव्वत।
कुशेशय० ना० पु० कमल।
कुष्ठ० ना० पु० कोढ़ रोग।
कुष्ठहन्तन० ना० पु० पँवार, चकौंड़।
कुषेय० ना० पु० खड्ग, तलवार।
कुष्मसूदन० ना० पु० शिवाली।
कुष्ठी० कोढ़ी।
कुसङ्ग० ना० पु० बुरे लोगों का साथ।
कुसमय० ना० पु० कठिन समय, बुरे दिन आपत।
कुसरात० ना० स्त्री० कुशलात।
कुसीद० ना० पु० लाभके लिये धन देना।
कुसुदा० ना० पु० फायदा।
कुसुम० ना० पु० कुसुम फूल, कुसुम।
कुसुमशर० ना० पु० कामदेव।

कृतज्ञता० ना० स्त्री० गुणवाद, उपकार मानना, अहसान मानना।
कृतान्त० ना० पु० यमराज, सिद्धान्त।
कृतार्थ० गु० कृतकार्य, निहाल, अशाधारी, मुक्त।
कृति० ना० स्त्री० काम करना।
कृत्तिका० ना० स्त्री० तीसरा नक्षत्र।
कृतिमरक्ष० ना० पु० बाघ।
कृतिभंतार्त्त० ना० पु० रसौत।
कृतिवासा०, कृत्तिवासा० } ना० पु० श्रीमहादेवजी।
कृत्या० ना० स्त्री० देवी, विशेष राक्षसी।
कृत्स्न० गु० अशेष।
कृदन्त० ना० पु० जो शब्द धातु से बना है।
कृपण० गु० सूम, कञ्जूस, अदाता।
कृपणता० ना० स्त्री० सूमी, कञ्जूसी, अदातृत्व।
कृपा० ना० स्त्री० दया, मेहरबानी, रहम।
कृपाण० ना० पु० खड्ग, तलवार।
कृपालु० गु० दया शील, दयावन्त, रहीम।
कृमि० ना० पु० कीड़ा।
कृमिघ्न० ना० पु० विडङ्ग ओषधि।
कृमिजग्धा० ना० पु० काला अगुरु।
कृश० गु० दुर्बल, क्षीण, लटा।
कृशता० ना० स्त्री० दुर्बलता, क्षीणता।
कृशाङ्गी० गु० जिसके अङ्ग खिचेहुये हैं।
कृशानु० ना० पु० अग्नि, आगि।
कृषाण०, कृषिक० } ना० पु० किसान खेतीवाला।
कृषिकर्म० ना० पु० हलजोतना, खेती करना।
कृषी० ना० स्त्री० खेती, किसनई।
कृषीवल० ना० पु० किसान, कृषाण।
कृष्ण० ना० पु० श्रीकृष्ण, श्यामसुन्दरजी, काला, नीरा, कालानीतर, कालाहरिण, गु० श्याम, कालारंग।
कृष्णगन्धा० ना० पु० सहिजन वृक्ष।
कृष्णता० ना० स्त्री० घुघची, श्यामता।
कृष्णपक्ष० ना० पु० बदी, अंधेरा पाख।
कृष्णफला० ना० स्त्री० बाकुची, बद्दावरीदा।
कृष्णभद्रा० ना० स्त्री० कुटकी।
कृष्णवीर्य्य० ना० पु० तरबूज।
कृष्णवृत्तिका० ना० स्त्री० कम्भारी।
कृष्णसार० ना० पु० कालाहरिण।
कृष्णा० ना० स्त्री० नदी विशेष, जो दक्षिण भरतखण्ड में है, पीपरी, यमुनाजी।
कृष्णाग्रज० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
कृष्णागरु० ना० पु० काला अगुरु।
कृष्णाफल० ना० पु० स्याहमिर्च।
कृष्णार्पण० गु० भगवान्हेत।
कृष्णोपकुल्या० ना० स्त्री० पीपरी।
कृस्मरी० ना० स्त्री० कम्भारी।
कृत्रिम० गु० बनायाहुआ, रचित।
के० अव्य० सम्बन्धबोधक।
केकयी० ना० स्त्री० भरतजी की माता।
केकड़ा० ना० पु० कर्कट, गेंगटा।
केकय० ना० पु० राजा वा देश विशेष।
केकरा० ना० पु० केकड़ा।
केका० ना० स्त्री० मोरध्वनि, मोरोंका शब्द।
केकी० ना० पु० मोर, मयूर।
केतकी० ना० स्त्री० केवड़ा वृक्ष वा पुष्प विशेष।
केतिक० गु० थोड़े, दोचार, किनना।
केतु० ना० पु० नवमग्रह, पुच्छलतारा, पताका झण्डा वा झण्डी।
केतुकि० ना० पु० आकाश, पुष्पविशेष, सूर्य, चन्द्रमा, कामदेव, छन्द।
केतुमाल० ना० पु० पृथ्वी नवखण्डों में से एक का नाम।
केन्द्र० ना० पु० मरकज, गोलाकार वा वृत्त-क्षेत्रका वह मध्यस्थान जहा से परिधि तक जितनी रेखा खींची जावें वह सब परस्पर तुल्यहों।
केयूर० ना० पु० आभूषण जेवर।
केरि० ना० पु० केला वृक्ष, ना० स्त्री० केलि।

केलि० } ना० स्त्री० क्रीडा, विहार, ऐश
केली० } आराम।
केवट० ना० पु० मल्लाह, खेवरु।
केवड़ा० ना० पु० पुष्प वा वृक्षविशेष।
केवल० अव्य० मात्र, फ़क़त गु० एकही।
केवली० ना० स्त्री० जन्मपत्री।
केवा० सर्व० कोई।
केश० ना० स्त्री० बाल।
केशफला० ना० स्त्री० बेरी वृक्ष वा उसका फल यथा स्निग्धच्छदा केशफला सौवीरिका, इति निघण्ट।
केशर० ना० पु० केसर, नागकेसर।
केशरञ्जन० ना० पु० भगरा पोधा।
केशरी० ना० पु० हनुमान्जी के पिता, सिंह।
केशव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम।
केशवेणी० ना० स्त्री० बालोंकी लट।
केशाकेशी० ना० पु० परस्पर बालो को पकड़ के लड़ना वा लड़ाना।
केशी० ना० पु० दैत्यविशेष जिसको श्रीकृष्ण चन्द्र ने वध कियाथा गु० बालोंवाला।
केशरिया० गु० केशरसे रंगाभया, पीला।
केहरि० } ना० पु० सिंह, शेर, व्याघ्र।
केहरी० }
कै० सर्व० कितना, अनेक।
कैंचली० ना० स्त्री० सांपका खोल।
कैटभ० ना० पु० दैत्यविशेष।
कैत० ना० पु० कैथाका वृक्ष।
कैतव० ना० पु० चिरायता, छल।
कैथ० } ना० पु० वृक्षविशेष।
कैथा० }
कैथी० ना० स्त्री० नागरीका एक प्रकारका लेख जो कायस्थों ने कल्पना किया है।
कैरव० ना० पु० कफूल, श्वेतकमल।
कैल० ना० स्त्री० अङ्कुर, गाभा।
कैलाश० } ना० पु० पर्व्वतविशेष, जहां शिवजी
कैलास० } और कुबेरआदि यक्षगण रहते हैं।
कैथ० ना० पु० कदम वृक्ष।
कैवर्त्त० ना० मल्लाह, कहार, धीमर, केवट।
कैवल्य० ना० पु० मोक्ष, मुक्ति।
कैशिक० ना० स्त्री० बालों की लट।
कैसा० सर्व० किस प्रकार।
कैहों० भवि० क्रि० कहूंगा वा कहूगा।
को० अव्य० कर्मविभक्ति द्वितीयाका, सर्व० कौन।
कोई० सर्व० अनिश्चय, एक, ना० पु० कमल विशेष।
कोऊ० सर्व० कोई जोहो।
कोचना० स० क्रि० बेदना, चुभाना।
कोपल० ना० पु० नयेपत्ते, गुच्छा।
कोक० ना० पु० ग्रन्थ विशेष जिस में स्त्री प्रसंग की प्रतिपादकता का वर्णन है, कफूल।
कोकनद० ना० पु० लाल कमल।
कोकर्ण० ना० पु० असगन्ध।
कोका० ना० पु० चकई चकवा, दूधगाई, कफूल पिण्डखजूर।
कोकिल० } ना० स्त्री० पक्षीविशेष कोयल।
कोकिला० }
कोकी० ना० स्त्री० चकई।
कोख० } ना० स्त्री० कुक्षि।
कोखा० }
कोखबन्ध० गु० बांझ, बन्ध्या।
कोख० ना० स्त्री० कोल, कुक्षि।
कोछा० } ना० स्त्री० गोदी, ओढने की झोली।
कोछी० }
कोट० ना० पु० गढ़, किला, नगर।
कोटर० ना० पु० वृक्षकी खोह।
कोटवी० गु० नंगी स्त्री०, ना० स्त्री० बाणासुरकी महतारी।
कोटा० ना० पु० राजपूताने का नगर विशेष।
कोटि० ना० स्त्री० एक धोरकी भुज, पहिला पक्ष, किरोड़, सौ लाख।
कोठरी० ना० स्त्री० छोटा कोठा।
कोठा० ना० पु० पक्काहुआ एक बड़ा घर।

कोटि० ना० स्त्री० करोड़।

कोठी० ना० स्त्री० महाजनों वा राजाओं आदि के रहने वा बैंक का स्थान।

कोड़ना० स० क्रि० खोदना।

कोड़ा० ना० पु० चाबुक।

कोट० ना० पु० किला, रँगावशार।

कोड़ाना० अ० क्रि० दु बाड़ना।

कोढ़ी० ना० पु० कढ़ा।

कोण० ना० पु० चारों दिश दूजा।

कोद० ना० स्त्री० ओर, पक्ष, तरफ।

कोदण्ड० ना० पु० विकार वा धनुष धनुर।

कोदव० ना० पु० धान, अन विशेष।

कोना० ना० पु० जो दो रेखा रस्ताओं के मिलने से बनता है परन्तु वे रस्ता एक सूत्र में न हों

कोप० ना० पु० क्रोध, गुस्सह।

कोपना० अ० क्रि० क्रोधित होना, गुस्सह करना, ना० स्त्री० रंग

कोपर० }
कोपल० } ना० पु० पत्र विशेष।

कोपान्वित० गु० क्रोधित, गुस्से से भरा।

कोपी० गु० क्रोधवान क्रोधी।

कोपीन० ना० स्त्री० लंगोट, लंगोटी।

कोमल० गु० नम्र, सीधा भोला, नरम।

कोमलता० ना० स्त्री० नरमी भोलापन।

कोयल० ना० स्त्री० पक्षी, विशेष, दूध बि- शेष।

कोयला० ना० पु० धार युक्त भाग।

कोर० ना० स्त्री० किनार, छोर धार।

कोरन० ना० पु० फलॉ।

कोरण्डी० ना० स्त्री० ढाग बिरषा।

कोरा० गु० बिना धोवा कपड़ा, विना लिखा कागज मिट्टी का नया पात्र जो काम में न आया हो।

कोरि० ना० स्त्री० करोड़, किनार।

कोरी० ना० स्त्री० नई, ना० पु० जातिविशेष।

कोर्थ० सर्व० किस हेतु, किस लिये।

कोल० ना० पु० शूकर, जाति नाम विशेष, खोलिये गोदी जो लम्बी सकती है।

कोलाहिनी० ना० स्त्री० देशान्तर प्रान्त

कोला० ना० स्त्री० पापरि।

कोलाफल० ना० पु० मदुग्ध वृक्ष।

कोलाहल० ना० पु० गुल, रौला, शोर।

कोलिका० ना० स्त्री० कालीमिरच।

कोलियाना० स० क्रि० गली में लेना।

कोल्हू० ना० पु० जिससे तेल निकालते हैं वा ऊख पेरते हैं।

कोविद० गु० पण्डित गुणी।

कोश० ना० पु० कमल, मध्यभाग।

कोशल० ना० पु० कुशल दशावशार।

कोशलपति० ना० पु० दशरथ, श्रीरामचन्द्र, अवध भूप

कोशलपुर० ना० पु० }
कोशलपुरी० ना० स्त्री० } श्री अयोध्याजी।

कोशलाधीश० } ना० पु० कोशलपति श्री-
कोशलेश० } रामचन्द्रजी।

कोष० ना० पु० खजाना, भण्डार, अण्ड, शब्दों की खान, दुर्गा समाज रजाना।

कोष्ठ० ना० पु० स्थान, कोठा अन्न।

कोष्ठक० ना० पु० तख्ता।

कोस० ना० पु० २ मील वा २००० दण्ड।

कोसना० स० क्रि० शाप देना, धुरा मानना।

कोह० ना० पु० क्रोध, दुःख दाह, मनमें आग लाना, दिलजलना।

कोहनी० ना० स्त्री० बाहु के बीच की गांठ।

कोहबर० ना० पु० जाड़सना।

कोही० गु० क्रोधी रामायण यथा, कर कुठार मैं अकरुण कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही॥

कौ० अव्य० का।

कौं० अव्य० को।

कौआ० ना० पु० काग।

कौक्ष० ना० पु० मकड़ा, मकड़।

क्रूर० गु० कठोर, निठुर, कपटी, टेढा।
क्रूरकर्मा० ना० स्त्री० ऊधाहोली।
क्रूरवार० ना० पु० शनैश्चर, मंगल, आदित्यवार।
क्रोध० ना० पु० कोप, गुस्सह, भैरवविशेष।
क्रोधातुर०, क्रोधान्ध० } गु० कोपी, क्रोधमें अन्ध, क्रोधमें मस्त।
क्रोधा० गु० कोपी, गुस्सा भराभया।
क्रोश० ना० पु० कोस, दामील, दो हजार दण्डकी माप।
क्रोष्टा० ना० पु० गीदड़, शृगाल।
क्लिशित०, क्लिष्ट० } गु० दुखित, पीड़ित, रजीद।
क्लीब० ना० पु० नपुंसक, हिजड़ा।
क्लेद० ना० पु० गीलापन।
क्लेदित० गु० भीगाभया, तर।
क्लेश० ना० पु० दुख, पीड़ा, रज।
क्लेशित० गु० दुखित, पीड़ित।
क्वचित्० अव्य० कहीं।
क्वटि० ना० स्त्री० पिण्डखजूर।
क्वाण० ना० पु० वीणा।
क्वाथ० ना० पु० काढ़ाजोरोगीकोपिलायाजाता है।

[ख]

खं०, ख० } ना० पु० आकाश, स्वर्ग, घर, शून्य, राम इंद्रिय।
खखारना० अ० क्रि० खासना।
खगना० अ० क्रि० चमड़ाना, घटना।
खगालना०, खघारना० } स० क्रि० धोना, अनवासना।
खग० ना० पु० पक्षी, ग्रह, सूर्य्यादि, मेघ, पवन, देवता और तारागण।
खगकेतु०, खगनाथ०, खगनायक०, खगनाह, खगपति० } ना० पु० सूर्य, चद्रमा, गरुड़।
खगमाला० ना० पु० पक्षियों का समूह, तारागण।
खगहा० ना० पु० गैंडा, बाज, जरी।
खगेन्द्र०, खगेश० } ना० पु० गरुड़, चन्द्रमा।
खगोल० ना० पु० आकाशमण्डल।
खग्ग० ना० पु० वीर, बहादुर।
खचना० स० क्रि० रेखा करना, जड़ना।
खचर० ना० पु० खच्चर, पशुविशेष, मेघ, ग्रहादि।
खचा०, खचित० } गु० जड़ाऊ, लिचाहुआ।
खजुरिया०, खजूर०, खजूरि० } ना० स्त्री० वृक्षविशेष।
खञ्ज० गु० लगड़ा, ना० पु० खजन।
खञ्जन० ना० पु० पक्षीविशेष जिसे खड़ैचा वा खिसखिन्दा भी कहते हैं।
खञ्जनक० ना० पु० ममोला, खजन।
खञ्जरिट०, खञ्जरीट० } ना० पु० खजन।
खट० ना० स्त्री० खाट।
खटक० ना० पु० खटका।
खटकना० अ० क्रि० शब्द होना, झगड़ना, लगना, शकाकरना।
खटका० ना० पु० सन्देह, शका, पांवकीआहट।
खटकाना० स० क्रि० आहटदेना, शब्दकरना।
खटखटाना० अ० क्रि० ठकठकाना।
खटछपर० ना० पु० छपरखट।
खटपट० ना० पु० झगड़ा, लड़ाई।
खटमल० ना० पु० खाटमेंका कीड़ा।
खटाई० ना० स्त्री० अम्ल, खट्टापन, अचार।
खटाका० ना० पु० शब्द, चटाका।
खटास० ना० पु० खट्टापन, जन्तु विशेष।
खटिका० ना० स्त्री० सेलखड़ी।
खटिया० ना० स्त्री० छोटी खाट।

खटीक० ना० पु० जाति विशेष।
खट्टा० गु० अम्ल, अम्बन्।
खटिक० ना० पु० खटीक, आखेटकी।
खट्टट्ट० ना० पु० वनिहार।
खट्वा० ना० स्त्री० खाट।
खड़क० ना० स्त्री० गोशाला।
खड़कना० अ० कि० भनभनाना।
खड़खड़ाना० स० क्रि० टकटकाना, खर्राटा, मारना, भनभनाना।
खड़्वराहट० ना० पु० शब्द होना, आहट।
खड़्सान० ना० स्त्री० सिसान जिसपर वाढ़ि बनाते हैं।
खड़ा० गु० उठा, सीधा, अड़ा, उंचा, ठाढ़ा।
खड़ाऊँ० ना० पु० पादुका, कठनई।
खड़िया० ना० स्त्री० छूहीमिट्टी, दूधिय मिट्टी।
खड्ग० ना० पु० तलवार, गैंडा, अमरे यथा। गण्डके खड्गखड्गिनौ।
खण्ड० ना० पु० टुकड़ा, खाड़, अध्याय, दिशा।
खण्डन० ना० पु० दूषण, मिटाना, काटना।
खण्डना० स० क्रि० दूषणदेना, तोड़ना, काटना।
खण्डनार्थ० गु० काटने के लिये।
खण्डिनी० ना० स्त्री० काटनेवाली।
खण्डपरशु० ना० पु० श्रीमहादेव।
खण्डहर० ना० पु० ऊजड़, वीराना।
खण्डहरना० स० क्रि० काटना, टुकड़े करना।
खण्डहल० ना० पु० उजड़ मकान, वीराना।
खण्डित० गु० काटागया, कमी, अपूर्ण।
खण्डितकरना० स० क्रि० बातकाटना, खण्डना।
खतिल० ना० पु० पोस्त या उसका छिलका।
खत्ता० ना० पु० } गढ़हा जिसमेंअन्न भरते हैं।
खत्ती० ना० स्त्री० }
खदिर० ना० पु० खैर, कथा।
खदेड़० ना० स्त्री० खदेड़, अहेर।
खदेड़ना० स० क्रि० खदेड़ना, भगाना।
खद्योत० ना० पु० सूर्य, तारागण और जुगनू। कीट विशेष।

खन० ना० पु० खण्ड।
खनक० ना० पु० मूस, चूहा।
खनकना० अ० क्रि० बजना, शब्दहोना।
खनन० ना० पु० खोदना।
खनना० स० क्रि० खोदना।
खपत० गु० जो बिकगया, स्त्री० बिकाव।
खपना० अ० क्रि० बिकना, सूखना, ठहरना पैठना, समाना।
खपरा० ना० पु० घरछावने के लिये जो मिट्टी के बनते हैं।
खपरी० ना० स्त्री० शिरका ऊपरी भाग।
खपरैल० ना० स्त्री० घर जो खपरों से छायाहो।
खपाच० ना० स्त्री० बांसका टुकड़ा।
खपाना० स० क्रि० बिकवाना, पैठाना, भराना।
खपित० गु० जो बिकगया, स्त्री० बिकाव।
खपुर० ना० पु० स्वर्ग, आकाश।
खप्पर० ना० पु० खोपड़ी, माटी का पात्र जिसमें योगी जलादि पीते हैं, अंगेठी।
खब्बा० ना० पु० बाया हाथ।
खभारू० ना० पु० पेटमें आगि पड़ना, घबराहट
खम्बा० } ना० पु० स्तम्भ, थूनी,
खम्भ० }
खम्भा० ना० पु० स्तम्भ, थूनी।
खर० ना० पु० गदहा, गधा, घाम, कुत्ता अच्छा, तीक्ष्ण।
खरक० ना० पु० खड़क, गोशाला।
खरखरा० ना० पु० खरहरा।
खरपत्र० ना० पु० मरुवा, सुगन्धित पोधा।
खरवर० } ना० स्त्री० घोड़े के दौड़नेका शब्द
खरभर० } खलबली, शोरगुल, हुल्लड़, क्षोभ।
खरमञ्जरी० ना० स्त्री० ऊग।
खरयष्टिका० ना० स्त्री० खिरहटी।
खरल० ना० पु० औषध घिसने का पात्र।
खरहरा० ना० पु० घोड़ादि मलनेकी वस्तु विशेष।
खरहार० ना० स० क्रि० झारना, बुहारना।

खरा० गु० चोखा, श्रेष्ठ, अच्छा।
खराई० ना० स्त्री० सचाई, उत्तमता, सूर।
खरारि० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी।
खरिक० ना० स्त्री० ढड्क, गोशाला।
खरी० ना० स्त्री० सरसोंका पीठा, गर्मी, अच्छी, खड़ा।
खरे० गु० खड़े, ठाढ़े, अच्छे।
खरोंट० ना० स्त्री० बरोंट, खतोट।
खरोचना० } स० क्रि० नोचना, खसोटना।
खरोटना० }
खर्ज० ना० पु० रागोच्चारणका निशेष स्थान।
खर्जूर० ना० स्त्री० चाँदी खजूरवृक्ष।
खर्जूरिका० ना० स्त्री० पिण्ड, खजूर।
खर्जूरी० ना० स्त्री० मरौली।
खर्पर० ना० पु० पीठ, शिर।
खर्व० ना० पु० तुच्छ, छोटा, वामन, भाषा में सौ अर्बको कहते हैं १०००००००००००।
खर्रा० ना० पु० मवाद, ठट्टर, ग्वरखरा, चिट्ठा, ग्वसरा।
खर्रांटा० ना० पु० सोते में पुर्राना।
खल० गु० दुष्ट, नीच, तुच्छ।
खलता० ना० स्त्री० दुष्टता।
खलबल० ना० स्त्री० हलचल।
खलबलाना० अ० क्रि० उबलना।
खलभली० ना० स्त्री० खलभर, हुल्लड़।
खला० ना० स्त्री० पतुरिया, दुष्टिनि।
खलान० गु० खलका बहुवचन है।
खलारि० ना० पु० श्रीनारायण।
खलारू० ना० पु० निचान, परती।
खलियार० ना० पु० खलिहाने, खली।
खलियाना० स० क्रि० छीलना, उधेड़ना।
खलिहान० ना० पु० नाज माड़ने वा गूदने का स्थान विशेष पैर।
खली० ना० स्त्री० तिलादि की गूद।
खलीता० ना० पु० जेब, फारसी शब्द है।
खवा० ना० पु० कंधा।

खस० ना० पु० जातिविशेष।
खसकना० अ० क्रि० गिरपड़ना, सरकजाना, हटना।
खसकाना० स० क्रि० सरकाना, हटाना।
खसखस० ना० स्त्री० सुगन्धित तृणविशेष।
खसना० अ० क्रि० धसना, गिरपड़ना, निकल पड़ना।
खसरा० ना० पु० बही, खर्रा, जुमेली।
खसाना० स० क्रि० गिराना, बिगाड़ना।
खसीमाल० ना० पु० पत्थर विशेष, गिरिमाला।
खांचा० ना० पु० टोकरा, पिंजरा विशेष।
खांड़० ना० स्त्री० शर्करा, शक्कर।
खांडना० स० क्रि० छाटना, कूटना।
खांडा० ना० पु० खड्गविशेष।
खांसना० अ० क्रि० खखारना, ठांठा करना।
खांसी० ना० स्त्री० खांसी।
खाम० ना० पु० गेंड़ेका साग।
खाखी० ना० स्त्री० तुनली।
खाजा० ना० पु० मिठाई विशेष।
खाट० ना० स्त्री० चारपाई।
खात० ना० पु० गर्त्त, गढ़हा, कूप, खाई।
खात० ना० पु० होजनामा, लेखाबही, गया रत्नोंका खत्ता।
खाती० ना० पु० बढ़ई, खरादी।
खाद० ना० पु० गोबरादि, घूरा।
खाद्य० गु० खाने के योग्य जो वस्तु।
खाना० स० क्रि० भोजन करना, अ० क्रि० कमाना, उपार्जन वा भोगकरना, ना० पु० भोजन।
खानि० ना० स्त्री० आकर, अकीक, उत्पत्ति स्थान।
खानिज० गु० खानों की जो वस्तु।
खारक० ना० पु० छुहारा।
खारा० गु० लोना।
खारी० गु० थकका नमक, खोदाता।
खाल० ना० स्त्री० चमड़ा, धौंकनी।

खेटक॰ ना॰ पु॰ अहेर, शिकार और अस्त्र-विशेष।
खेटिक॰ ना॰ पु॰ वधिक, शिकारी।
खेत॰ ना॰ पु॰ क्षेत्र, समरभूमि, पुण्यक्षेत्र, वह भूमि जहां अन्नादि उपजता है।
खेतल॰ ना॰ पु॰ आकाशमण्डल।
खेती॰ ना॰ स्त्री॰ किसनई, गु॰ जोताऊ।
खेद॰ ना॰ पु॰ शोक, दुःख, पश्चात्ताप।
खेदना॰ स॰ क्रि॰ खदेड़ना, सताना और पीड़ा करना।
खेदित॰ गु॰ दुःखित, पीड़ित, सतायागया।
खेरा॰ ना॰ पु॰ ऊजड़पुर, डीह।
खरी॰ ना॰ स्त्री॰ लोहाविशेष, हल।
खेल॰ ना॰ पु॰ क्रीड़ा, जीवद्दलाव।
खेलना॰ स॰ क्रि॰ क्रीड़ाकरना, जीबहलाना।
खेवक॰ } ना॰ पु॰ नाविक, डाडी और मल्लाह।
खेवट॰ }
खेवना॰ स॰ क्रि॰ डाड़मारना, नावचलाना।
खेवा॰ ना॰ पु॰ उतराई, भाड़ा, पारउतरा, उतारा।
खेह॰ ना॰ स्त्री॰ रास, धूलि, खाक।
खैंच॰ ना॰ स्त्री॰ उखाड़।
खैंचना॰ स॰ क्रि॰ ऐंचना, कसना, तानना।
खैंचाखैंच॰ } ना॰ स्त्री॰ ऐंचा ऐंची, सेंचा
खैंचाखैंची॰ } खैंची।
खैर॰ ना॰ पु॰ कत्था।
खैला॰ ना॰ पु॰ दोहान, नयाबैल वा बछड़ा।
खोआ॰ ना॰ पु॰ लेइ, सरसी, दूध जो उबालके गाढ़ा कियाजाता है।
खोंसना॰ अ॰ क्रि॰ खसना।
खोंसी॰ ना॰ स्त्री॰ खासी।
खोंच॰ ना॰ स्त्री॰ चीर।
खोंचना॰ स॰ क्रि॰ घुसेड़ना।
खोंचा॰ ना॰ पु॰ भाव, झोंक।
खोंड़कल॰ ना॰ पु॰ गड़हा।
खोंता॰ ना॰ पु॰ घोंसला।
खोसना॰ स॰ क्रि॰ ठासना, घुसेड़ना।
खोखला॰ गु॰ पोंगला, खाली।
खोखली॰ ना॰ स्त्री॰ उपरका मकान, जो ठोस नहीं है।
खोज॰ ना॰ पु॰ ढूढ़, पता, चिह्न, पहिचान।
खोजना॰ स॰ क्रि॰ ढूढ़ना।
खोट॰ ना॰ स्त्री॰ दोष, अवगुण।
खोटा॰ गु॰ चुगली, दोषी, झूठा, अधर्मी।
खोटाई॰ ना॰ स्त्री॰ चुगलपन दोष।
खोदना॰ स॰ क्रि॰ गोड़ना, करकोलना।
खोना॰ स॰ क्रि॰ गँवाना, उड़ाना।
खोपड़ा॰ ना॰ पु॰ ललाट के ऊपर का अङ्ग नारियल की गूदी।
खोपड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ मस्तकके ऊपरका भाग छिलका।
खोपर॰ ना॰ पु॰ सिर।
खोपरा॰ ना॰ पु॰ खोपड़ा।
खोपरी॰ ना॰ स्त्री॰ खोपड़ी।
खोपा॰ ना॰ पु॰ नारियल का गोला, जुड़ा।
खोरि॰ ना॰ स्त्री॰ दोष, ग्लानि।
खोरी॰ ना॰ स्त्री॰ गली, मार्ग, दोष, ग्लानि।
खोल॰ ना॰ स्त्री॰ कोठी, ढकना, दोहर, गद्दा।
खोलना॰ स॰ क्रि॰ प्रकट करना, बिछाना, उधेड़ना, लंगर उठाना।
खोह॰ ना॰ पु॰ गुफा, गड़हा, कन्दरा।
खौड़॰ }
खौरि॰ } ना॰ स्त्री॰ तिलक।
खौलना॰ अ॰ क्रि॰ उबलना।
ख्यात॰ गु॰ प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, मशहूर।
ख्याति॰ ना॰ स्त्री॰ यश, धाक, शुहरत।
ख्यात्यापन्न॰ गु॰ कीर्तिमान्, नामी।
ख्याल॰ ना॰ पु॰ क्रीड़ा खेल।

(ग)

गँवाना॰ स॰ क्रि॰ खोना, उड़ाना, बहाना।
गंवार॰ ना॰ पु॰ गावकावासी, कुपढ़।
गगन॰ ना॰ पु॰ आकाश, आसमान।

गगनचर० ना० पु० पक्षी, देवता, महादि।
गगरी० ना० स्त्री० कलशी, घडा।
गंगा० ना० स्त्री० भागीरथी नदी प्रसिद्ध।
गंगायमुनी० ना० स्त्री० कर्णभूषण विशेष।
गंगाद्वार० ना० पु० गगोत्तरी, हरद्वार।
गंगाधर० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
गंगासागर० ना० पु० गगा और समुद्र का सगम जहा कपिलदेव का स्थान है।
गंगेरुकी० ना० स्त्री० गगेरुआ।
गंगोत्तरी० ना० स्त्री० गगाजी के प्रकाश का स्थान जो बद्रीनाथ के आसन्न है।
गंगोदक० ना० पु० गगाजल।
गच० ना० स्त्री० चूना, लेट।
गचपच० ना० स्त्री० उलट पलट।
गच्छ० ना० पु० मुकाम, चाल।
गज० ना० पु० हाथी, दो हाथ की माप।
गजकेसर० ना० स्त्री० नागकेसर।
गजकृष्णा० ना० स्त्री० गजपीपरि।
गजगामिनी० गु० जिसकी हाथीकीसी चालहो।
गजग्राह० ना० पु० भन्नेसहित हाथीका भूषण।
गजगौनी० गु० गजगमनी।
गजचिर्मटी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
गजहीे० अ० क्रि० गरजता है।
गजदन्त० ना० पु० हाथी को दात।
गजपति० ना० पु० हाथियों का स्वामी अर्थात् राजा वा जिसके हाथी हों।
गजपाटल० ना० पु० कज्जल।
गजपाल० ना० पु० महावत, फीलवान्।
गजपिप्पली० ना० स्त्री० गजपीपरि।
गजभिषक्० ना० पु० सोठि।
गजमुख० ना० पु० गणेशजी, हाथी का मुँह।
गजमोती० ना० पु० मोती जो हाथी के मस्तक में होता है।
गजरा० ना० पु० गाजरकापत्ता, फूलोंकी माला।
गजवदन० ना० पु० गणेशजी।
गजबुसा० ना० पु० केलावृक्ष।
गजानन० ना० पु० गणेशजी, हाथी का मुख।
गजाशन० ना० पु० पीपल, पीपरि।
गञ्ज० ना० पु० रोगविशेष जो शिरमें होता है।
गञ्जा० गु० जिसके शिरमें गज रोग होवे, ना० पु० गाजा, भाग, रोगविशेष।
गञ्जित० गु० नशायागीया।
गटपट० ना० स्त्री० उलट, पुलट, मिलित।
गटी० ना० स्त्री० समूह, रामचन्द्रिकाया यथा सब जात फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी, निघटी रुचि मीच घटीहू घटी जगजीव यतीन की छूटी चटी, अघ ओघ कि बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुण ज्ञान गटी, चहुँ ओर न नाचत मुक्ति नटी गुण धूरजटी जटि पचवटी।
गट्टा० ना० पु० क्लाई, मिठाई प्रसिद्ध।
गट्ठा० ना० पु० बडीगठरी।
गठना० अ० क्रि० जुडना, मिलना।
गठरी० ना० स्त्री० मोठ, मोटरी, क्रुण्ट।
गठाना० स० क्रि० सिलवाना, पेंबदलगवाना।
गठिया० ना० पु० गोन, गु० गाँठावाला।
गठीला० } गु० गाठोवाला, गठाहुआ।
गठिहा० }
गडक० } ना० स्त्री० मछली वा मछली विशेष।
गडका० }
गडगडाना० स० क्रि० गरजना।
गडरिया० ना० पु० जाति विशेष जो भेडें पालते हैं।
गडन० ना० स्त्री० धसन, दलदल।
गडना० अ० क्रि० धसना, पैठना, छिदना।
गडबड० ना० पु० गडपट, उलट पलट, हल चल।
गडबडा० ना० पु० खलबली, मरोडा, गु० लड़बडा, घबराया भया।
गडबडाना० अ० क्रि० घबराना, खलबलाना।
गडबडाहट० ना० स्त्री० हडबडाहट, भय।

गद्देला० ना० पु० मोटा बिछौना वा जिसमें बहुत रुई भरकर पहिनते हैं।
गद्गद० गु० हर्षनाद, शोक वा आनन्दमें मग्न।
गद्दर० गु० अधपका।
गद्दी० ना० स्त्री० तकिया वा बिछौना या आसन या राजा का सिंहासन, जातिविशेष।
गद्य० ना० पु० छन्दबिना शास्त्र, वार्तिक।
गधा० ना० पु० गदहा।
गन० ना० पु० गण।
गनना० स० क्रि० गिनना, शुमारकरना।
गन्ध० ना० पु० कदमवृक्ष, स्त्री० बास, बूय।
गन्धक० ना० पु० औषधविशेष।
गन्धगर्भ० ना० पु० बेलवृक्ष।
गन्धमादन० ना० पु० पर्वतविशेष।
गन्धमूलक० ना० पु० कचूर।
गन्धमूलिनी० ना० स्त्री० कपूरभेद।
गन्धमूली० ना० स्त्री० रासना।
गन्धराज० ना० पु० चन्दन सुगन्धित, विशिष्ट पुष्प।
गन्धर्व० ना० पु० देवता, स्वर्ग के गायक।
गन्धर्वनगर० ना० पु० सामाय गन्धर्वलोक विशेष मुख्य आकाशमें जो चित्र विचित्र की मूर्ति दृष्टि आती है जब देरतक देखने से आंख तिरमिरा जाती है।
गन्धर्वहस्तक० ना० पु० बेलवृक्ष।
गन्धवह० ना० पु० वायु, पवन, हवा।
गन्धसार० ना० पु० चन्दन।
गन्धा० ना० पु० नागदौन, कदमवृक्ष।
गन्धान० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
गन्धाश्मा० ना० पु० गन्धक।
गन्धार० ना० पु० रागका स्वरविशेष।
गन्धारी० ना० स्त्री० दुर्योधनकी माता, श्वास जो वामाङ्ग में प्रकाशित होती है ज्ञानेतरंगे यथा, गन्धारी वामाङ्ग निवासी, हस्त जिह्वा दक्षिण दिग्वासी।
गन्धित्र० ना० स्त्री० बास, धूप, गन्धक।
गन्धिका० ना० स्त्री० आड़वेर।
गान्धकारिणी० ना० स्त्री० लजालू।
गन्धिलुब्ध० गु० जो सुगन्धि के लालच में हो।
गन्धी० ना० पु० अत्तार, सुगन्धित तेल बेचने हारा।
गन्ना० ना० पु० ऊख, गाड़ा, खड।
गप०
गपशप० } ना० स्त्री० बक, बकबक।
गप्पी० गु० बकवादी।
गभस्ति० ना० स्त्री० किरण, ज्योति।
गभीर० गु० गम्भीर।
गभुआरे० गु० छल्लेदार बाल, पेदायशीबाल।
गमन० ना० पु० चलन।
गमनागमन० ना० पु० जाना आना।
गमनी० ना० स्त्री० चलनेवाली।
गमनीय० गु० चलने के योग्य, चलनेवाला।
गम्भीर० गु० गहिरा, अथगाह।
गम्भीरता० ना० स्त्री० गहराई।
गम्य० गु० जानेके योग्य, मिलनहार।
गय०
गयन्द० } ना० पु० हाथी।
गया० ना० स्त्री० नगर वा तीर्थविशेष जहां हिंदूलोग पुरुषों को पिण्ड देते हैं।
गयाली० ना० पु० गयावाल, गयाके ब्राह्मण।
ग्यारस० ना० स्त्री० एकादशी।
ग्यारह० गु० दश और एक ११।
गर० ना० पु० रोग, विष, गला।
गरगराना० अ० क्रि० कड़ीकरना, गरजना।
गरजना० अ० क्रि० घड़घड़ाना, शब्दकरना।
गरल० ना० पु० विष, हलाहल।
गरह० ना० पु० गठियावायु।
गरागरी० ना० स्त्री० देवदाली।
गरारी० ना० स्त्री० रस्सी वा सूत बटनेकायन्त्र, कूपसे जल निकालनेकी गोल काठकी वस्तु।
गरिमा० ना० स्त्री० गुरुता, गरूरई, अहङ्कार आठ सिद्धि में से एकका नाम।

गरी० ना० स्त्री० नारियलका गूदा, गुठली।
गरू० ना० पु० गला।
गरुड़० ना० पु० पक्षी जो श्रीकृष्णका वाहन है।
गरुड़ाग्रज० ना० पु० सूर्य का रथवान्।
गरुता० ना० स्त्री० गुरुता, बड़प्पन।
गरुत्मान्० ना० पु० गरुड़, सफेद हंस।
गरुव० गु० भारी, बोझिल।
गर्ग० ना० पु० मुनिविशेष जो यदुवंशियों के पुरोहित थे।
गर्गज० ना० पु० टीला, बुर्ज।
गर्ज० } ना० पु० उत्कट शब्द, गड़गड़ा
गर्जन० } हट।
गर्त्त० ना० पु० गढ़ा।
गर्दभ० ना० पु० गदहा।
गर्भ० ना० पु० पेट, आधार, हमल।
गर्भकण्टक० ना० पु० कटहल।
गर्भकर० ना० पु० पतिजिया यथा पुत्रजीव गर्भकर इतिनिघण्टु गु० गर्भकारक।
गर्भदास० ना० पु० मोलका दासी का बेटा।
गर्भपात० गु० पेटका गिरना, हमलगिरना।
गर्भपाता० ना० पु० रीठा।
गर्भवता० ना० स्त्री० पेटसे गर्भिणी, गाभिन।
गर्भस्राव० ना० पु० गर्भपात।
गर्भित० गु० गर्भ अर्थात् पेट म रहनेवाला।
गर्व० ना० पु० अहङ्कार, दम्भ, गरूर।
गर्ववती० गु० स्त्री० अहङ्कारिन।
गर्वित० गु० अहङ्कारी, मगरूरी।
गर्हित० गु० निन्दित।
गल० ना० पु० गला, फांसी।
गलकना० अ० क्रि० गलना।
गलका० ना० स्त्री० पीड़ा विशेष, रोगविशेष।
गलगण्ड० ना० पु० गण्डमाला।
गलगल० ना० पु० चकोतरा, पक्षीविशेष।
गलना० अ० क्रि० पिघलना, घुलना।
गलफटाकी० ना० स्त्री० बड़ाई, घमण्ड।
गलफड़० } ना० पु० गाल वा गालोंकामास।
गलफड़ा० }
गलबाह० ना० स्त्री० गोदी।
गलसुई० ना० स्त्री० तकिया, सिरहना।
गलस्तनी० ना० स्त्री० बकरी।
गला० ना० पु० कंठ, शब्द।
गलाघोटना० स० क्रि० नटी दबाना, कंठ तोड़ना।
गलाना० स० क्रि० पिघलाना।
गलाव० ना० पु० पिघलाव।
गलित० गु० पतित, द्रवाभूत, मग्न।
गलियाना० स० क्रि० धुरारहना, गालीदेना, बरबस भोजन कराना वा औषध भूमना।
गली० ना० स्त्री० छोटामार्ग।
गव० ना० स्त्री० दाव, घात, मौका, लाभ।
गवन० ना० पु० गमन।
गवरि० } ना० स्त्री० पार्वती।
गवरी० }
गवलद० ना० पु० भैसा।
गवादिनी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
गवाश० ना० पु० कसाई, म्लेच्छ।
गवाक्ष० ना० पु० झरोखा, मुख्य वानर।
गवेधुका० ना० स्त्री० गगेरुया।
गवैया० ना० पु० गायक, गानेवाला।
गव्य० गु० जो गाय से सम्बन्ध रखता हो यथा दुग्ध आदि।
गसना० अ० क्रि० बन्धना, घिरना, रुकना।
गहगह० गु० घना, जोरसे।
गहन० ना० पु० भारी, ग्रहण, पकड़ना, दुख निष्फल, घन।
गहना० स० क्रि० पकड़ना, ग्रहणकरना, ना० पु० जेवर, गिरवा, भूषण।
गहनी० ना० स्त्री० सनपरास कालीपत्ती।
गहरा० ना० पु० गम्भीर।
गहरु० ना० पु० ढील, देर।

हथर० } गु० घावरा, रोघासा, घना, कठिन।
हर० }
ा० अव्य० गया।
ांजा० } ना० पु० वृक्षविशेष की पत्ती या रस
ांफा० } आदि।
ांठना० स० क्रि० बांधना, वशमें लाना, सी
 यना।
गांठि० ना० स्त्री० ग्रन्थि, गिरह।
गांड़े० ना० स्त्री० गुदा, धूल, पुट्टी मिट्टी की जा
 कूप में लगाते हैं।
गांडर० ना० स्त्री० तृणविशेष।
गाड़ा० ना० पु० इक्षु, गन्ना, ऊख।
गाडू० ना० पु० मनेसिया, खतिया, थैली।
गांव० ना० पु० ग्राम, पुर।
गावना० स० क्रि० गाना।
गांसना० स० क्रि० बिरमाना, घेरना, बरमाना,
 पिरोना।
गांसी० ना० पु० तीरका फल, लोहा जो तीर में
 लगाते हैं।
गागर० ना० स्त्री० गगरी, कलशा, घड़ा।
गांगेय० ना० पु० भीष्म, सुवर्ण।
गाछ० ना० पु० वृक्ष।
गाज० ना० स्त्री० झाग, फेना, बिजुली,
 वज्र।
गाजना० अ० क्रि० हर्षितहाना, गरजना।
गाजर० ना० स्त्री० मूल, विशेष।
गाजाबाजा० ना० पु० नानाप्रकार से बाजा
 का शब्द।
गाड़० ना० पु० गढ़हा, गड्ढा, गर्त्त।
गाड़ना० स० क्रि० तापना, समाधि देना, मिट्टी
 देना, लगाना।
गाड़ा० ना० पु० घात, गढ्हा, गीला।
गाड़ी० ना० स्त्री० छकड़ा, लढ़ी, रथ।
गाढ़० ना० स्त्री० जजाल, विपत्ति।
गाढ़ा० गु० (मोग), चतुर, कठिन, ना० पु०
 कपड़ा विशेष।

गाण्डीव० ना० पु० नाम उस धनुष का है जो
 अग्निदेव ने अर्जुनको दियाहै।
गाण्डीवधर० ना० पु० अर्जुन, पाण्डुपुत्र।
गात० ना० पु० शरीर, तनु, देह।
गाता० ना० पु० कागज़ जिससे पुस्तककी जिल्द
 बनाते हैं।
गाता० ना० स्त्री० एकप्रकारकी चादरसे बांधना;
 पट्ट, ऊर्ध्ववस्त्र।
गात्र० ना० पु० शरीर, देह।
गाथक० ना० पु० गायक।
गाथना० स० क्रि० गूथना, गाना।
गाथा० ना० स्त्री० कथा, समाचार।
गाद० ना० स्त्री० अवलेह, गोंद।
गादी० ना० स्त्री० गद्दी।
गाधि० ना० पु० विश्वामित्र के पिता।
गाधिनन्द० ना० पु० विश्वामित्रमुनि।
गाधिसुत० } ना० पु० विश्वामित्र मुनि।
गाधेय० }
गान० ना० पु० गीत, राग, भजन।
गाना० स० क्रि० अलापना, तानभरना।
गान्धार० ना० पु० राजाविशेष, रागका स्वर
 विशेष।
गाभ० ना० पु० गर्भ।
गाभा० ना० पु० केले के वृक्षका नयापत्र, नया,
 पत्ता।
गाभिन० ना० स्त्री० गर्भिणी।
गाम० ना० पु० गांव।
गामी० गु० चलनेवाला, रमनेवाला।
गाम्भीर्य्य० ना० पु० गम्भीरता।
गाय० ना० स्त्री० गौ।
गायक० ना० पु० गवैया, गानेवाला।
गायत्री० ना० स्त्री० मन्त्र विशेष, छन्द, कथा,
 महासिद्धि।
गायन० ना० पु० गवैया, गानेवाला।
गार० ना० स्त्री० गाली।
गारना० स० क्रि० निचोड़ना, धोना।

गार्हपत्य० ना० पु० अग्निभद।
गारा० ना० पु० भीति बनाने के लिये बनाई हुई मिट्टी।
गारी० ना० स्त्री० गाली।
गारुड़ि० साप, सापरा विष झारनेवाला, सूर काव्य यथा, हार भर्ति गारुडी पुकारतँ आवत लहरि न जात कहीरी।
गारुत्मत० ना० पु० पन्ना।
गाल० ना० पु० कपोल, रुखसार, बात।
गालव० ना० पु० मुनि विशेष।
गाला० ना० पु० रुई का पन्नी, धुनी हुई रुई का गाला।
गाली० ना० स्त्री० अपमान का बोधक वाक्य, उसली।
गाह० ना० पु० ग्राह।
गाहक० ना० पु० खरीदार।
गाहना० स० क्रि० ढूढना, दाबना, थाह लगाना, माड़ना।
गाहा० गु० गाथा, अवगाह, कथा ना० पु० छन्दविशेष।
गाहिगाहि० गु० ढूंढि ढूंढके।
गाही० ना० स्त्री० पाव, माड़ी, थाहा हुई।
गिंजाई० ना० स्त्री० कीटविशेष।
गिचपिचिया० ना० पु० चचपिचिया।
गिड़गिड़ाना० स० क्रि० गिर्गिराना, खुशामद करना।
गिद्ध० ना० पु० पक्षी विशेष, गिरगिस।
गिनती० } ना० स्त्री० गणित,
गिन्ती० } गिती, शुमार।
गिन्दुक० ना० पु० गेंद।
गिन्ना० स० क्रि० गणन, गिन्तीकरना।
गिरगिट० ना० पु० सरट, कृकलास।
गिरना० अ० क्रि० पड़ना।
गिरपड़ना० अ० क्रि० कूदपड़ना, झुकपड़ना।
गिरा० ना० स्त्री० सरस्वती, वाग्देवता, वाणी।
गिराना० स० क्रि० भोभाना, पटकना, छलकाना।
गिरि० ना० पु० अद्रि, पर्वत, पहाड़।
गिरिकद्रक० ना० पु० महा नींब।
गिरिज० ना० पु० शिलाजित।
गिरिजा० ना० स्त्री० पार्वती।
गिरिजानन्द० ना० पु० गणेशजी।
गिरिधर० } गु० पर्वत उठानेवाला ना० पु०
गिरिधारी० } श्रीकृष्णचन्द्रजी, श्रीहनुमान्।
गिरिनाथ० ना० पु० श्रीशिवजी, सुमेरु, हिमाचल, हिमालय।
गिरिर० ना० पु० लङ्का।
गिरिराज० ना० पु० श्रीशिवजी, हिमालय। गोवर्द्धन, सुमेरु, श्रीकृष्णजी।
गिरिवर० ना० पु० पर्वत, पहाड़।
गिरिसुत० ना० स्त्री० गेरू।
गिरिसाह्वय० ना० पु० शिलाजीत।
गिरीश० ना० पु० श्रीसदाशिव, सुमेरु, हिमालय।
गिलट० ना० स्त्री० नसों की गांठ।
गिलहरी० ना० स्त्री० जीव विशेष जो वृक्षोंपर, रहता है।
गिलोय० ना० स्त्री० गुरुच।
गीजना० स० क्रि० मलना।
गीत० ना० पु० राग, गान।
गीता० ना० पु० कथा, अध्यात्मज्ञान, वा जिस पुस्तक में अध्यात्मज्ञान होवे, यथा भगवद्गीता, रामगीता।
गीदड़० ना० पु० शृगाल, सियार।
गीर्वाण० ना० पु० अमर, देवता।
गीला० गु० ओदा।
गीष्पति० ना० पु० बृहस्पति।
गुग्गुल० ना० पु० गूगुल।
गुंगा० } गु० गूगा, व कला।
गुंगा० }
गुच्छा० ना० पु० घौर, घोचा, बाल, पो।
गुजरात० ना० पु० देशविशेष।

गुह्य० गु० छिपा, पोशीदः।
गुह्यक० ना० पु० यक्ष, कुबेर के दूत।
गुह्यकपति० ना० पु० कुबेर।
गुह्यस्थल० ना० पु० एकान्तस्थान वा छिपा अंग, यथा, भग।
गुंज० ना० स्त्री० गुंजा, घुंघची।
गुंजरना० अ० क्रि० दहाड़ना, गूजना।
गुंजान० गु० गाढ़ा, मोटा, घना, फारसी का शब्द है।
गुंजार० ना० पु० शब्द, दहाड़, गूंज।
गुंजारना० अ० क्रि० हुंकना, गूंजना, शब्द करना।
गुटकना० अ० क्रि० कू कू करना, कपोत का बोलना, निगलना।
गुटका० ना० पु० पुस्तक विशेष, वस्तुविशेष जिसको योगी मुख में रखकर लोप होजाते हैं मिठाईविशेष, चांदी की वस्तुविशेष जो मृतक की किया में लगताहै, छोटी पोथी।
गुटकाना० स० क्रि० कपोतको बुलाना।
गुटकी० ना० स्त्री० हाथ पांव समेटना।
गुटिका० ना० स्त्री० गोली।
गुठली० ना० स्त्री० फलका बीज।
गुड़० ना० पु० ईखका जमाहुआ रस, मिष्टान्न।
गुड़गुड़ाना० अ० क्रि० गड़गड़ाना।
गुड़गुड़ी० ना० स्त्री० छोटा हुका।
गुड़पुत्रक० ना० पु० ऊख, गन्ना।
गुड़पुष्प० } ना० पु० महुआ।
गुड़फूल० }
गुड़ा० ना० पु० अंगूर, दाख।
गुडाकेश० ना० पु० अर्जुन, सदाशिवजी।
गुड़ाना० स० क्रि० खुदाना, खुदवाना।
गुड़िया० ना० स्त्री० खिलोना, कपड़ेकी पुतली।
गुडूची० ना० स्त्री० गुरच।
गुड्डी० ना० स्त्री० कनकौआ।
गुद्दी० ना० पु० छिपनेका स्थान।

गुण० ना० स्त्री० विशेषण, स्वभाव, प्रवीणता, विद्या, डौल, क्षमा, रस्सी, धनुषकी पंचचरित्र यहसान।
गुणक० ना० पु० जिस अंक से गुणन करें।
गुणद० गु० गुणदाता, लाभकारी।
गुणन० ना० पु० गुणाकरना, जरब।
गुणना० स० क्रि० विचारना, गुणन करना।
गुणवता० गु० माला० गुणवान्।
गुणवाचक० गु० गुण बतानेवाला।
गुणवान्० गु० प्रवीण, पुण्यवान्।
गुणज्ञ० गु० गुणी, ज्ञाता, चतुर।
गुणी० गु० प्रवीण, पुण्यवान्, विद्वान्, विचारी: ना० पु० सपेरा।
गुण्य० ना० पु० जिस अंक को गुणा करें।
गुथना० अ० क्रि० पिरोना।
गुथवां० गुथाहुआ।
गुद० ना० स्त्री० मलस्थान, गांड, गुदा।
गुदगुदाना० स० क्रि० सहलाना, गुदगुदाना।
गुदगुदाई० } ना० स्त्री० सहलाहट सुरसुरी।
गुदगुदाहट० }
गुदगुदी० }
गुदड़ी० ना० स्त्री० तागाहुआ वस्त्र, गुजरी, चौक, बाजार।
गुदा० ना० स्त्री० मलस्थान, गाड।
गुदाभंजन० } ना० पु० गांड मारना, इग-
गुदमर्दन० } लाम।
गुन० ना० पु० गुण।
गुनगाहक० ना० पु० गुनका चाहने वा जानने वाला, विद्याका प्रतिपालक।
गुनगुनाना० अ० क्रि० थोड़ा गरमहोना, और नाकसे बोलना।
गुनवन्त० } गु० गुणवान्।
गुनवान्० }
गुनह० ना० पु० दोष, पाप, कसूर, रामायणे यथा, गुनह लषणवर हमपर रोषू, कतहुँ सुधाई ते बड़ दोषू।

गुनानि॰ ना॰ स्त्री॰ मनमें कल्पना करना।
गुनी॰ गु॰ गुणी।
गुन्थनि॰ ना॰ स्त्री॰ गूथनी, पोहावट।
गुप्त॰ गु॰ लुका, छिपा।
गुप्तार॰ ना॰ पु॰ छिपनी, लुकना, लुकाव।
गुप्तारघाट॰ ना॰ पु॰ अयोध्याजी में स्थान विशेष।
गुप्ती॰ ना॰ स्त्री॰ खड्गविशेष जो सोंटे में रखते हैं।
गुफा॰ ना॰ स्त्री॰ खोह, कन्दरा।
गुमाना॰ स॰ क्रि॰ घुमाना, गाड़ना।
गुमटी॰ ना॰ स्त्री॰ कपड़ा विशेष, कलशा।
गुराई॰ ना॰ स्त्री॰ बड़प्पन, गोरापन।
गुरु॰ ना॰ पु॰ आचार्य्य, शिक्षक, वृहस्पति, पुरोहित, द्विमात्रिक अक्षर, गु॰ भारी, बडागरुआ।
गुरुतर॰ गु॰ अत्यन्तभारी, अत्यन्तमान्य।
गुरुता॰ ना॰ स्त्री॰ बड़प्पन, आचार्य्यता।
गुरुपाक॰ ना॰ पु॰ जो वस्तु बहुत देरमें पचे।
गुरुमुख॰ ना॰ पु॰ जिसने गुरु कियाहो, शिक्षा वा इष्टदेवका मन्त्र गुरुसे लिया, चेला।
गुरुमुखहोना॰ अ॰ क्रि॰ चेलाहोना, गुरु से इष्टदेवता का मन्त्र पाना।
गुरुवाहन॰ ना॰ स्त्री॰ गुरुकी पत्नी।
गुरुवार॰ ना॰ पु॰ वृहस्पतिवार जुमेरात।
गुर्जर॰ ना॰ पु॰ गुजराती वा गुजरातदेश विशेष।
गुर्वादित्य॰ ना॰ पु॰ जब सूर्य और वृहस्पति एक राशि के होजाते हैं वह समय।
गुर्विणी॰ ना॰ स्त्री॰ गर्भवती, हामिल।
गुल॰ बुझाना, दीपकका ठंढाहोजाना।
गुलगुला॰ ना॰ पु॰ पकवान विशेष।
गुलाई॰ ना॰ स्त्री॰ गोलता, गोलाई।
गुलाब॰ ना॰ पु॰ वृक्ष वा उसके फूलोंका रस, तरह।
गुलाल॰ ना॰ पु॰ अबीर बुका जो प्रियतमके ऊपर डालते हैं।
गुलिक॰ ना॰ पु॰ मोती।
गुलिया॰ ना॰ स्त्री॰ शिरके पीछे का गड्ढा।
गुलेल॰ ना॰ स्त्री॰ धनुष जिसमें गुल्ला चलाते हैं।
गुल्याल॰ ना॰ पु॰ गलेल।
गुल्फ॰ ना॰ स्त्री॰ फीली, एड़ीके ऊपरका भाग।
गुल्म॰ ना॰ पु॰ रोग विशेष, गुलाब, झाड़।
गुल्ला॰ ना॰ पु॰ गुलेला, माटीका छोटागोला।
गुल्लाला॰ ना॰ पु॰ पुष्पविशेष यह शब्द फारसी का है।
गुवाक॰ ना॰ पु॰ सुपारी का वृक्ष।
गुवालियर॰ ना॰ पु॰ देश वा नगरविशेष।
गुष्टि॰ ना॰ स्त्री॰ सम्मति, सलाह, मित्रता।
गुह॰ ना॰ पु॰ स्वामिकार्त्तिक, निषाद, मल।
गुहना॰ स॰ क्रि॰ गूथना।
गुहा॰ ना॰ स्त्री॰ गुफा, कन्दरा।
गुहाना॰ स॰ क्रि॰ गुथवाना।
गुहारि॰ ना॰ पु॰ ताड़कासुर, ना॰ स्त्री॰ सहायता, सहाय, मदद।
गू॰ ना॰ पु॰ गूह, विष्ठा।
गूंगा॰ गु॰ मूक, जो बात न करसके, ना॰ पु॰ तृणादि या ढाक, मिठाई विशेष।
गूंज॰ ना॰ स्त्री॰ शब्द, भिनभिनाहट।
गूंजना॰ अ॰ क्रि॰ गूंजरहना, भिनभिनाना।
गूंथना॰ } स॰ क्रि॰ पिरोना, लड़ियाना।
गूंदना॰ }
गूंदनी॰ ना॰ स्त्री॰ वृक्षविशेष या फल जो पश्चिम में ग्रीष्मकाल में होताहै।
गूंधना॰ स॰ क्रि॰ सानना, गूथना, बिनना।
गूजर॰ ना॰ पु॰ नीचजाति विशेष।
गूजरी॰ ना॰ स्त्री॰ गूजरकी स्त्री, गहना विशेष जो पाव में पहिनाजाता है।
गूढ़॰ गु॰ सूक्ष्म, कठिन, गुप्त, भीतर।
गूढ़गिरा॰ ना॰ स्त्री॰ गुप्तवाणी गोलबातें, कठिन वचन।
गूढ़ता॰ ना॰ स्त्री॰ सूक्ष्मता, कठिनता, छिपाव।

गूढपत्र० ना० पु० करील, नागफली।
गूढपा०) ना० पु० साप, यथा, कुण्डलीगूढपा,
गूढपात्० } चक्षु श्रवा काकोदर फणी इत्यमर।
गूढार्थ० गु० गुप्तअर्थ, कठिनअर्थ।
गूदड़० ना० पु० पुराना कपड़ा।
गूदा० ना० पु० भेजा, फलका साराश।
गूप० गु० गुप्त, छिपा।
गूमड़ी० ना० स्त्री० } गाठि।
गूमड़ा० ना० पु० }
गृञ्जन० ना० पु० प्याज, लहसुन, गाजा, गाजर वा गाजरका साग यथा, लशुनगृञ्जनाग्निमहा कन्दरसोनक इत्यमर पलाडुविड्वराहचछत्राक ग्रामकुक्कुटलशुनगृञ्जनचैवभुक्त्वाचान्द्रायणचरेत्, इति सरोजसुन्दरे।
गृध्र० ना० पु० गिद्ध।
गृष्टि० ना० स्त्री० वाराहीकन्द।
गृह० ना० पु० घर।
गृहकन्या० ना० स्त्री० घीकुआरि।
गृहगोधिका० ना० स्त्री० बिसुइया, छिपकली।
गृहस्थ० ना० पु० दूसरा आश्रम, घरवाला।
गृहस्थाश्रम० ना० पु० गृहस्थका व्यवहार।
गृहस्थी० ना० स्त्री० गृहस्थ का धर्म्म।
गृहिणी० ना० स्त्री० घरवी, भार्या, जोरू, चौलट।
गृही० ना० पु० गृहस्थ।
ग्राह्य० गु० जो ग्रहणकरने के योग्य है।
गेंदक० ना० पु० गेंदा।
गेंद० ना० स्त्री० खेलनेके लिये कपड़े वा सन आदि का गोला।
गेंगटा० ना० पु० केकड़ा, करताट।
गेगली० ना० स्त्री० बोदली।
गेडुआ० ना० पु०, तकिया, सिरहाना, और टेंटी दारसोहा।
गेरू० ना० स्त्री० गैरिक, लाल मिट्टी।
गेरुआ० गु० गेरूका रंगामया।
गेरुई० ना० स्त्री० जो गेहुओं में सरदीके कारण गेरूरंग का रोग होजाता है गु० गेरूका रंग।
गेह० ना० पु० घर, तलाश, चाह।
गेहूं० ना० पु० अन्नविशेष।
गेहुंआ० गु० गेहूके रंग, ना० पु० घास विशेष।
गैंडा० ना० पु० जन्तु विशेष जिसकी हड्डी अति पवित्र होती है उसकी अगूठी, छल्ले, और तर्पण करने के पवित्र अर्घे का पात्र बनता है।
गया० ना० स्त्री० गाय।
गैरिक० ना० स्त्री० गेरू, पर्वतका लालमिट्टी।
गैरेय० ना० पु० शिलाजीत।
गैल० ना० स्त्री० बाट, मार्ग।
गो० ना० पु० पद, वृष, जल, वज्र, स्वर्ग, स्वग, छन्द, ना० स्त्री० गाय, किरण, इन्द्रिया दृग
गौंडली० ना० स्त्री० वृक्ष विशेष।
गोंद० ना० पु० लासा, चप।
गोंदनी० ना० स्त्री० नरकट विशेष।
गोंदा० ना० पु० मिट्टी का गिलावा, चिड़िया के बुलानके लिये लोई वा पेड़ा।
गोई० स० क्रि० भू, छिपाई, छिपी, ना० स्त्री०दो बैलादि के जोड़ को कहते हैं।
गोकण्टी० ना० स्त्री० बेरीवृक्ष वा फल।
गोकर्ण० ना० पु० वितस्ति, मृगविशेष, खच्चर, गो का कान, साप और शिवजीका स्थान प्रसिद्ध।
गोकर्णनाथ० ना० पु० श्रीशिवजीका तीर्थ विशेष।
गोकुल० ना० पु० नगरीविशेष, गोसमूह।
गोकुलेश० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र।
गोखुरु० ना० पु० गोखुर, भूषण विशेष।
गोचना० स० क्रि० पकड़लेना, गेह चाना।
गोचर० ना० पु० समक्ष, इन्द्रियज्ञान, गु० समर्थी।

गोचरी० ना० स्त्री० दर्शी, प्रकट।
गोजर० ना० पु० कनखजूरा।
गोजिका०
गोजिह्वा० } ना० स्त्री० गाभी।
गोठ० ना० स्त्री० चौपड़ईत्यादि खेलनेकी गुटिका अमलपत्ती, किनारी।
गोटा० ना० पु० किनारी।
गोटी० ना० स्त्री० शीतला, माता चेचक।
गोड़० ना० पु० पाव पिंडली, गु० सुदार।
गोड़ना० स० क्रि० खोदना, खुरचना।
गोड़िया० ना० पु० कहार, जाति विशेष।
गोड़ी० ना० स्त्री० चोरी।
गोण० ना० पु० बोथा, झाला, बोरा।
गोत०
गोता० } ना० पु० गोत।
गोती० ना० पु० गोबर, गोमल, गु० गोतवाला।
गोद० ना० स्त्री० कनिया, गोदी, राशि।
गोदना० स० क्रि० चोंकना, चिरंदना।
गोदा० ना० पु० निशान, चिह्न, दवका।
गोदावरी० ना० स्त्री० नदीविशेष जो दक्षिण में है।
गोदी० ना० स्त्री० अंकवार, कोरा, कनिया।
गोदोहनी० ना० स्त्री० दोहनी।
गोधन० ना० पु० गोबर, गायका धन, गोमल की प्रतिमा जो दीवाली को बनाते हैं।
गोधूम० ना० पु० गेहू, गोहूं।
गोधूलि०
गोधारा० } ना० स्त्री० सायङ्काल, सन्ध्या।
गोन०
गोनी० } ना० स्त्री० गन्धु।
गोप० ना० पु० ग्वाल, कण्ठका भूषण, छिपा।
गोपग्वाल० ना० पु० अहीर।
गोपद० ना० पु० गायका खुर।
गोपन० ना० पु० छिपाव, दुराव।
गोपनीय०
गोप्य० } गु० छिपाने के योग्य।
गोपाचल० ना० पु० ग्वालियर।
गोपाल० ना० पु० ग्वाल, अहीर, श्रीकृष्णचन्द्र।
गोपालपुर० ना० पु० मथुराजी वा जहां गंगा जी और गोमती का संगम भया है।
गोपिका०
गोपी० } ना० स्त्री० ग्वालों की स्त्रियां।
गोपीनाथ० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
गोबर० ना० पु० गायकी विष्ठा, गोमल।
गोबरगनेश० गु० मोटा, भद्दा, भोंड़ा।
गोबरी० ना० स्त्री० मिट्टी और गोबर मिला हुआ लीपने के लिये बनाते हैं।
गोभी० ना० पु० कर्डा, नर्दशाला।
गोभी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, तरकारी विशेष।
गोमका० ना० पु० कुम्हड़ा, यथा, पुम्फला महाफला गोमका राजकर्कटी इति निघण्टे।
गोमती० ना० स्त्री० नदीविशेष।
गोमय०
गोमल० } ना० पु० गोबर।
गोरटी० ना० स्त्री० गोरीस्त्री, सुन्दरी।
गोरमदायन० ना० पु० इन्द्रधनुष जो वर्षा में निकला करता है और सूर्य के सम्मुख होता है, रामनादिकाणाम्, धनु है यह गोरमदायन नाहीं। शरधार वहै जलधार वृथाहीं।
गोरस० ना० पु० इन्द्रियोंका स्वाद, दूध, दही, मट्ठा, छाछआदि।
गोरसदायन० ना० पु० गोरमदायन।
गोरसी० ना० स्त्री० दोहनी।
गोरक्ष० ना० पु० नारंगी।
गोरा० गु० गौर, उज्ज्वल।
गोरी० ना० स्त्री० उत्तम स्त्री, सुन्दरी।
गोरू० ना० पु० गाय बैल।
गोरोचन० ना० पु० गाय के मूत्र से उत्पन्न पीत वस्तु, गाय के शिर में से उत्पन्न औषध विशेष।
गोल० गु० गोल, चक्करीला, ना० पु० मंडल।

गोलक॰ ना॰ पु॰ पति के मरने के उपरान्त जारजात, पुत्र, आंखका घर।
गोलकुण्डा॰ ना॰ पु॰ नगर विशेष दक्षिण में है।
गोलता॰ ना॰ स्त्री॰ गोलाई।
गोलरूप॰ गु॰ गोलाकार।
गोला॰ ना॰ पु॰ गोल वस्तु, खाता, घरन, लोहे का पिण्डा, जंगली कबूतर और नारियलकी गुदी।
गोलाई॰ ना॰ स्त्री॰ परिधि, घेरा, गोलापन।
गोलाकार॰ गु॰ गोलरूप।
गोलाध्याय॰ ना॰ पु॰ सिद्धान्तशिरोमणि का एक प्रकरण।
गोलिका॰ ना॰ स्त्री॰ पति के मरने के उपरान्त जारजात कन्यका, गोली।
गोली॰ ना॰ स्त्री॰ छोटागोला।
गोलोक॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रका विशेष स्थान।
गोलोमा॰ ना॰ स्त्री॰ बच औषध।
गोवना॰ स॰ क्रि॰ छिपाना, भूत, क्रिया, गोई।
गोवर्द्धन॰ ना॰ पु॰ पर्वत विशेष जो ब्रज में है।
गोविन्द॰ ना॰ पु॰ कृष्णचन्द्र, वेदलभ्य।
गोविन्दचन्द्रिका॰ ना॰ स्त्री॰ पुस्तक विशेष।
गोशाला॰ ना॰ स्त्री॰ गाय बैल रहनेका घर।
गोष्ठ॰ } ना॰ स्त्री॰ बांधनू, मेल, सम्मति,
गोष्ठी॰ } सलाह।
गोष्पद॰ ना॰ पु॰ गायका खुर।
गोसाईं॰ ना॰ पु॰ ईश्वर, तपी, सन्तोंका मार्ग।
गोसैयां॰ ना॰ पु॰ ईश्वर, परमात्मा।
गोस्तनी॰ ना॰ स्त्री॰ दाख, अंगूर।
गोह॰ ना॰ स्त्री॰ विसखपरा के डौलका जीव।
गोहरा॰ ना॰ पु॰ उपला।
गोहार॰ ना॰ स्त्री॰ हुल्लड़, रौला, सहायता, मदद।
गोहूं॰ ना॰ पु॰ गेहूं, गोधूम, अन्न विशेष।
गोहुअन॰ ना॰ पु॰ सर्प विशेष।
गोखुरु॰ ना॰ पु॰ गोखुरू, पौधा विशेष।

गोत्र॰ ना॰ पु॰ वंश, घराना संज्ञा, पर्वत।
गोत्रघात॰ } ना॰ पु॰ निजकुल का मनुष्य
गोत्रवध॰ } मारना।
गोत्रज॰ ना॰ पु॰ गोती, सम्बन्धी, अपने घराने का।
गोत्रा॰ ना॰ स्त्री॰ धरती।
गोत्री॰ ना॰ स्त्री॰ गोतज।
गौ॰ ना॰ स्त्री॰ गाय।
गौं॰ ना॰ स्त्री॰ दाव, घात, औसर, लाभ।
गौंगीर॰ गु॰ घाती, दाव खेलनेहारा।
गौगोड़॰ ना॰ पु॰ जब गाय ब्यानी दूध नहीं देती है तब ग्वाल उसकी योनि में हाथ डालकर खड़ी करते हैं।
गौड़॰ ना॰ पु॰ देशविशेष, ब्राह्मण विशेष, कायस्थ जाति विशेष।
गौड़िया॰ ना॰ पु॰ गौड़देशवासी, चैतन्य का शिष्य।
गौड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ गुड़की मदिरा, जहां गायें खड़ी होती हों।
गौण॰ गु॰ जो मुख्य नहीं, अर्थात् अप्रधान।
गौतम॰ ना॰ पु॰ मुनि विशेष, पर्वत विशेष।
गौथन॰ ना॰ पु॰ गायका स्तन।
गौदन्ती॰ ना॰ पु॰ हरताल वा औषध विशेष।
गौदान॰ ना॰ पु॰ गायका दान।
गौना॰ ना॰ पु॰ विवाह करके थोड़े दिनों में, स्त्री॰ को अपने घर लाना।
गौनहा॰ } ना॰ पु॰ गौने में दूलह के साथी।
गौनहार॰ }
गौमली॰ ना॰ पु॰ गौरोचन।
गौर॰ ना॰ पु॰ धववृक्ष, जाति विशेष, चिट्टा, शुभ्रवर्ण।
गौरक॰ ना॰ पु॰ तीतरपक्षी, गेरू।
गौरण्ड॰ ना॰ पु॰ गोरा।
गौर्य्या॰ ना॰ स्त्री॰ भवानी, पार्वती।

गौरव० ना० पु० बड़प्पन, गुरुताई।
गौरा० ना० पु० चटक, चिड़ा, स्त्री० पार्वती।
गौरिया० ना० स्त्री० चिड़िया।
गौरिला० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
गौरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, हलदी, रात, पार्व्वती, तुलसी, गोरोचन।
गौशाला० ना० स्त्री० गाइयों का स्थान।
ग्रथित० गु० नथाहुआ, पिरोयाहुआ।
ग्रन्थ० ना० पु० पुस्तक, पोथी, शास्त्र।
ग्रन्थकार० ना० पु० ग्रन्थकर्त्ता, कवि।
ग्रन्थनि० ना० पु० महामुरडी, केलावृक्ष।
ग्रन्थि० ना० स्त्री० गांठि।
ग्रन्थिक० ना० पु० पीपरामूल।
ग्रन्थिमान्० ना० पु० हरसिंघाड।
ग्रन्थिल० ना० पु० कार्यवृक्ष, करील।
ग्रस्त० गु० शब्द जो चवाय के कहा गया, खाया गया, घिराहुआ।
ग्रह० ना० पु० सूर्य्यादि नवग्रह, घर।
ग्रहण० ना० पु० हाथ में लेना, अंगीकार, चन्द्रमा, सूर्य्य का गहन।
ग्रहस्थापन० ना० पु० नवग्रहों को बैठाय के उनको आवाहन करना।
ग्रहीता० गु० ग्रहण करनेहारा।
ग्राम० ना० पु० गाव, पुर, स्वरीवान, समूह, रामचन्द्रिकाया, गिरिग्राम ले लै हरिग्राम मारैं, मनोपवित्रनि पनदन्ती विदारैं।
ग्रामनर० ना० पु० गैंवार गाववासी।
ग्राम्य० गु० गाव में जो उत्पन्नभया।
ग्रामीण० ना० पु० गांव में बसनहारा, गवार।
ग्राव० ना० पु० पत्थर, पर्व्वत।
ग्रास० ना० पु० कौर, लुक्मा।
ग्रासक० गु० घेरनवाला, रोकनेहार।
ग्रासना० स० क्रि० घेरना, रोकना।
ग्रासित० गु० घेरागया, नाका।
ग्राह० ना० पु० मगर।
ग्राहक० गु० ग्रहणकरनेहार, अंगीकारकर्त्ता।
ग्राही० गु० ग्राहक, लेनेवाला, स्त्री० नाकिन।
ग्राह्य० गु० जो ग्रहण करने के योग्य है।
ग्रीवा० ना० स्त्री० गला, गर्दन, गलेका पृष्ठभाग।
ग्रीष्म० ना० स्त्री० तपन, गरमी।
ग्रैवेय० ना० पु० गलके गहना, हमेली, माला आदि।
ग्लानि० ना० स्त्री० घृणा, लाज, थकाई।
ग्वाल०, ग्वाला० } ना० पु० पशुपालक, अहीर।
ग्वालिनि० ना० स्त्री० अहीरिनि।
ग्वैंड़० अव्य० समीप, पास।
ग्वैंड़ा० ना० पु० नगर व गावका आसपास।

(घ)

घंघोरना०, घघोलना० } स० क्रि० मथना, मिलाना, धोना
घंघरी० ना० स्त्री० लहंगा।
घट० ना० पु० देह, मन।
घटक० ना० पु० मध्यस्थ, बिचवैया, सदृशी।
घटज० ना० पु० अगस्त्यमुनि।
घटना० अ० क्रि० मन्दाहोना, कमहोना, योग्यहोना।
घटनीय० गु० जो घटने के योग्य है।
घटयोनि० ना० पु० अगस्त्य मुनि।
घटा० ना० स्त्री० मेघोंका उमड़ना, मेघ, भीड़, टोना, मेघुक्कड़ी।
घटाटोप० ना० पु० पालकी वा रथका आच्छादन, गिलाफ, चारों ओर से घिरना।
घटाना० स० क्रि० कम करना।
घटाव० ना० पु० कमती।
घटावना० स० क्रि० घटाना।
घटिका० ना० स्त्री० घड़ी, मुहूर्त्त, ऐंड़ी के ऊपर का भाग।
घटित० गु० योग्य, गम्य।
घटिया० गु० थोड़े मोलका, सस्ता, घाटिदेनेहारा, धोखा देनेहारा, कपटी।
घटी० ना० स्त्री० हानि, हानि, कमी, घड़ी।

घड्यादि० ना० स्त्री० घडा आदि ।
घड्घड़ाना० अ० क्रि० गरजना ।
घड़ा० ना० पु० कुम्भ, घट, कलश मिट्टाश ।
घड़िया० ना० स्त्री० कुलिहया, मधुमक्खी का छत्ता, कोस, पियाली ।
घड़ियाल० ना० पु० मगर, ग्राह, घण्टा ।
घड़ियाली० गु० घण्टा बजानेहारा ।
घड़ी० ना० स्त्री० साठिपल, समय मापने का यन्त्रविशेष ।

घड़ौंच० ना० पु० } तिकठी, तिपाई, पानी का घड़ा रखने के लिये काष्ठ रचित वस्तु ।
घड़ौंची० स्त्री०

घणा० गु० घना ।
घण्टा० ना० स्त्री० बाजा विशेष, अढ़ाईदण्ड ।
घण्टालिक० ना० स्त्री० मधुकरका घण्टी ।
घण्टाली० ना० स्त्री० छोटा घण्टा ।
घन० ना० पु० घन, मेघ, गु० घना, दृढ, विस्तार, मूर्त्ति ना० पु० लोहार का बड़ा हथौड़ा ।
घनक० ना० पु० सभालू पौधा ।
घनगरज० ना० पु० गर्जन, गु० ऊंचा शब्द ।
घनघनाना० अ० क्रि० झनझनाना, झहराना ।
घनघोर० ना० पु० घटा, घेरा, घोर गर्ज ।
घनतनवर्ण० गु० जिसका वर्ण मेघ के समान हो, ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।
घनरस० ना० पु० जल, पानी ।
घनश्याम० ना० पु श्रीकृष्णचन्द्रजी, गु० काली घटा ।
घनस० ना० पु० पक्षी विशेष ।
घनसार० ना० पु० कपूर, जल, चन्दन ।
घना० गु० पिचपिच, बहुत ।
घनासन० ना० पु० भैंसा ।
घनाह्व० ना० पु० नागरमोथा ।
घनेरा० गु० बहुत, अधिक ।
घबराना० अ० क्रि० व्याकुल होना, हड़बड़ाना ।
घबराहट० ना० स्त्री० व्याकुलता, हड़बड़ी ।

घमण्ड० ना० पु० गर्व्व, अहङ्कार, गरूर ।
घमण्डी० गु० अहङ्कारी, मगरूर ।
घमरौल० ना० स्त्री० रोला भीड़ ।
घमसान० ना० पु० युद्ध, लड़ाई ।
घमाघम० गु० कचाकच ।
घमाना० स० क्रि० धूप दिखाना, धूप में खड़ा होना ।
घमासान० ना० पु० घमसान ।
घमोई० ना० पु० वृक्षविशेष ।
घर० ना० पु० गृह, मकान ।
घरनई० ना० स्त्री० चापड़ा, बेड़ा ।
घरना० स० क्रि० गढ़ना ।
घरनी० ना० स्त्री० स्त्री ।
घरबार० ना० पु० घराना ।
घरवारी० ना० स्त्री० गृहस्थ ।
घराना० ना० पु० कुटुम्ब, घर के लोग ।
घरामी० ना० पु० छवैया ।
घरी० ना० स्त्री० लपटे हुये कपड़ा की गठरी, तह लगे हुये कपड़े, घड़ी ।
घरैला० गु० घर का पालतू ।

घरौंदा० } ना० पु० छोटा घर जो लड़के खेलने के लिये बनाते हैं वा जिस में खिलौना रखते हैं ।
घरौर०
घरौंदरा०

घर्घर० ना० पु० चक्का आदि का शब्द ।
घर्घरा० ना० स्त्री० घाघरा ।
घर्म० ना० पु० प्रस्वेद, जलन, धूप, घाम, काल ।
घर्षण० ना० पु० घिसना, रगड़ना ।
घलुआ० ना० पु० रूक वा घाता जो तौल से अधिक लिया जाता है ।
घवरि० ना० स्त्री० गुच्छ, गुच्छा ।
घसन० ना० पु० घर्षण ।
घसना० स० क्रि० घिसना, रगड़ना ।
घसियारा० ना० पु० घास काटनहारा ।
घसियारिन० ना० स्त्री० घसियारे की भार्या ।

घसीटना० स० क्रि० खींचना, ढकेलना।
घसीटा० स० क्रि० जो ढकेला गया।
घसीला० गु० तृणस्थान, जहां घास हो।
घहराना० अ० क्रि० गरजना।
घाई० ना० स्त्री० घात, अंगुली का मध्यस्थान लठ वा खड्ग का चीरा।
घाँई० ना० स्त्री० ओर, पक्ष।
घाघ० ना० पु० प्राचीन, चतुर, गु० बाजीगर, इन्द्रजालिक।
घाघरा० ना० पु० लहँगा, पौधाविशेष, नद विशेष।
घाट० ना० पु० नदी वा तालाब में उतरने वा स्नान करनेका स्थान, कर्णाटकदेशका पर्वत, डौल, घगी, गु० न्यून।
घाटा० ना० पु० चढ़ाव, घगी।
घटिया० ना० पु० घाट परका ब्राह्मण, जो स्नान करनेवाले के कपड़े बचाते हैं।
घाटी० ना० स्त्री० पर्व्वतों में संकेत मार्ग।
घात० ना० स्त्री० दगा, मार, दाव, हत्या, ओट।
घातक० गु० हत्यारा, शत्रु, मारनेवाला।
घाता० ना० पु० रुक, मोल वा तोल से अधिक लेना।
घातिनी० ना० स्त्री० हत्यारिन, मारनेवाली।
घाती० गु० दाव लेनेवाला, मारनेवाला।
घातुक० गु० अपकारी, निठुर, हत्यारा।
घान० ना० पु० उखली वा चक्की आदि में जितना एक बार डालते हैं, बिवाह में कर्म विशेष।
घानी० ना० स्त्री० तिल आदि, कोल्हू, चर्खा।
घायड़ा० } गु० व्याकुल, हैरान।
घायरा० }
घाम० ना० पु० धूप।
घामड़० गु० भोला, उल्लू, अहमक।
घायल० गु० हथियार लगने से जिसके घाव भया।
घाल० ना० स्त्री० बुराई, बिगाड़।
घालक० गु० बधिक, हन्तक, मारनेवाला।
घालन० ना० पु० हनन, बधन, मारण।
घालना० स० क्रि० बिगाड़ना, उजाड़ना घुसेड़ना, मारना, पटकना।
घालित० गु० माराहुआ, उजाड़ाहुआ।
घाव० ना० पु० चीरा, ज़ख्म।
घास० ना० स्त्री० तृण, खर।
घासी० } गु० घासखाना।
घासू० }
घिघियाना० अ० क्रि० आधीना करना, लड़खड़ाना, गिगगिगी करना।
घिचपिच० गु० घना, आसपास।
घिन० ना० स्त्री० घृणा, असह्य, तलफ़्फ़ुन।
घिनाना० अ० क्रि० कुढ़ना, असह, देख के उबना।
घिनौना० गु० जिस को देखकर घिन आवे।
घिया० ना० स्त्री० तुरई, तरकारी विशेष।
घिरना० अ० क्रि० घेर में पड़ना, उमड़ना।
घिरनी० } ना० स्त्री० गराड़ी, गिर्री, कपोत
घिरणी० } विशेष, चरखी।
घिराना० स० क्रि० घेरा करवाना।
घिसना० स० क्रि० रगड़ना, घिसाना, स० क्रि० मलना।
घिसाना० स० क्रि० रगड़ना, मलाना।
घिसाव० ना० पु० } रगड़, रगड़ावट।
घिसावट० स्त्री० }
घिसियाना० स० क्रि० घसीटना।
घीकुवार० ना० स्त्री० औषध पौधा विशेष।
घुंघुची० ना० स्त्री० बेलिविशेषकाफल वा बीज।
घुंघुरू० ना० पु० चौरासी, पैंजा।
घुटुआ० ना० पु० जानु गांठि पाव की।
घुण्डी० ना० स्त्री० वस्त्र आदि की गोल वस्तु यथा अँगरखे में होती है।
घुटना० ना० पु० ठेवना, जानु, अ० क्रि० पिसना, सांस रुकजाना।

घुटाना० स० क्रि० मुड़ाना, चिकना करना।
घुड़० ना० पु० घोड़ा।
घुड़कना० अ० क्रि० दबकाना, धमकाना, झिड़कना।
घुड़की० ना० स्त्री० धमकी, झिड़की।
घुड़चढ़ा० ना० पु० असवार, सवार।
घुड़बहल० ना० स्त्री० चोपहिया गाड़ी जिस में घोड़े मचते हैं।
घुन० ना० पु० कीट विशेष, ढोला।
घुना० गु० जिस में घुन लग गया।
घुनाक्षर० ना० पु० घुन कृत अक्षर।
घुनिया० गु० घना, कपटी।
घुमरी० ना० स्त्री० तिमिरी।
घुमाना० स० क्रि० फिराना, फेरना, बहकाना।
घुरकना० स० क्रि० घुड़कना।
घुरूका० ना० पु० भीमसेन का पुत्र जो हिडि-म्बी से उत्पन्न था जिस को घटोत्कच भी कहते हैं।
घुलना० अ० क्रि० गलना, पिघलना, नम्र हो जाना, दुर्बल होना।
घुलाना० स० क्रि० पिघलाना, गलाना।
घुलावट० ना० स्त्री० पिघलावट।
घुसना० अ० क्रि० पैठना।
घुसपैठ० ना० स्त्री० पहुंच।
घुसाना० स० क्रि० पिलाना, पैठाना।
घुसेड़ना० स० क्रि० ठासना, खोंसना।
घूगनी० ना० स्त्री० उसना, चना, गेहूं।
घूंगर० ना० पु० लहराये हुये बाल।
घूंगी० ना० स्त्री० घोंघी, छोटा घोंघा।
घूंघट० ना० पु० ओढ़ना, नक़ाब।
घूघर० ना० पु० घूगर।
घूंघरू० ना० पु० नूपुर।
घूंटना० स० क्रि० निगलना, लीलना।
घूंस० ना० स्त्री० बड़ा चूहा।
घूंसा० ना० पु० घूसा, थप्पड़, मूका।

घूघू० ना० पु० पक्षीविशेष, पाण्डुक।
घूट० ना० पु० पानी की लिलावट।
घूटना० स० क्रि० घूंटना।
घून० ना० पु० द्वेष, कपट, द्रोह, लाग।
घूना० गु० कपटी, द्रोही।
घूमना० अ० क्रि० फिरना, चक्करदेना, लौटना।
घूर० ना० पु० खाद, घूरा, ताक।
घूरची० ना० स्त्री० उलझेन।
घूरना० स० क्रि० ताकना, क्रोध से देखना।
घूस० ना० स्त्री० घूस, अकोर, रिशवत।
घूसत० ना० पु० उल्लू का बच्चा।
घूसा० ना० पु० थप्पड़, मुका, मुक्की।
घृणा० ना० स्त्री० घिन, ग्लानि।
घृणि० ना० स्त्री० किरण।
घृत० ना० पु० घी।
घृताची० ना० स्त्री० मुख्य अप्सरा।
घृताक्त० गु० चिकना।
घृष्टि० ना० पु० शूकर, वाराह।
घेंटा० ना० पु० } शूकर का बच्चा।
घेंटी० स्त्री० }
घेगा० } ना० पु० गले में रोगविशेष।
घेघा० }
घेतला० ना० पु० जूती विशेष।
घेर० गु० रुका, घूमघुमाव, गोलाकार, ना० पु० फेर।
घेरना० स० क्रि० रूंधना, गासना।
घेरा० गु० जो रोका गया, ना० पु० कुंडल, मंडल, दावा।
घेवर० ना० पु० मिठाई विशेष।
घोंगा० ना० पु० शङ्ख वा घोंघा जन्तु नि० जन्तु का घर विशेष।
घोंसला० ना० पु० पक्षी का घर, खोंता।
घोकना० } स० क्रि० रटना, याद करना।
घोखना० }
घोघी० ना० स्त्री० वस्त्र विशेष जो कम्बल आदि से बनाते हैं।

घोणा० ना० स्त्री० नाक, नासिका, यथा (घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका) इत्यमर।
घोट० ना० स्त्री० चिकनाहट, श्राप।
घोटक० ना० पु० घोड़ा, यथा (घोटके वीति तुरगतुरगाश्ववतुरङ्गमा) इत्यमर।
घोटना० स० क्रि० मलकर चिकना करना, घु एटना ना० पु० पाषाणआदिक वस्तु जिस से चिकनाते हैं।
घोटा० ना० पु० काष्ठादिका वस्तु जिससे घोटते हैं ना० स्त्री० सुपारी।
घोड़ा० ना० पु० अश्व तुरग।
घोर० ना० पु० शब्द, भय धड़का गु० भयानक, कठिन, कड़ा।
घोरनिद्रा० ना० स्त्री० सुखनाद, बड़ानाद।
घोरफना० ना० स्त्री० गोह।
घोल० ना० पु० मट्ठा, छाछ।
घोलना० स० क्रि० मिलाना।
घोष० ना० पु० अहीरों का गाँव, गाय, ग्वाल।
घोषणा० स० क्रि० अभ्यास करना, याद करना, प्रसिद्ध रूप से जनाना।
घोषा० ना० स्त्री० सौंफ, विड्ग।
घोस० ना० पु० घास।
घोसी० ना० पु० ग्वाल अहीर।
घौद्दि० } घौरि० } ना० स्त्री० गुच्छा, घवरि।
घ्राण० ना० पु० नाक गन्धिका ग्रहण।
घ्राणेन्द्रिय० ना० स्त्री० नासिका, नाक।

[च]

चँवर० ना० पु० चमर।
चक० ना० पु० चकवा पक्षी, जिस भूमि पर अपना अधिकार हो।
चकचका० गु० स्वच्छ निर्मल, तेजोमय।
चकचूंधा० ना० पु० चकल्लस, आनन्द।
चकता० ना० पु० चिह्न, निशान।
चकत्ती० ना० स्त्री० फांक भगला, पैबंद।
चकनाचूर० ना० पु० कतरन, छीला, चूर, चूर्ण।
चकल्लस० ना० स्त्री० चकल्लस, मगनता, तमाशा।
चकल्लसी० गु० चकल्लसवाला, मग्न।
चकला० ना० पु० वेश्या का घर, वस्तविशेष जो पाट और सूत से बनता है, देश का खण्ड जिसमें कई परगना होते हैं, गु० चौड़ा।
चकलाई० ना० स्त्री० चौड़ाई।
चकवा० ना० पु० राजहंस जाति के पक्षी विशेष।
चकवी० ना० स्त्री० चकवा की स्त्री।
चका० ना० पु० पहिया, चक्र, कुलाल जिसपर बर्तन बनाता है।
चकाचौंध० ना० स्त्री० दृष्टिका तिरमिराना।
चकाबू० } चकाव्यूह० } ना० पु० चक्रव्यूह।
चकित० } चहत० } गु० अचम्भित, भूलामया तथा स्तब्धवर्स।
चकोतरा० ना० पु० गलगल फलविशेष।
चकोर० ना० पु० पक्षी विशेष।
चक्कवै० ना० पु० राजा चक्रवर्ती।
चक्कर० ना० पु० दही, गाड़ी का पहिया।
चक्कान० गु० गाढ़ा जमाहुआ।
चक्वास० ना० पु० मुनियों का घर।
चक्की० ना० स्त्री० दलैनी, जिससे आटा पीसते हैं।
चक्कू० ना० पु० छुरी चाकू।
चक्र० ना० पु० अस्त्रविशेष, पहिया, गोल भ्रमण, सुदर्शन, कुम्हार का चाक।
चक्राङ्ग० ना० पु० तगर औषध।
चक्रधर० } चक्रपाणि० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी, गु० जो चक्र बांधता हो।
चक्रवर्ती० ना० पु० चारोंमण्डल का राजा, सार्वभौमराजा।
चक्रवाक० ना० पु० चकवा।

चक्रमदन० ना० पु० पवार, कौंच, बीज।
चक्रव्यूह० ना० पु० चक्राकार सेना का गढ़ बनाकर समर करना।
चक्रलक्षणा० ना० स्त्री० गुरच।
चक्रा० ना० स्त्री० समूह, गिरोह, टाकी।
चक्राकार० गु० पहिया के डौल।
चकित० गु० चकित, भ्रमित।
चक्री० ना० स्त्री० चकला, गाथनी की मण्डली ना० पु० साप, कुम्हार।
चख० ना० पु० चक्षु, नेत्र।
चखना० स० क्रि० जाचना, स्वादलेना, खाना।
चखाचखी० ना० स्त्री० बिगाड़, लड़ाई, क्रूर।
चग० ना० स्त्री० गुड्डी, बाजा, पतंग।
चंगा० गु० भला, अच्छा, सुखी।
चंगेर० ना० स्त्री० फूल रखने का पात्र, कठरी।
चंगेरा० ना० पु० } खाचा, खाची, कठरा,
चंगेरी० ना० स्त्री० } कठरी।
चचा० ना० पु० पिता का भाई, चाचा।
चची० ना० स्त्री० चचाकी स्त्री।
चचुलाई० ना० पु० चचेंडा, तरकारी।
चचोरना० स० क्रि० सूखी वस्तुका चूसना।
चचनाना० स० क्रि० टीसना, क्रोधित होना, झुझलाना।
चचनाहट० ना० स्त्री० टीस, झुझलाहट।
चंचरीक० ना० पु० भौंरा।
चंचल० गु० अस्थिर, चपल, चम्पाहा, खिलाड़, नाशा।
चंचलता० ना० स्त्री० अस्थिरता, चपलता।
चंचला० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा, लक्ष्मी।
चचलाई० ना० स्त्री० ढिठाई।
चंचलाहट० ना० स्त्री० अस्थिरता, ढिठाई।
चंचु० ना० पु० चोंच, शुक पक्षी।
चट० अव्य० तुरंत, उसी समय।
चटक० ना० स्त्री० चमक, धड़ाका, चिड़ा, गु० बुद्धिमान् चालाक बनी।

चटकना० ना० पु० धन्धा, अ० क्रि० फटना, धड़कना, तड़कना।
चटका० ना० पु० भौंरा, गरगौंआ पक्षी, पक्षी टाग, चट्टा, दरका।
चटकाना० स० क्रि० चुटकी बजाना, फटकारना, फाड़ना, चीरना।
चटकारना० स० क्रि० पशुआदि के चराने में मुखसे ञिक ञिक करना।
चटकाहट० ना० स्त्री० चमक, भड़क, ना० पु० चिड़ियों का शब्द।
चटकीला० ना० पु० } चमकीला, भड़काला,
चटकीली० ना० स्त्री० } चमकारा।
चटगांव० ना० पु० नगर जो बंगाले के पूर्व है।
चटनी० ना० स्त्री० खाने के लिये खट्टी बनाई हुई वस्तु, चाटने की वस्तु।
चटपट० अव्य० तुरंत, उसी समय।
चटपटाना० अ० क्रि० व्याकुलहोना, फड़फड़ाना, किसी वस्तु के लिये जी चलाना।
चटपटाहट० ना० स्त्री० व्याकुलता।
चटपटिया० गु० फुर्तीला, चालाक।
चटपटी० ना० स्त्री० उतावली, हड़बड़ी।
चटवाना० स० क्रि० चटाके खिलाना।
चटसार० }
चटसाल० } ना० स्त्री० पाठशाला, मदर्सा।
चटाई० ना० स्त्री० बिछौना विशेष।
चटाक० ना० पु० धड़ाव, भड़ाका, एकाएक।
चटाका० ना० पु० धड़ाका, चूमा लनेका शब्द।
चटाचट० गु० दोहराय तिहराय के जो शब्द।
चटाना० स० क्रि० चटवाना।
चटिया० ना० पु० शिष्य, चेला, गु० चाटने वाला।
चटी० ना० स्त्री० ध्यान, स्थिरता, गताड़ी, रामचन्द्रिकाया यथा (सब जात फटी दुख की दुपटी कपटी न रहे जह एक घटी। निघटी रुचि मीच घटीहु घटी जगजीव यतीन कि छूटी चटी)।

चट्टोरा० गु० रसिया, पेटू, अधीरज।
चट्टा० ना० पु० चटसाली बालक।
चट्टान० ना० पु० पत्थरका छोटाभाग वा टुकड़ा।
चट्टाचट्टा० ना० पु० खिलौना विशेष।
चड़० ना० पु० वृक्षकी डाली तोड़ने का शब्द।
चड़चड़० गु० चमचट, चिकी।
चड़चड़ाना० अ० क्रि० फटना, तड़कना।
चड़घड़िया० ना० पु० बढ़ी।
चड़ई० ना० स्त्री० पश्चिम में तैयारी को कहते हैं और अवध में कूप गहिरने को।
चढ़ता० ना० पु० लाभ, बढ़ती।
चढ़ताहोना० अ० क्रि० निकलता होना, सरस होना।
चढ़ना० स० क्रि० आरोहण करना, बिलँगना, उठना, धावा करना, सवारहोना।
चढ़वैया० गु० चढ़नेवाला, यथा घुड़चढ़ा।
चढ़ाई० ना० स्त्री० चढ़ाव, धावा।
चढ़ाना० स० क्रि० आरोहण करना, बलिदान करना, उठाना, ढोल वा धनुष का तानना वा कसना।
चढ़ाव० ना० पु० चढ़ाई, भाटा।
चढ़ैत० } ना० पु० चढ़वैया।
चढ़ैता० }
चढ़ौवा० ना० पु० जूता जो एंड़ी से चढ़ा रहता है।
चणक० } ना० पु० चना, अन्नविशेष।
चणा० }
चण्ड० गु० प्रबल, प्रचण्ड, भैरव विशेष।
चण्डांशु० ना० पु० सूर्य्य।
चण्डागुस० ना० स्त्री० कौंच बीज।
चण्डाल० ना० पु० चांडाल, अतिनीच, कुकर्मी।
चण्डालिन० } ना० स्त्री० चांडालकी स्त्री।
चण्डाली० }
चण्डिका० } ना० स्त्री० दुर्गादेवी।
चण्डी० }

चण्डोल० ना० पु० पालकीविशेष, पक्षीविशेष, खिलौना विशेष।
चतु० गु० चारि।
चतुर० गु० निपुण, सुजान, प्रवीण, स्याना, धूर्त, ना० पु० कौवा।
चतुरई० } ना० स्त्री० बुद्धिमानी, स्यानापन,
चतुरता० } धूर्तता।
चतुरंग० ना० पु० चारिअंग की।
चतुरंगसैन्य० ना० स्त्री० चारिप्रकारकी फौज अर्थात् हाथी १ घोड़ा २ रथ ३ पदाति ४।
चतुरंगुल० गु० चारिअंगुल, स्त्री० किरवारी।
चतुरस्र० गु० चौखूंट।
चतुरा० गु० चतुर।
चतुराई० ना० स्त्री० चतुरता।
चतुरानन० ना० पु० ब्रह्मा।
चतुरवस्था० ना० स्त्री० चारिअवस्था, अर्थात् जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, अथवा बाल्य प्रौढ़, युवा, वृद्ध।
चतुराश्रम० ना० पु० चारि आश्रम, अर्थात् ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी।
चतुरास० ना० स्त्री० चारों ओर।
चतुरासी गु० अस्सी और चार ८४।
चतुरासीयोनि० गु० चौरासी योनि अर्थात् (दोहा) नव ९ जलचर दश १० व्योमचर क्रमि ग्यारह ११ वनबीस २०, येचौरासी ८४ मानि मनुज चारि ४ पशु तीस ३०)।
चतुरुपवेद० ना० पु० चारि उपवेद, अर्थात् धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, आयुर्वेद और धर्मशास्त्र।
चतुर्थ० गु० चौथा।
चतुर्थावस्था० ना० स्त्री० बुढ़ापा, मृत्युकाल।
चतुर्थी० ना० स्त्री० चौथ, चौथी तिथि।
चतुर्दस० गु० चौदह १४।
चतुर्दशविद्या० ना० स्त्री० चौदहविद्या, ब्रह्मज्ञान १ रसायन, २ वैद्यक ३ ज्योतिष ४ करण ५ धनुर्विद्या ६ कोक ७

नाड़ाज्ञान ६ वाहन फेरन १० गन्धय ११ जूप १२ तस्करी १३ स्वरज्ञान १४।

चतुर्दशरत्न० ना० पु० चोदहरन, अर्थात् अमृत १ चन्द्रमा २ लक्ष्मी ३ धनुष् ४ धन्वतरि ५ एरावत् ६ कौस्तुभमणि ७ उच्चै श्रवा ८ शङ्ख ९ अप्सरा १० कामधेनु ११ कल्पद्रुम १२ मदिरा १३ विष १४।

चतुर्दशमनु० ना० पु० चौदहमनु, अर्थात् स्वायम्भुव १ स्वारोचिष २ उत्तम ३ तामस ४ रेवत ५ चाक्षुष ६ वैवस्वत ७ सावर्णि ८ दक्षसावर्णि ९ ब्रह्मसावर्णि १० धर्मसावर्णि ११ रुद्रसावर्णि १२ देवसावर्णि १३ इन्द्रसावर्णि १४।

चतुर्दशलोक० ना० पु० चौदह लोक, अर्थात् सप्तस्वर्ग और सप्त पाताल, भू १ भुव २ स्व ३ मह ४ जन ५ तप ६ सत्य ७ अतल ८ वितल ९ सुतल १० रसातल ११ तलातल १२ महातल १३ पाताल १४।

चतुर्दशी० ना० स्त्री० चोदहवी तिथि, चौदस।

चतुर्भुज० ना० पु० विष्णु, नारायण, गु० चारि भुजावाला, वा चारिमेड़ों का खेत।

चतुर्भुजक्षेत्र० ना० पु० चामेड़ा खेत।

चतुर्भुजी० ना० स्त्री० देवीविशेष।

चतुर्भोजन० ना० पु० चारिप्रकारका भोजन, अर्थात् भोज्य १ भक्ष्य २ लेह्य ३ चोष्य ४।

चतुर्मुख० ना० पु० ब्रह्मा।

चतुर्मुक्ति० ना० स्त्री० चारिमुक्ति, अर्थात् सालोक्य १ सामीप्य २ सारूप्य ३ सायुज्य ४।

चतुर्योनि० ना० स्त्री० चारियोनि, अर्थात् स्वेदज १ अण्डज २ उद्भिज ३ जरायुज ४।

चतुर्वेद० ना० पु० चारिवेद, अर्थात् ऋक् १ यजु २ साम ३ अथर्वण ४।

चतुर्वेदी० ना० पु० चौबे, चारिवेदवक्ता।

चतुर्वर्ग० ना० पु० चारिवर्ग अर्थात् चारिफल।

चतुर्वर्ण० ना० पु० चारिवर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

चतुर्वाद्य० ना० पु० चारिप्रकार का बाजा, अर्थात् तत १ वितत २ घन ३ शिखर ४।

चतुर्बाहु० ना० पु० चतुर्भुज।

चतुर्विंश० गु० चोवीसवा।

चतुर्विंशति० गु० चौबीस २४।

चतुर्विवाह० ना० पु० चारिप्रकार के विवाह, अर्थात् प्राजापत्य १ आर्ष २ गान्धर्व ३ राक्षसी ४।

चतुष्कोण० गु० चोकोन, चोकोना।

चतुष्पदधर्म० ना० पु० चारिपद धर्म के, अर्थात् विद्या १ सत्य २ तपस्या ३ दान ४।

चतुष्फल० ना० पु० चारिफल, अर्थात् अर्थ १ धर्म २ काम ३ मोक्ष ४।

चतुष्पाद० ना० पु० पशु चारिपदवाला।

चतुस्सहस्र० गु० चारिहजार ४०००।

चतुस्संहिता० ना० स्त्री० चारिसंहिता, अर्थात् ब्राह्मी १ भागवती २ वैष्णवी ३ सौरि ४।

चना० ना० पु० अन्नविशेष।

चन्द० ना० पु० चन्द्रमा।

चन्दन० ना० पु० गन्धसार, मलयज, मलय।

चन्दवा० ना० पु० मण्डप्प्यर।

चन्दा० ना० पु० चन्द्रमा मनविलास यथा (देखति रही खिलौना चन्दा, आरि न कीजिय बालगोविन्दा)।

चन्दिया० ना० स्त्री० टपरी, चांदि, छोटी रस्सी।

चन्द्र० ना० पु० चन्द्रमा, चांद।

चन्द्रक० ना० पु० कपूर, मयूर, नख मलेला वस्तु।

चन्द्रकला० ना० स्त्री० चन्द्रमा का सोलहवा भाग, स्त्रियों की धोती विशेष।

चन्द्रकान्त० ना० स्त्री० मणिविशेष।

चन्द्रग्रहण० ना० पु० चन्द्रमा का ग्रहन।

चन्द्रघण्टा० ना० स्त्री० देवीविशेष।

चन्द्रचूड़० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

चन्द्रभागा० ना० स्त्री० चिनाव नदी जो पंजाब में है।
चन्द्रभाल० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणराजा।
चन्द्रमल्लिका० ना० स्त्री० इलायची।
चन्द्रमा० ना० पु० चांद, मुनिविशेष।
चन्द्रमुखी० गु० जिसका मुख चन्द्रमा सरीखा है अर्थात् अतिसुन्दरी।
चन्द्रमौलि० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणेराजा।
चन्द्रवधू० } ना० स्त्री० बीरबहूटी कीड़ा जो
चन्द्रवधूटी० } लालमकरीसा होता है, राहिणी।
चन्द्रवंशी० गु० जो चन्द्रमा से उत्पन्न भये क्षत्रियकी जातिविशेष अर्थात् सामवंशी।
चन्द्रबाला० ना० स्त्री० छोटी इलायची, बडी इलायची।
चन्द्रसिता० ना० स्त्री० कपूर।
चन्द्रशेखर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, पर्वत।
चन्द्रहार० न० पु० गलेका गहना विशेष।
चन्द्रहास० ना० पु० खड्ग तलवार, राजाविशेष।
चन्द्रहासा० ना० स्त्री० गुरुच।
चन्द्रहासी० ना० स्त्री० छोटी इलायची।
चन्द्रा० गु० मुण्डला, गंजा, बुद्धिमान्।
चन्द्रातप० ना० पु० चांदनी, चन्द्रिका।
चन्द्राना० अ० क्रि० सुलना मुरझाना।
चन्द्रायण० ना० पु० व्रत चान्द्रायण जो एक महीने १ एक भाग भोजन में शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष में बढाने घटाने की रीति से होता है।
चन्द्रिका० ना० स्त्री० चांदनी, बाकुची औषध, पुस्तकविशेष, चकोर।
चन्द्रोदय० ना० पु० चन्द्रमा का उदय, औषध विशेष।
चपकन० ना० स्त्री० अंगरखा विशेष, फारसी शब्द।
चपकना० अ० क्रि० मिलजाना, चिपकजाना, लगना चिपटजाना, लगिजाना।
चपकाना० स० क्रि० मिलाना, बैठाना, चिपटाना।
चपटना० अ० क्रि० चपटा होना, लपटना।
चपटा० गु० बैठना, लपटा।
चपटाना० स० क्रि० बैठाना, मिलाना।
चपटी० ना० स्त्री० दो स्त्रिया परस्पर प्रसङ्गित, मिलाहुई वस्तु।
चपचपड़० ना० पु० खाते समय मुख में का शब्द।
चपड़ा० ना० पु० लाखविशेष।
चपडाऊ० गु० निर्लज्ज, ढीठ, ना० पु० जूते पीछे दव।
चपडाना० स० क्रि० लाग करना, ढीठकरना।
चपना० अ० क्रि० लज्जित होना, आधीन होना, मसलजाना, दबजाना।
चपनी० ना० स्त्री० ढकना, ढपना, छाग।
चपरास० ना० स्त्री० पैदल के लिये स्वामीका चिह्न।
चपरासी० ना० पु० चपरास बांधेहारा, दूत।
चपल० गु० चंचल, उज्ज्वल, सुन्दर, ना० पु० पारा।
चपला० ना० स्त्री० बीजा, बिजली।
चपाती० ना० स्त्री० फुलका, यह शब्द फारसी है।
चपाना० अ० क्रि० चापना, लज्जित करना।
चपेट० ना० स्त्री० } धप्पा, धप्पड, धातेसे जो
चपेटा० ना० पु० } विपत्ति आजाय।
चप्पा० गु० चारि अंगुली का प्रमाण।
चप्पी० ना० स्त्री० देहका दबना या मलना।
चबाई० ना० स्त्री० कुचलाई, चर्वण, गु० निन्दक, दुष्ट, झ्रीक, नकली।
चबाउ० ना० पु० बतकहाउ, कहासुनी।
चबाना० स० क्रि० कुचिलना, चाबना।
चबायिन० ना० स्त्री० निन्दायुत, निन्दक।
चविक० ना० स्त्री० चाव औषध।

चबेना० ना० पु०
चबेनी० ना० स्त्री० } भूनाहुआ अन्न।

चव्य०
चव्यन० } ना० स्त्री० चाब, औषध।

चमक० ना० पु० डक।

चमक० ना० स्त्री० चमक, झलक, भड़क।

चमकता० गु० उजागर, उजला।

चमकना० अ० क्रि० झलकना, लहराना, भाग्य उदयहोना, क्रोधितहोना।

चमकाना० स० क्रि० झलकाना, लुभाना, घुमाना, नचाना, फैलाना।

चमकाव० ना० पु०
चमकाहट० ना० स्त्री० } चमक, भड़क।

चमकीला० गु० चमकन हारा, चमकदार।

चमकौना० ना० पु० चमकाने वाला।

चमगादड़० ना० पु०
चमगीदर० ना० पु०
चमगुदड़ी० ना० स्त्री०
चमगुदरी० ना० स्त्री०
चमगोदड़० ना० पु०
चमगोदरी० ना० स्त्री० } राति का उड़नेवाला पक्षी विशेष जो वृक्षों में उलटा टँगता है।

चमचमात० ना० पु० चमकैत।

चमचमाना० अ० क्रि० चमकना, झुनझुनाना।

चमचमाहट० ना० स्त्री० चमकाहट।

चमड़ा० ना० पु० चर्म, खाल।

चमत्कार० ना० पु० अचम्भा, भड़क, बड़ाई, ऐश्वर्य।

चमत्कारी० गु० भड़कीला, मायाराजी।

चमर० ना० पु० चवर, सुरभि गायकी पूछ।

चमरई० ना० स्त्री० चमारपन, चमार का कार्य।

चमरी० ना० स्त्री० सुरभि।

चमार० ना० पु० चर्मकार, नीचजाति विशेष।

चमारिन्०
चमारी० } ना० स्त्री० चमार की स्त्री।

चमू० ना० स्त्री० सैन्य, फौज।

चमूप०
चमूपति०
चमूपाल० } ना० पु० सेनापति, सिपहदार।

चमेटा० ना० पु० चपेट।

चमोटा० ना० पु०
चमोटी० ना० स्त्री० } चमड़ा जिसपर नाई छुरा फिराते हैं।

चम्पई० गु० नारङ्गी रङ्ग।

चम्पक० ना० पु० वृक्षविशेष जिसका फूल पीला सुगन्धित होता है।

चम्पत० ना० पु० भागना।

चम्पतहोना० अ० क्रि० भागजाना, छुपना।

चम्पा० ना० पु० चम्पक।

चम्पावली० ना० स्त्री० चम्पाकी कली के समान गहना विशेष गले में पहिनते हैं।

चम्बू० ना० पु० जलपात्र विशेष जिससे देवता को जल चढ़ाते हैं।

चम्बेली० ना० स्त्री० वृक्ष वा उसका फूल।

चय० ना० पु० समूह, ढेर, अंश।

चयन० ना० पु० आनन्द, कुशल, क्षेम।

चर० ना० पु० चारा, प्याद, दूत, गु० जिस को चलने की शक्ति हो, या जो चलने व उठने के योग्य हो यथा नर नारि पशु पक्षी आदि, चारा।

चरक० ना० पु० वैद्य विद्या का ग्रन्थ विशेष, प्याद।

चरकटा० ना० पु० चारा काटनेवाला।

चरका० ना० पु० श्वेतकुष्ठ विशेष, सफेद कोढ़।

चरख० गु० चोढ़ी।

चरचना० स० क्रि० देह में चन्दन लगाना, चर्चना।

चरचर० ना० पु० घाव, जख्म।

चरचराना० अ० क्रि० चरकना, मरमराना।

चरचेला० गु० बकी, बकवादी।

चरण० ना० पु० पांव, श्लोक आदिका एकदेश

चरणपीठ० ना० पु० खड़ाऊ।

चरणामृत०
चरणोदक० } ना० पु० जल, जिससे देवता वा गुरु वा ब्राह्मणादि के पांव धोयेगये हों।

चरती० गु० जो व्रत नहीं रखता, व्रती नहीं।

चरन० ना० पु० चरण।

चरना० अ० क्रि० घूमना, फिरना।

चरनी० ना० स्त्री० थान वा कठरा जिस में बैल भूसा खाते हैं।

चरसी० ना० स्त्री० चौअर्झी।

चरपरा० गु० तीता, कड़ुआ, तीक्ष्ण, पुर्तीला।

चरपराना० अ० क्रि० परपराना।

चरपराहट० ना० स्त्री० परपराहट।

चरपरिया० गु० मनचला, सुघड़।

चमर० गु० पिछला।

चरवाई० ना० स्त्री० चराई।

चरवाहा० ना० स्त्री० रखवारा, चरानेहारा।

चरस० ना० पु० मादक वस्तु, मोठ, पुरवट।

चरसा० ना० पु० अधौड़ी, खाल।

चराई० ना० स्त्री० चराने के दाम, चराने का काम।

चराऊ० गु० चरनेहारा, पशु।

चराचर० ना० पु० चल अचल सजीव निर्जीव जन्तु।

चरान० ना० पु० तराई।

चराना० स० क्रि० घुमाना।

चराव० ना० पु० खेत वा धरती जो चरने के योग्य।

चरावना० स० क्रि० चराना।

चरित० ना० पु० चरित्र।

चरितार्थ० ना० पु० कृतार्थ।

चरित्र० ना० पु० स्वभाव, शील, वृत्तान्त।

चरुआ० ना० पु० मांदा।

चर्चक० गु० चर्चा करनेहारा, वादी।

चर्चना० स० क्रि० विचारना, समझना, पूजना, पहिचानना।

चर्चरी० ना० स्त्री० छन्दविशेष, थपी, थिरकी।

चर्चा० ना० स्त्री० प्रस्ताव, बतकहाव।

चर्चित० गु० लगाया हुआ, कहा हुआ।

चर्म० ना० पु० चमड़ा।

चर्मकार० ना० पु० चमार।

चर्मपात्र० ना० पु० चमड़ा का डोल, मशक।

चर्मयन्त्र० ना० पु० चमड़ा का वस्त्र अर्थात् ओढ़ना।

चर्य्या० ना० स्त्री० तपस्या करने में धुनि अथवा रहनि।

चर्वण० ना० पु० दांतों से पीसना, चबैना।

चर्स० ना० पु० चरसा।

चल० गु० जो स्थिर न हो।

चलत० गु० चलनि।

चलदल० ना० पु० पीपल।

चलन० ना० पु० चालि, व्यवहार।

चलनता० ना० स्त्री० चिकनहार, खपती।

चलना० अ० क्रि० जाना, बिदाहोना, बहना।

चलनी० ना० स्त्री० झांझी, गु० चलती।

चलविचल० ना० पु० चूक, भूल, भ्रम।

चलविधरा० गु० अड़ियल, मचला।

चलयौवन० ना० पु० चलायमान यौवन।

चलसुगन्धा० ना० स्त्री० शोंचर लोन।

चलाचल० ना० पु०
चलाचली० ना० स्त्री० } दौड़धूप।

चलान० ना० स्त्री० भेजाव।

चलाना० स० क्रि० दौड़ाना, भगाना, छोड़ना, बढ़ाना, अभ्यास डालना, सिखलाना।

चलायमान० गु० जो स्थिर न हो, लोल।

चलाव० ना० पु० चलन।

चलित० गु० जो चलता है।

चलित्रो० गु० खिलाड़ी, चपल।

चलू० ना० पु० आचमन।

चप० ना० पु० नेम, आदि

चपक० ना० पु० पियाला, जिसमें जलादि पीते हैं।

चसक० ना० स्त्री० पीड़ा, टीस।
चसकना० अ० क्रि० टीसना, गड़ना।
चसका० ना० पु० लालसा, प्रेम, चाट।
चसना० अ० क्रि० मसकना, चसकना, गड़ना।
चहकना० अ० क्रि० चहचहाना।
चहकार० ना० स्त्री० चहचहाहट।
चहकारना० अ० क्रि० चहचहाना।
चहचहाना० अ० क्रि० पक्षिया का बोलना।
चहचहाहट० ना० स्त्री० पक्षियों का शब्द।
चहटी० ना० स्त्री० दो नखों से दबाना अर्थात् चुटकी काटना।
चहला० ना० पु० कीचड़।
चहिये० अव्य० चाहिये।
चहु० गु० चारि, ८ अव्य० चाहा।
चहुधा० ना० पु० चारोंओर।
चहुचक० } गु० चारोओर लग भग।
चहुदिश० }
चहुयुग० ना० पु० चारोंयुग।
चक्षु० ना० पु० नेत्र, आखि।
चक्षु श्रवा० ना० पु० साप, नाग
चक्षुष० ना० पु० भरवविशष।
चा० ना० स्त्री० पोधाविशष।
चाउ० ना० पु० आन द, मगल खुशी।
चाऊ० गु० आन द म लाभयुत।
चांड० ना० स्त्री० टेक, थम्भ।
चांद० ना० पु० चन्द्रमा।
चांदनी० ना० पु० उजाला, ज्योति।
चांदना० ना० स्त्री० चादनी ज्योति, शुक्ल बिछौना।
चांदनीचौक० ना० पु० चौड़ा मार्ग।
चांदा० ना० पु० तिहरी, पनी, पत्ता०
चांदी० ना० स्त्री० रूपा, रजत।
चांप० ना० स्त्री० बन्दूक की कल, काट।
चापना० स० क्रि० ठासना, गोन्ना।
चाक० } ना० पु० चक्र जिसपर कुम्हार बर्त्तन
चाका० } बनाता है, पहिया।

चाकी० ना० स्त्री० चक्की।
चाखना० स० क्रि० स्वादलेना मजालेना।
चाचा० ना० पु० पिताकाभाई, चाचा।
चाची० ना० स्त्री० चाचा की स्त्री।
चाञ्चल्य० ना० पु० अस्थिरता।
चाट० ना० स्त्री० चसका, लालच, पदार्थ।
चाटक० ना० पु० भगरे विद्या, तिलस्म, इन्द्रजाली।
चाटकी० गु० चाटक जाननेहारा।
चाटना० स० क्रि० जीभसे रसखींचना, चभड़ चभड़ करना।
चाटी० ना० स्त्री० मथनिया।
चाणक० ना० पु० परीक्षा, भड़ताव,माथमारक वार्त्ता।
चाणक्य० ना० पु० राजाविशेष का मंत्री नीतिग्रंथ।
चाणुड० } ना० पु० राजाकसका मल्ल।
चाणूर० }
चाण्डाल० गु० निर्दयी, अतिनीचजाति।
चाण्डूल० } ना० पु० पक्षी विशष।
चाण्डोल० }
चातक० ना० पु० पपाहा पक्षी।
चातर० ना० पु० महाजाल।
चातुर० गु० चतुर, चारि, बुद्धिमान्।
चातुरी० ना० स्त्री० प्रवीणता, चालाकी, बुद्धिमानी।
चातुर्य्य० ना० पु० चतुराई।
चातुर्वर्ण्यदेश० ना० पु० देश, जहा चारोंवर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र रहते हैं।
चातृक० ना० पु० पपीहा।
चान्द्रमास० ना० पु० कृष्णपक्ष प्रतिपदा से पूर्णमासीपर्यंत।
चान्द्रायण० ना० पु० व्रत नियम भोजन प्रतिदिन एकभाग घटाते हैं यथा चन्द्रमा प्रतिदिन घटता है।
चाप० ना० धनुष्, कमान, आर्द्रीतैरा।

चापकर्ण० ना० पु० रादा, धनच कमान की।
चापन० ना० पु० दाबन, रामायण यथा— (मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई, लगे चरण चापन दोउ भाई)।
चापत्तेत्र० ना० पु० धनुशाकार क्षेत्र।
चाप्य० ना० पु० वृद्ध।
चाबना० स० क्रि० दाँतसे कुचलना, कुचलना।
चाबी० ना० स्त्री० कुंजी।
चाम० ना० पु० चर्म।
चामर० ना० पु० चमर, छन्दविशेष।
चामीकर० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
चामुण्डा० ना० स्त्री० योगिनीभेद, देवी विशेष।
चाम्पेय० ना० पु० चम्पावृक्ष।
चाय० ना० पु० चाव, हर्ष, स्वाद।
चार० गु० गिनती ४ ना० पु० दूत, पदाति।
चारिखानि० ना० स्त्री० स्वेदजादि।
चारण० } ना० पु० रचवैया भट्ट, भाट,
चारन० } श्रव्य।
चारा० ना० पु० घासपाति, पशुभोजन, फारसी शब्द है।
चारी० गु० चलनेवाला ना० स्त्री० चुगली, चर्ट, चारि।
चारु० गु० सुंदर, अच्छा, ना० पु० पद्माक।
चारुपर्णी० ना० स्त्री० गन्धप्रसारा।
चारुफल० ना० पु० अंगूर, दाख।
चार्वाक० गु० वेदबाह्य, नास्तिक विशेष।
चाल० ना० स्त्री० गति, चलन, रीति।
चालना० स० क्रि० झाड़ना, आटा छनना।
चालनी० ना० स्त्री० आटा छनने का पात्र।
चाला० ना० पु० गौना, सगुन, सायत।
चाली० ना० पु० मिसकारी, छलावात।
चाव० ना० पु० चाव, चारिअंगुल की माप वस्त्र विशेष।
चावल० ना० पु० तण्डुल, तिरज।
चाष० ना० पु० नीलकण्ठ पक्षी, सहटारवा, यथा (स्याद्गृहस्थ कक स्याच्चाष किकीदिवि इत्यमर) रामायणे (चारा चाष बाम दिशि लेई, मनो सकल मंगल कहि देई)।
चास० ना० स्त्री० हलचलाना।
चासना० स० क्रि० हलचलाना।
चासा० ना० स्त्री० हलवाहा।
चाह० ना० स्त्री० इच्छा, प्रेम, रीझ, छोह।
चाहक० ना० पु० स्त्री० चाही, हितकारी।
चाहत० ना० स्त्री० चाह।
चाहना० स० क्रि० प्रेम करना, इच्छा करना, प्रार्थना करना, मांगना।
चाहिये० अव्य० अवश्य।
चाहिता० गु० प्यारा, मन भावित।
चाहिती० ना० स्त्री० प्यारी।
चाहो० अव्य० अथवा।
चिक० ना० स्त्री० पाडाविशेष, परदह।
चिकटा० ना० पु० टसर का कपड़ा विशेष।
चिकठा० गु० चिक्कट।
चिकना० ना० पु० तेल वा घृत गु० उजली सुंदर, तिलहा, अजितेन्द्रिय, चचला, और चिकनिया।
चिकनाई० ना० स्त्री० घी, भा० वा० चचलाहट औप, नलक।
चिकनाना० स० क्रि० उज्वल करना घोपना।
चिकनाहट० ना० स्त्री० उज्वलता, और सुंदरता।
चिकवा० ना० पु० जाति विशेष जो मांस बेचता है।
चिकार० ना० पु० शोर, चिलाहट, चेंचें।
चिकारना० अ० क्रि० चेंचें करना, नाकादन शोर करना, चिल्लाना।
चिकारा० ना० पु० मृग विशेष, छोटी सारंगी
चिकित्सक० ना० पु० वैद्य, तबीब।
चिकित्सा० ना० स्त्री० वैदई तिबाबत।
चिकुर० ना० पु० बाल, केश।
चिकोरना० स० क्रि० चिकोटना, चोंचियाना

चिकोरा० गु० तरल, चचल।
चिक० ना० स्त्री० बकरी, अजा, काव्ये यथा (पाही खेती चिक धा अर बिटियन बढ़वारि, येते पर जो नहिं नसो जाइ करै अधवारि)।
चिकट० गु० चिक्टा, मलिन।
चिकण० गु० चिकना।
चिकट्टा० ना० पु० चिकना, घुमकरसाव।
चिकार० ना० पु० शोर, चिल्लाहट।
चिंगड़ा० ना० पु० } झींगा।
चिंगड़ी० ना० स्त्री०
चिंगनी० ना० स्त्री० } मुरगी का बच्चा।
चिंगा० ना० पु०
चिघाड़० ना० स्त्री० किलकार, कूक।
चिंघाड़ना० अ० क्रि० किलकारना।
चिंचाड़ा० ना० पु० चिंघाड़।
चिंचड़ी० ना० स्त्री० किलनी।
चिचिआना० अ० क्रि० चिल्लाना, मिमियाना।
चिञ्चा० ना० स्त्री० अमिलावृक्ष।
चिट० ना० स्त्री० लीर, धज्जी।
चिटकारा० ना० पु० छींटा, चिह्न।
चिट्टा० गु० गोरा, सफेद, ना० पु० एक रुपया।
चिट्ठा० ना० पु० दिन दिनका लेखा वा कमाई वा रोजनामा।
चिट्ठी० ना० स्त्री० पत्र, पाती।
चिढ़० ना० स्त्री० ग्लानि, खिजाहट।
चिड़चिड़ा० गु० खुसाहा, भनभना, ना० पु० पोधाविशेष।
चिढ़ना० अ० क्रि० झुँझलाना, खिजना, चि ढ़ियाना।
चिड़पड़ा० गु० चरपरा, तीता, ताम्र, कडुआ।
चिड़ा० ना० पु० चटक।
चिढ़ाना० स० क्रि० खिजाना, सताना, छेड़ना।
चिड़िया० ना० स्त्री० गौरिया, पक्षी।
चिड़ीमार० ना० पु० बहेलिया, वधिक।
चिरिंड० ना० स्त्री० नृत्य विशेष।
चित० ना० पु० चित्त, चैतन्य, गु० सुधालेटना
चितकबरा० गु० चितला, कबरा, अबलक।
चितना० अ० क्रि० रगा जाना।
चितला० गु० कबरा, चितकबरा।
चितवन० ना० स्त्री० दृष्टि, दीठि।
चितवना० अ० क्रि० देखना।
चितहट० ना० स्त्री० खींच, चित्त हट जाना।
चिता० } ना० स्त्री० सरा, मृतक के दाह
चिताखा० } देने का स्थान।
चिताना० स० क्रि० जताना, सुचेत करना।
चिताभस्म० ना० स्त्री० चिता की राख।
चितावना० स० क्रि० जताना, सचेत करना।
चितावनी० ना० स्त्री० जतावनी, चिह्न।
चितेरा० ना० पु० चित्रकार, मुसव्विर।
चितौना० स० क्रि० देखना, विलोकना।
चित्त० ना० पु० मन, हृदय, बुद्धि।
चित्ता० ना० पु० औषध, पाशविशेष।
चित्ती० ना० स्त्री० चिह्न, लहसन, सर्पविशेष, कौड़ी जो रगड़ के चिकनी होवै।
चित्र० ना० पु० मूर्ति, रूप, अग्नि, मित्र, दोनों अरण्ड, गुरु, अग्र पक्षी।
चित्रक० ना० पु० चीता, पशु चित्रकारी।
चित्रकन्दक० ना० पु० तिर्मीकन्द।
चित्रकार० ना० पु० मसव्विर, चितेरा।
चित्रकारी० ना० स्त्री० चित्रकार का काम, मुसव्विरी।
चित्रकाय० ना० पु० बघ, शेर, गुलबघा।
चित्रकूट० ना० पु० पर्वत विशेष।
चित्रकेतु० ना० पु० राजा विशेष।
चित्रगुप्त० ना० पु० यमराज भेद, यम के यहां बुरे भलेका लेखक।
चित्रदेवी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
चित्रपक्ष० ना० पु० तीतर पक्षी।
चित्रभानु० ना० पु० सूर्य, अग्नि
चित्रभेषज० ना० पु० कठूमरि।

चित्रविचित्र० गु० अनेक रंग का है।

चित्रशाला० / चित्रसारी० } ना० स्त्री० जिस स्थान में बहुत चित्र होवें, नगाड़खाना, नकारखाना।

चित्रा० ना० स्त्री० चौदहवां नक्षत्र, इन्द्रवारुणी।

चित्रांगद० ना० पु० राजा विशेष।

चित्राफल० ना० पु० इन्द्रवारुणी।

चित्रित० गु० चित्रयुक्त, चित्र कियागया।

चित्रिणी० ना० स्त्री० चित्रविचित्र, भगवती का नाम है।

चित्री० ना० स्त्री० चित्रसारी ना० पु० चातापशु।

चिथड़ा० ना० पु० गुदड़, लत्ता।

चिथड़िया० ग० गुदड़िया।

चिथाड़० ना० पु० फाड़ चीर, लथाड़।

चिथाड़ना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना, लथाड़ना

चिदाकाश० ना० पु० परमात्मा चैतन्य आकाश म।

चिनग० ना० स्त्री० मूतने म जलन पड़ना।

चिनगाना० अ० क्रि० टासना, चिल्लाना।

चिनगारी० / चिनगी० } ना० स्त्री० लूका, आगि का आग सा फूल।

चिनचिनाना० अ० क्रि० चिल्लाना, गारकरना।

चिन्त० ना० स्त्री० चिंता।

चिन्तन० ना० पु० अभ्यास, चिंतवन।

चिन्तना० अ० क्रि० अभ्यास करना।

चिन्ता० ना० स्त्री० शोच, डर, जोखिम, संदेह, भावना।

चिन्ताना० स० क्रि० अभ्यास कराना।

चिन्तामणि० ना० स्त्री० मणि विशेष।

चिन्तित० गु० शोचा, भावित, विचारित।

चिह्न० ना० पु० लक्षण पहिचान।

चिन्हार० ना० पु० / चिन्हारी० ना० स्त्री० } चीन्हा, पहिचान।

चिह्नित० गु० जो पहिचाना गया, चिह्नयुक्त।

चिपकना० अ० क्रि० लगना, सटना।

चिपकाना० स० क्रि० लगाना सटाना चिपकाना।

चिपचिपा० गु० लसलसा, लिजलिजा।

चिपचिपाना० अ० क्रि० लसलसाना।

चिपटना० अ० क्रि० चिपकना, लिपटना।

चिपटा० गु० लगाहुआ, चिपचिपा।

चिपटाना० स० क्रि० चपकाना, चिप्पी लगाना, लपटाना।

चिपड़ी० ना० स्त्री० गोहरी।

चिप्पक० गु० चिकना, ना० पु० पक्षीविशेष।

चिप्पा० ना० पु० चीर।

चिप्पी० ना० स्त्री० जैसा कागज आदि फटा होता है वहां लगाई जाती है, छोटी चीर।

चिबुक० ना० स्त्री० ठोढ़ी।

चिमटना० अ० क्रि० चिपकना, लपटना।

चिमटा० ना० पु० स्पृश, लोहे की वस्तु जो सुनार और लोहार आदि रखते हैं।

चिमटाना० स० क्रि० लिपटाना।

चिमठा० / चिमड़ा० } गु० लचीला कड़ा।

चिमड़ाई० ना० स्त्री० कड़ापन, एंठ।

चिमड़ाना० स० क्रि० कड़ा करना, अ० क्रि० कड़ाहोना, ऐंठजाना।

चिमड़ाहट० ना० स्त्री० चिमड़ाई, एंठाई।

चिमड़ी० ना० स्त्री० चिमटा।

चिमसा० ना० पु० सरेस पानी का।

चिर० अव्य० बहुत, बहुत काल।

चिरंजी० / चिरंजीव० } ना० पु० आशीर्वाद विशेष अर्थात् बहुत जीवन होवे।

चिरंजीवी० गु० बहुतदिनी, ना० पु० कौआ।

चिरकाल० अव्य० नित्य, सदा।

चिरकुट० ना० पु० चिर।

चिरकुटिया० गु० गुदड़िया।

चिरचिरा० ना० पु० औषध व पौधाविशेष।

चिरचिराना० अ० क्रि० चरचराना।

चिरचिराहट० ना० स्त्री० झनझनाहट।

चिरना० अ० क्रि० फटना।
चिरन्तन० गु० पुराना, प्राचीन।
चिरवाना० स० क्रि० फड़वाना, चिराना।
चिराँद० ना० स्त्री० जलतहुए चमड़े की बुरा सना।
चिराना० स० क्रि० फड़वाना।
चिरायु० गु० बहुत जीवन।
चिर० गु० बहुत।
चिरकाल० गु० बहुत दिन, चिरकाल।
चिरकालीन० गु० बहुतदिनी।
चिरौंजी० ना० स्त्री० शुष्कफल विशेष।
चिरौरी० ना० स्त्री० विनती, खुशामद।
चिलक० ना० स्त्री० चमक, भड़क, दर्द।
चिलकना० अ० क्रि० चमकना, झलकना और फाड़ा आदिका पिराना।
चिलचिम० ना० पु० मछली।
चिलबिलाना० अ० क्रि० चीखना, चिल्लाना।
चिलम० ना० स्त्री० तमाकू आग भरने का पात्र।
चिलमची० ना० स्त्री० पात्र विशेष जिस में मुँह हाथ धोने का पानी रहता है, चिलम के नाच रखनेका वस्तु।
चिलवन० ना० स्त्री० चिक, झमरा।
चिलवल० ना० पु० वृक्षविशेष।
चिल्लड़० ना० पु० चीलड़, चिलुआ।
चिल्लाना० अ० क्रि० पुकारना, चिंघाड़ना।
चिल्लाहट० ना० स्त्री० पुकार, चिंघार।
चिल्ली० ना० स्त्री० भोजनविशेष जो अण्डे से बनाते हैं, उल्लू।
चिहटना० अ० क्रि० चिपटना, लगना।
चिहुर० ना० पु० बाल, केश।
चीँटी० ना० स्त्री० चाँवटी, कीटविशेष।
चीक० ना० स्त्री० कीच।
चीखुर० ना० पु० गिलहरी।
चीतना० स० क्रि० चाहना।
चीतल० ना० पु० जंगली जन्तुविशेष, गु० चित्तला।
चीता० ना० पु० तेंदुआ, व्याघ्र, चाह, बुद्धि।
चीथना० स० क्रि० चिथाड़ना, फाड़ना।
चीन० ना० पु० देश विशेष जो उत्तर पूर्व में है।
चीनी० ना० स्त्री० खांड़विशेष गु० चीनदेशी।
चीनीय० गु० चीनके मनुष्यादि।
चीन्ह० ना० स्त्री० पहिचान, चिह्न।
चीन्हना० स० क्रि० पहिचानना।
चीन्हा० ना० पु० पहिचान, चिन्हार।
चीर० ना० स्त्री० वस्त्र का टुकड़ा सारी, साड़ी, ओढ़ना।
चीरना० स० क्रि० फाड़ना।
चीरम० ना० स्त्री० चिरौंजी।
चीरा० ना० पु० फाड़, घाव मुण्डापन, पगड़ी।
चीरी० ना० स्त्री० झींगुर।
चील० ना० स्त्री० चील्ह, पक्षी जिसका मकान पर बैठके चिल्लाना अशुभ है।
चीलड़०, चीलर०, चीलहर० } ना० पु० ढील, बड़ाजुआँ, चील्ह।
चुआन० ना० स्त्री० जल के निकलनेकी भूमि।
चुआना० स० क्रि० टपकना कूप में जल निकालना।
चुकती० ना० स्त्री० निपटारा।
चुकना० अ० क्रि० समाप्तहोना, निपटना, ठहरना।
चुकाई० ना० स्त्री० चुकौता।
चुकाना० स० क्रि० निपटाना, ठहराना।
चुकौता० ना० पु० निपटारा, ठहराव।
चुक्रिका० ना० स्त्री० अमिलोनिया।
चुगना० अ० क्रि० दाना, चुनना।
चुगी० ना० स्त्री० अन्नका कर, महसूल।
चुचकारना० स० क्रि० चोंचलाकरना और चुमकारना।
चुचकारी० ना० स्त्री० चुमकारी।

चुञ्च० ना० पु० मुनिविशेष।

चुञ्चक० ना० स्त्री० भेंड़ी चुचर, ऊखायूहातानिघट्ट।

चुञ्चुड० ना० पु० चूचा, बड़ी मूर्चा।

चुटकी० ना० स्त्री० नोच, चुमटी, मुट्ठीभर अन्न, पावका अंगुलीका गहना।

चुटकुला० ना० पु० ठठोली मज़ाक।

चुटला० ना० स्त्री० चर्मी।

चुटाना०
चुटालना०
चुटावना० } स० क्रि० घावकरना दूध पिलाना गाय इत्यादिका।

चुडुवा० ना० पु० चूड़ा जो धान कूटके बनाते हैं।

चुड़ैल०
चुड़ैलिया० } ना० स्त्री० प्रेतिनी फूहड़।

चुनत०
चुनन० } ना० स्त्री० परत, तह ताह।

चुनना० स० क्रि० कपड़ोंका ताड़ना वा इकट्ठा करना, छांटना, टूंगना बानना।

चुनरी० ना० स्त्री० लालरंगीहुई ओढ़नी।

चुनवाना०
चुनाना० } स० क्रि० ढुंगाना, बिनवाना, छंटवाना कपड़का तह लगवाना।

चुनावट० ना० स्त्री० चुनत।

चुनी० ना० स्त्री० चूनी।

चुनौटा० ना० पु०
चुनौटी० ना० स्त्री० } पात्र जिसमें पान तम्बाकू खानेके लिये चूनारखते हैं

युद्धमें २ पक्षको आदसाना, प्रोत्साहन से बलवानों को धावा के लिये छांटना, जेठसुदी एकादशी को पैरके पारजाना जो काशीजीमें प्रचलितरीति है।

चुनौटिया० गु० पश्चिम में रंगनारंग को कहते हैं।

चुनौती ना० स्त्री० तलाक शान मदनकी बात निशानी, चिन्हारी, स्मारकवस्तु।

चुन्धला० गु० धुंधला, नयनरोगी।

चुन्धलाना० अ० क्रि० धुंधलाहोना।

चुन्धा० गु० चौंधा, चिमधा।

चुनना० स० क्रि० चुनना।

चुन्नी० ना० स्त्री० छोटामाणिक।

चुप०
चुपका०
चुपचाप० } गु० मौनी, अबोल।

चुपचुपाना० अ० क्रि० चुपचाप रहना।

चुपड़ना० स० क्रि० चिकनाना, मलना।

चुपड़ी० गु० चिकनी, चिकना।

चुप्प० ना० पु०
चुप्पी० ना० स्त्री० } मौनता खामोशी।

चुप्पा० गु० मौन, चुपका, अबोल।

चुभकी० ना० स्त्री० डुबकी, गोतामारना।

चुभना० अ० क्रि० गड़ना, धंसना, बिंधना, छिदना, पैठना।

चुभाना० स० क्रि० घुसेड़ना छेदना, पैठाना।

चुमाना० स० क्रि० चूमदेना वा दिलवाना।

चुमकार० ना० पु०
चुमकारी० ना० स्त्री० } चुमकारी।

चुमकारना० स० क्रि० चुचकारना।

चुम्बक० ना० पु० ला० वा आकर्षक पत्थर।

चुम्बन० ना० पु० चूमा राहवका होकर अंग में ओष्ठ स्पर्श करना।

चुरकुट० ना० पु० चुरनी चूर्ण।

चुरगना० अ० क्रि० चैंच करना।

चुराना० स० क्रि० चोरी करना।

चुरगन्ना० अ० क्रि० बकना बड़बड़ाना।

चुल० ना० स्त्री० खुजलाने की इच्छा।

चुलचुल० ना० पु० चंचलाहट।

चुलचुलाना० स० क्रि० खुजलाना गुदगुदाना।

चुलचुली० ना० स्त्री० चंचलाहट।

चुलबुला० गु० चंचल रंगीला।

चुलबुलाना० अ० क्रि० चंचल होना।

चुलबुलाहट० ना० स्त्री० उलबुलापन।

चुलबुलिया० गु० चुलबुला।

चुलहाई० ना० स्त्री० कामातुरी।

चुलहारा० ना० पु० कामातुर।

चुल्लू० ना० पु० एकहाथ का सम्पुट, मुट्ठीभर।

चुसकर० ना० पु० पिवकर।

चुसनी० ना० स्त्री० चूसनी।

चुहचुहा० गु० जो गहिरा रँगागया।
चुहचुहाना० अ० क्रि० गहिरा रँगाजाना, मैं
  चियों का शब्द जो प्रात काल होता है।
चुहल० ना० स्त्री० चर्चा, चहलपहल।
चुहला० गु० ठठोल, हँसोड़ा।
चूँगी० ना० स्त्री० चुंगी।
चूँची० ना० स्त्री० कुच, भिटनी, थन।
चूँटा० ना० पु० पृथ्वीमें रहनेहारा जन्तु विशेष।
चूँटी० ना० स्त्री० छोटा चूटा वा उसकी स्त्री।
चूक० ना० स्त्री० भूल, भ्रम, पौधा विशेष गु०
  खट्टाविशेष ना० पु० औषध विशेष।
चूकना० अ० क्रि० भूलना, धोखा देना।
चूका० ना० पु० खट्टा साग।
चूची० ना० स्त्री० चूची।
चूड़० ना० स्त्री० सोने वा चांदी की वस्तु जो
  विधवा पहिनती हैं, ना० पु० कड़ा विशेष जो
  हाथी के दांतों में पहिनाते हैं, खाट की पट्टी
  का सिरा वा नोक।
चूड़ा० ना० पु० संस्कार की रीति से प्रथम मु
  ण्डन, लाह का चूड़ी, ललाट के ऊपर बँधेहुए
  केश, चर्वण विशेष।
चूड़ाकरण० } ना० पु० मुण्डन।
चूड़ाकर्म० }
चूड़ामणि० ना० स्त्री० करण की मणि।
चूड़ी० ना० स्त्री० स्त्रियोंके हाथमें पहिननेके लिये
  जो चांदी वा लाह वा कांचकी बनती हैं।
चूत० ना० स्त्री० योनि, आम्र।
चूतड़०ना०पु०नितम्ब,जघनका उपरिभाग, पुट्ठा।
चूतिया० ना० पु० उल्लू, अहमक।
चून० ना० पु० चाना, पिसान।
चूना० ना० पु० चूर्ण, जो पान में लगाते हैं,
  मिट्टी वा पत्थर वा कंकर वा सीप जली हुई
  अ० क्रि० टपकना, रसियाना, छनना।
चूनी० ना० स्त्री० दलाहुआ उड़दआदि, चुनी।
चूमकपत्थर० ना० पु० चुम्बक।
चूमना० स० क्रि० चूमालेना, मच्छी लेना।
चूमा० ना० पु० मीठी, मच्छी।
चूर० ना० स्त्री० बुकनी, चूर्ण।
चूरन० ना० पु० चूर्ण।
चूरना० स० क्रि० चूर्ण करना।
चूरा० ना० पु० रेतन, बूरा, चूड़ा।
चूरी० ना० स्त्री० बहुत घी पड़ीहुई रोटी, चूड़ी।
चूर्ण० ना० पु० रेणु, बुकनी।
चूल० ना० स्त्री० एक लकड़ी का सिरा जो दूसरी
  लकड़ीमें डालते हैं, किवाड़केखूट नीचे ऊपरके।
चूल्हा०ना० पु० } आग रखने वा रोटी पकाने
चूल्ही०ना० स्त्री० } की वस्तु।
चूसना० स० क्रि० पीलेना, सुड़कना।
चूहड़ा० पु० ना० मेहतर, भंगी।
चूहड़ी० ना० स्त्री० भंगिनि।
चूहा० ना० पु० मूसा, मूषक।
चूही० ना० स्त्री० छोटा मूसा, उसकी स्त्री।
चेंची० ना० स्त्री० वस्तु जिसमें सुई रखते हैं।
चेंचकारना० अ० क्रि० उड़कना।
चेंड़ा० ना० पु० यौवन, छोटा।
चेंप० ना० पु० वृक्षका फल वा लासा।
चेटक० ना० पु० सेवक, नौकर, भगरनिदा।
चेटकी० ना० पु० इन्द्रजाल, ख्याल दिखानेहारा,
  ना० स्त्री० दासी, सेवकिन।
चेटी० ना० स्त्री० दासी, लौंडी।
चेत० ना० पु० स्मरण, होश, याद, सुधि।
चेतक० गु० चेत करनेहारा, चेत में हो।
चेतका० ना० स्त्री० हरा, चिता, रामचन्द्रिकामें,
  मनौ चेतका में सती सत धरी।
चेतकी० ना० स्त्री० हर्रे।
चेतना० स० क्रि० ध्यान करना, ध्यानलगाना,
  विचारना, ध्यान में आना ना० स्त्री० बुद्धि।
चेता० गु० चेत करनेहारा।
चेरा० ना० पु० चेला, चाकर, लड़का।
चेराई० ना० स्त्री० दासत्व, सेवकाई।
चेरी० ना० स्त्री० चेली, दासी।
चेरे० ना० पु० चेराका बहुवचन।

चौबे० ना० पु० चतुर्वेदी, जातिविशेष, मथुरा तीर्थ के पुरोहित।
चौमासा० ना० पु० बरसात, परदिल।
चौमुख० ना० पु० ब्रह्मा, चौमुखा दीवट, चारोंओर।
चौमुखा० ना० पु० ब्रह्मविशेष, चारमुखकी दीवट।
चौमुखी० ना० स्त्री० रुद्राक्ष का फल।
चौर० ना० पु० चोर।
चौरकर्म० ना० पु० चोरी।
चौरंग० ना० पु० दावविशेष, बैलआदि के चारों पाव एक चोट में काटना।
चौरभय० ना० पु० चोरोंका डर।
चौरस० गु० समान, एकसा।
चौरसाना० स० क्रि० समान करना।
चौरसाई० ना० स्त्री० सफाई, समानता।
चौरा० ना० पु० चबूतरा, चोतरा।
चौरानबे गु० नब्बे और चार ६४।
चौरासी० गु० अस्सी और चार ८४।
चौपाहा० ना० पु० मार्ग चारों ओर जानेका।
चौरी० ना० पु० चौबार घेरेहुए लाल।
चौलड़ा० ना० पु० } चारि लड़की माला वा
चौलड़ी० ना० स्त्री० } कोई वस्तु।
चौला० ना० पु० अन्नविशेष।
चौलाई० ना० स्त्री० सागविशेष।
चौवा ना० पु० पशु चतुष्पाद।
चौवाई० ना० स्त्री० आंधी, भकड़।
चौसठ० गु० साठि और चार ६४।
चौसर० ना० पु० चार लड़काहार, चौपड़।
चौहट० } ना० पु० चौराहा, चौसरका बा
चौहट्टा० } जार।
चौहत्तर० गु० सत्तर और चार ७४।
चाहान० ना० पु० रजपूत जातिविशेष।
च्युत० गु० पतित, क्षणित, बदला।
च्युतता० ना० स्त्री० पतन, बदल।
च्युति० ना० स्त्री० योनि, गुदा।

छ

छ गु० षट् ६।
छकड़ा० ना० पु० गाड़ी, शकट।
छकड़ाना० स० नि० चौंधियाना, चकराना।
छकना० अ० क्रि० स तुष्ट होना, भरना तृप्तहोना, दु खित, व्याकुल।
छकाई० ना० स्त्री० तृप्ति, सन्तुष्टता।
छकाना० स० क्रि० सन्तुष्ट करना, तृप्तकरना, पेटभर भोजन कराना।
छकाड़० ना० स्त्री० धप्पड़, गु० छ दांत का पशु आदि।
छक्क० ना० पु० छ का समूह, खेल विशेष, जाल सहित पिंजरा।
छगरी० ना० स्त्री० बकरी।
छगल० ना० पु० बकरी।
छँगुली० ना० स्त्री० कनिष्ठिका, पाचवीं अंगुली।
छछुन्दर० } ना० स्त्री० मूसा जो रातिको निक
छछूंदर० } लता है और कुवासित होताहै।
छज० गु० झाड़खण्ड।
छज्जा० ना० पु० बरामदह।
छज्जी० ना० स्त्री० सज्जी।
छज्जन० ना० पु० दारुविशेष।
छच्छुनाना० अ० क्रि० सनसनाना, सरसराना, चरपराना।
छटना० ना० पु० चलनाविशेष, अ० क्रि० घटना, बिछुड़ना, भिन्नभिन्न होना।
छटा० ना० स्त्री० उजाला, चमचमाहट, बिजुली सीधा गु० उनाहुआ, छागहुआ।
छटांक० ना० स्त्री० सेरका सोलहवाभाग।
छटाना० स० क्रि० चुनवाना।
छटे० ना० पु० उजेले का बहुवाक्य गु० बनेहुये, चुनेहुये अलगभये।
छट्ट० ना० स्त्री० षष्ठी, छठ।
छट्ठी० ना० स्त्री० छठवीं, षष्ठी, जन्मन के पीछे छठे दिनका व्यवहार।
छठ० ना० स्त्री० षष्ठी, छट्ठी।
छठी० ना० स्त्री० छट्ठी।
छड़० ना० पु० भालेकी लकड़ी, डंडा, दाढ़ी और

छर, आंख में सफ़ेद दाग।
छड़ना० स० क्रि० चावलों का छांटना।
छड़ा० गु० अकेला ना० पु० पान वा पांव में पहिरने का भूषण।
छड़ाना० स० क्रि० चावल साफ़करना।
छड़िया० ना० पु० छड़ीवाल, आसावरदार ना० स्त्री० छोटीगली, कोलिया।
छड़ियाना० स० क्रि० छड़ीसे मारना।
छड़ी० ना० स्त्री० बेत, बांसकी सूखी लकड़ी, छिकुनी।
छड़ीला० ना० स्त्री० जटामांसी।
छण० ना० पु० क्षण।
छणटना० अ० क्रि० दुर्बलहोना, [illegible]।
छणटवाना० स० क्रि० छिलका उतरवाना।
छणटाई० ना० स्त्री० छांटने का काम।
छणटाव० ना० पु० छंटी, [illegible]।
छणडना० स० क्रि० [illegible], [illegible], चलाना।
छणडना० स० क्रि० छुड़ाना,
छणिडत० गु० छोड़ागया।
छणडुआ० ना० पु० छूटा [illegible]।
छणडौती० ना० स्त्री० छुट्टी, [illegible]।
छत० ना० स्त्री० घरके ऊपरकी [illegible] का पाटन।
छतकुम्भक० ना० [illegible] [illegible], [illegible], यथा करवीरा श्वेतपुष्पा, [illegible] [illegible] इति

छनना० अ० क्रि० [illegible], [illegible], [illegible]होना।
छनाका० ना० पु० [illegible], [illegible] झांझ [illegible] का शब्द।
छनाका० ना० पु० तुरन्त जलजाना पानी का आगमें।
छनिक० ना० पु० क्षणिक।
छन्द० ना० पु० पद्य, रचना, गायत्र्यादि।
छन्दगति० ना० स्त्री० छन्दों की चाल।
छन्दना० अ० क्रि० [illegible], बंधना।
छन्दछन्द० ना० पु० छलबल, छल।
छन्दी० [illegible] [illegible], [illegible]।
छन्ना० ना० पु० कपड़ा दूध आदि छाननेका।
छन्नी० ना० स्त्री० [illegible] [illegible], भूषणविशेष।
छन्नू० गु० छाननेवाला।
छप० ना० पु० जलमें वस्तु गिरनेका शब्द।
छपई० ना० स्त्री० षट् पदका छन्द।
छपकली० ना० स्त्री० जन्तुविशेष।
छपकाना० स० क्रि० पानी डालना।
छपकी० ना० स्त्री० जन्तुविशेष।
छपना० अ० क्रि० छापाहोना, लुकना।
छपरा० ना० पु० छप्पर।
छपरिया० ना० स्त्री० छोटा छप्पर।
छपरी० ना० स्त्री० छपरा।
छपाई० ना० स्त्री० छापने का काम वा पैसा।

छमछमाना० अ० क्रि० चमकना, झलकना, नमना।
छय० ना० पु० क्षय।
छयरोग० ना० पु० क्षयरोग।
छर० ना० स्त्री० जगमगी, गड़, खड़, चल्दी, शिताबी।
छरछोबी० ना० स्त्री० झाड़ गिरने का स्थान।
छरस० ना० पु० षट्रस।
छरी० ना० स्त्री० छड़ी।
छर्दायन० ना० पु० लोग।
छर्दि० ना० स्त्री० वमन, ओकना।
छर्रा० ना० पु० लोहेआदिकी छोटी छोटी गोली।
छल० ना० पु० कपट, ठगाई, धोखा, धोखा, मिस।
छलकना० अ० क्रि० निकलजाना, टलकना।
छलकाना० स० क्रि० गिरादेना।
छलकारी० गु० कपटी, ठग दगाबाज।
छलांगना० अ० क्रि० कुदकना।
छलछिद्र० ना० पु० कपट, छल।
छलछिद्री० गु० कपटी, छली।
छलना० स० क्रि० छलकरना, ठगना, भटकाना।
छलनी० ना० स्त्री० चलनी।
छलांग० ना० स्त्री० कुदका, फलाग।
छलावा० ना० पु० लूका, आग सेनानी।
छलिया० } गु० कपटी, ठग, प्रपंची।
छली० }
छल्ला० ना० पु० अंगुली में पहिरने का गहना।
छवा० ना० स्त्री० एड़ी पाखी।
छवि० ना० स्त्री० शोभा, चमक, सुन्दरता।
छविभीर० ना० पु० पान।
छवीला० गु० सुन्दर, शोभायमान।
छवैया० ना० पु० छानेहारा।
छांई० ना० स्त्री० छौर।
छां० ना० स्त्री० छाया।
छांट० ना० स्त्री० गूद, मादी छीलन।
छांटन० ना० स्त्री० टुकड़ा, धज्जी।
छांटना० स० क्रि० वमन करना, कतरना, अलग करना।
छांड़० ना० स्त्री० किनारा, नदी का अगाव, नदी का सोता।
छांड़ना० अ० क्रि० छोड़ना।
छांद ना० स्त्री० पगहा, पैकड़ा।
छांदना० स० क्रि० बांधना।
छांदा० ना० पु० भाग, अंश, हिस्सा।
छांव० } ना० स्त्री० छाया, परछाईं।
छाह० }
छांहारा० गु० छायावान।
छाइ० ना० स्त्री० ववा।
छाकना० स० क्रि० तृप्त जल पछाना, पेटभर भोजन वा कोई वस्तुखाना।
छाग० ना० स्त्री० बकरा।
छागल० ना० पु० चुपी, बकरी का बकरीकीखाल
छागी० ना० स्त्री० बकरी।
छागलांगी० ना० स्त्री० विधारा।
छाछ० } ना० पु० मट्ठा, मथा दही।
छाछी० }
छाज० ना० पु० सूप।
छाजना० अ० क्रि० छाना, फबना, सजना।
छाजित० गु० शोभित, लाभकारी।
छात० ना० स्त्री० छत।
छाता० ना० पु० छत्र, छतुरी।
छाती० ना० स्त्री० छातछाता, उर, चूची।
छात्र० ना० पु० विद्यार्थी, शिष्य, चेला।
छादन० ना० पु० कपास।
छान० ना० स्त्री० छप्री, ठाट, छप्पर, विचार
छानना० स० क्रि० निर्बारना, खच्छ करना, ढूंढ़ना, विचारना।
छानबीन० ना० स्त्री० विचार, जांच।
छानबे० गु० नव्बे और छः ९६।
छानस० ना० पु० चोकर, भूसी, चूरा।
छाना० स० क्रि० छाजना छायाकरना, छप्पर बनाना, न्हवाना।
छानी० ना० स्त्री० छप्पर।
छाप० ना० स्त्री० मुद्रा, मुहर अथवा चिह्न

छापना० स० क्रि० छापाकरना, चिह्नदना।
छापा० ना० पु० वैष्णवोंका तिलक, मुद्रा।
छापाविद्या० ना० स्त्री० जिसके द्वारा अनक पुस्तक छापी जाती हैं, सब वस्तु जानी जाती हैं।
छाम० गु० दुबला, हलका।
छाया० ना० स्त्री० परछाईं, छाह, पिशाच भूत।
छायानट० ना० पु० रागिनीविशेष।
छायाधर० ना० पु० वृक्षादि।
छायापाद० ना० पु० छाया के परिमाण से समयका स्थिरकरना।
छार० ना० स्त्री० क्षार, ढला जो बड़ा है।
छारछबीला० ना० पु० सुगंधिवस्तु विशेष।
छारी० ना० पु० क्षारी, श्रीमहादेवजी।
छारू० ना० पु० तिनावा।
छाल० ना० स्त्री० बक्कला, छिलका।
छाला० ना० पु० फफाला, चमड़ा खाल, पुरा।
छालियाँ० ना० स्त्री० सुपारीविशेष।
छावना० स० क्रि० छाना।
छावनी० ना० स्त्री० पलटनके रहनेका स्थान, लन छानका काम।
छाह० ना० स्त्री० छाहं।
छिकुनी० ना० स्त्री० छड़ी, कमची।
छिका० ना० स्त्री० छींक।
छिकिका० ना० स्त्री० नकछिकनी, पौधा।
छिगुनी० } छिगुली० } ना० स्त्री० कनिष्ठिका, कनगुरिया।
छिचड़ा० ना० पु० पावरा नया चमड़ा।
छिचड़ैला० ना० पु० दुबला, चमचिचड़।
छिछड़ा० ना० पु० खलरी, छपर।
छिछला० गु० उथला।
छिछलाई० ना० स्त्री० उथलाई।
छिछली० ना० स्त्री० खेलविशेष, थाड़ीगहरा।
छिछोड़ा० गु० ओछा, हलका, नीच।
छिटकना० अ० क्रि० फैलाना, बिथरना।
छिटकनी० ना० स्त्री० बिल्ली जो किवाड़ों में लगती है।
छिटकाना० स० क्रि० फैलाना, बिथराना।
छिटकी० ना० स्त्री० छर्रा, छाट।
छिड़कना० स० क्रि० छींटना बिथराना।
छिड़काना० स० क्रि० छिंचवाना, सिंचाना।
छिड़काव० ना० पु० सींच, सिंचाव।
छिड़ना० अ० क्रि० चिढ़ना, दुःखी होना।
छिड़ाना० स० क्रि० चिढ़ाना, चिढ़राना, दुखाना।
छितनिया० } छितनी० } ना० स्त्री० डलिया।
छितरना० अ० क्रि० बिथरना, फलना।
छितराना० स० क्रि० बिथराना, फैलाना।
छिति० } छिती० } ना० स्त्री० क्षिति, धरती, जमीन।
छिदना० अ० क्रि० बिधना, गड़ना, स० क्रि० राकना, रोकन का काम करना।
छिदनी० ना० स्त्री० छदने की वस्तु।
छिदाना० स० क्रि० छदकराना, रोकाना।
छिद्र० ना० पु० छेद।
छिन० ना० पु० क्षण, लहमा।
छिनकना० स० क्रि० नाक स्वच्छकरना।
छिनला० ना० पु० व्यभिचारी, परस्त्रीगामी।
छिनवाना० स० क्रि० और किसी से लिंचवाना।
छिनाल० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा।
छिनाला० ना० पु० व्यभिचार, कुलटापन।
छिनेक० ना० पु० क्षणेक।
छिन्न० गु० खण्डित, क्षाण, दुर्बल।
छिन्नभिन्न० गु० अलग २, तित्तर बितर।
छिन्ना० ना० स्त्री० गुरुच, महामुंडी।
छिपकली० ना० स्त्री० गृहगोधिका, किरकिटी।
छिपका० ना० पु० छिड़काव।
छिपना० अ० क्रि० लुकना, गुप्तहोना।
छिपा० गु० लुका, गुप्त, अप्रकट।
छिपाना० स० क्रि० गुप्तकरना, लुकाना।

छिपाव० ना० पु० लुकाव, दुराव, गोपन।
छिप्र० ना० स्त्री० शीघ्र, उतावा।
छिप्रोद्भवा० ना० स्त्री० गर्भ।
छिमा० ना० स्त्री० क्षमा।
छिमाजोग० गु० क्षमायोग्य।
छियालीस० गु० चालीस और छ ४६।
छियासठ० गु० साठ और छ ६६।
छियासी० गु० अस्सी और छ ८६।
छिलका० ना० पु० बकला, फलादिक ऊपरकी त्वचाविशेष।
छिलना० अ० क्रि० रगड़जाना, उधड़जाना।
छिलाना० स० क्रि० कतराना, रगड़ाना।
छिलैया० ना० पु० छीलनेहारा।
छिलौरा० ना० स्त्री० अग्नीकी शरीरमें फुड़िया जिनही।
छी० अव्य० तु छ करने का वाक्य।
छींक० ना० स्त्री० नितव, प्रसिद्ध, अनम।
छींकना० अ० क्रि० ब्रह्माण्डमें पवन उतरना।
छींका० ना० पु० रस्सी का जाल जिसमें वस्तु रखके लटका देते हैं।
छींछड़ा० ना० पु० चमड़े के समान अमदय मांस।
छीनना० अ० क्रि० घसना, गिरना।
छींट० ना० स्त्री० छिरको, छाप।
छींटना० स० क्रि० बिथराना, पानी छिड़कना।
छीनना० स० क्रि० झपटलेना, खाचना।
छीप० ना० स्त्री० धारी, लहसुन, जिस लकड़ीमें बहेलिया धुन बाधते हैं, सागसे ढकेलना।
छीपना० स० क्रि० पानी छिड़क देना, छीप निकालना, वस्त्र छापना।
छीपी० ना० पु० वस्त्र, छापनेहारा।
छीमी० ना० स्त्री० फली, छिलका।
छीलन० ना० पु० खुरचना, कतरना।
छीलना० स० क्रि० खरचना, कतरना, छिलका उतारना, छीलना।
छुंगलिया० ना० स्त्री० छगुनी।
छुछकारना० स० क्रि० तुच्छ करके निकालना, दुलराना।
छुछवाना० स० क्रि० गाड़ना, पूछना।
छुटकारा० ना० पु० छुड़ाव, उद्धार।
छुटखेलना० अ० क्रि० लुचपन करना।
छुटखेला० गु० लुच्चा, बदमाश।
छुटना० अ० क्रि० उद्धारहोना, निकलना।
छुगन० } ना० स्त्री० घुंघुरू, छुट्टी।
छुदानी० }
छुटापा० ना० पु० छुटाई, छापापन।
छुट्टी० ना० स्त्री० छुटकारा, उद्धार, रुखसत।
छुड़वाना० स० क्रि० छुटकारा कराना।
छुतहरा० गु० जो अपवित्र होगया, नापाक।
छुद्र० गु० क्षुद्र नीच, हलका, नकछिकनी।
छुद्रघण्टिका० } ना० स्त्री० छुद्रघण्टिका, तागड़ी करधनी।
छुद्रमेखला० }
छुद्रा० ना० स्त्री० पतुरिया, छिनाल, धमर, कंगाई पाधा, नीच स्त्री, नम्र।
छुधा० ना० स्त्री० भूख।
छुपना० अ० क्रि० लुकना, गुप्तहोना।
छुपाना० स० क्रि० लुकाना, छिपाना।
छुपा० गु० लुका, गुप्त, छिपा, अप्रकट।
छुरा० ना० पु० बड़ीछुरी बालमूड़नेका शस्त्र।
छुरिका० ना० स्त्री० पालक का साग छुरी।
छुरी० ना० स्त्री० चाकू, छोटा चाकू।
छुलकना० } अ० क्रि० थोड़ा थोड़ा मूतना।
छुलछुलाना० }
छुलाना० स० क्रि० छुवाना छिलाना।
छुहाना० स० क्रि० उजलाना।
छुहारा० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष।
छुहावट० ना० स्त्री० लगावट।
छूआना० स० क्रि० स्पर्शकराना छुलाना।
छूई० ना० स्त्री० दूधिया मट्टी, खड़ियामट्टी।
छूकी० ना० स्त्री० मच्छर।
छूछला० गु० बोदला, बावला।
छूछा० गु० शून्य, खोखला, खाली।

छूछी० ना० स्त्री० कुत्सित, अपमानी, नीच, खाली।
छूट० ना० स्त्री० बट्टा, छुड़ाव, भूषणकी चमक।
छूटना० अ० क्रि० छुटना, निकलना।
छूत० ना० स्त्री० अपवित्रता, नापाकी।
छूना० स० क्रि० स्पर्श करना।
छेंक० ना० स्त्री० रोक।
छेंकना० स० क्रि० रोकना।
छेंकवैया० ना० पु० रोकवया।
छेंकाव० ना० पु० रुकाव।
छेड़० ना० स्त्री० खिजाव, दुखाव।
छेड़ना० स० क्रि० खिजाना दुखाना।
छेद० ना० पु० छिद्र, मुख, सूराख।
छेदक० ना० पु० छेदकर्त्ता, वधक।
छेदन० ना० पु० छेद, वेधन।
छेदना० स० क्रि० वेधना, बरमाना।
छेना० ना० पु० खिरसा, छनना।
छेनी० ना० स्त्री० छेवनी, छदनी।
छेम० ना० स्त्री० छेम, कुशल।
छेमङ्करी० ना० स्त्री० छेमङ्करी, भला चाहने वाला।
छेरी० ना० स्त्री० बकरी।
छेल०, छेलक० } ना० पु० बकरा।
छेव० ना० पु० घाव, फगार, चिराव।
छेवना० स० क्रि० छेदना, काटना, फाड़ना।
छेवनी० ना० स्त्री० काटनी, टांरी।
छेवा० ना० पु० पुस्तकोंमें ठहरावके स्थानका चिह्न।
छेत्र० ना० पु० क्षेत्र, खेत।
छेत्रफल० ना० पु० क्षेत्रफल।
छैया० ना० पु० छोकरा।
छैल०, छैलचिकनिया०, छैला० } गु० बांका, चिकनिया, अकड़ैत।
छोआ० ना० पु० जूसी।
छोकड़ा०, छोकरा० } ना० पु० लड़का।

छोछी० ना० स्त्री० आनी, गादा।
छोटा० गु० कनिष्ठ, लघु, अल्प।
छोटाई० ना० स्त्री० थोड़ाई, छोटापा।
छोड़ना० स० क्रि० त्यागना, क्षमाकरना।
छोड़ा०, छोड़ाव०, छोड़ावा० } ना० पु० छुटकारा, मुक्ति, उद्धार।
छोड़ावना० स० क्रि० छुटकारा कराना, उद्धार कराना।
छोड़ौती० ना० स्त्री० छुट्टा, छूट।
छोनी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, क्षोणि।
छोप० ना० पु० एकबार, रंगभरन, मिलन।
छोपना० स० क्रि० भैरदना, रंगदेना।
छोर० ना० पु० किनारा, बगर, सिरा।
छोरना० स० क्रि० छोड़ना।
छोरा० ना० पु० लड़का।
छोराछोरी० ना० पु० लड़का, लड़की।
छोरी० ना० स्त्री० लड़की, पुत्री।
छोलना० स० क्रि० छीलना।
छोलनी० ना० स्त्री० छीलनेका अस्त्र, खुर्पी।
छोह० ना० पु० स्नेह, प्रेम, दया।
छोहरा० ना० पु० लड़का।
छोहा० गु० स्नेही, प्रेमी, चाहक।
छौंकन० ना० पु० बघार।
छौंकना० स० क्रि० बघारना।
छौकन० ना० पु० [illegible]
छौकना० स० क्रि० [illegible]
छौना० ना० पु० जन्तुका बच्चा, बच्चा।
छौनी० ना० स्त्री० छावनी, छप्पर [illegible]
छौर० ना० पु० मुण्डन।
छौरक० ना० पु० नाई, नाऊ।
छौरकर्म० ना० पु० मुण्डना, बालमुण्डना, हजामत बनवाना।

(ज)

ज० अव्य० शब्द के अन्तमें संयुत होकर उत्पत्ति का बोधक होताहै।

जकड़ना० स० क्रि० कसना बांधना।
जकड़बन्द० ना० पु० अकड़बाई।
जग०ना०पु०जगत्,ससार,यश,गौरै जहा जासके।
जगचक्षु० ना० पु० सूर्य।
जगजगा० ना० पु० पुतलकी पक्षी।
जगजगाहट० ना० स्त्री० चमचमाहट।
जगजीवन० ना० पु० पानी, ईश्वर।
जगण० ना० पु० गणविशेष।
जगत्० ना० पु० ससार, दुनिया, टर।
जगता० गु० जा साता नहीं, अनींदा।
जगती० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, लोग।
जगत्प्राण० ना० पु० पवन, ईश्वर।
जगदम्बा० ना० स्त्री० आदिशक्ति,देवी, भवानी, जगत्की माता।
जगदादि० ना० पु० पृथ्वीका आरम्भ।
जगदाधार०ना०पु०शेष,दिग्गज,गौआदि,ईश्वर।
जगदीश० ना० पु० परमात्मा, विष्णु, शिव राजाधिराज।
जगधर० ना० पु० शेषजी।
जगना० अ० क्रि० नींदस उठना, चेतना।
जगन्नाथ० ना० पु० पुरुषोत्तम, उड़ेसा देश में श्रीकृष्णचन्द्रजी।
जगन्मित्र० गु० सबका दोस्त, सबका मित्र।
जगन्मित्रता० ना० स्त्री० सबकी मित्रतारखना।
जगमगा० गु० चमकीला।
जगमगाना० अ० क्रि० चमकना, झमकना।
जगयोनि० ना० पु० ब्रह्मा।
जगवल्लभा० ना० स्त्री० वरयाँ, पतुरिया।
जगह० ना० स्त्री० ठौर, धरती, समाई,गुजायश।
जगाजोति० ना० स्त्री० चमक, भड़क।
जगाना० स० क्रि० सोनेसे उठाना।
जगेसर० ना० पु० जगेश्वर।
जघन० ना० पु० उरस्थल।
जघन्य० गु० नीच।
जङ्गम० ना० पु० चलनेवाला, वेषधारी, गु० जो चलने की सामर्थ्य रखता है, वैरागी।
जगल० ना० पु० वन, अरण्य।
जंगला० ना० पु० रागिनीविशेष।
जंगली० ना० पु० बनैला, वनवासी।
जंघ० ना० पु० जांघ, रान।
जंघा० ना० स्त्री० जांघ, जानु।
जचना० अ० क्रि० अटकलाजाना, परीक्षाहोना।
जचाना० स० क्रि० अटकलकराना, कसवाना, परीक्षा कराना।
जचावट० ना० स्त्री० परीक्षा, जाच।
जजाल० ना० पु० उलझेड़ा, दु ख, क्लश।
जंजाली० गु० क्लशी, दु खदाता।
जट० ना० स्त्री० जटा।
जटना० स० क्रि० चिपटजाना, मुड़ना।
जटा० ना० स्त्री० बिगड़ेहुये बाल, भूधीरा।
जटाधारी० गु० जटा रखनेवाला।
जटामांसी० ना० स्त्री० छड़औषधि।
जटायु० ना० पु० गृध्रविशेष।
जटित० गु० जड़ाहुआ, जड़ाऊ।
जटिल० गु० पुराना, जटाधारी।
जटी० ना० पु० बरगद वृक्ष, शिवजी।
जठर० ना० पु० पेट, उदर।
जठरानल० ना० पु० पेटकी अग्नि।
जेठरा० गु० बड़ा, जेठा।
जठेरी० ना० स्त्री० बड़ी, बूढ़ी।
जड़० ना० स्त्री० मूल, गु० मूर्ख, स्थावर, निर्जीव, दुष्ट, निशाचर।
जड़न० ना० स्त्री० जड़ने का काम।
जड़ना० स० क्रि० लगाना, जोड़ना।
जड़पेड़० ना० स्त्री० समूचापेड़, अर्थात् सब।
जड़वट० ना० स्त्री० स्तम्भ।
जड़हन० ना० पु० धान जो कातिक अगहन में काटा जाता है।
जड़ाई० ना० स्त्री० जड़ने का काम वा जड़ने का पैसा।
जड़ाऊ० मणिप्रभृत्यादि से जड़ाभया, जड़ाहुआ।

जड़ाना० स० क्रि० जड़वाना, जाड़ा खाना।
जड़ाव० ना० पु० जड़नेका काम।
जड़ावर० ना० स्त्री० जाड़े के कपड़े।
जड़ित० गु० जटित, जड़ाहुआ।
जड़िनी० गु० स्त्री० जड़ स्त्री, दुष्टिनी।
जड़िया० ना० पु० जड़नेवाला, जौहरी, सुनार।
जड़ी० ना० स्त्री० औषधि, पौधेको जड़।
जत० ना० स्त्री० रीति, डौल।
जतन० ना० स्त्री० यत्न, तदबीर।
जतनी० ना० स्त्री० यत्नी, तदबीर करनेवाला।
जताना० स० क्रि० सुझाना, चिताना, बताना।
जतारा० ना० पु० वंश, घराना, पीढ़ी।
जती० ना० गु० यती, संन्यासी, शान्त।
जतु० ना० स्त्री० लाख।
जतुआ० ना० पु० लेहीका खूंटा।
जथा० अव्य० यथा, ना० पु० समूह।
जथार्थ० अव्य० यथार्थ, सच ठीक।
जद० अव्य० यदा, जब।
जदु० ना० पु० यदु।
जदुनाथ० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
जदुनायक०
जदुपति०
जदुबंशी० गु० यदुबंशी।
जद्यपि० अव्य० यद्यपि।
जन० ना० पु० मनुष्यलोग, नौकर।
जनक० ना० पु० पिता, श्रीसीताजी के पिता।
जनकपुर० ना० पु० पिताका गांव या नगर, तिरहुत नगर।
जनता० ना० स्त्री० लोग या लोगोंका समूह, मनुष्यता, आदमियत।
जनन० ना० पु० जन्म, उत्पत्ति।
जनना० अ० क्रि० जन्महोना।
जननी० ना० स्त्री० माता, महतारी।
जनरव० ना० पु० लोगोंका शब्द।
जनलोक० ना० पु० लोक विशेष, जिसमें साधु लोग मरने के पीछे वास करते हैं।
जनयित्री० ना० स्त्री० माता, जननी।
जनवासा० ना० पु० जहां बरात ठहराती है।
जनश्रुति० ना० स्त्री० सन्देशा, समाचार।
जनहाई० } अव्य० मनुष्य, मनुष्यसहित, प्रत्येक, हरएक।
जनहार०
जना० ना० पु० लोग, मनुष्य, गु० पुत्र उत्पन्न हुआ, भया।
जनाई० ना० स्त्री० जो स्त्री लड़का जन्माती है, दिखाई।
जनाजात० अव्य० जनहाई।
जनाती० गु० कन्याके ओरके बराती, बराती लोग।
जनाना० स० क्रि० उत्पन्न कराना, जनाना, चिताना, दिखाना।
जनार्दन० ना० पु० श्रीकृष्णजी।
जनाव० ना० पु० जताव, लखाव।
जनिका० ना० पु० द्व्यर्थ जिसका दोप्रकार अर्थ होवे।
जनित० गु० उत्पन्न भया, उपजा।
जनी० ना० स्त्री० दासी, बहू, ब्यानी।
जनु० ना० पु० जन्म, उत्पत्ति, अव्य० मानों।
जनक० अव्य० जानों।
जनेऊ० ना० पु० यज्ञोपवीत।
जनेत० ना० पु० बरात।
जनेवा० ना० स्त्री० तृणविशेष, कांयासोड़ी।
जनेश० ना० पु० राजा।
जनो० ना० पु० जनेऊ।
जन्ता० ना० पु० तारखींचने का यन्त्र।
जन्ताना० स० क्रि० दबाना, निचोड़ना।
जन्तार० ना० पु० यन्त्र।
जन्तु० ना० पु० जीवधारी, क्षुद्रजीव।
जन्तुक० ना० पु० हींग।
जन्तुहनन० ना० पु० विड़ंग औषधि।
जन्म० ना० पु० उत्पत्ति, पैदायश।
जन्मदाता० ना० पु० पिता।
जन्मदिन० ना० पु० वर्षबन्धन, वर्षगांठ।
जन्मना० अ० क्रि० उपजना, पैदाहोना।
जन्मपत्री० ना० स्त्री० जन्मकुण्डली, लग्नकुण्डली, जायचह।

जन्मभूमि० ना० स्त्री० } उत्पत्तिका घर वा
जन्मस्थान० ना० पु० } स्थान।
जन्माना० स० क्रि० उपजाना, पैदाकरना।
जन्मान्तर० ना० पु० और जन्म।
जन्मान्तरीय० गु० अगले जन्मका उपार्जित।
जन्मान्ध० गु० जन्मका अन्धा।
जन्मोत्सव० ना० पु० जन्महान का आनन्द, कृष्णजन्मोत्सव।
जन्यजनकभाव० ना० पु० उत्पन्न कियाहुआ और उत्पन्न कीहुई वस्तु इनका सम्बन्ध।
जप० ना० पु० पाठ मन्त्रादिका उच्चारण।
जपन० ना० पु० मन्त्रउच्चारण पाठ।
जपना० स० क्रि० मन्त्रादिका उच्चारण।
जपन्ता० गु० जापक।
जपमाला० ना० स्त्री० जपनकी माला।
जपा० ना० पु० हुड़हुड़ का फूल।
जपी० गु० जापक
जपीतपी० ना० पु० अचक भजनीक।
जब० अव्य० यदा।
जबड़ा० ना० पु० जबड़ा।
जबरा० गु० अकड़, अनाड़ी।
जबद्दिवा० गु० कुरूप।
जभा० ना० पु० जबड़ा।
जम० ना० पु० यम मृत्युगण।
जमअनुजा० ना० स्त्री० यमुनाजा।
जमक० ना० पु० यमक पहिला शब्दछन्दका।
जमकना० अ० क्रि० बाना निमना ठहरना।
जमकाना० स० क्रि० बनाना ठहराना बेगना।
जमघट० ना० पु० मण्डला भाड़।
जमजम० अव्य० निरन्तर मन।
जमदग्नि० ना० पु० परशुराम के पिता।
जमदूत० ना० पु० यमदूत।
जमघर० ना० पु० कटार।
जमना० अ० क्रि० उगना, ठहरना, जमजाना।
जमराज० ना० पु० यमराज।
जल० गु० ना० २।
जमहाई० ना० स्त्री० आलस्यवश होकर मुंह वा पसारना।
जमहाना० अ० क्रि० जमहाई लेना।
जमाई० ना० स्त्री० जामाता, दामाद।
जमाना० स० क्रि० उगाना, बांधना, इकट्ठा करना, बगरना, बैठाना।
जमालगोटा० ना० पु० औषधि विशेष।
जमाव० ना० पु० भीड़, बहुतायत
जमावट० ना० स्त्री० बँधावट।
जमी० ना० स्त्री० रात यमी यमुनाजी।
जमोगना० स० क्रि० सहेजाना।
जमोघ० } ना० पु० जमविशेष जो लड़कोंको
जमोघा० } लगता है।
जम्ना० अ० क्रि० बढ़ना, पनपना।
जम्बाल० ना० पु० सिवाल, बालू।
जम्बीर० } ना० पु० नींबू।
जम्बारक० }
जम्बु० ना० पु० गीदड़, शृगाल यमुनावृक्ष।
जम्बुक० ना० पु० गीदड़ शृगाल।
जम्बुमाली० ना० पु० प्रहस्तका पुत्र राक्षसविशेष।
जम्बूद्वीप० ना० पु० पृथ्वी के सात द्वीपों में एकका नाम।
जम्भभेदी० ना० गु० इन्द्र।
जम्भल० } ना० पु० जम्भारी नींबू।
जम्भार० }
जय० ना० स्त्री० पराभव करना, उन्नति, गु० जिता जयति आशिष।
जयजयकार० ना० पु० पराभव होना, शत्रुका बनाई का वा जीतिका बाधक।
जयजयवन्ती० ना० स्त्री० रागनी विशेष।
जयढाक० ना० पु० ढालविशेष।
जयत० ना० पु० वृक्षविशेष।
जयान० क्रि० ज निहो।
जयनगर० ना० पु० राजपूताने का राजधानी।
जयन्त० ना० पु० इन्द्रका पुत्र।
जयन्ती० ना० स्त्री० दुर्गादेवी, वृक्षविशेष।

जयन्तीपुर॰ ना॰ पु॰ शिलहट से दश कोसपर का देश जिसको जयन्ती कहते हैं।

जयवेर॰ गु॰ जितने बार।

जयमान॰ } गु॰ जयकरनेहारा, जीतनेवाला।
जयवन्त॰ }
जयवान्॰ }

जयवती॰ ना॰ स्त्री॰ अग्नि की जिह्वाविशेष गु॰ जीतनेहारी।

जयः॰ ना॰ स्त्री॰ हर्र, विष्णुक्रान्ता, भांग, देवीविशेष।

जयी॰ गु॰ जय करनेहारा।

जर॰ ना॰ पु॰ जड़ ज्वर विशेष।

जरण॰ ना॰ पु॰ जीरा सुफेद, जलन।

जरन॰ अ॰ क्रि॰ जलन।

जरना॰ अ॰ क्रि॰ जलना।

जरा॰ ना॰ स्त्री॰ बुढ़ापा, वृद्धावस्था।

जरांस॰ ना॰ पु॰ ज्वरांश।

जराना॰ स॰ क्रि॰ जलाना।

जरायजरी॰ गु॰ स्त्री॰ जड़ाऊ।

जरायु॰ ना॰ स्त्री॰ कोष, पेट, कुक्षि।

जरायुज॰ ना॰ पु॰ जो कोष मे उत्पन्नहो, जो झिल्ली मे उत्पन्नहो अर्थात् मनुष्यादि।

जरासन्ध॰ ना॰ पु॰ मगधका राजा जरानाम राक्षसी मे जोड़ागया।

जर्जर॰ गु॰ निर्बल, जांजर, जीर्ण।

जर्झरी॰ ना॰ पु॰ लहसुन।

जल॰ ना॰ पु॰ पानी।

जलआलि॰ ना॰ पु॰ पानीका भंवर।

जलकन्द॰ ना॰ पु॰ सिंघाड़ा।

जलकामा॰ ना॰ स्त्री॰ ऊंधाहोली।

जलक्रीड़ा॰ ना॰ स्त्री॰ पानी में का खेल।

जलकुक्कड़॰ } ना॰ पु॰ पनडुब्बी, मु॰
जलकुक्कुट॰ } र्गावी।

जलखानि॰ ना॰ पु॰ मेघ, समुद्र, नदी।

जलगोजक॰ ना॰ पु॰ चिलगोजा।

जलचर॰ गु॰ जलजन्तु, पनिहा, जल के चरनेहारे जन्तु।

जलचरेश॰ ना॰ पु॰ मगर, मच्छ, ग्राह।

जलज॰ ना॰ पु॰ कमल, गु॰ जो कुछजलमेंउपजे

जलजन्तु॰ ना॰ पु॰ जल में रहनेहारे जीव।

जलजन्त्र॰ ना॰ पु॰ बम्बा, फव्वारह, जलयन्त्र।

जलजला॰ गु॰ महाक्रोधी।

जलजलाना॰ अ॰ क्रि॰ आग हो जाना, झुंझलाना।

जलजलाहट॰ ना॰ स्त्री॰ कोप, क्रोध, झुंझलाहट।

जलजात॰ ना॰ पु॰ कमलादि।

जलजान॰ ना॰ पु॰ नाव, जहाज।

जलमधु॰ ना॰ स्त्री॰ मुलहटी।

जलतरंग ना॰ पु॰ बाजाविशेष जलकीलहरि।

जलतरंगी॰ ना॰ स्त्री॰ बाजाविशेषबजानेवाला।

जलतरण॰ ना॰ पु॰ तैरना, नाव या जहाज चलाने की क्रिया।

जलथल॰ ना॰ पु॰ जल और स्थल।

जलद॰ ना॰ पु॰ मेघ।

जलधर॰ ना॰ पु॰ मेघ, समुद्र।

जलधार॰ } ना॰ स्त्री॰ पानी की धारा।
जलधारा॰ }

जलधि॰ ना॰ पु॰ समुद्र।

जलन॰ ना॰ पु॰ ज्वलन, ताप, क्रोध।

जलना॰ अ॰ क्रि॰ बरना, दहकना।

जलनिधि॰ ना॰ पु॰ समुद्र।

जलनीम॰ ना॰ पु॰ औषधि विशेष।

जलन्धर॰ ना॰ पु॰ रोगविशेष जिसमें रोगी पानी बहुत पीता है, राजा विशेष।

जलपाई॰ ना॰ स्त्री॰ वृक्षविशेष।

जलपान॰ ना॰ पु॰ पानी पीना, कलेवा।

जलपुट॰ ना॰ पु॰ पानी का बर्तन।

जलबल॰ गु॰ जो जलने से नाशहोगया ना॰ पु॰ पान, केवल।

जलमय॰ ना॰ पु॰ जलार्णव, प्रलय।

जलमानुष॰ ना॰ पु॰ मनुष्यरूपी जलजन्तु।

जलमार॰ ना॰ पु॰ तीर, नहर।

जलमाल॰ ना॰ स्त्री॰ नदी।

जलराशि॰ ना॰ पु॰ समुद्र।

जलरुह० ना० पु० कमल।
जलवैया० ना० पु० जलनिहङ्ग।
जलशायी० ना० पु० विष्णु, नारायण।
जलशयनी० ना० स्त्री० जल में सोना, जल में रहना, तपस्याविशेष मत्स्य।
जलसुत० ना० पु० नहरुआ।
जला० ना० स्त्री० झील।
जलाकार० ना० पु० जलका आकार।
जलाना० स० क्रि० बालना, दाहना।
जलचला०, जलाभुना० } गु० चिढ़िचिढ़ा, क्रोधी।
जलार्णव० ना० जल प्रलय, जलका समुद्र।
जलावन० ना० पु० ईंधन।
जलाशय०, जलाश्रम० } ना० पु० तालाव, पोखर।
जलाश्रय० ना० पु० जल के भरोसे।
जलिया० ना० पु० कहार, धीमर, मछुआ।
जलेबी० ना० स्त्री० मिठाई विशेष।
जलेश० ना० पु० वरुणदेव, समुद्र।
जलोद० ना० पु० क्षीरोद, मेघ।
जलोदर० ना० पु० जलधर।
जलौका० ना० स्त्री० जोंक।
जल्पना० अ० क्रि० बकना, निज बड़ाई करना। अस्वार्थ बात कहना।
जल्पाक० गु० बकवादी, निजबड़ाई करनेहारा।
जव० ना० पु० यव, जौ, जल्दी।
जवन० ना० पु० यवन, घोड़ा।
जवरया० ना० स्त्री० हर्र।
जवनष्टे० ना० पु० लहसुन।
जवा० ना० पु० अंगुली की गांठि में चिह्न पुष्प विशेष।
जवाहा० ना० स्त्री० अजवायन्।
जवाद० ना० स्त्री० केसर।
जवाधिक० ना० पु० घोड़ा।
जवानी० ना० स्त्री० अजवायन, खुरासानी।
जवानिक०, जवासाहा० } ना० पु० अजवाइन्।
जवालारु० ना० पु० औषधि, तृणविशेष।
जवासा० ना० पु० काष्ठौषधिविशेष।
जस० ना० पु० यश।
जसत०, जसता० } ना० पु० धातु विशेष।
जसयत०, जसयति०, जसवन्त०, जसस्वी०, जसी० } गु० कीर्तिमान्, प्रतिष्ठित, यशी, यशस्वी।
जसुमति०, जसोदा०, जसोमति० } ना० स्त्री० नन्दरानी, यशोदा।
जहर्पमी० ना० स्त्री० कौंच बीज।
जह्र० अव्य० जहां, यत्र।
जह्नु० ना० पु० मुनि विशेष।
जह्नुसुता० ना० स्त्री० गंगाजी।
जहां० अव्य० जत्र, यत्र, जिसस्थान में जिधर।
जहीं० अव्य० जिसही जगह।
जा० सर्व० जिस।
जाई० गु० जनी, ना० स्त्री० बेटी।
जांगर० ना० पु० पिण्डली समेत जांघ, घुटना।
जांघ० ना० स्त्री० जंघा, जानु।
जांघिया० ना० पु० कछना।
जांच ना० स्त्री० अटकल, परख, कस।
जांचना० स० क्रि० कसना, परखना, देखना, टटराना, ठीककरना, परीक्षाकरना।
जांता० ना० पु० पाषाणका यन्त्र जिसमें गेहूं पीसते हैं, चक्की।
जाकड़० ना० पु० जाकर, बधक, रहना।
जाकर० ना० पु० जिसहाथ में सर्व जिसका।
जाग० ना० पु० निद्राका त्याग, यज्ञ।
जागत० ना० स्त्री० चौकसाई।
जागतीज्योति० गु० अद्भुत पराक्रमी।
जागना० स० क्रि० नींदसे उठना, चेतना।

जागरण० ना० पु० नींदत्याग, रातिको व्रतादि में जागना।
जागल० ना० पु० श्याम, अगर।
जागा० ना० पु० जातिविशेष।
जागू० ना० पु० जागने हारा।
जाग्रत० ना० स्त्री० स्वप्न और सुषुप्ति से भिन्न अवस्था।
जांगली० ना० पु० विधारा।
जाचक० ना० पु० याचक, मांगनहारा।
जाचना० स० क्रि० मांगना चाहना।
जाचा० गु० मांगा, चाहा।
जाच्यमान० गु० मांगा वा चाहागया, अधमदाम।
जाजक० ना० पु० झाझ वा ढालकबजानहारा।
जाजा० ना० स्त्री० कलौजी।
जाजामन्ती० ना० स्त्री० जयजयवन्ती।
जाट० ना० पु० राजपूतों में जातिविशेष।
जाठ० ना० स्त्री० काहूकी धुरी।
जाड़० ना० स्त्री० मसूढ़ा।
जाडा० ना० पु० शीत, ठंढ, शीतकाल।
जार्ती० ना० स्त्री० दांतोंकी पाति।
जाड्य० ना० पु० जड़ता, शीतलता, मूढ़ता।
जात० ना० स्त्री० जाति, यात्रा, मेला, गुर्दजना।
जातक० गु० पुत्र, बच्चा।
जातकर्म० ना० पु० जन्म संस्कारविशेष यथा छठी आदि।
जातना० ना० स्त्री० पीडा, दुःख दण्ड, वदना।
जातपांत० ना० स्त्री० पीढ़ी, वंशावली।
जातरूप० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
जातवेद० ना० पु० अग्निदेव।
जाति० ना० स्त्री० वर्ण, कौम, एक रूपसे बहुत से पिण्डों में समानधर्म्म, यथा पशुत्व, मनुष्यत्व, उत्पत्ति।
जातिकोष० ना० स्त्री० जावित्री।
जातिपत्री० ना० स्त्री० जावित्री बिरादरी की चिट्ठी।
जातिभ्रष्ट० गु० पापादि के कारण जो जाति से निकालागया वा निकलगया।
जातिवाचक० गु० जिस संज्ञा से जातिमात्रका बोधहोय यथा पशु, पक्षी।
जातिसृज० ना० पु० जायफल।
जाती० ना० स्त्री० मालती, जावित्री, पुष्पविशेष।
जात्यायत० गु० जिस क्षेत्रकी आमनेसामनकी भुजा तुल्य और चारों कोण सम हैं।
जात्यत्रिभुज० ना० पु० त्रिकोण जिसका एक कोण समकोण हो।
जात्रा० ना० स्त्री० यात्रा, चलना।
जात्री० ना० पु० यात्री, जानेवाला।
जान० ना० पु० विमान, सवारी, वाहनादि ढीठ, बुद्द, ज्ञान, सव गु० ज्ञानी।
जानकी० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।
जानपहिचान० ना० पु० चिन्हार, मुलाकात।
जाना० अ० क्रि० चलना।
जानु० ना० पु० घुटना, गांठि।
जानो० अव्य० समझो, अ० क्रि० जाना।
जानना० स० क्रि० पहिचानना, समझना।
जाप० ना० पु० जप, पाठ।
जापक० } गु० जप करनेहारा।
जापी० }
जाव० ना० पु० दाढ़ी।
जावी० ना० स्त्री० दाढ़ी डाढ़ी।
जाम० ना० पु० पहर।
जामदग्न्य० ना० पु० परशुराम, जमदग्निकपुत्र।
जामन० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष, जाइन, जमावा।
जामवन्त० ना० पु० रीछोंका प्रधानविशेष।
जामवन्ती० ना० स्त्री० कृष्णचन्द्रकी स्त्री।
जामा० ना० पु० एकतिक पहिरनेकावस्त्र विशेष।
जामाता० } ना० पु० बेटी को पति।
जामातु० }
जामिनी० ना० स्त्री० रात्रि, यमिनी, जमन देशकी भाषा वा वस्तु।

जायपत्री० ना० स्त्री० जावित्री ।
जायफल० ना० पु० फलविशेष ।
जाया० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री, भार्या, गु० जनी ।
जार० ना० पु० उपपति, यार, दूसरापति ।
जारज० } ना० पु० त्रिसमा, सकरवर्ण ।
जारजात० } उपपतिजात, यारकामाया ।
जारन० ना० पु० जलावन ।
जारना० स० क्रि० जलाना, फूकना, दाहना ।
जारल० ना० पु० काष्ठविशेष ।
जाल० ना० पु० जिसम मछलीआदि पकडते हैं फन्दा, माया, पाखण्ड, भ्रम, फांसा ।
जालगि० अव्य० जिस लिये, सर्व० जिसके लिये ।
जालरन्ध्र० ना० पु० झरोखा, जाली वा
जाल० ना० पु० जिसको मकडी बनाता है, घग, मोतियाबिन्दु ।
जालिका० ना० स्त्री० झर्झरी ।
जालिनी ना० स्त्री० तुरइया, दवदाला ।
जालिया० ना० पु० छलिया, जालसाज
जाल० ना० स्त्री० बहुत छिद्रों की खिडकी वा कपडा आदि ।
जालौन० ना० पु० नन्दलालपुरका नगरविशेष ।
जावक० ना० पु० आलता, महावर, महुर ।
जावदा० ना० पु० स्त्री० लौंग ।
जावनी० ना० स्त्री० अजवायन
जारा० ना० पु० उपग्रामविशेष ।
जाया० ना० पु० चातुर जो एकहीसाथ उपजते ।
जाबालि० ना० पु० मुनिविशेष ।
जावित्री० ना० स्त्री० वृक्षविशेष की छाल ।
जासु० सर्व० जिसम, जिसको ।
जाह्नवी० ना० स्त्री० गङ्गाजी
जाहि० सर्व० जिसको ।
जाही० ना० स्त्री० जुही जाती ।
झिगझिगिया० गु० चापलूसी करनेवाला ।
झिगझिगी० ना० स्त्री० लाग, सपट, चापलूसी ।
झिगना० ना० पु० वृक्षविशेष ।
जिगीषा० ना० स्त्री० इच्छा, जयकी इच्छा ।
जिगणी० ना० पु० जिगना ।
जिजिया० ना० स्त्री० दस्तबहर, चूची ।
जिठनिया० } ना० स्त्री० जेठकी स्त्री ।
जिठानी० }
जितना० ना० पु० } परिमाण वा अवधि वा
जितनी० स्त्री० } सख्या का बोधक ।
जितयोनि० ना० पु० हरिण ।
जिता० } गु० परिमाण वा अवधि वा सख्या
जितक० } बोधक ।
जितेन्द्रिय० } ना० पु० जिसने इन्द्रियों को
जितेन्द्री० } वश किया है ।
जिधर० अव्य० यत्र जहां ।
जिन० ना० पु० क्षपणकदेव ।
जिभारा० गु० जीभी जो कटार बात कहता है ।
जिम० अव्य० जिमि, यथा, जस ।
जिमाना० स० क्रि० खिलाना ।
जिमि० अव्य० यथा० जैस ।
जिय० } ना० पु० आत्मा, प्राण, जान ।
जियरा० }
जियाना० स० क्रि० जिलाना प्राणदान देना ।
जियावना० स० क्रि० जियाना ।
जियौरा० गु० स्त्री० शूरता, शूर, योद्धा ।
जिलाना० स०क्रि० प्राणदान देना जीना करना ।
जिवाना० स० क्रि० जिमाना जिलाना ।
जिष्णु० ना० पु० अर्जुन, इन्द्र ।
जिस० सर्व० सम्बन्ध में आता है ।
जिहि० सर्व० जिस ।
जिह्म० ना० पु० कपट, मृदता ।
जिह्मकर० गु० कपटी, छली ।
जिह्मग० ना० पु० बाण, शर ।
जिह्मग० ना० पु० सर्प, साप ।
जिह्मता० ना० स्त्री० अनिष्ट बातों की शक्ति ।

जेह्वा० ना० स्त्री० रसना, जीभ।
जेह्वाग्र० ना० पु० मुखाग्र, जबानी।
जेज्ञासा० ना० स्त्री० जानने की इच्छा।
जेज्ञासी० } गु० अभिलाषी, जानने की इच्छा
जेज्ञासु० } रखनेहारा।
जेज्ञास्य० गु० जानने के योग्य है।
जी० ना० पु० जीव, प्राण, मर्यादा का सूचक।
जीका० ना० स्त्री० जीविका।
जीगुराना० स० क्रि० सिकोड़ना।
जीत० ना० स्त्री० जय, फतह।
जीतना० स० क्रि० जय करना, हराना।
जीतव० ना० पु० आत्मा, हिया, जिन्दगी।
जीतवन्त० } ना० पु० जिसकी जय हुई,
जीतवैया० } जयमान।
जीता० गु० प्राणधारी अर्थात् मरानहीं।
जीति० ना० स्त्री० जय, जीत।
जीतिया० ना० स्त्री० लड़कों के जीने के लिये स्त्रियों का व्रतविशेष।
जीतू० ना० पु० जयवन्त, जीतवैया।
जीना० अ० क्रि० जीता रहना।
जीभ० ना० स्त्री० जिह्वा, रसना, जबान।
जीभारा० गु० गप्पी, बकी।
जीभी० ना० स्त्री० जीभ का मल उतारने की वस्तु।
जीमना० स० क्रि० खाना, भोजन करना।
जीमार० गु० जो हनने के योग्य है, निज इच्छा मारनेहारा।
जीमूत० ना० पु० मेघ, देवदाली।
जीरक० ना० पु० जीरा सफेद।
जीरन० गु० जीर्ण, पुराना।
जीरा० ना० पु० ओषधि विशेष का बीज।
जीर्ण० गु० बुड्ढा, पुराना, रद्दा, जाजर।
जील० ना० स्त्री० गाने में अति नीचस्वर।
जीव० ना० पु० प्राण, शरीरादि का धारक, बृहस्पति, चन्द्रमा सदाशिवी।

जीवखानि० ना० पु० ईश्वर, अनादि पुरुष।
जीवगर० } गु० मर्द, योद्धा,
जीवट० } दृढ़ता।
जीवड़ा० ना० पु० प्राण, प्रियतम।
जीवत० गु० जीते।
जीवदान० ना० पु० रक्षाकरना, प्राण बचाना।
जीवधारी० ना० पु० प्राणी, हैवान्।
जीवन० ना० पु० जीविका, जन्म से मृत्युतक का काल, जल।
जीवनमूल० ना० स्त्री० जीविका मूल, हयात की जड़।
जीवना० अ० क्रि० जीतारहना।
जीवनि० ना० स्त्री० } सञ्जी-
जीवनिया० ना० स्त्री० } वनबूटी।
जीवन्त० गु० जीता।
जीवन्ती० ना० स्त्री० सञ्जीवनबूटी, गुरुच।
जीवमज्रा० } ना० स्त्री० सञ्जीवन
जीववर्द्धिनी० } बूटी।
जीवा० ना० स्त्री० जीवन्ती, जो चापके एकाममें द्वितीयाभनक।
जीविका० ना० स्त्री० वृत्ति, निर्वाह का उपाय
जीह० ना० स्त्री० जीभ, रसना।
जीहारना० अ० क्रि० निराश होना, डर में दब रहना।
जुआ० ना० पु० छलकर्म, क्रीडाविशेष, माची।
जुआरि० ना० स्त्री० अन्न विशेष।
जुआरी० ना० पु० द्यूतकर्मी, छलकारी, दुष्ट।
जुग० ना० पु० युग।
जुगति० ना० स्त्री० युक्ति, श्लेषद्व्यर्थ।
जुगती० गु० छली, चतुर, टटोल, द्व्यार्थ बोलनेहारा, उपायी।
जुगनी० ना० स्त्री० } मक्खी जो रातको चमके-
जुगनू० ना० पु० } ती है, गलेका भूषण विशेष।
जुगवना० स० क्रि० रक्षाकरना, बचाना।
जुगवैया० ना० पु० जुगवनेहारा।

जुगाना० स० क्रि० यत्न करना, किसी के उपकार हेतु उपकार करना।
जुगालना० स० क्रि० पागुराना, पागुरकरना।
जुगाली० ना० स्त्री० पागुर।
जुगुप्सा० ना० स्त्री० निंदा, कुत्सा।
जुगुप्सित० गु० निंदित, कुत्सित।
जुझावट० ना० पु० युद्ध वा समरभार।
जुझावना० स० क्रि० युद्धमें मरवाडालना।
जुटना० अ० क्रि० भिड़ना, मिलना, सटना।
जुटाना० स० क्रि० भिड़ाना, मिलाना।
जुटैया० ना० पु० भिड़ैया, लड़ाका।
जुठारना० स० क्रि० जूठा करना।
जुड़ना० अ० क्रि० मिलजाना, सग्जिाना।
जुड़ाई० ना० स्त्री० जोड़ने का पैसा, जोड़ने का काम और जुगाम, श्लेष्मा, ठर्ढ।
जुड़ाना० स० क्रि० मिलाना, मिलवाना, अ० क्रि० ठढाना, सुस्ताना, दम लेना।
जुड़िया० } ना० पु० दो लड़के जो एक
जुड़िहा० } साथ उपजें।
जुताई० ना० स्त्री० खेत जोतने का काम वा जोतने का पैसा।
जुताना० स० क्रि० हल चला के खेत दुरुस्त कराना।
जुतियाना० स० क्रि० जूतों से मारना।
जुद्ध० ना० पु० युद्ध।
जुधिष्ठिर० ना० पु० युधिष्ठिर।
जुन्हरी० ना० स्त्री० जुआर।
जुन्हाई० ना० पु० चन्द्रमा, स्त्री० चांदनी।
जुन्हार० ना० स्त्री० अन्न विशेष जुआर।
जुन्हैया० ना० स्त्री० चांदनी, चन्द्रमा।
जुरादेना० स० क्रि० पाना।
जुराना० अ० क्रि० धीरज होना, स० क्रि० एकट्ठा होना, पाना।
जुरावना० गु० जो पाने के योग्यहै, मिलनहार।
जुरुआ० ना० स्त्री० जोरू, पत्नी।
जुरना० अ० क्रि० मिलना, प्राप्तहोना, सटना, भिड़ना, एकट्ठा होना।
जुल० ना० पु० छल।
जुवती० ना० स्त्री० युवती, जवान औरत।
जुवराज० ना० पु० युवराज, वलीअहद।
जुवा० गु० युवा० ना० पु० जूए, जुआ।
जुवार० ना० पु० अन्न विशेष।
जुवारी० ना० पु० जुआरी, जूपी।
जुहार० ना० पु० सलाम, प्रणाम।
जू० अव्य० जी।
जूआ० ना० पु० गाड़ी वा हलका काठ जिसमें बैल मचते हैं, मार्चा, धून, जूप।
जूआट० ना० पु० जूआ।
जूआरी० ना० पु० जुआ खेलने में चतुर।
जूं० ना० स्त्री० चीलड़।
जूझ० ना० पु० युद्ध, समर।
जूझना० अ० क्रि० लड़ना, लड़ाई में कट अर्थात् लड़मरना।
जूट० ना० पु० झुण्ड।
जूठ० ना० पु० खायाभया।
जूठन० ना० स्त्री० भोजन के पीछे शेष रहता
जूठा० गु० जूठ, खायाहुआ।
जूड़० गु० ठढा, शीतल, ना० पु० शीत।
जूड़ा० ना० पु० ठढा, शीत, शिरके पाछे गूंथे दियेहुये बाल।
जूड़ी० ना० स्त्री० अन्तरिया, जाड़ का रोग।
जूता० } पनहीं, चमड़े की पादुका।
जूती० }
जून० ना० पु० समय, काल, वक्त।
जूना० ना० पु० तृणकी, रस्सी, ऐंठीहुई घास
जूप० ना० पु० जूआ।
जूपी० गु० जुआरी।
जूरा० ना० पु० बालों की गांठि, चोटी।
जूरी० ना० स्त्री० समूह, जुरी।
जूस० ना० पु० परेह, रोगी का पथ्य,
जूह० ना० पु० समूह, जूथा।

ही० ना० स्त्री० पुष्प का वृक्ष विशेष।
० सर्व० जो, सब।
ट० ना० स्त्री० देर।
ठ० ना० पु० पतिका बड़ाभाई, ज्येष्ठ।
ठरा० गु० पहिलौठा, पतिका बड़ाभाई।
ठा० गु० पहिलौठा, बड़ा, कुसुम का पहिलारंग।
ठानी० ना० स्त्री० जेठकी स्त्री।
ठी० गु० बड़ी।
जेठीमधु० ना० पु० मुलहठी।
जेठौत० ना० पु० जेठका पुत्र।
जेता० } गु० जितना।
जेतिक० }
जेव० ना० पु० खलीता, पाकट, फारसी शब्द है।
जेयमान० गु० जीतनेवाला, जयमान।
जेर० ना० पु० खेरी।
जेवड़ा० ना० पु० रस्सा, डोर।
जेवना० स० क्रि० खाना, भोजन करना।
जेवनार० ना० स्त्री० खाना, भोजन, यज्ञ।
जेवरी० ना० स्त्री० रस्सी, डोरि।
जेहर० ना० पु० स्त्रियों का भूषण विशेष।
जैत० ना० पु० वृक्ष विशेष, रागिनीविशेष।
जैन० ना० पु० नास्तिकों का मत विशेष।
जैनी० गु० जैन मतवाला, सरावक, सरौगी।
जैमाल० ना० स्त्री० जयमाला, जीति की माला।
जैमिनि० ना० पु० मुनि विशेष।
जैमिनी० गु० ब्रह्मवादी।
जैसा० अव्य० यथा।
जैहैं० अ० क्रि० जायँगे।
जो० सर्व० यह शब्द सम्बन्ध का बोधक है अव्य० यथा, यदि।
जोआरभाटा० ना० पु० समुद्र के जलका च-ढाव उतार।
जोइ० ना० स्त्री० जोरू, दुलहन।
जो० अव्य० जो, यदि, जैसा, ज्यों।

जोंक० ना० स्त्री० जलौका, रक्तपा, जलजंतु।
जोंकर० अव्य० जिसप्रकार।
जोंहि० अव्य० जिससमय।
जोख० ना० स्त्री० तौल।
जोखना० स० क्रि० तौलना।
जोखिम० ना० स्त्री० चिन्ता, शंका, धर्श।
जोखिमी० ना० पु० जोखिम उठानेहारा।
जोखों० ना० स्त्री० जोखिम।
जोग० ना० पु० योग।
जोगमाया० ना० स्त्री० मायारूपीशक्ति जो यो-गियों में है जिसकरके वे कहते हैं कि हम अपना स्वरूप अपने वश रखें।
जोगवत० क्रि० परखत, राखत, रखत।
जोगा० गु० योग्य।
जोगाभ्यास० ना० पु० जोग का अभ्यास।
जोगिन० ना० स्त्री० जोगन, जोगी की स्त्री।
जोगिनी० ना० स्त्री० देवी की सहचरी।
जोगिया० ना० पु० जोगी० गु० रंग विशेष ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
जोगी० ना० पु० योगी, शान्त।
जोगेश्वर० ना० पु० योगेश्वर, तपस्वी, पुजारी विशेष श्री महादेवजी, श्रीविष्णुनारायण।
जोग्य० गु० योग्य, उत्तम, अच्छा।
जोजन० ना० पु० योजन, चारकोस।
जोट० ना० पु० साथ, जोड़ी गु० सम।
जोटा० ना० पु० जोड़ा।
जोड़० ना० पु० मेल, गांठ, येगली, मीज़ान।
जोड़ती० ना० स्त्री० लेखा, गिनती।
जोड़न० ना० पु० सोहागा, सांटन, जामन।
जोड़ना० स० क्रि० मिलाना, एकट्ठा करना, ल-गाना, संकलन करना, धन बटोरना, मनाना, गांठना।
जोड़ा० ना० पु० युग्म, दूसरा, जूता, धोती, एक बार पहिनने के कपड़े।
जोड़ाई० ना० स्त्री० जोड़ने का काम या पैसा

जोड़ी० ना० स्त्री० युग्म, दूसरा।
जोत० ना० स्त्री० उजाला, प्रकाश, ज्योति, हल प्रवाह, रिरए, दम, दृष्टि।
जोतना० स० क्रि० नाधना जुये में लगाना, हलाई करना, खेत बनाना।
जोतमान्० गु० ज्योतिष्मान, चमकदार।
जोतार० ना० पु० हलवाहा, किसान।
जोति० ना० स्त्री० जोत, प्रकाश, तारा, मुनि, आलिआदि की ईश्वर।
जोतिष० ना० पु० ज्योतिष, नक्षत्र।
जोतिषी० गु० ज्योतिषी, नजूमी।
जोति स्वरूप० गु० तजस्वी एक नाम भगवान् का है।
जोती० ना० स्त्री० तराजू के पल्ले की रस्सी, स झाऊ की रस्सी।
जोत्स्ना० ना० स्त्री० चन्द्रिका, चन्द्रकला।
जोत्स्नी० ना० स्त्री० रात्रि, रैन, निशा।
जोधन० ना० पु० लड़ाई, समर।
जोधा० ना० पु० योद्धा।
जोन०, जोनि० } ना० स्त्री० योनि।
जोन्ह० ना० पु० चन्द्रमा, चान्दनी।
जोबन० ना० पु० यौवन, छाती स्तन।
जोबनवती० गु० यौवनवती।
जोबनमा०, जोबना० } ना० पु० जोबन, यौवन।
जोय० ना० स्त्री० पत्नी, भार्या, जोरू।
जायसी० गु० ज्योतिषी।
जोरू० ना० स्त्री० पत्नी, भार्या बीबी।
जोला० ना० पु० दल, धोखा।
जोवत० क्रि० चाहत, देखत।
जोवना० स० क्रि० देखना ताकना।
जोसी० ना० पु० ज्योतिषी, जाति विशेष।
जोहना० स० क्रि० बाट देखना, ढूंढ़ना।
जौ० ना० पु० अन्नविशेष, यव, अव्य० जब, यदि।
जौतुक० ना० पु० यौतुक, दायजा।
जौन० सर्व० जो।
जौलौ० अव्य० जबतक।
ज्या० ना० स्त्री० माता, पृथ्वी, धनुषकाचिल्ला।
ज्याना० स० क्रि० पालना, जिलाना।
ज्येष्ठ० ना० पु० जेठका महीना, बड़ाभाई, गु० श्रेष्ठ उत्तम।
ज्येष्ठा० ना० स्त्री० १८ अठारहवां नक्षत्र।
ज्योति० ना० स्त्री० जोति, लालचन्दन।
ज्योतिर्गण० ना० पु० तारागण।
ज्योतिष० ना० पु० विद्या विशेष, इल्मनजूम।
ज्योतिषी० ना० पु० ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता, नजूमी, पण्डित।
ज्योतिष्मती० ना० स्त्री० मालकंगनी।
ज्योतिष्मान्० गु० प्रकाशी, तेजस्वी।
ज्योत्स्ना० ना० स्त्री० चांदनी।
ज्योनार० ना० स्त्री० खाना पाक, भोजन।
ज्वर० ना० पु० तप, ताप, बुखार।
ज्वरविनाशिनी० ना० स्त्री० गुरच, मजीठ।
ज्वरा० ना० स्त्री० मृत्यु, मौत।
ज्वरान्तक० ना० पु० चिरायता।
ज्वलन० ना० स्त्री० जलन, आगकी जीभविशेष।
ज्वार० ना० पु० अन्न विशेष।
ज्वारी० ना० पु० जुआरी।
ज्वाला० ना० स्त्री० आंच, लौ, लपट, आग।
ज्वालामुखी० ना० स्त्री० स्थान विशेष जिसमें अग्नि सदैव प्रज्वलित रहती है।

[झ]

झंखाड़० ना० पु० बिना पत्त के वृक्ष।
झंझट० ना० पु० झगड़ा, घबराहट।
झंझटी० गु० कठिन, झगड़ालू।
झंझना० गु० चिड़चिड़ा।
झंझनाना० स० क्रि० झनझनाना, बजना और पड़पड़ाना।

झंझनाहट० ना० स्त्री० चिड़चिड़ाहट, झनकार।
झंझावायु० ना० पु० प्रचण्डपवन, आंधी।
झंवाना० अ० क्रि० धूपसे कृष्णवर्ण होना, स० क्रि० झामे से पांवधोना, सुलाना।
झक० ना० पु० क्रोध।
झकझोरी० ना० स्त्री० खींचाधानी।
झकना० अ० क्रि० बकना, बकबककरना, हाय हाय करना।
झकरी० ना० स्त्री० दोहनी।
झकाझक० गु० झलाझल।
झकोर० ना० स्त्री० टोया, विपत्ति, बौछार।
झकोरना० स० क्रि० चलाना, जैसे आंधीमें झड़ी।
झकोरा० ना० पु० झपास, वायुसमेत झड़ी, बौछार।
झकोलना० स० क्रि० डुलाना।
झक्कड़० ना० पु० आंधी, चौवायी।
झक्की० ना० पु० विना प्रयोजन बकवादी।
झखना० अ० क्रि० झखना।
झगड़ना० अ० क्रि० लड़ना, भिरना।
झगड़ा० ना० पु० लड़ाई, रगड़ा।
झगड़ाना० स० क्रि० झगड़ा करना, लड़ाना।
झगड़ालिन्० गु० लड़ाकास्त्री।
झगड़ालू० ना० पु० लड़ाका।
झगा० ना० पु० झंगा।
झगुला० ना० पु० कुर्त्ता।
झझ० ना० पु० लम्बीदाढ़ी।
झझकारना० स० क्रि० दबकाना, दबाना।
झझला० ना० पु० मिठाईविशेष।
झज्झर० ना० पु० झझर।
झज्झरी० ना० स्त्री० झरोखा।
झञ्झा० ना० स्त्री० झड़ीसमेत आंधी।
झट० गु० उतावली, अव्य० शीघ्र।
झटक० ना० स्त्री० ससोट, [illegible]।
झटकना० स० क्रि० ससोटना, [illegible], अ० क्रि० दुबला होजाना।
झटका० गु० जो झटकेसे मारागया, फाड़ागया, ना० पु० खींच, ससोट।
झटकाना० स० क्रि० झटका लगाना।
झटपट० अव्य० तुरंत, शीघ्र।
झटास० ना० पु० भड़ाक, बौछार।
झटिति० अव्य० तुरन्त, शीघ्र।
झड़० ना० स्त्री० झड़ी, तालाविशेष, तालेकी कल।
झड़न्० ना० स्त्री० टपकन, जैसे फल पककर गिरते हैं, बत्तीकी टेम का फूल।
झड़ना० अ० क्रि० टपकना, गिरना, पतनहोना, निकलना, छनना, नौबतबजना।
झड़प० ना० स्त्री० कडुआहट, हमला।
झड़पना० अ० क्रि० लड़ना, हमलाकरना।
झड़पाझड़पी० ना० स्त्री० लड़ाई, [illegible]।
झड़पाना० स० क्रि० लड़ाना।
झड़बेर० ना० पु० } [illegible]
झड़बेरी० ना० स्त्री० }
झड़वाना० स० क्रि० [illegible]।
झड़ाक० } ना० पु० [illegible]
झड़ाका० } वही।
झड़ाझड़० अव्य० [illegible]।
झड़ाना० स० क्रि० [illegible] कराना।
झड़ी० [illegible]
झड़ी[illegible] ना० पु० [illegible]।
[illegible] ना० पु० [illegible], [illegible]।
[illegible] गु० [illegible] हुआ, [illegible]।
[illegible] ना० पु० [illegible] का [illegible]।
[illegible]ना० स० क्रि० [illegible]।
झनकार० ना० स्त्री० झनझनी, टनकार।
झनकारना० स० क्रि० बजाना।
झनवां० ना० पु० धानविशेष।
झप० अव्य० झट, तुरन्त, शीघ्र।

झपकना० स० क्रि० झलना, पखा हिलाना, अ० क्रि० लपकना, झपलेना, पलकमारना।
झपकाना० स० क्रि० पलकमारना, मटकाना।
झपकी० ना० स्त्री० लपक, मटकी, नींद।
झपट० ना० स्त्री० लपक, चढ़ाई, डाट।
झपटना० अ० क्रि० लपकना, चढ़ि दौड़ना।
झपट्टा० ना० पु० धावा, दौड़, लपक।
झपट्टामारना० स० क्रि० झपटलेना।
झपलाना० स० क्रि० सगालना, धाना।
झपाझपी० ना० स्त्री० उतावली, हड़बड़ी।
झपात० ना० स्त्री० स्फूर्ति, जल्दी।
झपाना० अ० क्रि० झपकीलना, दवाना।
झपास० ना० स्त्री० फुही, झासी।
झपासिया० गु० छली, अधर्मी।
झबकाना० स० क्रि० घाबरा करना।
झबिया० ना० पु० भूषणविशेष।
झबुआ० गु० जिस कुत्ते वा बकरे के बाल बड़े बड़े हों, झुकाहुआ।
झब्बा० ना० पु० लटकना।
झमक० ना० स्त्री० चमक।
झमकड़ा० ना० पु० चमकीला, भड़क।
झमकना० अ० क्रि० चमकना, नाचना।
झमका० ना० पु० प्रताप, शान।
झमकी० ना० स्त्री० झमक, झलक, चमक।
झमझम० अव्य० लगातार।
झमझमाना० अ० क्रि० चमकना।
झमरझमर० अव्य० बूंद बूंद से।
झमाका० ना० पु० झड़ी, वेगनाई।
झमाझम० अव्य० झमझम।
झम्पा० गु० झपाहुआ, ढकामया, ना०पु० चगुल।
झर० ना० पु० सोता, झरना, झड़ी, जलन।
झरना० ना० पु० सोता, झरना, झारनेवाला।
झरोखा० ना० पु० झंझरी, खिड़की।
झझर० ना० पु० झज्झर।
झर्ना० ना० पु० सोता झाड़नेका कपड़ा, बहुत छेदका एक पात्र विशेष, अ० क्रि० झड़ना, गिरना।
झल० ना० स्त्री० क्रोध, जलजलाहट, भारी उष्णता।
झलक० ना० स्त्री० चमक, उजाला।
झलकना० अ० क्रि० चमकना।
झलका० ना० पु० फफोला, छाला।
झलकाना० स० क्रि० चमकाना, उज्ज्वल करना।
झलकी० ना० स्त्री० दृष्टि।
झलझल० ना० पु० चमक, लहक।
झलझलाना० अ० क्रि० चमकना, प्रकाशित होना।
झलझलाहट० ना० स्त्री० चमक, परपराहट।
झलना० स० क्रि० झारना, अ० क्रि० सुधरना।
झलमल० ना० पु० चमक।
झलह्वाया० गु० बसनासी, ज्वलित।
झलाझल० गु० ज्योतिष्मान्, स्त्री० झलक।
झलाबोर० गु० चमकीला, भड़कीला, ना०पु० चमकाहू।
झलाना० स० क्रि० सुधारना, जोड़ना।
झलार० ना० पु० झाड़ी।
झष० ना० पु० मछली, मत्स्य।
झषकेतु० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।
झाईं० ना० स्त्री० परछाईं, लहसुन, मुखपर श्यामता होजाना।
झाक० ना० पु० ताकना, हिरण वा मक्खियों का झुण्ड।
झांकड़० ना० पु० झाड़ी।
झांकना० स० क्रि० झपकेदेखना, ताकना।
झाकाझांकी० ना० स्त्री० देखादासी, ताका ताकी।
झांख० ना० पु० हिरणविशेष।
झांझ० ना० स्त्री० बड़ा मजीरा, झगड़ा।
झांझट० ना० पु० झगड़ा, रगड़ा।
झांझा० ना० पु० वाद्यविशेष, झगड़ा।
झांझिया० गु० थोथी, बलड़िया।

झांझी॰ ना॰ स्त्री॰ खेल विशेष।
झांपना॰ स॰ क्रि॰ ढापना, छुपाना।
झांवरा॰ गु॰ काला।
झांवली॰ ना॰ स्त्री॰ चोचला, हावभाव।
झांवां॰ ना॰ पु॰ अयत पकी ईंट।
झांसना॰ स॰ क्रि॰ उभारना।
झांसा॰ ना॰ पु॰ फुसलाना, धोखा।
झांसी॰ ना॰ पु॰ बुंदेलखण्ड में नगर विशेष।
झांसू॰ ना॰ पु॰ फुसलाऊ, धोखाबाज।
झाऊ॰ ना॰ पु॰ छोटा वृक्ष विशेष।
झाग॰ ना॰ पु॰ फेना।
झाझा॰ ना॰ पु॰ मादक वस्तु।
झाड़॰ ना॰ पु॰ छागवृक्ष जो पीतलआदि का बनता है।
झाड़खण्ड॰ ना॰ पु॰ वन, बजनाथ के पास का वन विशेष, गु॰ झण्डूला, घन।
झाड़न॰ ना॰ पु॰ बहारन, कचरा, कर्कट, कूड़ा, पोंछन।
झाड़ना॰ स॰ क्रि॰ बुहारना, फर्चाकरना, पछ-कना, निकालना।
झाड़न्त॰ अव्य॰ सभी।
झाड़ा॰ ना॰ पु॰ गुह, मलकात्याग, हगना।
झाड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ मधना, वन, जंगल।
झाड़ू॰ ना॰ स्त्री॰ बढ़नी, बुहारी।
झापा॰ ना॰ पु॰ टोकरी विशेष।
झाबा॰ ना॰ पु॰ चमड़े का पात्र, तेल, घी मापने के लिये।
झामा॰ ना॰ पु॰ झावा।
झार॰ ना॰ पु॰ आगकी लव, ईंधना, सब, अव्य॰ कड़ुआहट।
झारि॰ अव्य॰ सब, तमाम, कमाल।
झारी॰ ना॰ स्त्री॰ थाली, झारी, दो मुखका जलपात्र विशेष।
झाल॰ ना॰ पु॰ कड़ुआहट, बड़ी टोकरी, धातुका सुधारना।
झालना॰ स॰ क्रि॰ चिकनाना, फेरना, जोड़ना।
झालर॰ ना॰ स्त्री॰ आंचल, गुच्छे।
झालरा॰ ना॰ पु॰ सोता, गु॰ बढ़ाहुआ।
झिझक॰ ना॰ स्त्री॰ चौंक, भड़क, डर भय।
झिझकना॰ अ॰ क्रि॰ चौंकना, भड़कना, डरना।
झिझका॰ गु॰ चौंकाहुआ, भयवान्।
झिझकाना॰ स॰ क्रि॰ भड़काना, डराना, चौं-काना, भवराना।
झिझकी॰ ना॰ स्त्री॰ भड़की, चौंक, डर।
झिञ्झा॰ ना॰ पु॰ जिगनावृक्ष, फूटाकोड़ी।
झिञ्झाणी॰ ना॰ स्त्री॰ जिगनावृक्ष।
झिञ्झा॰ ना॰ स्त्री॰ फूटीकौड़ी।
झिड़क॰ ना॰ स्त्री॰ धमकी, भबकी, गटकी।
झिड़कना॰ स॰ क्रि॰ घुड़कना, दबराना, धम-काना, झटकारना।
झिड़कझिड़की॰ ना॰ स्त्री॰ झगड़ा, भिगड़ी।
झिड़की॰ ना॰ स्त्री॰ घुड़की।
झिनहट्टा॰ } गु॰ सुलग।
झिनहट्टा॰ }
झिरझिर॰ गु॰ जो पतलाधार से बहता, पतला।
झिरझिरा॰ गु॰ तबड़ पतला।
झिरझिराना॰ अ॰ क्रि॰ बहना, निरतिराना।
झिलगा॰ ना॰ पु॰ खाटकी पुरानी और टूटी रस्सी की बिनावट, गु॰ पुरानीखाट।
झिलंगा॰ ना॰ पु॰ पदाति विशेष।
झिलम॰ ना॰ स्त्री॰ युद्धमें पहिरने के लिये लोहे की कुर्ती, टोपपर लोहेका कंगोरा, बख्तर।
झिलमिल॰ ना॰ पु॰ द्वार विशेष।
झिलमिलाना॰ अ॰ क्रि॰ लहराना, चिनगी निकलना।
झिल्लिका॰ ना॰ स्त्री॰ झींगुर।
झिल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ झींगुर, अति सूक्ष्म चमड़ा, खेड़ी।
झींकना॰ अ॰ क्रि॰ पछिताना, शोकित होना, पीनक में आना।
झींगट॰ ना॰ पु॰ मार्मा, पटनी।
झींगा॰ ना॰ पु॰ जलकीट प्रसिद्ध।

झींगुर० ना० पु० कीट विशेष, घुरघुरा।

झीण०
झीन०
झीना० } गु० सूक्ष्म, पतला, बारीक।

झीरुका० ना० स्त्री० झींगुर कीट।

झील० ना० स्त्री० बहुत बड़ा जलाशय, बड़ा ताल।

झींसी० ना० स्त्री० फूही, फुहार, छोटी २ बूंदें।

झुकना० अ० क्रि० निहुरना, नवना, क्रोधित होना, व्याकुल होना।

झुकाना० स० क्रि० निहुराना, लचाना, क्रोधित करना, अ० क्रि० क्रोधित होना।

झुकावट० ना० स्त्री० नवावट, निहुराई।

झुंझलाना० अ० क्रि० चिड़चिड़ाना, जल जलाना।

झुठलाना०
झुठालना० } स० क्रि० झूठा करना, मिथ्या बतलाना, अशुद्ध करना।

झुण्ड० ना० पु० मंडल, समूह, अखाड़ा।

झुण्डा० ना० पु० पताका, झंडा।

झुण्डी० ना० स्त्री० झाड़ी, वृक्षोंका समूह।

झुन० ना० पु० थोड़ी समानता।

झुनझुनाना० ना० पु० खिलोना विशेष।

झुनझुनी० ना० स्त्री० पैजनी।

झुमका० ना० पु० कानका भूषण विशेष, फूल वा फलका गुच्छा, फूल विशेष।

झुरमुट० ना० पु० झाड़, मंडला, झूमक।

झुराना० अ० क्रि० सूखना स० क्रि० सुखाना।

झुराने० गु० सूखे।

झुरियाना० स० क्रि० सिकोंना, सोहना पोंछना, उज्ज्वल करना।

झुरी० ना० स्त्री० शरीरके मासका सिकोड़।

झुर्ना० अ० क्रि० कुम्हलाना, सूखना।

झुलकाना० स० क्रि० जलादेना, भुलसाना।

झुलना० अ० क्रि० लटकना, झूलना।

झुलमुली० ना० स्त्री० कानकापान।

झुलसना० अ० क्रि० भुमलना, जलजाना।

झुलसाना० स० क्रि० भुलसाना, जलादेना।

झुल्ला० ना० पु० पहिरने का वस्त्र विशेष।

झूंझल० ना० पु० क्रोध का आवेश।

झूंटर० ना० स्त्री० भूमि जिस में वर्षा में दो बार अन्न बोते हैं।

झूंठनझांठन० ना० पु० छूत, बचा।

झूठ० गु० मिथ्या, अशुद्ध।

झूठा० गु० मिथ्यवादी, छूतहुआ, ना० पु० उच्छिष्ट खाना खायके छूटगया।

झूना० ना० पु० पक्कानारियल, महीन वस्त्र, चूल्हे में ईंधन और आग रखना।

झूमक० ना० स्त्री० झुमट।

झूमझूम० ना० पु० घन, लटक लटक।

झूमना० अ० क्रि० लहरना, हिलाना, ऊंघना, उमड़ना, घिरना।

झूरना० स० क्रि० कूदना, पेड़से फल झड़ना, सूखना।

झूरा० गु० सूखा, मुरझाया हुआ।

झूल० ना० स्त्री० बैलादि पशुओं का ओढ़ना।

झूलना० अ० क्रि० डोलना, हिलना, लटकना, ना० पु० छन्द विशेष।

झूला० ना० पु० हिंडोला, टाल वृक्ष।

झोंक० ना० स्त्री० ढकेल, धका, झकोड़।

झोंकना० स० क्रि० ढकेलना, फेंकना, ईंधन भाड़ में डालना।

झोंटा० ना० पु०
झोंटी० ना० स्त्री० } शिरके पाछे के बाल झूले का हिलाना।

झोंपड़ा० ना० पु०
झोंपड़ी० ना० स्त्री० } मढ़ी छप्परका छोटा घर।

झोंपा० ना० पु० फलका गुच्छा, बाल, घिराव।

झोंरा० ना० पु० गुच्छा।

झोक० ना० स्त्री० झोंक।

झोका० ना० पु० झाक, टोकर, टेस, झकोरा।

झोझ० ना० पु० खाता, ओझ, बड़ापेट।

झोझा० ना० पु० ओझा, बड़पेट, बड़ापेट।

झोटिंग० ना० पु० प्रतभद।
झोटी० ना० स्त्री० चोर्ग।
झोल० ना० स्त्री० कपड़े की सकोड़ वा चुन्नत, बचे।
झोला० ना० पु० थेला, अर्ड्डांग।
झोली० ना० स्त्री० थला।
झौरा० गु० साँवला, पीला।
झौंसना० अ० क्रि० बहुत जलजाना।
झौंसा० गु० जो बहुत जलगया।
झौड़० ना० पु० झगड़ा।
झौरी० ना० स्त्री० सेवका घास।

[ट]

टक० ना० स्त्री० स्वभाव ताक, दृष्टि।
टकटकी० ना० स्त्री० घूर, ताक।
टकना० अ० क्रि० सिलना सिलजाना।
टकराना० स० क्रि० टक्कर सिलवाना टक्कर मारना, अ० क्रि० टगलना।
टकवाना० स० क्रि० सिलवाना, मिलाना।
टकसाल० ना० पु० स्थान, जहा रुपया आदि बनाया जाता है।
टकसालिया० } ना० पु० टकसाल का काम
टकसाली० } करनेहारा।
टका० ना० पु० दो पैसे।
टकाई० ना० स्त्री० सिलाई, कर।
टकी० ना० स्त्री० ताक, टुका।
टकुआ० ना० पु० तकला, तकुआ।
टकैत० } गु० धनवान् मालदार।
टकैता० }
टकोर० } ना० पु० चुचकारी, चुमकारी, अति
टकोरा० } छोग कच्चा आम, ढोल बजाने की गति वा शब्द।
टकोरना० स० क्रि० सेंकना, ततारना।
टकौना० ना० पु० टका।
टक्कर० ना० स्त्री० ठोकर, ठल्लाठली, शिरसे शिर लड़ाना, जैसे मद लड़ाते है।
टखना० ना० पु० गुल्फ, घुन्ना।
टघलना० अ० क्रि० पिघलना।
टघलाना० स० क्रि० पिघलाना।
टङ्क० ना० पु० चार माशा की तौल, खड्ग।
टङ्कण० ना० पु० सोहागा।
टङ्कोर० ना० स्त्री० धनुष के नाद का शब्द।
टङ्कोरना० स० क्रि० धनुष की पनच झाड़ना।
टगना० अ० क्रि० लटकना।
टगड़ी० ना० स्त्री० टांग, गाड़।
टच्च० गु० सूम, कृपण।
टटका० गु० नया, नवीन ना० पु० उतारा पुतारा।
टटकी० ना० स्त्री० नई, नवीन, ताजा।
टटवानी० ना० स्त्री० छोटी घाँधी।
टटिया० ना० स्त्री० टट्टा झाप द्वार बन्द करने का जो तृणादि की बनती है।
टटीहरा० } स्त्री० पक्षीविशेष।
टटीहरी० }
टटुआ० ना० पु० छोटा घोड़ा।
टटुई० ना० स्त्री० छोटी घोड़ी।
टटोलना० स० क्रि० टायाटोई करना, अगुलियों से दबाना।
टड़ी० ना० स्त्री० चांदी बाड़।
टट्टर० } ना० पु० बड़ी टट्टी।
टट्टा० }
टट्टी० ना० स्त्री० टाट्या, फरकिया।
टट्टू० ना० पु० छोटा घाड़ा।
टण्टा० ना० पु० बखेड़ा, लड़ाई, खटपटी।
टप० ना० पु० बूंद फांद बूंद।
टपक० ना० स्त्री० पीड़ा टपकने का शब्द।
टपकना० अ० क्रि० टपटपाना, चूना, झरना, रिसना, टीसना।
टपका० ना० पु० पानी की बूंद, फल जो वृक्ष से पककर गिरता है यथा आम।
टपकाना० स० क्रि० चुआना, छनना रसना।
टपजाना० अ० क्रि० भूलजाना, कूदजाना।
टपपड़ना० स० क्रि० आँखके कममें हाथदेना।

टपना० अ० क्रि० मूलना, कूदना।
टपाना० स० क्रि० भुलाना, फंदवाना, कुदवाना।
टप्पा० ना० पु० डाकभर, डाकघर, मैदान, जहाँ तक गोली जाती है, रागिनीविशेष।
टमक० ना० स्त्री० जो शब्द पानी गिरने से किसी गढे वा बर्तन में होता है।
टमकना० अ० क्रि० चूना, टपकहोना, बोलना।
टर० ना० स्त्री० शेखी, ऐंठ गु० मतवाला, अचेत।
टरटर० ना० स्त्री० बकबक।
टरटराना० स० क्रि० बकबक करना।
टरटरी० ना० स्त्री० बकबकी।
टरना० अ० क्रि० हुलना, टलना, हटना।
टराना० स० क्रि० टलवाना, हटाना।
टर्रा० गु० मगरा, दुष्ट, बकी, बलवान्।
टर्राना० स० क्रि० बकबक करना, मगराना, ऐंठके बात करना।
टलजाना० } अ० क्रि० हटजाना, जाता
टलना० } रहना।
टलप० ना० स्त्री० टुकड़ा, खाट।
टलमलाना० अ० क्रि० डगमगाना, ललचाना।
टलाटली० ना० स्त्री० मिष, हीलाबाजी।
टलाना० स० क्रि० हटाना, छिपाना।
टवर्ग० ना० पु० टकारादि पांचअक्षर।
टसक० ना० स्त्री० चमक, टीस।
टसकना० अ० क्रि० हिलना, चसकना, चटना।
टसकाना० स० क्रि० हिलाना, चसकाना।
टसना० अ० क्रि० मसकना, फटना।
टहक० ना० स्त्री० गांठकी पीड़ा।
टहकना० अ० क्रि० दुखना, पीड़ापाना।
टहटह० } ना० पु० सुन्दरता, नवीन।
टहटहा० }
टहना० ना० पु० शाखा, डाल।
टहनी० ना० स्त्री० शाखा डाली।
टहल० ना० स्त्री० गृहस्थी, सेवा, काम।
टहलना० स० क्रि० हवाखाना, बाहर फिरना।
टहलनी० ना० स्त्री० गृहस्थिनि, दासी, लौंडी।
टहलाना० स० क्रि० चलाना, फिराना, हवाखिलाना।
टहलुआ० ना० पु० सेवक, दास, परिश्रमी।
टहलुई० ना० स्त्री० दासी, लौंडी।
टहो० ना० पु० जन्मते पुत्रका शब्द।
टहोका० ना० पु० धमा, चपेटा।
टांक० ना० पु० टक।
टांकना० स० क्रि० सीवना, लिखना।
टांका० ना० पु० लपकी, तेपची, साटन, जोड़न।
टांकी० ना० स्त्री० चट, खसरा, कुदरा, कुल्हाड़ी।
टांकू० गु० टाकनेहारा।
टांग० ना० स्त्री० ऐंडीसे घुटने तक का भाग, लटकाव।
टांगन० ना० पु० पहाड़ी घोड़ाविशेष।
टांगना० स० क्रि० लटकाना, हिलगाना।
टांगी० ना० स्त्री० टाकी।
टांच० } गु० हठीला, टेढ़, कुजाति, ऊजड़।
टांचड़ा० }
टांट० ना० स्त्री० चांदी।
टांठा० गु० पोढा, कड़ा, ठोस, घन।
टांठाई० ना० स्त्री० पोढ़ाई, कड़ाई।
टांड़० ना० पु० मचान।
टांड़ा० ना० पु० खेप, बनेजार की वस्तु।
टाट० ना० पु० सनका बिनाहुआ बिछौना, घमाड़।
टाटक० गु० टटका।
टाटा० ना० पु० टाटा, बड़ी टट्टी।
टाटी० ना० स्त्री० टट्टी।
टाड़ी० ना० स्त्री० छोटी कुल्हाड़ी।
टानना० स० क्रि० तानना, खेंचना।
टाप० ना० स्त्री० घोड़े के खुरका शब्द, घोड़े की अगले खुरोंकी मार।
टापना० अ० क्रि० टापमारना, ढूंढना।

टापा० ना० पु० साचा।
टापू० ना० पु० द्वीप, जज़ीरह।
टायर० ना० पु० छाटी झाल।
टारना० स० क्रि० टालना।
टाल० ना० स्त्री० टालमटाल, छलकरके बात बदलना, अथवा लकड़ी आदिका ढेर, टाल, मल्लयुद्ध करने में छल।
टालटोल० ना० पु० टालमटाल।
टालना० स० क्रि० छल करके बात फेरना वा बदलना वा उड़ाना, हटाना।
टालमटोल० ना० स्त्री० चक्करमक्कर, हीला बाज़ी।
टाला० ना० पु० टाल।
टिकटिकी० ना० स्त्री० छिपकली।
टिकठी० ना० स्त्री० काठकी तिपाई वा चापाई, अरथी।
टिकना० अ० क्रि० रहना ठहरना।
टिकली० } ना० स्त्री० बिंदी जिसको स्त्रियां
टिकुली० } माथेपर लगाती हैं।
टिकाऊ० गु० ठहराऊ, चलाऊ।
टिकाना० स० क्रि० रखना, ठहराना, अटकाना।
टिकाव० ना० पु० ठहराव, अटकाव।
टिकासर० ना० पु० टिकनेकी जगह, टिकाव।
टिकासा० गु० टिकैहारा, ठहरनेवाला।
टिकिया० ना० स्त्री० बत्ती, अगरबत्ती, छगरौटी, किसी वस्तुको वाटकर गोलाकार चपटी वस्तु बनाना।
टिकोर० ना० पु० लावदा, सोपड़ी।
टिकड़० } ना० पु० अंगारना, कड़ी गोलगोली
टिक्कर० } रोटी।
टिकली० ना० स्त्री० टिकली।
टिक्की० ना० स्त्री० टिकिया।
टिघलना० अ० क्रि० पिघलना, गलना।
टिघलाना० स० क्रि० पिघलाना, गलाना।
टिटकारना० स० क्रि० टिकटिक करके पशुको चलाना वा हांकना।

टिटकारी० ना० स्त्री० टिकटिक करना।
टिटीहरी० } ना० स्त्री० पक्षीविशेष।
टिट्टिभ० }
टिड्डा० ना० पु० } उड़ता कीड़ा।
टिड्डी० स्त्री० }
टिपका० ना० पु० रंगका चिह्न जो अंगुली से लगा है।
टिप्पर० ना० पु० टीका विवर्ण।
टिप्पस० ना० स्त्री० अभिमान, दाव।
टिमाना० स० क्रि० प्रतिदिन थोड़ीसी जीविका देना।
टिमाव० ना० पु० प्रतिदिन थोड़ी सी जीविका।
टिमटिम० ना० पु० सरोग, शब्द।
टिमटिमाना० अ० क्रि० झलझलाना, जगमगाना।
टिहरा० ना० पु० छोटागांव, पुरवा।
टिहरी० ना० स्त्री० छोटीसी बस्ती।
टींट० ना० स्त्री० करील का फल।
टीक० ना० स्त्री० शिर वा गलेका गहना।
टीका० ना० पु० तिलक, चन्दन, माथेका गहना विशेष, अर्थ कहना वा लिखना, ब्याह में कन्या की ओरसे लग्नबन्धनके लिये वरके यहां जो कुछ जाता है, राज्याभिषेक।
टीटली० ना० स्त्री० [illegible]।
टीड़ी० ना० स्त्री० टिड्डी।
टीप० ना० स्त्री० स्मरण, तमस्सुक, दस्तक, सेंकना, स्वर ऊंचा, दबाव।
टीपटाप० ना० स्त्री० बनाव, सजाव।
टीपना० स० क्रि० दबाना, ठोकना, लिखना, न, किसी दवाना, छिलना।
टीला० ना० पु० ढाल, पहाड़ी।
टीस० ना० स्त्री० दर्द, टसक, धड़क।
टीसना० अ० क्रि० टीसमारना, धमकना, धड़कना।

टुक० गु० थोड़ा, अल्प, तरा।
टुकड़ा० ना० पु० एक खण्ड, चिट।
टुकसा० गु० थोड़ासा।
टुगा० ना० पु० छोग पुत्र।
टुच्चा० } ना० पु० लुचा, गुण्डा, लंपट, तुच्छ।
टुचा०
टुंजा० ना० पु० नद्दा।
टुण्टुक० ना० पु० स्योनावृक्ष।
टुण्टुनाना० अ० क्रि० गुनगुनाना, धीरज से अलापना, धीरे धीरे बजाना।
टुण्ड० ना० पु० हाथ कटा, डाली कटा वृक्ष।
टुण्डा० गु० हाथ कटा, लूला, अपाक।
टुण्डियाचढ़ाना० स० क्रि० हाथ पीछे बांधना।
टुण्डी० ना० स्त्री० नाभि, गु० जिस स्त्रीका हाथ कटा या टूटाहो।
टुसकना० } अ० क्रि० रोकना, दुखना।
टुहुकना०
टूं० ना० पु० वायु सड़नेका शब्द अर्थात् पादने का शब्द।
टूगना० स० क्रि० चींचियाना, चिचोरना, लुट कना।
टूंड़ी० ना० स्त्री० नाभि, टूड।
टूक० } ना० पु० टुकड़ा, टेलक का एक
टूका० } शब्द।
टूट० ना० स्त्री० खण्डन, फूटना, रोग, लिखने में जो भूलके उपर लिखादिया, त्रुटि।
टूटना० अ० क्रि० टुमकना, दौड़ना, चढ़ाई, करना, फूटना, फटना, क्षतहोना, गढ़का छूटना, पहीका ऊपरसे नीचे उतरना।
टूटा० गु० फूटा, टुकड़े भया, ना० पु० टोटा, घटना।
टूम० ना० स्त्री० थोड़ी बात, भूषणविशेष, छतरी।
टूमटम० ना० पु० कुछ थोड़ी बात।
टूसा० ना० पु० आकका फल, मदारका फल।
टूसी० ना० स्त्री० कोंपल, कली।

टेंगरा० ना० पु० } मछलीविशेष।
टेंगरी० स्त्री० }
टेंट० ना० पु० करील वा कपास का पक्का फल, फूटी।
टेंटर० ना० पु० फलविशेष, आंखका दीदा बड़ा हुआ अर्थात् आंखका निकाम होजाना।
टेंटा० ना० पु० } करीलका बड़ा पकाफल,
टेंटी० स्त्री० } व्यर्थभाषण, कगरोग विशेष, कटि, बैलका कांधा।
टेंटुआ० ना० पु० नरी, रुाली, नरेटी गलेकी पोंगली, टट्टी।
टेंटें० ना० पु० चेंचें, किलकिलाहट।
टेई० ना० स्त्री० थाड़, थूनी क्रि० पैनी करी।
टेक० ना० स्त्री० थूनी, थड़, टेकनी, प्रतिज्ञा।
टेकन० ना० स्त्री० थाड़, थाम।
टेकना० स० क्रि० अड़ना, थामना, सहारा लगाना।
टेकनी० ना० स्त्री० टेकन, थूनी।
टेकर० } ना० पु० टीला, उंचा।
टेकरा०
टेढ़० ना० स्त्री० वक्रता, कुज।
टेढ़ा० गु० वक्र जो सूधा नहीं है।
टेढ़ाई० ना० स्त्री० वक्रता, बांकपन, कुज।
टेढ़ी० ना० स्त्री० गर्व, अहंकार, हट, बांकी।
टेनी० ना० स्त्री० छोग दण्डा जो अहीर रखते हैं।
टेम० ना० स्त्री० दीपक की जलन वा लव वा जोति।
टेर० ना० स्त्री० स्वर, लय, पुकार।
टेरना० अ० क्रि० पुकारना, ललकारना, अलापना।
टेलना० स० क्रि० पेलना, घुसेड़ना।
टेव० ना० स्त्री० चाल, बाट, स्वभाव।
टेवकिया० ना० स्त्री० छोटी टेवकी।
टेवकी० ना० स्त्री० थूनी, खम्भा थाम्भला।
टेवना० स० क्रि० बाढ़देना, बाढ़ रखना औ रखाना।

टेवा० ना० पु० जन्मपत्री का देखना वा लिखना, चार।
टेहरा० ना० पु० छोंगागार, पुरवा।
टेहला० ना० पु० विवाह की रीति।
टोआई० ना० स्त्री० छुआई।
टोंटा० ना० पु० पताका, मुर्रा, पोड़, बारूद की पुड़िया, बासका पोढ़।
टोंटी० ना० स्त्री० पर्णाला, मारी।
टोक० } ना० स्त्री० अटकाव, रुकाव
टोकटाक० } छड़छाड़।
टोकना० स० क्रि० पूछना, रोकना, डाहलगाना, बुरा दृष्टि से देखना।
टोकरा० ना० पु० झोरा, डलिया, झाबा।
टोकरी० ना० स्त्री० डारी, डलिया।
टोकाटोकी० ना० स्त्री० रुकाव, पूछपाछ, छेड छाड़।
टोटका० ना० पु० मोहनी लगना, वशीकरण।
टोटरू० ना० पु० घूघू विशेष।
टोटा० ना० पु० घटी, हानि, न्यूनता।
टोडी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
टोना० ना० पु० जादू, वशीकरण, स० क्रि० टटालना।
टोनहा० ना० पु० टग्ना, ओझा, बड़ा, जादूगर।
टोनहाई० }
टोनही० } ना० स्त्री० टटिनी जादूगरी।
टोनहैया० }
टोप० } ना० पु० शानक शिरढकने का वस्त्र
टोपा० } विशेष।
टोपी० ना० स्त्री० शिर ढकने का वस्त्र विशेष, कुलाह।
टोरा० ना० पु० भीतिमें पानी के बचाव के लिये घाडलगाकर धारा अर्थात् छज्जा निकालने की वस्तु, टारा।
टोल० ना० स्त्री० सभा, मण्डलि।
टोला० ना० पु० खण्ड, वस्ती का टुकड़ा।
टोली० ना० स्त्री० टोल, समूह।
टोहना० स० क्रि० ढूढ़ना, टटालना।
टोना० ना० पु० टोनहा।

[ठ]

ठई० अ० क्रि० ठहराई, मुकर्रकर।
ठकठक० ना० पु० बहुत परिश्रम का कार्य, गूढ़ता शब्द विशेष।
ठकठकाना० स० क्रि० टारना, खटखटाना।
ठकठकिया० ना० पु० बखेडिया, झगड़ालू।
ठकठेला० ना० पु० धकापकी, झगड़ा बखड़ा।
ठकठौआ० ना० स्त्री० पनसोई।
ठकुरसोहाती० गु० मुखदेखी बातकहना, श्रोता क मनभावित वार्त्ता करना।
ठकुराई० ना० स्त्री० ईश्वरता, प्रधानता, राज्य।
ठकुरायन० ना० स्त्री० ठाकुरकी स्त्री, रानी।
ठग० ना० पु० गठकटा, चोर, प्रतारक, धोखा देनेहारा।
ठगई० ना० स्त्री० प्रतारण, चोरी ठगाई।
ठगना० स० क्रि० छलना, चोराना, धोखादेना।
ठगनी० ना० स्त्री० ठगकी स्त्री, चोट्टी।
ठगाई० ना० स्त्री० प्रतारण, चोरी, छल।
ठगाना० स० क्रि० छलाना, चोरीकरवाना।
ठगिन० ना० स्त्री० ठगिनी।
ठगिया० ना० पु० ठग, प्रतारक, चोर, छली।
ठगौरी० ना० स्त्री० ठगई।
ठचरा० ना० पु० बखड़ा, झगड़ा।
ठठ० ना० पु० भीड़, मण्डली।
ठठक० ना० स्त्री० रुकाव, अटकाव, दर निवार।
ठठकना० अ० क्रि० रुकना, अटकना, आश्चर्य में होजाना, ठिगना।
ठठना० स० क्रि० बनाना, सजाना, दुरुस्तकरना, अ० क्रि० ठिगना, मारेजाना।
ठठरा० ना० पु० भाड़, घेरा।
ठठरी० ना० स्त्री० ठाठ, रथी, दुर्बल शरीर।

ठठाना० अ० क्रि० पीटना, मारना, कूटना, दुःख में अपना शिर पीटना, सजाना।
ठठेरा० ना० पु० कसेरा, जातिविशेष।
ठठेरिन० } ना० स्त्री० ठठेरेकी स्त्री।
ठठेरी० }
ठठोर० } गु० हँसोड, ठट्ठाबाज।
ठठोल० }
ठठोली० ना० स्त्री० परिहास, हांसी।
ठट्ठ० ना० पु० ठठ।
ठट्ठा० ना० पु० परिहास, खिल्ली।
ठट्ठा० ना० पु० गुड्डी के बीचका काष्ठ, मुड्डा।
ठण्ढ० ना० स्त्री० शीत, जाडा, हिम।
ठण्ढक० ना० स्त्री० शीतलता, सरदी।
ठण्ढा० गु० शीतल, सर्द।
ठण्ढाई० ना० स्त्री० शीतलता, ठण्ढी औषधि, जुड़ाई, बनाईहुई भंग।
ठण्ढी० ना० स्त्री० शीतल।
ठण्ढा० गु० जाड़ा।
ठनकना० अ० क्रि० टीसना, टपकना, झनकना।
ठनठनाना० अ० क्रि० झनझनाना, झनकना।
ठनाक० ना० पु० झनक, झनकार।
ठन्ना० अ० क्रि० ठहरना, जचना।
ठपना० अ० क्रि० छपना, छपजाना, भरजाना।
ठप्पा० ना० पु० छापनेका यन्त्र, साचा, सिक्का, ठस्सा।
ठमकना० अ० क्रि० मचकाकर चलना।
ठरन० ना० स्त्री० बहुतजाड़ा, बड़ी सर्दी।
ठरिया० ना० पु० माटीका हुक्काविशेष।
ठर्रा० ना० पु० मादक वस्तुविशेष, अ० क्रि० ठहरजाना।
ठवन० ना० स्त्री० चाल, उठनेकी रीति।
ठसक० ना० स्त्री० महत्व, पति, दसाव, सजाव।
ठसकना० अ० क्रि० ठसकना, स० क्रि० पटकना।
ठसका० ना० पु० गर्वी, अहङ्कार।
ठसनी० ना० स्त्री० ठांसने की वस्तु।
ठसाठस० गु० कचाकच, भचाभच, गचागच।
ठस्सा० ना० पु० अहङ्कार, साचा, ढांचा।
ठहरठहर० गु० कलहना।
ठहरना० अ० क्रि० रुकना, रहना, ठौरहोना, निठपना।
ठहराव० ना० पु० रुकाव, निपटाव।
ठहराना० स० क्रि० रखना, रोकना, निपटाना।
ठहाका० ना० पु० धमाका, भदाका, भड़ाका।
ठां० } ना० पु० स्थान, जगह।
ठांव }
ठांसना० स० क्रि० ठूसना, घुसेड़ना।
ठाई० ना० स्त्री० ठांव, ठौर।
ठाउ० ना० पु० ठांव ठौर।
ठाकुर० ना० पु० ईश्वर, देवता, शालग्राम, मूर्तिदश, पति, राजा, नाई।
ठाकुरद्वारा० ना० पु० देवालय, चौहरा।
ठाठ० } ना० पु० ठटरी, सैतार, चुकाता, भड़क, भीड़भाड़, समूह रचना।
ठाट० }
ठाड़ा० गु० खड़ा, सीधा जो बेड़ा नहीं।
ठाढ० गु० उंचा, शीघ्र, खड़ा।
ठाढ़ा० } गु० खड़ा, खड़ी।
ठाढ़ी० }
ठानना० स० क्रि० मन लगाना, ठहराना, निश्चय करना।
ठाला० गु० खाली, कार्य्यरहित समय।
ठाहर० ना० पु० ठिकाना, जगह।
ठिकरा० ना० पु० फूटे बर्त्तनका टुकड़ा, ठीकरा।
ठिकाना० ना० पु० स्थान, वास, छोर सिवाना।
ठिकानी० गु० ठिकानेवाला, ठिहारा।
ठिंगना० गु० नाटा, छोटा बासन बौठा।
ठिठक० ना० स्त्री० आश्चर्य्य मे होना, भयवश होना।
ठिठकना० अ० क्रि० भयवश होकर वा आश्चर्यित होकर खड़ा होना।

ठिठरना॰ अ॰ क्रि॰ जमना, ठढ होना, अकड़जाना।
ठिठरा॰ गु॰ अकड़ा, शून्य, जड़ाया हुआ।
ठिठराहट॰ } नाम॰ स्त्री॰ ठण्ढक, अकड़ाहट।
ठिठुर॰ }
ठिठुरना॰ अ॰ क्रि॰ ठिठरना।
ठिठुरा॰ गु॰ ठिठरा।
ठिलिया॰ नाम॰ स्त्री॰ घड़ा, गगरी।
ठीक॰ गु॰ शुद्ध, पूरा, योग्य, सत्य, उचित, अदाता, लीचड़, ना॰ पु॰ जोड़।
ठीकठाक॰ गु॰ शुद्ध, योग्य, दुरुस्त।
ठीकमठाक॰ अव्य॰ शुद्धता से।
ठीकरा॰ ना॰ पु॰ ठिकरा।
ठीकरी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा ठिकरा, स्त्री योनि में स्थानविशेष।
ठीका॰ ना॰ पु॰ भाड़ा, इकरौता, इजारह।
ठुकराना॰ स॰ क्रि॰ ठोकर मारना।
ठुड्डी॰ ना॰ स्त्री॰ ठोढ़ी, जोहरी वा मखाना जो भूनने से खिला नहीं अर्थात् लावा नहीं भया।
ठुनुक॰ ना॰ स्त्री॰ सिसक।
ठुनुकना॰ अ॰ क्रि॰ सिसकना।
ठुमक॰ ना॰ स्त्री॰ सुन्दरचालसे चलन, मटक।
ठुमकना॰ अ॰ क्रि॰ सुडौल से चलना, अकड़ से चलना।
ठुमका॰ गु॰ छोटा, नाटा, बाठा।
ठुमकी॰ गु॰ आलसी, ठिगनी, ना॰ स्त्री॰ पतग को उड़ाके हिलाना।
ठुसकना॰ अ॰ क्रि॰ हवा छोड़ना, पादना, धीमे धीमे रोना।
ठुसकी॰ ना॰ स्त्री॰ शब्दरहित वायुको छोड़ना।
ठुसाना॰ स॰ क्रि॰ ठसाना, ठासना।
ठूंठ॰ ना॰ पु॰ पत्ररहित तोड़ी हुई डाली वा डाल पातरहित वृक्ष, दुण्ड।
ठूंठा॰ } गु॰ लुण्डा वृक्ष जिसकी डालियां कटगिइ, सखावृक्ष।
ठूठिया॰ }
ठूंठी॰ ना॰ स्त्री॰ खूटी, अनाजकी।
ठेंगुना॰ ना॰ पु॰ ठगना।
ठेंगा॰ ना॰ पु॰ लाठी, अंगुष्ठ, लिंग।
ठेंगाबाजना॰ स॰ क्रि॰ बिगाड़ना।
ठेंठ॰ गु॰ निपट, चोखा, केवल, निरा।
ठेंठी॰ ना॰ स्त्री॰ कानका मैल, डट्टा, धोती।
ठेक॰ ना॰ स्त्री॰ ठकनी, आड, बड़ाबोरा जो अन्न से भरा है।
ठेका॰ ना॰ पु॰ ठट्टा, ठीका, इजारह।
ठेकी॰ ना॰ स्त्री॰ शिरस बोझ उतारके सुस्तानेका स्थान, जहां अन्न वा लकड़ीका गंज है।
ठेई॰ ना॰ स्त्री॰ टट्टा।
ठेलना॰ स॰ क्रि॰ ढकेलना, रलना, झोंकना, हगना।
ठेला॰ ना॰ पु॰ धक्का।
ठेलाठेली॰ ना॰ स्त्री॰ धकाधकी।
ठेवना॰ ना॰ पु॰ घुटना, जानु।
ठेस॰ ना॰ स्त्री॰ ठोकर, चपेट, झोंक।
ठेसना॰ स॰ क्रि॰ छदना, ठाकरलगाना, ठासना
ठेसरा॰ ना॰ पु॰ नाकचढ़ी।
ठोंकना॰ स॰ क्रि॰ मारना, गाड़ना, अंगुली से बजाना।
ठोंग॰ ना॰ स्त्री॰ चोंच वा अंगुली से मारना।
ठोंगना॰ } स॰ क्रि॰ चोंचियाना चिहारना।
ठोंगाना॰ }
ठोंठ॰ ना॰ स्त्री॰ चोंच, ठोर।
ठोक॰ ना॰ स्त्री॰ मार कूट, ठोकने का शब्द।
ठोकर॰ ना॰ स्त्री॰ ठेस, ठेसलगनेकी वस्तु, पांवकी हूल।
ठोढ़ी॰ ना॰ स्त्री॰ ठुड्डा।
ठोल॰ ना॰ स्त्री॰ चोंच।
ठोला॰ ना॰ पु॰ शुकादिके, निमित्तपात्र जिसमें दानापानी रखते हैं अंगुलियों की गांठ।

ठोस० गु० ठाठा, जो खोखला नहीं है।
ठोसना० स० क्रि० ठासना।
ठोसाई० ना० स्त्री० ठठाई, दृढ़ता।
ठौर० ना० स्त्री० स्थान, जगह।

[ड]

डकराना० अ० क्रि० कूकमार के रोना।
डकार० ना० स्त्री० उद्गार, आरोग्य।
डकारना० अ० क्रि० दिकारना, हुंकारना और पचाजाना।
डकैत० ना० पु० डाकू, चोर, बटमार।
डकैती० ना० स्त्री० चोरी, बटमारी, डाका।
डकौत०, डकौतिया० } ना० पु० वर्णसंकरकी जातिविशेष जिसका बाप ब्राह्मण और महतारी ग्वालिनि थी।
डग० ना० पु० चलावा, फाल, पद, डग।
डगडगाना० अ० क्रि० हिलना, चमचमाहट से चलना।
डगना० अ० क्रि० हिलना, डिगना।
डगमग० गु० चपल, चलायमान।
डगमगाना० अ० क्रि० खड़खड़ाना, हिलना।
डगर० ना० स्त्री० मार्ग, सड़क, पैंडा।
डगरना० अ०क्रि० हिलना, फिरना।
डगरा० ना० पु० बांसका बनायाहुआ पात्र विशेष।
डग्गा० ना० पु० दुर्बल घोड़ाविशेष।
डङ्क० ना० पु० चेमक, बिच्छू, आदि का विषयुक्त कांटा।
डङ्का० ना० पु० डंका, धौंसा, नक्कारह।
डङ्किनी० ना० स्त्री० डाकिनी।
डङ्कियाना० स० क्रि० डंकमारना, चमकना।
डङ्कीला० गु० जिस जन्तुके डंक हो।
डटना० अ० क्रि० अड़ना भिड़ना, ठकना, बनना।
डटैया० ना० पु० डटनेवाला।
डढ़ना० अ० क्रि० जलजाना, भुनजाना।
डढ़मुण्डा० गु० दाढ़ीरहित।
डढ़ियल० गु० दाढ़ीवाला।
डढुआ०, डढ़ैई० } गु० जलाहुआ, जलगया।
डण्ड० ना० पु० बाहु, भुजा, व्यायाम करना, साधनविशेष, डण्ड।
डण्डवत० ना० स्त्री० दण्डवत् प्रणाम विशेष, पायँलागी।
डण्डा० ना० पु० सोंटा, सीढ़ीका पाया, दण्ड।
डण्डिया० ना० पु० स्त्रियों के पहिरनेका वस्त्र विशेष और बाजारका कर उगाहनेहारा।
डण्डी० ना० स्त्री० बेंटी, बेंट, तराजूके पलड़ेमें लगानेका काठ, तय्यारी, हरसिंघार आदि की नली, डण्डी।
डण्डौर० ना० स्त्री० धारी, लकीर, लीक।
डपटना० अ० क्रि० पुकारना, डाटना, सरपट दौड़ना।
डफ० ना० पु० बाजा विशेष।
डफारना० अ० क्रि० कूकमारना, बिलखना।
डफाली० ना० पु० डफ बजानेहारा।
डब० ना० पु० बल, पराक्रम, जव, चमड़ा जिससे कुप्पा बनाते हैं।
डबका० ना०पु० टटका, कूपकाजल, गु० मोटा।
डबडबाना० अ० क्रि० भरना, जैसे आंख आंसू से भरआती है।
डबरा० ना० पु० नीलाभूमि, लिवार, दबरा।
डबरिया० गु० खब्बा, बायाहाथ, बामहस्था।
डबोना० स० क्रि० डुबाना।
डब्बा० ना० पु० बड़ी डिबिया।
डब्बू० ना० पु० लोहेका कर्छा।
डमरुआ० ना० पु० घुटना की गाठि।
डमरु० ना० पु० बाजा विशेष।
डमरुमध्य० ना० पु० डमरुका मध्यभाग, खाकनीय जो अपन से दो बड़े स्थलके भागों का मिलावे।
डर० ना० पु० भय, भीत, शंका।
डरना०, डरपना० } अ० क्रि० भयखाना।

डरपोक० गु० डरनेवाला, भयवान्।
डरवैया० गु० भयवान्, हेठा, डरपोक।
डराऊ० गु० भयंकर।
डराक० गु० भयवान्।
डराना० } स० क्रि० भय देना, भय दिखलाना।
डरावना० }
डरी० ना० स्त्री० मालकी बोरी, छोटाटुकड़ा, ढेला।
डरौला० गु० मांस खानेवाला।
डरौना० गु० डराऊ।
डलया० ना० पु० टोकरा।
डलवाना० स० क्रि० झोंकवाना गिरवाना। घुसड़ाना।
डला० ना० पु० बड़ा टुकड़ा या ढला टोकरा।
डलिया० ना० स्त्री० छोटी टोकरी।
डली ना० स्त्री० छोटा टुकड़ा वा ढला, सुपारी।
डस० ना० स्त्री० तराजूकी रस्सी दशा।
डसना० स० क्रि० काटना, चमकना डाक खाना।
डसौना० ना० पु० बिछौना।
डहक० ना० पु० गुफा, खोह चोरगड्ढा, लालच, बिगाड़, डौर।
डहकना० अ० क्रि० डींकना लालच करना बिगड़ना।
डहकाना० स० क्रि० निराशकरना, छलखाना, बिगाड़ना।
डहडहा० गु० प्रफुल्लित, खिलाहुआ, चैतन्य।
डहडहाना० अ० क्रि० खिलना, फूलना।
डांक० ना० पु० जगमगा, बिच्छूआदि का डंक।
डांग० ना० स्त्री० लाठी, पहाड़की चोटी।
डांगर० गु० दुर्बल, ना० पु० दुर्बलपशु मुला या फूलाहुआ पत्ता।
डांटना० स० क्रि० ताड़ित करना घुड़कना।
डांठल० ना० पु० } डण्डी, बोंट।
डांठा० ना० स्त्री }
डांड० ना० पु० बदला, दंड, ताड़ना, नावखेने का अस्त्र, चापू, रीढ़, डण्डीर।
डांड़ना० स० क्रि० बदला लेना, दण्डलेना।
डांड़ा० ना० पु० मेंड़, सिवाना धूरा।
डांडी० ना० स्त्री० खेनेहारा, खेवया।
डामाडोल० ना० पु० इधर से उधर रपड़ना।
डांवरू० ना० पु० शेरका बच्चा।
डांस० ना० पु० डंश, मच्छड़।
डाक० ना० स्त्री० टप्पा, अन्तररहितगमन, डाकिनी का पति, डाका, डाकू।
डाकना० स० क्रि० वमनकरना, उछालकरना।
डाका० ना० पु० चोरोंका धावा।
डाकिन्० } ना० स्त्री० डायन, चुड़ैल, या
डाकिनी० } गिना भेद।
डाकिया० ना० पु० डाकू, डाक लेजानेवाला।
डाकी० गु० खाऊ, पटू।
डाकू० ना० पु० डकैत, चोर, बटमार।
डाट० ना० स्त्री० घुड़क, धमक, ढट्टी।
डाटना० स० क्रि० टांगना, माथसे दबाना।
डाढ़० ना० स्त्री० पिछला दांत।
डाढ़ी० ना० स्त्री० ठुड्डीपर के बाल।
डाब० ना० पु० पतला कच्चा नारियल, तृण विशेष।
डाबर० ना० पु० हाथ धोनेका पात्र, गाल तालाब, झाबर।
डाभ० ना० पु० कुशा, डाब दर्भ।
डामर० ना० पु० धूना, राल।
डायन्० ना० स्त्री० डाकिनी।
डार० ना० स्त्री० डाली, डाल।
डारना० स० क्रि० डालना।
डारिम० ना० पु० दाड़िम, अनारफल।
डाल० ना० स्त्री० डाली, शाखा, टहनी।
डालना० स० क्रि० फेंकना, घुसड़ना, झोंकना।
डाला० ना० पु० डोला, बड़ीडाली।
डाली० ना० स्त्री० टहनी, शाखा फलादिका भेद, पुष्पादि रखने के लिये बांसका पात्र।

ढाक० ना० पु० पलाशकावृक्ष, शुद्दरत छुपाव, सांप का विष उतारने में एक प्रकारका बाजा।
ढाका० ना० पु० बंगालेका नगर विशेष।
ढाटा० ना० पु० डाढ़ीवन्धन, ठट्ठा।
ढाटी० ना० स्त्री० वसन, पगड़ा, फांदा जो घोड़े के मुखपर बांधते हैं।
ढाढ़स० ना० स्त्री० धीरज, सूरमापन, दिलासा शांति भरोसा।
ढाढ़िन० ना० स्त्री० ढाढ़ी का स्त्री।
ढाढ़ी० ना० पु० जातिविशेष जो बजाते और गाते हैं।
ढाना० स० क्रि० गिराना, उजाड़ना।
ढाबर० गु० मैला, गदला।
ढाबा० ना० पु० जाल, आरी, आलता।
ढार० ना० स्त्री० भांति, कानका गहना विशेष।
ढारना० स० क्रि० ढालना।
ढारी० गु० मरीहुई।
ढारू० गु० ढालू।
ढाल० ना० पु० उतारू, ना० स्त्री० फरी।
ढालना० स० क्रि० सांचे में उतारना, औंधाना, बिगाड़ना।
ढालवां० गु० उतरू, जो सांचे में उतारागया।
ढालू० गु० उतारू, बेंड़ा, बिगाड़, सांचेका उतारना।
ढाहना० स० क्रि० गिराना, उजाड़ना।
ढाहा० ना० पु० नदीका करारा।
ढिग० ना० स्त्री० पास, समीप।
ढिठाई० ना० स्त्री० चंचलता, गुस्ताखी।
ढिड़िम० ना० पु० टिटिहरी, पक्षी।
ढिपका० ना० पु० उभार, गुमड़ा।
ढिमढिमी० ना० स्त्री० खजरी विशेष।
ढिलड़० } गु० आलसी, सुस्त।
ढिल्लर० }
ढीठ० } गु० चंचल, निडर, बेअदब, धीताल
ढीठा० } मगरा।
ढिठौंदे० गु० धीताई या चंचलता से।
ढीज० ना० स्त्री० आसक्त, विलम्ब, दर, छूट।
ढीलाई० ना० स्त्री० शिथिलता, आलस्य।
ढीहा० ना० पु० टीला।
ढुकना० अ० क्रि० झुकना, शिरझुकाना।
ढुकी० ना० स्त्री० ताक।
ढुरना० अ० क्रि० फिरना, लुढ़कना।
ढुलना० अ० क्रि० ढलना, ढरना मरना।
ढुलाई० ना० स्त्री० उठवाई वा पैसा वा काम।
ढुलवाना० } स० क्रि० उठवाना ढलकाना।
ढुलाना० }
ढूआ० ना० पु० तूदा, मेंड़, मिट्टीका पिण्ड।
ढूढ़ढांढ़० ना० पु० खोज, झाड़ झूड़।
ढूढ़न० ना० पु० खोज।
ढूढ़ना० स० क्रि० खोजना, तलाशकरना।
ढूढ़ार० ना० पु० देशविशेष।
ढूढ़िया० ना० पु० जैनलोगों में भिखारी, गु० ढूढ़नेवाला, टटोल।
ढूक० ना० स्त्री० ढुकी, ताक, घात।
ढूकना० अ० क्रि० बन्द करना, मूंदना, छपिके पास आना पैठना।
ढूसर० ना० पु० जातिविशेष।
ढेकली० ना० स्त्री० कूपसे जल निकालन का यन्त्र।
ढेंका० ना० पु० } कूटने का यन्त्र।
ढेंकी० ना० स्त्री }
ढेंडस० ना० पु० तरकारी विशेष।
ढेंढ़ी० ना० स्त्री०पोस्ताकाफूल।
ढेंढ़ा० ना० पु० गर्भ, गर्भता, बखेरा, दानोंपैरों का बीच, गदरा।
ढेंक० ना० पु० पक्षीविशेष।
ढकुली० ना० स्त्री० रहंट, चरखी।
ढेढ़० ना० पु० चमारकीजातिविशेष, कौवा।
ढेढ़ी० ना० स्त्री० कानका गहनाविशेष।
ढेर० ना० पु० राश, ढाल, बहुतात।
ढेरा० ना० पु० भेंगा, जिससे बाधी ऐंठते हैं।
ढेरी० ना० स्त्री० थोड़ाढेर।

ढेला० ना० पु० माटीका लोंदा।
ढेलाचौथ० ना० स्त्री० भादोंकी चौथ।
ढैया० ना० स्त्री० अढैया।
ढैयाटेकर० पु० जो उमड़गया।
ढोवा० ना० पु० पर्व या त्योहारमें फल वा फूल जो छोटे लोग लाते हैं।
ढोक० ना० स्त्री० दण्डवत्, रिवाज।
ढोकना० स० क्रि० पीना, घूटना।
ढोका० ना० पु० पत्थर आदिका टुकड़ा, ढेर।
ढोटा० ना० पु० लड़का।
ढोना० स० क्रि० लेजाना, उठाना।
ढोर० ना० पु० गायगोरू।
ढोरा० ना० पु० ताजिया जो मुसलमान बनाते हैं।
ढोरी० ना० स्त्री० डोरी चोप।
ढोल० ना० पु० बाजा विशेष।
ढोलक० ना० पु० छोटा ढोल।
ढोलकिया० ना० पु० ढोलबजानेहारा।
ढोलकी० ना० स्त्री० छोटीढोल।
ढोलन० ना० पु० प्यारा, रसिया।
ढोलना० ना० पु० ढोल के समानयन्त्र विशेष।
ढोला० ना० पु० छोकरा, रागविशेष।
ढोलिया० } ना० पु० ढोल बजानेहारा।
ढोलैत० }
ढोली० ना० स्त्री० दोसौ पानका परिमाण।
ढौंचा० पु० साढ़ेचार ४½।
ढौरी० ना० स्त्री० डोरी, दहद, चोंप।

[त]

तई० अव्य० तलक, लग, ना० स्त्री० टटि, ताव।
तऊ० अव्य० तौभी, तथापि, तदपि।
तक० अव्य० तलक, लग, ना० स्त्री० दृष्टि, ताव, तराजू, तखड़ी।
तकतक० ना० पु० पशु आदि चलान का शब्द।
तकना० स० क्रि० ताक लगाना, अ० क्रि० दृष्टि देना।
तकला० ना० पु० तकुआ।
तकली० ना० स्त्री० अटेरन, परेता।
तकवाहा० ना० पु० रक्षक, चौकीदार, पहरू।
तकाना० स० क्रि० टुकी लगाना, लखाना।
तकिया० ना० स्त्री० सिरहाने की वस्तु विशेष।
तकुआ० ना० पु० सूत कातने के लिये लोहेकी शलाका जो चरखे में लगती है।
तक्र० ना० पु० मट्ठा, छाछ।
तखड़ी० } ना० स्त्री० तुला तराजू।
तखरी० }
तखान० ना० स्त्री० बढ़ई।
तगण० ना० पु० जिसके अन्तरा अक्षर लघुहोता है, गण विशेष।
तगना० स० क्रि० तागा डालना।
तगाई० ना० स्त्री० सिलाई, सिलाईका पैसा।
तगाना० स० क्रि० तागा डलाना, सिलाना।
तग्गा० ना० पु० सीने के लिये बनाया हुआ सूत।
तगड़ी० ना० स्त्री० करधनी।
तंगा० ना० पु० दो पैसा।
तचना० अ० क्रि० गर्म होना।
तचाना० स० क्रि० गर्म करना या कराना।
तच्छरीर० ना० पु० उसका शरीर।
तज० ना० पु० औषधि, वृक्ष विशेष।
तजन० ना० स्त्री० छोड़न, त्यागन।
तजना० स० क्रि० त्यागना, छोड़ना।
तजिय० अव्य० छोड़िय।
तज्जन० ना० पु० उसका मनुष्य।
तट० ना० पु० तीर, पास, किनारा।
तटस्थ० पु० तीरवासी।
तटिनी० ना० स्त्री० नदी।
तट्टीका० ना० पु० उसका टीका।
तड़० ना० पु० पक्ष।
तड़क० ना० स्त्री० तर्क, टूटें, आड़।
तड़कना० अ० क्रि० फटना, फूटना।
तड़का० ना० पु० प्रात काल, भोर।

तड़के॰ अव्य॰ सबेरे।
तड़तड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ रिसाना, भिरभिराना, फटने का शब्द।
तड़प॰ ना॰ स्त्री॰ चटक, भपट, उचर, उतावली।
तड़पना॰ अ॰ क्रि॰ तलफाना, धड़कना, कुदकना, फफगाना, हाथ पाव पटकना।
तड़पाना॰ स॰ क्रि॰ तलपाना, धड़काना।
तड़पीला॰ गु॰ फुर्तीला, चटपटिया।
तड़फ॰ ना॰ स्त्री॰ व्याकुलता, धड़क।
तड़फड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ धड़कना, घबराना।
तड़फड़ाहट॰ ना॰ स्त्री॰ व्याकुलता,घबराहट।
तड़फना॰ अ॰ क्रि॰ व्याकुल होना, फटफटाना।
तड़फाना॰ स॰ क्रि॰ तड़पाना।
तड़ा॰ ना॰ पु॰ टापू, द्वीप।
तड़ाक॰ गु॰ भड़कीला, चमकीला।
तड़ाका॰ ना॰ पु॰ मारने का शब्द, चटाका।
तड़ाग॰ ना॰ पु॰ तालाब, पोखरा।
तड़ाड़ा॰ ना॰ पु॰ जलकी धारा, तरेड़ा।
तड़ाया॰ ना॰ पु॰ चटक, भड़क।
तड़ावा॰ ना॰ पु॰ ढूहा, कगार।
तड़ित्॰ ना॰ स्त्री॰ बिजली।
तड़ित्वान्॰ ना॰ पु॰ मेघ।
तण्डुल॰ ना॰ पु॰ तंदुल, चावल।
तत्॰ अव्य॰ वह, सो, तीन, समह ना॰ पु॰ ईश्वर।
तताना॰ स॰ क्रि॰ गर्म करना।
ततेड़ा॰ ना॰ पु॰ पानी गर्म करने का पात्र विशेष।
तत्कन्द॰ ना॰ पु॰ अदरक, नाराइकिन्द।
तत्काल॰ अव्य॰ उसी समय।
तत्तकार्य॰ ना॰ पु॰ उसी उसी काम में।
तत्ता॰ गु॰ गर्म, ज्वलित, क्रोधी।
तत्पर॰ गु॰ आसक्त, चतुर, निपुण, समेत।
तत्फल॰ ना॰ पु॰ पीड़ वृक्ष, गजपीपरि, जामुन वृक्ष, उसका फल।
तत्त्व॰ ना॰ पु॰ सार, प्रकृति, यथार्थ, मूल, सत्व भाव जो किसी से बना नहो।
तत्त्ववल्का॰ ना॰ स्त्री॰ सुरहरी।
तत्त्वज्ञ॰ गु॰ मनुष्यादि जो बोलसके, वानरे, तत्त्व वस्तु जाननेहारा, यथा मल्लवेत्ता।
तत्त्वज्ञान॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान।
तत्क्षण॰ अव्य॰ उसीसमय, तुरंत, उसीदम।
तत्र॰ अव्य॰ तहां।
तथा॰ अव्य॰ जिसी प्रकार, तैसा, वैसाही।
तथाच॰ अव्य॰ जैसे, पुनाचि।
तथापि॰ अव्य॰ तौभी।
तद्॰ अव्य॰ तब जिससमय।
तदनन्तर॰ अव्य॰ तिसके पीछे।
तदनु॰ अव्य॰ तेहि अनुसार, तिसपीछे।
तदा॰ अव्य॰ तब, तहां।
तदपि॰ अव्य॰ तौभी।
तद्गत॰ गु॰ उस में गयाहुआ।
तद्गति॰ ना॰ स्त्री॰ उसकी दशा, उसकी माया
तद्गुणविशिष्ट॰ गु॰ वहगुण जिसमें है।
तद्धवि॰ ना॰ पु॰ उसके यज्ञका द्रव्य।
तद्भय॰ ना॰ पु॰ उसके डर।
तद्भावबोधक॰ गु॰ उसभावका बोधक।
तर्थी॰ अव्य॰ तिसी समय, तभी।
तन॰ ना॰ पु॰ शरीर, देह, पुत्र, और विस्तार।
तनक॰ गु॰ थोड़ा, अल्प।
तनय॰ ना॰ पु॰ पुत्र, लड़का, सुत।
तनया॰ ना॰ स्त्री॰ पुत्री, कन्या, सुता।
तनापा॰ ना॰ पु॰ जवानी, तरुणाई।
तनी॰ ना॰ स्त्री॰ अँगरखे का बन्धन, तनया।
तनु॰ ना॰ पु॰ शरीर, देह।
तनुक॰ गु॰ थोड़ा, अल्प।
तनुजा॰ ना॰ स्त्री॰ तनया, पुत्री।
तनुत्राण॰ ना॰ पु॰ बखतर, कवच।
तनूदरी॰ ना॰ स्त्री॰ स्त्री, नारी, अबला।

तनूरुह० ना० पु० शरीर क बाल।
तनोति० अ० क्रि० विस्तारकर।
तन्त० ना० पु० तार, सुग सिद्धि, तुरंत, संतान, औषधि, तदबीर।
तन्तनाना० अ० क्रि० पिनपिनाना, मनाना।
तन्तनाहट० ना० स्त्री० नमचाहट, जलन से जो पीड़ा।
तन्तु० ना० पु० सूत, तार।
तन्तुना० ना० पु० ततुना, तार।
तन्त्र० ना० पु० टोटका, लटका, शास्त्रोक्त मन्त्र शिवकृत ग्रन्थ विशेष, वीणा।
तन्त्री० गु० तन्त्रका करनेवाला, गानेवाला।
तन्त्रीनाद० ना० पु० वीणाका शब्द।
तन्द्रा० ना० स्त्री० थकाई, श्रम, मूर्च्छा। /
तन्द्री० ना० स्त्री० मोह, भृकुटी।
तन्दुल० ना० पु० चावल।
तन्ना० अ० क्रि० खिचना, फैलना।
तन्नाना० अ०क्रि० पिनपिनाना, क्रोधितहोना।
तन्नेत्र० ना० पु० उसकी आंखि।
तन्मय० गु० उसमें भराहुआ।
तन्मात्र० अव्य० केवल, वह।
तप० ना० स्त्री० ताप, उष्ण, ना० पु० तपस्या माघका महीना।
तपत० ना० स्त्री० उष्ण, गु० गर्म, तत्ता।
तपन० ना० पु० उष्ण, जलन, सूर्य्य, और भिलावावृक्ष।
तपना० अ० क्रि० ऐश्वर्य्यवान् होना, उष्णहोना, अतितेजयुतहोना।
तपनीय० ना० पु० सूर्य्य।
तपलोक० ना० पु० स्वर्गविशेष, लोक विशेष।
तपसी० ना० पु० तपस्वी।
तपस्य० ना० पु० फागुनमास, यथा मधुश्चतथा माधव सज्ञक च शुक्रःशुचिश्चायनभो नभस्यौ तयेषु ऊर्जश्च सहस्सहस्यौ तपस्तपस्याविति तेक्रमेण १।
तपस्या० ना० स्त्री० तप, याग, ईश्वरभजन।
तपस्विनी० ना० स्त्री० तपस्या करनेहारी स्त्री।
तपस्वी० ना० पु० तपस्या करनेहारा योगी।
तपा० ना० पु० अचक, योगी, जोगी।
तपाना० स० क्रि० गर्म करना तताना, खरपना।
तपास० ना० स्त्री० किरण, धूप, परिश्रम दौड़ धूप।
तपिच्छ० ना० पु० तापिच्छ, तमाल वृक्ष।
तपी० ना० पु० तपा, मुनि।
तपेश्वर०, तपेश्वरी०, तपोधन० } ना० पु० तपी, मुनि।
तपोधना० ना० स्त्री० मुण्डी, और तपोधन की स्त्री, तपश्वरिन स्त्री।
तपोमय० गु० तपस्यायुक्त।
तप्त० गु० तत्ता, गरम, तपत।
तप्तांग० ना० पु० ज्वर विशेष, देहगरम।
तब० अव्य० तिससमय।
तबी०, तभी० } अव्य० तिसीसमय।
तम०, तम } ना० पु० अंधकारका गुण, अन्धेरा तमो गुण, राहुग्रह, क्रोध, अज्ञान, अति, पदात में बहुतातका बोधक।
तमक० ना० स्त्री० गर्व, घमण्ड, मुखका लाल होना, झुंझलाहट, टर्र।
तमकना० स० क्रि० मुखलाल होना, दहकना, दगदगाना, निष्कारणक्रोध।
तमका० ना० पु० धूपकीमार, बहुतगर्मी।
तमचुर० ना० पु० कुक्कुट, मुरगा।
तमतमाना० अ० क्रि० मुख में लाली होना, दगदगाना।
तमस० ना० पु० तम, मनु विशेष।
तमस्विनी० ना० स्त्री० राति, रैन।
तमारि० ना० पु० सूर्य्य।
तमाल० ना० पु० वृक्ष विशेष, तिलक जो चन्दन से बनाते हैं।

तमालपत्र० ना० पु० तमाट़।
तमिस्र० ना० पु० तम, अन्धकार।
तमी० ना० स्त्री० रात, निशा।
तमीचर० ना० पु० निशाचर चोर, उल्लू, चमगीदड़।
तमोगुण० ना० पु० मनोवृत्ति विशेष वा दोष जिससे काम क्रोधादि उपजते हैं।
तमोल० ना० पु० ताम्बूल, पान।
तमोलिन्० ना० स्त्री० तमोली की स्त्री।
तमोली० ना० पु० जाति विशेष जो पान बेचते हैं।
तम्बू० ना० पु० रावटी, पाल, कपड़े का कोटा।
तम्बूल० ना० पु० ताम्बूल।
तम्बेरम० ना० पु० स्तम्बेरम, हाथी।
तर० अव्य० तल, पदान्त में अधिकता का चिह्न, बहुतात का सूचक।
तरई० ना० स्त्री० तारा, नक्षत्र।
तरकारी० ना० स्त्री० भाजी।
तरंग० ना० पु० लहर, उमग, ललक।
तरंगिनि० } ना० स्त्री० नदी।
तरंगिनी० }
तरंगी० ना० पु० बहुरंगी, लहरी।
तरण० ना० पु० मुनिमय, पारहोना, उद्धार होना।
तरणि० ना० पु० सूरज, नाव।
तरणी० ना० स्त्री० नाव, तरनी।
तरन० ना० पु० तरण।
तरफना० अ० क्रि० तड़फड़ाना।
तरबूज़० ना० पु० हिन्दवाना, फल विशेष।
तरल० गु० चञ्चल, तीक्ष्ण घोड़ा, ना० पु० धतूरा वृक्ष।
तरलता० ना० स्त्री० चञ्चलता, तेजी।
तरला० ना० पु० नाम विशेष, गु० जो सब से नीचला वा दूसरे से नीचला।
तरलाई० ना० स्त्री० तरलता।
तरव० ना० पु० वृक्ष।
तरवर० ना० पु० बड़ा वृक्ष।
तरस० ना० पु० शीघ्र, जल्दी, लालच, दया कृपा, बल्क।
तरसना० अ० क्रि० जी लगाकर रहना, ललचा ना, दयालुहोना, पसीजना।
तराई० ना० स्त्री० दलदल, चराई, नीचान
तरान्० ना० पु० उगाही, प्राप्त।
तराना० स० क्रि० पारकराना, पैराना, बचाना
तरि० } ना० स्त्री० नाव, नौका।
तरी० }
तरीन० ना० स्त्री० तरीका बहुवचन, नावें।
तरु० ना० पु० वृक्ष।
तरुण० गु० युवा, जवान।
तरुणता० } ना० स्त्री०, यौवन, किशोर
तरुणाई० } जवानी।
तरुणी० ना० स्त्री० युवती, जवान स्त्री।
तरेड़ा० ना० पु० टोंटी से पानी का गिरना।
तरया० ना० पु० तारागण, तारा, कविवा यथा (दोहा० यथा तरेया प्रात के सब नृप उदास, लखिदिनमणि कर राम छवि सकुच चहुँग्रास)।
तरौस० ना० पु० किनारा, बिहारीलाल स शतिकाया (श्यामसुरति करि राधिका तर तरणिजातीर, अश्रुनकरत तरौस कों तिनक रौंहीनीर)।
तरौना० ना० पु० कर्ण भूषण विशेष बिहारील सप्तसतिकाया (सजत श्वेत सारी दप्यो त तरौनाकान, पर्यो मनौं सुरसरि सलिल रवि बिम्ब बिहान)।
तर्क० ना० स्त्री० बुद्धिसे विवेचना, अनुमान न्यायशास्त्र, दलील।
तर्कण० ना० पु० तूदन, नई बात बनाना, करना।
तर्कित० गु० शङ्कित, लखित, तर्क कियागया
तर्की० ना० स्त्री० तरपनिया, ताड़पत्र कानका भूषण विशेष।

तर्कुल० ना० पु० ताडका फल।
तर्षा० गु० धारा जो बहुत शीघ्र बहती है।
तर्जन० ना० पु० कोप।
तर्जना० अ० क्रि० कोपकरना, कूदना।
तर्जनी० ना० स्त्री० अगुष्ठके पासकी अगुली।
तर्तराना० गु० जो बहुत चिकना गोलाई म जो टपकता है, अ० क्रि० सवाग भरना, गलफरा की करना।
तर्तराहट० ना० स्त्री० सवाग, शेदिड़भवकी, गलफटाकी।
तर्पण० ना० पु० पित्रादिके निमित्त जलदानदना मगल, हुलास।
तर्राना० अ० क्रि० बड़बडाना, खुनसाना, कुड़ कुड़ाना।
तर्रारा० ना० पु० शीघ्रता।
तर्वरिया० ना० पु० खड्ग, तलवार बाधने- हारा।
तर्स० ना० स्त्री० दया, कृपा, रहम्।
तर्सों० अव्य० परसों के आगे का दिन।
तल० ना० पु० अधोभाग, पाताल विशेष, दृष्टि।
तलक० अव्य० तक, लग।
तलछट० ना० स्त्री० निचोड़, मल, ग्रूद।
तलतलाना० स० क्रि० हिलाना।
तलना० स० क्रि० घी या तेलमें भूनना।
तलपट० गु० मलमेट, चोपाट।
तलफना० अ० क्रि० तरफना।
तलमलाना० अ० क्रि० ललचाना।
तलवरिया० ना० पु० तर्वरिया।
तलवार० ना० पु० खड्ग, तरवार।
तला० ना० पु० पेंदा, थाह, जूतीके नीचे का भाग, पत्र, देवता।
तलातल० ना० पु० पाताल विशेष।
तली० ना० स्त्री० तला, बुकनी, निरपर्शी।
तलुआ०, तलूआ० } ना० पु० पाव के नीचे का भाग।
तले० अव्य० नीचे।

तलया० ना० स्त्री० छागतालाव।
तल्प० ना० स्त्री० शय्या, सज, बिस्तर।
तल्लीला० ना० स्त्री० उसकी लीला।
तवर्ग० ना० पु० तकारादि पाच अक्षर।
तवलक्षार० ना० पु० खार तरालिलाइआ।
तष्टना० स० क्रि० भागदना, बाटना।
तष्टित० गु० भाजित, बाटागया।
तसला० ना० पु० खानापकानेकापात्र विशेष।
तस्कर० ना० पु० चोर।
तस्करता० ना० स्त्री०, तस्करत्व० ना० पु०, तस्करी० ना० स्त्री० } चोरी।
तस्मिन्० सर्व० तानमें, उसमें।
तस्य० सर्व० उसका।
तस्सू० ना० पु० माप विशेष, फारसी शब्द है।
तहा अव्य० तिसस्थान, उस जगह।
तहियां० गु० पहिले।
तहीं० अव्य० तिसी या उस स्थान।
तत्तक० ना० पु० सुरयसाप।
तज्ञ० गु० ज्ञाता, ज्ञानी, स्वरूप साजा।
ता० सर्व० उसको।
ताइत ना० पु० यन्त्र, गण्डा।
ताई० ना० स्त्री० चाची।
ताऊ० ना० पु० बड़ा चचा।
तागा० ना० पु० गाड़ी विशेष जो सजी नहीं है।
तांत० ना० स्त्री० चमड का रस्सी।
तांतबांधना० स० क्रि० बक्का का चुपाना।
तांता० ना० पु० पांति, पक्ति, तार।
तांती० ना० पु० धुनिया, बिहना, पटकार।
तांवड़ा० ना० पु० तांबेका वर्ण, माणिक्य के समान खूटापत्थर।
तांबा० ना० पु० धातु विशेष।
ताक० ना० पु० दृष्टि, ढुका।
ताकना० स० क्रि० देखना, फाकना, घूरना।
ताकयाक० ना० स्त्री० ठीक समय, दृष्टिरखना।

तागा० ना० पु० सूत, धागा।
तागना० स० क्रि० सीवना, सूत डालना।
तागा० ना० पु० सूत, धागा।
ताजक० ना० पु० ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।
ताजन० ना० पु० कोड़ा।
ताटंक० ना० पु० कर्णभूषण विशेष।
ताड़० ना० पु० वृक्ष विशेष, ना० स्त्री० पहिचान।
ताड़क० ना० पु० ताड़क, ताड़ने हारा।
ताड़न० ना० पु० झिड़की, दंड, डाट।
ताड़ना० स० क्रि० परिचानना, बूझना, अटकलना, दण्डदेना, मारना।
ताड़नीय० गु० ताड़ना करने के योग्य।
ताड़का० ना० स्त्री० सुबाहुकी माता, राक्षसी।
ताड़ित० गु० ताड़न दियागया, मारागया।
ताड़ी० ना० स्त्री० ताड़कारस।
ताण्डव० ना० पु० ताण्डव, नृत्यविशेष।
तात० ना० पु० पिता, गुरु, मित्र, पुत्र, भाई, शत्रु, सेवकादिका बोधक, गु० तत्ता, गरम, उष्ण।
तातनी०, तातनो० } सर्व० उसकी, उसका।
तातें०, ताते० } सर्व० जिसमे, उससे, जिसकारण।
तात्कालिक० गु० उसी समयका।
तात्पर्य० ना० पु० अभिप्राय, प्रयोजन, मतलब हासिल।
तादात्म्य० ना० स्त्री० तत्स्वरूपता।
तादृश० गु० वैसाही।
तान० ना० स्त्री० रागका जो उच्चारण, स्वर।
तानसेन० ना० पु० रागी विशेष।
ताना० ना० पु० वस्त्रका लम्बासूत।
तानी० गु० रागी, गवैया, ना० स्त्री० तानी।
तांत्रिक० ना० पु० सिद्धान्तका जानने हारा। विद्वान, तन्त्र शास्त्रज्ञ।
तानना० स० क्रि० कसना, खींचना, फैलाना।
ताप० ना० स्त्री० उष्णता, तप्त, ज्वर, मनका दुःख दण्ड।
तापती० ना० स्त्री० नदी विशेष।
तापना० स० क्रि० आंच लेना, घमाना।
तापस० ना० पु० तपस्वी, शान्त।
तापिच्छ०, तापिञ्ज० } ना० पु० तेंदुवा वृक्ष, तमाल।
तापी० ना० स्त्री० नदी विशेष जो विन्ध्यके दक्षिण ओर है।
तापीय० ना० पु० सोनामक्खी।
तापुस० ना० पु० तमालपत्र।
ताप्य० ना० पु० सोनामक्खी।
ताफता० ना० पु० रेशमी, कपड़ा जिसको धूप छाह कहते हैं।
तामचीनी० ना० स्त्री० तांबा जिसमें और धातु भी जड़ाहोवे।
तामड़ा० ना० पु० तांबेके रंगकी मणि।
तामपुष्प० ना० पु० कुम्भी।
तामरस० ना० पु० कमल।
तामल० ना० पु० देशविशेष।
तामलकी० ना० स्त्री० भूम्यरा।
तामस० ना० पु० तमोगुणका कार्य, काम, क्रोध।
तामसिक०, तामसी० } गु० तमोगुण युक्त, क्रोधी।
तामसी० ना० स्त्री० रात, क्रोधी।
तामह० सर्व० उसमें।
तामा० ना० पु० तांबा।
तामिली० ना० स्त्री० भाषा विशेष।
तामेश्वर० ना० पु० तांबेकी भस्म।
ताम्बूल० ना० पु० पान।
ताम्र० ना० पु० तांबा।
ताम्रचूड़० ना० पु० मुरगा, कुकड़ा।
ताम्रवर्ण० ना० पु० हरिन, तांबेकारंग।
ताम्रवल्ली० ना० स्त्री० मँजीठ।
ताम्रसार० ना० पु० लालचन्दन।

ताम्राच० ना० पु० कोयल।
तार० ना० पु० वानर विशेष, मोतीमाला, निर्मल मोता, उच्चस्वर, ताड़।
तारक० ना० पु० मुक्तिदाता, रागाधातु, गुरु, उद्धारकरनेहारा, जो पारलगावे, मन्त्र विशेष दैत्य विशेष।
तारकारि० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
तारकी० ना० स्त्री० देवदाली।
तारकूट० ना० पु० रूपा, पीतल।
तारकेश्वर० ना० पु० स्वामीशिवजी।
तारण० ना० पु० उद्धार करनेहारा, उद्धार का करना, मुक्तिदाता, तारनेहारा।
तारणीय० गु० तारनेहारा, योग्य, उद्धार करने लायक।
तारतम्य० ना० पु० न्यूनाधिक, थोड़ा बहुत।
तादर्थ० ना० पु० उसका अर्थ, उसके लिये।
तारना० स० क्रि० उतारना, पारकरना, मुक्ति देना।
तारा० ना० पु० नक्षत्र, ना० स्त्री० नेत्र पुतला, अङ्गदकी महतारी।
तारागण० ना० पु० नक्षत्रों का समूह।
तारापथ० ना० पु० आकाश।
तारिका० ना० स्त्री० पुतला, नक्षत्र।
तारिणी० ना० स्त्री० उद्धार करनहारी।
तारुण्य० ना० स्त्री० तरुणता, जवान, युवा।
तारु० ना० पु० तालू।
तार्किक० ना० पु० नैयायिक न्यायशास्त्रजाननेहारा।
तार्क्ष्य० ना० पु० रसौत, गरुड़पक्षी (पत्रिनाश्यो गम्भौतौ शाकुन्ताभासपक्षिया इत्यमर)।
ताल० ना० पु० ताड़वृक्ष, तालाब, हरताल, ना० स्त्री० करताल, रागका परिमाण, मल्लयुद्ध में बाहुपर बाहु पटकना।
तालखजूरी० ना० स्त्री० दुपहरिया वृक्ष।
तालध्वज० ना० पु० श्रीबलरामजी।
तालपर्णी० } ना० स्त्री० मूसली औषधि।
तालमूलिका० }
तालवृन्त० ना० पु० ताड़का पत्ता।
तालव्य० ना० पु० जो अक्षर तालुसे उच्चारण किये जावें यथा त, थ, द, ध, न, ल, श।
ताला० ना० पु० कुफल, द्वार बन्द करने का यन्त्र।
तालाङ्क० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
ताली० ना० स्त्री० कुञ्जी, चाबी, दोनों हाथों को आपस में मारने से जो शब्द होताहै।
तालीस० ना० पु० वृक्ष विशेष।
तालु० } ना० पु० मुखमें ऊपरका भाग।
तालू० }
ताव० ना० पु० ताप, क्रोध, बल चटक, एंठ, कागजका तखता, कस।
तावत्० अव्य० इत्ता, यहांतक, तबतक।
तावना० स० क्रि० गरमकरना, कसना, ऐंठना।
ताश० } ना० पु० जरीकपड़ा, लपटा, पारसांहै।
तास० }
तासु० } सर्व० उसको उसका।
तासुको० }
ताहि० सर्व० उसको।
ताहिरी० ना० स्त्री० भोजन विशेष।
तिकातिक० ना० पु० गाड़ी आदि के बैल चलाने में यह शब्द बोलाजाताहै।
तिदरी० ना० स्त्री० तिदरी, तैसरा।
तिकोनिया० गु० तीन कोनका पदार्थ।
तिक्का० ना० पु० मासका छोटा टुकड़ा।
तिक्त० गु० तीता चरपरा, ना० पु० चिरायता।
तिक्तका० ना० स्त्री० चिरपोटा।
तिक्तचञ्चा० ना० स्त्री० कल्पी।
तिक्ता० ना० स्त्री० कालीमिरच, तारा।
तिखरा० गु० तिवारा, तिहरा।
तिखराकरना० स० क्रि० तीनबेर जोतना।
तिखारना० स० क्रि० ठहराना, सचकरना, वचन पूछना तीनबेर जोतना।
तिगुण० } गु० जिसका तीनगुण है, तिहरा।
तिगुना० }

तिग्म० ना० पु० पीर्य ।

तिजरा० ना० पु० } अन्तरिकी तीसरे दिन
तिजरी० ना० स्त्री० } जाड़ा और विषमज्वर
तिजारी० ना० स्त्री० } आना ।

तिणुका० ना० पु० घास, घासका टुकड़ा ।

तित० अ० निधर, तब ।

तितना० ना० पु० } गु० प्रमाण वा अवधि
तितनी० ना० स्त्री० } वा निश्चय बोधक ।

तितरबितर० गु० भिन्न भिन्न, मगरूटजाना ।

तितरी० } ना० स्त्री० कीट विशेष जो उ
तितली० } ड़ता है ।

तिथि० ना० स्त्री० चन्द्रकला की क्रिया से उपन्न गिनकाल, दिन, तारीख ।

तिथिपत्र० ना० पु० पत्रा, जन्त्री ।

तिथिक्षय० ना० पु० तिथिका अवम, हानि ।

तिद्वारा० ना० पु० } तीनद्वार का स्थान ।
तिद्वारी० ना० स्त्री० }

तिधारा० ना० पु० पौधा विशेष, तीन धारका नाम ।

तिनकना० अ० क्रि० झगड़ना, फड़फड़ाना, टीसना ।

तिनका० ना० पु० डाढ़ी वा टहनी वा घासका छोटाटुकड़ा ।

तिन्तिणी० ना० स्त्री० अमिली वृक्ष ।

तिन्दुक० ना० पु० तेंदुआ, तमालवृक्ष ।

तिन्दुला० ना० स्त्री० पांसरि ।

तिन्नी० ना० स्त्री० चावल या उसका पौधा विशेष ।

तिपारा० गु० तीनफेर ना० पु० तीन दरका ।

तिब्बत० ना० पु० देश विशेष जो हिमालय के उत्तर में है ।

तिमि० ना० स्त्री० मछली, अव्य० तैसे, उसी विधि ।

तिमिंगिल० ना० पु० मत्स्य, मछली ।

तिमिर० ना० पु० अन्धकार, अज्ञान ।

तिमिरहर० ना० पु० सूरज ।

तिय० } ना० स्त्री० योषिता,
तिया० } स्त्री, नारि ।

तिरकोना० गु० तीनकोनवाला पदार्थ ।

तिरखूंटी० ना० स्त्री० तीनकाने का अस्त्र विशेष ।

तिरछा० गु० टेढ़ा, आड़ा, हठीला ।

तिरछाना० स० क्रि० टेढ़ा करना, अ० क्रि० हठीला होना, हठकरना ।

तिरछी० गु० टेढ़ी, बांकी ।

तिरतिराना० अ० क्रि० रिसाना, झिरझिराना ।

तिरना० अ० क्रि० पैरना, तैरना ।

तिरपद० ना० पु० } त्रिपाई, तीनपद ।
तिरपदी० ना० स्त्री० }

तिरपन० गु० पचास और तीन, ५३ ।

तिरपौलिया० ना० पु० धनुषाकार के तीनद्वार का स्थान ।

तिरफला० ना० पु० त्रिफला, तीन फल का अर्थात् आमला, हर्र, बहेड़ा ।

तिरभंगा० गु० तिरछा खड़ाहोना ।

तिरभंगी० ना० स्त्री० छन्द विशेष ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम ।

तिरस्कार० ना० पु० निन्दा, भजन, अवज्ञा, अपमान ।

तिरसठ० गु० साठि और तीन, ६३ ।

तिरहुत० ना० पु० देश विशेष, नगर विशेष ।

तिरोधान० ना० पु० पोशाक, आच्छादन, परत ।

तिरोहित० गु० छुपाहुआ, गुप्त; ना० पु० मिथिला देश ।

तिमिरी० ना० पु० तेलकी बुंद जो पानीपर बहती है घर घरा ।

तिमिराना० अ० क्रि० झूलना, लहरना, थरथराना, चमकना यथा तेलकी बुंद पानीपर ।

तिमिराहट० ना० स्त्री० थरथराहट, फरफराहट ।

तिमिरी० ना० स्त्री० घुमड़ी ।

तिर्यक्पति० } नाम० पु० शार्दूल, सिंह।
तिर्यग्पति० }
तिल० ना० पु० पौधा विशेष जिसके बीज से तेल निकालते हैं, शरीर में काला चिह्न विशेष, घण।
तिलक० ना० पु० ललाट में विहित चन्दनादि का टीका, पीना, खली, अर्थ करना, अर्थ, वृक्ष विशेष गु० शिरोमणि।
तिलकुट० ना० पु० तिल और मिठाई विशेष।
तिलंगा० ना० पु० तेलगा, सिपाही।
तिलंगी० ना० स्त्री० गुड्डा, पतंग।
तिलचट्टा० ना० पु० कीटविशेष।
तिलचावली० ना० स्त्री० तिल और चावलों की मिलौनी, काले और सफेद बालों की मिलावा।
तिलचूरी० ना० स्त्री० मिठाई विशेष।
तिलड़ा० ना० पु० } तीन लड़का, भूषण वि
तिलड़ी० ना० स्त्री० } शेष।
तिलपर्णी० ना० स्त्री० चन्दन।
तिलपिष्टक० ना० पु० पीना, तिलकी खली।
तिलवर० ना० पु० पक्षी विशेष।
तिलभेद० ना० पु० पोस्त का बिरवा।
तिलहा० गु० तेलिया।
तिलुआ० ना० स्त्री० बिलई।
तिलोत्तमा० ना० स्त्री० मुख्य अप्सरा।
तिष्ठना० अ० क्रि० ठहरना, स्थिरहोना, विराजना।
तिष्ठित० गु० ठहराहुआ।
तिष्य० ना० स्त्री० आठवां नक्षत्र पुष्य।
तिसका० सर्व० उसका, जिसका।
तिसरायत० ना० पु० मध्यवर्ती गीरयन, दूजागी, अपनायतरहित।
तिसून० ना० पु० औषध विशेष।
तिहत्तर० गु० सत्तर और तीन, ७३।
तिहरा० गु० तिगुणा, तिखड़ा।
तिहराना० स० क्रि० तिहरा करना।
तिहरावट० ना० स्त्री० तिगुण करने का काम।
तिहरे० सर्व० तिहारे।
तिहाई० ना० स्त्री० तीसरा भाग।
तिहायत० ना० स्त्री० तिसरायत।
तिहारी० ना० स्त्री० }
तिहारे० ना० पु० } सर्व० तेरी, तेरे।
तिहारो० ना० पु० }
तिहु० गु० तीनो, तीन।
तिहुपुर० } ना० पु० तीनोंलोक
तिहुलोक० }
तीखा० गु० तीक्ष्ण, चरपरा।
तीखी० गु० सूक्ष्मस्वर, पैनी।
तीखुर० ना० पु० श्वेत वस्तु, जिसका व्रत के दिन फलाहार करते हैं।
तीक्ष्ण० गु० ताक्ष्ण, तीव्र, तेज।
तीज० ना० स्त्री० तृतीया।
तीजा० गु० तीसरा, मृतक के तीसरे दिन का काम व तीसरा दिन।
तीजिया० } ना० स्त्री० श्रावण सुदी तीज का
तीजै } त्योहार।
तीत० गु० तीता।
तीतर० ना० पु० पक्षीविशेष।
तीतरी० ना० स्त्री० तितरी, पतंगाविशेष।
तीता० गु० कड़ुवा, चड़पड़ा, तीखा।
तीन० गु० त्रि, ३।
तीनतेरह० गु० तित्तर बित्तर।
तीय० ना० स्त्री० अबला, स्त्री।
तीयल० ना० स्त्री० स्त्री के पहिरने के तीनों वस्त्र।
तीर० ना० समुद्र वा नदी का तट, अ० ना० विग, पास।
तीरथ० ना० पु० पुण्यस्थान, यात्रा।
तीरथराज० ना० पु० प्रयाग।
तीर्थ० ना० पु० तीरथ।
तीली० ना० स्त्री० पिंजड़ा की कामी।
तीव्र० गु० अत्यन्त कड़ुवा, तीखा, पैना।

तीसरा० गु० तृतीय।
तीसी० ना० स्त्री० अलसी, जिसका तेल निकालते हैं।
तीक्ष्ण० ना० पु० मरुआ, मिरच, गु० चरपरा, तत्ता, तीखा, झांझिया, पैना, तीता।
तुक० ना० स्त्री० पद, सम्बन्ध।
तुक्का० ना० पु० } तुकली० ना० स्त्री० } तुक्कल० ना० पु० } छोटी पतंग विशेष।
तुक्का० ना० पु० बाण जिसकी नोक नहीं है, छोटा पर्वत।
तुगाक्षीरी० } तुकाक्षीरी० } ना० पु० वंशलोचन।
तुंग० गु० ऊंचा, लम्बा, समूह।
तुंगवृक्ष० ना० पु० नारियल।
तुच्छ० गु० स्वल्प, कुत्सित, अपमानी।
तुड़ाना० स० क्रि० तोड़ना।
तुण्ड० ना० पु० चोंच, मुख।
तुतरा० गु० जो तुतलाता हो।
तुतराना० अ० क्रि० अधूरा बोलना जैसे बालक बोलते हैं।
तुतला० गु० तुतरा।
तुतलाना० अ० क्रि० तुतराना।
तुत्थ० } तुत्थिक० } ना० पु० नीलाथोथा।
तुनतुनाना० अ० क्रि० सरंगी देना।
तुन० ना० पु० वृक्षविशेष।
तुन्दिल० गु० तोंदैल, बड़ी तोंदका।
तुन्न० ना० पु० तुन, टूटा।
तुपक० ना० पु० बन्दूक।
तुपकिया० ना० स्त्री० छोटी बन्दूक।
तुम० सर्व० मध्यमपुरुष का सूचक वा वाचक।
तुमतनौ० सर्व० तुम्हारा।
तुमाई० ना० स्त्री० तुमाने का पैसा।
तुमाना० स० क्रि० धुनवाना।
तुमुल० ना० पु० रौला, हुल्लड़।
तुम्बा० ना० पु० लौका, कद्दू।
तुम्बिका० } तुम्बी० } ना० स्त्री० लौकी, कद्दू, बजाने की तोंबी जो मदारी लोग रखते हैं।
तुरई० ना० स्त्री० तरकारी विशेष।
तुरक० ना० पु० तुरक, देशविशेष।
तुरग० } तुरंग० } तुरंगम० } ना० पु० घोड़ा।
तुरंगाहा० ना० स्त्री० असगन्ध।
तुरत० } तुरंत० } अव्य० शीघ्र, अभी।
तुरपना० स० क्रि० सीना, टाकना विशेष।
तुरही० ना० स्त्री० बाजा विशेष नरसिंघा।
तुराई० ना० स्त्री० तोशक, रजाई।
तुराना० अ० क्रि० छूटजाना, छुड़ाना, मर्यादा से बाहिर चलना, बहिचलना।
तुराषाट्० ना० पु० इन्द्र।
तुरिय० ना० पु० घोड़ा।
तुरी० ना० पु० घोड़ा ना० स्त्री० तुरही।
तुरीय० ना० पु० मुक्तअवस्था, मुक्ति, मोक्ष चौथा
तुरुक० } तुरुष्क० } ना० पु० यवन, देश विशेष।
तुर्त० } तुर्तफुर्त० } तुर्ताव० } तुर्तीफुर्ती० } अव्य० तुरन्त, शीघ्र।
तुल० गु० तुल्य।
तुलना० अ० क्रि० तुलापरचढ़ना, तुल्यहोना।
तुलसा० } तुलसी० } ना० स्त्री० छोटा वृक्ष जिसकी पत्ती विष्णु वा शालग्राम को चढ़ाते हैं।
तुलसीदास० ना० पु० प्रसिद्ध भक्त श्रीरामायण भाषा बनानेहारे।
तुला० ना० स्त्री० तराजू, अपनी देहकी बराबर दान देना, सातवीं राशि विशेष।
तुलाना० स० क्रि० तौलाना, तुलापर चढ़ाना

तथ्या ठीक कराना।
तुलित० गु० तुलाहुआ, तुलापर चढ़ाया गया।
तुली० ना० स्त्री० मोगर्सीक, चित्र लिखने की कलम।
तुल्य० ना० पु० समान, बराबर, सदृश।
तुल्यता० ना० स्त्री० समानता, बराबरी।
तुवर० ना० पु० तिल।
तुवरी० ना० स्त्री० फटकरी।
तुष० ना० पु० धानादि का छिलका।
तुषार० ना० पु० शीत, पाला, हिम।
तुष्ट० गु० प्रसन्न, तृप्त, सन्तोषी।
तुष्टता० ना० स्त्री० प्रसन्नता, तृप्ति, सन्तोष।
तुष्टित० गु० प्रसन्नित, सन्तोषित।
तुसार० ना० पु० तुषार।
तुहिन० ना० पु० तुसार तुषार, हिम।
तुही० सर्व० तुम्हीं।
तू० सर्व्व० मध्यमपुरुष का एक वचन।
तूतांकरना० स० क्रि० तुकारना।
तूकारना० स० क्रि० अव तूं करना।
तूख्यो० गु० सन्तोषित।
तूण० } ना० पु० बाण रखने का घर, तरकश।
तूणीर० }
तूनई० गु० स्त्री० टोंटीदार मिट्टी का बर्तन।
तूतिया० ना० पु० नीलाथोथा।
तूंबरि० ना० स्त्री० तुम्बी।
तूमना० } स० क्रि० रुई का हाथ से बनाना।
तूमा० }
तूर० ना० पु० तूर्य, नक्कारह।
तूरक० ना० पु० जलपिप्पल।
तूरना० स० क्रि० तोड़ना।
तूरी० ना० पु० धतूरा।
तूर्ण० ना० पु० शीघ्र, जल्द।
तूर्य० ना० पु० नक्कारह, नगाड़ा।
तूल० ना० स्त्री० निर्बीज कपास अर्थात् रूई [illegible]।
तूलनीय० ना० पु० कदम वृक्ष।
तूलिनी० ना० पु० सेमर वृक्ष।

तूवर० ना० पु० राजपूतों में जातिविशेष।
तृण० ना० पु० घास।
तृणराज० ना० पु० नारियल, उख, ताड़वृक्ष।
तृणवत्० गु० घास के समान निकम्मा।
तृणावर्त्त० ना० पु० दैत्यविशेष, बवंडरा, घास का भंवर।
तृणोदक० ना० पु० घास पानी।
तृतीय० गु० तीसरा।
तृतीया० ना० स्त्री० तीज, तीसरीतिथि, तीसरी।
तृतीयान्त० गु० जिस के अन्त में तृतीया का चिह्न है।
तृतीयांश० ना० पु० तीसरा भाग।
तृप्त० गु० सन्तुष्ट।
तृप्ति० ना० स्त्री० भोजनादि करके सन्तोष।
तृषुता० } ना० स्त्री० निमाज।
तृष्टस्० }
तृषा० ना० स्त्री० प्यास।
तृषार्त्त० गु० पिपासाकरके व्याकुल।
तृषान्त० } गु० पियासा, [illegible]।
तृषित० }
तृष्णा० ना० स्त्री० प्यास, [illegible]।
ते० अव्य० से, [illegible]।
ते० सर्व० वे, [illegible]।
तैंतालीस० गु० [illegible]।
तैंतीस० गु० [illegible]।
तेंदुआ० ना० पु० [illegible]।
तेंदू० ना० पु० [illegible]।
तेग० ना० [illegible]।
तेज० ना० पु० [illegible]।
तेजपत्र० ना० पु० [illegible]।
तेजवान० ना० पु० [illegible]।
तेजवन्त० } [illegible]।
तेजस्वी० }
तेजबल० ना० पु० [illegible]।
तेजवती० } ना० स्त्री० [illegible]।
तेजस्विनी० }

तेजस्कर० ना० पु० वीर्य्य बढ़ानेहारा, द्रव्य, पुष्ई।

तेजस्वी० } गु० प्रतापी, दीप्तिमान्, तेज वा
तेजोमय० } प्रकाश से युक्त।

तेता० गु० तितना।

तेमन० गु० आद्रा, गीलाई, व्यञ्जन।

तेरस० ना० स्त्री० त्रयोदशी।

तेरह० गु० दश और तीन, १३।

तेरुस० ना० पु० तीसरा वर्ष, त्योरस।

तेल० ना० पु० चिकना, चिकनाहट, तिलादि का रस।

तेलिन्० ना० स्त्री० तेली की स्त्री।

तेलिया० ना० पु० तेलकासा रंगविशेष।

तेली० ना० पु० तेलकार जाति विशेष।

तेवर० ना० स्त्री० घुमनी, घुमड़ी गु० तीलड़ा।

तेवराना० अ० क्रि० घुमड़ी में होना, गिर-पड़ना।

तेवरी० ना० स्त्री० घुमड़ी, घुमनी दृष्टि।

तेवहार० ना० पु० पर्व, त्योहार।

तेह० ना० पु० क्रोध, माफ, बहादुरी, साहस।

तेहर० ना० स्त्री० स्त्रीके पांवका गहनाविशेष।

तेहा० ना० पु० तेह।

तेहीं० अव्य० अभी, सर्व०, उसको।

तैतिल० ना० पु० करणविशेष।

तैरना० स० क्रि० परना।

तैल० ना० पु० तेल।

तैलकार० ना० पु० तेली।

तैलंग० ना० पु० कर्णाटक देश वा उसके वासी।

तैलगा० ना० पु० तैलगदेश के लोग, और अगरेजों के प्यादे।

तैसा० गु० तिसके समान, अ० य० त्योंकर।

तो० अव्य० तब, तदा, निस्सन्देह, सर्व० तुझ।

तों० अव्य० योंकर।

तोंद० ना० पु० बड़ा पेट।

तोंदी० ना० स्त्री० नाभि।

तोंदिल० } गु० जिसका पेट बड़ा है।
तोंदैला० }

तोंहीं० अव्य० तभी, उसी समय में।

तोकह० सर्व० तुझको।

तोड़० ना० पु० फूट, नदी की धारा का बल, दही का पानी।

तोड़जोड़० ना० स्त्री० गात बनाना।

तोड़ना० स० क्रि० फोड़ना, रुपया, भुनाना, टुकड़ा करना।

तोड़ल० ना० पु० कड़ा, सगौरा हाथ के।

तोड़वाना० स० क्रि० फोड़वाना, टुकड़े कराना, रुपया भुनवाना वा भुनाना।

तोड़ा० ना० पु० चटका, सहस्र रुपयों की थैली, रजक में आगि लगानेकीरस्सु, खरची, गलेकी साकर, धर्मीका टुकड़ा।

तोड़ाना० स० क्रि० तोड़वाना।

तोतला० गु० हकला।

तोतलाना० अ० क्रि० हकलाना।

तोता० ना० पु० शुक, सुगा।

तोपना० स० क्रि० ढपना, गाड़ना।

तोपाना० स० क्रि० गड़वाना।

तोवड़ा० ना० पु० थैली जिसमें घोड़े को दाना दिया जाता है।

तोमर० ना० पु० बाण तीर, छन्द विशेष।

तोय० ना० पु० जल, पानी।

तोयनिधि० ना० पु० समुद्र, जलधि।

तोयपिप्पली० ना० स्त्री० जलपीपल।

तोर० ना० पु० दहल विशेष, सर्व० तेरा।

तोरण० ना० पु० फूलोंकी माला जो आनन्द वा त्योहारके दिन बांधते हैं।

तोरी० ना० स्त्री० ककरी विशेष।

तोल० ना० स्त्री० तौल।

तोलक० } ना० पु० बाट जो बारह मासे भर
तोला० } ढाई वा सोलह मासे भर।

तोष० ना० पु० हर्ष, तृप्ति, धीरज।

तोषक० गु० हर्षदाता, धीरजदाता।

तोषित० गु० हर्षित, धीरजमान।
तोहि० सर्व्व० तुझको।
तौ० अव्य० तब, तो।
तौंसना० अ० क्रि० धूपके कारण से शिथिल होना।
तौल० ना० पु० जाख, परिमाण की क्रिया।
तौलना० स० क्रि० जोखना, परिमाण करना।
तौलयाई० } ना० स्त्री० तोलने का काम या
तौलाई० } पैसा।
तौलाना० स० क्रि० जोखवाना।
तौलिया० } ना० स्त्री० पात्रविशेष।
तौली० }
त्योंही० अव्य० अभी।
त्यौं हू० अव्य० तथापि।
त्यक्त० गु० जिसका त्यागदिया।
त्याग० ना० पु० छुड़ाव, वैराग्य।
त्यागन० ना० पु० तजन, विराग, छोड़न।
त्यागना० स० क्रि० छोड़ना, तजना।
त्यागी० गु० वैरागी, छोड़ेहुये।
त्याज्य० गु० जो त्यागने के योग्य है।
त्यौं० अव्य० तैस, इस प्रकार, एकही समय में।
त्यौंधा० गु० धुंधला।
त्योनार० ना० स्त्री० चतुराई, चालाकी।
त्योनारी० ना० स्त्री० स्त्री जो अपना काम बड़ी चतुरता से स्वच्छ बनाती है।
त्योरस० ना० पु० दो वर्ष पहिले।
त्योरी० ना० स्त्री० मथे की सकोड़, घुमनी।
त्योरीचढ़ाना० स० क्रि० क्रोधित होना।
त्योहार० ना० पु० पर्व, पर्वी, श्राद्धकादिन।
त्रपा० ना० स्त्री० लाज, हया।
त्रय० गु० त्रि, ३।
त्रयईर्षा० ना० स्त्री० तीन ईर्षा अर्थात् पुत्र, सम्पत्ति, धर्म।
त्रयगंगा० ना० स्त्री० तीनगंगा अर्थात् मदाकिनी, भागीरथी, प्रभावती।
त्रयताप० ना० स्त्री० तीनताप अर्थात् दैहिक, दैविक, भौतिक।
त्रयपावक० ना० पु० तीन अग्नि अर्थात् आहवनीय, दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य अथवा जठरानल, दावानल, बड़वानल।
त्रयरेखा० ना० स्त्री० तीनरेखा अर्थात् त्रिरचादि, तीन लकीर।
त्रयरोग० ना० पु० तीन रोग अर्थात् वात, पित्त, कफ।
त्रयीतनु० ना० पु० सूर्य।
त्रयोदशी० ना० स्त्री० तेरस।
त्र्यम्बक० ना० पु० श्रीशिवजी।
त्रसित० गु० डरता हुआ, भयवान्।
त्रस्त० गु० कायर, डरपोक, नामर्द।
त्राण० ना० पु० रक्षा, निस्तार, उद्धार।
त्राणकर्त्ता० गु० रक्षक।
त्राणी० गु० त्राणकर्त्ता रक्षक।
त्रात० गु० बचायागया, रक्षित।
त्राता० रक्षक, पालक।
त्रास० ना० पु० भय, दुःख।
त्रासक० गु० भयदायक, दुःखदाता।
त्रासा० } गु० भयवान, डराहुआ।
त्रासित० }
त्राहि० } अव्य० दयाचाहने का शब्द, बचना
त्राहि० } चाह का शब्द।
त्रि० गु० तीन, ३ परन्तु यह शब्द विशेष के आगे योगहोता है यथा, त्रिभुवन, त्रिपुर।
त्रिश० गु० तीसरा ३रा।
त्रिंशति० गु० तीस, ३०।
त्रिक० } ना० पु० गोखुरू।
त्रिकटु० }
त्रिकाल० ना० पु० तीनकालअर्थात् भूत, भविष्य, वर्तमान अथवा प्रातःकाल, मध्याह्न, सायं।
त्रिकुट० ना० पु० सिंघाड़ा।
त्रिकुटा० ना० पु० सोंठ, मिरच, पीपर।
त्रिकूट० ना० पु० पर्वत विशेष जिसपर लंकाहै।

तेजस्कर० ना० पु० वीर्य्य बढ़ानेहारा, द्रव्य, पुष्टई ।
तेजस्वी० } गु० प्रतापी, दीप्तिमान, तेज वा
तेजोमय० } प्रकाश से युक्त ।
तेता० गु० तितना ।
तेमन० गु० आदा, गीलाई, व्यञ्जन ।
तेरस० ना० स्त्री० त्रयोदशी ।
तेरह० गु० दश और तीन, १३ ।
तेरुस० ना० पु० तीसरा वर्ष, त्योरस ।
तेल० ना० पु० चिकना, चिकनाहट, तिलादि का रस ।
तेलिन० ना० स्त्री० तेली की स्त्री ।
तेलिया० ना० पु० तेलकासा रंगविशेष ।
तेली० ना० पु० तेलकार जाति विशेष ।
तेवर० ना० स्त्री० घुमनी, घुमड़ी गु० तीलड़ा ।
तेवराना० अ० क्रि० घुमड़ी में होना, गिर-पड़ना ।
तेवरी० ना० स्त्री० घुमड़ी, घुमनी दृष्टि ।
तेवहार० ना० पु० पर्व्व, त्योहार ।
तेह० ना० पु० क्रोध, झांझ, बहादुरी, साहस ।
तेहर० ना० स्त्री० स्त्रीके पांवका गहनाविशेष ।
तेहा० ना० पु० तेह ।
तेहीं० अव्य० यभी, सर्व्व, उनकी ।
तैतिल० ना० पु० करणविशेष ।
तैरना० स० क्रि० पैरना ।
तैल० ना० पु० तेल ।
तैलकार० ना० पु० तेली ।
तैलंग० ना० पु० कर्णाटक देश वा उसके वासी ।
तैलगा० ना० पु० तैलगदेश के लोग, और अंगरेजों के प्यादे ।
तैसा० गु० तिसके समान, अ०य० ऐसेकर ।
तो० अव्य० तब, तदा, निस्सन्देह, मन्द्र, तुझे ।
तौं० अव्य० सोकर ।
तोंद० ना० पु० बड़ा पेट ।
तोंदी० ना० स्त्री० नाभि ।
तोंदैल० } गु० जिसका पेट बड़ा है ।
तोंदैला० }
तोंही० अव्य० तभी, उसी समय में ।
तोकह० सर्व० तुझको ।
तोड़० ना० पु० पूर, नदी की धारा का बल, दही का पानी ।
तोड़जोड़० ना० स्त्री० बात बनाना ।
तोड़ना० स० क्रि० फोड़ना, ढाना, भुनाना, टुकड़ा करना ।
तोड़ल० ना० पु० कड़ा, सगोरा हाथ के ।
तोड़वाना० स० क्रि० फोड़वाना, टुकड़े कराना, रुपया भुनवाना वा भुनाना ।
तोड़ा० ना० पु० चटका, सहस्र रुपयों की थैली, रञ्जक में आगि लगानेकीवस्तु, चरची, गलेकी साकर, धर्मका टुकड़ा ।
तोड़ाना० स० क्रि० तोड़वाना ।
तोतला० गु० हकला ।
तोतलाना० अ० क्रि० हकलाना ।
तोता० ना० पु० शुक, सुगा ।
तोपना० स० क्रि० ढपना, गाड़ना ।
तोपाना० स० क्रि० गड़वाना ।
तोबड़ा० ना० पु० थैली जिसमें घोड़े को दाना दिया जाता है ।
तोमर० ना० पु० बाण, तीर, छन्द विशेष ।
तोय० ना० पु० जल, पानी ।
तोयनिधि० ना० पु० समुद्र, जलधि ।
तोयपिप्पली० ना० स्त्री० जलपीपल ।
तोर० ना० पु० दहल हिलोर, सर्व० तेरा ।
तोरण० ना० पु० फूलोंकी माला जो आनन्द वा त्योहारके दिन बांधते हैं ।
तोरी० ना० स्त्री० तरकरी विशेष ।
तोल० ना० स्त्री० तौल ।
तोलक० } ना० पु० बाट जो बारह मासे भर
तोला० } होताहै वा सोलह मासे भर ।
तोष० ना० पु० हर्ष, तृप्ति, धीरज ।
तोषक० गु० हर्षदाता, धीरजदाता ।

तोषित० गु० हर्षित, धीरजवान्।
तोहि० सर्व० तुमको।
तौ० अव्य० तब, तो।
तौसना० अ० क्रि० धूपके कारण से शिथिल होना।
तौल० ना० पु० जाल, परिमाण की क्रिया।
तौलना० स० क्रि० जोखना, परिमाण करना।
तौलवाई० } तौलाई० } ना० स्त्री० तौलने का काम या पैसा।
तौलाना० स० क्रि० जोखवाना।
तौलिया० } तौली० } ना० स्त्री० पात्रविशेष।
तौहीं० अव्य० अभी।
तौहू० अव्य० तथापि।
त्यक्त० गु० जिसको त्यागदिया।
त्याग० ना० पु० छुड़ाव, वैराग्य।
त्यागन० ना० पु० तजन, विराग, छोड़न।
त्यागना० स० क्रि० छोड़ना, तजना।
त्यागी० गु० वैरागी, छोड़ेहुये।
त्याज्य० गु० जो त्यागने के योग्य है।
त्यों० अव्य० तैसे, इस प्रकार, एसही समय में।
त्योंधा० गु० चुंधला।
त्योनार० ना० स्त्री० चतुराई, चालाकी।
त्योनारी० ना० स्त्री० स्त्री जो अपना काम बड़ी चतुरता से स्वच्छ बनाती है।
त्योरस० ना० पु० दो वर्ष पहिले।
त्योरी० ना० स्त्री० मथे का सकोड़, भ्रुमनी।
त्योरीचढ़ाना० अ० क्रि० क्रोधित होना।
त्योहार० ना० पु० पर्व, पवनी, आनन्दकादिन।
त्रपा० ना० स्त्री० लाज, हया।
त्रय० गु० त्रि, ३।
त्रयईर्षा० ना० स्त्री० तीन ईर्षा अर्थात् पुत्र, सम्पत्ति, पत्नी।
त्रयगंगा० ना० स्त्री० तीनगंगा अर्थात् मंदाकिनी, भागीरथी, प्रभावती।
त्रयताप० ना० स्त्री० तीनताप अर्थात् दैहिक, दैविक, भौतिक।
त्रयपावक० ना० पु० तीन अग्नि अर्थात् आह्वनीय, दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य अथवा जठरानल, दावानल, बड़वानल।
त्रयरेखा० ना० स्त्री० तीनरेखा अर्थात् त्रिवल्यादि, तीन लकीर।
त्रयरोग० ना० पु० तीन रोग अर्थात् वात, पित्त, कफ।
त्रयीतनु० ना० पु० सूर्य।
त्रयोदशी० ना० स्त्री० तेरस।
त्र्यम्बक० ना० पु० श्रीशिवजी।
त्रसित० गु० डरता हुआ, भयवान्।
त्रस्त० गु० कायर, डरपोक, नामर्द।
त्राण० ना० पु० रक्षा, निस्तार, उद्धार।
त्राणकर्त्ता० गु० रक्षक।
त्राणी० गु० त्राणकर्त्ता, रक्षक।
त्रात० गु० बचायागया, रक्षित।
त्राता० रक्षक, पालक।
त्रास० ना० पु० भय, दुःख।
त्रासक० गु० भयदायक, दुःखदाता।
त्रासा० } त्रासित० } गु० भयवान्, डराहुआ।
त्राह० } त्राहि० } अव्य० दयाचाहना का शब्द, पश्चाताप का शब्द।
त्रि० गु० तीन, ३ परन्तु यह शब्द विशेष के आगे योगहोता है यथा, त्रिभुवन, त्रिपुर।
त्रिंश० गु० तीसवां ३०वां।
त्रिंशति० गु० तीस, ३०।
त्रिक० } त्रिकटु० } ना० पु० गोखुरू।
त्रिकाल० ना० पु० तीनकालअर्थात् भूत, भविष्य, वर्तमान अथवा प्रात काल, मध्याह्न, मध्या
त्रिकुट० ना० पु० सिघाड़ा।
त्रिकुटा० ना० पु० सोंठ, मिरच, पीपर।
त्रिकूट० ना० पु० पर्वत विशेष जिसपर लङ्का है।

त्रिकोण० ना० पु० तीनकोन, तीनकोनेवाला सिघाड़ा।

त्रिगुण० ना० पु० तीनबेर, तीनगुण अर्थात् सात्विक, राजस, तामस।

त्रिजग० ना० पु० तीनलोक, तिर्य्यग्।

त्रिजगयोनि० ना० पु० पशु पक्षी आदि।

त्रिज्या० ना० स्त्री० व्यासार्द्ध, आधाविस्तार।

त्रिदन्ता० ना० पु० महामदा।

त्रिदश० ना० पु० देवता, गु० तेरह, १३।

त्रिदशकश्यपस्त्री० ना० स्त्री० तेरहकश्यप की स्त्री अर्थात् दिति, अदिति, कद्रु, विनता, आंधा मा भानुनागेश्वरी, आणतिलका, षष्टन्त्रिका, परावर्ता, मघावर्ती, कतकदरया, मध्या व नक्षमाला १३।

त्रिदोष० ना० पु० तीनदोष अर्थात् कफ, वात और पित्त।

त्रिदशालय० ना० पु० स्वर्ग।

त्रिदिव० ना० पु० स्वर्ग।

त्रिधा० गु० तीनठाम, तीनप्रकार।

त्रिध्वनि० ना० स्त्री० तीनध्वनि अर्थात् मधुर, मंद, गम्भीर।

त्रिनयन० } ना० पु० श्रीसदाशिव।
त्रिनेत्र० }

त्रिनेत्रा० ना० स्त्री० भवानी विशेष।

त्रिपथगा० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।

त्रिपद० ना० पु० } तिपाई।
त्रिपदी० ना० स्त्री० }

त्रिपर्णी० ना० स्त्री० शालपर्णी।

त्रिपादिका० ना० स्त्री० हंसपादी।

त्रिपु० ना० पु० रांगा, धातु विशेष।

त्रिपुरा० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।

त्रिपुटा० ना० स्त्री० हंसपादी।

त्रिपुटी० ना० स्त्री० निसोत।

त्रिपुण्ड्र० ना० पु० शाक्तमतका तिलक जो आड़ा होता है, वैष्णवमतका तिलक जो खड़ा होताहै।

त्रिपुर० ना० पु० तिलोक, दैत्यविशेष।

त्रिपुरारि० ना० पु० श्रीमहादेव जी।

त्रिपुस० ना० पु० खीरा।

त्रिपौलिया० ना० पु० तीन द्वारका मार्ग।

त्रिफला० ना० पु० तीनफल अर्थात् आंवला, हड़, बहेड़ा।

त्रिभंगा० गु० तिरछा खड़ाहोना।

त्रिभंगी० ना० पु० छंद विशेष श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम।

त्रिभुज० गु० तीन भुजाका, त्रिकोना।

त्रिभुवन० ना० पु० तीन लोक अर्थात् स्वर्ग, मर्त्य, पाताल।

त्रिमुहानी० ना० स्त्री० त्रिवेणी।

त्रिय० } ना० स्त्री० अबला, पत्नी नारी।
त्रिया० }

त्रिलोक० ना० पु० त्रिभुवन, और ऊर्द्ध्व मध्य अध वा उत्तम मध्यम और नीच।

त्रिलोकी० ना० पु० तीनलोकका सरदार।

त्रिलोह० ना० पु० पीतल।

त्रिशंकु० ना० पु० राजा विशेष।

त्रिशूल० ना० पु० महादेवका अस्त्र विशेष।

त्रिसन्ध्या० ना० स्त्री० तीन सन्ध्या अर्थात् प्रातःकाल, मध्याह्न, सन्ध्या।

त्रिसन्ध्यास्वरूप० ना० पु० रक्त,शुक्ल, श्याम

त्रिसोता० } ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
त्रिस्रोता० }

त्रुटि० ना० स्त्री० टूट, न्यूनता।

त्रेता० ना० पु० युग विशेष।

त्रैराशिक० गु० तीनराशि का गणित।

त्रोटक० ना० पु० छंद विशेष।

त्रोण० ना० पु० तूण, तरकश।

त्व० सर्व० तू।

त्वक्० ना० स्त्री० छाल, स्पर्शेन्द्रिय, खाल।

त्वचा० ना० स्त्री० छिलका, वक्कला, खाल

त्वची० ना० पु० वास, गु० त्वचाधारी।

त्वदंघ्रि० ना० पु० तुम्हारे चरण।

त्वदीय० सर्व्व० तुम्हारी, रामायणे यथा (त्वदीयभक्तिसंयुतं)।
त्वरा० ना० स्त्री० उतावली।

[थ]

थई० ना० स्त्री० वस्त्रादि का ढेर।
थंब० } थंभा० } थंभ० } ना० पु० खम्भ, थूनी, स्तम्भ।
थंभना० अ० क्रि० ठहरना, रुकना, संभलना।
थक० ना० पु० थक्का।
थकथका० गु० लथपथ।
थकना० अ० क्रि० माँदा होना, हारना।
थका० गु० माँदा, हारा।
थकाना० स० क्रि० माँदा करना, हराना।
थकित० गु० थका, जो रुकगया, अचम्भित।
थक्का० ना० पु० थकान।
थन० ना० पु० गौ आदि का स्तन।
थनी० ना० स्त्री० घोड़े का दोष विशेष।
थनैला० ना० पु० थनका रोगविशेष।
थनेसरी० ना० पु० कुरुक्षेत्र के ब्राह्मण।
थपक० ना० पु० थाप।
थपड़ा० ना० पु० थप्पड़, चपेटा।
थपड़ी० गौ० स्त्री० ताली।
थपना० स० क्रि० स्थापना, बैठाना, अ० क्रि० स्थापित होना, बैठजाना।
थपा० गु० स्थापित, बैठायाहुआ।
थपाना० स० क्रि० स्थापित कराना, बैठाना।
थपेड़ा० } थप्पड़० } ना० पु० चपेटा।
थमना० अ० क्रि० रुकना।
थम्भना० } थंभना० } अ० क्रि० रुकना।
थर० ना० पु० सिंह, और शेरका खोह।
थरथर० गु० कम्पा।
थरथराना० अ० क्रि० कांपना, कम्पाना।
थरथराहट० } थरथरी० } ना० स्त्री० कपकपी, कम्पाहट।
थरहरना० } थरहराना० } थर्राना० } अ० क्रि० कांपना, कम्पना, हलहलाना।
थल० ना० पु० भूमि, स्थल।
थलकना० अ० क्रि० धड़कना, तलपना।
थलथलकरना० } थलथलाना० } अ० क्रि० हिलना, यथा स्थूल मनुष्य का मांस हिलता है।
थलचर० } थलचारी० } गु० मनुष्यादि।
थलिया० ना० स्त्री० भोजन करनेका पीतलादि का पात्र।
थली० ना० स्त्री० घर, पांड़र।
थवई० ना० पु० राज, मीमार, घरकारी।
थहराना० अ० क्रि० कांपना।
थांग० ना० स्त्री० चोरों की मांदि।
थांगी० ना० पु० चोर, धनिक।
थांम० ना० पु० स्तम्भ।
थांमना० स० क्रि० टेकना, थाड़ना, अटकाना, रोकना, सहायता करना।
थांवला० ना० पु० वृक्ष आदि का थाला।
थाकना० अ० क्रि० थकना।
थाका० गु० थका।
थाती० } थाथी० } ना० स्त्री० धरोहर, अमानत, सौंपा।
थान० ना० सारा कपड़ा, अश्वादि के रहने का स्थान, मुद्रा, कद, मकान, ठिकाना।
थाना० ना० पु० रक्षकों का स्थान, बांसों का ढेर।
थानी० ना० पु० स्थान का स्वामी, थांगी।
थाप० ना० स्त्री० धौल, थप्पड़, पशु का पांव, मर्याद, बैठक।
थापना० स० क्रि० थोपना, धौलियाना, ना० पु० व्यवहारविशेष स्थापन करना।

थापा० ना० पु० पशुके पांवका चिह्न, थपा।
थापित० गु० बैठायागया, स्थापित, नियत भया, मुक़र्रर हुआ।
थापी० ना० स्त्री० थापने का शब्द, काठकी वस्तु विशेष जिससे छत पीटते हैं।
थाम० ना० पु० थम्भ, थूनी।
थामना० स० क्रि० रोकना, पकड़ना।
थार० } ना० पु० बड़ी थाली।
थाल० }
थाला० ना० पु० थावला, थाल।
थाली० ना० स्त्री० भोजन करने का पात्रविशेष।
थावर० ना० पु० स्थावर, वृक्षादि, अचल।
थाह० ना० स्त्री० नदी की तली, नदी में वह स्थान जहां पैदल उतर जावें।
थाहा० ना० पु० नदीका स्थान जो गहिरा न हो।
थाही० ना० स्त्री० थाहपना गु० जो गहरी न हो।
थिति० ना० स्त्री० स्थिति, थिरता, पालन।
थिर० गु० स्थिर, अचल क़ायम।
थिरकना० अ० क्रि० चमत्कार करके नाचना।
थिरकाना० स० क्रि० चमत्कार से नचाना।
थिरकी० ना० स्त्री० चमत्कार, घुमाव।
थिरता० ना० स्त्री० } स्थिरता, अचलता।
थिरत्व० ना० पु० }
थिरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
थिराना० स० क्रि० बैठाना, ठहराना, अ० क्रि० बैठना, ठहरना, पानी की मिट्टी का बैठजाना।
थीर० गु० सुस्थित, स्थिर, मन्दा।
थुकथुकाना० अ० क्रि० कुवासनादि घिनकी वस्तु देखकर थूकना वा कुदृष्टि दूर करने के लिये थूकना।
थुकाना० स० क्रि० थूक गिरवाना और निन्दा कराना।
थुथुकारना० स० क्रि० तुच्छ करके किसको बाहर करना।
थुथुनी० ना० स्त्री० शूकरादि का मुख।
थुथाना० स० क्रि० भौंहें टेढ़ी करना।
थूक० ना० पु० मुखमें का पानी।
थूकना० स० क्रि० मुखमें से पानी फेंकना।
थूणी० ना० स्त्री० थूनी।
थूतड़ा० ना० पु० }
थूथन० ना० पु० } शूकरादि का मुख।
थूथना० ना० पु० }
थूथनी० ना० स्त्री० }
थूनी० ना० स्त्री० थरन, टेकन।
थूहर० ना० पु० वृक्षविशेष।
थेईथेई० ना० स्त्री० चहलबहल।
थेगली० ना० स्त्री० कपड़े में जोड़, पैबन्द।
थेघा० ना० पु० नग।
थैला० ना० पु० }
थैलिया० ना० स्त्री० } बटुआ, दुलमियान।
थैली० ना० स्त्री० }
थोक० ना० पु० समूह, ढेर, एकभाग, टोला, महल्ला।
थोड़० ना० पु० फले केले के गर्भा।
थोड़ा० गु० अल्प, कम।
थोथला० गु० मोना, मोग।
थोथा० ना० पु० औषधिविशेष, फलरहित, गु० छूछा, पोपला, बदसूरत, कुभण्डा।
थोप० ना० पु० पालकी के बाम्ह क अन्त व भूषण, छाप।
थोपना० स० क्रि० टेकना, छोपना, गाजना, बटोरना।
थोपियाना० अ० क्रि० बुदियाना, झिरझिराना
थोपी० ना० स्त्री० थप्पा।
थोब० } ना० स्त्री० खटी वा टेकन
थोम० }
थोहर० ना० पु० थूहर।
थौना० ना० पु० गौने के पीछे स्त्री की विदा।

[द]

द० अव्य० यह अक्षर जब शब्द के अन्त में

आता है तब उसका अर्थ देनेहारा होजाता है यथा सुखद अर्थात् सुख देनेहारा।
दई० ना० पु० दैव, भगवान्, ब्रह्मा, स्त्री, मिठाई विशेष।
दंश० ना० पु० वन की मक्खी, दांत।
दंशन० ना० पु० दांतों से काटना।
दंष्ट्री० ना० पु० शूकर, सर्प।
दंस० ना० पु० कुत्ता, सिंह, डास।
दखन० ना० पु० दक्षिण।
दगड़० ना० पु० धक्का, टक्का, उदा, राह।
दगड़ा० ना० पु० पैंड़ा।
दगड़ाना० स० क्रि० भगाना, दौड़ाना, डग-राना।
दगदगा० गु० चमकीला।
दगदगाना० अ० क्रि० चमकना, चहकना, तम तमाना।
दगदगाहट० ना० स्त्री० चमक।
दगधना० स० क्रि० जलाना, छेड़ना, सताना, डाग्ना, शुधकारना।
दगला० ना० पु० रुई भरा अगरखा।
दग्ध० गु० जो जलगया।
दग्धा० गु० जला, तिथिविशेष, वारविशेष, मास युक्त तिथि।
दंगल० ना० पु० चोकीविशेष, महुतान।
दंगा० ना० पु० बखेड़ा, रौला।
दंगैत० गु० रौला या बखेड़ा करनेहारा।
दटना० अ० क्रि० अड़ना, सामना करना।
दण्ड० ना० पु० लाठी, शासन, डाट, घड़ी, छु-डौती, जुर्माना।
दण्डक० ना० पु० राजाविशेष, गु० दण्डकर्ता।
दण्डधर० } ना० पु० यमराज, गु० दण्ड
दण्डधारी० } बाधनेहारा।
दण्डमान० गु० दु खदाता, दण्डदाता, ना० पु० यमराज।
दण्डवत्० ना० स्त्री० दण्ड के समान पड़के प्रणाम करना।
दण्डादण्डी० ना० पु० आपस में लाठीसे लड़ना।
दण्डायमान० गु० पु० दण्डकी नाई खड़ा।
दण्डित० गु० दण्ड लियागया, सताया गया, पीड़ित, शिक्षा कियागया।
दण्डी० ना० पु० तपस्वी, गु० दु खरूपी, डाड़ी।
दण्ड्य० गु० दण्ड देनेके योग्य।
दतवन० } ना० पु० दन्तधावन, मिसवाक।
दतून० }
दतूना० न० पु० पोशाकविशेष।
दतूली० ना० स्त्री० छोटे २ दांत।
दतौन० ना० पु० दतून।
दत्त० गु० जो दियागया।
दत्तात्रेय० ना० पु० हरि अवतार, मुनिविशेष।
ददरीक्षेत्र० ना० पु० भृगुमुनि का स्थान पट-ना के पास है।
ददियाल० } ना० पु० दादाकाघर, पुरखे।
ददियाला० }
ददोड़ा० ना० पु० मच्छड़ आदि के काटने की सूजा।
दद्रु० ना० पु० दादुरोग।
दधि० ना० पु० दही, समुद्र।
दधिकांदो० ना० पु० ज माष्टमी के दूसरे दिन का पर्वानन्द।
दधिमुख० ना० पु० लड़का बहुत कम उमर वाल्य, वानरविशेष जो रामदल में था।
दधिरिपु० ना० पु० अगस्त्यमुनि।
दधिबल० ना० पु० सुग्रीव का पुत्रविशेष।
दधिसुत० ना० पु० चन्द्रमा आदिक।
दधीचि० ना० पु० मुख्यराजा, मुनिविशेष।
दनुज० ना० पु० दैत्य, राक्षस।
दनुजपति० }
दनुजराज० } ना० पु० दैत्योंका राजा।
दनुजाधिप० }
दनुजारि० ना० पु० देवता, श्रीनारायण।
दनुजेश० } ना० पु० दैत्यों का राजा।
दनुजेश्वर० }

दन्त० ना० पु० दांत, दशन।
दन्तकाष्ठ० ना० पु० दतून करना, दतून।
दन्तधावनी० ना० पु० धनिया।
दन्तबीज० ना० पु० अनार।
दन्तशठ० ना० पु० मारे औषधि, जम्भीरी।
दन्तशूल० ना० पु० दांतोंकी पीड़ा।
दन्तिका० ना० स्त्री० बड़ी छतावर।
दन्ती० ना० पु० हाथी।
दन्तीफल० ना० पु० चिरता।
दन्तुर०
दन्तैला०
दन्तैल० } गु० जिसके दांत होंठ से न ढकें वा जिस जन्तु आदि के बड़े २ दांतहों हबड़ा, हबिला।
दन्त्य० गु० जिन अक्षरों का उच्चारण दाँतसे हो ता है यथा, त थ द ध न ल स।
दन्दनाना० अ० क्रि० विराजना, निडर बैठना।
दन्ना० ना० पु० इन्द्रिय, लिंग, गु० निडर।
दन्नावेल० गु० व्यभिचारी, अनिनिरशक।
दपट० ना० स्त्री० दौड़, झपट, डाट।
दपटना० अ० क्रि० दौड़ना, डाटना।
दपटाना० स० क्रि० दौड़ाना, डाट दिखाना।
दबकना० अ० क्रि० छिपना, घात में बैठना।
दबकर० ना० स्त्री० कल।
दबकाना० स० क्रि० धमकाना, डाटना, लुकाना।
दबकी० ना० स्त्री० दाव, छिपकी।
दबकीला०
दबकैल० } गु० घुमड़, दबनेहारा।
दबंग०
दबंगा० } गु० कुशील, कुढंगा।
दबना० अ० क्रि० नीचे होना, कुचिलना, कानि करना, मानना।
दबा० ना० पु० दाब, घात।
दबाना० स० क्रि० दाबना, निचोड़ना, डाटना।
दबाव० ना० पु० पराक्रम, आधीनता, भय, अदब।
दबीला० ना० पु० औषधिविशेष, बेंत, चम्पू।

दबेपांव० अव्य० हौले, धीमे।
दबैल० ना० पु० प्रजा, आधीन।
दबोचना० स० क्रि० दबायडालना।
दम० ना० पु० मनको निज वशरखना अर्थात् इन्द्रियों को रोकना, दौना सुगन्धि।
दमक० ना० स्त्री० चमक, दहक, झलक, दाह।
दमकना० अ० क्रि० झलकना, चमकना।
दमड़ा० ना० पु० सम्पत्ति, दौलत।
दमड़ी० ना० स्त्री० पैसे का आठवां भाग।
दमदमाना० स० क्रि० हिलाना।
दमन० ना० पु० सूरमा, नागदौन, पुष्प विशेष, अधीनता, नाशन, दमयन्ती।
दमनीय० गु० दमन के योग्य, दमन कारक, ता ड़नेहारा, रामायणे, (कुँवरि मनोहरि विजय बढ़ि कीरति अति कमनीय, पावनहार विरंचि जनु रच्यो न धनु दमनीय)।
दमयन्ती० ना० स्त्री० राजा नल की भार्या।
दमाना० स० क्रि० लचकाना, निहुराना, खुदवाना।
दमामा० ना० पु० डंका, धौंसा।
दम्पति०
दम्पती० } ना० पु० स्त्री पुरुष।
दम्भ० ना० पु० अहङ्कार, घमण्ड, पाखण्ड, छल, बर्बर।
दम्भी० गु० अहङ्कारी घमण्डी, पाखण्डी, छली।
दम्य० गु० शास्य, ना० पु० बैला।
दया० ना० स्त्री० कृपा, करुणा, दान, विनरख।
दयायुक्त०
दयालु०
दयावन्त०
दयावान्०
दयाशील० } गु० कृपावन्त, मिलनसार, दाता, मायावन्त, मेहरबान।
दर० ना० पु० मोल, भाव, शाख, छेद, डर, पीड़ा।
दरकना० अ० क्रि० चिरजाना, फटना।
दरका० ना० पु० दरार, फटन।
दरकाना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना।

दरकी० गु० स्त्री० फटी।
दरदर० ना० पु० ईंगुर, सिंदूर।
दरदरा० गु० अधकुटा, अधपिसा।
दरश० } ना० पु० दर्श, देखना।
दरस० }
दरही० ना० स्त्री० मछली विशेष।
दरांता० ना० स्त्री० हँसिया, करनी।
दरार० } ना० पु० दरज, चीर।
दरारा० }
दरि० ना० स्त्री० मोल भाव।
दरिद्र० ना० पु० } दीनता, कंगालता, नि-
दरिद्रता० स्त्री० } र्धनता।
दरिद्री० गु० दीन, कंगाल।
दरी० ना० स्त्री० खोह, गुफा, बिछौना विशेष।
दरीभृत् ना० पु० पर्वत, पहाड़।
दरीन० ना० स्त्री० दरीका बहुवचन।
दर्दुर० ना० पु० मेंढक।
दर्प० ना० पु० अहङ्कार, अभिमान, मान।
दर्पक० ना० पु० कामदेव।
दर्पण० ना० पु० आदर्श, मुकुर, शीशा।
दर्पणी० ना० स्त्री० दर्पणी।
दर्पणीय० गु० सुंदर, दिखनौट, सुथरा, अच्छा।
दर्पणोदर० ना० पु० चौरस दर्पण का पेट।
दर्पी० गु० अभिमानी, मानी।
दर्भ० ना० पु० कुश, घास।
दर्रा० ना० पु० दरारा।
दर्राना० अ० क्रि० निडर, आगे बढ़ना, बेधड़क आगे चलजाना।
दर्विका० ना० स्त्री० गोभी।
दर्वी० ना० स्त्री० कर्छी।
दर्वीकार० ना० पु० साप।
दर्श० ना० पु० दृष्टि, परिवा, प्रतिपदा।
दर्शक० गु० दिखनौट, देखनेवाला।
दर्शकता० ना० स्त्री० दर्शन, दिखाव।
दर्शन० ना० पु० दृष्टि, भेंट।
दर्शनधारी० गु० सुन्दर।
दर्शनी० ना० स्त्री० हुण्डी विशेष जिसको देखते ही रुपया दिया जावे।
दर्शी० गु० देखनेवाला।
दल० ना० पु० पत्ता, बड़ी फौज, ढेर, मोर-पख।
दलक० ना० स्त्री० झलक।
दलकना० अ० क्रि० झलकना।
दलदल० ना० पु० धसाव, पाक, कीचड़।
दलदलाना० अ० क्रि० कांपना, थरथराना।
दलदलाहट० ना० स्त्री० थरथराहट, कम्प।
दलन० ना० पु० नाशन, दो टूक करनेका काम विशेष।
दलना० स० क्रि० दो टूक करना।
दलबादल० ना० पु० मेघों का समूह।
दलवाना० स० क्रि० दो टूक कराना।
दलवैया० ना० पु० दलनेहारा।
दलाना० स० क्रि० दुलवाना।
दलिद्र० ना० पु० } दरिद्र।
दलिद्रता० स्त्री० }
दलिद्री० गु० दरिद्री।
दलित० गु० दो टूक कियागया, [illegible]।
दलिया० ना० पु० अधकुटा, [illegible]।
दलिहन० ना० पु० जो अन्न दाल के काम आता है यथा उर्द आदि।
दली० गु० दो टूक का दल, ना० पु० [illegible]।
दलैना० ना० पु० } [illegible]।
दलैती० ना० स्त्री० }
दव० ना० पु० वन की आग, वन, आग।
दवाग्नि० }
दवाग्नि० }
दवानल० } ना० पु० वन की आगि।
दवारि० }
दश० गु० दस, १०।
दशकण्ठ० ना० पु० रावण।
दशगात्र० ना० पु० मृतक कर्म विशेष।
दशदिक्पाल० ना० पु० [illegible]

इन्द्र, १ अग्नि, २ यम, ३ नैर्ऋति, ४ वरुण, ५ वायु, ६ कुबेर, ७ ईशान, ८ ब्रह्मा, ९ अनन्त, १०।

दशदिशा० } **दशदिशे०** } ना० स्त्री० दशाओर अर्थात् पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, अध, ऊर्ध्व, १०।

दशन० ना० पु० दांत।

दशम० गु० दसवां।

दशमांश० ना० पु० दसवां भाग।

दशमी० स्त्री० दसवीं तिथि।

दशरथ० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी के पिता।

दशहरा० ना० पु० ज्येष्ठ वा आश्विन शुक्लपक्ष की दसवीं तिथि।

दशा० ना० स्त्री० अवस्था, व्यवस्था, गति।

दशांश० ना० पु० दसवांभाग, $\frac{1}{10}$।

दशांगुल० ना० पु० फलविशेष अर्थात् खरबूजा।

दश० गु० दस, १०।

दसन० ना० पु० दशन, दांत।

दसम० गु० दशम, दसवां।

दसरथ० ना० पु० दशरथ।

दसहरा० ना० पु० दसहरा।

दसी० ना० स्त्री० सूर्य, दशा, गाढ़ी की फड़।

दसीला० गु० दुखकी दशा में रहनेहारा।

दसोखा० ना० पु० पलका झाड़ना।

दसोंद्वार० ना० पु० शरीर के दशद्वार अर्थात् आंख, कान, नाक, मुख, लिंग, गुदा, आदि, परन्तु आदिरहित केवल नवद्वार ठीक हैं।

दसौंधी० ना० पु० भाट वंदित।

दस्यु० ना० पु० वैर, चोर।

दस्युवृत्ति० ना० स्त्री० चोरी।

दह० ना० पु० गहराव।

दहक० ना० स्त्री० दाह, चमक।

दहकना० अ० क्रि० जलना, पछिताना, सत्यानाश होना।

दहकाना० स० क्रि० जलाना, बिगाड़ना, पश्चातापकरानी, गर्माना।

दहन० ना० पु० अग्नि।

दहन० } **दहना०** } **दहनो०** } अ० क्रि० जलना, बरना।

दहलना० अ० क्रि० दबना, कांपना।

दहलाना० स० क्रि० दबाना, कम्पाना।

दहसेरा० ना० पु० दससेर का तौल।

दहा० गु० जलगया वा जलाहुआ।

दहाड़ना० अ० क्रि० गर्जना, यथा शेरकाशब्द।

दहाना० स० क्रि० जलाना।

दहिना० गु० दक्षिण, सीधा, सहायक।

दही० ना० पु० गोरस, दधि, गु० जलगई।

दहेंड़ी० ना० स्त्री० दहीकी हांडी।

दहेड़० ना० पु० पक्षी विशेष।

दहेल० ना० पु० पक्षी विशेष।

दह्यो० ना० पु० दही, स० क्रि० जलाया।

दक्ष० ना० पु० निपुण, चतुर, ब्रह्मा का पुत्र जिसको ब्रह्माने दक्षिणांगुष्ठसे उत्पन्न किया था, स्मृति विशेष।

दक्षन० ना० पु० दक्षका बहुवचन भाषा में प्रचलित है यथा देव देवन और लोक लोकन आदि।

दक्षसुत० ना० पु० प्रचेता।

दक्षसुता० ना० स्त्री० दक्षकी कन्याविशेष, सती।

दक्षिण० गु० खरा, उदित, सूर्य्य का वामभाग दहिना, दखिन।

दक्षिणअक्षांश० ना० पु० रेखाभूमि के दक्षिण केन्द्रतक जो माप है।

दक्षिणकेंद्र० ना० पु० जिसके चारोंओर हिम समुद्र है वा जिसको हिन्दू शास्त्रज्ञ वड़वानल कहते हैं।

दक्षिणखण्ड० ना० पु० विन्ध्याचल के दक्षिण का देश विशेष।

दक्षिणा० ना० स्त्री० कर्म करवाने के निमित्त ब्राह्मण को दान देना, पुरोहित का वेतन।

दक्षिणाग्नि० ना० पु० अग्नि विशेष।
दक्षिणायन० ना० पु० कर्कसक्रांति से धनु सक्रांति तक का काल।
दक्षिणीय० गु० दक्षिण देशके मनुष्यादि।
दा० अव्य० पदान्त में दाताका अर्थ सूचक यथा सुखदा अर्थात् सुखदाता।
दाई० ना० स्त्री० दूध पिलाने हारी।
दाऊ० ना० पु० बड़ा चचा, श्रीबलदेवजी का एक नाम।
दांड़० ना० पु० दण्ड, चप्पू।
दांड़ा० ना० पु० रीति, धूरा, सिवाना।
दांड़ामेंड़ा० ना० पु० सिवाना, छोर, धूरा।
दांड़ी० ना० पु० नाविक, नाव चलाने हारा, ना० स्त्री० दण्डी तुलाआदि की।
दांत० ना० पु० दन्त, दशन।
दांतन० ना० पु० दांतधावन, काष्ठ, दतून।
दांतपीसना० स० क्रि० किचकिचाना।
दांताकिलकिल० ना० स्त्री० झगड़ा, बखेड़ा।
दांती० ना० स्त्री० आराके दांत।
दांव० ना० पु० घात, अवसर, होड़, बारी।
दाख० ना० पु० अगूर, मुनक्का।
दाग० ना० पु० चिह्न यह शब्द फारसीका है।
दागना० स० क्रि० चिह्नकरना, छोड़ना यह शब्द यामिनी भाषा का है।
दाड़िम० ना० पु० अनार।
दाढ़ी० ना० स्त्री० ठोढ़ीपरके बाल।
दातन० ना० पु० दतून।
दातव्य० गु० देनेकेयोग्य, दातापन।
दातव्यता० ना० स्त्री० दातापन, देनहारी।
दाता० गु० पु० धर्मात्मा, देनेहारा, दयालु।
दातार० गु० दाता।
दात्र० ना० पु० दराती विशेष।
दाद० ना० पु० रोग विशेष दद्रु।
दादमर्दन० ना० दद्रु मर्दन, औषधि विशेष।
दादा० ना० पु० पिताका पिता, बड़ा भाई।
दादी० ना० स्त्री० पिताकी माता।
दादु० ना० पु० दद्रुरोग विशेष दद्रु।
दादुर० ना० पु० मेंढक।
दादू० ना० पु० महापुरुष विशेष जिसने अपना पन्थ चलाया जो जातिका पिंजना था।
दाधना० स० क्रि० दग्धना।
दान० ना० पु० पुण्यार्थ धनका त्याग, भूर, खैरात।
दानपत्र० ना० पु० पुण्यार्थ धनादि का दानपत्र, माफ़ीनामा।
दानव० ना० पु० दैत्य, असुर।
दानवारि० ना० पु० देवता, श्रीविष्णुजी।
दाना० ना० पु० अश्वादिके खाने का अन्न।
दानी० गु० दाता, सखी।
दाप० ना० पु० क्रोध, अभिमान।
दापक० गु० क्रोधी अभिमानी।
दाबना० स० क्रि० दबाना।
दाम० ना० पु० रुपया, पैसा, ना० स्त्री० माला, रस्सी, गु० पैसे का चौबीसवा भाग, मोल।
दामवती० ना० स्त्री० माला।
दामासाही० ना० स्त्री० यथार्थ भाग की कर्त्तव्यता।
दामिनी० ना० स्त्री० बिजुली, कौंधा।
दामी० ना० स्त्री० यथार्थ विहारी।
दामोदर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम, बर्द्धमान देशका एक नद, गु० जिसके पेटतक माला हो।
दाम्भिक० गु० दम्भी, पाखण्डी, अभिमानी।
दाय० ना० पु० पैतृक धन।
दायक० ना० पु० देनेहारा।
दायजा० ना० पु० व्याहका दान, यौतुक।
दाया० ना० स्त्री० दाना, कृपा।
दार० ना० स्त्री० दारा, काष्ठ, दारु।
दारचीनी० ना० स्त्री० काष्ठ विशेष।
दारा० ना० स्त्री० स्त्री, पत्नी, जोरू।
दारिका० ना० स्त्री० लड़की, लड़की।

दीधिति० ना० स्त्री० किरण।
दीन० गु० कङ्गाल, अधीन, दुखी।
दीनता० } ना० स्त्री० दरिद्रता आधीनता,
दीनताई० } गरीबी।
दीनदयालु० गु० दीनप्रतिपालक, गरीबपरवर, दीनोंपर दया करनहारा।

दीनपाल०
दीनप्रतिपालक० } गु० गरीबपरवर, दीनों का पालन हारा।
दीनबन्धु०

दीना० स० क्रि० देना दानमहा।
दीनानाथ० गु० दीनपाल दीनदयालु।
दीप० ना० पु० दिया, चिराग दीप।
दीपक० ना० पु० दीप दिया, राग विशेष, अजवाइन।
दीपदान० ना० पु० दिया जलाना।
दीपनी० ना० स्त्री० बनपर्नी।
दीपनीया० } ना० स्त्री० अजवाइन
दीप्य० }
दीपमाला० } ना० स्त्री० दिवाली।
दीपमालिका० }
दीपसुत० ना० पु० काजल।
दीपि० स० क्रि० दीप्त करना।
दीपिका० ना० स्त्री० दीपकका प्रकाश।
दीपित० गु० जलादिया गया।
दीप्त० गु० प्रज्वलित, प्रकाशित।
दीप्ति० ना० स्त्री० चमक, प्रकाश।
दीर्घ० गु० लम्बा गुरु द्विमात्रिक अक्षर।
दीर्घक० ना० पु० रकतचीरा सफेदजीरा।
दीर्घकालक० ना० पु० अंकोल।
दीर्घजघ० ना० पु० ऊंट।
दीर्घजिह्वा० ना० स्त्री० राजा विरोचन की कन्या।
दीर्घदण्ड० ना० पु० अरण्ड एरण्ड, रण्ड।
दीर्घदर्शी० गु० अग्रशोची, दूरन्देशी।
दीर्घपत्रक० ना० पु० लहसुन पुनर्नवा।
दीर्घपत्रा० ना० स्त्री० चिरपाग।

दीर्घपुष्पक० ना० पु० मदार, आक।
दीर्घपृष्ठ० ना० पु० साप।
दीर्घमूल० ना० पु० जवासा शालपर्णी।
दीर्घमूलक० ना० पु० विधारा।
दीर्घसूत्री० ना० पु० जो विलम्बसे कामकारै।
दीवट० ना० स्त्री० दीपक रखने का आधार।
दीवली० ना० स्त्री० छोटा दिया।
दीवा० ना० पु० दीपक दिया।
दीसना० स० क्रि० देखना।
दीसा० स० क्रि० भू देखा देखना।
दीह० ना० पु० बड़ा, रामचन्द्रिकायांयथा (दीह दीह दिग्गजके केशव मनोकुमार,दीन्हे राजा दशरथहि दिग्पालन उपहार)।
दीक्षा० ना० स्त्री० मन्त्र का ग्रहण उपदेश।
दीक्षित० गु० दीक्षा दियागया, ना० पु० ब्राह्मण जाति विशेष।



दु० गु० दो २।
दु अव्य० शब्दका आदि का सूचक।
दु कर्णी० ना० स्त्री० किर
दु ख० ना० पु० पीड़ा क
दु खदा० ना० पु० आप
दु खदाई० गु० दु खदा
दु खदायी० गु० दु ख दे
दु खना० अ० क्रि० पीड़ा
दु खाना० स० क्रि० दुख
दु खित०
दु खिया०
दु खियारा० } गु० पीड़ित, ह कङ्गाल।
दु खियारी०
दु खी०
दु खशील०
दु प्रचार०
दु समय० ना
दु स्पर्श० ना
दुकर० ना० पु

दुकान॰ ना॰ पु॰ दोनों कान, हाट।
दुकाल॰ ना॰ पु॰ विपत्तकाल, दुर्भिक्ष।
दुकूल॰ ना॰ पु॰ रेशमी वस्त्र विशेष, दोनों तट।
दुख॰ ना॰ पु॰ दुःख।
दुखद॰ } दुखदा॰ } दुखदाई॰ } दुखदाता॰ } गु॰ दुःखदाई, कष्टदनेवाला।
दुखत्रय॰ ना॰ पु॰ तीन दुःख अर्थात् दैविक, दैहिक, भौतिक, अथवा कफ, पित्त और वात।
दुखारी॰ } दुखित॰ } दुखिया॰ } दुखियारा॰ } दुखियारी॰ } दुखी॰ } गु॰ दुखिया, पीड़ित।
दुखेन॰ ना॰ पु॰ दुःखयुत, दुःखकरके।
दुगई॰ ना॰ स्त्री॰ चिपारी, कैंची जो छप्पर में लगाते हैं।
दुगन॰ } दुगना॰ } गु॰ द्विगुण, दोहरा, दूना।
दुग्ध॰ ना॰ पु॰ दूध।
दुग्धिका॰ ना॰ स्त्री॰ दूधिया, पोशा।
दुग्धिनी॰ ना॰ स्त्री॰ कड़ई तोंबी।
दुग्धी॰ ना॰ स्त्री॰ दूधिया पोधा, सेहुंड।
दुचित॰ } दुचिता॰ } गु॰ जिसका मन दो ओर लगा हो।
दुचिताई॰ ना॰ स्त्री॰ चिन्ता, दुविधा, भ्रम।
दुचिता॰ गु॰ दुचित।
दुत॰ अव्य॰ दूर।
दुतकार॰ ना॰ पु॰ उदासी, झिड़क।
दुतकारना॰ स॰ क्रि॰ सासना, कुत्तेको दागना।
दुतकारी॰ ना॰ स्त्री॰ मार, ताड़न।
दुताना॰ स॰ क्रि॰ दबाना, दागना।
दुति॰ ना॰ स्त्री॰ चमक, भड़क, सुन्दरता।
दुतिवन्त॰ } दुतिवान्॰ } ना॰ पु॰ भड़कीला, चमकदार, सुन्दर, पुन चन्द्रादि यथाहि, राम चरित्रमानस यथा (दुतिवन्तन को विपदा अति कीन्ही, धरणी कहं इन्दु बधू गहि दीन्ही)।
दुदही॰ } दुद्धी॰ } ना॰ स्त्री॰ आप ही पौधा विशेष।
दुधा॰ ना॰ स्त्री॰ दोजगह, दोप्रकार।
दुधार॰ } दुधारा॰ } गु॰ दूध देनहार, दो धार का।
दुधैल॰ गु॰ दूध देनेहारी।
दुन्दुभि॰ ना॰ स्त्री॰ नक्कार, निशान, दैत्य विशेष जिसको बालि ने माराथा।
दुपट्टा॰ ना॰ पु॰ ओढ़ने का वस्त्र विशेष।
दुपद॰ ना॰ पु॰ दो पांववाला अर्थात् मनुष्य
दुपहरिया॰ ना॰ स्त्री॰ पुष्प विशेष।
दुबधा॰ ना॰ स्त्री॰ सन्देह, अधर।
दुबला॰ गु॰ दुर्बल।
दुबलाई॰ } दुबलापा॰ } ना॰ स्त्री॰ दुबलता।
दुविधा॰ ना॰ स्त्री॰ सन्देह, दुपाच, शङ्क।
दुविधि॰ ना॰ स्त्री॰ दोतरह, दोप्रकार।
दुमुख॰ ना॰ पु॰ राक्षस विशेष, दोमुखवाला।
दुमाय॰ ना॰ पु॰ दुविधा।
दुभाषिया॰ } दुभाषी॰ } गु॰ दो भाषाओं का जाननेहारा।
दुर॰ अव्य॰ शब्द के प्रथम में संयोगी अव्यय जिसका अर्थ दुः, कठिन, ना॰ स्त्री॰ कानका भूषण जो लड़के पहिनते हैं।
दुरतिक्रम॰ गु॰ कठिन, दुस्तिक्रम।
दुरद॰ ना॰ पु॰ हाथी।
दुरध्वा॰ ना॰ स्त्री॰ कुमार्ग, बुरी राह।
दुरना॰ अ॰ क्रि॰ छुपना, लुकना।
दुरदृष्ट॰ ना॰ पु॰ मन्दभाग्य।
दुरन्त॰ गु॰ अज्ञान, कठिन, अन्तहीन।
दुराचार॰ गु॰ जिसका व्यवहार निंदित है

दुराचारी० गु० जिसका व्यवहार निन्दित है।
दुरात्मा० गु० पापी, दुष्ट।
दुराधर्ष० गु० अडर, अभय, अशक।
दुराना० स० क्रि० छुपाना, लुकाना।
दुराराध्य० गु० कष्टसे सेवन के योग्य।
दुरारोह० ना० पु० ताड़वृक्ष।
दुरालभा० } ना० स्त्री० जवासा।
दुरालम्भा० }
दुराव० ना० पु० छुपाव, छल।
दुराशा० ना० स्त्री० कुत्सितआशा, दुष्टतृष्णा।
दुरित० ना० पु० पाप दोष।
दुरी० ना० स्त्री० खलमें दो पड़ना वा दूआ।
दुरुखा० गु० जिसकी दोनों ओर एकसा हार, यह शब्द फारसी का है।
दुरेफ० ना० पु० भौंरा।
दुर्ग० ना० पु० गढ़, धार, खिलअ, अगम।
दुर्गति० ना० स्त्री० कुगति, दरिद्रवस्था, नरक, दरिद्रता।
दुर्गन्ध० ना० स्त्री० } दुर्गंधि, बाय, कुबास।
दुर्गन्धि० ना० स्त्री० }
दुर्गन्धा० ना० स्त्री० पियाज, गु० कुवासित।
दुर्गम० गु० अथाह, गम्भीर, अगम्य, कठिन।
दुर्गमता० ना० स्त्री० गम्भीरता औघटता।
दुर्गा० ना० स्त्री० भगवती विशेष।
दुर्गामी० गु० कुगामी कुमार्गी, बदचलन।
दुर्घट० गु० जो कष्ट से होसके, कुघाट, औघट।
दुर्जन० ना० पु० शत्रु, गु० दुष्ट, अपकारी।
दुर्जनता० } ना० स्त्री० शत्रुता, बैर, दुष्टता।
दुर्जनताई० }
दुर्जय० गु० बलवान् शत्रु, जो पराभव न होसके।
दुर्दशा० ना० स्त्री० दुर्गति, विपत्ति।
दुर्नाम० ना० पु० बदनाम, अपयश।
दुर्नामी० गु० बदनाम अपयशी, अपकीर्ती।
दुर्नाद० ना० पु० राक्षस विशेष, कुत्सितनाद।

दुर्नीति० ना० स्त्री० कुचाल, अनीति, अन्याय।
दुर्बल० गु० दुर्बल, निर्बल, असमर्थ
दुर्बलता० ना० स्त्री० निर्बलता, असामर्थ्य
दुर्भगा० गु० अभागिनी स्त्री, जिसका स्वामी प्यार नहीं करता है।
दुर्भाग्य० गु० प्रारब्धहीन, अभागी।
दुर्भाव० ना० पु० बुरास्वभाव।
दुर्भिक्ष० ना० पु० अकाल, काल, कुसमय।
दुर्मति० ना० स्त्री० कुबुद्धि, मूर्खता।
दुर्मद० गु० मस्त, मदगलित मत्त, सिड़ी।
दुर्मनी० ना० स्त्री० दूबघास।
दुर्मुख० ना० पु० नामविशेष वानरों का एक राजा, गु० कठोर भाषी।
दुर्मूल्य० गु० महँगा।
दुर्योग० ना० पु० बहुतर वायकों का समूह कुसंगति।
दुर्योधन० ना० पु० राजा, कौरवाधीश।
दुर्लभ० गु० जो दुखसे मिले, अनाप्त।
दुर्लक्षण० ना० पु० अशुभ चिह्न।
दुर्वचन० ना० पु० बुरीबात, गाली।
दुर्वर्ण० ना० पु० बुराई, कुवर्ण, चान्दी।
दुर्वर्णता० ना० स्त्री० कुरूपता, चान्दी।
दुर्वाक्य० } ना० पु० बुरीबात, गाली।
दुर्वाच्य० }
दुर्वाद० ना० पु० कुत्सितवार्त्ता, बुरीबातें।
दुर्वासा० ना० पु० मुनिविशेष।
दुर्बुद्धि० ना० स्त्री० मूर्खता, कुबुद्धि, नादानी।
दुर्बुद्धी० गु० नादान, कुबुद्धि, मूर्ख।
दुलकी० ना० स्त्री० कूकर चाल, घोड़ेकी एक प्रकारकी चाल विशेष।
दुलड़ा ना० पु० } दोलड़ा, दूगुन।
दुलड़ी० ना० स्त्री० }
दुलत्ती० ना० स्त्री० पशुका पिछल पाँवोंसे मारना।
दुलहा० ना० पु० वर, भर्त्ता, दूलहा।
दुलहिन० ना० स्त्री० नईबहू, बधू, बनो बनरी।

दुलाई० ना० स्त्री० ओढ़नेका वस्त्र विशेष।
दुलार० ना० पु० प्यार, स्नेह।
दुलारा० ना० पु० } गु० प्यारयुत, प्यारा,
दुलारी० स्त्री० } प्यारा लाडिला,लाडिली
दुवार० ना० पु० द्वार।
दुविद० ना० पु० वानर विशेष।
दुबे० ना० पु० ब्राह्मणजाति विशेष।
दुशाला० ना० पु० पाटवस्त्र विशेष।
दुष्कर० गु० जोकष्टसे कियाजाय।
दुष्कर्म्म० } ना० पु० कुकर्म, पाप।
दुष्कृत० }
दुष्कर्मी० गु० कुकर्मी, पापी।
दुष्ट० गु० बुरा, उत्पाती, नीच, कठिन।
दुष्टता० ना० स्त्री० नीचता, पाप, बुराई।
दुष्टजन्तु० ना० पु० सर्पादि, मूजी जानवर।
दुष्टा० ना० स्त्री० छिनाल, सापिन, पापिन।
दुस्तर० गु० जोतरने के योग्य न होवे, कठिन, अगम्य।
दुस्पर्शा० ना० स्त्री० छोटी कटाई।
दुस्सह० } गु० जो सहा न जावे, असह्य।
दुस्सह० }
दुहना० स० क्रि० दूधनिकालना, निचोड़ना।
दुहनी० ना० स्त्री० पात्र जिसमें दूधदुहते हैं।
दुहाई०ना० स्त्री० न्यायके लिये पुकार हाय हाय, शपथ, तिरिया, कसम।
दुहाईतिहाई० ना० स्त्री० कईबार दुहाईकरना।
दुहाना० स० क्रि० दूध निकलवाना।
दुहार० ना० पु० दूध दोहने वाला।
दुहिता० ना० स्त्री० कन्या, पुत्री।
दुहेला० गु० कठिन, भारी।
दुआ० ना० पु० टीका धब्बू।
दूज० ना० स्त्री० द्वितीया तिथि।
दूजावर० ना० पु० जिसने दो विवाह किये।
दूजा० गु० दूसरा।
दूत० ना० पु० समाचार पहुँचानहारा, सदेशिया, हरकारह, शैतान, पैगम्बर।
दूतता० ना० स्त्री० चालाकी, तोड़फोड़ और दूतका काम।
दूती० ना० स्त्री० कुटनी।
दूध० ना० पु० दुग्ध, गोरस, क्षीर।
दूधिया० गु० दूधवाला, ना० पु० अनेक पौधों का नाम जिनका रस दूध वाला होता है।
दूधी० गु० दूधका, दूधेला, ना० पु० आहार, माडी, दुधिया पौधा।
दूना० गु० द्विगुण, दोहरा।
दूब० ना० स्त्री० दूर्वा, घास विशेष।
दूबर० गु० पतला दुर्बल।
दूबिया० ना० स्त्री० तृण की हरियाई।
दूर० ना० स्त्री० अन्तर, बीच, दूर, व्यवधान, अव्य० परे।
दूरगम० ना० पु० गदहा।
दूरतर० गु० बहुत दूर।
दूरदर्शक० ना० पु० दुरबीन, यन्त्र, गु० दूरका देखने वाला, अग्रशोची।
दूरदर्शी० ना० पु० विवेकी, दूरअंदेश।
दूरदृग० ना० पु० गिद्ध।
दूरबीन० ना०स्त्री० दूरकी वस्तु देखने का यन्त्र, गु० दूरका देखन हारा शब्दफारसी का है।
दूरमूल० ना० पु० जवासा।
दूर्वा० ना० स्त्री० तृण, विशेष, दूबघास।
दूषक० गु० दोष लगानेहारा, दूषणकर्त्ता, टोकन वाला, बिठोकनेहारा।
दूषण० ना० पु० निशाचर विशेष, दोष।
दूषित० गु० दोष लगायागया, दोष युत।
दूष्य० गु० निंदित, कुत्सित।
दूसरा० गु० दूजा, अन्य।
दृग० ना० पु० नयन, नेत्र, आंख।
दृगञ्चल० ना० पु० नयनकोर, पलककी चाल।
दृढ़० पोढ़ा, अचल, कड़ा, मजबूत।
दृढ़ता० ना० स्त्री० } पोढाई, पौरुस,पायदारी।
दृढ़त्व० ना० पु० }

दिखाना० स० क्रि० पैदा करना।
दृश्य० गु० जो देखने के योग्य है, जो देखामात्र।
दृष्ट० गु० जो देखागया, प्रकट।
दृष्टिकूट० ना० पु० पहेली।
दृष्टान्त० ना० पु० उपमा उदाहरण, मिसाल।
दृष्टि० ना० स्त्री० दर्शन नजर, दीठि, आंख।
दृष्टिगोचर० गु० जो आंख के सामने हो।
दृषद्भेद० ना० पु० पाषाण भेद।
दृषद्गर्भ० ना० पु० पन्ना रत्न।
देखाऊ० ना० पु० दिखाऊ बनायाहुआघर।
देखना० स० क्रि० लखना दृष्टिकरना विलोकना।
देखवैया० ना० पु० देखनहारा
देनलेन० ना० पु० व्यवहार
देना० स० क्रि० देडालना सौंपना।
देमारना० स० क्रि० पटकना फटकना।

देय०
देयमान० } गु० देनेके योग्य।

देर०
देरी० } ना० स्त्री० विलम्ब ढील।

देव० ना० पु० देवता मेघ देना।
देवऋषि० ना० पु० देवर्षि नारदमुनि।
देवक० ना० पु० देवकी का पिता देवता गु० देनेहारा।
देवकाडर० ना० पु० चनघर।
देवकी० ना० स्त्री० श्रीकृष्ण की माता।
देवकुसुम० ना० स्त्री० लौंग।
देवगरी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
देवगृह० ना० पु० देवालय चौहरा।
देवठान० ना० स्त्री० देवोत्थानी कार्त्तिकसुदी एकादशी का ये त्योहार होता है।
देवतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष पारिजात।
देवता० ना० पु० देव सुर फरिश्तह।
देवतारुह० ना० पु० देवदाली।
देवदत्त० ना० पु० संज्ञाविशेष, गु० जो देवता का दिया हुआ है।

देवदारु० ना० पु० वृक्ष वा काठ विशेष।
देवधुनि० ना० स्त्री० आकाशगंगा।
देवनागरी० ना० स्त्री० हिन्दी के यथार्थ अक्षर
देवनारि० ना० स्त्री० देवता की स्त्री।
देवपूजक० ना० पु० देवता की पूजा करनेहारा, पौत्तलिक, मूर्त्तिपूजक।
देवपूजा० ना० स्त्री० देवता का पूजन।
देववधू० ना० स्त्री० देवता की पत्नी रामायणे देवताजी रामचन्द्रिकाया देववधू जबहीं हरिल्यायो क्यों तबहीं तजि ताहि न आया।
देवमुनि० ना० पु० नारदजी।
देवर० ना० पु० पतिका छोटाभाई।

देवराणी० } ना० स्त्री० देवर की स्त्री देवताओं
देवरानी० } की रानी अर्थात् इन्द्राणी, रामचन्द्रिकायां। देवराजा जिय देवरानी मनावन्न सुख भूलोक में साहिया।

देवरिपु० ना० पु० दैत्य निशाचर।
देवर्षि० ना० पु० नारदमुनि।
देवृ० ना० पु० देवर।
देवल० ना० पु० मन्दिर, ठाकुरद्वारा चौहरा, यथा तुलसी देवल देव को लागे लाखकरोरि, काकअभागे हगिभरयो महिमा भई न थोरि।
देववल्लभा० ना० स्त्री० केसर जाफरान।
देववाणी० ना० स्त्री० संस्कृत।
देववृक्ष० ना० पु० कल्पवृक्ष।
देवसर० ना० पु० मानसरोवर।
देवश्रेणी० ना० स्त्री० सुरहरी देवतों का समूह।
देवस्त्री० ना० स्त्री० देवता की पत्नी।
देवस्थान० ना० पु० देवालय देवता का घर।
देवस्व० ना० पु० देवता का धन।
देवा० ना० पु० देवता देनेहारा।
देवांगना० ना० स्त्री० देवी देवबामा।
देवारि० ना० पु० दैत्य, निशाचर।
देवाल० ना० पु० देनेहारा।

देयालय० ना० पु० देवस्थान, देवता का घर।
देवाला० ना० पु० दिवाला।
देवालिया० गु० जिसका दिवाला निकलगया।
देवाली० ना० स्त्री० दिवाली, दिवारी।
देवालेई० ना० स्त्री० देनलेन।
देवी० ना० स्त्री० देवता की स्त्री, भगवती, सुरहरी औषधि।
देवेन्द्र० ना० पु० देवाधिराज अर्थात् इन्द्र।
देवोत्थान० ना० स्त्री० कार्त्तिक शुक्लपक्ष की तिथि जिस में विष्णु नींद से उठते हैं वा कार्त्तिक शुक्ल एकादशी।
देव्यालय० ना० पु० देवी का मन्दिर।
देव्याश्रय० ना० पु० देवी की सहायता।
देश० ना० पु० पृथ्वी का खण्ड विशेष, लोक रागिनी विशेष, मुल्क, विलायत।
देशपति० ना० पु० राजा, बादशाह।
देशभाषा० ना० स्त्री० देशकी बोली।
देशमात्र० गु० सर्वत्र, सब देश।
देशाचार० ना० पु० देशकी रीति।
देशाटन० ना० पु० देशों में फिरना।
देशाधि०, देशाधिप०, देशाधिपति० ना० पु० राजा, बादशाह।
देशाधीश०, देशाध्यक्ष० ना० पु० देशका रक्षक वा राजा।
देशान्तर० ना० पु० दूसरा देश।
देशावर० ना० पु० परदेश, अन्यदेश।
देशी० गु० जो देशका है।
देह० ना० स्त्री० तन, शरीर।
देहरा० ना० पु० चौहरा, देवालय।
देहली० ना० स्त्री० चौखट, ड्योढ़ी।
देही० गु० शरीर, ना० पु० जीव, आत्मा।
देजा० ना० पु० कन्यादान, यौतुक।
दैत्य० ना० पु० असुर, दितिजात।
दैत्यगुरु०, दैत्यपुरोधा०, दैत्यपुरोहित०, दैत्यपूज्य०, दैत्याचार्य० ना० पु० शुक्राचार्य।
दैत्यारि० ना० पु० देवता, श्रीविष्णुजी।
दैदीप्य० गु० प्रकाशित, रोशन।
दैदीप्यमान० गु० प्रकाशित, चमकीला।
दैन्य० ना० पु० दीनता।
दैय० ना० पु० देव, ईश्वर।
दैया० ना० स्त्री० माता।
दैव० ना० पु० प्रारब्ध, ब्रह्मा, देवके आधीन।
दैवगति० ना० स्त्री० कर्मकीचाल, भाग्यकीगति।
दैवतामणि० महामेदा।
दैवयोग० ना० पु० कर्मप्रभाव, इत्तिफ़ाकन।
दैववादी० गु० आलसी, भाग्याधीन।
दैवज्ञ० ना० पु० गणक, ज्योतिषी।
दैवात्०, दैवी० अव्य० अकस्मात्, नागहान।
दैविक० गु० जो देवता करके होवे।
दो० गु० दूसरी संख्या २।
दोऊ० गु० दोनों।
दोक० ना० पु० बछेड़ा, दोवर्षका घोड़ा।
दोचर० गु० दुहरा, दूसरा।
दोजीवा० ना० स्त्री० गर्भिणी।
दोझा० ना० पु० द्विभवर।
दोदना० स० क्रि० मुकरना।
दोना० ना० पु० दौना, पत्तों का पात्र, पुष्प विशेष।
दोनाली० ना० स्त्री० बन्दूक दोनालकी।
दोबर० गु० दोबेर, दुहरा।
दोमुहा० ना० पु० दो मुखका सांप।
दोय० गु० दो २।
दोल० ना० पु० डोल।
दोष० ना० पु० निन्दा, अवगुण, चूक, अपराध,

काम क्रोधादि, कलङ्क।
दोषक० गु० निन्दक, अपगुणी, पापी।
दोषना० स० क्रि० दोषदेना वा दोषलगाना।
दोषित० } गु० कलङ्कित, पापी, अपयशी, अ-
दोषी० } पराधी।
दोहत्तड़ ना० पु० दोनों हाथोंका देमारना।
दोहता० ना० पु० नाती।
दोहती० ना० स्त्री० नातिनी, नातिन।
दोहद० ना० पु० स्नेह, प्रीति, हित, गर्भ।
दोहन० ना० पु० रसका खाना।
दोहन० } स० क्रि० दूहना, गारना।
दोहना० }
दोहना० ना० स्त्री० दूहने का पात्र।
दोहरा० गु० द्विगुण, दोलड़।
दोहराव० ना० पु० दोहराने का काम।
दोहा० ना० पु० छन्द विशेष।
दोहाई० ना० स्त्री० दुहाई।
दोहान० ना० पु० दो वर्ष का गौका बच्चा, बैला।
दौड़० ना० स्त्री० बहुत शीघ्र चलने की चाल, धावा।
दौड़धूप० ना० स्त्री० जतन, परिश्रम।
दौड़ना० अ० क्रि० बहुत शीघ्रचलना, धावा।
दौड़ाक० ना० पु० दौड़नेहारा।
दौड़ादौड़ी० ना० स्त्री० वेगावेगी।
दौड़ाना० स० क्रि० शीघ्र चलाना।
दौड़ाहा० ना० पु० सदाशया, अगुआ।
दौहित्र० ना० पु० नाती, नवासा।
दौहित्री० ना० स्त्री० नातिनी, नवासा।
द्युमणि० ना० पु० सूर्य।
द्यूत० ना० पु० जूआ, नृप।
द्यौरानी० ना० स्त्री० देवरकी स्त्री।
द्रम्म० ना० पु० १६ पणका।
द्रव० गु० बहता हुआ, ढला।
द्रविड़० ना० पु० देश विशेष।
द्रवित० गु० बहताहुआ, कृपायुत, नमतामय।
द्रवौ० } अ० क्रि० दया करो।
द्रवहु० }
द्रव्यअन्यभाव० गु० वस्तु और वस्तु रहित पदार्थका सम्बन्ध।
द्रष्टा० ना० पु० देखनेवाला।
द्रावक गु० घुलावन हारा, कृपालु।
द्रावन० ना० पु० निर्मली।
द्राविड़० ना० पु० कपूर, द्रविड़ देशका ब्राह्मण वा लोग।
द्राविड़ी० ना० स्त्री० छोटी इलायची, द्राविड़ देशकी भाषा वा वासी वा वस्तु।
द्रावी० ना० पु० सुहागा।
द्राक्षा० ना० स्त्री० अंगूर, दाख।
द्रुत० ना० पु० जल्द, शीघ्र।
द्रुपद० ना० पु० राजा विशेष।
द्रुपदी० ना० स्त्री० द्रौपदी, पाण्डवोंकी स्त्री।
द्रुम० ना० पु० वृक्ष, पेड़।
द्रुमलिक० ना० पु० राक्षस विशेष।
द्रुहिण० ना० पु० ब्रह्मा।
द्रोण० ना० पु० कालाकाग, पारिज, पर्वतविशेष, द्रोणाचार्य्य।
द्रोणपुष्पी० ना० स्त्री० गूमा, पौधा।
द्रोणाचार्य्य० ना० पु० कौरव और पाण्डवोंका गुरु।
द्रौपदी० ना० स्त्री० पाण्डवोंकीस्त्री, द्रुपदकन्या।
द्रोह० ना० पु० बैर, शत्रुता, अदावत।
द्रोहिया० } ना० पु० शत्रु, बैरी, मुद्दई।
द्रोही० }
द्वन्द्व० ना० पु० युगल, जोड़ा, रागदोषादि, कलह, दुखभार।
द्वादश० गु० बारह १२।
द्वादशउपवन० ना० पु० बारह उपवन अर्थात शान्तनुकुण्ड, राधाकुण्ड, गोवर्द्धन, परमन्दर बरसाना, संकेत, नन्दघाट, चीरघाट, बलरामस्थल, नन्दगाव, गोकुल, चन्दनवन १२।
द्वादशभानु० ना० पु० बारह सूर्यनाम।

अर्थात् विष्णु, शक्र, अर्यमा, धाता, पूषण, त्वष्टा, विवस्वान, सविता, मन, वरुण, अंशु-मलि, तेजश्रति।

द्वादशभानुकला० ना० स्त्री० बारह सूर्य की कला अर्थात् तपिनि, तापिनी, धूम्र, मराची, ज्वालिनी, रुचि, सुचिनिम्न, भोगदा, विश्वाबोधिनी, धारिणी, क्षमा।

द्वादशवन० ना० पु० बारहवन ब्रजके अर्थात् मधुवन, तालवन, वृन्दावन, कुमुदवन, काम्यवन, कोटवन, चन्दनवन, लोहवन, महावन, खदिर वन, बेलवन, भाण्डीर।

द्वापर० ना० पु० तीसरायुग जो ८६४००० वर्ष का होता है।

द्वार० ना० पु० दरवाजा, दरवाजा।

द्वारपाल० } गु० ड्योढ़ीवान, द्वारकार
द्वारपालक० } रक्षक।

द्वारा० अव्य० कारण से वसीला, मारफत।

द्वारावती० ना० स्त्री० द्वारिका।

द्वारिका० ना० स्त्री० नगर प्रसिद्ध जो गुजरात में है।

द्वारिकाधीश० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
द्वारिकानाथ० }

द्वारी० ना० पु० द्वारपाल।

द्विगुण० गु० दूना, दोहरा।

द्विज० ना० पु० पक्षी, दांत, ब्राह्मण, चन्द्रमा, कौआ।

द्विजदोष० ना० पु० ब्रह्महत्या।

द्विजनायक० ना० पु० ब्राह्मण। गरुड़, चन्द्रमा, सिंह।

द्विजन्मा० ना० पु० ब्राह्मण।

द्विजपति० ना० पु० द्विजनायक।

द्विजपत्नी० ना० स्त्री० मकड़ी।

द्विजप्रिया० ना० स्त्री० सोमवल्ली, ब्राह्मणी।

द्विजराज० ना० पु० द्विजनायक।

द्विजा० ना० स्त्री० बाँगी रेलाचीनी।

द्विजांगिका० ना० स्त्री० कुटकी।

द्विजाति० ना० पु० द्विज, ब्राह्मण।

द्वितीय० गु० दूसरा।

द्वितीया० ना० स्त्री० दूज, दूसरीतिथि, दूसरी।

द्वितीयान्त० गु० जिसके अन्त में द्वितीयाका प्रत्यय होवे।

द्वित्व० अव्य० दोहरा करना।

द्विधा० अव्य० दोप्रकार।

द्विपद० ना० पु० मनुष्य।

द्विरसन० ना० पु० सांप।

द्विरागमन० ना० पु० गौना, चलौआ।

द्विरुक्ति० ना० स्त्री० पुनरुक्ति, फेरफेरकहना।

द्विरेफ० ना० पु० भौंरा।

द्विवचन० ना० पु० द्वित्व संख्यायुक्त, जो शब्द, जिसका भाषा में प्रयोग नहीं है।

द्विविद० ना० पु० वानर विशेष।

द्विषट्० गु० द्वादश वा बारह।

द्विस्वभाव० ना० पु० दुबिधा।

द्वित्रिंशल्लक्षण० ना० पु० बत्तीस लक्षण अर्थात् सुकृत स्वरूप, शील, सत्य, पराक्रम, शुचि, अभ्यास, वरतिया, सुमान, परमज्ञान, शास्त्रज्ञान, परस्त्रीत्याग, पूर्णता, लोकेशा, दास विभाग, पुष्टिया, प्रियवाद, सत्सङ्ग, अकाम गुणपूर्ण, मातृभक्ति, पितृभक्ति, गुरुभक्ति, जितेन्द्रिय, दातृत्व, धर्मात्मा, देवपूजन, अल्पनिद्रा, स्वल्पाहार, स्वच्छता, पुष्टता, धीरज ३२।

द्वीप० ना० पु० टापू पृथ्वी का खण्ड जो जलसे घिराहुआ है, पृथ्वी के सातखण्डों में से एक।

द्वीपवती० ना० स्त्री० नदी।

द्वीपशत्रु० ना० पु० सतावर, सतावर।

द्वीपसम्भवा० ना० स्त्री० पिण्ड खजूर।

द्वीपिका० ना० स्त्री० सतावर, सतावर।

द्वीपी० ना० पु० सिंह, शेर।

द्वेष० ना० पु० बैर, द्रोह, हिंसा, ईर्षा।

द्वेषी० ना० पु० शत्रु, बैर, हिंसक।

द्वै० गु० दो, २।

द्वैत० ना० पु० सदह, भेद, दुगनाहट ।
द्वैतवादी० ना० पु० भेदवादी ।
द्वैध० ना० पु० सदह, दोसपद ।
द्वैधीकरण० ना० पु० छेदन ।
द्वैमातुर० ना० पु० श्रीगणेशजी ।
द्वैमधुक० ना० पु० मुलहटी ।
द्वैप० ना० पु० द्वेष ।
द्व्यर्थ० गु० जिस में दो प्रकारके अर्थहों ।
द्व्यक्षर० गु० जिस में दो अक्षरहों ।

[ध]

धधखाना० स० क्रि० जलना, धोखादेना ।
धंधक० गु० बहुचिन्तक, धंधवाला, धधक ।
धधा० ना० पु० काम, धधा ।
धधार० गु० उदास, एकाकी ।
धधारी० ना० स्त्री० उदासी, अकेलापन ।
धंसना० अ० क्रि० धसना, गड़ना, बैठजाना ।
धकधक० ना० पु० धड़क, भयसे कलेजा कांपना ।
धक्का० ना० पु० ढकेल, झोंक, ठेला ।
धक्काधक्की० ना० स्त्री० ठेलाठेली ।
धगड़ा० } ना० पु० यार, लगुआ ।
धगाड़० }
धज० ना० पु० चाल, आसन, डोल, रूप, ठाट, सामान, साजबाज ।
धजभंग० ना० पु० नपुंसक ।
धजा० ना० स्त्री० पताका, ध्वजा ।
धजीला० गु० धज से चलने वाला, सजीला ।
धज्जी० ना० स्त्री० पुराने कपड़े का टुकड़ा ।
धड़० ना० पु० देह, शिरसे नीचेका तन ।
धड़क० ना० स्त्री० फड़क, भय, धड़धड़ाहट ।
धड़कना० अ० क्रि० फड़कना, हिलना, धकधकाना ।
धड़का० ना० पु० भय, सन्देह, दुबिधा, धड़क ।
धड़काना० स० क्रि० डराना, धकधकाना, अ० क्रि० धड़कना ।
धड़ा० ना० पु० दबा, पक्ष, तौल, जोख ।
धड़ाका० ना० पु० धायाधाय, हड़हड़ाहट शब्द होना ।
धड़ी० ना० स्त्री० लकीर, पावसेर की तौल वा जितना एकबार तोलाजावे ।
धत० ना० पु० हाथी चलाने का शब्द ।
धतूरा० ना० पु० पौधा विशेष ।
धतूरिया० गु० छलिया, बहुरूपिया ।
धधकना० अ० क्रि० भभकना, धांयधांयं जलना ।
धन० ना० पु० द्रव्य, अर्थ, सम्पत्ति, लक्ष्मी, शुक्र ।
धनक० ना० स्त्री० गोटेसे बनीवस्तु जो टोपी आदि में लगाते हैं ।
धनकटी० ना० स्त्री० कपड़ा विशेष, धान काटने का समय ।
धनञ्जय० ना० पु० अग्नि, अर्जुन, पाण्डुपुत्र, पक्षी ।
धनन्तर० ना० पु० धन्वन्तरि ।
धनद० ना० पु० कुबेर, धनका दाता ।
धनपति० ना० पु० कुबेर, गु० धनी ।
धनवन्त० } गु० द्रव्यवान्, लक्ष्मीवान् ।
धनवान्० }
धना० ना० स्त्री० स्त्री, नारी, ना० पु० भक्त विशेष ।
धनाकुला० ना० स्त्री० रासना ।
धनाढ्य० गु० धनवान, मालदार ।
धनाध्यक्ष० ना० पु० धनका स्वामी, कुबेर ।
धनान्ध० गु० जो धनके कारण अन्धा अर्थात् अहंकारी होरहाहो ।
धनार्जन० ना० पु० द्रव्य का उपार्जन ।
धनाशा० ना० स्त्री० अर्थ की आशा ।
धनासरी० } ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।
धनासिरी० }
धनिक० ना० पु० महाजन, ऋणदाता ।
धनिया० ना० पु० बीज विशेष, ना० स्त्री० नारि ।

धनिष्ठा० ना० स्त्री० तेईसवां नक्षत्र।

धनी० गु० लक्ष्मीवान्, मालदार, ना० पु० मालिक, स्वामी।

धनुः० ना० पु० धनुष और नवीं राशि, चारि हाथका प्रमाण, मिलाओ।

धनुपट० ना० पु० चिरौंजी।

धनुर्द्धर० ना० पु० जिस मनुष्य के पास धनुष रहताहै, विशेष अर्जुन।

धनुर्विद्या० ना० स्त्री० युद्धविद्या और वाण ज्ञान, तीरन्दाजी।

धनुष० ना० पु० कमान, कमठा।

धनुषाकृति० } ना० पु० धनुष के डौल।
धनुषाकार० }

धनुषी० } ना० स्त्री० छोटा धनुष, धनु की
धनुही० } कमठी।

धनेश० ना० पु० पक्षी विशेष, कुबेर गु० धनवान्।

धन्य० गु० प्रशंसाके योग्य, गुणी।

धन्ययासक० ना० पु० जवासा।

धन्यवाद० ना० पु० स्तुति, कृतज्ञता, गुण मानना।

धन्यवादी० गु० कृतज्ञ, सुत, गुणगायक।

धन्या० ना० स्त्री० नदी विशेष।

धन्याक० ना० पु० धनिया।

धन्वन्तरि० ना० पु० वैद्यविशेष जो स्वर्ग वासियों के वैद्य हैं।

धन्वायवा० ना० स्त्री० जवासा।

धन्वी० गु० धनुर्द्धर।

धप० } ना० पु० चपेटा, धप्पड़, छलावा।
धप्पा० }

धब्बा० ना० पु० कपड़े में जो सील, कपड़े का दाग़।

धमक० ना० स्री० भयका सूचक शब्द, पैरों का शब्द विशेष।

धमकना० अ० क्रि० टीसना, धड़कना, जंगम गाना, स० क्रि० पटकना।

धमका० ना० पु० बड़ीधूप, सांस, भारी वस्तु के गिरने का शब्द।

धमकाना० स० क्रि० भिड़कना, डांटना।

धमकाहट० } ना० स्त्री० घुड़की, डांट।
धमकी० }

धमधूसड़० गु० मोटा, स्थूल।

धमन० ना० पु० नड़कुल।

धमनी० ना० स्त्री० नाड़ी, नली।

धमाका० ना० पु० तोप विशेष जो हाथी पर रखते हैं भारी वस्तु गिरनेका शब्द।

धमाचौकड़ी० ना० स्त्री० रौला, बखेड़ा।

धमाधम० ना० पु० पांवपीटनेका शब्द, लगातार पीटना।

धमार० } ना० पु० तालविशेष या गीतविशेष
धमाल० } जो होली में गाते हैं।

धमिना० ना० पु० सांप विशेष।

धमोका० ना० पु० खंजरी विशेष।

धम्मिल्ल० ना० पु० केशपाश, बेणी।

धर० ना० स्री० धरती, ना० पु० धड़।

धरक० ना० स्री० धड़क।

धरका० ना० पु० धड़का।

धरणि० } ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन।
धरणी० }

धरणीधर० ना० पु० शेषादि, सांप।

धरती० ना० स्री० पृथ्वी, जमीन।

धरधरा० ना० पु० धड़ाका।

धरन० ना० स्री० कड़ी।

धरना० स० क्रि० रखना, सौंपना, पकड़लेना ना० पु० किसी के द्वारपर अड़ना।

धरनी० ना० स्री० धरणी, धरन।

धरनैत० ना० पु० धरना, देनेवाला।

धरपना० स० क्रि० दबाना, [illegible] करना।

धरपद० ना० पु० वृक्ष, पौधा [illegible] उगे।

धरपना० स० क्रि० [illegible]

धरहर० ना० स्री० [illegible], [illegible], सहजराम

कृत प्रह्लाद चरित्रे यथा (यहि ससार असार महँ राम नाम श्रुतिसार, रविसुत पुर धरहरकरे नरहरि नाम उदार)।

धरा० ना०स्त्री० धरती, पृथ्वी, क्रि० भू० रक्खा, पकड़ा।

धरातल० ना० पु० पृथ्वीतल, रूप, ज़मीन।

धराधर० ना० पु० शेषादि।

धराना० अ० क्रि० ऋणी होना, स० क्रि० रख वाना, पकड़ना, सहाना।

धरासुर० ना० पु० ब्राह्मण।

धरित्री० ना० स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

धरोहर० ना० स्त्री० थाती, सौंप, अमानत।

धरौना० ना० पु० पुनर्विवाह।

धर्त्तव्य० गु० ग्राह्य।

धर्त्ता० ना० पु० ऋणी, धारणिक।

धर्तूर० ना० पु० धतूरा, जिस के फल में विष होताहै।

धर्म० ना० पु० न्याय, कीर्ति, पुण्य, व्यवहार, चाल, गुण, काम, मजहब।

धर्मकूप० ना० पु० काशीजी में स्थान विशेष।

धर्ममूल० ना० पु० वेद शास्त्र, गुरु।

धर्मराज० ना० पु० यमराज, नीतियुत राजा, राजा युधिष्ठिर।

धर्मशाला० ना० स्त्री० धर्म विचारने का स्थान।

धर्मशील० ना० गु० भक्तिमान, कीर्तिमान, साधु।

धर्माधिकार० ना० पु० पुण्यकर्म की पदवी सरकार का काम।

धर्माधिकारी० गु० जो पुण्यकर्म का सिरताज हो।

धर्मात्मा० गु० कीर्तिमान, साधु, ना० पु० ईश्वरत्व में जो तीसरा है उसका नाम।

धर्माध्यक्ष० गु० न्यायी, विचारकर्त्ता।

धर्मावतार० ना० पु० धर्मका अवतार।

धर्माज्ञा० ना० स्त्री० धर्मकी आज्ञा।

धर्मिष्ठ० } गु० धर्ममेंजिनकी निष्ठाहै,पुण्यवान्।
धर्मी० }

धर्षण० ना० पु० घासन, रगड़ा।

धर्षना० स० क्रि० कोसना, रगड़ना।

धवल ना० पु० शुक्लवर्ण।

धवलास्य० ना० पु० विवाह।

धवलागिरि० ना० पु० पर्वत विशेष।

धसकना० अ० क्रि० गड़ना, धसजाना।

धसन० ना० पु० धसान, धसने की अवस्था।

धसना० अ० क्रि० घुमड़ना, घुभना, छिदना, पैठना।

धसान० ना० पु० दलदल,गड़न, धमन।

धसाना० स० क्रि० घुमेड़ना, घुसेड़ाना, पैठाना, पैठवाना, बिधाना।

धसाव ना० पु० धसान।

धांधल० ना० पु० नटखटी, फरफन्द, झगड़ा।

धांधली० गु० झगड़ालू, नटखट।

धांगर० ना० पु० जाति विशेष।

धांयधांय० ना० स्त्री० तोपोंका शब्द धड़ाका।

धांसना० स० क्रि० खांसना, खोंसना।

धांसी० ना० स्त्री० खांसी, खोंसी।

धाई० ना० स्त्री० दूध पिलाने हारी।

धाक० गु० स्त्री० ठाठ, प्रताप, कीर्ति, भय, डर, ठौर।

धागा० ना० पु० सूत, डोरा।

धाता० ना० पु० ब्रह्मा, सूर्य।

धातु० ना० पु० ताबा आदि, वीर्य्य, क्रियावाचक शब्द मसदर।

धातुमाक्षिक० ना० पु० सानामक्खी।

धातुसाधित० गु० जो धातु से बनायागया

धातुविसर० गु० धातु से रहित।

धान० ना० पु० अन्न विशेष।

धाना० अ० क्रि० दौड़ना, उद्द्वलकरना, स० क्रि० पूजना, अर्चन।

धानी० ना० स्त्री० धान विशेष, धान के सदृश, रंग विशेष।

धानुक० ना० पु० धनुद्दार, कमानदार और जातिविशेष।

धानेय० ना० पु० धनिया।

धान्य० ना० पु० धनिया, धान, धन, माल।

धान्यक० ना० पु० धनिया।

धाप० ना० स्त्री० हाथ से दो तिहाई का माप, जहांतक मनुष्य एक सांस में दौड़सके।

धाम० ना० पु० घर, स्थान, तेज, तन, किरण, ज्योति, बैकुण्ठ, ब्रह्म।

धामा० ना० पु० बेतका टोकरा।

धामिन्० ना० पु० सूर्य।

धाय० ना० स्त्री० धाई।

धायमारना० अ० क्रि० पुकार के रोना, दौड़के मारना।

धार० ना० स्त्री० लकीर, बहाव, अस्त्र की बाढ़।

धारक० ना० पु० ऋणी।

धारण० ना० पु० धारने की अवस्था, मानलेना, स० क्रि० धारना, मंजूर करना।

धारणा० स० क्रि० रखना, संभालना, धराना, ना० स्त्री० योगकर्मविशेष।

धारना० स० क्रि० धारणा।

धारस० ना० स्त्री० ढाढ़स, धीरज।

धारा० ना० स्त्री० प्रवाह, बहाव, रीति।

धारावाहिक० गु० विच्छेद बिनु।

धारि० ना० स्त्री० डाकूकी सेना।

धारित० गु० जो धारण कियागया।

धारी० ना० स्त्री० लकीर, पौधा विशेष।

धार्त्तराष्ट्र० ना० पु० कालाहंस, यथा—मल्लिकाक्षास्तुतेचंचुचरणैर्लोहितैःसिताः। मलिनैर्मल्लिकाक्षाः स्युरासितैर्धार्त्तराष्ट्राःसितेतरैः १. इत्यमरः, धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन।

धाव० ना० पु० पौधाविशेष, दौड़।

धावच्छुयः० ना० पु० दौड़नेवाला [illegible]

धावन० ना० पु० सन्देशिया, दूत, हरकारा।

धावना० अ० क्रि० दौड़ना, फिराकरना, चढ़ना, रगड़ना, अर्चना।

धावनी० ना० स्त्री० दूती, छोटी कटाई, श्वेत।

धावमान० गु० दौड़ताभया।

धावा० ना० पु० दौड़, चढ़ाई, वृक्षविशेष।

धाह० ना० स्त्री० शराब, कूक।

धात्री० ना० स्त्री० धरती, सरस्वती, धाई, ना० पु० आंवला।

धिक्० अव्य० निन्दा का बोधक शब्द छिः, लानत, कुछ न भये।

धिक्कार० ना० पु० छिःकार, निन्दा, शाप, लानत।

धिक्कारना० स० क्रि० निन्दाकरना, छिःकारना, लानत करना।

धिक्कारी० गु० शापित, निन्दित, छिःकारी।

धिग्० अव्य० धिक्।

धिया० ना० स्त्री० बेटी, पुत्री।

धिरयो० क्रि० धमकाया, डांटा।

धिराना० स० क्रि० धमकाना, डांटना।

धिषण० ना० पु० ब्रह्मा, बृहस्पति।

धिषणा० ना० स्त्री० बुद्धि।

धी० ना० स्त्री० बुद्धि, बेटी।

धीति० ना० स्त्री० प्रतीति, विश्राम, [illegible] यथा—मोहिद्मरवैटापन्दनि [illegible] धीतिलालदेयेम्हा [illegible]

धीम० ना० पु० [illegible]

धीमर० ना० पु० [illegible]

धीमा० गु० [illegible]

धीमाई० ना० स्त्री० [illegible]

धीमत्० गु० बुद्धिमान, चतुर।

धीमहि० [illegible]

धीर० ना० स्त्री० बुद्धि, [illegible]

धीर० गु० [illegible] ना० पु० [illegible]

धीरज० ना० पु० [illegible]

धीरजी॰ गु॰ दृढ़, सन्तोषी, स्थिर।
धीरता॰ ना॰ स्त्री॰ धैर्य्य, स्थिरता, साहस।
धीरा॰ गु॰ कोमल, सन्तोषी, साहसी, विचार वाला।
धीरिया॰ ना॰ स्त्री॰ बेटी।
धीरी॰ ना॰ स्त्री॰ नेत्र की पुतली।
धीर॰ गु॰ दृढ़, धीरजी, बहादुर।
धीवर॰ ना॰ पु॰ धीमर, कहार।
धुगार॰ ना॰ पु॰ छौंकन, बघार।
धुगारना॰ स॰ क्रि॰ बघारना, छौंकना।
धुंधकार॰ ना॰ पु॰ अंधेरा।
धुंधकारना॰ अ॰ क्रि॰ धुवां समेत आग का जलना।
धुंधारना॰ अ॰ क्रि॰ अंधेरा होना।
धुंधला॰ गु॰ अंधा अंधला, ना॰ पु॰ अंधेरा।
धुंधलाई॰ ना॰ स्त्री॰ अंधेरा, धुंधलाई।
धुंधेला॰ गु॰ छली, ठग।
धुकड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा थैला पैसा रखने की होती है।
धुकधुकी॰ ना॰ स्त्री॰ कंठका भूषणविशेष, धड़ धड़ाहट शब्द, ध्यान।
धुत्ता॰ ना॰ पु॰ धूर्त्तता।
धुन॰ ना॰ स्त्री॰ चसका, लौ, अभ्यास, परिश्रम, लहर, उमंग।
धुनकना॰ स॰ क्रि॰ तूमना, धुनना।
धुनना॰ स॰ क्रि॰ तूमना, पीटना, मारना।
धुनिया॰ ना॰ पु॰ बिहना तूमनेवाला।
धुन्ना॰ स॰ क्रि॰ धुनना।
धुमला॰ गु॰ धुंधा, अंधा अंधेरा।
धुमलाई॰ ना॰ स्त्री॰ अंधियारा।
धुर॰ ना॰ पु॰ आरम्भ, अवधि पास, बोझ।
धुरपद॰ ना॰ पु॰ गीतविशेष।
धुरसांझ॰ ना॰ स्त्री॰ गोधूली, सायंकाल।
धुरन्धर॰ गु॰ धुरी धरनेवाला, ना॰ पु॰ धव वृक्ष।
धुरवा॰ ना॰ पु॰ मेघ, बादलयथा, धुरवाधुरवा धाई पासा, समुझि परै नहिं अवनि अकासा।
धुरव्य॰ ना॰ पु॰ मेघ।
धुरियाना॰ स॰ क्रि॰ मटियाना, धूललगाना, धूल फेंकना।
धुरी॰ ना॰ स्त्री॰ काठ या लोहे की वस्तु जिसपर पहिया फिरता है।
धुलना॰ अ॰ क्रि॰ स्वच्छहोना, पाकहोना, धोजाना।
धुलवाना॰ स॰ क्रि॰ धुलाना।
धुलाई॰ ना॰ स्त्री॰ वस्त्र धोने का काम वा पैसा।
धुलाना॰ स॰ क्रि॰ मल निकलाना, व वस्त्र को स्वच्छ करवाना।
धुलेंड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ होलीका दूसरा दिन।
धुस्सा॰ ना॰ पु॰ लोई, ऊणवस्त्रविशेष।
धूआं॰ } धूवां॰ } ना॰ पु॰ धुवा, धूम।
धूवारा॰ ना॰ पु॰ धुआ निकलने का स्थान।
धुधरा॰ ना॰ पु॰ अंधेरा।
धूत॰ गु॰ धूर्त्त।
धूर्ति॰ ना॰ स्त्री॰ ठग, छली यथा-तुलसी रघुवर सकहि सकै न कलियुग धूर्ति।
धूना॰ ना॰ पु॰ राल।
धूनी॰ ना॰ स्त्री॰ धुवां, आग जो साधु लोग तापते हैं गु॰ स्थिर।
धूप॰ ना॰ स्त्री॰ घाम, सुगन्धि, द्रव्य जो पूजा में जला के चढ़ाते हैं, वृक्षविशेष वा उसका काष्ठविशेष।
धूपना॰ स॰ क्रि॰ राललगाना, धूपजलाना।
धूपित॰ गु॰ धूप दियागया।
धूम॰ ना॰ पु॰ धुवा ना॰ स्त्री॰ रौला, बखेड़ा, उत्पात, भीड़।
धूमकेतु॰ ना॰ पु॰ अग्नि।
धूमधाम॰ ना॰ पु॰ धुवांका घर, हुल्लड़, रौला, बनाव।

धूमपुष्पा० ना० स्त्री० अग्नि जिह्वा विशेष।
धूमयोनि० ना० पु० मेघ, बादल।

धूमर०
धूमरा०
धूमल०
धूमल ०
} गु० भदमला, धुमैला, धवा का रंग।

धूमशिखा० ना० पु० अग्नि।
धूमशीर्षा० ना० स्त्री० अग्निजिह्वा विशेष।
धूमा० गु० धूमला।
धूमी० गु० उत्पाती जिसकी धूम होरही।
धूम्र० ना० पु० धुआ, ऊंट।
धूम्रपान० ना० पु० धुवा का पाना।
धूम्रपानयंत्र० ना० पु० हुक्का।
धूम्रयोनि० ना० पु० मेघ, बादल।
धूम्राक्ष० ना० पु० राक्षस विशेष।
धूर० ना० स्त्री० धूल।
धूरा० ना० पु० जो रोगी के हाथ पाव आदि में रगडते हैं।
धूरि० ना० स्त्री० धूलि।
धूरी० ना० स्त्री० धुरी।
धूर्त्त० गु० नटखट, शठ, ठग, ना० पु धतूरा।
धूर्त्तता० ना० स्त्री० ठगई, शठता।

धूल०
धूलि०
} ना० स्त्री० रज, रेणु, खाक।

धूसना० स० क्रि० ठासना, भरना, दबाना।
धूसर० गु० मिट्टी लगाये हुये ना० पु० जाति विशेष।
धूसरि० ना० स्त्री० धूलि।
धूहा० ना० पु० धोखा, पक्षी आदि के डराने के लिये खेतमें गाडते हैं, दूहा।

धृक्०
धृग्०
} अव्य० धिक्।

धृत० गु० जो धारण कियाजाय, रक्खागया।
धृतराष्ट्र० ना० पु० दुर्योधन का पिता।
धृति० ना० स्त्री० दृढता कामों में धीरज।
धृष्ट० गु० ढिठाइद, चतुर, परिपूर्ण, पण्डित, शाला।
धेंगामुष्टी० ना० स्त्री० धूसमधूसा।
धेनु० ना० स्त्री० गाय वा बछडासमेत गाय, दुधार गाय।
धेनुक० ना० पु० खररूपी दैत्य विशेष।
धेनमति० ना० स्त्री० गोमती नदी।
धेला० ना० पु० अधला।
धेली० ना० स्त्री० अधेली, आधा रुपया।
धैर्य० ना० पु० धीरता, धीरज।
धैर्य्यवान्० गु० धीरजी, सन्तोषी।
धैवत० ना० पु० रागका स्वर विशेष।
धोआ० ना० पु० फलकी भेंडाली।
धोई० ना० स्त्री० भिगोई हुई दाल।
धोंवाला० ना० पु० धुवानिकलने का मार्ग।
धोक० ना० स्त्री० देवता के आगे झुकना, आड तकिया।
धोकड़० गु० महाबली।
धोखा० ना० पु० भ्रम, छल, धाधल।
धोता० ना० पु० धूर्त्त, पाखण्डी।
धोती० ना० स्त्री० कटि में पहिरने का वस्त्र विशेष।
धोना० स० क्रि० पखारना, पीचना।
धोप० ना० स्त्री० खड्ग विशेष।
धोव० ना० स्त्री० पखालन, धोनेका काम।
धोबिन० ना० स्त्री० धोबीकी स्त्री।
धोबी० ना० पु० कपडा धोनेवाला।
धोरी० ना० स्त्री० पुरयबेल जो गाडी में सब से पहिले मचाया जाता है।
धौ० ना० पु० वृक्ष विशेष।
धौं० अव्य० अथवा, वा, मानों, या।
धौंक० ना० स्त्री० झपाट, धारा, झारा।
धौंकना० स० क्रि० धौंकनी से आगिफूंकना।
धौंकनी० ना० स्त्री० धौंकी सलैंडी जिस से आगिको प्रचण्ड करते हैं, निगाली
धौंका० ना० स्त्री० धौंकनी।

धौताल० गु० धनवान्, बलवान्, सूरमा, दुर्जन।
धौताली० ना० स्त्री० धन, बल, सूरमापन, दुष्टता।
धौँन० ना० पु० चारि पसरी का परिमाण।
धौंस० ना० पु० दौड़, धर्पी।
धौंसा० ना० पु० बड़ाडङ्का।
धौंसिया० ना० पु० दौड़करनेहारों का प्रधान।
धौर० ना० पु० कपोत की जाति विशेष।
धौरा० गु० धौला।
धौल० ना० स्त्री० टीप, थप्पड़।
धौलधप्पा० ना० पु० धप्पाधप्पी।
धौला० गु० श्वेत, सफ़ेद।
धौलाई० ना० स्त्री० उज्ज्वलता, गोराई।
धौटाना० } स० क्रि० थप्पड़ मारना, सु
धौलियाना० } नियाना।
ध्यान० ना० पु० विचार, सोच, चिन्ता।
ध्यानी० गु० विचारवान्, सोचा।
ध्याना० } स० क्रि० सोचना, विचारना, मा
ध्यावना० } नना, भजना, गाना यशका।
ध्रुव० ना० पु० धूरी, योग राग विशेष, दैत्य विशेष, उत्तर दक्षिणकेन्द्र स्थान में प्रायस्थिर एक तारा उत्तानपादका पुत्र भक्त विशेष, गु० स्थिर, अचल, सनातन, निश्चय।
ध्रुवतारा० ना० पु० उत्तर दक्षिण केन्द्र में प्राय स्थिर एकतारा।
ध्रुवनन्दा० ना० स्त्री० श्रीगगानी।
ध्रुवपद० ना० पु० धुरपद गीत विशेष।
ध्रुवमत्स्यबंध० ना० पु० कुतुबनुमा।
ध्रुवा० ना० स्त्री० शालपर्णी, कील, लगाव।
ध्वंस० ना० पु० नाश।
ध्वक्षोली० ना० स्त्री० काकोली।
ध्वज० ना० स्त्री० झण्डा, पताका, ध्वजा।
ध्वजिनी० ना० स्त्री० सेना, फौज।
ध्वजा० ना० स्त्री० पताका।
ध्वनि० ना० स्त्री० शब्द, बानेका शब्द।
ध्वनित० गु० संक्षेप से कथित।
ध्वनी० ना० स्त्री० नदी, गु० शब्दक।
ध्वन्यात्मक० गु० शब्दविशेष, जिसमेंवर्ण प्रि वरण हो।
ध्वस्त० गु० भ्रष्ट, खराब।
ध्वान० ना० पु० शब्द।
ध्वान्त० ना० पु० अँधियारा, काव्ययथा, यथा ध्वान्त विध्वंस आदित्य कारा, तथा दैरि वि मौघ शोकप्रहारी।

(न)

न० अव्य० अ० नहीं।
नक० ना० स्त्री० नाक।
नकचढ़ा० गु० क्रोधा, चिड़चिड़ा।
नकछिकना० ना० स्त्री० घास विशेष।
नकटा० गु० नाक कटा।
नकड़ा० ना० पु० नाकमें रोग विशेष।
नकतोड़ा० गु० हँसोड़, धूर्त्त।
नकसीर० ना० स्त्री० नाक की शिरा।
नकार० अव्य० ना० पु० अस्वीकार।
नकारना० स० क्रि० नकार करना, मुकरना।
नकुल० ना० पु० नौला सांपका वैरी, नगुला, पाण्डुका पांचवां पुत्र।
नकुआ० ना० पु० नाक, अग्नि।
नकेल० ना० स्त्री० काठ की वस्तु विशेष जो ऊंटकी नाकमें पहिनाते हैं।
नक्का० ना० पु० पाँसे वा तासका इक्का।
नक्की० ना० स्त्री० नाकसे बोलना, जूए में एक बदना गण्डे से।
नक्कीमूठ० ना० स्त्री० द्यूतविशेष, जुआविशेष।
नक्कू० गु० अपयशी, बदनाम।
नक्र० ना० पु० कुम्भीर, मगर, नाका।
नख० } ना० पु० अँगुलियों के अग्रभाग का
नखर० } अस्थिभाग, नाखून, नह।
नखरेखा० ना० स्त्री० खसोट, बकोट।
नखियाना० स० क्रि० खसोटना, बकोटना
नखी० गु० नखधारी, नखवाला, पशु।

नग० ना० पु० अंगूठी का पाषाणविशेष, मणि, पर्वत, वृक्ष, धाम।

नगचाई० ना० स्त्री० अवाई।

नगचाना० अ० क्रि० पास आना।

नगचाहट० ना० स्त्री० नगचाई।

नगदौना० ना० पु० पौधा विशेष।

नगन० ना० पु० हाथी, गु० नग्न।

नगभिद्धक० ना० पु० पाषाण भेद।

नगर० ना० पु० शहर, पुरी, ग्राम।

नगरकोट० ना० पु० कोटकांगड़ा।

नगरनारी० ना० स्त्री० गणिका, वेश्या।

नगरवर्त्ती० ना० पु० नगरवासी।

नगरवासी० गु० पुरी वा शहरका वासी।

नगरी० ना० स्त्री० छोटानगर, बस्ती।

नगा० ना० स्त्री० नारी, स्त्री।

नग्न०
नंगा०
नंगा० } गु० दिगम्बर, वस्त्रहीन।

नंगी० ना० स्त्री० नग्न स्त्री।

नचवाना० स० क्रि० नचाना, नाचकराना।

नचवैया० ना० पु० नाचने हारा।

नचाना० स० क्रि० नाचकराना।

नट० ना० पु० डीठबन्दों वा नाचनेहारोंकी जाति विशेष, कौतुकी, स्वांगी।

नटखट० गु० धूर्त्त, कपटी, छली, फरफन्दिया।

नटखटी० ना० स्त्री० धूर्त्तता, कपट, छल, फरफन्द।

नटत० क्रि० अस्वीकार करता है, नाचता है।

नटना० अ० क्रि० नमानना, अस्वीकारकरना।

नटनागर० ना० पु० चतुर नट, डीठबन्द, टोनहा।

नटभूषण० ना० पु० हरताल, नटकाभूषण।

नटवर०
नटवा० } ना० पु० डीठबन्द, टोनहा।

नटसाल० ना० पु० टूटाकांटा।

नटिन०
नटिनी० } ना० स्त्री० नटकी स्त्री।

नटी० ना० स्त्री० वेश्या, नाचनेहारी।

नटुआ०
नटुवा० } ना० पु० नटवा।

नठना० अ० क्रि० नशाना, बिगड़ना, स० क्रि० नाशना, बिगाड़ना।

नत० गु० नम्र० ना० पु० तगर, औषधि, अव्य० नतरु, नहीं तो।

नतरु० अव्य० नहीं तो।

नतांगी० ना० स्त्री० ककरासिंगी।

नति० ना० स्त्री० प्रणाम, नमस्कार।

नतिनी० ना० स्त्री० नातिन, दौहित्री।

नतैत० ना० पु० नातेदार, सम्बन्धी, गोतैत।

नथ० ना० स्त्री० नाकमें का गहनाविशेष, नथुनी।

नथना० अ० क्रि० छिदना, फसना, ना० पु० नथुना।

नथनी० ना० स्त्री० नाथने का अस्त्र विशेष, नथुनी।

नथी० गु० छिदी, फँसी।

नथुआ० ना० पु० छिदुआ।

नथुई० ना० स्त्री० छिदुई।

नथुना० ना० पु० नाकका मार्ग।

नद० ना० पु० ब्रह्मपुत्रादि जलप्रवाह विशेष।

नदिया० ना० स्त्री० छोटी नदी, ना० पु० नद विशेष।

नदी० ना० स्त्री० जो जलकी धार पहाड़ से निकलकर देशान्तरों में होकर समुद्र में जाय जैसे गंगा और सिन्धु आदि।

नदीकान्ता० ना० स्त्री० [illegible]

नदोला० ना० पु० [illegible]

ननद०
ननदिया० } ना० स्त्री० [illegible]

ननदी० ना० स्त्री० [illegible]

ननिहाल० ना० पु० नानाघर वा पाला।

नन्द० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र के कथित पिता, नग, नो ६।
नन्दन० ना० पु० देव उपवन, देववन, चन्दन, लड़का, गु० आनन्ददाता।
नन्दलाल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
नन्दिग्राम० ना० पु० वस्तीविशेष जहां भरत जी तपस्या करते थे।
नन्दिनी० ना० स्त्री० पार्वती, पुत्री, पत्नी की बहिन प्रयगु, सौंति, हर।
नन्दी० ना० पु० शिवजी का वाहन।
नन्दीगण० ना० पु० शिवजी का गण।
नन्दीघोष० ना० पु० रथ जो अग्निदेवने अर्जुन को दियाथा।
नन्दोई० ना० पु० पतिकी बहिन का स्वामी, ननद का पति।
नन्दोला० ना० पु० नाद।
नन्दोसी० ना० पु० नन्दोई।
नन्हा० गु० छोटा लघु।
नपुंसक० ना० पु० क्लीव, हीजड़ा मार।
नपुंसकलिंग० ना० पु० तासशलिंग।
नभ० ना० पु० आकाश आश्रय और श्रावण मास।
नभग० गु० पक्षी पवन ग्रह, देवता।
नभगनाथ० ना० पु० गरुड़ चन्द्रमा।
नभगामी० गु० पक्षीआदि, नभग।
नभगेश० ना० पु० नभगनाथ, गरुड़, चन्द्रमा
नभश्चर० ना० पु० आकाश में उड़ने हार, यथा पक्षी, तारागण, ग्रह देवता।
नभस्य० ना० पु० भाद्रपद।
नभस्वन० ना० पु० पवन वायु।
नम० ना० पु० नमस्कार, त्याग।
नमत० गु० प्रणाम करते।
नमन० गु० नम्रता, नमता।
नमस्कार० ना० पु० प्रणाम, सलाम का बाधक।
नमस्कारी० ना० पु० लजालू।
नमस्य० गु० नमस्कार के योग्य।
नमामि० क्रि० नमस्कार करता हूं।
नमित० गु० नीचे शिर किये, शिरझुकाय नमस्कार करते।
नमो० ना० पु० नमस्कार या प्रणाम करता हूं, दोहा, नमामि गुरुदेवजी करौंप्रणाम अनन्त तुव प्रसाद लखभेद था चरणदास बरान १० इतिस्वरोदय।
नम्र० गु० विनयी, मिलनसार, आधीन, नर्म।
नम्रता० ना० स्त्री० आधीनता, विनय, नर्मी।
नय० ना० पु० नीति, कानून।
नयन० ना० पु० नेत्र, आंख।
नयनअमिय० ना० पु० नेत्रोंका अमृत, यथा, श्रीगुरुपदरजमृदुलअंजन, नयनअमियदृगदोषवि भंजन। इतिरामायण।
नया० गु० नवीन, ताजा।
नर० ना० पु० मनुष्य, पुरुष, पुत्र।
नरक० ना० पु० पापों के भोग फल का स्थान, दैत्य विशेष जिसे भौमासुर भी कहते हैं।
नरकट० ना० पु० सरकण्डा तृणविशेष, जिस की चटाई बनती है।
नरकुसी० ना० स्त्री० हलक, गला।
नरकुल० ना० पु० नरकट।
नरपति० ना० पु० मनुष्यों का रक्षक, राजा।
नरपुर० ना० पु० मर्त्यलोक।
नरवाहन०, नरयान० } ना० पु० कुबेर, यक्षराज।
नरसिंगा० ना० पु० बाजा विशेष तुरही।
नरसिंगिया० ना० पु० नरसिंगाबजानेहारा।
नरसिंह० ना० पु० विष्णुका चौथाअवतार।
नरसों० अव्य० बीताहुआ चौथादिन, चौथादिन आनेवाला।
नरहड़० ना० पु० पिण्डली की हड्डी।
नरहरि० ना० पु० नरसिंहजी, कवि विशेष।
नरहरिदास० ना० पु० गोसाईं, तुलसीदास के सद्गुरु।

नरान्तक० ना० पु० नरांतकाल, दैत्यविशेष।
नरिया० ना० स्त्री० छोटी नाली, खपरा।
नरी० ना० स्त्री० चर्म विशेष लाहे का यंत्र विशेष, जिसमें बीने का सूत रखते हैं।
नरुख० गु० पुल्लिंग।
नरेट० ना० पु० } नरेटा० ना० पु० } नरेटी० ना० स्त्री० } सासी नली, नटई
नरेन्द्र० } नरेश० } ना० पु० राजा, बहुतदेश का प्रतिपालक।
नरोत्तम० गु० अच्छामनुष्य ना० पु० श्रीकृष्णजी।
नर्त्तक० ना० पु० नाचनेहारा।
नर्त्तकी० ना० स्त्री० नीच, नाचनेवाली।
नर्त्तन० ना० पु० नाच, नृत्य।
नर्मदा० ना० स्त्री० नदी विशेष।
नल० ना० पु० मुख्य वानर, मुख्यराजा, कुबेर का पुत्र, नड़कुल, पोंगी, खोखल।
नलकूबर० ना० पु० कुबेर के बालक।
नलपुरदिक० ना० पु० बलिहारी।
नला० ना० पु० उदर में स्थान विशेष।
नलिका० ना० स्त्री० नली, नाड़ी।
नलिन० ना० पु० कमल।
नलिनी० ना० स्त्री० बहुत नलिनका संयोग स्थान या कमलिनी।
नली० ना० स्त्री० नरटी, पोंगी, नाल, नरेटा, लाहे का यंत्र जिसमें सूत रखकर बिनते हैं।
नलुआ० ना० पु० भारी बांसका एक भाग पत्रा आदि रखने के काम आताहै।
नव० गु० गिनती विशेष, ९ नया।
नवखण्ड० ना० पु० पृथ्वी के नौ भाग अर्थात् भरतखण्ड, इलावर्त्त, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हिरण्य, रम्य, हरि, कुरुखण्ड।
नवजल० ना० पु० प्रथम वर्षा, नया वर्षा।
नवयौवना० ना० स्त्री० यौवनवती।
नवद्वार० ना० पु० शरीर के नौ द्वार अर्थात् आंख २ कान २ नाक २ मुख, गुदा, लिंग।

नवधा० गु० नौप्रकार।
नवधाभक्ति० ना० स्त्री० नौ प्रकार की भक्ति अर्थात् सत्संग, हरिकथा, गुरुसेवा, हरिगुण गान, वेदपाठ, सज्जनधर्म, समभाव, लाभा लाभसम, हरिशरण।
नवधाभजन० ना० पु० नौ प्रकारका भजन अर्थात् हरिगुण श्रवण, हरिगुण कीर्त्तन, हरिस्मरण, हरिपदसेवा, हरिअर्चन, हरिपदवंदन, दास्यभाव, मित्रभाव, आत्मज्ञान ६।
नवनाडिका० ना० स्त्री० नौश्वासा अर्थात् इड़ा, पिंगला, सुषुम्णा, पयस्विनी, कुहू, गंधारी, शंखिनी, पूषा, अलम्बुषा।
नवनि० ना० स्त्री० झुकनि, प्रणाम।
नवनिधि० ना० स्त्री० कुबेर का धन।
नवनीत० ना० पु० मक्खन, नैनू, मस्का।
नववधू० ना० स्त्री० नईबहू, नई दुलहिन।
नवबाला० ना० स्त्री० नवयौवना।
नवम० गु० नवां है।
नवमांश० ना० पु० नवभाग।
नवमी० ना० स्त्री० नवतिथि, नौमी।
नवरंग० ना० पु० नवरंग, नारंगी, संतरा।
नवरत्न० ना० पु० अंग्रेजी पहिनने के लिये हार विशेष।
नवरस० ना० पु० नौरस या नौ प्रकार के रस अर्थात् शृंगार, करुणा, वीभत्स, हास्य, शान्त, भयानक, अद्भुत, रौद्र, वीरता।
नवल० गु० सुन्दर, नया, ना० पु० किशोरा।
नवला० ना० स्त्री० नवबाला, नवयौवना।
नवा० ना० गु० नया।
नवाड़ा० ना० पु० नाव विशेष।
नवाना० स० क्रि० झुकाना, भुकना, डाहरा, अर्थनवाना।
नवासी० अ० क्रि० नमना, झुकना।
नवारी० ना० स्त्री० पुष्प विशेष या उपनाम।
नवासी० गु० अस्सी और नौ ८९।

नधी० ना० स्त्री० रस्सी जिससे गाय व पाव दूध दुहते समय बांधते हैं
नवीन० गु० नया, ताजा।
नवीनता० ना० स्त्री० नयापन।
नवोढ़ा० ना० स्त्री० नई स्त्री, नववधू।
नवोद्भिद० ना० पु० अंकुर, अंखुआ।
नव्य० गु० नया, नवीन, उपरा।
नव्वे० गु० नवदहाई ९०।
नश्वर० गु० नाशवान् विनाशी, झूठ।
नशावा० क्रि० मिटाया, नाश किया।
नखत० ना० पु० नक्षत्र, तारागण, तारा।
नष्ट० गु० जिसका नाश हुआ, भ्रष्ट।
नष्टता० ना० स्त्री० भ्रष्टता।
नष्टा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी।
नस० ना० स्त्री० नाड़ी, रग।
नसाना० स० क्रि० नाशकरना, बिगाड़ना।
नसी० ना० स्त्री० फालका अग्रभाग या फाला जो लोहे का हल में लगता है
नस्य० गु० सानुनासिक हुलास जो नासिका से सूंघते हैं।
नह० ना० पु० नख, नाखून।
नहक० गु० दुबला, पतला, सुखना।
नहद्दा० ना० पु० बड़ेरा सलाह।
नहर्नी० ना० स्त्री० नहनी नखानी विशेष।
नहरुवा० ना० पु० रोग विशेष।
नहर्नी० ना० स्त्री० नख काटने का अस्त्र विशेष।
नहलाना० स० क्रि० स्नान कराना नहाना।
नहान० ना० पु० स्नान।
नहाना० अ० क्रि० स्नान करना।
नहारहमुंह० अव्य० बिनाखाये।
नहारू० ना० पु० चमड़े का टुकड़ा।
नहियर० ना० पु० स्त्री की ससुराल या मैका।
नहीं० अव्य० निषेध, न।
नक्षत्र० ना० पु० तारा तारागण।
ना० अव्य० नहीं।

नाईं० अव्य० प्रकार, सदृश, समान।
नाइन० ना० स्त्री० नाई की जोरू।
नाई० } ना० पु० नापित, जातिविशेष, क्षौरक।
नाऊ० }
नाक० ना० पु० आकाश, स्वर्ग, स्त्री नासिका।
नाकड़ा० ना० पु० नाक में रोगविशेष।
नाकपति० ना० पु० इन्द्र।
नाकनटी० ना० स्त्री० अप्सरा परी।
नाका० ना० पु० मार्ग वा पैड़े का अन्त, सुईका छेद, गला, नक, जलजन्तु विशेष।
नाकिन० ना० स्त्री० नाकवाली स्त्री।
नाग० ना० पु० सांप, पत्र, हाथी दुष्टनर, सूक्ष्म वायुभेद।
नागउरग० ना० पु० सीसा, धातु।
नागकन्या ना० स्त्री० कन्या जो पातालमें रहती है सुलोचना, मदनादेवा बोना।
नागकेसर० ना० पु० पुष्प विशेष।
नागगर्भ० ना० पु० सिन्दूर चन्दन।
नागचाम्पेय० ना० पु० नागकेसर।
नागज० ना० पु० सिंदूर चन्दन।
नागदन्ती० ना० स्त्री० इन्द्र वारुणी।
नागदमनी० ना० स्त्री० नागदौन।
नागदौन० ना० पु० पौधा, मरुआ।
नागन० ना० स्त्री० सांपिनी।
नागनी० ना० स्त्री० पान नागरी रस।
नागपञ्चमी० ना० स्त्री० श्रावणशुक्लपञ्चमी का पर्व विशेष।
नागपर्णी० ना० स्त्री० सांपिन, नागिन।
नागपाश० } ना० पु० पाशा वा बन्धन
नागपास० } विशेष।
नागपुर० ना० पु० नगर विशेष, नागलोक।
नागफांस० ना० स्त्री० फांसी विशेष।
नागबला० ना० स्त्री० गंगेरुआ।
नागवल्ली० ना० स्त्री० नागबेलि।
नागबेलि० ना० स्त्री० पानआदि।
नागभाषा० ना० स्त्री० प्राकृत भाषा जो पा-

सालके रहने हार बोलते हैं।
नागमाता० ना० स्त्री० कद्रू मनसिल।
नागर० ना० पु० गुजराती ब्राह्मणकी जाति विशेष, नागरोपम अर्थात् चतुर, और पानी, धौरा, सोंठि।
नागरंग० ना० पु० नारंगी।
नागरमोथा० ना० पु० सुगंधि तृण विशेष का मूल।
नागरि० } ना० स्त्री० चतुर स्त्री, नागरकी
नागरिन० } स्त्री।
नागरिपु० ना० पु० न्याला, मार, गरुड़, सिंह।
नागरी० ना० स्त्री० संस्कृत के अक्षर, चतुर स्त्री।
नागल० ना० पु० हल खत जोतने का।
नागा० ना० पु० संन्यासी, नम्बर।
नागाह्वा० ना० स्त्री० नागदौन।
नागारि० ना० पु० नागरिपु।
नागार्जुन० ना० पु० सहस्रबाहु राजाविशेष।
नागिन० } ना० स्त्री० सांपका स्त्री।
नागिनी० }
नागौर० ना० पु० मारवाड़ दरार पासका प्रदेश।
नाघना० } स० क्रि० लांघना, पारजाना।
नांघना० }
नाच० ना० पु० नृत्य।
नाचना० अ० क्रि० नाचकरना, कूदना।
नाज० ना० पु० अन्न, अनाज।
नाट० ना० पु० बासा।
नाटक० ना० पु० प्रथकिशेष।
नाटा० गु० ठिगना, टेनी।
नाटिका० ना० स्त्री० नाड़ी।
नाटा० ना० स्त्री० छोटी, ठिगनी।
नाठि० ना० स्त्री० नाश, विनाश।
नाठी० गु० नाशगई।
नाड़० ना० स्त्री० मीना, नाला।
नाड़िका० ना० स्त्री० एकघड़ी।
नाड़ी० ना० स्त्री० पेटमेंकी नस, रोगपरीक्षा के लिय हाथ में की एकरग, श्वासा, नस, नली।
नाड़ीतिक्त० ना० पु० चिरायता।
नाड़ींधम० ना० पु० सुनार, स्वर्णकार।
नाड़ीमण्डल० ना० पु० नाड़ियों का समूह।
नाड़ीज्ञान० ना० पु० रोगपरीक्षा, और श्वासा का ज्ञान।
नात० ना० पु० सम्बन्ध, रिश्तह, बिरादरी।
नातर० } अव्य० नातरथा, नहीं तो।
नातह० }
नाता० ना० पु० सम्बन्ध।
नातिन० ना० स्त्री० कन्या की कन्या, बेटा की बेटी।
नाती० ना० पु० बेटीका पुत्र, बेटा का पुत्र, रामायणे यथा, उत्तमकुल पुलस्ति के नाती शिवविरचि पूजेउ बहुभाती।
नाथ० ना० पु० स्वामी, प्रभु, ना० स्त्री० बैल की नाककीरस्सी, धार की बत्ती।
नाथना० स० क्रि० छेदना, बैल के नाकमेंरस्सी डालना।
नाथित० गु० जो नाथागया।
नाद० ना० पु० शब्द, गरज, गीत, राग।
नादना० स० क्रि० आरम्भ करना।
नादिया० ना० पु० नन्दी, पशुविशेष जो जोगियों के पास होता है।
नाधना० स० क्रि० जुये में लगाना, आरम्भ करना।
नाधा० ना० पु० तालाव, वा नदी में से पानी निकलने का गढ़ा।
नानक० ना० पु० सिक्खों का गुरु विशेष।
नाना० ना० पु० माताका पिता, गु० अनेक, बहुत, समूह।
नानाकार० गु० बहुत रूपके, अनेकप्रकारके।
नानाकारण० ना० पु० अनेकप्रकार के कारण।
नानाप्रकार० } गु० अनेक प्रकार।
नानाभांति० }
नानारूप० ना० पु० अनेक रूप।

नानार्थ० ना० पु० अनेक अर्थ।
नानाविधि० गु० अनेक प्रकार।
नानी० ना० स्त्री० माता की माता।
नान्द० ना० स्त्री० नाद, मिट्टी का बड़ा बर्त्तन विशेष।
नान्दिया० ना० पु० शिवका वाहन, वृषभ।
नान्दीमुख० ना० पु० श्राद्ध विशेष, जो पुत्र जन्म के पीछे होता है वा विवाहादि में।
नान्घना० स० क्रि० आरम्भ करना।
नान्यतर० } अव्य० अन्यथा नहीं, असत्य नहीं।
नान्यथा० }
नाप० ना० स्त्री० माप, परिमाण।
नापना० स० क्रि० मापना, परिमाण करना।
नापित० ना० पु० नाई, हज्जाम।
नाभि० ना० स्त्री० पेट मध्यका स्थान, ढोंढ़ी, तोंदी, ना० पु० राजाविशेष।
नाम० ना० पु० कीर्ति, यश, विख्याति, संज्ञा।
नामकरण० ना० पु० संस्कार विशेष, नाम रखना।
नामानि० ना० पु० नामका बहुवचन।
नामी० गु० प्रसिद्ध, कीर्तिमान् विख्यात, यशी, मशहूर।
नायक० ना० पु० मखिया, प्रधान, स्वामी, सुन्दर रीति से गायक या नर्त्तक बनजारों का प्रधान।
नायका० ना० स्त्री० नायिका।
नायिन० ना० स्त्री० नाई की जोरू।
नायकी० ना० स्त्री० नायक की स्त्री, धर्मी, प्रिया कुट्टनी।
नार० ना० स्त्री० नारि, नाल, झुण्ड, माता।
नारक० ना० पु० नरक।
नारकी० गु० नरक निवासी, नरकी।
नारंगफ० ना० पु० } फल विशेष।
नारंगी० ना० स्त्री० }
नारद० ना० पु० मुनि विशेष।
नारा० ना० पु० नाला कमरबन्द।
नाराच० ना० पु० बाण, तीर।
नारायण० ना० पु० श्रीभगवान।
नारायणी० ना० स्त्री० लक्ष्मी, दुर्गा, पौंग, नारायण सम्बन्धी ज्योति विशेष।
नारि० ना० स्त्री० अबला, नाड़ी, जिस में बाने का सूत रखकर बुनते हैं, बन्दूक बिना काठ, बांसकी पोर जिसमें लोन पानी आदि भरके बैल गाय आदिको पिलाते हैं।
नारिकेर० }
नारिकेल० } ना० पु० फल विशेष।
नारियल० }
नारियली० ना० पु० नारियल का हुक्का।
नारी० ना स्त्री० अबला, स्त्री, नाड़ीमाग ?? शय, जिसे करमुआ कहते हैं।
नाल० ना० पु० कमलादि की दण्डी, नाठ, पोला नल, नली।
नालकी० ना० स्त्री० पालकी विशेष।
नाला० ना० पु० जल निकलने का मार्ग।
नालिसिंदुक० ना० पु० सभालू।
नाली० ना० स्त्री० मुहरी छोटा नाला, जिससे में दण्डे करते हैं, जिसकाठका उछाते हैं।
नाव० ना० स्त्री० नौका, तरनी।
नावना० स० क्रि० झुकाना, डालना, नवाना।
नावरि० ना० पु० नियारा, जलक्रीडा।
नाविक० ना० पु० मांझी, नाव वा जहाज चलानेहारा मल्लाह, कप्तान।
नाशक० गु० नाशकरनेहारा, मिटानेहारा।
नाशन० ना० पु० मिटावन, भग्न।
नाशना० स० क्रि० मिटाना ध्वंसकरना, नाशना
नाशपाती० ना० स्त्री० फल विशेष।
नाशा० ना० स्त्री० नासिका।
नाशासभेदन० ना० पु० नकछीकना पौधा।
नाशिका० ना० स्त्री० नासिका, नाक।
नाश० ना० पु० सुंघनी, हुलास।
नाशना० अ० क्रि० भागना, स० क्रि० नाश करना।

नासा० ना० स्त्री० नाक, नासिका।
नासिका० ना० स्त्री० नाक।
नास्ति० अव्य० जो नहीं है।
नास्तिक० } ना० पु० जिनके मत में पर
नास्तिकी० } लोक की बात को नहीं मानते हैं, जैनी।
नाह० ना० पु० नाथ, स्वामी।
नाहर० ना० पु० शेर, व्याघ्र।
नाहीं० अव्य० नहीं।
नि० अव्य० यह शब्द जिसशब्द के पहिले संयोगी होय उसको अर्थरहितकरे, यथा, नि शङ्क अर्थात् शङ्कारहित, निषेध।
निःपाप० गु० अदोष।
निःशङ्क० गु० निडर, अभय।
निःशेष० गु० शेषरहित अर्थात् सम्पूर्ण।
निःपट० गु० अति मूर्ख।
निःसंग० गु० संग रहित अर्थात् अकेला।
निःशरण० ना० पु० शरणहीन, अर्थात् मृत्यु उपाय, विदा।
निःस्व० गु० दरिद्र, अधन।
नि० अव्य० में भीतर, ऊर्ध्व, रहित।
निष्कण्टक० गु० सुगम बेखटक निर्दोष, सावसुखी, बेफ़िक्र।
निकन्द० गु० स्पन्द रहित, अर्थात् उखड़, निर्मूल।
निकन्दन० गु० निर्मूलकर्त्ता, उखाड़नहारा।
निकट० अव्य० पास, समीप करीब।
निकटवर्त्ती० ना० पु० पासहो, समीप में।
निकटी० ना० स्त्री० छोटी तराज़ू।
निकम्मा० गु० निर्गुणी जो किसीकामका नहीं है, शिथिल।
निकर० ना० पु० समूह, झुण्ड, सार, सब।
निकरना० अ० क्रि० निकलना।
निकरम्ब० ना० पु० समूह, गिरोह।
निकलचलना० अ० क्रि० भागजाना बढ़के बोलना अधिक होजाना।
निकलना० अ० क्रि० निकसना, बहना, बाहर आना, भागना, उठाना, उखड़ना।
निकलपड़ना० अ० क्रि० बाहर, आना।
निकसना० अ० क्रि० निकालना।
निकाना० स० क्रि० खेतकी घास निकालना।
निकाम० गु० अति कामना रहित, अकाम।
निकाय० ना० पु० सब समस्त, समूह।
निकारना० स० क्रि० निकालना, अस्वीकार करना।
निकाल० ना० पु० उभार, निकास, जाड़ताड़।
निकालना० स० क्रि० उतारना, बिनना, चुनना, उठाना उखाड़ना।
निकास० ना० पु० कगर, नगरके आसपास, मार्ग निकलनेका, चुकौता, मूल।
निकासना० स० क्रि० निकालना।
निकासी० ना० स्त्री० कर, महसूल, अन्न।
निकासू० गु० जो निकालागया।
निकेत० ना० पु० घर।
निकुच० ना० पु० बड़हल।
निकुञ्ज० ना० पु० कुञ्ज, मण्डप।
निकुटी० ना० स्त्री० छोटी इलायची।
निकुम्भिला० ना० स्त्री० रावणका यज्ञस्थान, गुहा।
निकृष्ट० गु० अधम, नीच, खराब।
निषङ्ग० ना० पु० तूणीर, तरकश।
निखट्टू० गु० आलसी, उड़ाऊ, लुटाऊ।
निखण्ड० गु० मध्य।
निखरना० अ० क्रि० छिलका उतारना, उजला होना चमड़ा उधड़ना।
निखराना० स० क्रि० उजलाकराना, फचीना।
निखर्व० ना० १० खर्व, १०००००००००००।
निखारना० स० क्रि० उजला करना, कपड़ेकी माड़ी निकालना।
निखारा० गु० स्वच्छ, उज्ज्वल।
निखिल० गु० सर्व, सम्पूर्ण, बिलकुल।
निखोट० ना० पु० खोट रहित मनुष्य।
निखोड़ना० स० क्रि० छीलना, उघरना।

निगड़० ना० पु० दरिद्र धन, बेड़ी पैकड़ी काठ।
निगत० गु० नगा।
निगन्दना० स० क्रि० तागना।
निगन्दा० ना० पु० } तागने का काम।
निगन्दाई० ना० स्त्री० }
निगम० ना० पु० वेद, नीति, जहां जा न सके।
निगमनदी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
निगमनिवासी० ना० पु० ब्रह्मा वेदनिवासी।
निगर० ना० पु० दीर्घ बड़ा ठाम।
निगलना० स० क्रि० लीलना, घूटना।
निगाली० ना० स्त्री० हुक्का पीने की नली, फुकनी।
निगुण० गु० निर्गुण।
निगूढ़० अतिअगम, दुर्गम, अतिकठिन, अप्रकट, गुप्त।
निगोड़ा० ना० पु० अकर्मी चाण्डाल।
निग्गर० गु० ठोस।
निग्रह० ना० पु० त्याग, रोक, थिर, चिढ़, दुःख दण्ड।
निग्रही० गु० ताड़नेहारा, रोकने हारा।
निघटत० क्रि० घटतेही।
निघटना० अ० क्रि० घटना।
निघटाना० स० क्रि० घटवाना।
निघटी० क्रि० भू० घटी वा बहुत घटगई।
निघण्ट० ना० पु० औषधि वर्णन, रागपरीक्षा।
निघरघटा० ना० पु० दुलत्तना, ढ़िठाई करना, ढ़िठाई करना।
निचय० ना० पु० समूह।
निचिन्त० गु० चिन्ता रहित, अचिन्त, अशोच।
निचिन्ताई० ना० स्त्री० प्रमाद, सुभीता, बेफ़िक्रे।
निचोड़० ना० पु० काम का पूरा होना या कुछ शेषरहना।
निचोड़ना० स० क्रि० दबाना गारना, चूमलेना।
निचोडू० गु० लुटेरा, गाऊरन।
निचोलनि० ना० स्त्री० चोलनी, कपड़ा, वस्त्र।
निछावर० ना० स्त्री० उतारा, बलि।
निज० गु० आप निश्चय, उत्कृष्ट।
निजका० गु० अपना।
निजगति० ना० स्त्री० अपनी दशा वा चाल।
निजगुरु० ना० पु० अपना गुरु।
निजतन्त्र० गु० निजइच्छा, स्ववश।
निजपति० ना० स्त्री० अपनी प्रतिष्ठा, ना० पु० अपना स्वामी।
निजवर्त्ती० गु० निजाश्रित, स्वतन्त्र।
निजसन्धि० ना० स्त्री० अवसर, निजसमय।
निजस्थान० ना० पु० अपना घर वा स्थान।
निजानन्द० ना० पु० अपने सुख में, निज में मग्न।
निजाश्रित० गु० स्ववश, निजवश, अपने निज भरोसे।
निझाना० स० क्रि० निरेखना, झाकना।
निझोटना० स० क्रि० खमोटना, झटकना।
निझोल० गु० झोलरहित, अर्थात् सुडौल, चलन हारा।
निठुर० गु० कठोर, निर्दय, स्नेही विनप्रीति।
निठुरता० } ना० स्त्री० कठोरता, निर्दयता।
निठुराई० }
निडर० गु० निर्भय, अशङ्क।
निढाल० } गु० स्थावर, अचल।
निढोल० }
नित० अव्य० नित्य, प्रतिदिन।
नितनय० गु० नितनया।
नितप्रति० अव्य० नित्य, प्रतिदिन।
नितम्ब० ना० पु० चूतड़, कटिके पीछे का नीचला भाग।
नितम्बिनी० ना० स्त्री० युवती, स्त्री, औरत।
नितान्त० अव्य० अत्यन्त, अधिक।
नित्य० अव्य० नित्यप्रति, सदा, सत्य, परि अमर।

नित्यकर्म० ना० पु० स्नानपूजादि कर्त्तव्य कर्म शुक्लकर्म।
नित्यता० ना० स्त्री० सदापन, सदैव।
नित्यदान० ना० पु० प्रतिदिनदेना, सत्यदान, सात्विकदान।
नित्यानन्द० ना० पु० सर्वदाकाल आनन्द।
निथम्म० ना० पु० स्तम्भ, पीलपाया।
निथरा० गु० फर्चा, फर्चा।
निथारना० स० क्रि० उड़ेलना, फर्चा करना।
निदग्धिका० ना० स्त्री० श्वेत छोटी कटाई।
निदरहि० क्रि० निन्दाकर, नामाने।
निदरना० स० क्रि० निंदा करना।
निदरि० अ० क्रि० निरादरकरके, अपमानकर।
निदाघ० ना० पु० ग्रीष्म, गर्मी।
निदान० अव्य० अन्त, पीछे, पूरा, निपट ना० पु० रोगपरीक्षा, श्रोषधि कथन, अन्तनिचार, कारण।
निदेश० ना० पु० श्राज्ञा, अनुशासन, कीन्हेसि मोरिनिदेशानिमेट्ट, देउदवायनागतरपेट्ट, इतिश्र हादचरित्रे सहजरामकाव्ये।
निद्रा० ना० स्त्री० श्रौंघाई, नींद।
निद्रारि० ना० पु० चिरौंयता।
निद्रालु० गु० स्वभावपरा, जो अधिक सोवे।
निद्रित० गु० निंदासा, सोनासा।
निधड़क० गु० निर्भय, अव्य० अचानक।
निधन० ना० पु० मृत्यु, नाश, धनहीन।
निधरक० गु० निधड़क।
निधान० ना० पु० स्थान, घर, धन, आधार, भाण्ड।
निधि० ना० स्त्री० कुबेरका एक रत्न, सम्पत्ति, ना० पु० समुद्र, गु० नौ ९।
निधिजात० ना० पु० चन्द्रमा आदि।
निधिसुता० ना० स्त्री० श्रीलक्ष्मी जी।
निनन्द०, निनाद० } ना० पु० शब्द, घण्टा, ध्वनि।
निनाया० ना० पु० सम्मल।
निनायी० ना० पु० विशेष, रोगविशेष।
निन्दक० गु० निंदा करनहारा, नींदनेहारा।
निन्दकाई० ना० स्त्री० निंदकता, निंदा।
निन्दना० स० क्रि० दोषदेना, कलंकलगाना।
निन्दनीय० निंदा के योग्य।
निन्दा० ना० स्त्री० दोष, कलङ्क, बुरा कहना।
निन्द्य० गु० निंदा के योग्य।
निनावा० ना० पु० रागविशेष।
निन्नानवे० गु० एकोनशत, ९९।
निपट० अव्य० निरानिर, अधिक, बहुत, अति, सरासर, सर्व।
निपटना० अ० क्रि० चुकना, पूराकरना।
निपटाना० स० क्रि० चुकाना, पूराकरना, ठहराना, निबड़ना।
निपटारा० ना० पु० निबेड़ा, फसला।
निपटारू० ना० पु० निबेरू।
निपात० ना० पु० मृत्यु, नाश, गिरना।
निपाता० क्रि० नाश किया, मिटाया।
निपान० ना० पु० जलाशय, दोहनी।
निपुण० गु० प्रवीण, चतुर, दाना।
निपूता० गु० जिसके सन्तान नहीं।
निफल० गु० निरर्थ, फलरहित।
निबटेरा० ना० पु० निरतोर, छुटानी।
निबड़ना० अ० क्रि० निपटना, होचुकना।
निबन्ध० ना० पु० बन्धेज, इकरार गु० जो ठहर गया।
निबन्धन० ना० पु० बन्धन, ठहराव।
निबन्धित० गु० जो ठहरगया, बन्धित।
निबल० गु० निर्बल, लाचार बुड्ढा।
निबाह० ना० पु० समाप्त, निबड़ा, निर्वाह, बात का पूरा करना।
निबाहू० गु० टिकाऊ ना० पु० निपटारू।
निबेड़ना० स० क्रि० निपटाना।
निबेड़ा० ना० पु० निबेरा, निपटारा।
निबेड़ि० गु० निबाह।
निभ० ना० पु० तुल्य, बराबर।

निमना० अ० क्रि० निवाहहोना, पारहोना।
निमाना० स० क्रि० निवाहना, पारकरना।
निमकी० ना० स्त्री० लोनका निम्बू।
निमकौड़ी० ना० स्त्री० नींबका फल।
निमन० गु० ठोस, पाढ़ा, सुंदर।
निमनाई० ना० स्त्री० पाढ़ाई।
निमनाना० स० क्रि० पोढ़ाकरना, सभालना।
निमन्त्र० } निमन्त्रण० } ना० पु० न्योता।
निमाना० गु० भोला, मैदान।
निमि० ना० पु० राजाविशेष।
निमित्त० ना० पु० कारण, लिये, भाग, हेतु।
निमिष० ना० पु० थाड़ादेर, पलक, चाल।
निमिषमात्र० ना० पु० अत्यंत थोड़ाकाल।
निमीलन० ना० पु० मृत्यु, झपकी, पलक।
निमेष० ना० पु० पलक, विपल।
निम्न० गु० नाचास्थान, नीचान, अधा।
निम्नगा० ना० स्त्री० नदी।
निम्ब० ना० पु० नींब वृक्ष।
निम्बक० ना० पु० निम्बू।
निम्बरक्ष० ना० पु० नींब, वा महानींब।
निम्बू० } निम्बूक० } ना० पु० नींबू।
नियत० गु० जो ठेकागया, मुकर्रर, कायम।
नियन्ता० ना० पु० स्वामी, अध्यक्ष, सारथी, नियतकर्ता।
नियम० ना० पु० प्रण, वचन, अंगीकार, जो वृद्ध धर्म की क्रियाकरे, यथावत।
नियमित० गु० निश्चित, प्रणकिया गया।
नियमन० ना० पु० नीम वृक्ष, रोक।
नियर० } नियरे० } अव्य० समीप, पास।
नियराई० ना० स्त्री० समीपता, निकटता।
नियामक० ना० पु० नाविक, नियन्ता।
नियुक्त० गु० नियोजित, स्थापित।
नियुत० गु० दसलाख, १०००००००।
नियोग० ना० पु० प्रश्न, आज्ञा, तथा मुकर्रर करना।
नियोजन० ना० पु० स्थापन, आज्ञा।
नियोजित० गु० स्थापित, रक्खा।
निर० अव्य० नि।
निरखना० स० क्रि० देखना, विलोकना।
निरकार० गु० निराकार।
निरंकुश० गु० स्वेच्छाचारी, निडर।
निरंजन० गु० निर्मल, राग रहित, अविद्या रहित, ना० पु० ईश्वर।
निरत० गु० अति प्रीतिमय, लीन।
निरतक० ना० पु० नचवैया।
निरर्थ० गु० झूठ, निष्प्रयोजन, बेफायदह।
निरन्त० गु० अन्तरहित, अपरम्पार, ना० पु० आकाश, ईश्वर।
निरन्तर० अव्य० नित्यप्रति, जिसमें वियोग नहीं, सदा, अन्तर बिन।
निरन्ध० गु० द्रष्टा, देखने वाला।
निरपराध० } निरपराधी० } गु० अपराध रहित, निर्दोष।
निरम्बु० गु० जलरहित।
निरय० ना० पु० नरक, दोजक।
निरर्थक० गु० ढीला, प्रमादी, अनरीति, अर्थ रहित, निष्प्रयोजन।
निरवग्रह० गु० स्वच्छन्द, स्वतन्त्र।
निरवद्य० गु० आनन्दित, अकथ्य।
निरवारण० ना० पु० उद्धारन, बचाव, सुलझाव।
निरवारना० स० क्रि० खोलना, छोड़ना।
निरस० गु० रसहीन, फीका, बदमजह।
निरस्त० गु० त्यागित, जिसका अस्त न हो।
निरस्त्र० गु० अस्त्रहीन।
निरस्य० गु० त्यागने के योग्य, त्यागकिये।
निरा० गु० केवल, सारा, ठेठ, रूखा।
निराकांक्षी० ना० पु० निस्पृह, आकांक्षारहित।
निराकार० गु० आकारहीन, यथा ईश्वर।

निरादर० गु० आदररहित, अपमानयुत, वा अ वज्ञा करी हारा।
निराधार गु० सहारा रहित, आधार हीन।
निरामिष० गु० मांसरहित भोजन।
निरालम्ब० गु० आलम्बरहित, अवलम्बहीन।
निरालस्य० गु० आलस्य हीन, कामकाजी, मि हनती, उपायी।
निराश० गु० भरोसारहित, आशा टूटगई।
निराहार० गु० भोजनहीन, बिनकुछखाये।
निरिच्छा० } गु० इच्छारहित बिन इच्छा,
निरिच्छित० } जिसको कुछ चाह नहीं।
निरीश० गु० स्वामीरहित, जिसका मालिक न हो पतिहीन, ना० पु० जीव अर्थात् ईश नहीं।
निरीह० गु० चेष्टारहित यथा ईश्वर।
निरीक्षण० ना० पु० ताक, दृष्टि।
निरुत्तर० गु० उत्तरहीन, लाजवाब।
निरुपधि० गु० निष्प्रयोजन।
निरुपम० } गु० उपमा हीन दृष्टान्त रहित।
निरुपमा० }
निरुपाधि० गु० उपाधि रहित, बेखटके।
निरुपाय० गु० उपायहीन, बिना उपायकिये।
निरूप० गु० रूपहीन, निराकार।
निरूपण० ना० पु० दृष्टि, निर्णय, जवाब, विस्तार पूर्वक कथन।
निरूपित० गु० जो विस्तारपूर्वक कहागया वा निर्णय कियागया, निश्चययुत, स्थापित।
निरेखना० स० क्रि० निहारना, भाकना।
निरोग० } गु० निरोग, भला चंगा, रोग
निरोगी० } रहित।
निरोध० ना० पु० घेरना, थाँमना।
निर्गत० गु० निकला।
निर्गता० गु० निकलकर, ना० स्त्री० निकली।
निर्गम० ना० पु० जहां जाय न सके, ग्राम।
निर्गुण० गु० गुण हीन, निकम्मा, मूर्ख।
निर्गुण्डी० ना० स्त्री० सम्भालू।
निर्घण्ट० ना० पु० सूचीपत्र।
निर्घात० ना० पु० वज्र, शब्द।
निर्घृणा० गु० निर्दया कठोर।
निर्घोष० ना० पु० ध्वनि, शब्द।
निर्जर० ना० पु० देवता, जो बूढ़ा न हो।
निर्जन० गु० मनुष्य हीन, जनरहित।
निर्जननदी० ना० स्त्री० आगमाजा।
निर्जल० गु० जलहीन, सूखा, पायाब।
निर्जीव० गु० जिसमें जीव नहीं है यथा मिट्टी पत्थर आदि, मृतक।
निर्झास० गु० सार, सिद्धान्त।
निर्झर० ना० पु० झरना।
निर्झरिणी० ना० स्त्री० नदी।
निर्णय० ना० पु० निश्चय, ठिकाना, न्याय, झगड़ा मिटाना।
निर्णीत० गु० निश्चित, निर्णय कियागया।
निर्दई० }
निर्दय० } गु० जिसमें दया नहीं है, कठोर
निर्दया० } बेरहम।
निर्दयी० }
निर्दिष्ट० गु० जो अच्छी विधि देखा गया वा निरूपित हुआ वा वर्णन हुआ।
निर्दोष० } गु० दोषहीन, अकलंकी, अदोष।
निर्दोषी० }
निर्द्वन्द्व० गु० बिना झगड़ा, बेखटक।
निर्धन० गु० धनहीन, दरिद्री।
निर्धार० } ना० पु० निश्चय, निर्णय।
निर्धारण० }
निर्धारित० गु० निश्चित, निर्णीत।
निर्वंश० गु० वंशरहित, असन्तान, लावल्द।
निर्बन्धु० गु० बन्धु रहित, अकेला।
निर्बल० गु० लाचार, दुबला, जिसको सामर्थ्य नहीं है।
निर्वश० गु० वश रहित, असमर्थ।
निर्बीज० गु० बीज रहित, पुत्रहीन।
निर्बुद्धि० गु० बुद्धिहीन, मूर्ख।

निर्बूझ० गु० जो समझ में न आवे, मूर्ख।
निर्भय० गु० अभय, निडर।
निर्भर० गु० पूर्ण, पूरा।
निर्मम० गु० ममता रहित।
निर्मल० गु० मलहीन, स्वच्छ, शुद्ध, साफ, पवित्र।
निर्मलता० ना० स्त्री० पवित्रता, स्वच्छता, सफाई।
निर्मली० ना० पु० बीज विशेष जिससे पानी को स्वच्छ करते हैं।
निर्माण० ना० पु० बनावट, रचना, बनाना, तत्त्व, सार।
निर्माल्य० ना० पु० प्रसाद, निवेदित वस्तु, स्वच्छता, शुद्धता।
निर्मित० गु० रचित, बनाया गया, निर्माण किया गया।
निर्मूल० गु० हीन मूल, विना जड़।
निर्मोह० } गु० मोहरहित, उदासी।
निर्मोही० }
निर्यास० ना० पु० शिलाजीत, वृक्षका रस अर्थात् गोंद, क्वाथ।
निर्याण० ना० पु० यात्रा, प्रस्थान।
निर्लज्ज० गु० लज्जा रहित बेहया नकटा।
निर्लिप्त० गु० स्पर्शहीन, जो लिप्त नहीं है।
निर्लेप० } गु० जिसका चिह्न नहीं वा लेश
निर्लेश० } नहीं, विना लाग, सर्व।
निर्लोभ० गु० लोभ रहित, दाता।
निर्ग्रन्थ० गु० छूटाहुआ।
निर्वाण० ना० पु० मोक्ष, अपवर्ग, लय, गु० वैकुण्ठवासी, मोक्ष होगया।
निर्वाणसुख० ना० पु० मोक्ष, मुक्ति, वैकुण्ठवास।
निर्बाधा० गु० बाधा रहित, अकंटक।
निर्वाह० गु० निबाह।
निर्वाहक० गु० निबाह करनेहारा।
निर्विकल्प० गु० भेद रहित, अनवर्य, कल्पना हीन।
निर्विकार० गु० विकारहीन, निर्दोष, अरोग।
निर्विघ्न० गु० विघ्नरहित, सानन्द निर्बाधा।
निर्वृत्ति० ना० स्त्री० मुक्ति, मृत्युआनन्द, हल मार्ग तरीक, पथ।
निर्वैर० गु० वैर भाव हीन।
निर्व्याज० गु० अचल, यथार्थ।
निर्व्याधि० गु० व्याधि हीन, अरोग, अकटक।
निर्हर० ना० पु० हरनेवाला।
निलज्ज० गु० निलज्ज, स ज्ञाहीन।
निलय० ना० पु० घर।
निवान० गु० नीचा।
निवानी० स० क्रि० नवाना।
निवार० ना० स्त्री० कार, पट्टी सुतली।
निवारक० गु० बचानेवाला, रोकनेवाला।
निवारण० ना० पु० निषेध, रोक, बचाव।
निवारना० स० क्रि० रोकना, बचाना, बरजना
निवारत० क्रि० बचावत, रोकत, बर्जत।
निवारि० क्रि० बचाय कर, रोकि, बरजि।
निवारित० गु० बचायागया, बर्जागया।
निवावना० स० क्रि० नवाना।
निवास० ना० पु० बसने का स्थान, वास, घर।
निवासी० ना० पु० बसनेहारा, रहनेवाला।
निविड़० गु० अधिक, सघन, निहायत।
नियुक्ति० अ० क्रि० भरपि, वृद्धि।
निवृत्ति० ना० स्त्री० रहाव, रुकावट, विश्राम, चैन।
निवेदन० ना० पु० प्रार्थना विनती, अर्ज।
निवेदनपत्र० ना० पु० अर्जी, दरखास्त।
निवेदित० गु० अर्पित, विनय किया गया।
निवेशन० ना० पु० विवाह, शादी।
निशंक० गु० निडर, निस्सन्देह, विन प्रयास।
निशा० ना० स्त्री० रात्रि।
निशाकर० ना० पु० चन्द्रमा।
निशागम० ना० पु० रात्रिका आगम, सन्ध्या सांझ, शाम।

निशाचर० ना० पु० राक्षस, चोर, उलूकादि, चन्द्रमा आदि नक्षत्र।
निशाटन० ना० पु० निशाचर।
निशि० ना० स्त्री० निशा।
निशिचर० ना० पु० निशाचर।
निशिनाथ० ना० पु० चन्द्रमा, चांद।
निशिमुख० ना० पु० सन्ध्या, सांझ।
निशिभानु० ना० पु० चन्द्रमा।
निशीथ० ना० पु० आधीरात।
निशीश० ना० पु० चन्द्रमा, चांद।
निश्चय० ना० पु० निर्णय, विश्वास, गु० ठीक।
निश्चल० गु० स्थिर, अचल।
निश्चित० गु० निर्णीत।
निश्चिन्त० गु० चिन्तारहित, निनासम्बे।
निश्चेष्ट० गु० चेष्टारहित, मूर्च्छित।
निश्छिद्र० गु० निर्दोष छेदरहित।
निश्रेणी० ना० स्त्री० निसेनी, सीढ़ी, जीना।
निश्श्वास० ना० पु० श्वास, प्राणवायु।
निश्शेष० गु० अशेष, समस्त, सब।
निषाद० ना० पु० गाने में पहिला स्वर, चाण्डाल सङ्करवर्ण, केवट, मल्लाह।
निषिद्ध० गु० जो कर्त्तव्य नहीं वर्जित।
निषिद्धत्व० ना० स्त्री० निवारण, कर्त्तव्य रहित, इन्कार।
निषेद० ना० पु० अदुःख, दविधा।
निषेध० ना० पु० इन्कार, निवारण, कर्त्तव्य रहित।
निषेधित० गु० वर्जित, निवारित।
निष्क० ना० पु० हीरा, १६ द्रम्मका प्रमाण।
निष्कण्टक० ना० पु० उपाधिरहित, बेखटक।
निष्कपट० गु० सत्य, सच्चा, छलहीन, भोला।
निष्कर्ष० ना० पु० निश्चय।
निष्कारण० गु० विना प्रयोजन, बे सबब।
निष्केवल० गु० एकही, सयकर।
निष्क्रमण० ना० पु० संस्कार विशेष।
निष्ठ० गु० स्थापित, तत्पर, उत्तम, उत्कर्ष।
निष्ठमति० ना० स्त्री० उत्तमबुद्धि, उत्तमज्ञान्।
निष्ठा० ना० स्त्री० विश्वास, भरोसा।
निष्ठुर० गु० निठुर, निर्दय, कठोर, अप्रीति।
निष्ठुरता० ना० स्त्री० } कठोरता, निर्दयता,
निष्ठुरत्व० ना० पु० } निठुरता।
निष्पत्ति० ना० स्त्री० सिद्धि, समाप्ति।
निष्पन्न० गु० कृत, बना, सिद्ध।
निष्पादन० ना० पु० सम्पादन।
निष्पाप० } गु० पापरहित, निर्दोष।
निष्पापी० }
निष्प्रपञ्च० गु० छलहीन।
निष्प्रयोजन० गु० व्यर्थ, निनाप्रयोजन।
निष्फल० गु० फलहीन, वृथा, बेफायदह।
निस० ना० स्त्री० निशा।
निसक्त० गु० असक्त, पौरुषरहित।
निसङ्क० गु० निश्शङ्क।
निसकट० गु० सङ्कटरहित।
निसन्धि० गु० ठोस, सन्धिरहित।
निसरना० अ० क्रि० निकसना।
निसांस० ग० आहभरना।
निसांसी० गु० तंग, हैरान।
निसान० ना० पु० तूर्य, नक्कारह।
निसास० ना० पु० विश्वास।
निसि० ना० स्त्री० निशि।
निसित० गु० पैनी० तेज, धारदार।
निसेनी० ना० स्त्री० सीढ़ी, जीना।
निसोत० ना० पु० औषधि विशेष, गु० ठोस
निस्तार० ना० पु० मुक्ति, मोक्ष, उद्धार।
निस्तारा० ना० पु० निपटारा।
निस्तारना० स० क्रि० निस्तार करना।
निस्तेज० गु० प्रतापहीन, तेजरहित।
निस्तोक० ना० पु० चुकौता, निपटारा।
निस्पद० ना० पु० निश्चेष्ट, हिसाब
निस्पृह० गु० लालसाहीन।
निस्व० गु० निर्धन, दरिद्री।

निस्वना॰ गु॰ ध्वनि, शब्द।
निस्सन्देह॰ गु॰ सन्देहरहित, बेखटके।
निहग गु॰ नगा, अचित।
निहत्था॰ गु॰ ओहथा, अस्त्र रहित, लूला, हाथ रहित।
निहाई॰ ना॰ स्त्री॰ लोहेकी वस्तु विशेष जिसपर सोना आदि गढते हैं।
निहानी॰ ना॰ स्त्री॰ रज, कपड़े।
निहार॰ ना॰ पु॰ अन्धकार, कुहिरा, रामायणे यथा, जिमिनिहार में दिनकरदुरा, दृष्टि।
निहारना॰ स॰ क्रि॰ देखना, विलोकना, झांकना।
निहारा॰ स॰ क्रि॰ देखा।
निहुरना॰ अ॰ क्रि॰ लचना, झुकना, दबना।
निहुराना॰ स॰ क्रि॰ लचाना, झुकाना, दबाना।
निहोर॰ } ना॰ पु॰ कृपा, उपकार, विनती,
निहोरा॰ } फुसलाहट, खुशामद।
निक्षिप्त॰ गु॰ जो निक्षेप, कियाजावे, त्यागित।
निक्षेप॰ ना॰ पु॰ परित्याग, धरोहर।
नींद॰ ना॰ स्त्री॰ औंघाई, निद्रा।
नींदना॰ अ॰ क्रि॰ सोना, स॰ क्रि॰ मुकरना।
नींदू॰ ना॰ पु॰ सोवैया।
नींब॰ ना॰ पु॰ वृक्ष विशेष, निम्ब।
नींबू॰ ना॰ पु॰ लाबू, फल विशेष।
नीक॰ गु॰ भला, अच्छा।
नीका॰ } गु॰ सुन्दर, भला, अच्छा।
नीको॰ }
नीच॰ गु॰ छोटा, कमीना, हीन, कुत्सित, निकम्मा। तले, हेठ)
नीचगामी॰ गु॰ जो नीचेजाता है, यथाजल।
नीचा॰ गु॰ ऊंचे के विरुद्ध, नमेव।
नीचाई॰ ना॰ स्त्री॰ छोटाई, नीचापन।
नीचे॰ अव्य॰ तले।
नीठ॰ गु॰ तुम्हारा।
नीति॰ ना॰ स्त्री॰ उचित, व्यवहार, रीति, चातुर।
नीतिज्ञ॰ गु॰ धार्मिक, न्यायी।
नीद॰ ना॰ स्त्री॰ नींद।
नीदना॰ स॰ क्रि॰ नामानना, मुकरजाना।
नीप॰ ना॰ पु॰ कदमवृक्ष।
नीपुर॰ ना॰ पु॰ नि०।
नीवी॰ ना॰ स्त्री॰ धोती, जो स्त्रियाओं बांधतीहैं।
नीबू॰ ना॰ पु॰ निम्बू।
नीम॰ ना॰ पु॰ नींब।
नीमन॰ गु॰ निमन।
नीमावत॰ ना॰ स्त्री॰ नीमानन्दस्वामीका पन्थ।
नीर॰ ना॰ पु॰ जल, पानी।
नीरज॰ ना॰ पु॰ कमल, जो जलजातहो।
नीरथ॰ गु॰ निरर्थ, निष्फल।
नीरद॰ ना॰ पु॰ मेघ।
नीरधर॰ ना॰ पु॰ मेघ, समुद्र।
नीरस॰ गु॰ निरस रसहीन, फीका।
नीरोग॰ गु॰ निरोग, आरोग्य।
नीरोगी॰ गु॰ चंगा, भला, रोगहीन।
नील॰ गु॰ कृष्णवर्ण विशेष, काला, ना॰ पु॰ वस्तु विशेष जो वृक्षके पत्तों से बनाते हैं सुग्रीव वानर सौ सर्व, १००००००००००००००।
नीलक॰ गु॰ काला, ना॰ पु॰ कालारंग का हरिण विशेष, बीजगणित में विशेष प्रमाण।
नीलकण्ठ॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष, मोर, अग्नि और श्रीशंकरजी।
नीलगवय॰ ना॰ पु॰ नीलगाय, रोझ।
नीलगाय॰ ना॰ पु॰ रोझ।
नीलता॰ ना॰ स्त्री॰ } श्यामता, कालापन।
नीलत्व॰ ना॰ पु॰ }
नीलपर्वत॰ ना॰ पु॰ विन्ध्यका एकभाग, जो उड़ीसा के दक्षिणहै, हरिद्वार के समीप तीर्थ विशेष।
नीलपुष्पी॰ ना॰ स्त्री॰ विष्णुकान्ता, अलसी।
नीलबड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ नीलकी बड़ी।
नीलम॰ } ना॰ पु॰ मणि विशेष।
नीलमणि॰ }

नेत्राम्बु० ना० पु० आंसू।
नेत्रोपमा० ना० स्त्री० बादाम, आंखोंकी उपमा।
नैर्ऋत्य० ना० पु० पश्चिम और दक्षिण का कोण, राक्षस।
नैकट्य० ना० पु० निकटता।
नैक० गु० थोड़ा, अल्प।
नैजाना० अ० क्रि० झुकना, निहुरना।
नैना० ना० पु० नैन, पनहा।
नैपाल० ना० पु० ताना, देश विशेष, नीति का प्रतिपाल।
नैपाली० ना० पु० मनसिल, नेपालवासी।
नैपुण० गु० निपुण।
नैपुण्य० ना० पु० निपुणता।
नैमित्तिक० गु० समयी, निमित्तका।
नैमित्तिकदान० ना० पु० समयपाय देना।
नैया० ना० स्त्री० नावछोटी, खेवट, डाढ़ी।
नैयायिक० ना० पु० न्यायशास्त्र का ज्ञाता, तार्किक।
नैर्मल्य० ना० पु० निर्मलता।
नैवेद्य० ना० पु० देवता के भोजन की सामग्री, गुड़अर्पण।
नैष्ठिक० गु० विश्वासी, निष्ठायुत।
नैहर० ना० पु० स्त्री० का मैका।
नो० अव्य० नहीं।
नोखा० } गु० अनूठा, अनोखा।
नोखो० }
नोच० ना० पु० खरोट, चुटकी
नोचना० स० क्रि० खरोटना, चुटकी लेना।
नोन० ना० पु० लोन।
नोना० स० क्रि० दुहने के समय गाय के पैर बांधना, ना० पु० सीताफल विशेष।
नोनापानी० ना० पु० खारपानी, समुद्रका जल।
नोनिया० ना० पु० लोनिया।
नोय० क्रि० दुहते समय गायके पावबांधना।
नौखण्ड० ना० पु० पृथ्वी के नौ खण्ड।
नौगरी० ना० स्त्री० नवागिरी।
नौछावर० ना० पु० निछावर।
नौढ़ना० अ० क्रि० झुकना, निहुरना, आधीन होना।
नौढ़ाना० स० क्रि० झुकाना, निहुराना।
नौतना० स० क्रि० नेवतना।
नौता० ना० पु० नेवता।
नौमासा० ना० पु० गर्भ से नवें मास का उत्सव।
नौमि० क्रि० नमस्कार करताहूं।
नौमी० ना० स्त्री० नवमी, नवीं तिथि।
नौरतन० ना० पु० नवरत्न।
नौलख० ना० पु० नवलख।
नौसादर० ना० पु० औषधि विशेष।
न्यक्कार० ना० पु० कुत्सा।
न्यग्रोध० ना० पु० बर्गद का वृक्ष।
न्यस्त० गु० सौंपाभया, सौंपित।
न्याय० ना० पु० धर्म, विचार, तर्कशास्त्र, विशेष फैसला।
न्यायक० ना० पु० न्याय करनेहारा।
न्यायशास्त्र० ना० पु० तर्कशास्त्र।
न्यायी० ना० पु० न्यायक, न्यायशास्त्र का जाननेहारा।
न्यार० ना० पु० चारा।
न्यारा० गु० अलग, निराला, अनूठा।
न्यारिया० गु० सचेता, चौकस।
न्यून० गु० छोटा, घाट, हीन, कम।
न्यूनकोण० ना० पु० छोटा कोना।
न्यूनता० ना० स्त्री० } घटती, कमी।
न्यूनत्व० ना० पु० }
न्यूनवय० गु० कम उमर।
न्यूनाधिक० ना० पु० छोटा बड़ा।
न्योतना० स० क्रि० नेवतना।
न्योता० ना० पु० नेवता।

पंखा० ना० पु० बेना, बिजना।
पंखिया० गु० बतेड़िया, झगड़ालू।
पंछी० ना० पु० परवा लोग, छोटा पक्षी, परन्द।
पंगत० } ना० स्त्री० पांति, श्रेणी, घरी।
पंगति० }
पंगुला० गु० लँगड़ा।
पचक० ना० स्त्री० सूत।
पचकना० अ० क्रि० सकुचना, सूजन उतरना।
पचखना० गु० पांचखण्ड वाला।
पचघरा० ना० पु० घर विशेष जिसमें पांच घर हों।
पचतोरिया० } ना० पु० वस्त्रविशेष अर्थात् सारी श्रोदन थी।
पचतोलिया० }
पचना० अ० क्रि० सड़ना, गलना, भस्महाना, परिश्रम करना।
पचपचाना० अ० क्रि० गीला वा ढीला वा भीगा होना, पसीजना, सड़ना।
पचपन० गु० पचास और पांच, ५५।
पचमिल० गु० मिश्रित, मिलित।
पचमेल० गु० पचमिल।
पचम्पचा० ना० स्त्री० दारुहल्दी।
पचलड़ा० ना० पु० } गु० जिसमें पांचलड़े हों।
पचलड़ी० ना० स्त्री० }
पचलोना० ना० पु० औषधि विशेष।
पचाडालना० स० क्रि० पचाना, सड़ाना और खायजाना, हज़मकरजाना।
पचानवे० गु० नब्बे और पांच ६५।
पचाना० स० क्रि० पचाना, सड़ाना, हज़म करना।
पचास० गु० पांच दहाई, ५०।
पचासी० गु० अस्सी और पांच, ८५।
पचीस० गु० बीस और पांच, २५।
पचीसी० ना० स्त्री० खेल विशेष।
पचूका० ना० पु० पिचकारी।
पचतु० क्रि० पचताहै, हुलसाता है, पकताहै।

पचोतर० } ना० पु० सैकड़ा पीछे पांच लेना, पांच रुपये सैकड़ा।
पचोतरा० }
पचौनी० ना० स्त्री० ओझ, झोझ।
पच्चर० ना० स्त्री० फन्नी, ठेक।
पच्छम० } पु० पश्चिम।
पच्छिम० }
पछड़ना० } अ० क्रि० गिरजाना, हटजाना, आधीन होना।
पछरना० }
पछताना० स० क्रि० पश्चात्ताप करना, पीछे को सोचना, अफ़सोस करना।
पछतावा० ना० पु० पश्चात्ताप, सोच।
पछना० ना० पु० गोंटी, खोदवारें, चीरा, अस्त्र विशेष।
पछनी० ना० स्त्री० शरीर के चमड़े में चीरा करना।
पछरा० गु० गिरपड़ा पीछे को हटा।
पछवा० ना० पु० पवन जो पश्चिम से आताहै।
पछाड़० ना० स्त्री० पटकन, पटकने का काम।
पछाड़ना० } स० क्रि० गिरादेना, आधीन करना, पटकना।
पछारना० }
पछाह० ना० पु० पश्चिम।
पछियाना० स० क्रि० पीछा करना।
पछियाव० ना० पु० पश्चिम का पवन।
पछाड़० ना० स्त्री० फटकन, फटकार, फटकने का काम।
पछोड़ना० } स० क्रि० फटकना, सूपमें डालके उछालना।
पछोरना० }
पजोड़ा० गु० निकम्मा, पाजी।
पंच० गु० पांच ५ ना० पु० जाति के चौधरी, कार्य्यादि के विचारक, सभा, ५ मनुष्य, कमान का रोदा।
पंचक० गु० स्त्री० पिंजा, रोदइ पांचकरना।
पंचकोश० ना० पु० पांचोंकोश अर्थात्, अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्द।
पंचगव्य० ना० पु० पांच पदार्थ जो गाय से प्राप्त होते हैं अर्थात् दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोमय।

पंचज्योनार॰ ना॰ पु॰ पाचप्रकार की ज्योनार अर्थात् भोज्य, भक्ष्य, लेह्य,चोष्य, पेय, ५।

पंचतत्त्व॰ ना॰ पु॰ पाचतत्त्व अर्थात् आकाश, वायु, अग्नि, जल, मिट्टी, ५।

पंचतन्त्र॰ ना॰ पु॰ पाचतंत्र अर्थात् वशीकरण, मारण, उच्चाटन, मोहन, आकर्षण।

पंचत्व॰ गु॰ मृत्यु।

पंचदश॰ गु॰ पन्द्रह, १५।

पंचदशानर्थ॰ ना॰ पु॰ पन्द्रह अनर्थ अर्थात् चोरी, हिंसा, मिथ्या, दम्भ,काम, क्रोध,विस्मरण, वैर, अप्रतीति, भेद, भय, खेद, चिन्ता, लोभ, सर्वस्पर्द्धा, १५।

पंचनखी॰ ना॰ स्त्री॰ गोह।

पंचपल्लव॰ना॰पु॰पाँच वृक्षों की पत्ती वा डाली।

पंचपात्र॰ ना॰ पु॰ पूजाका पात्रविशेष।

पंचपुराणलक्षण॰ ना॰ पु॰ पुराण के पाच लक्षण अर्थात् सर्ग,प्रतिसर्ग,वंश,मन्वन्तर,वंशानुचरित।

पंचप्राण॰ ना॰ पु॰ पाचप्राण अर्थात् प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, ५।

पंचभूत॰ ना॰ पु॰ पंचतत्त्व।

पंचम॰ गु॰ पाचवा, रागका स्वरविशेष।

पंचमांश॰ गु॰ पाचवाभाग।

पंचमी॰ ना॰ स्त्री॰ पाचवीं तिथि, व्याकरण में पाचवाकारक।

पंचमुख॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी।

पंचम्यन्त॰गु॰जिसके अन्तमें पंचमीका प्रत्ययहै।

पंचवक्त्र॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेव जी।

पंचविंश॰ } गु॰ पचीस, २५।
पंचविंशति॰ }

पंचविंशतितम॰ गु॰ पचीसवा।

पंचविंशप्रकृति॰ ना॰ स्त्री॰ पचीस प्रकृति अर्थात् अस्थि, मास, नख, रोम, नाडिका,वीर्य, मूत्र, रक्त,रसा,लार,भूख,प्यास, नींद, कांति, आलस्य, दौड़ना, चलना, पसारना, समेटना, कूदना, राग, द्वेष, लाज, भय, मोह, २५।

पंचनख॰ ना॰ पु॰ सिंह, व्याघ्र।

पंचविरोधी॰ गु॰ सबका बैरी, दुष्ट।

पंचशर॰ कामदेव।

पंचशाखा॰ ना॰ पु॰ हाथ।

पंचसूक्ष्मवायु॰ना॰ पु॰ पाचसूक्ष्म वायु अर्थात् नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनजय।

पंचांगुल॰ ना॰ पु॰ दोनों अरण्ड, पाचअंगुल।

पंचांगुली॰ ना॰ स्त्री॰ पाच अंगुली अर्थात् अंगुष्ठ, तर्जनी,मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका।

पंचाध्यायी॰ ना॰ स्त्री॰ श्रीमद्भागवत के रासमण्डल के पाच अध्याय का समुदाय।

पंचानन॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी, सिंह।

पंचामृत॰ ना॰ पु॰ दही, दूध, घी, मधु, शक्कर की मिलौनी जो देवता हेतु बनाते हैं।

पंचायत॰ ना॰ स्त्री॰ बहुत मनुष्यों की मति वा मनुष्यों का समूह,जिसमें झगड़ा निपटायाजाता है, वा जातिकी सभा वा समुदाय।

पंचाल॰ ना॰ पु॰ देश विशेष।

पंचालिका॰ ना॰ स्त्री॰ वेश्या, पतुरिया।

पंचाली॰ ना॰ स्त्री॰ वेश्या, द्रौपदी।

पंचावन॰ गु॰ पचपन, ५५।

पंचास॰ गु॰ पचास, ५०।

पंचास्य॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेव जी, सिंह, गु॰ पाच मुखवाला।

पंचीकरण॰ } गु॰ पाचकाकियाहुआ, वा पाच
पंचीकृत॰ } पाच कियागया।

पंछी॰ ना॰ पु॰ पक्षी, चिड़िया।

पंजर॰ ना॰ पु॰ पासली, पांजर, पिंजरा।

पंजरगत॰ गु॰ पिंजरे में।

पंजाब॰ ना॰ पु॰ देशविशेष जिसमें पाच नदियां हैं अर्थात् सतलज, व्यासा, रावी, चिनाव, जिहलम्।

पंजाबी० गु० पजाब देशका मनुष्य वा वस्तु ।
पंजीरी० ना० स्त्री० ओषधिविशेष, जो जच्चा खाती है ।
पट० ना० पु० कपडापद्धति, गिरने वा मारने का शब्द,द्वार का किवाड आदि ढका, गु० उलग पुलग पत्र ।
पटकन० ना० स्त्री० पछाड़ चोट ।
पटकना० स० क्रि० देमारना, पटकदेना, अ० क्रि० चरचराना, फटना, ना० पु० कोडा ।
पटका० ना० पु० करधनी, कमर बाधने का कपड़ा ।
पटकाजाना० अ० क्रि० दबना, पतितहोना, गिरना ।
पटकाना०, पटकारना०, पटकीदेना० } स० क्रि० पटकना, देमारना ।
पटचर० ना० पु० पुराना वस्त्र, यथा पटचर जीर्णवस्त्रमित्यमर ।
पटड़ा० ना० पु० सिली बैठने के लिये काठका आसन, चौकी, पीढ़ी, पीढ़ा, तख्ता ।
पटतर० ना० पु० तुल्य, सदृश, बराबर ।
पटन० ना० पु० पटने का काम ।
पटना० स० क्रि० छतका बनना, ढपना, भरजाना, भरना, भरपाना, ना० पु० नगर विशेष ।
पटनी० ना० पु० नैया ।
पटपट० ना० पु० भुनने का वा मारने का वा पीटने का शब्दविशेष, चटचट ।
पटरा० ना० पु० पटड़ा, ऊजड़ ।
पटरानी० ना० स्त्री० रानी, शाहजादी ।
पटरी० ना० स्त्री० छोटापटरा, पटिया, सपरा ।
पटल० ना० पु० अभ्रक, अबरक,ढका, समूह ।
पटवा० ना० पु० जातिविशेष, पटुआ ।
पटवाना० स० क्रि० पाटना, भराना ।
पटवारा०, पटवारी० } ना० पु० धरती का लेखा लगानेहारा ।
पटा० ना० पु० गदरा, पीढ़ा, पीढ़ी, पट्टलिया ।
पटाक० ना० पु० धड़ाक, शराट ।
पटाका० ना० पु० छछूंदर, आतशबाजी विशेष, धड़ाका ।
पटाना० स० क्रि० भराना, चौका गोबर से लगाना, मिट्टी से लीपना ।
पटपट० ना० पु० चरचट ।
पटाव० ना० पु० साँचाव, भराव, पत्थर जो द्वार वा छतपर डालते हैं ।
पटिया० ना० स्त्री० पटरी ।
पटीना० ना० पु० पक्षीविशेष ।
पटीमा० ना० पु० वस्त्र छापने का बड़ा पत्थर ।
पटीलना० स० क्रि० मारना, पीटना, आधीन करना ।
पटु० गु० चतुर, निपुण, ना० पु० वस्तु, नकछिकनी, गु० सुन्दर ।
पटुता० ना० स्त्री० चतुराई, निपुणता,सुन्दरता ।
पटुआ० ना० पु० पाट, सन ।
पटेर० ना० पु० पौधाविशेष, गोंदी ।
पटेरा० ना० पु० वृक्षविशेष ।
पटेल० ना० पु० सठियाने का काम, प्रभुता, कुरमी, जातिमें प्रधान,महाराष्ट्र की पदवी ।
पटेला० ना० पु० नावविशेष,ना० स्त्री० सरावन ।
पटेली० ना० स्त्री० छोटा पटेला ।
पटेला० ना० पु० पटरा ।
पटोतन० ना० पु० पटना ।
पटोर० ना० पु० रेशमीवस्त्र, पाट ।
पटोल० ना० पु० परवल ।
पटोहिया० ना० पु० उल्लू ।
पटौनी० ना० स्त्री० नैया, पटनी ।
पट्ट० ना० पु० पट, पत्र ।
पट्टन० ना० पु० नगर, पुर ।
पट्टवस्त्र० ना० पु० रेशमी कपड़ा ।
पट्टा० ना० पु० घोड़ेकी पटी, कुत्ते के गले में बाधनेका चमड़ा, कानों परके रखायेहुये बाल,

लिखतग अर्थात् खत आदि की सनद।

पट्टी० ना० स्त्री० पाटी, बधनी, पाखपड़ा। किसी स्थान आदि का भाग, शौराकाएड।

पट्टू० ना० पु० बनात की चादर, ऊर्णवस्त्र विशेष।

पट्ठ० ना० स्त्री० नवयौवना, थोड़े दिन की बकरी।

पट्ठा० ना० पु० नवयावा, पाठा, कुश्ती लड़ने हारा, रागविशेष, जिसका लवापत्ताहो।

पठ० ना० पु० पढ़त।

पठकायन्० ना० स्त्री० पाठक की पत्नी।

पठन० ना० स्त्री० पढ़न।

पठवाना० } स० क्रि० भजवाना।
पठाना० }

पठिया० ना० स्त्री० नवयौवना स्त्री, नई बकरी।

पठौना० ना० पु० } पठाना।
पठौनी० ना० स्त्री० }

पड़ना० अ० क्रि० गिरना, देरा करना, आरनी करना, लटना।

पड़पड़ाना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, गिरना।

पड़ाना० स० क्रि० गिराना, लिगाना।

पड़ापड़० अव्य० बारवार मार।

पड़ापाना० स० क्रि० सहज से पाना, कोई वस्तु मार्ग आदि में पाना।

पड़ाव० ना० पु० ठहराव, शिविर, टिकासर, टिकने का स्थान, सेना, भीड़।

पड़ावना० स० क्रि० पड़ाना।

पड़िया० ना० स्त्री० भैंस की बछिया।

पड़ोस० ना० पु० समीपता, निकटता।

पड़ोसिन्० ना० स्त्री० पड़ोसिनी स्त्री, समीप वासी स्त्री।

पड़ोसी० ना० पु० निकटवासी, पड़ोस रहने हारा।

पढ़न० ना० स्त्री० पढ़ने का मार्ग।

पढ़ना० स० क्रि० बाचना, पाठकरना, जपना।

पढ़न्त० } ना० स्त्री० अध्याय, सरथा, विद्या,
पढ़न्ति० } योग्यता।

पढ़ा० गु० चतुर, पण्डित, बुद्धिमान्।

पढ़ाना० स० क्रि० शिक्षा देनी, सिखलाना, बताना।

पढ़िन० ना० पु० मत्स्यविशेष, मछलीविशेष।

पढ्य० } गु० पढ़ने के योग्य।
पढ्यमान० }

पण० ना० पु० प्रतिज्ञा, अवस्था, कमाई, माल चार कौड़ियाँ अर्थात् बीसगण्डा कौड़ी।

पण्डा० ना० पु० पुजारी, देवालय का प्रधान।

पण्डित० गु० विद्वान्, गुणवान्, पढ़ा, बुद्धिमान्।

पण्डिताई० ना० स्त्री० पण्डितकाकाम वा विद्या।

पण्डितायन्० ना० पु० पण्डितकी जोरू।

पण्डियायन्० ना० स्त्री० पाण्डे की जोरू।

पंडुब्बी० ना० स्त्री० जलपक्षी, मुर्गाबी।

पडूखी० ना० स्त्री० कपोताकृति पक्षीविशेष, फाख़्तह।

पंडूरी० ना० स्त्री० पक्षीविशेष।

पतग० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।

पतंग० ना० पु० छोटा उड़नेवाला जन्तु तुक्कल विशेष लकड़ीविशेष, रंगविशेष, सूर्य पक्षी, अग्नि, वृक्षविशेष।

पतंगा० ना० पु० चिंगारी, जन्तु पतंगविशेष।

पतझड़० गु० पत्तोंका गिरजाना, ना० स्त्री० ऋतुविशेष।

पतन० ना० पु० पटकन, पछाड़, गिरन।

पतना० अ० क्रि० पड़ना गिरपड़ना।

पतला० गु० दुबला, झीना, जो गाढ़ा न हो।

पतलाई० ना० स्त्री० दुर्बलता दुबलापन्।

पतवार० } ना० पु० कनहर नाव के पिछाड़ी
पतवाल० } का डाँड़विशेष।

पतत्रि० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।

पता० ना० पु० चिह्न, निशान।

पताका० ना० स्त्री० ध्वजा, छोटी झण्डी।

पताल० ना० पु० पाताल।
पति० ना० स्त्री० प्रभु, स्वामी, इज्जत, सुख्याति।
पतित० गु० भ्रष्ट, दोषी, जो गिरगया।
पतिदेव० } ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री, राम
पतिदेवता० } चन्द्रिकाया, तू पतिदेवनका शुरु बेटी, तेरी यम मृत्यु कहावत चेटी।
पतिमा० ना० स्त्री० प्रतिमा।
पतिया० ना० स्त्री० पत्री, चिट्ठी।
पतियाना० स० क्रि० प्रतीति करना, भरोसा रखना।
पतियारा० ना० पु० भरोसा, प्रतीति, विश्वास।
पतिव्रता० ना० स्त्री० साध्वी, कुलवती और सुधर्म स्त्री।
पतीरी० ना० स्त्री० चटाई विशेष।
पतील० गु० पतला।
पतीला० ना० पु० बड़ी बटलोई, तौली, तसला।
पतीली० ना० स्त्री० छोटा पतीला।
पतुकी० ना० स्त्री० छोटी कराही, पत्तों का पात्र।
पतुरिया० ना० स्त्री० वेश्या, गणिका।
पतुहिया० ना० स्त्री० पताहू, बहू।
पतोह० } ना० स्त्री० बहू, पुत्रकी स्त्री।
पतोहू० }
पतौरा० ना० पु० सेंठाकी पत्ती।
पतौवा० ना० पु० पत्ती।
पत्तन० ना० पु० नगर।
पत्तर० ना० पु० पत्र, वर्क।
पत्तल० ना० स्त्री० पत्तोंकापात्र भोजनके लिये।
पत्ता० ना० पु० पान, दल, भगली, गहनाविशेष।
पत्ती० ना० स्त्री० पाती, भंग।
पत्थर० ना० पु० पाषाण शिला।
पत्नी० ना० स्त्री० भार्या, विवाहितानारी।
पत्यारो० ना० पु० पतियारा।
पत्र० ना० पु० पत्ता, चिट्ठी, पत्तर, चादी सोने आदि का पत्र।
पत्ररथ० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।
पत्रा० ना० पु० तिथिपत्र, पत्री।
पत्रांक० ना० पु० पत्रकी संख्या।
पत्रिका० ना० स्त्री० चिट्ठी, पत्री।
पत्री० ना० स्त्री० चिट्ठी, पक्षी, वृक्ष, बाण, कमल।
पथ० ना० पु० मार्ग, बाट, राह।
पथरकला० ना० पु० बन्दूकविशेष।
पथरचट्टा० ना० पु० पोधाविशेष।
पथराना० अ० क्रि० पत्थर होजाना, कड़ा हना।
पथरी० ना० स्त्री० किरकिर, आकर, कङ्करी चकमकका पत्थर जो मूत्रमें बदकरता है, मृगीविशेष, पक्षाका भीतरीअङ्ग विशेष।
पथरीला० गु० भूमि जिसमें बहुत पत्थरहों।
पथिक० गु० पु० बटाही, मुसाफिर, राही।
पथ्य० ना० पु० रोगीका आहार, लाभकारी, उपकारी वस्तु, मुफीद।
पथ्या० ना० स्त्री० हड़।
पद० ना० पु० चरण, पाव, अधिकार, महिमा, पति, स्थान, शब्द स्वरूप, कलिमा।
पदग० } गु० पैदल, पियादा।
पदचर० }
पदच्युत० गु० महिमासे जो भ्रष्ट अधिकार से बदलजाना, बदला।
पदज० ना० पु० पावकी अंगुली।
पदना० ना० पु० } पदकर, पद्दू, डरपोकना।
पदनी० ना० स्त्री० }
पदपद्दी० ना० स्त्री० एकप्रकारका नृत्य।
पदपत्र० ना० पु० पुष्करमूल, कमल के पत्ता, अधिकारका पत्र।
पदपीठ० ना० पु० खड़ाऊ, जूता।
पदम० ना० पु० पद्म।
पदवी० ना० स्त्री० पति, पराक्रम, आस्पद, मार्ग, अधिकार।

पदवृत्त० ना० पु० शब्द, जो दो शब्दोंसे मिलित हो।
पदस्थ० ना० पु० जो अपनी पदवीपर स्थिरहै।
पदत्राण० ना० पु० जूता।
पदात० ना० पु० पैरकीमारु, चरणका घात।
पदाति० ना० पु० पैदल, पियादह, सेवक।
पदाना० स० क्रि० वायु छोड़ाना, डराना, खेल में हराना।
पदाभिषिक्त० ना० पु० राज्यस्थान में जो अभिषेचित हो।
पदार्थ० ना० पु० वस्तु, अनूप वस्तु और शब्द का अर्थ, द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४ विशेष ५ समवाय ६ अभाव ७, ये सात।
पदिक० ना० पु० जड़ाऊ चौकी, हीरा।
पदुत्तम० ना० पु० सेंधनलोन, उत्तमपदवी।
पदोड़ा० गु० पादू, पदक्कड़, डरपोक।
पद्दराग० ना० पु० पतगवृक्ष।
पद्दली० ना० स्त्री० पाद्दरवृक्ष।
पद्धति० ना० स्त्री० पदवी, मार्ग, दस्तूर, रीति।
पद्म० ना० पु० कमल, चिह्न जो चरणादि में होता है, विष्णु का अस्त्रविशेष, सोनील, १००००००००००००००००।
पद्मक० ना० पु० पदमाक मुख्य सार।
पद्मकर्कटी० ना० पु० कमलगट्टा।
पद्मनाभि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम।
पद्मराग० ना० पु० लालमणि, माणिक।
पद्मा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, मार्ही, नदीविशेष।
पद्माकर० ना० पु० कमलयुक्त तालाब, समुद्र धनवान्।
पद्माह्व० ना० पु० कमलगट्टा।
पद्मावती० ना० स्त्री० पुस्तक विशेष, पद्मिनी, छन्दविशेष, नदीविशेष।
पद्मिनी० ना० स्त्री० कमलिनी, उत्तम स्त्री।
पद्मी० ना० पु० हाथी।
पद्य० ना० पु० श्लोक, छन्द, नज़्म।
पधारना० अ० क्रि० बिदाहोना, जाना, स्थिर करना।
पन० ना० पु० पण, अवस्थाबोधक यथा बालपन, पानी।
पनघट० ना० पु० पानी भरनेका घाट।
पनच० ना० स्त्री० रोदह, चिल्ला।
पनचक्की० ना० स्त्री० वह चक्की जो पानी से चलाते हैं।
पनचोरा० ना० पु० पातविशेष।
पनपना० अ० क्रि० मोटा होजाना, प्रफुल्लित होना।
पनपनाहट० ना० स्त्री० सनसनाहट।
पनमत्ता० ना० स्त्री० पानी और मानकी मिलौनी।
पनव० ना० पु० ढोल।
पनवार० ना० पु० पोधाविशेष, राजपूतों में जातिविशेष।
पनवारा० ना० पु० पत्तल।
पनवारी० ना० स्त्री० जिस स्थान में पान उपजता है।
पनस० ना० पु० कटहल।
पनसल्ला० ना० पु० पियाऊ, जहां पथिकादि को पानी पिलाते हैं।
पनसा० गु० फीका, अलोना, ना० पु० छालादा।
पनसारा० ना० पु० औषधि, किराना आदि।
पनसारी० ना० पु० किराना बेचनेवाला।
पनसाल० ना० पु० पनसल्ला।
पनसोई० ना० स्त्री० छोटी नावविशेष।
पनहा० ना० पु० पना, चिह्न, सुराग, चोरका मुखबा।
पनहाना० अ० क्रि० दूध उतरना, पन्हाना।
पनहारा० ना० पु० पनभरा।
पनहारिन्० } ना० स्त्री० पानी भरनेहारी स्त्री।
पनहारी० }
पनहीं० ना० स्त्री० जूती।

पनारा० } ना० पु० मोरी नाबदान, बद
पनाला० } री।

पनाली० ना० स्त्री० छोटा पनाला।

पनिया० ना० पु० पानी, जलका सांप।

पनियाना० स० क्रि० सींचना, भिगाना, अ० क्रि० पानी भर आना।

पनियाला० ना० पु० फलविशेष।

पनीहा० ना० पु० जलजन्तु।

पन्थ० ना० पु० मार्ग, मत, धर्म, अर्जन।

पन्था० ना० पु० पन्थ।

पन्थान० ना० पु० मार्ग, बाट, सड़क।

पन्थी० ना० पु० हरीनी, माषा, जीव ईश्वर, अभिमन्यु पथिक, मतावलम्बी।

पन्नग० ना० पु० सांप।

पन्नगपति० ना० पु० शेष, सर्पराज।

पन्नगारि० ना० पु० गरुड, मोर, नेवला।

पन्ना० ना० पु० रत्नविशेष, पत्र।

पन्नी० ना० स्त्री० सुवर्ण इत्यादि का बहुत सूक्ष्म पत्र।

पपड़ा० ना० पु० टुकड़ा, नर।

पपड़िया० ना० स्त्री० छाल पपडा।

पपड़ियाकथ० ना० पु० श्वेत कथा।

पपड़ी० ना० स्त्री० देवली, छिलका, परत, पाक विशेष।

पपड़ीला० गु० परतीला, पपड़दार।

पपनी० ना० स्त्री० बरनी।

पपरा० ना० पु० पपडा।

पपरी० ना० स्त्री० पपड़ी।

पपीहा० ना० पु० चूहेमार, तुर्मती, पक्षी विशेष जो कभी पानी नदी आदिका नहीं पीता है।

पपैया० ना० पु० खिलोना विशेष, वृक्षविशेष वा उसका फल।

पय० } ना०पु० दूध, पानी, अमृत, दोष अव्य०
पय ० } ऊपर, तौभी।

पयद० ना० पु० मेघ, गाय।

पयोधि० ना० पु० समुद्र।

पयोदधि० } ना० पु० क्षीरसमुद्र अर्थात्
पयोनिधि० } दूध वा जलका समुद्र।

पयस्विनी० ना० स्त्री० विदारीकन्द, दुधारगाय आदि, श्वास जो काय काम प्रकाशित है।

पयान० } ना० पु० चाला, विदा।
पयाना० }

पयार० ना० पु० तृणविशेष।

पयोधर० ना० पु० स्तन, चूची, मेघ, तृणविशेष, मदारवृक्ष, पर्वत, समद्र, राजा।

पर० गु० दूसरा, दूर, पराया, शिरोमणि,परे, अव्य० ऊपर, द्वारा, उपरान्त, तत्पर।

परकना० अ० क्रि० सधना, अभ्यासी होना।

परकाज० ना० पु० परायाकार्य्य, और का काम।

परकाजी० गु० पराया काम करनेवाला वा शाचनेवाला, परार्थी।

परकाना० स० क्रि० सधाना, मिलाना।

परकाय० गु० दूसरेका, आनका।

परकीया० ना० स्त्री० पराई स्त्री वा परपुरुष रत स्त्री।

परख० ना० स्त्री० परीक्षा, तजरुबा।

परखना० स० क्रि० परीक्षा करना, जांचना।

परखाई० ना० स्त्री० परखनेका काम वा उसका पैसा।

परखाना० स० क्रि० परीक्षाकराना, जांचवाना,

परखा० } गु० परीक्षक, परखोहारा।
परखैया० }

परचा० ना० पु० परीक्षा, इम्तहान।

परचून० ना० पु० आटा दालि आदि।

परचूनिया० ना० पु० बनिया, परचून बेचने हारा।

परचौ० ना० पु० परीक्षा, परखकरना, इम्तहान।

परछिद्र० ना० पु० पराया छेद, पराया भेद।

परजंक० ना० पु० खाट, सेज।

परजा० ना० स्त्री० प्रजा।

परत० ना० पु० लड़, पपड़ा, तह ।
परतंत्र० ना० पु० पराधीन जो और के बश है ।
परतल० ना० पु० डेराडण्डा ।
परतला० ना० पु० हाव, जिसमे तलवार रख ते हैं ।
परता० ना० पु० परेता, चरखी, माल ।
परती० ना० स्त्री० पजर, पहाड़ाई धरती या क पड़े स पवन करके अन्न साफ़ करना ।
परतीत० ना० स्त्री० प्रतीत, निश्चय ।
परदादा० ना० पु० दादाका बाप ।
परदादी० ना० स्त्री० दादे की माता ।
परदार० } ना० स्त्री० पराई स्त्री ।
परदारा० }
परदेश० ना० पु० आनदेश, विदेश ।
परदेशी० गु० अन्यदेशी, अनजान, विदेशी ।
परद्रोह० ना० पु० परायावैर, आनका विरोध ।
परद्रव्य०ना० पु० परायाधन ।
परधन० ना० पु० पराया द्रव्य, परायाधन ।
परन० ना० पु० प्रण, प्रतिज्ञा, परण ।
परनाना० ना० पु० नाना का बाप, प्रमातामह ।
परनाला० ना० पु० } मोरी, नाबदान,
परनाली० स्त्री० } नाला ।
परन्तु० अव्य० किन्तु, लेकिन ।
परपंच० ना० पु० प्रपञ्च, छल, धोखा, कपट ।
परपंची० गु० प्रपंची, छली, कपटी, लपारी ।
परपराना० अ० क्रि० चरपराना ।
परपराहट० ना० स्त्री० चरपराहट ।
परपुष्टा० ना० स्त्री० कोयल पक्षी ।
परपूरन० गु० परिपूर्ण, भरपूर ।
परपठ० ना० पु० हुण्डीका उतारा ।
परब० ना० पु० पर्व्व, उत्सव, अध्याय, त्योहार ।
परबल० गु० प्रबल ।
परम० गु० उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, अत्युत्तम, बड़ा ।
परमल० ना० पु० चर्वण विशेष ।
परमविरत० गु० योगेश्वर, सिद्ध, अतिलीन ।
परमहंस० ना० पु० योगी विशेष ।
परमज्ञान० ना० पु० शुद्ध विज्ञान ।
परमा० ना० स्त्री० शोभा, कांति ।
परमाणु० ना० पु० अत्यन्त सूक्ष्मवस्तु ।
परमात्मा० ना० पु० परब्रह्म, भगवान्, ईश्वर ।
परमान्न० ना० पु० पायस, खीर ।
परमायु० } ना० स्त्री० जीवनकाल, समस्त,
परमायुष० } आयु ।
परमार्थ० ना० पु० कार्य्य वा व्यवहार जो सब से उत्तम है, कीर्ति, पुण्यतत्त्व वस्तु ।
परमार्थी० गु० भक्त, कीर्तिमान्, उत्तमकार्य्यी ।
परमीश० } ना० पु० परमात्मा, सर्व्वेश्व
परमेश्वर० } रित्व, ईश्वर ।
परमेष्ठी० ना० पु० ब्रह्मा ।
परमोधु० मूर्च्छना, बेहोशी ।
परम्परा० ना० स्त्री० क्रमागत, प्राचीन ।
परलोक० ना० पु० स्वर्ग, मरने के पीछे जो लोक ।
परवर० } ना० पु० पलवल, तरकारी विशेष ।
परवल० }
परवश० } गु० स्वत्वाधीन, पराधीन ।
परवस० }
परब्रह्म० ना० पु० परमेश्वर ।
परशाद० ना० पु० प्रसाद ।
परशु० ना० पु० फरसा ।
परशुधर० } ना० पु० विष्णु नारायण का
परशुराम० } छठा अवतार ।
परश्व० अव्य० परसों ।
परस० ना० स्पर्श, छुआवट ।
परसना० स० क्रि० छूना, परोसना ।
परसिया० ना० पु० हसिया ।
परसी० ना० पु० मच्छी मार, रामचन्द्रिकाया यथा, वंक हिये न प्रभा सरसीसी, कर्दम काम वधू परसीसी, कामना कामिनि सोरि गसीसी, मीनमनुष्यन की नारसीसी, क्रि० छुई, मिली ।

परसूत० ना० पु० रोग विशेष।
परसूतिया० } गु० जिसको परसूतरोगहो।
परसूती० }
परसों० अव्य० अगिला वा पिछला, तीसरादिन।
परस्पर० अव्य० आपुस में।
परहित० ना० पु० परायाकाम, परस्वार्थ।
परत्र० अव्य० परलोक में।
परा० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह मिलता है उसका अर्थ कभी प्रभुता, कभी उलटाई, कभी अहंकार, कभी अधिकाई आदि होता है, ना० पु० श्रेणी, पंक्ति, कतार।
पराक्रम० ना० पु० सामर्थ्य, पौरुष।
पराक्रमी० गु० सामर्थी, बलवान्।
पराग० ना० पु० फूलकी रज वा धूलि।
परामुख० ना० पु० विमुख, मुखफिरा।
पराजय० ना० पु० पराभव, भगैल, हार।
पराजयी० गु० पराजय करनेवाला।
पराजित० गु० जिसकी पराजय हुआ, जो हार गया।
पराजिता० ना० स्त्री० विष्णुकान्ता, पौधा।
पराठा० ना० पु० एकप्रकार की रोटी विशेष।
परात० ना० पु० बड़ीथाली, प्रात।
परातिक्ता० ना० पु० लाल पुनर्नवा।
पराती० ना० स्त्री० परात, थाल।
पराधीन० गु० जो निजवश में नहीं है, अस्वतंत्र।
पराना० अ० क्रि० भागना, पजरियाना।
परानी० ना० पु० प्राणी, जीवधारी।
परान्न० ना० पु० और का अन्न अर्थात् दूसरे की कमाई वा लागत का भोजन।
पराभव० ना० पु० पराजय, निरादर, हार।
पराभूत० गु० जो पराजय होगया, जो हारगया।
परामर्श० ना० पु० विचार, मंत्र, उपदेश।
परामोधना० ना० पु० डुसलाहट।
परायण० ना० पु० किसी काममें मनकी लगावट होनी, गु० तत्पर, तत्पर।
पराया० गु० और का, द्वितीय का।
परारा० गु० पराया।
परालब्धि० ना० स्त्री० भाग्य, दैवगति, द्वितीय जन्म अर्थात् पिछले जन्म कर्म को फल भोग।
परावती० ना० स्त्री० पागनथा नदी।
परावह० ना० पु० मुख्य पवन।
पराशर० ना० पु० वेदव्यासजी के पिता मुनि विशेष।
परास० ना० पु० पलास वा रस्सी जो उसकी छाल से बनती है।
परासर० ना० पु० पराशर।
परास्त० गु० खराब, नष्ट, तहनाला।
पराह० ना० स्त्री० भागाभाग, देशत्याग।
पराह्न० ना० पु० दोपहर दिन चढ़े के उपरान्त।
परि० अव्य० अति, पास, जिस शब्द की आदि में यह युक्तहोता है उसका अर्थ कभी चौदिश कभी भाग, कभी त्याग, कभी अवधि, और कभी अधिक आदि होजाता है।
परिकर० ना० पु० कमरपेंच।
परिक्रमा० ना० स्त्री० प्रदक्षिणा।
परिखा० ना० स्त्री० खाई।
परिगणन० ना० पु० मापना, गिनना।
परिग्रह० ना० पु० पड़ोसी, निकटवासी।
परिघ० ना० पु० वज्र, पर्वत, बाण, सूर्य्य, चांद, शेष, जल और ब्योंड़ा।
परिचय० ना० पु० मेल मिलाप, जान पहिचान।
परिचर० ना० पु० परिचिरथ, परिसेवक।
परिचर्य्या० ना० स्त्री० सेवा, खिदमत।
परिचारक० ना० पु० सेवक, टहोरिया, जमादार।
परिचारी० ना० स्त्री० दासी, सेवकिन।
परिच्छिन्न० ना० पु० परिमित, दीन, क्षीण।
परिच्छेद० ना० पु० विभाग, अध्याय, पर्व।

परिजन० ना० पु० परिवारके लोग, निकटवासी।
परिणाम० ना० पु० अन्त, समाप्ति, अवस्थान्तर की प्राप्ति।
परिणाह० गु० विशाल, मोटा, स्थूल।
परित ० अव्य० चारों ओर सर्वत्र।
परिताप० ना० पु० सन्ताप, दुःख, शाप, पीड़ा।
परितोप० ना० पु० सन्ताप, प्रसन्नता।
परित्राण० ना० पु० रक्षा, रखवाली, पालना।
परित्राता० गु० रक्षक, पालनेवाला।
परित्यक्त० गु० जो सर्वप्रकारत्यागित।
परित्याग० ना० पु० जो भलीभाति त्याग।
परिदेवन० ना० पु० विलाप, शोक, रोना।
परिधन० } ना० पु० कपड़ापहिरनेक, रामायणे,
परिधान० } जटा मुकुट परिधन मुनि चीरा।
परिधि० ना० स्त्री० वेष्टनसीमाप, मण्डल, घेरा।
परिधेय० गु० पहिरायागया।
परिन० } ना० पु० विवाह, नाम माला, परि
परिनैन० } ननिवेशान, परिनैन, उद्वाह, जून, विवाह।
परिपक्व० गु० पक्का, पट्ट।
परिपन्थी० गु० वैरी, शत्रु।
परिपाक० गु० पका, ना० पु० समाप्ति और अन्त।
परिपाटी० ना० स्त्री० अनुक्रम, उत्क्रम, रीति, दस्तूर।
परिपिष्टक० ना० पु० सीसा धातु।
परिपूरण० }
परिपूरन० } गु० समस्त, सम्पूर्ण, सर्व्व, सब।
परिपूर्ण० }
परिवाह० ना० पु० मुख्य पवन।
परिभद्र० ना० पु० नीमवृक्ष।
परिभव० ना० पु० पराभव, अनादर, बदनामी।
परिभाषा० ना० स्त्री० व्याकरणादि शास्त्र का सकेत।
परिभ्रमण० ना० पु० फिरना, घूमना।
परिभृत० ना० पु० कोकिला, अच्छा सेवक, यथा, वनप्रियाँ परिभृत कोकिलापिकइत्यपि इत्यमर रामचन्द्रिकाया, देखो शुभगिरिवर स कल शोभावर फूलवरण बहु फलनिफरे, सगसरभ ऋक्ष जन केशरिकेनन मनहु धरनि सुग्रीव धर, सगशिना निराजे गज मुखगाजे परिभृतबोले चित्त हरे, शिरशुभचन्द्रकधर परम दिगम्बर मानोहर अहिराज धरे, इस छन्द मे श्लेष है इस लिये परिभृत के दोनों अर्थ सिद्ध हैं।
परिमाल० ना० पु० सुगन्धित, सुवास।
परिमाण० ना० पु० परिच्छेद करना, बाट, बखरा।
परिमित० गु० जो नापागया, मिलाहुआ।
परिवर्त्त० ना० पु० बदल, एराफेरी, भागाभाग।
परिवर्त्तन० ना० पु० बदला, एराफेरी करना।
परिवाद० ना० पु० गाली, उलहना, निन्दा।
परिवार० ना० पु० घराने के लोग, पाल्यजन, वंश।
परिवृढ़० ना० पु० स्वामी, नायक, मालिक।
परिवृत्त० गु० चारों ओर से घिराहुआ।
परिवेष० ना० पु० घेरा, गोलाई, पारधि।
परिवेषण० ना० पु० लपटना, भोजन का परोसना।
परिवेष्टित० गु० जो लपेटागया, घेरागया।
परिव्राजक० ना० पु० संन्यासी।
परिव्राजी० ना० स्त्री० म्योड़ा, पौधा मुण्डी।
परिशोध० ना० पु० ऋणको चुकायदेना।
परिश्रम० ना० पु० आयास, श्रम, थकान, क्लेश, मिहनत।
परिश्रमी० गु० कामकाजी, धुनी, मिहनती।
परिष्कार० ना० पु० शोभा, आभूषण।
परिष्कृत० गु० शोभित, आभूषित।
परिहरना० स० क्रि० त्यागना, छोड़ना, लेलेना।
परिहार० ना० पु० अवज्ञा, अपमान, और राजपूतों में जाति विशेष।

परिहास० ना० पु० व्यंग्य, हास्य, हँसी ठट्ठा, खिल्ली, कौतुक।
परी० ना० स्त्री० तेल भाड़ से निकालने का पात्र विशेष, पारसी भाषा में अप्सरा को कहते हैं।
परीच्छित० गु० दूसरे की इच्छानुसार।
परीक्षक० ना० गु० परीक्षा करनेहारा।
परीक्षा० ना० स्त्री० जाच, खाज, इम्तहान।
परीक्षित० गु० जा जाचा गया, परीक्षा किया गया, ना० पु० अर्जुनका पोता, राजा विशेष।
परु० ना० पु० पोर, गांठ।
परुष० गु० कठोर ना० पु० कुवचन, गाली, निरसवचन, असह्य वचन।
परुषाक्षर० ना० पु० कुवचन, असह्यवचन।
परूप० } ना० पु० फालसा वृक्ष।
परूपक० }
परे० अव्य० उधर।
परेखा० ना० पु० पछितावा।
परेतना० स० कि० अटेरना।
परेतराट्० ना० पु० जमराज।
परेता० ना० पु० अटेरन, चरखी।
परेवा० ना० पु० कबूतर, प्रतिपत्तिथि।
परेश० ना० पु० श्रीभगवान्।
परेह० ना० पु० पलेव।
परोपकार० ना० पु० पराया स्वारथ करना।
परोपकारी० गु० जो पराया उपकार करे।
परोस० ना० पु० निकट, पास, समीप, पड़ोस।
परोसना० स० कि० भाजन थाली आदि में रखना।
परोसा० ना० पु० पाक जो किसी को भेजें वा देवें।
परोसी० ना० पु० निकटवासी, पड़ोसी।
परोसैया० ना० पु० परोसनेवाला।
परोहन० ना० पु० वाहन, रथ, बहल, घोड़ा आदि।
परोहा० ना० पु० चरस, मोट।
परोक्ष० ना० पु० वनवासी, वानप्रस्थ, उ० गुप्त, अगोचर।
पर्चा० ना० स्त्री० परीक्षा।
पर्चाना० स० कि० भरमवाना, बातचीत करना, हलाना, जलाना।
पर्चूनिया० ना० पु० आटादाल, बेचनेवाला।
पर्चूनी० ना० स्त्री० आटादाल बेचनेकाकाम।
पर्छती० ना० स्त्री० छोटी छपरिया जो भीतरी भीतिपर डालते हैं।
पर्छाँ० }
पर्छाईं० } ना० स्त्री० प्रतिबिम्ब प्रतिरूप, अक्स।
पर्छावा० }
पर्ज० ना० स्त्री० टालका इधकड़ा, रागिनीविशेष।
पर्ण० ना० पु० पत्ता, पान, प्रतिज्ञा, प्रण।
पर्णकुटी० } ना० स्त्री० पत्तोंसे छाया हुआ,
पर्णशाला० } झोंपड़ा।
पर्दादा० ना० पु० दादाका बाप, प्रपितामह।
परदादी० ना० स्त्री० दादा की माता, प्रपितामही।
पर्पट० } ना० पु० पित्तपापड़ा।
पर्पटक० }
पर्यङ्क० } ना० पु० सेज, खाट, पलँग।
पर्य्यंक० }
पर्य्यटन० ना० पु० भ्रमण।
पर्य्यटित० गु० भ्रमित, घूमाभया।
पर्य्यन्त० अव्य० तक, लग, ना० पु० अन्त की सीमा।
पर्यवसान० ना० पु० चरम, समाप्ति।
पर्य्याय० ना० पु० क्रम, डौल, अवसर, दौर
परला० गु० फालसा, उसपारका।
पर्व० ना० पु० त्योहार, उत्सव, व्रतादिन, नहान, अध्याय, मणि, हीरा, कुसमय।
पर्वत० ना० पु० पहाड़, तरकारीविशेष, मुनि वि०।
पर्वतनन्दिनी० ना० स्त्री० श्रीपार्वतीजी।
पर्वतारि० ना० पु० इन्द्र।
पर्वतिया० ना० पु० लौकी, लौवा, पर्वतवासी।

पवङ्गम० ना० पु० प्लवग, वानर।
पवन० ना० पु० वायु, वायुकोण का स्वामी।
पवनसखा० ना० पु० अग्नि, आग।
पवनावर्त्ती० ना० स्त्री० परशुप की एक स्त्रीका नाम।
पवमान० ना० पु० पवन, वायु, हवा।
पवाई० ना० पु० घोड़े के पैरकी झालर, पकड़ी, जूते का एक पल्ला।
पवाड़० ना० पु० नीच लोग।
पवाँर० ना० पु० राजपूत, जातिविशेष।
पवाँरना० स० क्रि० चलाना, पठाना, फेरना।
पवि० ना० पु० वज्र।
पविपात० ना० पु० वज्रपड़ना, बीजलीपड़ना।
पवित्र० ना० पु० शुद्ध, पाक, निर्मल, अदोष।
पवित्रता० ना० स्त्री० शुद्धता, पाकी, निर्मलता।
पवित्रा० ना० पु० यज्ञोपवीत, डोरा।
पवित्री० ना० स्त्री० मुद्रिका कुशकी जो सब इत्यादि पूजा के समय पहिनते हैं वा पञ्चधातु रचित।
पशु० ना० पु० जन्तु, जीवधारी, चतुष्पदादि।
पशुपति० ना० पु० श्रीमहादेवजी, ग्वालादि।
पशुपाल०, पशुपालक० } ना० पु० ग्वाल, अहीर।
पश्चात्० अव्य० पीछे, अनन्तर।
पश्चात्ताप० ना० पु० पछतावा, अफसोस।
पश्चात्तापी० गु० पछितानेवाला।
पश्चिम० ना० पु० पछाह।
पश्यति०, पश्यन्ति० } क्रि० देखता।
पश्यतोहर० ना० पु० सामने चोरी करनेहारा, सुनार।
पषान० ना० पु० पषाण, पत्थर, ज्यों पनिहारी जेवरी खैंचत कम्तरपषान, तुलसी रसना रामकहु पाप विनिक अनुमान।
पसरना० अ० क्रि० फैलना।
पसली० ना० स्त्री० पाजर की हड्डी।
पसा० ना० पु० दोमुट्ठीभर।
पसाई० ना० स्त्री० चावल विशेष, तृणविशेष, जिसका दाल धान के सदृश होता है।
पसाउ०, पसाऊ० } ना० पु० दया, कृपा, मेहरबानी।
पसाना० स० क्रि० भातका माड़ निकालना, चलाना।
पसार०, पसारा० } ना० पु० फैलाव, बिछाव।
पसारी० ना० पु० पनसारी।
पसारना० स० क्रि० फैलाना, बिछाना।
पसीजना० अ० क्रि० स्वेद छूटना, सितली, छूटना, दयालु होना।
पसीना० ना० पु० स्वेद, सितली।
पसूज० ना० स्त्री० सीना, तुर्पन।
पसूजना० स० क्रि० सीना, तुर्पना, तागना, तुर्पाना
पसीव० ना० पु० पसीना।
पह० ना० पु० तड़का, भोर, अव्य० पास।
पहचान० ना० स्त्री० ज्ञान, चिन्हारी।
पहचानना० स० क्रि० जानना, चीन्हना।
पहनना० स० क्रि० पहिरना, ओढ़ना।
पहनावा० ना० पु० वस्त्र, कपड़ा।
पहर० ना० पु० समयका परिमाण जो तीनघंटे का होता है, एक दिन वा रातका चतुर्थांश।
पहरा० ना० पु० चौकी।
पहराना० स० क्रि० पहिराना, ओढ़ाना।
पहरावनी० ना० स्त्री० जो विवाह आदि में लोगों को कपड़ा पहराते हैं।
पहरिया०, पहरुआ०, पहरू० } ना० पु० अगोरिया, चौकीदार, गोड़ार, रखवारा।
पहरना० अ० क्रि० पहनना।
पहल० ना० पु० रुई का पर्त्त, पहलू, तिकोनादि की एक ओर।
पहला० गु० प्रथम, अव्वल।
पहाड़० ना० पु० पर्वत।

पाख० ना० पु० पक्ष, १५ दिनका, भीति, विशेष जिसपर बरेंडी रखते हैं।
पाखण्ड० ना० पु० छल, धूर्त्तता, बनाव।
पाखर० ना० पु० घोड़े, वा हाथी के ओढ़ने की झूल विशेष, जो लोहमय होती है।
पाखा० ना० पु० ओसरा, पाख।
पाग० ना० स्त्री० पगड़ी, रस, चासनी, मिलित।
पागना० अ० क्रि० रसमिलित होना, सनना, मिलना, स० क्रि० पगाना।
पागल० गु० उन्मत्त, सिड़ा।
पागा० ना० पु० घोड़ों का झुण्ड।
पागुर० ना० पु० चबाई, उगली।
पागुराना० स० क्रि० चाबना, जुगाली करना।
पाचक० } ना० गु० रसोइया, स्वच्छ, अग्नि
पाचन० } कारक औषधि, हाजिम।
पाछु० ना० पु० टीका, गाढ़ी खुदवाई।
पाछना० स० क्रि० टीका देना, गाढ़ी खादना।
पाछैं० }
पाछे० } अव्य० पीछे।
पाञ्चाल० ना० पु० देश विशेष।
पाञ्चाली० ना० स्त्री० द्रौपदी।
पाट० ना० पु० सारी जाति विशेष, पट्टा, चाडाई, टसर, रेशम, सिंहासन।
पाटकृमि० ना० पु० रेशमका कीड़ा।
पाटन० ना० स्त्री० छात, छत, पटना।
पाटना० स० क्रि० छतवाना, भरदेना, छाना, किसी वस्तुकी बहुतायत करना, थापना।
पाटमहिषी० ना० स्त्री० पटरानी।
पाटम्बर० ना० पु० चरली, रेशमी कपड़ा।
पाटल० ना० पु० वर्ण विशेष, फूलवाले वृक्ष, लाल सफेद अर्थात् गुलाब।
पाटला० ना० पु० पुष्प विशेष, ना० स्त्री० दुर्गा।
पाटलिपुत्र० ना० पु० शोणभद्र के पास एक प्राचीन नगर।
पाटा० ना० पु० पट्टा।
पाटी० ना० स्त्री० खाट में का लम्बा काठ, पटिया, मिठाई विशेष, चटाई विशेष, तख्ती लिखने की।
पाटीर० ना० पु० चन्दन।
पाठ० ना० पु० सबक, अध्याय, अध्ययन, सबक।
पाठक० गु० शिक्षक, ना० पु० विप्रजाति विशेष।
पाठशाला० ना० स्त्री० पढ़ने पढ़ाने का घर, चटशाल।
पाठा० ना० पु० युवाजन्तु, मल्लयुद्ध करनेहारा।
पाठी० ना० स्त्री० युवावकरी, ना० पु० ब्रह्म, पाठक।
पाठीन० ना० पु० सहस्र दाढ़का मच्छ विशेष।
पाठ्य० गु० जो पढ़ने के योग्य है।
पाड़० ना० स्त्री० गरगज, डाँजा।
पाड़ना० स० क्रि० गिराना, काजल निकालना।
पाड़ा० ना० पु० भैंसका बच्चा, टीला।
पाढा० ना० पु० मृग विशेष।
पाढ़ी० ना० स्त्री० नदी के पारजाना।
पाण० ना० पु० पीता, पत्ता, नये कपड़े की माड़ी।
पाणि० ना० पु० हाथ।
पाणिग्रहण० ना० पु० विवाह, कन्यादान लेना।
पाणिनि० ना० पु० व्याकरणशास्त्रकर्त्ता, मुनि विशेष।
पाणिनीय० गु० पाणिनि मुनिका व्याकरण वा उसका पढ़ने वा पढ़नेहारा।
पाण्डव० ना० पु० पाण्डुराजा के पांचपुत्र अर्थात् युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव।
पाण्डु० ना० पु० राजा युधिष्ठिर का पिता।
पाण्डुपुत्री० ना० स्त्री० रेणुका औषधि।
पांडुर० ना० पु० वर्ण विशेष, अर्थात् उज्ज्वल, पड़री पक्षी, वृक्ष विशेष, पीला, सफेद।
पाण्डुरा० ना० स्त्री० मधुरान, पक्षी विशेष।

पाण्डे० ना० पु० ब्राह्मण की जाति या पदवी विशेष।

पात० ना० पु० पतन, पत्र, पत्ता, कानका गहना विशेष।

पातक० ना० पु० पाप, पापकर्त्ता।

पातकी० गु० पापी, दोषी।

पातर० ना० स्त्री० वेश्या, गु० पतला, दुर्बल।

पातञ्जल० ना० पु० शास्त्र विशेष।

पाता० ना० पु० पत्ता, रक्षिता।

पाताल० ना० पु० नागलोक, नरक।

पातालाय० गु० पाताल वासी।

पाती० ना० स्त्री० पत्री, चिट्ठी पत्ती।

पात्र० ना० पु० बर्त्तन, भांडा, गु० उचित, योग्य, उत्तम।

पाथ० ना० पु० जल, पानी।

पाथना० स० क्रि० गोबरसे कण्डे कण्डी बनाना, थोपना, जोड़लगाना।

पाथर० ना० पु० पत्थर।

पाथेय० ना० पु० पथम व्ययकरनेकी सामग्री।

पाथोज० ना० पु० कमल।

पाथोद० ना० पु० मेघ।

पाथोधि० ना० पु० समुद्र।

पाद० ना० पु० पद, चरण, चौथाभाग, गुदशब्द, टुसकी।

पादकण्टक० ना० पु० बिछुआ।

पादना० अ० क्रि० टर्रमारना, पादमारना, टुसकना, गुदा स शब्द मारना।

पादप० ना० पु० वृक्ष, पेड़।

पादांगद० ना० पु० बिछुआ, पावका भूषण।

पादानोन० ना० पु० लोन विशेष।

पादार्घ० ना० पु० जागार, माफी।

पादार्पण० ना० पु० पैरदना।

पादुका० ना० पु० खड़ाऊ, जूती।

पादूकृत० ना० पु० चमार, मोची।

पादोदक० ना० पु० पावका धोवन।

पाद्य० ना० पु० पावधोने क पानी।

पाधा० ना० पु० शिक्षक, लाल।

पान० ना० पु० ताम्बूल, ताम्बोल, पत्ता, पाण पाथि।

पानदान० ना० पु० पान रखनेका पात्र विशेष।

पाना० स० क्रि० उपार्जन करना, मिलना।

पानिप० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति, सुन्दरता।

पानी०
पानीय० } ना० पु० जल, वीर्य्य, धातु, मड़क, पति, इज्जत, आबरू।

पान्थ० ना० पु० पथिक, मुसाफिर।

पाप० ना० पु० अधर्म, कुकर्म, अपराध, दोष।

पापखण्डन० ना० पु० पापनाशन।

पापड़० ना० पु० बहुत पतले फुलरा भूनके।

पापड़ा० ना० पु० पौधाविशेष।

पापड़ाखार० ना० पु० केले के वृक्षको जलायके क्षार को जो पापड़ों में लगाते हैं।

पापरूपी० गु० पापकी मूर्त्ति, अधम शरीर।

पापरोग० ना० पु० कोढ़, माता विशेष, शीतला विशेष।

पापात्मा० गु० पापिष्ठ, अधर्मी, काफिर।

पापिन०
पापिनी० } ना० स्त्री० दोषिनी, पाप करनेहारी।

पापिया० ना० पु० एरण्ड, वृक्ष विशेष, जिसके फलको बंगाली खाते हैं।

पापिष्ठ० गु० पापात्मा, अधर्म की मूर्त्ति, हिंसक।

पापी० गु० अपराधी, गुनहगार।

पामर० गु० नीच, अधम, तुच्छ।

पामरी० ना० स्त्री० नीचकी स्त्री, रेशम, वस्त्र विशेष।

पायक० ना० पु० पदल, सेवक, पैदल योद्धा।

पायद० ना० पु० डौंजा।

पायन्त० ना० पु०
पायन्ती० स्त्री० } खाटका वह ओर जिधर पावरखते हैं।

पायल० ना० स्त्री० पावकाभूषण, अर्थात् पायजेब आदि गु० सुचाल।

पायस० ना० पु० खीर।

पाय० ना० पु० खाट आदि का पैर, पारसी शब्द है।
पार० ना० पु० नद्यादि का परला तीर।
पारख० ना० पु० परीक्षक, जाचनेहारा, परख।
पारखी० गु० परीक्षक, परखनेहारा।
पारग० ना० पु० पारजाना।
पारण० ना० पु० उपवास के पीछे भोजन मेय।
पारथ० ना० पु० अर्जुन, काव्ये यथा, पारथ के स्वारथ कियो वा स्वारथ भगवान
पारथी० ना० स्त्री० पालथी।
पारद० ना० पु० पारा।
पारदारिक० ना० पु० परस्त्रीगामी, व्यभिचारी।
पारन० ना० पु० पारण।
पारना० ना० पु० उपवास का खोलना, स० क्रि० निवेड़ना, गिराना, पालना।
पारल० ना० पु० पोधाविशेष।
पारलौकिक० गु० जो परलोक चाहे।
पारब्रह्म० ना० पु० परब्रह्म, परमात्मा।
पारस० ना० पु० लोहवा आकर्षक पथर विशेष, जिससे वृद्धलोग लोहा एक प्रकार का कहते हैं।
पारसपीपल० ना० पु० वृक्षविशेष।
पारसाल० ना० पु० अगला वा पिछला वर्ष, यह शब्द फारसी का है।
पारसी० ना० स्त्री० पारसिक देशकी भाषा, ना० पु० वा उस देश के निवासी, जाति विशेष।
पारसीक० ना० पु० पारसी, घोड़ा।
पारा० ना० पु० पारद, धातु विशेष।
पारायण० ना० पु० पुराण आदिका सकल्प पूर्वक पाठ, पूर्णता।
पारावत० ना० पु० कबूतर, कपोत।
पारावार० ना० पु० नदी के दोनों तट, समुद्र।
पारि० ना० स्त्री० पाड़, जगत दूसरी।
पारिजात० ना० पु० कल्पवृक्ष, कमल, हरसिंहार।
पारिजाती० ना० स्त्री० तेजबल।
पारितोषिक० गु० जिस से सन्तुष्ट हो, इनाम
पारिभद्रक० } ना० पु० वृक्ष औषधि।
पारिभद्र०
पारिभाषिक० गु० शास्त्र में सुगमता के लिये संज्ञा मानली है।
पारिषद० ना० पु० सहचर, देखवैया।
पारिषदा० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
पारिहार्थ० ना० पु० वृक्ष।
पारी० ना० स्त्री० गुड़की भेली, बारी पन्ती।
पार्थिव० ना० पु० श्रीशिवजी, उद्भिद और राजा, मृत्तिका से निर्मित।
पार्वण० ना० पु० पर्व में श्राद्ध विशेष।
पार्वती० ना० स्त्री० श्रीभवानी, हिमालय जाता।
पार्श्व० ना० पु० बायां वा दाहिना पाजर, अव्य० पास, समीप।
पार्श्ववर्त्ती० ना० पु० निकटवर्ती।
पाल० ना० पु० नाव दौड़ाने के लिये तान्से कपड़े वस्तु, छाग तम्बू, घास वा पातका पत्ते जिसमें अबादि पकाते हैं, सिरकी की बनी वस्तु विशेष।
पालक० ना० पु० साग विशेष, पालनेहारा।
पालकजूही० ना० स्त्री० औषधि, वृक्ष विशेष
पालकता० ना० स्त्री० पालना, पालने का काम।
पालकी० ना० स्त्री० शिविका, डोली विशेष।
पालक्य० ना० पु० पालकका साग।
पालन० ना० पु० पोषण, पक्ष, रक्षा, परवरिश।
पालना० ना० पु० हिंडोला, स० क्रि० पालन करना।
पालव० ना० पु० वृक्षकी चोटी वा शाखा।

पाला० ना० पु० शीत, जाड़ा, कोहर, हिम।
पालागन० ना० पु० पायलगना, प्रणाम।
पालाश० ना० पु० ढाक का वृक्ष, गु० हरित।
पालि० ना० स्त्री० मागधी, प्राकृत भाषा जिस को स्याम आदि देशके पण्डित सीखते हैं।
पालिक० ना० पु० पालक, खाट।
पालिकोण० ना० पु० परिधि का कोना।
पालित० गु० पाला गया, रक्षित।
पालिन्द्री० ना० पु० सामा, सूमा, पोसा।
पाली० ना० स्त्री० बङ्गाल देशमें तौलने आदि का यन्त्र, जिस स्थान में पक्षी लड़ते हैं।
पाल्य० ना० पु० पालने के योग्य।
पावक० ना० पु० अग्नि, कसुम्भ।
पावड़ा० ना० पु० पावड़ा।
पावन० ना० पु० पाक, पवित्र, जल।
पावना० स० क्रि० पाना।
पावरी० ना० स्त्री० खड़ाऊं।
पावस० ना० स्त्री० वर्षा ऋतु, बरसात।
पाश० ना० पु० पासा, फास।
पाशा० ना० पु० पासा।
पांशुभव० ना० पु० खारी, लोन।
पाषाण० ना० पु० पाषाणभेद।
पाषण्ड० ना० पु० वेदविरुद्ध, अतिदुरात्मा, कपट वा कपटी।
पाषण्डता० ना० स्त्री० अपनिन्दा, कपट।
पाषण्डी० गु० कपटी, वेदविरुद्धी, दुरात्मा।
पाषाण० ना० पु० पत्थर।
पास० अव्य० समीप, निकट, ना० पु० पाश।
पासपति० ना० पु० वरुण देव।
पासी० ना० स्त्री० फांसी, ना० पु० वरुणदेव, नीचजाति विशेष, फांसी डालने हारा।
पाहन० ना० पु० पत्थर।
पाहनकृमि० ना० पु० एक कीड़ा होता है, जो पत्थर में अपना घर बनाता है।
पाहरू० ना० पु० चौकीदार, पहरुआ।
पाहि० अव्य० दयाभीहना, त्राहि, रक्षाकरो।
पाही० ना० स्त्री० आनगाव में खेती वा आनगाव की आसामी, अव्य० पास।
पाहुन० ना० पु०
पाहुना० ना० पु० } अतिथि, महिमान।
पाहुनी० स्त्री०
पिउ० गु० प्रिय, ना० पु० स्वामी, प्रीतम।
पिक० ना० पु० कोकिल, कोयल।
पिकप्रिय० ना० पु० आम्रवृक्ष, आम।
पिकस्वरी०
पिकध्वनी० } गु० जिसकी का स्वर पिकके समान हो।
पिकवल्लभ० ना० पु० आमवृक्ष।
पिघलना० अ० क्रि० पिघलना, गलना।
पिघलाना० स० क्रि० पिघलाना, गलाना।
पिंगल० ना० पु० छन्द शास्त्र नाम, नाग विशेष, गोला, काच, गु० वर्ण विशेष।
पिंगला० ना० स्त्री० श्वास विशेष जो दहिने पुट में नासिका के प्रकाशित होती है।
पिंगरा० ना० पु० पालना, हिंडोला।
पिचकना० अ० क्रि० दबना, निउड़ना, सिमटना।
पिचकारना० स० क्रि० दबाना, समेटना, कोरना।
पिचकारी० ना० स्त्री० पचूरा, बदमकला, जिस में रंगादि भरके छोड़ते हैं।
पिचपिचा० गु० लिपलिपा, ढीला।
पिच्चिका०
पिचुका० } ना० पु० पिचकारी।
पिचुमन्द० ना० पु० नींबका वृक्ष।
पिछलन० ना० पु० फिसलना, रिसलना।
पिछलना० अ० क्रि० हटना, फिसलना।
पिछला० गु० पिछाड़ी का पीछे का।
पिछलाना० स० क्रि० पीछे करना वा पीछ करना।
पिछवाड़ा० ना० पु०
पिछवाड़ी० स्त्री० } पीछा, पीछेका स्थान।

पिछाड़ी० ना० स्त्री० पीछे के पैर बांधने की रस्सी पश्चात्, पीछे।
पिछान० ना० स्त्री० पहिचान।
पिछाने० गु० जानेहुये, पहिचाने भये।
पिछूत० अव्य० पीछे, उपरान्त ना० पु० घरका पिछवाड़ा।
पिछेत० ना० पु० घरका पिछवाड़ा।
पिछौरा० ना० पु० चद्दर, दुपट्टा।
पिछौरी० ना० स्त्री० छोटा पिछौरा।
पिंजर० } ना० पु० पक्षी आदि रखनेका घर
पिंजरा० } जो काठ वा लोहादिका बनता है।
पिंजल० ना० पु० तीतर, पक्षी।
पिंजूष० ना० पु० कानका मैल।
पिट० ना० पु० नड़कुल।
पिटना० अ० क्रि० मारखाना।
पिटारा० ना० पु० कपड़ा आदि रखने का डब्बा जो तृणादि का होता है।
पिटारिया० } ना० स्त्री० छोटा पिटारा।
पिटारी० }
पिंड० ना० पु० तन, देह, गोलवस्तु, श्राद्ध का गोलाकार अन्न, जो चावलादि के मृतक हेतु देते हैं, चेत्र, खेत, गात्र।
पिंडफला० ना० स्त्री० कड़ुई तोमड़ी।
पिंडाली० ना० स्त्री० फली।
पिंडा० ना० पु० पिण्डा, टुकड़ा, मैनफल।
पिंडारा० ना० पु० लुटेरा, चालाक।
पिंडारक० ना० पु० मैनफल।
पिंडालुका० ना० पु० पिण्डालू।
पिंडालू० ना० पु० फलविशेष, औषधि जड़।
पिंडी० ना० स्त्री० महादेवजी के लिंगका ऊपरी भाग, पिण्डली, बालू से बनाईहुई, छोटी वेदी।
पिंडीमुस्त० ना० पु० नागरमोथा।
पिंडुक० ना० पु० धूप।
पिण्डोल० ना० पु० माटी विशेष, पोतना।
पिण्याक० ना० पु० पीना, खली।
पितर० ना० पु० पूर्वज, पितृ।
पितराई० ना० स्त्री० पितृ के तीनि पीढ़ी के सम्बन्धी, पीतलका मुर्चा।
पितरौ० ना० पु० माता, पिता।
पितरौआ० ना० पु० पितृ पूजने का पात्र।
पितलाना० अ० क्रि० पितराई से बिगड़ना।
पिता० ना० पु० जनक, बाप।
पितामह० ना० पु० ब्रह्मा, पिता का पिता, दादा, आजा।
पितामही० ना० स्त्री० पिताकी माता, दादी।
पितिया० ना० पु० चाचा, बापका भाई।
पितु० ना० पु० पिता, बाप।
पितृ० ना० पु० पिता, देवता, पुरुषा।
पितृघातक० ना० पु० जो पुत्र पिता का बैरी होवे।
पितृपति० ना० पु० धर्मराज।
पितृपक्ष० ना० पु० आश्विन मासका कृष्णपक्ष, कनागत।
पितृव्य० ना० पु० बड़ाचचा, पिता का भाई।
पितृऋण० ना० पु० पिताका ऋण।
पित्त० ना० पु० शरीरकी धातु विशेष, सफरा।
पित्तलोह ना० पु० पीतल।
पित्ता० ना० पु० शरीर का भीतरी अंग जिस में पित्त रहताहै, क्रोध, कलेजा, जहरा।
पित्तिनी० ना० स्त्री० शालपर्णी।
पित्तपापड़ा० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष।
पिधान० ना० पु० आच्छादन, ढकना, पोशाक।
पिन० ना० पु० शरांग, शब्द।
पिनकी० ना० स्त्री० पीनकवाला।
पिनपिनाना० अ० क्रि० टकोरना, टुनटुनाना।
पिनहाना० स० क्रि० पहिराना।
पिनाक० ना० पु० श्रीमहादेवजी का धनुष, बाजा विशेष।
पिनाकी० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
पिन्ना० ना० पु० पीना खली।
पिन्नी० ना० स्त्री० चावल आदि का लड्डू।

पिपासा० ना० स्त्री० प्यास, तृषा।
पिपासित० गु० प्यासा, तृषित।
पिपील० ना० स्त्री० चींटी, रामायणे यथा, जिमि पिपील चह सागर थाहा।
पिपीलक० ना० पु० चींटा।
पिपीतिका० } ना० स्त्री० चींटी।
पिपीलिका० }
पिप्पल० ना० पु० पीपल वृक्ष।
पिप्पली० ना० स्त्री० पीपली।
पीय० ना० पु० प्रिय, प्रीतम, स्वामी, पति।
पियाना० स० क्रि० पिलाना।
पियार० ना० पु० प्यार, लाड़, दुलार।
पियारा० गु० प्यारा, लाड़ला, दुलारा।
पियाल० ना० पु० चिरौंजी, धान वा कोदों की घास।
पियासी० ना० स्त्री० मछली विशेष, तृषित स्त्री।
पिरकी० ना० स्त्री० पुड़िया।
पिराना० अ० क्रि० दुखना, दर्द होना।
पिरोना० स० क्रि० गूथना, तागना, छेदना।
पिलई० ना० स्त्री० तापतिल्ली।
पिलचना० अ० क्रि० चिपटना, लिपटना।
पिलना० स० क्रि० धावाकरना, घुसड़ना, अ० क्रि० पिन्ना।
पिलपिला० गु० चिपचिपा, ढीला, नम्र।
पिलपिलाना० स० क्रि० ढीलाकरना, नम्र करवाना।
पिलपिलाहट० ना० स्त्री० कोमलता, ढीलापन।
पिलाई० ना० स्त्री० पीने के बदले देना वा पीने का काम।
पिलाना० स० क्रि० पानकराना, घुसेड़वाना।
पिलुआ० ना० पु० पिल्लू, कीट।
पिल्ला० ना० पु० कुत्ते का बच्चा।
पिल्ली० ना० स्त्री० कुत्ते की बच्ची।
पिल्लू० ना० पु० कीट विशेष।
पिशाच० ना० पु० प्रेतविशेष, भूत।
पिशाचग्रस्त० गु० जिस को पिशाच लगा है।
पिशाची० ना० स्त्री० प्रेतिनी, पिशाचकी पत्नी।
पिशितोदन० ना० स्त्री० केसर।
पिशुन० गु० दुष्ट, कठोर, चुगल।
पिशुनता० ना० स्त्री० दुष्टता, कठोरता, चुगली।
पिसाई० ना० स्त्री० पीसने का काम वा पैसा।
पिसान० ना० पु० आटा, चून।
पिसाना० स० क्रि० पिसवाना, चुरवाना।
पिसू० ना० पु० पिस्सू, छोटा जन्तु विशेष।
पी० गु० प्रिय, ना० पु० स्वामी, प्रीतम।
पीक० ना० स्त्री० पान के रसयुक्त थूक।
पीच० ना० स्त्री० माड़।
पीचू० ना० पु० फल विशेष।
पीछ० ना० स्त्री० माड़।
पीछा० ना० पु० पिछला भाग, पिछाड़ी पड़ना।
पीछे० अव्य० पश्चात्, निदान।
पीटना० स० क्रि० कूटना, मारना।
पीठ० ना० पु० पृष्ठ, देहका पिछला भाग, आसन विशेष।
पीठसार० ना० पु० अकोल।
पीठा० ना० पु० भोजन विशेष।
पीठी० ना० स्त्री० धोई और पीसीहुई उरद की दाल, पीठ।
पीठीता० ना० पु० पत्रका वृक्ष।
पीड़० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दया।
पीड़क० गु० पीड़ादायक।
पीड़ना० अ० क्रि० पीडित होना, स० क्रि० दण्ड देना।
पीड़ा० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दर्द।
पीड़ाकर० गु० पीड़ादायक।
पीड़ित० गु० दुःखित, क्लेशित, रंजीदह।
पीढ़ा० ना० पु० पलंग, मचिया।
पीढ़ावन्ध० ना० पु० पुस्तकों की आदि का संसार विशेष, दीबाचह।
पीढ़ी० ना० स्त्री० छोटापीढ़ा, वंशकी परम्परा।

पीत० गु० पीला, ना० स्त्री० प्रीति, कुसुम, ना० पु० मलय चन्दन, पियाबासा।
पीतक० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
पीतद्रुमा० ना० स्त्री० दारुहल्दी।
पीतपुष्पा० ना० स्त्री० ककोडी, सिसादा।
पीतपुष्पिका० ना० स्त्री० सहदेवी।
पीतफेनु० ना० पु० रीठा।
पीतम० गु० प्रियतम, मित्र, प्यारा।
पीतरक्त० ना० पु० पद्माक।
पीतरस० ना० पु० हल्दी।
पीतल० ना० पु० धातु विशेष।
पीतला० गु० पीतलका।
पीतसार० ना० पु० मलयचन्दन।
पीता० ना० स्त्री० हल्दी, जूही।
पीताम्बर० ना० पु० रेशमी पीलावस्त्र, श्रीरामचन्द्रजी, श्रीकृष्णचन्द्रजी।
पीन० गु० मोटा, स्थूल, पुष्ट, भारी।
पीनक० ना० स्त्री० अफीम की झौंक।
पीनना० स० क्रि० रुई के अवयवों को पृथक् पृथक् करना।
पीनपयोधर० ना० पु० भारीस्तन, कठोर कुच।
पीनस० ना० पु० नाकका रोग विशेष, ना० स्त्री० पालकी विशेष, नार, विशेष।
पीना० स० क्रि० घुट्कना, पानकरना, ना० पु० खली।
पीपल० ना० पु० वृक्ष विशेष।
पीपला० ना० पु० खड्गकी नोक वा आंख वा मुंह।
पीपलामूल० ना० पु० पिप्पली का मूल।
पीपलि० ना० स्त्री० पिप्पली, पीपरी।
पीपा० ना० पु० मद्यादि रखने के लिये काठका वर्त्तन विशेष।
पीब० ना० स्त्री० मांज, राद।
पीबियाना० अ० क्रि० पकना।
पीबियाहट० ना० स्त्री० पकाव, पकनि।
पीयूष० ना० पु० पेउस, अमृत।
पीर० ना० स्त्री० पीड़ा, दर्द, दुःख।
पीरा० गु० पीला।
पीराई० ना० पु० ढोल बजानेहारा।
पीलपर्णिका० ना० स्त्री० मुरहरी।
पीलाम० ना० पु० रेशमी वस्त्र विशेष।
पीली० ना० स्त्री० मोहर, सुवर्ण, मुद्रा।
पीलीभीत० ना० पु० बांसबरेली के उत्तर नगर विशेष।
पीलु० } ना० पु० वृक्ष विशेष।
पीलू० }
पीवर० गु० मोटा, भारी, स्थूल।
पीसना० स० क्रि० आटाकरना, किचकिचाना, ना० पु० पीसने का अन्न।
पीहर० ना० पु० स्त्री की ससुराल, मैका।
पुं० ना० पु० नर, मनुष्य, पुरुष।
पुंलिंग० ना० पु० पुरुषका चिह्न।
पुंश्चली० ना० स्त्री० पतुरिया, वेश्या।
पुंस० ना० पु० मनुष्य, पुरुष, नर।
पुंसवन० ना० पु० संस्कार विशेष।
पुंस्त्व० ना० पु० पुरुषत्व।
पुकार० ना० स्त्री० गोहारि, हाक।
पुकारना० स० क्रि० गुहराना, टेरना, हांकमारना, बुलाना।
पुखराज० ना० पु० मणि विशेष।
पुंग० ना० पु० समूह, युग्म, पूग।
पुंगव० ना० पु० श्रेष्ठ, बड़ा, उत्तम।
पुंगीफल० ना० पु० पूग, सुपारी।
पुचकारा० } ना० पु० भीति लीपने के लिये
पुचारा० } गीली मिट्टी।
पुच्छ० ना० स्त्री० पूंछ, दुम।
पुच्छक० ना० पु० भेड़ी।
पुच्छल० गु० पूंछवाला जिसके पूंछहो।
पुच्छलतारा० ना० पु० केतु, दुमदारसितारा।
पुछवैया० ना० पु० खोजनेहारा।
पुजवाना० स० क्रि० पूजाकराना।

पुजाना० स० क्रि० भरना, भराना, पूराकरना, पूजा कराना।
पुजापा० ना० पु० पूजा की सामग्री।
पुजारी० } गु० पूजा करने हारा।
पुजारू० }
पुज० ना० पु० समूह, ढर, गज।
पुट० ना० पु० पत्ता, दोना, मिलाव, घुलाव।
पुटरी० } ना० स्त्री० गठरी खाड़।
पुटली० }
पुटी० ना० पु० पत्ते का दोना, अजली।
पुट्ठा० ना० पु० पशु आदि का चूतड़।
पुड़ा० ना० पु० भारी वा बड़ी पुड़िया।
पुड़िया० ना० स्त्री० पत्ते की वा कागज़ की दानी जिस में कुछ औषधि इत्यादि बाधत हैं।
पुड़ी० ना० स्त्री० खाल जिससे ढोल मढ़त हैं।
पुण्डरीक० ना० पु० कमल विशेष, आकाश, बाण, सिंह।
पुण्डरीकाक्ष० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र, नारायण।
पुण्ड्रक० ना० पु० ऊख गन्ना।
पुण्ड्रक० ना० पु० सर्प विशेष सज्ञा विशेष।
पुण्य० ना० पु० सुकृतकर्म, कीर्त, पवित्रदान।
पुण्यग्राम० ना० पु० पूनानगर, पुण्यवत्त समूह।
पुण्यग्रामीय० गु० पूना के सम्बन्धी।
पुण्यजन० ना० पु० निशाचर, राक्षस, रात्रिचरारा त्रिचर कर्बुरोनिकषात्मज, यातुधान पुण्यजनो नैर्ऋतोयातुरक्षसी, इत्यमर।
पुण्यभूमि० ना० स्त्री० आर्य्य वर्त्त देश।
पुण्ययोषिता० ना० स्त्री० वश्या पतुरिया।
पुण्यवान्० ना० पु० सुकृती धर्मात्मा।
पुण्याई० ना० स्त्री० सुकृतकर्म, जो पूर्व किया है, गु० पुण्यात्मा, दाता।
पुण्यात्मा० गु० दाता, सुकृती, धर्मात्मा।
पुतला० ना० पु० तृण वा काठ वा धातु वा मृत्तिका की बनीहुई मूर्त्ति।
पुतली० ना० स्त्री० आंखका तारा, काष्ठादि निर्मित मूर्त्ति, प्रतिमा।
पुताई० ना० स्त्री० पोतने का काम वा पसाव
पुत्तलिका० ना० स्त्री० पुतली।
पुत्र० ना० पु० पूत, लड़का, बेटा।
पुत्रक० ना० पु० दाना, सुगन्धित, पाथा।
पुत्रजीवी० ना० स्त्री० जीवापति, पतिजिया।
पुत्रिका० ना० स्त्री० कन्या, बेटी, पुतली।
पुत्री० ना० स्त्री० कन्या, बेटी, आंखका तारा।
पुन० अव्य० फेर, फिरि बहुरि।
पुन पुन० अव्य० फेर फर, पुनि पुनि।
पुनराय० ना० पु० दूसरीबार।
पुनरारम्भ० ना० पु० दूसरीबार आरम्भकरना।
पुनरुक्ति० ना० स्त्री० पुनः कहना, दुबारा, फिर से कहना।
पुनरुत्थान० ना० पु० फिरसे उठना।
पुनर्जन्म० ना० पु० दूसरा जन्म, द्वितीयजन्म।
पुनर्नवा० ना० पु० पौधा विशेष।
पुनर्नव० ना० पु० नख, नाखून, नह।
पुनर्वसु० ना० पु० सातवां नक्षत्र।
पुनि० अव्य० फिर, पुनि।
पुनिपुनि० अव्य० पुनः पुनः।
पुनीत० गु० निर्मल, पवित्र पाक।
पुमान्० ना० पु० नर, पुरुष, मनुज।
पुर० ना० पु० नगर वा ग्राम दैत्य विशेष।
पुरइन० ना० स्त्री० कमल बलि।
पुर सर० ना० पु० अग्रगामी पहला।
पुरट० ना० पु० सुवर्ण, स्वर्ण, सोना।
पुरनिया० गु० प्राचीन, बूढ़ा, मगध देश मे नगर।
पुरन्दर० ना० पु० इन्द्र।
पुरवासी० गु० नगर का बसने हारा।
पुरविला० } ना० पु० पिछला वा अगला
पुरविला० } जन्म।
पुरवाई० } ना० स्त्री० पूर्वकी पवन।
पुरवैया० }

पुरश्चरण० ना० पु० जपहोमादिकेपूर्णताकाक्रम।
पुरस्कार० ना० पु० सत्कार, आदर, सम्मान।
पुरा० ना० पु० बड़ागार, पहिले।
पुराकृत० ना० पु० पिछले जन्मका कर्म।
पुराण० ना० पु० इतिहास विद्या जो व्यास रचित है।
पुराणपुरुष० ना० पु० श्री भगवान्।
पुरातन० } ना० पु० प्राचीन, पिछला, पुराना।
पुरातम० }
पुराना० स० क्रि० भरदेना, सिंचवाना, कढ़वाना, गु० कालीन, प्राचीन, जीर्ण।
पुरारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
पुरी० ना० स्त्री० नगर, गाव वा अयोध्यादि सात नगर विशेष।
पुरीष० ना० पु० मल, विट्, मूत।
पुरुखा० ना० पु० बुड्ढा, बूढ़ा।
पुरुखे० ना० पु० अगले पुरुष।
पुरुष० ना० पु० मनुष्य, नर।
पुरुषत्व० ना० पु० मनुष्यता, मनुसाई।
पुरुषा० ना० पु० प्राचीन वा पिछले लोग।
पुरुषाधम० गु० जो मनुष्यों में निन्दितहोवे।
पुरुषान० ना० पु० पीढ़िया, सास, पुरखे, पुरुष का बहुवचन।
पुरुषारथ० ना० पु० पुरुषार्थ।
पुरुषोत्तम० ना० पु० मनुष्यों में जो श्रेष्ठ वा प्रधान श्रीविष्णु, नारायण।
पुरुहूत० ना० पु० इन्द्र।
पुरैन० ना० स्त्री० कमलवल्लि।
पुरोडास० ना० पु० यज्ञका द्रव्य, रोटी, यज्ञ का शेष भाग।
पुरोधा० } ना० पु० कुलगुरु, वंश पूज्य ब्राह्मण।
पुरोहित० }
पुरोहितानी० ना० स्त्री० पुरोहित की स्त्री।
पुर्खा० ना० पु० पुरातन, बुड्ढा।
पुर्चक० ना० स्त्री० दल, बढ़ावा।
पुर्वा० ना० स्त्री० पूर्वका पवन।
पुर्वाई० ना० स्त्री० पूर्वकी पवन।
पुर्वाना० स० क्रि० भरवाना, पूरा करना।
पुरवाई० ना० स्त्री० पुरवाई।
पुर्सा० ना० पु० चारहाथकी माप।
पुल० ना० पु० सेतु, बाध यह शब्द फारसी का है।
पुलक० } ना० स्त्री० रोमाच, आनन्द वा शोक में मग्न होना।
पुलकावलि० }
पुलकावली० }
पुलकित० गु० हर्षित, रोमाञ्चित।
पुलपुला० गु० पिलपिला।
पुलपुलाना० अ० क्रि० डरना, पिलपिलाना।
पुलपुलाहट० ना० स्त्री० डर, भय, नरमी।
पुलस्ति० ना० पु० मुनिविशेष, रावणके पितामह।
पुलहाना० स० क्रि० मनाना, राजीकरना।
पुलाक० ना० पु० } मासौदन भोजन विशेष यह शब्द फारसी का है।
पुलाव० }
पुलिक० ना० पु० मुख्य साग।
पुलिन० ना० पु० बालूका टापू, नदी में किनारा।
पुलिन्द० ना० पु० म्लेच्छ भेद।
पुलिन्दा० ना० पु० बस्ता, फारसी शब्द है।
पुलोमजा० ना० स्त्री० इन्द्राणी, देवरानी, पुलोमजाशची इन्द्राणी इत्यमर।
पुँलिङ्ग० ना० पु० पुलिंग, नर, मुजक्कर।
पुचाल० ना० पु० पिआल।
पुष्कर० ना० पु० आकाश, जल, कमल, तालाब, हाथी की सूड़, तीर्थ विशेष।
पुष्करजटा० } ना० पु० पुष्करमूल।
पुष्कराह्व० }
पुष्कराह्वय० ना० पु० सारस।
पुष्करिणी० ना० स्त्री० जलाशय, तलैया।
पुष्कल० ना० पु० भरतजी का पुत्र, पूर्ण, श्रेष्ठ।
पुष्ट० गु० पाला, स्थूल, मोटा, कड़ा।

पुष्टई० } गु० पुष्टि कर्त्ता औषधि वा भाज
पुष्टक० } नादि।

पुष्टता० ना० स्त्री० मोटाई, स्थूलता, पायदारी।

पुष्टि० ना० स्त्री० पुष्टता, पुत्रजीवा, चन्द्रकला विशेषका नाम।

पुष्टिकर० गु० पुष्टक।

पुष्प० ना० पु० फूल, प्रसून।

पुष्पक० ना० पु० कुबेरका विमान।

पुष्पगन्धा० ना० स्त्री० जूही।

पुष्पचाप० ना० पु० कामदेव, मदन।

पुष्पजम्बुक० ना० पु० केतकी।

पुष्पधनु० ना० पु० कामदेव, मनोज।

पुष्पनीलक० ना० पु० सभालू।

पुष्पपात्र० ना० पु० फूलका आधार।

पुष्पफला० ना० स्त्री० कुम्हड़ा।

पुष्पमृत्यु० ना० पु० नड़कुल।

पुष्परस० ना० पु० फूल जिस में मधु व अमृत निकलता है, फूलकारस।

पुष्पवती० ना० स्त्री० रजस्वला, कपड़ा से।

पुष्पसंवरी० ना० स्त्री० कलिहारी।

पुष्पाञ्जलि० ना० स्त्री० फूलों से भरी हुई अजली।

पुष्पित० गु० फूलाहुआ वृक्ष।

पुष्पी० ना० स्त्री० ऊषा।

पुष्पेश० ना० पु० माधवा।

पुष्य० ना० पु० आठवा नक्षत्र।

पुस्तक० ना० पु० ग्रन्थ, पोथा, किताब।

पुहमि० } ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
पुहमी० }

पूआ० ना० पु० मीठापूरी।

पूं० ना० पु० पादने का शब्द।

पूगी० ना० स्त्री० बासली विशेष।

पूछ० ना० स्त्री० पुच्छ, दुम।

पूछना० स० क्रि० पूछना पूछना।

पूछार० गु० पुच्छवान् पूछवाला।

पूंजी० ना० स्त्री० मूल, धन, सम्पति।

पूग० ना० पु० समूह, सुपारी वा सुपारीका वृक्ष।

पूगीफल० सुपारी।

पूछ० ना० पु० खोज।

पूछना० स० क्रि० खोजना, प्रश्नकरना।

पूछी० ना० स्त्री० मच्छीकी पूछ।

पूजक० गु० पूजा करनहार।

पूजन० ना० पु० पूजा का व्यापार।

पूजना० स० क्रि० अर्चना, भजना, ध्याना, अ० क्रि० भरना, पूरा होना।

पूजनीय० } गु० पूजा के योग्य, मान्य।
पूजमान० }

पूजा० ना० स्त्री० अर्चा, आदर, सत्कार।

पूजित० गु० जो पूजागया।

पूज्य० } गु० पूजाके योग्य मान्य।
पूज्यमान० }

पूठ० ना० पु० पुट्ठा।

पूठा० ना० पु० पुस्तक का गत्ता।

पूड़ा० ना० पु० बेसनका पकवान विशेष।

पूड़ी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।

पूणी० ना० स्त्री० रुई जो कातने के लिये बनाते हैं।

पूत० ना० पु० पुत्र, पवित्र।

पूतना० ना० स्त्री० हड़, निशाचरी विशेष।

पूतला० ना० पु० पुतला।

पूतरी० } ना० स्त्री० पुतली।
पूतली० }

पूति० ना० स्त्री० जमादि, पवित्र, खोग, अवयव।

पूतिचर्चिका० ना० स्त्री० बबरी, पौधा।

पूतिफला० ना० स्त्री० बाकुची।

पूनियो० ना० स्त्री० पूर्णमासी।

पूनी० ना० स्त्री० पोनी, पूणी।

पूनो० ना० स्त्री० पूर्णमासी।

पूप० ना० पु० पुआ।

पूय० ना० पु० राद, माज।

पूर० गु० सब, कुछ भरा, प्रवाह, धारा।
पूरक० गु० पूरा करनेहारा, पूरा होने वाला, पु० बिजौरा, श्वास विशेष को जिस क्रिया से खेंचते हैं।
पूरण० गु० भरा, पूरा, सब, सारा।
पूरणा० } ना० स्त्री० चन्द्रमा की कला
पूरणामृता० } विशेष।
पूरना० स० क्रि० भरना, पूरा करना, फैलाना।
पूरब० ना० पु० पूर्व।
पूरा० गु० पूरण, सब, समस्त।
पूराई० ना० स्त्री० भराई, पूरणता।
पूरिया० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
पूरी० ना० स्त्री० पक्वान्न विशेष।
पूर्ण० गु० पूरण, समस्त, सारा, भरा।
पूर्णज्या० ना० स्त्री० पुरारोदा, सूधी रेखा।
पूर्णता० ना० स्त्री० पूरणता, पुराई।
पूर्णपात्र० ना० पु० पात्र विशेष, जिस में २५६ मुष्टिका चावल भरके संकल्प करें, गु० पात्र भरपूर, पूरापात्र।
पूर्णभूत० ना० पु० समस्त बीतगया।
पूर्णमासी० ना० स्त्री० शुक्लपक्ष की समाप्ति की तिथि, पूनो।
पूर्णाहुति० ना० स्त्री० होम पूरा होने पर जो आहुति देते हैं उसका नाम।
पूर्णिमा० ना० स्त्री० पूर्णमासी।
पूर्व० गु० पहला, पिछला, अगला, ना० पु० जिस दिशा में सूर्योदय होता है।
पूर्वक० गु० विस्तार युत, भराहुआ, साथ।
पूर्वकृत० ना० पु० पहले का काम।
पूर्वकृतकर्म्म० ना० पु० पूर्व जन्म के किये कर्म।
पूर्वज० ना० पु० अग्रज, बड़ाभाई।
पूर्वयाम० ना० पु० पहला पहर।
पूर्वदेश० ना० पु० मध्य देश के पूर्व का देश। वा निज स्थान से पूर्व का देश।
पूर्वपक्ष० ना० पु० पहला पक्ष चरचा करने में जो स्थापन वा निषेध किया जाता है।
पूर्ववत्० अव्य० उसी प्रकार, वैसाही।
पूर्ववायु० ना० पु० पूर्वका पवन, पुरवाई।
पूर्वा० ना० पु० पुरवा, छोटा गाव।
पूर्वाफाल्गुणी० ना० स्त्री० ग्यारहवा नक्षत्र।
पूर्वाभाद्रपद० ना० पु० पच्चीसवा नक्षत्र।
पूर्वाभिमुख० ना० पु० पूर्व दिशाके सामने।
पूर्वार्द्ध० गु० पहिला, आधा।
पूर्वाषाढ़० ना० स्त्री० बीसवा नक्षत्र।
पूर्वाह्ण० ना० पु० दिनका पहला भाग।
पूर्वी० गु० पूर्व देशीय ना० स्त्री० रागिनीविशेष।
पूर्वोक्त० गु० प्रथम कहा है, प्रथम कहाहुआ।
पूला० ना० पु० } तृण वा अन्न की छोटी २
पूली० ना० स्त्री० } गट्ठी।
पूषण० ना० पु० सूर्य्य।
पूषा० ना० स्त्री० सूर्य्य, चन्द्रकला विशेष, श्वास विशेष, जो दक्षिण कान में प्रकाशित है।
पूस० ना० पु० पौष मास, दशवा मास।
पृच्छा० ना० पु० जिज्ञासा, प्रश्न।
पृतना० ना० स्त्री० सैन्य, फौज, दल।
पृथक्० अव्य० भिन्न, अलग।
पृथक्करण० ना० पु० अलग २ करना।
पृथक्छद० ना० पु० असवार।
पृथक्त्व० ना० पु० भिन्नता, जुदाई।
पृथक्पर्णी० ना० स्त्री० सुरहरी।
पृथग० अव्य० पृथक्।
पृथग्पृथग० अव्य० अलग २ जुदा २।
पृथवी० ना० स्त्री० पृथिवी।
पृथवीनाथ० ना० पु० राजा, बादशाह।
पृथिवी० ना० स्त्री० धरती, जमीन।
पृथु० गु० बड़ा, भारी, ना० पु० राजा विशेष।
पृथुरोमा० ना० स्त्री० मछली।
पृथुल० गु० बड़ा, भारी, मोटा, स्थूल।
पृथुशिरा० ना० पु० स्त्रीनारूप।

पृथूदर० ना० पु० मेढ़ा, भेंड़ा।
पृथ्वाक० ना० पु० पुनर्नवा।
पृथ्वी० ना० स्त्री० धरती।
पृथ्वीका० ना० स्त्री० कलौंजी।
पृथ्वीनाथ०, पृथ्वीपति०, पृथ्वीपाल० } ना० पु० राजा, बादशाह।
पृष्ट० गु० पूछागया।
पृष्ठ० ना० पु० पीठ, पिछलाभाग, पत्रका एक ओर।
पृष्टा० ना० पु० पित्तपापड़ा, पूछनेवाला।
पृष्ठास्थि० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी।
पृष्ठि० ना० पु० पीठ, पृष्ठ।
पृष्ठिस्थोरि० ना० पु० घोड़ा।
पेई० ना० स्त्री० पिटारी।
पेंग० ना० पु० झूलेका हिलाना, पक्षी विशेष।
पेंगना० अ० क्रि० झूलेको बढ़ाकर झूलना।
पेंठ० ना० स्त्री० हाट, मण्डी, बाज़ार।
पेंड़० ना० स्त्री० डग, चलावा, टीला, वृक्ष।
पेंदा० ना० पु०, पेंदी० ना० स्त्री० } तला, निचानका खण्ड।
पेक्षक० गु० यथोचित दूत भेजनेवाला।
पेखना० ना० पु० स्वांग, खिलौना, स्त्रियों का छल, स० क्रि० देखना।
पेखनिया० ना० पु० स्वांगी।
पेखित० गु० भेजागया।
पेच० ना० पु० मरोरी, घुमाव, फेर।
पेचक०, पेचा० } ना० पु० उलूक।
पेट० ना० पु० उदर, गर्भ।
पेटक० ना० पु० पिटारा।
पेटार्थी०, पेटार्थू० } गु० पेटपाल, खाऊ, भक्षक।
पेटिया० ना० स्त्री० प्रतिदिनका खाना, सीधा।
पेटी० ना० स्त्री० कमरबन्द, पेटका बन्धन, पिटारी, सन्दूक, छाती।
पेटू० गु० पेटार्थी।
पेटीखा० ना० पु० पेटचलने का रोग।
पेठा० ना० पु० लौकी वा कद्दू, वा कुम्हड़ा विशेष।
पेड़० ना० पु० वृक्ष, बूटा।
पेड़ा० ना० पु० मिठाई विशेष, लोई।
पेड़ी० ना० स्त्री० पेड़ा० सुपारी, नील आदि का वृक्ष जो एकबार जो कटगया, और पेड़का स्तम्भ।
पेडू० ना० पु० नाभिके नीचे का अंग।
पेम० ना० पु० प्रेम।
पेमी० ना० पु० प्रेमी।
पेय० ना० पु० पानी, दूध, शरबत, गु० जो पीने के योग्य हो।
पेरना० स० क्रि० प्रेरणा, कोल्हू में कुचल के रस वा तेल निकालना।
पेरू० ना० पु० कुक्कुट विशेष।
पेलड़०, पेलड़ा० } ना० पु० आंड़, कौड़ी, कोंच।
पेलन० ना० पु० पालन, झूलना।
पेलना० स० क्रि० ठेलना, रेलना, टांसना, दबाना, भरना, घुसेड़ना, अ० क्रि० पिलजाना, घुसड़जाना।
पेला० ना० पु० आड़, दोष, उपद्रव, टेकन।
पेलू० ना० पु० ढकेलू, घुसेड़ू।
पेवड़ी० ना० स्त्री० पीतरंग विशेष।
पेवसी० ना० स्त्री० पीयूष जो दूध फटे को पकाते हैं।
पेषण० ना० पु० दलेती, किसी वस्तु को दो पत्थरों से घिसना।
पेषणीय० गु० पीसने के योग्य।
पै० ना० पु० पय, दूध, जल, ना० स्त्री० दोष, अव्य० ऊपर, तौभी, परन्तु।
पैंचना० स० क्रि० पछोड़ना, फटकना, बदलना।
पैंचा० ना० पु० बदला, पलटा।
पैंजनी० ना० स्त्री० पांवका गहना विशेष।

पैंड़० } नाo पुo मार्ग, बाट वा बाट देखना।
पैंड़ा० }
पैंतालीस० गु० चालीस और पांच, ४५।
पैंतीस० गु० तीस और पांच, ३५।
पैंसठ० गु० साठ और पांच, ६५।
पैकड़ा० ना पु० } बेड़ी, पैर की गहना
पैकड़ी० ना० स्त्री } विशेष।
पैगू० ना० पु० ब्रह्मा देशका प्रदेश।
पैज० ना० स्त्री० प्रतिज्ञा, प्रण, पराक्रम।
पैठ० ना० पु० हुण्डी की पतिया, पहुँच, प्रवेश।
पैठना० अ० क्रि० घुसना, धसना।
पैठालना० स० क्रि० प्रवेश कराना, घुसाना।
पैड़० ना० पु० पावोंका चिह्न।
पैड़ा० ना० पु० ऊंची खड़ाऊं।
पैड़ी० ना० स्त्री० सीढ़ी।
पैतला० गु० उथला, छिछला।
पैतृक० गु० बपौती, पूर्व जनों से जो धन वा व्यवहार प्राप्त हो।
पैदल० अव्य० पांवों से ना० पु० पियादे।
पैन० ना० पु० नाली, पोखरा।
पैना० ना० पु० पशु हांकने का अस्त्र गु० तीव, तीक्ष्ण, तेज।
पैनाना० स० क्रि० तीक्ष्ण करना, बाढ़ देना।
पैनाला० ना० पु० परनाला, मुहरी।
पैया० ना० पु० पहिया, चक्र।
पैर० ना० पु० पांव, खलिहान, गु० जो पैरने के योग्य है।
पैरना० अ० क्रि० हेलना, तिरना, पवरना।
पैराई० ना० स्त्री० पैरने का काम।
पैराक० ना० पु० पैरनेहारा।
पैराकी० ना० स्त्री० पैरनेहारी।
पैराना० स० क्रि० तैराना, हिलाना।
पैराव० गु० जो पैरने के योग्य है।
पैरी० ना० स्त्री० पांवका गहना विशेष।
पैला० ना० पु० अन्न मापने का पात्र, ढला।
पैशुन्य० ना० पु० दुष्टता, निठुराई, चुगली।

पैसा० ना० पु० तांबे का मुद्रा।
पैसार० ना० पु० पैठ, पहुँच, प्रवेश।
पैसारना० स० क्रि० पैठाना, पहुँचाना, प्रवेश कराना, घुसेड़ना।
पोआ० ना० पु० पोना, दूधपीनेहारा बच्चा, सांप का बच्चा थोड़े दिनों का।
पोआना० स० क्रि० धमाना।
पोईस० अव्य० अरे, बचो, पोशश शुद्धहै, फ़ारसी शब्द है।
पोंकना० अ० क्रि० पेट चलना।
पोंका० ना० पु० कीड़ा विशेष।
पोंगा० ना० पु० उल्लू, मूर्ख, ढीला विशेष, पोर, गु० छूछा।
पोंगी० ना० स्त्री० नली, छूछी, खोखली, मुरली।
पोंछन० ना० पु० झाड़ना, गूदड़।
पोंछना० स० क्रि० झाड़ना, स्वच्छ करना।
पोखना० स० क्रि० पालना।
पोखर० } ना० पु० जल, तड़ाग, तालाब।
पोखरा० }
पोच० गु० नीच, लघ, यह शब्द फ़ारसीकाहै।
पोट० ना० स्त्री० मोट, पाठ, गठरी।
पोटला० ना० पु० बड़ी गठरी।
पोटली० ना० स्त्री० गठरी, ला‍ई विशेष।
पोटा० ना० पु० पेटा, पलक, पक्षी का झोंझ, झोंझ, रेंट गु० पोटनेहारा।
पोढ़ा० गु० कड़ा, बलवान, ठोस, दृढ़।
पोढ़ाई० ना० स्त्री० कड़ापन, ठोसाई, दृढ़ता।
पोत० ना० स्त्री० कांचकी छदम गुरिया, नाव, स्वभाव, प्रकृति, बच्चा, कपड़ा।
पोथकी० ना० स्त्री० पोथ, बेलि।
पोतड़ा० ना० पु० छोटे लड़कों का बिछौना, गुदड़ी।
पोतड़ी० ना० स्त्री० सेरी, हल।
पोतना० स० क्रि० लीपना, परपोतना, ना० पु० बिछौर, मृत्तिका विशेष।

पोता० ना० पु० पुत्रका पुत्र, पौत्र ।
पोती० ना० स्त्री० पुत्रकी कन्या, पौत्री ।
पोथा० ना० पु० बड़ा ग्रन्थ ।
पोथी० ना० स्त्री० छोटा ग्रन्थ ।
पोदना० ना० पु० पक्षी विशेष ।
पोदनी० ना० स्त्री० पोदना की स्त्री ।
पोना० स० क्रि० पकाना, पिराना, ना० पु० झरना ।
पोनी० ना० स्त्री० पूर्णी ।
पोपनी० ना० पु० बाजा विशेष ।
पोपला० गु० दांतों से रहित ।
पोमचा० ना० पु० जय नगरी, वस्त्र विशेष ।
पोय० ना० स्त्री० साग विशेष, बेलि विशेष ।
पोया० ना० पु० साग विशेष ।
पोर० ना० पु० दो गांठियों का मध्यभाग ।
पोरी० ना० स्त्री० बासकीगांठ, टोंटा ।
पोला० गु० छूछा, कोमल, खोखला, खाली ।
पोली० ना० स्त्री० छूछी, खोखली, अनाड़ी ।
पोषक० ना० पु० पालनेहारा ।
पोषण० ना० पु० पालन, पालना ।
पोषना० स० क्रि० पालना ।
पोषित० गु० पालागया, पालाहुआ ।
पोष्य० गु० पालने के योग्य ।
पोष्यपुत्र० ना० पु० ले पालक ।
पोष्यवर्ग० ना० पु० कुटुम्ब ।
पोसना० स० क्रि० पालना ।
पोसे० क्रि० पाले ।
पोह० ना० स्त्री० पार, तड़का, भोर ।
पोहना० स० क्रि० पिरोना, बेड़ा बनाना ।
पोत्री० ना० पु० सुअर, शूकर ।
पौ० ना० पु० जल पिलाने की शाला, पासेमेंका एका ।
पौंड़ा० ना० पु० मोटा इक्षु विशेष गन्ना ।
पौंरि० ना० स्त्री० ड्योढ़ी ।
पौरिया० ना० पु० ड्योढ़ीवान, द्वारपाल ।
पौढ़ना० स० क्रि० लेटना, सोना ।
पौढ़ा० गु० पोढ़ा, लेटाहुआ ।
पौढ़ाई० ना० स्त्री० पोढ़ाई, लेटास ।
पौण्ड्रक० ना० पु० ऊख, गन्ना, पौंड़ा ।
पौत्तलिक० ना० पु० मूर्तिपूजक ।
पौत्र० ना० पु० पुत्रका पुत्र, पोता ।
पौत्री० ना० स्त्री० पुत्रका कन्या, पोती ।
पौधा० ना० पु० वृक्ष जो तरुण हैं, बिरवा एक वर्षका ।
पौन० गु० तीन चौथाई, ¾ ना० पु० पवन ।
पौनचक्र ना० पु० बैंडरा, प्रवाग्रन्थि ।
पौना० ना० पु० झरना, पौनका पहाड़ा ।
पौने० गु० चतुर्थांश रहित ।
पौर० ना० स्त्री० फाटक, द्वार ।
पौराणिक० ना० पु० श्रीवेदव्यास, सूतजी, पुराण का वक्ता ।
पौरी० ना० स्त्री० पौंर ।
पौरुष० ना० पु० मनुष्यत्व, बल ।
पौरोहित्य० ना० स्त्री० पुरोहिताई ।
पौलस्त्य० ना० पु० रावण, कुबेर ।
पौलिया० ना० स्त्री० पौरिया, छोटा खड़ाऊ ।
पौली० ना० स्त्री० पौरि, खड़ाऊ ।
पौलोमी० ना० स्त्री० इन्द्राणी, देवरानी ।
पौवा० ना० पु० सेर का चौथा भाग ।
पौष० ना० पु० नवामास, पूस ।
पौष्कराह्वय० ना० पु० पुष्करमूल ।
पौष्टिक० गु० पुष्टिकारक ।
पौसरा० ना० पु० पियाऊ ।
पौह० ना० पु० जल पिलाने का स्थान ।
पौहदा० ना० पु० पौसा ।
पौहा० ना० पु० गाय बलादि पशु ।
प्यार० ना० पु० प्रेम, दुलार ।
प्यारा० गु० प्रिय, दुलारा, लाड़िला ।
प्यारी० ना० स्त्री० प्रिया, दुलारी, लाड़िली ।
प्यावना० स० क्रि० पिलाना ।
प्यास० ना० स्त्री० तृषा ।

प्यासा० } गु० तृषामत, तृषित।
प्यासी०

प्यौसार० } ना० पु० पतिका घर स्त्री० सप्तु
प्यौहर० } राल।

प्र० अव्य० जिस शब्दके आदिमें यह मिलितहो उसका अर्थ अभा औ दभा अधिकहै।

प्रकट० } गु० प्रकट, प्रसिद्ध।
प्रकटित०

प्रकम्पन० ना० पु० आंधी झकड़।

प्रकर० ना० पु० समूह, गराह।

प्रकरण० ना० पु० एक विषयका प्रस्ताव, पाठम विश्राम स्थान अध्याय, समूह।

प्रकाम० ना० पु० सिद्धि विशेष।

प्रकार० ना० पु० रीति तरह विशेष, भेद, सादृश्य, डाल।

प्रकारान्तर० गु० दूसरे प्रकार दूसरा प्रकार।

प्रकाश० ना० पु० ज्योति उजाला रोशनी गु० प्रकट।

प्रकाशक० ना० पु० प्रकाशकर्ता।

प्रकाशवान्० गु० प्रकाशयुत, प्रकाशित रोशन।

प्रकाशित० गु० प्रकाश कियागया, रोशन।

प्रकाश्य० गु० प्रकाशके योग्य।

प्रकीर्ण० ना० पु० चौरी अध्याय गु० प्रकट व्याप्त।

प्रकीर्त्तन० ना० पु० कथन, भाषण।

प्रकीर्त्तित० गु० कथित, भाषित।

प्रकृत० ना० स्त्री० स्वभाव, गुण गु० जो बनाया गया।

प्रकृतार्थ० ना० पु० प्रकृतका जो अर्थ।

प्रकृति ना० स्त्री० स्वभाव मूल, माया, संसार।

प्रकृष्ट० गु० उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर अच्छा।

प्रक्रम० ना० पु० चलना, गमन, अवसर।

प्रक्रिया० ना० स्त्री० व्याकरण की प्रभ प्रकार, सामर्थ्य।

प्रखर० ना० पु० मालर गु० तीक्ष्ण।

प्रख्यात० गु० प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध, प्रसन्न, आनंदित।

प्रगट० गु० व्यक्त, साक्षात् प्रत्यक्ष, प्रकाश, प्रसिद्ध।

प्रगटना० अ० क्रि० प्रकट होना।

प्रगल्भ० गु० शास्त्र में निडर, अभय योद्धा, प्रतिभावान्, सामर्थी।

प्रगाढ० ना० पु० पीड़ा, तपस्या, गु० बहुत गाढ़ा, कठिन।

प्रग्रह० ना० पु० किरवाली।

प्रघट० गु० प्रगट।

प्रघटी० ना० स्त्री० सुवर्ण वा रौप्य के लिये सांचा।

प्रचण्ड० गु० बलवान् तेज, असह्य, भयङ्कर, क्रोधी।

प्रचलित० गु० जो चलताहै, जारी।

प्रचार० ना० पु० विस्तार, फैलाव, चलना, प्रकाश जारी होना, प्रकटता।

प्रचारक० गु० प्रचार करनेहारा।

प्रचारना० स० क्रि० चलाना, बाढ़ देना उमड़ाना।

प्रचारित० गु० विस्तारित चलित और प्रकाशित।

प्रचुर० गु० बहुत।

प्रचेता० ना० पु० वरुण देवता।

प्रचोदित० गु० प्रेरित, जो आज्ञा दियागया।

प्रच्छन्न० ना० पु० चोर, खिड़की, गु० गुप्त, आच्छादित।

प्रजरण० ना० पु० जरन, जलन।

प्रजरना० अ० क्रि० जलना, बरना।

प्रजरित० गु० ज्वलित जलता भया।

प्रजा० ना० स्त्री० सन्तान, सेवक, राज्य के बासी रैयत।

प्रजाता० ना० स्त्री० जननी, जच्चा।

प्रजापति० ना० पु० राजा, ब्रह्मा, दक्ष, कुम्हार।

प्रजारक० गु० जलानेहारा।

प्रजारण० ना० पु० जलावन, दहकावन।

प्रजारना० स० क्रि० जलाना, दहकाना।
प्रजाशन० गु० प्रजाभक्षक।
प्रजेश० ना० पु० राजा, ब्रह्मा, कुम्हार।
प्रज्वलता० ना० स्त्री० ज्योति, उज्ज्वलता और जलाव।
प्रज्वलित० गु० ज्योतिष्मान्, उज्ज्वल, जला।
प्रण० ना० पु० प्रतिज्ञा, दावा।
प्रणऊं० क्रि० प्रणाम करों।
प्रणत० गु० अतिदीन, अतिनम्र, शरणागत।
प्रणति० ना० स्त्री० नमस्कार, प्रणाम।
प्रणय० ना० स्त्री० प्रीति, प्रेम, मुक्ति, भरोसा, अपनापन।
प्रणव० ना० पु० अक्षर, मन्त्रराज, ओंकार।
प्रणवो० क्रि० प्रणाम करो।
प्रणाम० पु० नमस्कार, सलाम।
प्रणाली० ना० स्त्री० नाली।
प्रणिधान० ना० पु० मनोयोग, उद्योग।
प्रणिपात० ना० पु० दण्डवत्, प्रणाम।
प्रणी० गु० प्रण करनेहारा, मनचला।
प्रतन० गु० पुराना, प्रत्न।
प्रताप० ना० पु० ऐश्वर्य्य, तेज, सूरमापन।
प्रतापवान्०, प्रतापी० } गु० तेजवान्, तेजस्वी, तेजधारी।
प्रतारक० ना० पु० ठग, वंचक, वंचर।
प्रतारण०, प्रतारणा० } ना० गु० वंचन, ठगई।
प्रतारित० गु० ठगाया, वंचित।
प्रति० ना० स्त्री० नकल, अव्य० यह शब्द जिस शब्द के आदि में होता है, उसका अर्थ कभी फेर कभी सते कभी एक एक।
प्रतिउपकार० ना० पु० प्रत्युपकार, भलाई।
प्रतिकार० ना० पु० बदला, पलटा।
प्रतिकूल० गु० विरुद्ध, उलटा, प्रतिपक्ष।
प्रतिग्रह० ना० पु० दान, जो ब्राह्मण के दानग्रहण या ऐसा दान लेना, महापात्र।
प्रतिघ स० ना० पु० मारण, व।
प्रतिच्छाया० ना० स्त्री० प्रतिबिम्ब, सदृश, मूर्त्ति।
प्रतिछाहं० ना० स्त्री० प्रतिबिम्ब, छाया।
प्रतिदान० ना० पु० धरोहर, फेरदेना।
प्रतिदिन० अव्य० दिन दिन।
प्रतिधा० अव्य० बार, बार, हरबार, हरदफा।
प्रतिनिधि० ना० स्त्री० सदृश, तदनुरूप प्रतिभू, पेशकार।
प्रतिपत्० ना० स्त्री० परेवा, पक्षकी प्रथमतिथि।
प्रतिपत्ति० ना० स्त्री० यश, ज्ञान।
प्रतिपद० ना० स्त्री० प्रतिपत्, परेवा।
प्रतिलिका० ना० स्त्री० गन्धपसारन।
प्रतिपन्न० गु० जानागया, निश्चित।
प्रतिपक्ष० ना० पु०, प्रतिपक्षी० स्त्री० } शत्रु, वैरी।
प्रतिपादन० ना० पु० दान, उच्चारना।
प्रतिपादित० गु० जिसका प्रतिपादन होगया।
प्रतिपाद्य० गु० बोध्य, वर्णन के योग्य।
प्रतिपाल० ना० पु० पालन, पोषण।
प्रतिपालक० ना० पु० पालन करनेहारा।
प्रतिपालन० ना० पु० प्रतिपाल, पोषण।
प्रतिपालना० स० क्रि० पालन करना, पोषना।
प्रतिप्रसव० ना० पु० जो बात और बात से सिद्ध हो।
प्रतिफल० ना० पु० सम्पूर्ण फल, इनआम।
प्रतिबन्ध० ना० पु० ज्ञान का विनाशक।
प्रतिबन्धक० ना० पु० बाधक, रोकनेहारा, अटकानेवाला।
प्रतिभट० ना० पु० समान योद्धा, तुल्यवीर।
प्रतिभा० ना० स्त्री० बुद्धि, ज्योति, समझ।
प्रतिभाग० ना० पु० अंश, अंशपर, हरहिस्सह।
प्रतिभू० ना० पु० मनौती, जामिन, दरमियानी।
प्रतिमा० ना० स्त्री० मूर्त्ति, तसवीर, पुतला।
प्रतिमास० ना० पु० महीने, २ मास, २, हरमाह।
प्रतिमूर० ना० पु० परछाहीं, छाया, प्रतिबिंब।

प्रतिमूर्त्ति० ना० स्त्री० एक प्रतिमा के तुल्य द्वितीय।
प्रतियोग० ना० पु० शत्रुता, विरोध, वैर।
प्रतियोगी० गु० शत्रु, वैरी, विरोधी।
प्रतिरूप० ना० पु० सदश, चित्र, मूर्त्ति।
प्रतिरोध० ना० पु० अटकावट, रोक।
प्रतिरोधक० ना० पु० चोर, रोकनेवाला।
प्रतिलोम० गु० वाम, औंधा, उलटा, दुष्ट, नीच।
प्रतिवचन० ना० पु० उत्तरपीछे वचन, वचनपर।
प्रतिवर्ष० ना० पु० वर्ष वर्ष, हरसाल।
प्रतिवाक्य० ना० पु० प्रति वचन, गु० जो उत्तर देने के योग्य है।
प्रतिवाद० ना० पु० विवाद, झगड़ा, विरोध।
प्रतिवादी० ना० पु० विवादी, विरोधी, प्रत्यर्थी।
प्रतिवास० ना० पु० पड़ोस।
प्रतिवासी० ना० पु० पड़ोसी।
प्रतिविम्ब० ना० पु० जो दर्पणादि देखने में रूप देख पड़ता है, अक्स, प्रतिरूप।
प्रतिशब्द० ना० पु० शब्दपीछे, शब्द के साथही शब्द।
प्रतिशब्दक० ना० पु० भारी शब्द, जो शब्द के साथही कूपादि से शब्द सुनाई देता है।
प्रतिषिद्ध० ना० पु० निषिद्ध, वर्जित।
प्रतिषेध० ना० पु० निषेध, ना० स्त्री० मनाई।
प्रतिष्ठा० ना० स्त्री० मूर्त्ति स्थापन, सुख्याति, कीर्त्ति, अबरू, बड़ाई।
प्रतिष्ठित० गु० स्थापित, कीर्त्तिमान्, यशी, सुख्यातियुत, इज्जतदार।
प्रतिहत० गु० जो निराशभया, रोकागया, भ्रष्ट, नष्ट।
प्रतिहार० ना० पु० ड्योढ़ीवान, चोबदार।
प्रतिहिंसक० गु० घातक वा घाती, कोपातर।
प्रतिज्ञा० ना० स्त्री० वचन, प्रण, करार, अवश्य काम का स्वीकार।
प्रतीक० ना० पु० अवयव, अङ्ग।
प्रतीकार० ना० पु० पलटा, बदला।
प्रतीची० ना० स्त्री० पश्चिम दिशा, पछाह।
प्रतीत० गु० प्रतिष्ठित, प्रकट।
प्रतीति० ना० स्त्री० विश्वास, श्रद्धा, भरोसा, समझ।
प्रतीक्षा० ना० स्त्री० ओर या मार्ग देखना, प्रत्याशा।
प्रतोली० ना० स्त्री० मार्ग, बाट, राह।
प्रतोष० ना० पु० सन्तोष, धीरज, सबर।
प्रत्न० गु० पुराना।
प्रत्यर्क० ना० पु० ऊषा।
प्रत्यय० ना० पु० विश्वास, समझ, चिह्न, निशान।
प्रत्यवाय० ना० पु० वियोग।
प्रत्यह० अव्य० प्रतिदिन, हररोज।
प्रत्यक्ष० गु० प्रसिद्ध, साक्षात्, दृष्टि गोचर, देखने के योग्य, अव्य० आगे।
प्रत्याशा० ना० स्त्री० आसरा, भरोसा, उम्मेद।
प्रत्याहार० ना० पु० स्वल्प भोजन।
प्रत्युत्तर० ना० पु० उत्तरका उत्तर, जवाब।
प्रत्युत्थान० ना० पु० उठकरके जो सम्मान।
प्रत्युपकार० ना० पु० उपकार के पलटे उपकार, पलटादेना, इनाम।
प्रत्येक० गु० एक एक, एक, एक, हरएक।
प्रथम० गु० पहला, आदि, अव्वल, मुख्य।
प्रथमा० ना० स्त्री० पहली।
प्रथमान्त० गु० जो नाम वा सर्व नाम प्रथम विभक्ति में हो।
प्रथा० ना० स्त्री० सुख्याति, यश, कीर्त्ति।
प्रथित० गु० यशवन्त, प्रसिद्ध, कीर्त्तिमान्।
प्रद० गु० दानाका चिह्न शब्दान्त में, दाता।
प्रदक्षिण० } ना० स्त्री० पूज्यको दाहिनेकर उस
प्रदक्षिणा० } के चारोंओर फिरकर निजासन पर आना, फिरना।
प्रदीप० ना० पु० दीपक, दिया।

प्रदेश० ना० पु० भूमिखण्ड, देश, स्थान, पर दश, छाती वितरित।
प्रदोष० ना० पु० सूर्यास्त से द्विदण्ड, शिवव्रत विशेष, दोष।
प्रदोषा० ना० स्त्री० रात, रात्रि।
प्रद्युम्न० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का पुत्र, काम देव।
प्रद्योतन० ना० पु० सूर्य।
प्रधान० ना० पु० मुख्यमंत्री, श्रेष्ठ, गु० पहला।
प्रधानता० ना० स्त्री० मुख्यता, श्रेष्ठता, बड़ा रत।
प्रधाननगर० ना० पु० प्रसिद्ध नगर, बड़ा नगर।
प्रनाम० ना० पु० प्रणाम।
प्रनाशी० गु० नाशनेवाला, मिटानेवाला।
प्रपञ्च० ना० पु० छल, विरोध, ढेर, धोखा, चूक संसार, बातों का विस्तार।
प्रपञ्चित० गु० जो विस्तारयुत वर्णन हुआ, जो छला गया।
प्रपंची० ना० पु० प्रपञ्चकर्त्ता घाती, छली।
प्रपितामह० ना० पु० पितामह का पिता, परदादा।
प्रपितामही० ना० स्त्री० पितामह की माता परदादी।
प्रपुन्ना० ना० पु० पवार पौधा।
प्रपौत्र० ना० पु० पौत्रका पुत्र, परपोता।
प्रपौत्री० ना० स्त्री० पौत्रकी पुत्री, परपोती।
प्रफुला० ना० पु० फफूल बालि।
प्रफुल्ल० गु० विकसित, फूला, खश।
प्रफुल्लित० गु० विकसित, फूलाभया, आनन्द, मग्न, खुश।
प्रबन्ध० ना० पु० क्रम से वाक्य की बनावट, रचना विशेष, कथा, वृत्तान्त, प्रदावस्त।
प्रबन्धाधीन० गु० प्रबन्ध के आधीन।
प्रबल० गु० बलवान्, पहलवान्।
प्रबलता० ना० स्त्री० बलात्कारी, बरबस।
प्रबोध० ना० पु० ज्ञान उपदेश, सुर्त्त, उजगता, तसल्ली, खबर।
प्रबोधक० गु० प्रबोध करने हारा।
प्रभद्र० ना० पु० नीम वृक्ष।
प्रभञ्जन० ना० पु० पवन, गु० विनाशन।
प्रभव० ना० पु० उत्पत्ति, उपज, उत्पत्तिकारी।
प्रभा० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति, दीप्ति, चमक।
प्रभाकर० ना० पु० सूर्य, चन्द्रमा।
प्रभाव० ना० पु० माहात्म्य, सामर्थ्य, फल।
प्रभात० ना० पु० प्रात काल, भोर, तड़का।
प्रभाती० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
प्रभावती० ना० स्त्री० पातालगंगा।
प्रभास० ना० पु० तीर्थ विशेष।
प्रभिन्न० ना० पु० हाथी, (प्रभिन्नो गर्जितामत्त इत्यमर)।
प्रभु० ना० पु० नाथ, स्वामी, राजा, ईश्वर, प्रतिपालक, गुरु।
प्रभुता० ना० स्त्री० } राज्यादि अधिकार, प्र
प्रभुताई० ना० स्त्री० } भाव्यता, स्वामित्व,
प्रभुत्व० ना० पु० } ईश्वरता।
प्रभुतालय० ना० पु० नीतिगृह, कचहरी, अदालत।
प्रभृति० अव्य० इत्यादि।
प्रमदा० ना० स्त्री० सुलक्षणा स्त्री।
प्रमदी० ना० स्त्री० कलिहारी।
प्रमथा० } ना० स्त्री० हड़ शिवा।
प्रमथ्या० }
प्रमथान० } ना० पु० श्रीमहादेवजी, यथा
प्रमथाधि० } (मृत्युंजय कृत्तिवासा पिना
प्रमथाधिप० } की प्रमथाधिप इत्यमर)।
प्रमा० ना० स्त्री० यथार्थ का ज्ञान, अनुभव।
प्रमाण० ना० पु० निश्चय का कारण साक्षी, अवधि प्रयत्न, निश्चय, सच्चा, आद्य।
प्रमाणिक० गु० योग्य, निश्चयकारक, माद्य रूप प्रमाण के योग्य।

प्रमातामह० ना० पु० मातामह का पिता, परनाना।

प्रमातामही० ना० स्त्री० मातामहकी माता, परनानी।

प्रमाद० ना० पु० भूल, चूक, गफ़लत, अनजानी।

प्रमादी० गु० अचेत, असोच, अल्हड़।

प्रमीलिका० } ना० स्त्री० भौंह, भृकुटी।
प्रमीला० }

प्रमुख० ना० पु० निशाचर विशेष, प्रधान।

प्रमुदित० गु० हर्षित, आनन्दित।

प्रमेह० ना० पु० वीर्य्यका रोग, क्षीणरोग।

प्रमोद० ना० पु० हर्ष, आनन्द।

प्रमोदित० गु० हर्षित, आनन्दित, खुश।

प्रयन्त० अव्य० पर्यन्त।

प्रयाग० ना० पु० तीर्थराज, इलाहाबाद।

प्रयाण० ना० पु० धावा, गमन।

प्रयान्ति० क्रि० पाता है।

प्रयुक्त० गु० मिलाहुआ, भराहुआ।

प्रयोग० ना० पु० अनुष्ठान, दृष्टान्त, फल, उपाय, तदबीर, प्रयोजन।

प्रयोगी० गु० उपायी, चलानेवाला।

प्रयोजक० ना० पु० प्रेरक, उठाने हारा।

प्रयोजन० ना० पु० कारण, तात्पर्य्य, गरज़, मतलब।

प्रयोजनी० गु० अनवर, मतलबी, ग़रज़ी।

प्रयोज्य० गु० पुरुष, ना० पु० सेवक, चेला।

प्रलम्ब० ना० पु० प्रलम्बासुर, लम्बा।

प्रलम्बघ्न० ना० पु० बलदेव जी।

प्रलय० ना० पु० कल्पान्त, सर्व्वनाश, तूफ़ान।

प्रलयकाल० ना० पु० नाशका समय।

प्रलाप० ना० पु० अज्ञानता समय का वाक्य, निरर्थवाक्य।

प्रलेप० ना० पु० औषधि आदिका लेपन।

प्रवञ्चना० ना० स्त्री० प्रतारण, ठगी, धोखा।

प्रवर० ना० पु० सन्तान, वंश, गोत्र, गु० बलवान्, श्रेष्ठ, बहादुर।

प्रवर्त्तक० ना० पु० प्रेरक, उतारनेहारा।

प्रवर्षण० ना० पु० पर्वतविशेष।

प्रवाल० ना० पु० मूंगा।

प्रवास० ना० पु० विदेश, देशाटन, परदेश।

प्रवासा० ना० स्त्री० मधुशर्करा।

प्रवासी० गु० विदेशी, परदेशी।

प्रवाह० ना० पु० नदीकी धारा, बहाव, सुगन्ध पवन।

प्रविष्ट० गु० जो प्रवेश हुआ, घुसा, पैठा।

प्रवीण० गु० निपुण, सुचतुर, स्याना।

प्रवीणता० ना० स्त्री० निपुणता, चतुराई, स्यानपन।

प्रवृत्तकर्त्ता० गु० विश्वासी, मज़दूर, नज़र।

प्रवृत्ति० ना० स्त्री० खोज, समाचार, धारा, इच्छा, किसी काम में लगना या लगाना यत्न।

प्रवेक० गु० प्रधान, सरदार।

प्रवेणी० ना० स्त्री० वेणी, केशपाश।

प्रवेश० ना० पु० पैठ पहुंच, घुसाव।

प्रसक्त० गु० लीन, लगाहुआ, आसक्त।

प्रशंसक० गु० स्तुतिकर्त्ता, बड़ाई करनहारा।

प्रशंसनीय० गु० प्रशंसा के योग्य।

प्रशंसा० ना० स्त्री० स्तुति, बड़ाई।

प्रशमन० ना० पु० वध।

प्रशस्त० गु० आनन्दा, योग्य, भला।

प्रशस्ति० ना० स्त्री० स्तुति, बड़ाई, योग्य, अच्छी।

प्रश्न० ना० पु० जिज्ञासा, सवाल पूछना।

प्रश्नोत्तर० ना० पु० प्रश्न का उत्तर, सवाल जवाब।

प्रषद० ना० पु० मृग, हरिण।

प्रष्टा० ना० पु० पूछनेहारा।

प्रसक्त० अव्य० सदा, गु० सजाना, प्राप्त।

प्रसंग० ना० पु० प्रस्ताव, मेल, संगम, संयोग, सम्बन्ध, चर्चा, साथ, रब, वस्तु।

प्रसन्न० गु० हर्षित, आनन्दित, दयालु, खुश।

प्रसन्नता० ना० स्त्री० प्रसाद, हर्ष, आनन्द, कृपा।

प्रसन्नित० गु० हर्षित, आनन्दित, दयालु, राजी।

प्रसमित० गु० रहित, हीन, बिहून, बिन।

प्रसव० ना० पु० गर्भसे बालक का निकलना, जनाया, पदायश, उत्पत्ति।

प्रसवत० क्रि० उपजते, जन्मते।

प्रसव्य० गु० बाया प्रतिकूल उपजने के योग्य।

प्रसाद० ना० पु० देवताओंकी वा गुरुकी जूठन, कृपा, दान, भोजन।

प्रसादी० ना० स्त्री० जो कुछ देवताओं को चढ़ायागया, भोग, खाना।

प्रसारण० ना० पु० फेलाव, पसराव, गन्धपसारण, पोना।

प्रसादक० ना० पु० भाजी बथुआ का साग।

प्रसारित० गु० विस्तारित, जो फलायागया।

प्रसिद्ध० गु० प्रकाशित, विख्यात, मशहूर।

प्रसिद्धता० ना० स्त्री० प्रकटता, सुख्याति, जहूर।

प्रसीद० क्रि० दयालुहो, कृपाकरो।

प्रसूत० ना० पु० जात, जन्मा, प्रसूति।

प्रसूति० ना० स्त्री० रोग विशेष, पानीवहने का रोग विशेष।

प्रसूतिका० } गु० स्त्री० जनाना जच्चा, माता।
प्रसूता०

प्रसून० ना० पु० पुष्प, फूल फल।

प्रसौती० ना० स्त्री० प्रसूती।

प्रस्तर० ना० पु० पत्थर, पाषाण।

प्रस्तरमय० गु० पाषाणमय, पथरीला।

प्रस्ताव० ना० पु० अवसर, चर्चा।

प्रस्ताविक० गु० समयपर, सामयिक।

प्रस्तुत० गु० कथित, सिद्ध, स्तुति कियागया।

प्रस्थ० ना० पु० परिमाण विशेष।

प्रस्थर० ना० पु० पत्थर।

प्रस्थान० ना० पु० गमन, विदा, धावा करने हारेका गमन, पायतुराब, नकल मकान।

प्रस्थापित० गु० प्रेरित, भेजा गया।

प्रस्थित० ना० स्त्री० कीर्ति, नेकनामी।

प्रस्फुटित० गु० विकसित।

प्रहर० ना० पु० पहर, याम, दिन वा रातका आधा भाग।

प्रहरण० ना० पु० अस्त्र, मारण।

प्रहस्त० ना० पु० राक्षस विशेष।

प्रहार० ना० पु० चोट, ठोकर, मार।

प्रहारित० गु० मारागया वा माराहुआ।

प्रहारी० गु० मारनेहारा।

प्रहून० ना० पु० विनय, प्रणाम।

प्रहेलिका० ना० स्त्री० पहेली, ढकोसला।

प्रहृष्ट० गु० सन्तुष्ट।

प्रह्लाद० ना० पु० भक्त विशेष।

प्रह्लादिनी० ना० स्त्री० इसपादी बूटी।

प्रक्षालन० ना० पु० धुलाई।

प्रक्षालित० गु० जो धोयागया।

प्रज्ञा० ना० स्त्री० सरस्वती, निर्मलबुद्धि।

प्रज्ञात्मा० गु० आत्मज्ञानी, आत्मध्यानी।

प्राक्० अव्य० आग, पहल, पूर्व।

प्राकार० ना० पु० गढ़।

प्राकृतकवि० ना० पु० सूरदासादि।

प्राकृतभाषा० ना० स्त्री० संस्कृतभाषा विशेष।

प्राक्तन० गु० पुराना।

प्रागल्भ्य० ना० पु० प्रगल्भता, दिलेरी, घमण्ड।

प्राची० ना० स्त्री० पूर्व दिशा।

प्राचीन० गु० पुराना, पहला।

प्राचीनाः० ना० पु० पानी आंवला।

प्राड्विवाक० ना० पु० राजाकी आज्ञासे विचार करने के लिये स्थापित पुरुष, न्यायक।

प्राण० ना० पु० दसमास पु, जीव, विशेष।

प्राणदा० ना० स्त्री० जीवदाता।

प्राणप्रतिष्ठा० ना० पु० मन्त्र से देवता में जीव धारण करना।

फणपति० ना० पु० शेषजी सर्पोंका राजा।
फणा० ना० पु० फण।
फणि० ना० पु० सांप या उसकी मणि।
फणिक० ना० पु० सांप।
फणिज्जक० ना० पु० मरुआ, सुगन्धितपौधा।
फणी० ना० पु० फणि, सांप।
फणीन्द्र०, फणीश० } ना० पु० सांपोंका राजा, शेषजी।
फद्कना० अ० क्रि० दालआदिका उदना।
फदफदाना० अ० क्रि० बलबलाना, छोटे २ दाने पड़ना।
फन० ना० पु० फण।
फनगा० ना० पु० टिड्डा, आंखफोड़ा।
फनफनाना० अ० क्रि० फण खोलना, फुसकारना।
फन्दा० ना० पु० फांसी, पेंच, उलझाव।
फफसा० ना० पु० फूलाहुआ।
फफूंदी० ना० स्त्री० गीलापन के कारण से जो सफेदी अचार आदि में लगजाती है, सफ़ेत।
फफोला० ना० पु० फुलका, छाला।
फब० ना० स्त्री० शोभा।
फबकना० अ० क्रि० पनपना, डाल निकलना।
फबता० ना० पु० योग्य, ठीक, जमता।
फबती० ना० स्त्री० शोभा, किसीको वस्त्र पहिने देखकर कहना यह किस जातिका है।
फबन० ना० स्त्री० शोभा, छजन।
फबना० अ० क्रि० सोहना, छाजना, सजना।
फबीला० गु० शोभित, सजीला, शोभायमान।
फर० ना० पु० फल, तीरकीगांसी, पत्ता।
फरकना० अ० क्रि० फड़कना।
फरचा० ना० पु० मेवोंका फलजाना, कैमला।
फरचाना० स० क्रि० न्यायकरना, आज्ञा देना।
फरछा० गु० निर्मल, स्वच्छ, खरा।
फरछाना० स० क्रि० स्वच्छ वा निर्मल कराना, खराना।
फरफन्द० ना० पु० छल, कपट, धोखा।
फरफन्दिया० गु० छली, धूर्त, ठग, कपटी।
फरस० ना० पु० फरसा।
फरसा० ना० पु० फावड़ा, कुल्हाड़ा, तबर, अस्त्र विशेष।
फरहरा० ना० पु०, फरहरी० ना० स्त्री० } झंडा, पताका, गु० अधपक्का।
फरहा० ना० पु० खोखला, फकला, निर्भीन।
फरिया० ना० स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र विशेष, लड़कियों के पहरने का वस्त्र विशेष।
फरी० ना० स्त्री० ढाल, डाली फल समेत।
फर्राटा० ना० पु० बांसका टुकड़ा, ध्वजाके हिलने या घोड़े की दौड़ाका जो शब्द होताहै।
फर्राना० अ० क्रि० हिलना या उड़ना।
फल० ना० पु० वृक्षादिका सस्य, पलका मोती, कर्मोंका भोग, सन्तान, बाणके आगे का लोहा इत्यादि।
फलकना० अ० क्रि० फड़कना।
फलचारि० ना० पु० अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष।
फलजनक० ना० पु० जो फलजन्मावे।
फलताड़० ना० पु० ताड़का फल।
फलदुद्द० ना० पु० वृक्ष गु० फलका दाना।
फलदाता०, फलदानि० } गु० फल देनेहारा।
फलना० अ० क्रि० फलजाना, भाग्यवान्होना।
फलमूल० ना० पु० फूल की दण्डी।
फलराज० ना० पु० खरबूजा, दशांगुल।
फलवर्तुल० ना० पु० तरबूज, हिंदवाना।
फलवान्० गु० जो फल युक्त हो।
फलाऽ ना० पु०, संयुक्तासर, समस्तस्वर, गु० फलित।
फलांग० ना० स्त्री०, कूदना, सपुन, डेग, जस्त।
फलाशिन० ना० पु० सिरनी।
फलाश० ना० स्त्री० फलांग।
फलित० गु० फलाहुआ, फलों समेत।

फलितार्थ० ना० पु० तात्पर्यार्थ, ठीक अर्थ।
फलिना० ना० पु० प्रियगु।
फलिया० ना० स्त्री० छीमी, तुकमा।
फली० ना० स्त्री० छीमी, तुकमा, ना० पु० वृक्ष, गु० स्त्री० फलित।
फलीश० ना० पु० पारसपीपर।
फलोदय० ना० पु० फलाप्ति, आनन्द, स्वर्ग आदि।
फलोपम० ना० पु० सफेद बैंगन, श्वेत भाग।
फसकट० ना० स्त्री० कपड़ा विशेष।
फसकना० अ० क्रि० फटना, चूना।
फसकाना० स० क्रि० फाड़ना, ताड़ना, पीड़ना।
फसकाऊ० ना० पु० फाड़ तोड़ फाड़।
फसना० अ० क्रि० बझना, उलझना, जालमें पड़ना, कठिनता में पड़ना, कसना, फन्द में आना, काबू में आना।
फसफसा० गु० पिलपिला, अलग।
फसफसाना० अ० क्रि० पिलपिलाना, डरना।
फसवाना० स० क्रि० उलझाना, अटकाना, फँसाना, बन्दी कराना।
फसाना० स० क्रि० बझाना, उलझाना, कसाना, अटकाना, जाल में डालना, और बन्दीगृह में रखना।
फहरना० अ० क्रि० फर्राना।
फहराना० अ० क्रि० फर्राना, उड़ाना, कूदना।
फाक० ना० स्त्री० फलका टुकड़ा।
फाकना० स० क्रि० फका मारना।
फांकी० ना० स्त्री० फाल, फक्किका, पूर्वपक्ष।
फाटना० स० क्रि० बाटना, विभाग करना।
फाट० ना० पु० बाड़ा, हिस्सा, विभाग।
फाद० ना० पु० फद, फदा।
फादना० स० क्रि० लाघना, कूदजाना।
फादा० ना० पु० फाद, गुच्छा।
फादी० ना० स्त्री० गनों का एक बोझ।
फांफड़० ना० पु० छेद, सुई।
फांस० ना० स्त्री० सूक्ष्म राग।
फासना० स० क्रि० बाधना, रोकना, बन्दी करना, जाल में लाना।
फासा० ना० पु० डोरका उचका।
फासी० ना० स्त्री० फन्दी, फसरी, फन्द, कण्ठ रुधा।
फाग० ना० पु० गुलाल या अबीर डालना, वा उड़ाना, होली का समय।
फागुन० ना० पु० फागुन।
फाटक० ना० पु० बड़ा द्वार, अगार।
फाटना० अ० क्रि० फटना।
फाड़खाना० स० क्रि० भभारना, झकोरना।
फाड़ना० स० क्रि० चीरना, फाटना, तोड़ना, मसकाना।
फाड़ा० गु० चाराहुआ।
फाल० ना० स्त्री० हलके आगका लोहा, चौकड़ी सुपारी का टुकड़, डग चौ।
फालसा० ना० पु० फल वा वृक्ष विशेष।
फाल्गुन० } ना० पु० फागुन मास, अर्जुन।
फागुन० }
फाल्गुनिका० ना० स्त्री० पयः होली।
फाव० ना० पु० धलूआ रूखर।
फावड़ा० ना० पु० मट्टी खोदने का अस्त्र, फरसा, बड़ा और चाड़ी उदार।
फावड़ी० ना० स्त्री० पराग झराग।
फावना० अ० क्रि० सोहना, शोभादेना।
फाबित० गु० शोभित।
फावो० गु० शोभितधर्म, शोभा दा।
फाहा० ना० पु० मरहम से भीगाहुआ कपड़ेका छोटा टुकड़ा गीली।
फिकारना० स० क्रि० शिर नंगा करना।
फिट० ना० पु० फिटकारा।
फिटकार० ना० स्त्री० धिक्कार लानत।
फिटकरी० ना० स्त्री० फटकरी।

फिटकारना० स० क्रि० धिक्कार करना, कोसना, शापना।
फिटाना० स० क्रि० फेंटना, फिनाना।
फिर० अव्य० पुनि, पुनः, फेर।
फिरकवाहनी० ना० स्त्री० सेजगाड़ी।
फिरकी० ना० स्त्री० नेंगी, भौंरा, चकई, फिराने की वस्तु जिसको लड़के फिराते हैं।
फिरजाना० अ० क्रि० पलटना, फिरना।
फिरत० ना० पु० वस्तु जो अप्रसन्नता से लौटादी।
फिरता० गु० रमता, फेरे का पैसा।
फिरतारहना० अ० क्रि० रमना, फेरा करना, भटकता रहना।
फिराना० स० क्रि० घुमाना, भटकाना, रमाना।
फिराव० ना० पु० घुमाव, फेर।
फिर्ना० अ० क्रि० घूमना, लौटना, भटकना, रमना।
फिर्नी० ना० स्त्री० फिरकी।
फिल्ली० ना० स्त्री० पिंडली।
फिसफिसा० गु० डरपोक, फसफसा।
फिसफिसाना० अ० क्रि० भयभीत होना डराना।
फिसलन० ना० स्त्री० सिसलन, विछलना।
फिसलना० अ० क्रि० सिसलना, विछलना, रपटपड़ना।
फिसलाना० स० क्रि० सिसलाना, विछलाना, चूकना।
फिसलाहट० ना० स्त्री० सिसलाहट, चिकनाहट।
फींचना० क्रि० ना० खँगालना, धोना।
फीका० गु० स्वादरहित, सीठा, सावला, बदरंग, बेमजे।
फुंकार० ना० स्त्री० सांपकी फनफनाहट।
फुंकारना० अ० क्रि० फनफनाना।
फुंहार० ना० स्त्री० झाली, फूही।
फुकना० अ० क्रि० जलना, ना० पु० भैसा।
फुकनी० ना० स्त्री० धौंकनी, निगाली, आग फूकने की जो नाल वा पीतलादि की होती है।
फुट० गु० अयुग्म।
फुटकर० गु० अलग, भिन्न भिन्न, अयुग्म।
फुटकी० ना० स्त्री० छींट, छिटकी, गु० अयुग्म।
फुड़िया० ना० स्त्री० फुंसी छोटा फोड़ा।
फुदकना० अ० क्रि० कुदकना, थोड़ा थोड़ा उछलना।
फुदकी० ना० स्त्री० पक्षी विशेष।
फुनगी० ना० स्त्री० कली, कोंपल, वृक्षकी चोटी
फुनंग० ना० स्त्री० शिखर, चोटी।
फुनसी० ना० स्त्री० मुहासा, फुड़िया, पिटकी।
फुनिया०, फुन्नी०, फुन्नो० } ना० स्त्री० लोलो।
फुपकार० ना० स्त्री० फुकार।
फुप्फा० ना० पु० फूफा।
फुप्फो० ना० स्त्री० फूफू, फूआ।
फुफेरा० ना० पु०, फुफेरी० ना० स्त्री० } गु० जो फूफूसे उत्पन्न भया या जो फूफूका सम्बन्धी होवे।
फुर० गु० सच, ठीक, सत्य।
फुरती० ना० स्त्री० फुर्ती।
फुरफुराना० अ० क्रि० कांपना, हिलना।
फुरफुरी० ना० स्त्री० कम्पाहट, थरथराहट।
फुर्त्त०, फुर्त्ती० } ना० स्त्री० वेगता, शीघ्रता, चालाकी चटपटी, जल्दी।
फुर्त्तीला० गु० वेगी, चालाक, चटपटिया।
फुलका० गु० फूलाहुआ, हलका, ना० पु० फफोला, पतली छोटी रोटी।
फुलकारना० अ० क्रि० फूलना, फब, उठाना।
फुलकारी० ना० स्त्री० कपड़ा जिसमें फूलहों।
फुलकिया०, फुलवाई० } ना० स्त्री० रोटी विशेष।
फुलझड़ी० ना० स्त्री० आतशबाजी विशेष।

फुलवाई॰ ना॰ स्त्री॰ फुलवाड़ी, रामायणे यथा, एक सखी सियसंग बिहाई, गई रहे देखन फुलवाई।
फुलवाड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ फूलोंकी बाड़ी वा बाग।
फुलाना॰ स॰ क्रि॰ सुजाना, मोगवरना।
फुलासरा॰ ना॰ पु॰ लल्लोपत्तो, फुसलाहट।
फुलेल॰ ना॰ पु॰ चंबेली का तेल।
फुलौरी॰ ना॰ स्त्री॰ पकौडी।
फुल्ल॰ गु॰ फूला, खिला।
फुल्लड़॰ गु॰ बचेला, फूलसे थोड़े दिनके फल।
फुल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ आखकी फूली।
फुसफुसाना॰ अ॰ क्रि॰ धीरे धीरे बात कहना, भीसी पड़ना।
फुहार॰ ना॰ स्त्री॰ पानीके कण छोटे २ पड़ना।
फुहारा॰ ना॰ पु॰ फव्वारह छोटी २ बूंदें छूटना।
फूआ॰ ना॰ स्त्री॰ फूफू, बापकी बहन।
फूंक॰ ना॰ पु॰ फूकन का काम वा चाल।
फूकना॰ स॰ क्रि॰ मुख से वायु छोड़ना, सुलगना, मुख से बजाना, उड़ाना, जलाना।
फूत्कारना॰ अ॰ क्रि॰ फनफनाना।
फूही॰ ना॰ स्त्री॰ झीसी, फूहा।
फूकना॰ स॰ क्रि॰ फूकना।
फूट॰ ना॰ स्त्री॰ ककड़ीविशेष, अशुभ, बिगाड़, भिन्नता, खार।
फूटन॰ ना॰ स्त्री॰ अनबनाव, विरोध।
फूटना॰ अ॰ क्रि॰ टूटना, फटना, भिन्न भिन्न होना, प्रकट होना दुर्गन्धि निकलना।
फूटा॰ गु॰ टूटा।
फूटी॰ ना॰ स्त्री॰ विरोध, बिगाड़, गु॰ टूटी।
फूफा॰ ना॰ पु॰ फूफूका पति।
फूफा॰ } ना॰ स्त्री॰ बापकी बहिन।
फूफू॰ }
फूल॰ ना॰ पु॰ पुष्प, कली, निहानी, सूज, जले हुए मृतककी हड्डी।
फूलना॰ अ॰ क्रि॰ खिलना, विगसना, आनन्दितहोना, सूजना, अभिमानी होना।
फूला॰ गु॰ सूजा, ना॰ पु॰ धानोंके लावा।
फूलाव॰ ना॰ पु॰ सूजन।
फूली॰ ना॰ स्त्री॰ फुल्ली जो आंख में होती है।
फूस॰ ना॰ पु॰ पुरानी घास, तृण, फूसमास।
फूसड़ा॰ ना॰ पु॰ गूदड़।
फूसी॰ ना॰ स्त्री॰ भूसी।
फूहड़॰ ना॰ स्त्री॰ फूहर।
फूहड़ा॰ गु॰ कुवचन कहनेहारा।
फूहर॰ ना॰ स्त्री॰ अनसीली, घामड़, कुचाल चलनेहारी, ना॰ स्त्री॰ भिट्टल।
फूहा॰ ना॰ पु॰ रतनके सदृश रुई गोड़ा।
फूहार॰ ना॰ स्त्री॰ फूहर, फुहरा।
फूही॰ ना॰ स्त्री॰ भीसी।
फेंक॰ ना॰ स्त्री॰ फेंकने का काम वा चाल।
फेंकना॰ स॰ क्रि॰ डालना, झोंकना।
फेंकाव॰ गु॰ फेंकने के योग्य।
फेंट॰ ना॰ स्त्री॰ कब, कटिबंध, पटका।
फेंटना॰ स॰ क्रि॰ मिलाना, सानना, लतपत करना।
फेंटा॰ ना॰ पु॰ छोटा पगड़ा, पटका।
फेंटी॰ ना॰ स्त्री॰ आटी।
फेट॰ ना॰ स्त्री॰ फेंट।
फेटना॰ स॰ क्रि॰ फेंटना।
फेटा॰ ना॰ पु॰ फटा।
फेणु॰ ना॰ पु॰ फेना।
फेणोवारि॰ ना॰ पु॰ समुद्र फेणु।
फेन॰ } ना॰ पु॰ भाग, फेणु।
फेना॰ }
फेनाना॰ अ॰ क्रि॰ फेना उठना।
फेनी॰ ना॰ स्त्री॰ पकवान विशेष।
फेनुस॰ ना॰ पु॰ पीयूष।
फेफड़ा॰ ना॰ पु॰ अंग विशेष जिसके द्वारा श्वास लेते हैं।

फेफड़ी० ना० स्त्री० चलोकी शक्ति।
फेर० अव्य० पुन।
फेर० ना० पु० वाक, टेढ़ाई, घुमाव, घेरा, कुण्डली, घोल, घुमाव।
फेरना० स० क्रि० घुमाना।
फेरा० ना० पु० घुमाव, फैलाव।
फेराफेरी० ना० स्त्री० इधर उधर जाना, आवागमन।
फेरी० ना० स्त्री० प्रदक्षिणा।
फेरीवाला ना० पु० फेरनेवाला, विसाती आदि।
फेरु० ना० पु० शृगाल, गीदड़, धोखा, अन्तर, फेर।
फेंटा० ना० पु० फेंटा।
फैलना० अ० क्रि० बिछना, पसरना, बिथरना, प्रगट होना।
फैलाना० स० क्रि० बिछाना, चौड़ाना, पसारना, बिथराना, प्रगट करना।
फैलाव ना० पु० विस्तार, पसार, प्रकटता, प्रचार, भरपूर।
फोंर० गु० खोखला, पाला, ना० स्त्री० वाणकी एक ओर जिधरमें पेंच में लगाते हैं।
फोंकी० ना० स्त्री० नली, छूछी।
फोहार० ना० स्त्री० फुहार।
फोक० ना० पु० तरछट, सीठी, गु० खोखला वस्त्र का फगवा, बाण का एक भाग।
फोकट० ना० पु० कंगाल।
फोकड़० ना० पु० गूद, तरछट, सूखा।
फोड़ना० स० क्रि० तोड़ना, फाड़ना।
फोड़ा० ना० पु० स्फोटक, बालतोड़, पिरकी।
फोला० ना० पु० फफोला, छाला।

[ब]

बंभोटी० ना० स्त्री० बाझ होने की औषधि विशेष।
बंटवाना० स० क्रि० भागकरवाना, हिस्सह रवाना।
बंटवैया० ना० पु० भागकर्त्ता, बांटनेहारा।
बटाना० स० क्रि० बांटना, वा बटवाना।
बंटैत० ना० पु० बटवैया।
बंडोहा० ना० पु० बवण्डर, बौहरा।
बंश० ना० पु० बांस।
बंशकार० ना० पु० बांस का बांसवाला।
बंशक्षीरी० ना० पु० बंशलोचन।
बंशरोचन० पु० बंशलोचन।
बंशावली० ना० स्त्री० बंशावली।
बंशी० ना० स्त्री० बंसी।
बक० ना० पु० बग, ना० स्त्री० भक, गप।
बकुची० ना० स्त्री० पौधा विशेष जिसके बीज से खुजली जाती है।
बकझक० ना० स्त्री० बकवाद।
बकना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, भकलगाना।
बकबक० ना० स्त्री० बड़बड़, गप शप।
बकबकाना० स० क्रि० बकबक करना।
बकरा० ना० पु० अज, छाग।
बकरी० ना० स्त्री० अजा, छेरी छाग।
बकला० ना० पु० छिलका, छाल।
बकवाद० ना० स्त्री० बकबक।
बकवादी० ना० पु० बकवादिया।
बकवास० ना० पु० बकवाद।
बकवाहा० ना० पु० } बड़बड़िया।
बकवाही० ना० स्त्री० }
बकसा० गु० समेट बंधेला।
बकसुआ० ना० पु० चपड़ास, चपरास।
बकसैला० गु० बकसा।
बकायन० ना० स्त्री० वृक्ष विशेष।
बकारा० ना० पु० अगुवा, पथिक, बगेदी।
बकारी० ना० स्त्री० टहीलरीर।
बकिया० ना० स्त्री० छुरी, चाकू।
बकुला० ना० पु० बगला।
बकेनी० ना० स्त्री० बहुत दिनकी व्यानी गाय अथवा भैंस।
बकेलू० ना० पु० पलाश अर्थात् ढाककी जड़।

को कूटकर बनाते हैं जिससे रस्सी आदि बनती है।

बकोटना० स० क्रि० खसोटना, नोचना।

बक्कम० ना० पु० रंगने का काठ।

बक्कल० ना० पु० बकला।

बक्का० ना० पु०
बक्की० ना० स्त्री० } गु० झक्की, गप्पी, बकवादी।

बखरी० ना० स्त्री० कोठरी, घर, मकान।

बखरा० ना० पु० बखेरा, मोरा।

बखान० ना० पु० वर्णन, स्तुति।

बखानना० स० क्रि० वर्णनकरना, स्तुतिकरना, सराहना।

बखार० ना० पु०
बखारी० ना० स्त्री० } खाना, भण्डार, अनाज रखने की कोठी या कोठरी।

बखेड़ा० ना० पु० झगड़ा, लड़ाई, रोला।

बखेड़िया० गु० झगड़ालू, लड़ाका।

बखेरना० स० क्रि० बिथराना, छिटकाना।

बखोर० ना० स्त्री० टोक, रोक, अपशकुन।

बखोरना० स० क्रि० टोकना, पूछना।

बखौरा० ना० पु० कन्धा, मोढ़ा।

बग० ना० पु० बक, बगुला, बाग।

बगछूट० ना० पु० सरपट।

बगपांति०
बगपांती० } ना० स्त्री० बगुलों की पांति।

बगड़० ना० पु० चावल विशेष।

बगड़ा० ना० पु० छल, दुःख।

बगड़िया० गु० छली, ठग।

बगदना० अ० क्रि० फिरना, बिगड़ना, भूलना, फैलना।

बगदाना० स० क्रि० फिराना, बिगाड़ना, भुलाना, फैलाना।

बगमेल० ना० पु० अति निकट, बाग में बाग का मिलजाना।

बगर० ना० पु० घर आंगन, सहन।

बगराना० स० क्रि० छिटकाना, फैलाना, बिथराना।

बगला० ना० पु० बक, बगुला, पक्षी विशेष।

बगलाभगत० गु० कपटी, धूर्त, छली।

बगहंस० ना० पु० हंस विशेष।

बगिया० ना० स्त्री०
बगीचा० ना० पु० } फुलवाड़ी, छोटा उपवन, छोटाबाग, फारसी शब्द है।

बगुला० ना० पु० बक, पक्षी विशेष।

बगूला० ना० पु० बवण्डर, बौंडरा।

बघनहा० ना० पु० सुगन्धि विशेष, जड़ विशेष।

बघना० ना० पु० बाघ के नख या दांत जो बालक को पहिनाते हैं।

बघरूरा० ना० पु० बवण्डर, बगला, पवनग्रन्थि।

बघार० ना० पु० छौंक।

बघारना० स० क्रि० छौंकना।

बघी० ना० स्त्री० डांस, धुडमक्खी।

बघेल० ना० पु० राजपूत, जाति विशेष।

बघेलखण्ड० ना० पु० देश विशेष, रीवां का प्रदेश।

बघेला० ना० पु० बघेल, बाघका बच्चा, बाघरू।

बंक० ना० पु० बांका।

बंकाई० ना० स्त्री० फेर, टेढ़ाई।

बंग० ना० पु० धातु विशेष, उल्लूसन, बंगाला देश।

बंगरी० ना० स्त्री० गहना विशेष।

बंगला० ना० पु० छप्पर या खपरैल का घर विशेष, पान विशेष, बंगाले के अक्षर वा भाषा।

बंगसेन० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष।

बंगा० ना० पु० बांसकी जड़का पोर, गु० उल्लू, नासमझ, रामायणे यथा, तीरथ राज प्रयाग नदी पुनि गंगा, राममन्त्र कहेरे शठ बंगा।

बंगाल०
बंगाला० } ना० पु० देश विशेष जो गयाजी से पूर्व में है।

बंगालिन० ना० स्त्री० बंगाली की स्त्री।

बंगाली० गु० बंगाले का बासी।

बत्तीसी० ना० स्त्री०, सब दांत, गु० जिसमें बत्तीस वस्तुका समुदाय हो।
बत्सा० ना० पु० धावल विशेष।
बथुआ० ना० पु०
बथुई० ना० स्त्री० } शाक विशेष भाजी।
बद० ना० स्त्री० रोग विशेष, गांठ।
बदना० स० क्रि० दांवलगाना, मानना अंगीकार करना।
बदर० ना० पु० सब मेवा एक सहस्र मदाकी थली अर्थात् तोड़ा यह शब्द अरबी मेंशुद्ध बदरा है परंतु अयोध्या काण्ड में यों लिखाहै, यथा, विरत बदर जनु तुम्हरे हाथा।
बदल० ना० पु० मेघ, प्रतीकार, अव्य० सन्ते।
बदलना० स० क्रि० पलटना, फेरना।
बदरा० ना० पु० सत्ता ताड़ना, पलटा फेरा।
बदलाई० ना० स्त्री० तोड़नाई, पलटाई, फेराई।
बदलाना० स० क्रि० फेरडालना ताड़ाना फेराना।
बदवा० ना० स्त्री० बुरा खाना मध।
बदा० गु० जो भाग्य में लिखितहै।
बदाबदी० अव्य० हिसाका समत लड़ाई से झगड़े से।
बदि०
बदी० } ना० स्त्री० कृष्णपक्ष, हेतु, लिये।
बद्दल० ना० पु० मेघ।
बद्ध० गु० जो बांधागया।
बद्धी० ना० स्त्री० गले में पहरनेकी वस्तु विशेष, तसमा चमड़े का।
बद्रीवन० ना० पु० बद्रीनाथ का वन।
बध० ना० पु० हत्या, हिंसा, हनन।
बधन० ना० पु० हनन, हनन।
बधना० स० क्रि० मारडालना, हत्या करना ना० पु० पानी पीने का पात्रविशेष।

बधवंश० ना० पु० वंशका वध।
बधस्थान० गु० जिस स्थान में वध कियाजाय।
बधाई० ना० स्त्री०
बधावा० ना० पु० } जयकार मानना, आनन्द, मङ्गलाचार जा छटी आदि को लड़के के घर पूछी लेजाती है।
बधिक० गु० पु० लेहड़ी हत्यारा, फांसियारा बहेलिया, कसाई।
बधिया० ना० स्त्री० पशुओं में जो अण्डहीन हुआ।
बधिर० गु० बहिरा।
बधू०
बधूटी० } ना० स्त्री० बहू, पुत्रकी स्त्री।
बध्य० गु० जो वध करनेके योग्यहै।
बन० ना० पु० वन, पानी।
बनज० ना० पु० वाणिज, व्योपार, कमल।
बनजारा० ना० पु० अनका व्योपारी जो बैलों पर अन्न लादकर लेजाता है।
बनजारी० ना० स्त्री० बनजारा की स्त्री, तम्बू विशेष अथवा सीमा जो चाल।
बनठन० गु० शृङ्गारयुत, सवारी, सजधज से।
बनत० ना० पु० गोटसे बुनीहुई वस्तु विशेष जो गामार लिये टापी आदि में लगाते हैं।
बनराई० ना० स्त्री० पाधाविशेष।
बनना० अ० क्रि० रूपपकड़ना तैयार होना, बसा।
बनपड़ना० अ० क्रि० बाता सुधरना।
बनप्रिय० ना० स्त्री० कोयल।
बनमजरी० ना० स्त्री० तमाल।
बनमाल०
बनमाला० } ना० स्त्री० माला जो बहुपुष्पों से गुथी और लम्बी पांव तक होती है।
बनमालिका० ना० स्त्री० वराहक्रान्ता, बन माला।
बनमाली० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एकनाम।
बनरा० ना० पु० दुलहा।
बनरी० ना० स्त्री० दुलहन।

बफारा० ना० पु० बाफ, भाफ।
बबुआ० ना० पु० लड़का, बालक।
बबूल० ना० पु० वृक्ष विशेष, कीकड़।
बम० ना० स्त्री० सोता, पुर्ती।
बमकना० अ० क्रि० उमरना, सूजना, फूलना।
बम्बई० ना० पु० देश वा नगर विशेष।
बम्बा० ना० पु० कूप विशेष, सोता, यंत्र विशेष।
बया० ना० पु० पक्षीविशेष, निरखी।
बयार० ना० पु० वायु, पवन, हवा।
बयाला० ना० पु० रोशनदान, धुधुका, गु० जिस वस्तु में बाई रहती है।
बयालीस० गु० चालीस और दो, ४२।
बयासी० गु० अस्सी और दो, ८२।
बर० ना० पु० आशीर्वाद, पदार्थ, दुलहा, थान की चौड़ाई, कार्ड वृक्ष वरदान, ना० स्त्री० बिरनी, गु० श्रेष्ठ, सुंदर, अभिराम।
बरई० ना० पु० तम्बोली।
बरखना० अ० क्रि० बरसना।
बरगत०, बरगद० ना० पु० बड़, वृक्ष विशेष।
बरजना० स० क्रि० निषेध करना, हटकना, मारना, रोकना।
बरत० ना० पु० व्रत बर्त्त, चमोटी, चमड़े की रस्सी जिस से पुलका पानी खींचते हैं, गु० जलत, धधकत।
बरतना० स० क्रि० बाचना, विचारना।
बरतनी० ना० स्त्री० अक्षरौरी, वर्णमाला।
बरदैत० ना० पु० भाट, दसौंधी, बानावाले।
बरध० ना० पु० बैल, वृषभ।
बरधना० स० क्रि० गौ और बैलकाप्रसगहोना।
बरधाना० स० क्रि० गौका बैल से प्रसग कराना।
बरन० ना० पु० वर्णन, अव्यय तौ भी, किंवा, बल्कि।
बरमन० ना० पु० बर्मा।
बरना० ना० पु० वृक्ष विशेष, स० क्रि० विवाह करना अ० क्रि० जलना, धधकना, नदी विशेष।
बरनी० ना० स्त्री० पपनी।
बरयस० ना० पु० बल बलात्कार, प्रबलता।
बरव० ना० पु० पक्षी विशेष।
बरवट० ना० पु० रोग विशेष, सर्प विशेष, बरवस, बरियाई।
बरवा० ना० पु० छन्द विशेष, कारा मछलीमारने का ना० स्त्री० रागिनीविशेष जिससे हरिण और सर्प मोहता है।
बरस० ना० पु० वर्ष, मोदक वस्तु विशेष जो अफीम से बनती है।
बरसगाठ० ना० स्त्री० जन्मदिन, जन्मदिन में सर्वदा गाठ बांधने का व्यवहार।
बरसना० अ० क्रि० पानी पड़ना।
बरसवान० गु० वर्षा सवती, वार्षिक।
बरसौड़ी० ना० स्त्री० वर्ष का भाड़ा या कर, वार्षिक।
बरहा० ना० पु० खेत जिसमें गौचराते हैं, रस्सा चमोगी, खेतमें पानी लहाने का मार्ग, पुत्रजन्म के बारहवें दिन का व्यवहार।
बरा० ना० पु० बड़ा, भोजन में व्यंजन विशेष, स्त्री० बाकुची, गु० अच्छी स्त्री।
बराक० ना० पु० वराक, दयता।
बरात० ना० स्त्री० दूलह और उसके साथी।
बराती० ना० पु० विवाह के योतहारी।
बराना० अ० क्रि० परे रहना, अलग होना, आचार करना तजना, छोड़ना।
बराय० ना० पु० सयम, अलगाव।
बरियाई० ना० स्त्री० बड़ाई, उमग, बरबस।
बरियाय० ना० पु० बरट, जबरदस्ती।
बरियार० गु० बलवान्, प्रबल, तेजस्वी।
बरियारा० ना० पु० पौधा विशेष, बरेरा।
बरी० ना० स्त्री० कली, बड़ी औषधि की गला वर्ग, विवाही।

बरीस० } गु० वर्ष, वाक्ये यथा, कृष्णावस्था
बरीसा० } पाच बरीसा, जब राधिका प्रथम दिन दीसा।
बरु० अव्य० चाहो, अगर्चि।
बरेठन० ना० स्त्री० धोबिन्।
बरेठा० ना० पु० धोबी।
बरेरा० ना० पु० बिरवा विशेष, बिरनी।
बरै० ना० स्त्री० तम्बोली।
बरैन० ना० स्त्री० तम्बोलिन्।
बरोठा० } ना० पु० ड्योढ़ी।
बरौठा० }
बर्छा० ना० पु० } भाला विशेष।
बर्छी० ना० स्त्री० }
बर्छैत० ना० पु० भालैत, भाला मारनेवाला।
बर्त० ना० पु० काम, अभ्यास, बरत।
बर्तन० ना० पु० बासन, भाड़े, पात्र।
बर्तना० स० क्रि० काममें लाना।
बर्मा० ना० पु० बेधक, बढ़ई का अस्त्र विशेष।
बर्माना० स० क्रि० बेधना, छेदना।
बर्म्हा० ना० पु० देशविशेष जो भारतखण्ड के पूर्व है।
बर्रै० ना० पु० कुसुम का बीज, डङ्कदारकीटा विशेष।
बर्वै० ना० पु० भाषाका छन्दविशेष।
बर्ष० ना० पु० वर्ष।
बर्षात० ना० स्त्री० वर्षा, प्रावृट्।
बर्षाती० ना० पु० घोड़े के पैर में रोगविशेष गु० जो वर्षातमें उपजता वा सब बरसताहो।
बर्षाना० स० क्रि० पनी गिराना, ना० पु० ब्रजमें नगर विशेष।
बर्षी० ना० स्त्री० बरसवेंदिन का श्राद्ध।
बर्हं० ना० पु० मोरपख।
बर्ही० ना० पु० मोर, मयूर।
बल० ना० पु० सामर्थ, श्रीबलदेवजी, बली, ऐंठन, दल, वीर्य्य, धीरज, दैत्य विशेष।
बलकना० अ० क्रि० खोलना, निर्ज बड़ाई करना।
बलताड़० ना० पु० वृक्ष विशेष।
बलतोड़० ना० पु० फुड़िया जो बाल के टूटने से होती है।
बलद० ना० पु० बैल जो बोझा ढोता है।
बलदाऊ० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
बलदिया० } ना० पु० बैल का लादने हारा
बलदी० } या बैल का चलाने या चराने हारा।
बलदेव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र के ज्येष्ठ भ्राता।
बलना० अ० क्रि० जलना।
बलिबकरा० ना० पु० बलिका बकरा, युद्ध में जो विना लड़े मारा जावे।
बलबलाना० अ० क्रि० उबलना, कामातुर होना।
बलबीर० ना० पु० श्रीबलदेवजी वा श्रीकृष्ण।
बलभद्र० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
बलम० ना० पु० पीतम, स्वामी, पति।
बलमा० ना० पु० पीतम, स्वामी, पति, प्रियतम राग विशेष जो होली में गाते हैं।
बलराम० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
बलवन्त० गु० पराक्रमी, सामर्थी, योद्धा।
बलवर्द्धक० गु० बलका बढ़ाने हारा।
बलवान्० गु० बलवन्त।
बलही० ना० स्त्री० आगी, भार।
बलाईलेना० स० क्रि० और की दुर्गति के आप चाहना।
बलात्कार० ना० पु० बरबस, अनिच्छा से काम कराना, जबरदस्ती।
बलाराति० ना० पु० इन्द्र, देवराज।
बलि० ना० पु० भोजन, भाग, अंश, पूजा, गन्धक, सदवद, राजा विशेष, ना० स्त्री० याथापर, लहरी।
बलित० गु० भरा, परा, बल सयुक्त।

बलिदान० ना० पु० देवता के हेतु पशु का अर्पण।

बलिपुष्ट०
बलिभुक्०
} ना० पु० कौआ, काग।

बलिरसा० ना० स्त्री० गंधक।

बलिष्ठ० गु० बलवान्, पहलवान।

बलिहारी० ना० स्त्री० न्योछावर, कुर्बान।

बली० गु० बलवान, पहलवान, वीर।

बलीमुख० ना० पु० वानर, कपि, बंदर।

बलीवर्द० ना० पु० बरद।

बलुआ० गु० बालूमय।

बलूला० ना० पु० बुलबुला।

बलेंडा० ना० पु० बवण्डर, बौंड़रा, बड़ीबलड़ा।

बलेंड़ी० ना० स्त्री० लम्बी धरनि, जो दो छप्परों के बीच में रखते हैं।

बलिर० क्रि० बकवादकर, निज बड़ाई कर।

बवगुजा० ना० स्त्री० बकुची।

बल्पा० ना० स्त्री० असगंध।

बल्लकल० ना० पु० मोठ अन्न।

बल्लकी० ना० स्त्री० वीण, तम्बूरा।

बल्लम० ना० पु० भाला, सेल।

बल्लरी० ना० स्त्री० बेल, गुरुच।

बल्लरीकोष्ठ० ना० पु० हरसिंगार।

बल्ला० ना० पु० लट्ठा, दण्ड, लम्बा बांस जिस से नाव चलाते हैं, गोवर की बनी वस्तु जो हाथी में डालते हैं।

बवंडर० ना० पु० बगूला, बगूला, बौंड़रा, पवन की गांठ।

बवासीर० ना० स्त्री० गुदा में रोगविशेष।

बवेसिया० ना० पु० गाड़, गड़िया।

बस० ना० पु० वश।

बसन० ना० पु० कपड़ा।

बसना० अ० क्रि० रहना, मराहाना, ना० पु० कपड़ाविशेष जिसमें पान रखते हैं।

बसनी० ना० स्त्री० हसिया, थैली।

बसाना० स० क्रि० आबाद कराना, अ० क्रि० गंध देना।

बसूला० ना० पु० बढ़ई का अस्त्र विशेष।

बसूली० ना० स्त्री० ईंट काटने के लिये अस्त्रविशेष छोटा बसूला।

बसेंधा० गु० सना, उबसा।

बसेरा० ना० पु० बकस, सायंकाल, बसना।

बसोवास० ना० पु० बसगति।

बस्ता० ना० स्त्री० वस्तु, चीज।

बस्ती० ना० स्त्री० ग्राम, गांव, नगर, बढ़ावा।

बस्ता० ना० पु० बटन।

बहकना० अ० क्रि० निराश होना, भटकना, भूलना।

बहकाना० स० क्रि० निराश करना, भटकाना, भुलाना, बहकाना।

बहंगी० ना० स्त्री० जिसमें कहार बोझ लेचलते हैं।

बहजाना० अ० क्रि० बहना, बिगड़ना, उजड़ना।

बहत्तर० गु० सत्तर और दो, ७२।

बहना० अ० क्रि० चलना, भसना, उमड़ना, मर्याद से बाहर जाना, भूलजाना।

बहनेऊ० ना० पु० बहिनकास्वामी, बहनोई।

बहंली० ना० स्त्री० ल पालक, बहन।

बहनोई० ना० पु० बहनका पति।

बहनेटा० ना० पु० बहनका बालक।

बहर० ना० स्त्री० अनेक मौजा।

बहरा० गु० बधिर, जिसको सुनाई नहीं देता है।

बहरिया० गु० अनजान, बाहरका।

बहरी० ना० स्त्री० पक्षीविशेष जो कबूतर को पकड़ लेता है।

बहल० ना० स्त्री० चलन की गाड़ी।

बहलाना० अ० क्रि० मनप्रसन्न रहना वा करना।

बहलाना० स० क्रि० खिलाना, खिलाना मन प्रसन्न करना।

बहलिया० ना० पु० आखेटकी, वधिक, धनुर्धर, नीचजाति विशेष।
बहली० ना० स्त्री० छोटी बहल।
बहाना० स० क्रि० चलाना, भसाना, उमकाना भुलाना, मर्यादा बाह्य चलाना।
बहाव० ना० पु० अहिला, बाढ़ प्रवाह।
बहिः० अव्य० बाहर।
बहिःकोण० ना० पु० बाहरका कोना।
बहिजाना० अ० क्रि० पतित होना, बहना, बिगड़जाना, खराब होना।
बहिन० ना० स्त्री० भगिनी, अनुजा।
बहिरन्तर० अव्य० बाहर, भीतर।
बहिरा० गु० बधिर, बहरा।
बहिराना० स० क्रि० बहलाना, अ० क्रि० निकलना।
बहिर्देश० ना० पु० बाह्यस्थान, बाहरकादेश।
बहिर्मुख० ना० पु० धर्मकरने में अचेत, अभगत।
बही० ना० स्त्री० महाजनों के हिसाब की पोथी, खसरह, खाता।
बहीर० ना० स्त्री० सेना के संग जो भीड़आदि सामग्री।
बहु० गु० बहुत, ढेर, अनेक।
बहुकाल० ना० पु० अनेक दिन, बहुत दिन।
बहुकालीन० गु० बहुत दिनों का।
बहुत० गु० अधिक ढेर, बड़ा।
बहुतात० } ना० स्त्री० अधिकता, सरसाई, विस्तार, ज़ियादती।
बहुतायत० }
बहुतेरा० गु० अनेक, अधिक।
बहुत्व० ना० पु० बहुतायत।
बहुदर्शी० ना० पु० जिसने बहुत देखा है।
बहुधा० अव्य० अनेक प्रकारसे, बहुत प्रकार, कईबार, अक्सर।
बहुनयन० }
बहुनेत्र० } ना० पु० इन्द्र।
बहुनैन० }
बहुपद० ना० पु० बरगदवृक्ष।
बहुपत्रा० ना० पु० भौंरा, भ्रमर।
बहुपुट० ना० पु० भोजपत्र।
बहुपुत्रिका० } ना० स्त्री० बड़ी शतावर, बहुतबेटी।
बहुपुत्री० }
बहुबाहु० } ना० पु० बाणासुर, नागार्जुन, रावण, गु० जिसके बहुत भुजा हों।
बहुभुज० }
बहुभुजक्षेत्र० ना० पु० बहुतमेंडों का खेत।
बहुमञ्जरी० ना० स्त्री० तुलसी।
बहुमूल्य० } गु० महँगा वा जिसका बहुत मोल है, क़ीमती।
बहुमोल्य० }
बहुर० अव्य० फेर, पुनि।
बहुरंगी० गु० अनेक रंग का अथिर।
बहुरना० अ० क्रि० फिरना, फिरआना।
बहुराना० स० क्रि० फेरलाना, फिराना।
बहुरि० अव्य० पुनः फेर।
बहुरिया० ना० स्त्री० वधू, बहू।
बहुरूपा० ना० पु० शरट।
बहुरूपिया० } ना० पु० भांड़, स्वांगी।
बहुरूपी० }
बहुरूप्य० ना० पु० भांड़ैती।
बहुल० } गु० बहुतायत, अधिकता, इफ़रात।
बहुलता० }
बहुलच्छद० ना० पु० सहिंजनवृक्ष।
बहुला० ना० स्त्री० छोटी कटाई।
बहुवचन० ना० पु० अधिकत्व, संख्या का बोधक, प्रत्यय, बहुतबातें।
बहुविध० } गु० अनेक प्रकार, बहुधा।
बहुविधि० }
बहुव्रीहि० ना० पु० समासविशेष।
बहुशः० अव्य० बारम्बार, बार बार।
बहू० ना० स्त्री० वधू, दुलहन।
बहेड़ा० ना० पु० फलविशेष।
बहेतू० ना० पु० लुच्चा, फिरन्ता, गु० बहाहुआ।
बहेलिया० ना० पु० बधिक, चिड़ीमार।
बहोरना० स० क्रि० फिराना, लौटाना।
बहोरि० अव्य० फिर, बहुरि।

बांक० ना० पु० भाजूविशेष, कटारविशेष, फेर, टेढाई, घुमाव, दोष।
बांकपन० ना० पु० टेढापन, छबीलापन, सुचपन।
बांका० ना० पु० छैला, अकैडैत, बांसकाटने का अस्त्र विशेष, गु० टेढा।
बांबी० ना० स्त्री० सांप का बिल।
बांगा० ना० स्त्री० बिनौला समेत रुई, पीले सरसों।
बांचना० स० क्रि० पढ़ना।
बांजर० ना० पु० बंजर, विना जोती बोई धरती।
बांझ० ना० स्त्री० बन्ध्या।
बांट० ना० पु० भाग, अंश, बटखरा।
बांटना० स० क्रि० भागकरना, पीसना।
बांड़ा० गु० पूछ विना पशु, मनुष्य जिसके कोई नहीं रहा, सर्प पूछरहित।
बांड़ी० ना० स्त्री० लठ, लकड़।
बांदा० ना० पु० आकाशलता जो वृक्षपर होती है।
बांदी० ना० स्त्री० लौंडी, दासी।
बांध० ना० पु० मेड़, बन्ध, पुल।
बांधना० स० क्रि० जकड़ना, गांठना, लगाना, बन्दकरना, बनाना, लटकाना, लपेटना, उठाना, तवाना।
बांधनू० ना० पु० रंगनेकीरीतिविशेष, कलंक, उपाय, रेशमी कपड़ाविशेष, तोताविशेष।
बांस० ना० पु० वृक्षविशेष, तालाबआदिनापने के लिये मापकविशेष।
बांसफोड़ा० ना० पु० जातिविशेष जो बांस की वस्तु बनाता है।
बांसली० ना० स्त्री० मुरली, वंशी।
बांसा० ना० पु० नासिका की हड्डी।
बांसी० ना० स्त्री० मुरली, छोटाबांस, बांस से बनी हुई वस्तु, बांस का फल।
बांसुरी० ना० स्त्री० मुरली।
बांह० ना० स्त्री० बाहु।

बांहिया० गु० पक्षी, चोरी तरफदार।
बाई० ना० स्त्री० महाराष्ट्रों में, स्त्रियों का नाम, कंचनी बात अन्य० जीर्ण।
बाईस० गु० बीस और दो, २२।
बाईसी० ना० स्त्री० राजा की फौज बाईस हजार पलटन प्रधानता।
बाकला० ना० पु० तरकारी विशेष।
बाकस० ना० पु० झाड़ी जिसके कोयलों से बारूत बनाते हैं।
बाखर० } ना० पु० अंगनाई, कई एकघर
बाखल० } जो एक हाते के भीतर हों।
बाग० ना० स्त्री० लगाम।
बागडोर० ना० स्त्री० लम्बी बाग, लगामकी रस्सी।
बागा० ना० पु० जोड़ा, खिलत, पहिरने का वस्त्र विशेष।
बागी० ना० पु० असवार, घुड़चढ़ा।
बाघ० ना० पु० व्याघ्र, शेर।
बाघन० } ना० स्त्री० व्याघ्री, शेरनी।
बाघनी० }
बाघम्बर० ना० पु० बाघकी खाल।
बाघा० ना० पु० बाघ।
बाछ० ना० स्त्री० चुनाव, छांट, दईसह, लगान होंठके दोनोंओरके कोने, गु० निकम्मा।
बाछना० स० क्रि० चुनना, छांटना।
बाजगाज० ना० पु० अनेक बाजों का इकट्ठा शब्द।
बाजन० ना० पु० कई एक बाजा।
बाजना० अ० क्रि० बजना, प्रकट होना, भिड़ना।
बाजड़ा० ना० पु० वाद्य, ढोल आदि, गु० भिड़
बाजा० ना० पु० वाद्य, ढोल आदि, गु० भिड़ गया।
बाजी० ना० पु० घोड़ा।
बाजू० ना० पु० बांहमें पहिरने का गहना विशेष
बाहा० अव्य० बाहर।

वाह्यालय० ना० पु० मंदिर के बाहर।
वाट० ना० स्त्री० मार्ग, राह, पथ।
वाट० ना० पु० बाट जो पत्थर आदि के होते हैं।
वाड़० ना० स्त्री० धार, पार, सिपाहियों की पंक्ति।
वाड़व० ना० पु० ब्राह्मण।
वाड़वाग्नि० } ना० पु० जल में की अग्नि।
वाड़वानल० }
वाढ़ा० ना० पु० हाता, घेर, मंदिर, भूर, स्थान।
वाड़िया० ना० पु० बाड़ बनाने हारा।
वाड़ी० ना० पु० उपवन विशेष, उपवन समेत जो घर।
वाढ़० ना० स्त्री० धार, बढ़ती, अधिकाई, सरसई, जलार्णव, अहिला, बहिया।
वाढ़ना० } अ० क्रि० बढ़ना, उमण्डना।
वाढ़नो० }
वाण० ना० पु० शर, बाध, खाट की रस्सी।
वानप्रस्थ० ना० पु० तृतीयाश्रमी अर्थात् जो स्त्री प्रसंग रहित हो परंतु स्त्री के साथ रहे।
वाणा० ना० पु० मूंज।
वाणासुर० ना० पु० दैत्यविशेष, राजाबलि का पुत्र।
वाणिज्य० ना० पु० व्योपार, तिजारत, सौदागरी।
वाणी० ना० स्त्री० सरस्वती, आवाज।
वात० ना० स्त्री० वार्त्ता, वाणी, वचन, कारण, कारज, समाचार, पवन।
वातकीवातमें० अव्य० अभी, तुरंत।
वाती० ना० स्त्री० बत्ती, दीपक की बत्ती, छप्पर की बत्ती।
वातूनिया० } गु० बड़बड़िया, चर्चेत, बड़ा बतबड़ा, बकवादी।
वातूनी० }
वादल० ना० पु० मेघ।
वादला० ना० पु० सोनेरूपे का तारविशेष, छप्पा।
वादली० ना० स्त्री० छप्पा।
वादुर० ना० पु० चमगीदड़।
वाध० ना० पु० निवारण, रोक, खाट बुनने की रस्सी।
वाधक० ना० पु० जो बाधकरे, प्रतिबंधक, दुःखदाता।
वाधा० ना० स्त्री० दुःख, पीड़ा, अटकाव, रुकाव, मिथ्या, आफत।
वाध्य० गु० बाधने के योग्य।
वान० ना० स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल, यथा, तुलसी यह मन तजत नहिं धुरबिनिया की बान, ना० पु० वाण, खाटबुनने की रस्सी।
वानगी० ना० स्त्री० नमूना, सरीखा, दृष्टांत।
वानवे० गु० नब्बे और दो, ९२।
वाना० ना० पु० स्वभाव, व्यवहार, अस्त्र विशेष, कपड़े की ब्योंत, भर्ती, भेष, निशानी, प्रतिज्ञा, फैलाना।
वानि० ना० स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल।
वानिक० ना० पु० बनाव, चलाव, सनाव।
वानी० ना० स्त्री० वाणी।
वानीवोली० ना० स्त्री० बिनवाई।
वानूआ० ना० पु० जलपक्षी विशेष।
वानूसा० ना० पु० } वस्त्र विशेष।
वानूसी० ना० स्त्री० }
वानैत० गु० बानावाले, बानधारी, और धनुर्धर।
वान्धव० ना० पु० भाई, नतैत, सम्बन्धी।
वाप० ना० पु० पिता, जनक।
वापड़ा० ना० पु० बापुरो।
वापरो० } गु० तुच्छ, नीच, दीन, कंगाल, असमर्थ।
वापुरो० }
वाफ० ना० स्त्री० भाफ, बफारा।
वावर० ना० पु० मिठाईविशेष।
वावा० ना० पु० नानक, दादा, बूढ़ा, बालक सन्यासी।
वावू० ना० पु० बालक, राजा, स्वामी।
वाम० ना० स्त्री० बामा, औरत।
वाम्हन० ना० पु० ब्राह्मण।

बाम्हनी० ना० स्त्री० औषधि पौधा विशेष, बमनियां, ब्राह्मणी, अमराहारी, सोमराज, त्रिय वसा।
बायन० ना० पु० न्यहारी, मिठाई आदि जो मित्रों के घर भेजते हैं।
बायव० गु० दूसरा अलग, ना० पु० वायुकोण।
बायव्य० ना० पु० वायुकोण।
बायां० गु० बामा, दक्षिणांग के विपरीत अंग।
बायो० क्रि० फैलाया, पसारा।
बार० ना० पु० द्वार, दिन, बालक, बल, ना० स्त्री० समय, भीर, बाला, स्त्री।
बारण० } ना० पु० हाथी, निवारण, रुकावट।
बारन० } रुकावट, बचाना, न्योछावर।
बारना० स० क्रि० निछावर करना, स० क्रि० निछावर करना, जलाना।
बारनारि० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया।
बारम्बार० अव्य० बारबार, प्रतिक्षण, पुनर्वार।
बारह० गु० द्वादश, १२।
बारहखड़ी० } ना० स्त्री० द्वादश मात्रा जो
बाराखरी० } व्यञ्जनोंमें मिलाकर बालकों को पढ़ाते हैं।
बारासिंगा० ना० पु० हिरन, मृगविशेष।
बाराह० ना० पु० शूकर।
बाराहीकंद० ना० पु० गेंठी।
बारी० ना० स्त्री० बाड़ी, झरोखा, बिनब्याही कन्या, औसरी, बागन, ना० पु० जाति विशेष, दार, बाला, ना० स्त्री० दासी।
बारूत० ना० स्त्री० बारूद जिससे बन्दूक चलाते हैं।
बारे० ना० पु० बच्चे, लड़के।
बाल० ना० पु० सिरोरुह, बालक, बाला, मूर्ख, गूंगा, बाला, दरार, चार, रामायण का प्रथम काण्ड।
बालक० ना० पु० लड़का, नेत्रवाला औषधि।
बालकता० } ना० स्त्री० लड़काई।
बालकपन० }
बालका० ना० पु० योगी वा संन्यासी चेला।
बालछड़० ना० स्त्री० औषधि वा सुगन्धिविशेष।
बालतोड़० ना० पु० बलतोड़।
बालतृण० ना० पु० कत्था, खैर।
बालदशा० ना० स्त्री० बालकता।
बालना० स० क्रि० जलाना, सुलगाना।
बालपत्र० ना० पु० जवासा।
बालबच्चे० ना० पु० लड़केवाले।
बालभाव० ना० पु० लड़काई, बालकपन।
बालभोग० ना० पु० प्रातःकाल जो श्रीकृष्ण व देवों के निमित्त भोग लगाते हैं।
बालम० ना० पु० प्रियतम, पति, धान्यविशेष।
बालमूल० ना० पु० मूला।
बालराड़० ना० स्त्री० जो बालकपन से विधवा है।
बाला० ना० स्त्री० सोलह वर्षतक की कन्या, युवती, पाधा विशेष, जूही, ना० पु० कान के पहरने का भूषण, बालक।
बालापन० ना० पु० लड़कपन, बालकता।
बालिक्य० ना० पु० मार्ग औषधि।
बाली० ना० स्त्री० लड़की, गेहूं आदिकी बाली, कान के पहरने का भूषण विशेष।
बालुक० ना० पु० एलुआ, मुसब्बर।
बालुका० ना० स्त्री० बालू, रेत।
बालुकामय० गु० रेतीला, रेतला, किरकिरा।
बालू० ना० स्त्री० रेत, रेणु।
बालूचर० ना० पु० गांजा विशेष।
बाल्मीक० ना० पु० मुनि विशेष, रामायणकर्त्ता।
बाल्य० } ना० स्त्री० लड़काई, बालकता।
बाल्यावस्था० }
बाल्हिक० ना० पु० घोड़ा।
बाल्हीक० ना० पु० हींग, देश विशेष।
बाव० ना० पु० वायु।
बावग० ना० पु० बोवाई, बौआरा।
बावगोला० ना० पु० वायुशूल।
बावभक्ष० गु० गप्पी, बकी।

बावड़ी० ना० पु० बड़ा कूप।
बावयतास० ना० स्त्री० देवमस्ती, दुर्गति, आपदा।
बावन० गु० पचास और दो, ५२ बोना, ना० पु० श्रीविष्णुनारायण का पांचवां अवतार।
बावर० गु० बावला, अगाधी, बकवादी, अधर्मी।
बावरि० ना० स्त्री० मृगबन्धनी, बागुरि, गु० सिड़न।
बावला० गु० विक्षिप्त, सिड़ी।
बावली० ना० स्त्री० बड़ाकूप, घोवा, बिल-सिड़न।
बावसड़ना० अ० क्रि० पादना, गुदा से पवन का निकलना।
बावशूल० ना० पु० वायुशूल, पेटमें रोगविशेष।
बास० ना० पु० बसने का स्थान, ठांव, ना० स्त्री० गन्धि, महक।
बासन० ना० पु० बरतन, पात्र।
बासना० स० क्रि० सोंधाना, महकाना, ना० स्त्री० अभिलाषा, इच्छा, सुगन्धि।
बासन्ती० ना० स्त्री० औषधिविशेष।
बासा० ना० पु० धूरी प्रसिद्ध, रहनेकास्थान।
बासित० गु० सुगन्धित कपड़े पहनेहुये।
बासी० गु० भोजनादि जो कलकापका है, महकीला, बासयुत।
बाह० ना० पु० घोड़ा।
बाहक० ना० पु० बहनेहारा।
बाहन० ना० पु० वाहन, सवारी।
बाहना० स० क्रि० अस्त्रचलाना वा फेंकना, भैस का गर्भिन वा प्रसंगित होना।
बाहर० अव्य० बहिः, परदेश।
बाहिनी० ना० स्त्री० सेना।
बाहु० ना० स्त्री० भुजा, बांह।
बाहुदा० ना० स्त्री० नदीविशेष जो हिमालय से निकलती है।
बाहुदेना० अ० क्रि० हाथ पकड़ना।
बाहुमुख० ना० पु० हाथ।
बाहुयुद्ध० ना० पु० मल्लयुद्ध, कुश्ती।
बाहुलेय० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
बाहुल्य० ना० पु० } आधिक्य, अधिकाई, बाहुल्यता० ना० स्त्री० } बहुतायत।
बिआरी० ना० स्त्री० बयाल, सायंकालकाभोजन।
बिजन० ना० पु० व्यंजन।
बिक० ना० पु० हुण्डार, भेड़िया।
बिकट० गु० कठिन, भयानक, भयंकर, टेढ़ा, प्रबल।
बिकना० अ० क्रि० खपना, बिकजाना।
बिकरार० } गु० भयानक, भोंडा, भयंकर, बिकराल० } टेढ़ा, डरौना, कठिन।
बिकल० गु० व्याकुल, निरिथर, घाबड़ा।
बिकलता० स्त्री० } व्याकुलता, घबड़ाहट, बेचै-बिकलत्व० पु० } नी, निरिथरता।
बिकलित० गु० व्याकुल, घाबड़ा, बेचैन।
बिकल्प० ना० पु० विचार, मनसूबा, तर्क।
बिकसन० ना० पु० प्रकाश, हर्ष, फूलन।
बिकसना० अ० क्रि० खिलना, फूलना, हर्षित होना।
बिकसित० गु० प्रफुल्लित, हर्षित, फूलाहुआ।
बिकसोभगड़ा० ना० पु० मँजीठ।
बिकाऊ० गु० बिकनेहारा।
बिकाना० अ० क्रि० बिकजाना, स० क्रि० बेचवाना।
बिकाव० ना० स्त्री० बिक्री।
बिकास० ना० पु० प्रकाश, फैलाव, दिखिलावा, हर्ष, आनन्द।
बिकी० ना० स्त्री० खपत, घटती, मांग, बेचना, चर्चित, मर्दित।
बिखरना० अ० क्रि० बिथरना, फैलना, भाषित होना।
बिगड़ना० स० क्रि० नाश वा भ्रष्ट होना, भगड़ना,
बिगाड़० ना० स्त्री० हठ, लड़ाई।

बिगसन० ना० पु० विकसन, खिलना।
बिगसना० अ० क्रि० विकसना, खिलना, फूलना।
बिगहा० ना० पु० बीघा।
बिगाड़० ना० पु० भगता, तोड़, लड़ाई झगड़ा।
बिगाड़ना० स० क्रि० नसाना, टाटा देना, मित्रों में लड़ाई कराना।
बिगोना० स० क्रि० भुलाना, छुपाना, भ्रष्टकरना।
बिघन० ना० पु० विघ्न।
बिच० अव्य० बीच।
बिचकना० अ० क्रि० निराशहोना, भागजाना, अंगीकार करके बदलजाना।
बिचकाना० स० क्रि० निराशकरना न मानना, वचन तोड़ना।
बिचल० गु० चलायमान, अचल।
बिचलना० अ० क्रि० फिरना, घूमना, चलना, बिछलना।
बिचली० गु० भागी, घूमी, घबड़ानी।
बिचवई० ना० पु० बिचवानी, जामिन।
बिचार० ना० पु० विचार, सोच, बूझ, ध्यान।
बिचारक० ना० पु० विचारी, सोचा, बूझन हारा, न्यायक।
बिचारना० स० क्रि० सोचना, ध्यानकरना, याचना, समझना।
बिचारित० गु० सोचाहुआ, विचाराहुआ, बूझा, समझा।
बिचारी० गु० विचारी, विचारक।
बिचाली० ना० स्त्री० पाआरवाल।
बिचौलिया० ना० पु० मध्यस्थ, विसरैत।
बिच्छू० ना० पु० वृश्चिक, जन्तुविशेष।
बिछना० अ० क्रि० फैलना, पसरना।
बिछरना० अ० क्रि० भिन्नहोना, जुदाहोना।
बिछराहट० ना० स्त्री० भिन्नता।
बिछलो० } अ० क्रि० सिसलना, डिसलना,
बिछलना० } भिन्न भिन्नहोना, निलगना।

बिछवाना० स० क्रि० फैलाना, पसराना।
बिछाना० स० क्रि० फैलाना, पसारना।
बिछुआ० ना० पु० कटारविशेष, पैरोंकाभूषण।
बिछुड़ना० अ० क्रि० बिछलना।
बिछुरन० ना० पु० वियोग, जुदायगी।
बिछुरना० अ० क्रि० वियोगहोना, जुदाहोना।
बिछोना० स० क्रि० भिन्नकरना, बिलगाना।
बिछोह० } ना० पु० वियोग, जुदायगी, विरह।
बिछोहा० }
बिछौना० ना० पु० बिस्तर, सज।
बिजना० ना० पु० पखा, बना।
बिजली० ना० स्त्री० विद्युत्, चचला, वज्र।
बिज्ञान० गु० अज्ञान, मूर्ख, जो कुछ नहीं जानता।
बिजायठ० ना० पु० बाहका गहनाविशेष।
बिजार० ना० पु० साड़ बैल।
बिजाला० गु० बाज सयुक्त।
बिजया० ना० स्त्री० भग, बूटी।
बिझकना० अ० क्रि० चौंकना, डरना, भाग जाना बदलजाना।
बिझका० गु० चौंका, चौंकेल, भागा, डराभया।
बिझकाना० स० क्रि० चौंकाना, डरवाना, भगाना, न मानना, बदलना।
बिट० ना० पु० बीट, विष्ठा।
बिटचर० ना० पु० शूकर, घरेला।
बिटना० अ० क्रि० बिथुराना, छिटकना, गिर जाना।
बिटप० ना० पु० वृक्ष का नया बेल, पल्लव, पसराव, गुच्छा।
बिटाना० स० क्रि० छिटकाना, बिथराना, गिराना।
बिठाना० स० क्रि० बैठाना।
बिडकम० ना० पु० बटेरादि पक्षी, रामचन्द्रि कायां यथा, बिडकमधन पूरे मदि के बान जीवे।
बिडरना० अ० क्रि० भागजाना डरजाना।

विडार० ना० पु० बनबिलाव, भगौड़ा।
विडारना० स० क्रि० भगाना, बिचलाना, डराना।
विडारी० गु० भगाई।
विडौजा० ना० पु० इन्द्र।
विढ़ई० ना० स्त्री० कमाई, फायदा उठाया, निनौरी।
वित्त० ना० पु० धन, द्रव्य, वस्तु, सामर्थ्य।
वितना० अ० क्रि० व्यतीत होना, गु० छोटा ना० पु० बितरित, बालिश्त।
वितताना० गु० घबरानी, बिललानी।
वितरना० स० क्रि० देडालना, दान करना।
विताना० स० क्रि० गँवाना, काटना, व्यतीत करना।
वितीत० ना० पु० व्यतीत।
वित्त० ना० पु० वित्त, धन, द्रव्य।
वित्ता० ना० पु० बितरित, बालिश्त।
वित्तिया० ना० पु० बौना, बावा, ठुमका।
विथरना० अ० क्रि० छितरना, बिलरना।
विथराना० स० क्रि० तितराना, छिटाना, छिड़काना, बितराना।
विथा० ना० स्त्री० पीड़ा, आपदा।
विथुरना० अ० क्रि० बिथरना, पसरना।
विथुरा० ना० पु० दुःख, पीड़ा गु० छितराहुआ।
विदरना० अ० क्रि० फरना, चिरना।
विदा० ना० स्त्री० रुखसत करना।
विदारन० ना० पु० फाड़ना, तोड़ना।
विदारना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना।
विध० ना० स्त्री० विधि।
विधना० ना० पु० विधाता, ब्रह्मा।
विधावट० ना० स्त्री० साल, छेद।
विन० अव्य० बिना।
विनती० ना० स्त्री० विनय, प्रार्थना, बड़ाई करना।
विनना० अ० क्रि० विनजाना।
विनवाई० ना० स्त्री० विनाई।
विनसना० अ० क्रि० नशाना, बिगड़ना।
विना० अव्य० रहित, बिन।
विनाई० ना० स्त्री० बिनने का काम या पैसा।
विनाना० स० क्रि० बिनवाना, उठाना।
विनावट० ना० स्त्री० बिनने का काम।
विनु० अव्य० रहित, छोड़ि।
विनौना० स० क्रि० विनती करना अरचना, पूजना, भजना, छाटना।
विनौला० ना० पु० रुईका बीज।
विनौली० ना० स्त्री० छोटाओला जो आकाश मार्ग से बरसताहै।
विन्द०, विन्दी० } ना० स्त्री० बिंदु।
विन्धना० स० क्रि० डसना, डकियाना, अ० क्रि० छिदना, फसना।
विन्ना० स० क्रि० बुना, जाली गिरालेना, चुनना।
विपत०, विपता०, विपत्ति० } ना० स्त्री० विपत्ति, आफत।
विफनी० अ० क्रि० बिड़ना, दुखित होना। मगरा, हठीला या ढीठहोना।
विया० ना० पु० बीज।
वियारी०, वियालू० } ना० स्त्री० सायङ्काल का भोजन, परन्तु का भोजन।
वियाह० ना० पु० विवाह।
विरकट० ना० पु० योगी विशेष, गु० जिसका मा उत्पत्ति है।
विरचन० ना० पु० बेरवा आग।
विरद० ना० पु० यश, स्तुति, बाँकाना और, हथियार।
विरदावलि० ना० स्त्री० सुयश, स्तुति।
विरमना० अ० क्रि० रहना, विलम्बकरना।
विरमाना० स० क्रि० ठहराना, अटकाना बसने रहने करना।
विरवा० ना० पु० वृक्ष छोटा वृक्ष, पौधा।

बिरह० ना० पु० वियोग।

बिरहा० ना० पु० वियोग धोबियों का गीत विशेष।

बिरहित गु० वियोगित।

बिरहिनी० गु० विरहिनी, वियोगिनी।

बिरहिया० ना० स्त्री० विरहिनी।

बिरही० गु० जो पुरुष अपनी सजनी से बिछड़े।

बिराजना० अ० क्रि० प्रकाशित या प्रज्वलित होना, स्वाधीन होके सुख भोग करना, शोभित होना, बैठना।

बिराट्० ना० पु० जगद्रूप, ईश्वर, जगत्,राजा धिराज, देशविशेष, राजाविशेष।

बिराना० गु० पराया, स० क्रि० चिढ़ाना, सताना।

बिराम० गु० व्याकुल, स्थिर, मादा।

बिरिया० ना० स्त्री० समय, जून।

बिर्नी० ना० स्त्री० बर।

बिल० ना० स्त्री० सर्पादि जन्तुओं के घर या छिद्र वा भट्टा वा भार।

बिकलना० अ० क्रि० सिसकना, कूकना, किसी वस्तुपर जी लगना।

बिलख० ना० पु० दुःख, अप्रसन्नता।

बिलखना० स० क्रि० दखना, निरेखना, बिलोकना, अ० क्रि० सिसकना, अप्रसन्न होना।

बिलखाय० } अ० क्रि० अप्रसन्नहोय दुख
बिलखि० } मान।

बिलग० गु० अलग भिन्न, ना० स्त्री० भिन्नता, फूट, घृणा, बुराई।

बिलगना० अ० क्रि० अलग २ होना, फटना, फूटना, जगना, दुखना।

बिलगाना० स० क्रि० भिन्न २ करना, फोड़ना, बिछाड़ना।

बिलगाव० ना० पु० भिन्नता, बिछुराहट,अलहदता।

बिलगादी० अ० क्रि० अलग होना।

बिलगना० स० क्रि० चढावकरना, चढ़ना।

बिलनी० ना० स्त्री० अमनहारी।

बिलपना० अ० क्रि० रोना, विलापकरना।

बिलपाना० स० क्रि० रोलाना, विलापकराना।

बिलबन्द० ना० पु० निपटारा, निस्ताव।

बिलबिलाना० अ० क्रि० व्याकुलहोना, पीड़ा से दुःखितहोना, हायहायकरना, तड़पना।

बिलम्ब० ना० पु० देरा, ढील, टाल मटोल, शिथिलता।

बिलम्बना० अ० क्रि० ढीलकरना, अटकना।

बिलम्भ० ना० पु० विलम्ब।

बिलम्भना० अ० क्रि० विलम्बना।

बिल्लाना० अ० क्रि० बिलबिलाना।

बिलसना० } अ० क्रि० भोगना, तृप्तहोना,
} आनन्दित होना।

बिलस्त० ना० पु० बित्ता, बिलस्त।

बिलहरा० ना० पु० पान रखने का पात्र।

बिलहरी० ना० स्त्री० पता, छोटा बिलहरा।

बिलाई० ना० स्त्री० बिल्ली, चहूदूकड़ी आदि रगड़ने की लोह की वस्तु।

बिलाईकन्द० ना० पु० स्यामी बशर।

बिलाना० अ० क्रि० अलाना मिटना, भटकना, स० क्रि० अदेय कराना उखाड़ना, बागना, खाना।

बिलाप० ना० पु० विलाप, हाहाकार।

बिलापना० अ० क्रि० रोना, कूकना, हाहाकार करना।

बिलार० ना० पु० मार्जार, पशुविशेष, बिलौटा।

बिलाव० ना० पु० बिलार।

बिलावल० ना० पु० रागिनी विशेष।

बिलास० ना० पु० विलास आनन्द।

बिलासी० गु० विनासी।

बिलसन० ना० पु० विलास, हर्ष, तृप्ति, क्रीड़ा, सुरतभोग।

बिलासी० गु० सुखभोगी, आनन्दी, सर्प।

बिलोकना स० क्रि० दखना, निरेखना

बिलोना० } स० क्रि० मथना मँड़ना।
बिलोवना० }
बिलौटा० ना० पु० बिलार।
बिलोटिया० ना० स्त्री० बिल्ली।
बिल्ला० ना० पु० बिलार, बिलार।
बिल्ली० ना० स्त्री० बिलाई, बिल्ली।
बिल्लीलोटन० ना० पु० बिलाईकन्द, ओषधि विशेष।
बिस० ना० पु० बिष।
बिसखपरा० ना० पु० ओषधि पौधाविशेष, जन्तुविशेष जो गोहके सदृश होती है।
बिसखोपरा० ना० पु० जन्तुविशेष जो गोह के सदृश होता है।
बिसन० ना० पु० दोष, पाप, बुराई, काम, कामना।
बिसनपन० ना० पु० छलपन, लुचपन।
बिसनी० ना० पु० लुच्चा, लम्पट, गु० सुघड़, छल, छिछोर।
बिसबिसाना० अ० क्रि० बजबजाना, सड़ी हुई वस्तु से शब्द निकलना।
बिसमार० ना० पु० ओषधि, पौधाविशेष।
बिसर० ना० पु० चूक, भूल।
बिसरा० गु० भूलाहुआ, चूकाहुआ।
बिसराना० स० क्रि० भुलाना, बहलाना।
बिसर्ना० अ० क्रि० भूलना भटकना।
बिसात० ना० स्त्री० मूल, पूंजी।
बिसाध० } ना० स्त्री० कुबास, दुर्गंध।
बिसायध० }
बिसासी० ना० पु० विश्वासघाती।
बिसाना० स० क्रि० मोललेना, चलना पारुष का, वश, काबू।
बिसार्ना० स० क्रि० भुलाना।
बिसाह० ना० स्त्री० वस्तु जो मोललो, ख़रीद।
बिसाहना० स० क्रि० मोल लेना।
बिसुरना० अ० क्रि० सिसकना, हकना।
बिसेला० गु० बिषभर, जहरीला।

बिस्तर० } ना० पु० विस्तार, बढ़ाव के
बिस्तार० } बढ़ना, व्यापिवाल चौड़ाव, आकार,
बिस्तुइया० } ना० स्त्री० छिपकली।
बिस्तुई० }
बिहन० ना० पु० बीज।
बिहवल० गु० व्याकुल, भयभीत, विह्वल।
बिहरना० अ० क्रि० रीझना, हुलसना, स० क्रि० भाग करना, रिझाना, फटना।
बिहरी० ना० स्त्री० चन्दा, दामशाह।
बिहसना० अ० क्रि० हँसना।
बिहाग० ना० पु० रागविशेष जो थोड़ी रातरहे पर गाया जाता है।
बिहान० ना० पु० प्रातःकाल, तड़का, बीतगया।
बिहाना० अ० क्रि० काल काटना, बिताना, तजना, छोड़ना।
बिहाने० अव्य० सबेरे।
बिहार० ना० पु० क्रीड़ा, लीला, आनन्द देशविशेष।
बिहारस्थल० } क्रीड़ा का घर, लीलाभव
बिहारस्थली० } न, आनन्दगृह।
बिहारी० गु० खिलाड़ी, क्रीड़ाकर, ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी का एक नाम।
बिहारीलाल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी सतसई-कर्त्ता कविविशेष।
बिहून० } अव्य० रहित, बिन, बिहून।
बिहूना० }
बा० अव्य० भी।
बींडा० ना० पु० लपेटाहुआ, कागज, गट्ठा।
बींधना० स० क्रि० बेधना, छेदना।
बीघा० ना० पु० २० बिस्वा, बिगहा।
बीच० अव्य० मध्य में, अन्तर।
बीछी० ना० पु० बिच्छू।
बीज० ना० पु० वीर्य्य, अमर, जड़, मींगी, कारण, रबर, क्रिया

बीजक० ना० पु० चलान, चिट्ठी, सत्ता, विजय सार, फिहरिस्त।
बीजना० ना० पु० पंखा, बेना।
बीजार० गु० बिजेला।
बीजी० ना० स्त्री० जन्तुविशेष, नकुल।
बीझना० स० क्रि० ठेलना, रखना खोदना।
बीट० ना० स्त्री० विष्ठा, गुह।
बीटना० अ० क्रि० छलकना, ढलना बिथरना।
बाट० ना० स्त्री० पाखना का विष्ठा।
बीठा० ना० पु० विट्टा, एट्टा।
बीड़ा० ना० पु० लगाहुआ पान।
बीतना० अ० क्रि० व्यतीत होना, पूराहोजाना गुजरना, होचुकना।
बीता० गु० गुजरगया, व्यतीतहोगया, ना० पु० बितस्ति।
बीन० ना० स्त्री० वीणा, विया विशेष।
बीनना० स० क्रि० चुनना उठाना।
बीमा० ना० पु० वस्तु को टाटे समेत पहुंचान के लिये जो पैसा दियाजाता है टीका हुंडा, भाड़ा यह शब्द फारसी है।
बीर० ना० पु० भाई वार कानका भूषण।
बारता० ना० स्त्री० वीरता मर्दुमी, शूरता।

बीरबहुट्टी०
बीरबहूटी० } ना० स्त्री० लालरंगका कीड़ा विशेष।

बीरा० ना० पु० बीड़ा, भाई।
बीरी० ना० स्त्री० बीड़ा।
बीर्य० ना० पु० वीर्य, पराक्रम।
बील० ना० पु० बिल्वफल।
बीस० गु० दो दहाई, २०।
बीसा० ना० पु० चाल नखवा कुत्ता।
बीसी० ना० स्त्री० अन्नमापनेका परिमाण विशेष, गु० बीसकी।
बुन्दा० ना० पु० बिंद।
बुन्दिया० ना० स्त्री० मिठाई वा भाजनविशेष।
बुन्देला० ना० पु० बुंदलखण्डका राजपूत

बुकटा०
बुकट्टा० } ना० पु० गाल, मुट्ठीभर।

बुकनी० ना० स्त्री० चूर्ण, चूरा।
बुकलाना० अ० क्रि० धार्यापन नकरना,
बुका० ना० पु० बुकरा।
बुकी० ना० स्त्री० गाती, मुट्ठीभर।
बुजना० ना० पु० जिहानीके कारण से जो वस्त्र लिया पहनाता है।
बुजहरा० ना० पु० पानी गर्म करनेकापात्र।
बुझना० अ० क्रि० ठंढा होना।
बुझाना० स० क्रि० ठंढाकरना, समझाना सुझाना।
बुडाना० स० क्रि० डुबाना।
बुड्ढा० गु० बूढ़ा प्राचीन मनुष्य।
बुढ़भस० गु० जो बूढ़ा तरुणकी चालचले।
बुढ़वा० गु० बूढ़ा।
बुढापा० ना० पु० वृद्धावस्था।
बुढ़िया० गु० बूढ़ी स्त्री।
बुडा० ना० पु० कानका भूषणविशेष।
बुत० ना० पु० जुआ वा पचीसी खलने में जिसपर पासा फेंकते हैं धूसा।
बुताना० स० क्रि० बुझाना।
बुत्ता० ना० पु० ठगाई, छल।
बुद्बुद० ना० पु० बुलबुला।
बुदबुदाना० अ० क्रि० बड़बड़ाना।
बुद्ध ना० पु० पण्डित, चौथाग्रह, चौथावार, नवम अवतार।
बुद्धि० ना० स्त्री० ज्ञान, समझ, बूझ, सोच, अक्ल।
बुद्धिमान्० गु० ज्ञानवान्, समझदार, चतुर, पण्डित।
बुद्धिदा० ना० स्त्री० मदिरा, शराब।
बुद्धी० गु० चतुर, समझदार, बुद्धिमान्।
बुध ना० पु० चौथाग्रह, चन्द्रपुत्र, चौथादिन नवम अवतार जो गया में भया, पण्डित, देवता।

बुधवार० ना० पु० बोधवार।
बुधि० ना० स्त्री० बुद्धि।
बुन्द० ना० पु० बिंदु शून्य, कतरह।
बुन्ना० स० क्रि० विना।
बुभुक्षित० गु० भूखा।
बुरभसिया० गु० बुदभस।
बुरा० गु० दुष्ट, लटा खराब, अक्कर।
बुराई० ना० स्त्री० दुष्टता, खोट।
बुर्ज० ना० पु० रसा, लासा।
बुर्जरा० ना० स्त्री० स्त्रियों की गाली।
बुर्जारी० ना० स्त्री० बुर्जरी।
बुलबुला० ना० पु० बुल्ला।
बुलाक० ना० पु० नाक में का भूषणविशेष।
बुलाना० स० क्रि० पुकारना, हाक देना, तलब करना।
बुलाहट० ना० स्त्री० अवाहन।
बुहनी० ना० स्त्री० अगवानी, पहिलीविक्रीका नाम, बयानह।
बुहरी० ना० स्त्री० भुनेहुये जौ।
बुहारन० ना० स्त्री झाड़न।
बुहारना० अ० क्रि० झाड़ना।
बुहारी० ना० स्त्री० झाड़।
बुहारू० ना० पु० भंगी।
बूआ० ना० स्त्री० बहिन, फूफा माता।
बूई० ना० स्त्री० लड़कों के डराने का शब्द।
बून्द० ना० स्त्री० बिंदु, टपका, गु० भला, ऊंचा, लड़ाकू।
बून्दा० ना० पु० बड़ाबूंद।
बून्दी० ना० स्त्री० टपका वर्षा की बूंद, मिठाई विशेष।
बूकना० स० क्रि० पीसना, बुकनी करना।
बूका० ना० पु० चूर्ण, छोगमोती, बुकनी।
बूचा० ना० पु० जिसके कान नहीं, कनकटा।
बूचौ० गु० स्त्री० कनकटी।
बूझ० ना० स्त्री० समझ, बुद्धि।
बूझना० अ० क्रि० समझना, जानना।
बूट० ना० पु० हराचना, तरकारी।
बूटा० ना० पु० पौधा, वृक्ष, फूल कपड़े का।
बूटी० ना० स्त्री० वनस्पति, औषधि, छोटा वृक्ष, बिरवा, भंग विजया।
बूड़ना० अ० क्रि० डूबना।
बूडमरना० अ० क्रि० डूबमरना।
बूड़िया० ना० पु० डूबनेहारा।
बूत० } बूता० } ना० पु० बल, सामर्थ्य, पौरुष, ताकत।
बूबू० ना० स्त्री० बहन, बीबी।
बूर० ना० स्त्री० भूसी, छिलका।
बूरा० ना० स्त्री० खांड़, लकड़ी की बुकनी, चूर्ण, यह शब्द फारसी का है।
बे० अव्य० अरे।
बेंट० ना० पु० हथकड़ा, दस्ता।
बेंड़ा० पु० गु० टेढ़ा, बांका।
बेंधना० स० क्रि० गूथना, उनना।
बेग० ना० पु० वेग, जोर।
बेगवान्० गु० वेगवान्, जोरवाला।
बेगार० ना० पु० बरबस काम कराना।
बेगारी० ना० स्त्री० मोटिया, बगारकर्त्ता।
बेगी० गु० वेगी।
बेंग० ना० पु० मेढ़क, भक।
बेंचना० स० क्रि० बिकाना, मोल लेकरदेना।
बेचू० गु० बेचनेवाला।
बेजू० ना० पु० जन्तुविशेष।
बेझा० ना० पु० निशाना, जिसपर तीर वा गोली का अभ्यास करते हैं।
बेटा० ना० पु० पुत्र, लड़का।
बेटी० ना० स्त्री० पुत्री कन्या।
बेठन० ना० पु० वेष्टन, लपेटन।
बेड़० ना० पु० बाड़ा, बियाबर, अम्बका।
बेड़िया० ना० पु० जातिविशेष।
बेड़ी० ना० स्त्री० पैरड़ी, जिसगेकरी से खेत सींचते हैं।

बेड़ना० स० क्रि० बाड़ाबांधना, घेरना/ इकारना, लाभउठाना, छीनलेना, कमाना, चुराना।
बेत० ना० पु० यत्र, छड़ी, आशारा।
बेद० ना० पु० वेद।
बेदगिरा० ना० पु० वेदवाणा।
बेध० ना० पु० छद, सूराख।
बेधक० गु० छदवाला।
बेधड़क० गु० निधड़क।
बेधना० स० क्रि० छदना।
बेधमुश्क० ना० स्त्री० कस्तूरी।
बेधा० ना० पु० भड़ा, सराफूल।
बेधी० ना० पु० वेधक।
बेन० ना० स्त्री० बासुरी, वशी।
बेना० ना० पु० पत्ता, खस खस।
बेनी० ना० स्त्री० जूड़ा, चोटी, किवाड़काएक काठविशेष।
बेर० ना० पु० वृक्ष वा० उसका फलविशेष, ना० स्त्री० बार, विलम्ब, बेला।
बेरबेर० अ० य० बारंबार।
बेरमयानक० ना० पु० प्रलयकी रात, मृतक की रात।
बेरी० ना० स्त्री० बरका वृक्ष।
बेरे० ना० पु० नाव जहाज।
बेल० ना० पु० बिल्वफल, पुष्पविशेष बेलि।
बेलन० ना० पु० रोटी बलने की वस्तु।
बेलना० स० क्रि० फैलाना० ना० पु० बेलन।
बेलनी० ना० पु० टहनी।
बेलबूटा० ना० पु० भाड़ी, लताविशेष।
बेला० ना० पु० पुष्प विशेष, कटोरा, वेला।
बेलि० ना० स्त्री० बेलि, लता जो पौधा आपसे खड़ा न हासके।
बेसन० ना० पु० चनेका चून।
बेसनी० ना० स्त्री० बेसनसे बनीहुई।
बेसनौटी० ना० स्त्री० बेसनकी रोटी।
बेसर० ना० स्त्री० नथनी।
बेसरा० ना० पु० पक्षीविशेष।
बेसवा० ना० स्त्री० वेश्या।
बेह० ना० पु० छिद्र, सूराख।
बेहड़० ना० स्त्री० पृथ्वी जहाऊंची नीचीहो।
बैगन० ना० पु० भांटा, तरकारीविशेष।
बैंगनी० } बैंजनी० } गु० रंग जो बैंगन के समान हो, पिंगल।
बैंदी० ना० स्त्री० टिकुली।
बैठक० ना० स्त्री० } बैठका० ना० पु० } बैठनेकास्थान, चोपाड़, बठने की चाल वा रीति।
बैठना० अ० क्रि० आसन मारना।
बैठवां० गु० चपटा, चौरस।
बैठा० ना० पु० चप्पू, डाड़।
बैठाना० } बैठालना० } स० क्रि० स्थापन कराना।
बैतरा० ना० स्त्री० सांठिविशेष।
बैतरणी० ना० स्त्री० नरकमार्ग की नदी।
बैदिक० ना० पु० वैदिक, वेदका जाननेवाला।
बैन० ना० पु० वचन, वाणी, ननसी।
बैनतेय० ना० पु० विनताके पुत्र गरुड़, अरुण।
बैना० ना० पु० माथेपरका भूषणविशेष, पकवान जो विवाह आदि में बांटते हैं, व्याहारी, पत्रा।
बैपारि० ना० पु० व्यापार, तिजारत।
बैपारी० ना० पु० सौदागर, ताजिर, व्योपारी।
बैर० ना० पु० वैर, दुशमनी।
बैरख० ना० स्त्री० भण्डी, ध्वजा, पताका।
बैरागी० ना० पु० वैरागी, जिसको वैराग्यहो।
बैल० ना० पु० वृषभ, बरध।
बैस० ना० पु० आयुर्दा, वय, वैश्य, राजपूतों में जातिविशेष।
बैसन्दर० ना० पु० आग।
बैसाडु० गु०, आलसकी, मक्खीमार, घर में बैठनहारा।
बोआई० ना० स्त्री० बान का काम, बान का समय।

बोआना० स० क्रि० बीजडलवाना, बसाना।
बोआरा० ना० पु० बोने का समय।
बोंट० ना० पु० डाट, डण्डा, डाली।
बोक०, बोकड़ा०, बोकरा० } ना० पु० बकरा, अज।
बोकरी० ना० स्त्री० बकरी।
बोच० ना० पु० मगर, कुम्भीर।
बोचा० ना० पु० पालकी विशेष, बूचा।
बोझ० ना० पु० भार, लादी।
बोझना० स० क्रि० लादना।
बोझल०, बोझेल० } गु० लदा, भरा।
बोटी० ना० स्त्री० मांसका छोटा टुकड़ा।
बोतू० ना० पु० बकरा।
बोदली० ना० स्त्री० भाली, गेगली।
बोदा० गु० निर्बल, आसक्त, भोला, गेगला।
बोद्धा० गु० बुद्धिमान।
बोध० ना० पु० ज्ञान, मति, मनौती, धारन।
बोधक० ना० पु० जिससे ज्ञानहो बोधकर्त्ता।
बोधना० स० क्रि० फुसलाना, समझाना।
बोना० स० क्रि० बीजडलना।
बोनी० ना० स्त्री० बोन का समय।
बोर० ना० पु० पाजेब के घुंघरू।
बोरा० ना० पु० गोन, गरिया, लाधा, टाट का थैला।
बोरी० ना० पु० रामधनुष चावल विशेष।
बोल० ना० पु० शब्द गीतका शब्द, बात।
बोलचाल० ना० स्त्री० बात चीत।
बोलता० ना० पु० प्राण, जीव, बोलने की शक्ति।
बोलना० अ० क्रि० बातकरना, कहना, बजना।
बोलवाला० ना० पु० आशीर्वादविशेष।
बोली० ना० स्त्री० वाणी, भाषा बात।
बौंड० ना० पु० बेलि, लता।
बौंडना०, बौंडियाना० } अ० क्रि० लिपटना, घूमना, गेरैं, रस्सा।
बौंड़ी० ना० स्त्री० बेलि, लता।
बौछार० ना० स्त्री० वायुसहित बड़ी वृष्टि या जो वायु के झकोड़ से बूंदें धरम चली आती हैं।
बौद्ध० ना० पु० बुधका मतावलम्बी।
बौना० गु० छोटा, बावन, नाटा।
बौनी० ना० स्त्री० ठिगनी, बोने का समय वा काम।
बौरहा० गु० बावरा।
बौरा० गु० गूंगा, मूक।
बौराना० अ० क्रि० बावला होना।
बौरापन० ना० पु० सिड़पन।
बौराहा० गु० बावला, सिड़ी।
बौला० गु० पोपला, मूर्ख।
बौहा० गु० पथरीला।
बौहाई० ना० स्त्री० जिस स्त्री को गर्भोंका रोगहै।
ब्यान० ना० पु० पशवादि का प्रसव।
ब्याना० अ० क्रि० जन्मना, उत्पन्न होना।
ब्याह० ना० पु० विवाह।
ब्याहता० गु० विवाहिता।
ब्याहनयोग० गु० जो ब्याहने के योग्य है।
ब्याहना० स० क्रि० विवाह करना।
ब्याहा० गु० विवाहित, जिसका विवाह होगया।
ब्योंगा० ना० पु०, ब्योंगी० स्त्री० } चमड़ा छीलने का अस्त्र।
ब्योंत० ना० पु० गढ़न, डौल, रीति, ढब।
ब्योंतना० स० क्रि० कपड़े को डालियाना वनाना।
ब्योरा० ना० पु० भेद, वृत्तान्त, बखान, अन्तर।
ब्योपार० ना० पु० व्यापार, तिजारत सौदागरी।
ब्योपारी० गु० व्यापारी, ताजिर, सौदागर, दरजानिः।
ब्रह्म० ना० पु० परमेश्वर, जगत् का कारण ब्रह्म, वेद, देवता जीव, कुत।
ब्रह्मअस्त्र० ना० पु० ब्रह्मानी का अस्त्र विशेष।
ब्रह्मचर्य० ना० पु० शास्त्रत, मूत।

ब्रह्मगिरा० ना० स्त्री० आकाशवाणी, ब्रह्मवाणी।
ब्रह्मघोष० ना० पु० जहां वेद पढ़ाया वा पढ़ा जाता है, वेदपाठशाला।
ब्रह्मचर्य्य० ना० पु० ब्रह्मचारी का व्यवहार।
ब्रह्मचारी० ना० पु० प्रथमाश्रमी, ईश्वरपूजक।
ब्रह्मदारु० ना० पु० शहतूत।
ब्रह्मदैत्य० ना० पु० ब्रह्मराक्षस।
ब्रह्मन० ना० पु० ब्राह्मण।
ब्रह्मपादप० ना० पु० ढाकका वृक्ष।
ब्रह्मपुत्र० ना० पु० नदविशेष, ब्रह्माका पुत्र।
ब्रह्मबाण० ना० पु० ब्रह्मास्त्र।
ब्रह्मभवन० ना० पु० ब्रह्माका स्थान।
ब्रह्मभुवन० ना० पु० ब्रह्माका लोक।
ब्रह्मभोज० ना० पु० ब्राह्मणों को भोजनदेना।
ब्रह्ममेखला० ना० स्त्री० मूंज।
ब्रह्मरन्ध्र० ना० पु० मस्तकका मध्यस्थान।
ब्रह्मरात्रि० ना० स्त्री० ब्रह्माकी रात जो सहस्र चतुर्युगी होती है।
ब्रह्मराक्षस० ना० पु० प्रेत विशेष, लूका।
ब्रह्मवाद० ना० पु० वेदान्त कथन।
ब्रह्मवादी० ना० पु० वेदान्ती।
ब्रह्मविचार० ना० पु० वदान्तविद्या, अध्यात्म ज्ञान।
ब्रह्मलोक० ना० पु० लोकविशेष जहां ब्रह्माजी का निवासस्थान है।
ब्रह्मश्रव० ना० पु० वेद।
ब्रह्मसूत्र० ना० पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ।
ब्रह्महत्या० ना० स्त्री० ब्राह्मणकी हत्या।
ब्रह्मज्ञान० ना० पु० ईश्वरज्ञान, परमज्ञान, आत्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान।
ब्रह्मा० ना० पु० देशविशेष जो पूर्व में है वा उस देश के राजा की जातिविशेष विधाता, सृष्टि कर्त्ता।
ब्रह्माचारी० ना० पु० ईश्वरपूजक, ब्रह्मविचारी।
ब्रह्माण्ड० ना० पु० जगत्, संसार, शिरकीहाड़।
ब्रह्मानन्द० ना० पु० निज स्वरूपानन्द, आत्मानन्द।
ब्रह्माणी० ना० स्त्री० सरस्वती।
ब्राह्मण० ना० पु० प्रथम वर्ण।
ब्राह्मणी० ना० स्त्री० ब्राह्मण की स्त्री।
ब्राह्मण्य० ना० पु० ब्राह्मण का धर्म, ब्राह्मणों की सभा, सातवां ग्रह।
ब्राह्मी० ना० स्त्री० संहिताविशेष, सरस्वती, ब्राह्मी औषधि।
ब्राह्मय० ना० पु० अचम्भा, आश्चर्य्य, ब्राह्मणों की सभा।
ब्राह्ममुहूर्त्त० ना० पु० सूर्योदय से पहले चार घड़ी पोह, पह।

[भ]

भ० ना० पु० नक्षत्र, राशी।
भँवर० ना० पु० भौंरा, चक्कर।
भवर०
भवरा० } ना० पु० अलि, सता, भ्रमर।
भवेरी०
भवारी० } ना० स्त्री० तीतरी, पतंगविशेष।
भवोरना० स० क्रि० काटना, कटवाना।
भकसी० ना० स्त्री० पृथ्वी में गुफा, अधरी।
भकुआ० गु० निर्बुद्धि, मूर्ख, अहमक।
भकुवाना० अ० क्रि० निर्बुद्धि होना, उल्लू हो जाना।
भकोसना० स० क्रि० खालेना, ठुस्सना।
भक्त० ना० पु० अर्चक, सेवक, उपासक, भात, गु० धर्मी, चाहक।
भक्तवत्सल० ना० पु० भक्तप्रिय, श्रीभगवान्।
भक्ता० ना० पु० भक्त।
भक्ताई० ना० स्त्री० भगताई, सेवकाई, भक्ति, धर्म।
भक्ति० ना० स्त्री० मन, धर्म, श्रद्धा, प्रीति, सेवा
भग० ना० स्त्री० योनि, गुर, सुभाग, ऐश्वर्यादि गुण, ना० पु० सूर्य, भागवते यथा, धाता

विधाता वरुणोऽर्यमा सविता भग ।

भगण० ना० पु० व्यकरीगणविशेष, जिसमें आदिका अक्षर दीर्घ होता है यथा, राघव ।

भगत० ना० पु० भक्त ।

भगतन० ना० स्त्री० भगतकी स्त्री या वेश्या ।

भगताई० ना० स्त्री० भगतपना ।

भगतिया० ना० पु० भनैया, वधिक, राधा, जाति ।

भगन्दर० } भगन्धर० } ना० पु० गुदा में रोग विशेष ।

भगनी० ना० स्त्री० बहन, भगिनी ।

भगर० ना० पु० भगल ।

भगल० ना० पु० छल, कपट, फरेब, इन्द्रजाल ।

भगवत० ना० स्त्री० भागवत ।

भगवती० ना० स्त्री० माया, आदिशक्ति, ईश्वरी ।

भगवन्त० ना० पु० भगवान् ।

भगवा० ना० पु० गेरुवा वस्त्र ।

भगवान्० ना० पु० ऐश्वर्यादि गुणसयुक्त, तेजस्वी, प्रतापवान्, ईश्वर ।

भगाना० स० क्रि० हँकाना, चलाना, दूरकरना ।

भगीरथ० ना० पु० राजा विशेष जो गंगाजी को स्वर्ग से लाया ।

भगेल० ना० स्त्री० पराजय, ना० पु० भगोड़ा ।

भगोड़ा० ना० पु० भागने हारा ।

भग्गुल० ना० पु० दूत, हरकारह, भग्गू ।

भग्गू० ना० पु० भगोड़ा ।

भग्न० गु० पराजित, नाशित, टूटा फूटा ।

भंकार० ना० पु० शब्द करना, आदिका शब्द ।

भङ्ग० ना० पु० खण्डन, तोड़, लहर, पराजय । भाग गु० भग्न ।

भङ्गड़ा० ना० पु० जड़ी विशेष, भृंगराज ।

भङ्गड़ी० गु० भाग पीनेहारा ।

भङ्गन० ना० स्त्री० भंगी की स्त्री ।

भङ्गना० ना० स्त्री० मछली विशेष ।

भङ्गा० ना० स्त्री० भाग, पक्षी विशेष ।

भङ्गार० ना० पु० भगरा, भगड़ा ।

भंगी० ना० पु० भगड़ी, मिहतर, झगड़ा, गु० नाशक, मेटनेवाला ।

भंगेरन० ना० स्त्री० भग की बेचनेहारी ।

भंगेरा० ना० पु० भग बेचनेहारा ।

भंगेला० ना० पु० भग के लचाओं का वस्त्र विशेष ।

भचक० गु० घबड़ा, विस्मित, अचम्भित ।

भचकना० अ० क्रि० अचम्भित वा विस्मित होना ।

भचक्र० ना० पु० दौरह, चालभर, तिनगति पर्यंत ।

भजन० ना० पु० अर्चा, पूजा, सेवन और नौविधि ईश्वर का यशगाना ।

भजना० स० क्रि० अर्चा या पूजा या सेवा, जप करना अ० क्रि० भागना ।

भजनी० गु० भजन करनेहारा ।

भजनीक० ना० पु० अर्चक, भजन करनेहारा

भजामि० स० क्रि० भजताहू, ध्यावताहू ।

भजजाना० अ० क्रि० भागजाना ।

भज्जि० अ० क्रि० भागकर ।

भज्य० अ० क्रि० भागके बाटके ।

भञ्जन० ना० पु० खण्डन, मारन तोड़न ।

भञ्जाना० स० क्रि० तोड़ान, भुनाना, मर्द लाना ।

भट० ना० पु० योधा, शूरवीर, धिकार, तनूर ।

भटई० ना० स्त्री० भाट की स्तुति, भाट का काम ।

भटकना० अ० क्रि० भूलजाना, भ्रमना चूकना, टपना ।

भटका० गु० भूलाहुआ भूला, चूका, भ्रमित ।

भटमेरा० ना० पु० मिलाप, मिलान, मुलाकात ।

भटकान० स० क्रि० बहकाना भुलाना, भड़काना ।

भटकीला० गु० जिसमें भटका पायाजावे ।

भटाई० ना० स्त्री० बहादुरी, लड़ाई, भटई।
भटू० ना० स्त्री० सखी, निघालिह प्रकाश, दक्षिके भटूको मैं लट्टू ह्वैरहो शिरनाथ यदि पीत पट्ट सो अगवै मालदाही है।
भट्ट० ना० पु० विद्यावान्, पण्डित, दक्षिणी ब्राह्मणों का आस्पद, भट।
भट्टाचार्य्य० ना० पु० पण्डितों में जो सब से बड़ा ज्ञानवान् बंगाले के ब्राह्मणों का उपनाम वा आस्पद।
भट्ठ० ना० स्त्री० चूल्हा विशेष।
भठियारपन० ना० पु० भठियार का काम।
भठियारा० ना० पु० सराय का भाड़ा उगाहने हारा, जाति विशेष।
भठियारन्० ना० स्त्री० भठियारे की स्त्री।
भठियाल० गु० जो नदी की धारापर से बहे।
भड़० ना० पु० बड़ी नाव विशेष।
भड़क० ना० स्त्री० चटक, झलक, घबराहट, झझक, चौंक।
भड़कना० अ० क्रि० झिझकना, चौंकना, आंच उठना, जल उठना।
भड़काना० स० क्रि० डराना, भड़काना आंच करना, लूका लगाना, चौंकाना।
भड़की० ना० स्त्री० चटकी चमक, आंच, चौंक।
भड़कीला० गु० चटकाला, चमकाला, चौंकेल।
भड़केल० गु० जगला, अनपहिचान, चौंकैना।
भड़भड़िया० गु० निष्कपट, साधा।
भड़भूजन० ना० स्त्री० भुजन।
भड़भूजा० ना० पु० भुनी, भुनवा।
भड़रिया० ना० पु० ठग, भड़ा, जासी।
भड़साँई० ना० पु० भाड़।
भड़िहा० गु० चोर, चाभने हारा, घिनौना, निलज्ज।
भड़िहाई० ना० स्त्री० भड़िहापन, रामायणे यथा, सो दशशीश श्वान की नाईं, इत उत चितै चला भड़िहाई।
भडुआ० ना० पु० कुटना, वेश्याका भांना तितादि।
भडुवाई० ना० स्त्री० कुटनापन।
भड़ैत०
भड़ैती० } ना० पु० भाड़ादेनेहारा प्रजा।
भणन० ना० पु० कथन।
भणित० गु० कथित, कहाहुआ, कविता।
भण्टिका० ना० स्त्री० भाग, बैंगन।
भण्ड० ना० पु० भाड़, भ्रष्टता।
भण्डा० ना० पु० मटका भागी, भरुई।
भण्डार० ना० पु० कोठा, खाता वखार।
भण्डारा० ना० पु० योगी, वा सन्यासी, वा उदासियों का ज्योनार वा जिमाना, भोजन।
भण्डारी० ना० पु० भण्डारे का रक्षक, रोकड़िया, रसोइया।
भण्डेरिया० ना० पु० भड़रिया।
भण्डेला० ना० पु० भाड़।
भण्डौआ० ना० पु० निन्दा, फक्कड़।
भतरा० ना० पु० भतार, पति।
भतरौड़० ना० पु० मथुरा वृन्दावन के मध्य स्थान विशेष।
भतार० ना० पु० भर्तार, पति, स्वामी, कर्ता।
भतीजा० ना० पु० भाई का बेटा।
भतीजी० ना० स्त्री० भाई की कन्या।
भत्त० ना० पु० भात।
भद० ना० स्त्री० धप्पा, धड़ाका, कुदशा।
भदभद० ना० पु० वृक्षके फल गिरने का वा मनुष्य के चलनेका शब्द।
भदभदाना० स० क्रि० मारने से जो शब्द निकलता है, बारबार मारना।
भदभदाहट० ना० स्त्री० भदभद।
भदाक० ना० पु० धड़ाक, फगाक।
भदाका० ना० पु० धड़ाका शब्द।
भदेस०
भदेसल० } गु० जो अच्छा नहो कुढाल, भोंडा, अनाड़ी रामायणे यथा, भणित भदेसवस्तु भलिवरणी।
भद्दा० गु० निर्बुद्धि, उल्लू, भोंडा।
भद्र० ना० पु० भागमारी, मूँछ सहित सिरका

मुण्डन, कल्याण, बढ़ती, नवलक्षणों में से एक का नाम गु० भला, श्रेष्ठ, भाग्यवान्।
भद्रक० ना० स्त्री० प्राप्त, लाभ, स्वभाव, सुन्दरता, भलाई।
भद्रकाली० ना० स्त्री० दुर्गादेवी।
भद्रकाष्ठ० ना० पु० देवदारु।
भद्रचन्दन० ना० पु० जवासा।
भद्रजयव० ना० पु० इन्द्रजौ।
भद्रपर्णिका० ना० स्त्री० कम्भारी, गन्धपसारं।
भद्रपर्णी० ना० स्त्री० गन्धपसारन।
भद्रमस्त० ना० पु० नागरमोथा।
भद्रवती० ना० स्त्री० कायफल।
भद्रवृक्ष० ना० पु० गोखुरू।
भद्रश्रिय० ना० पु० चन्दन।
भद्रहोना० श्र० क्रि० मूंछसहित शिरमुंडाना।
भद्रा० ना० स्त्री० अशकुन समय, पक्षकी दूसरी सातवीं बारहवीं तिथि, कम्भारी, गन्धपसारन, कुघड़ी, कल्याणकारिणी, ना० पु० पक्षी विशेष।
भद्राक्ष० ना० पु० कृत्रिमरुद्राक्ष।
भद्रिका० ना० स्त्री० दशाविशेष, कल्याणी।
भद्री० ना० पु० ककोर्त, सामुद्रिकी, कायफल।
भद्रोदनी० ना० स्त्री० खिरहटी।
भभकना० श्र० क्रि० क्रोधित होके दौड़ना, आग लगना, लोटे आदि से पानी गिरने का शब्द।
भभका० ना० पु० बड़े मुखका पात्र विशेष।
भभकाना० स० क्रि० सुलगाना, जलाना, उकसाना, सिजाना, एडमारना।
भभकी० ना० स्त्री० धमकी।
भभ्भड़० ना० पु० डर, खटका, भभरा।
भभक० ना० स्त्री० अचानक जो आंच आदि की वुबास आजावे।
भभकना० अ० क्रि० सनसनाना, बुलबुला उठना, सलबलाना।
भभर० ना० पु० डर, खटका।
भभराना० श्र० क्रि० खटका होना, सूजना।
भभरि० क्रि० डरकर, घबड़ाकर।
भभूका० ना० पु० ज्योति, आंच, एकाएक आग जलउठना, गु० लाल, सुन्दर, भड़कीला।
भभूत० ना० स्त्री० भस्म, विभूति।
भय० ना० पु० डर, शङ्का, खौफ।
भयकार० } गु० भयानक, डरौनी मूर्त्ति।
भयंकर० }
भयचक० गु० भयकरके जो व्याकुल हो।
भयद० } गु० भयानक, भयंकर।
भयदायक० }
भयभीत० गु० शंकित, डराक, डराहुआ।
भयमान० गु० डरपोक, शंकित।
भया० ना० पु० भाई, क्रि० हुआ।
भयातुर० गु० भयचक, भयग्रस्त।
भयानक० गु० भयंकर, जिसको देखकर डर लगे, डरौना, रस विशेष।
भयापा० ना० पु० अपनाहत, भाईपन।
भयावना० } गु० भयंकर, भयानक।
भयावहा० }
भर० गु० पूर्ण, पूरा, सब।
भरका० ना० पु० जब वरीपर पानी दिया उस का नाम।
भरकाना० स० क्रि० वरीपर पानी डालना।
भरण० ना० पु० पोषण, पालन, धारण।
भरणी० ना० स्त्री० दूसरा नक्षत्र, सांपभक्षक, जीव विशेष।
भरत० ना० पु० अनेक धातु का मेल, राजा विशेष, जिसके नाम से हिन्दुस्तान भरतखण्ड प्रसिद्ध है, रामचन्द्रजी के भाई।
भरतखण्ड० ना० पु० हिन्दुस्तान।
भरतपुर० ना० पु० शूरसेन देशका एक नगर विशेष।
भरद्वाज० ना० पु० मुनि विशेष, खंजनपक्षी
भरद्वाजसुत० ना० पु० द्रोणाचार्य।
भरन० अव्य० तक, तलक।

भरना० स० क्रि० पूर्ण करना, झोपना, लेसना, धात धगा होना, निकालना, फटे वस्त्रमें सूत डालना, ढालना।
भरनी० ना० स्त्री० बाना, मरघी।
भरिपाना० अ० क्रि० दामपाना, पलपाना।
भरिपूर्ण० गु० सराबोर।
भरभराना० अ० क्रि० सूजना, एकाएक उड़ना।
भरभरी० ना० स्त्री० सूजन, फुलाव।
भरभाड़० ना० पु० ऊटकटारा, छोटा पौधा विशेष।
भरम० ना० पु० भय, भ्रम, साख।
भरमगमाना० अ० क्रि० असाखहोना, अपयशी होजाना।
भरमाना० स० क्रि० फुसलाना, व्याकुलकरना, फिराना, घुमाना।
भरवाना० स० क्रि० पूर्णकराना।
भरा० गु० पूरा।
भराना० स० क्रि० भरवाना, घोड़ाघोड़ीलगाना।
भरावट० ना० स्त्री० वस्तु जिससे दूसरी वस्तु भराते हैं।
भरित० गु० पालाहुआ, भराहुआ।
भरिता० गु० भरीहुई।
भरी० ना० स्त्री० तोला, बारह माशेका परिमाण।
भरु० ना० पु० बोझ।
भरैत० ना० पु० भदैत।
भरोटा० ना० पु० तृणादि का बोझा।
भरोसा० ना० पु० आशा, आसरा, प्रतीत।
भर्ग०, भर्गु० ना० पु० श्रीमहादेवजी, रामचन्द्रिकाया यथा, चन्देवदेव जेयभीनरक्षमा लेलिये, अमेयतेज भर्गुभक्त भार्गवेश देखिये।
भर्जन० ना० पु० भूनने का काम।
भर्त्त० ना० पु० निजपति, भर्त्ता, स्वामी, विवाहितपति।
भर्त्ता० ना० पु० पति, स्वामी, मालिक, प्रतिपालक, तरकारी जो भाटाआदि भूनके बनाते हैं।
भर्त्तार० ना० पु० भर्त्ता, स्वामी।
भर्त्तिया० ना० पु० ठठेरा, कसेरा।
भर्त्ती० ना० स्त्री० समाप्ति, भराव, बढ़ाव।
भर्त्सना० ना० स्त्री० तिरस्कार।
भर्म० ना० पु० सुवर्ण, यथा, तपनीयशातकुम्भगाङ्गेयभर्मकर्बुरम्, इत्यमर।
भँवर० ना० पु० नदी का भँवर, भौंरा।
भल० गु० भला, ना० पु० थोर।
भलका० ना० पु० सोने की टिकली जो नथ मे लगती है।
भलमनुसाई०, भलमनसात०, भलमनसी० ना० स्त्री० सद्गुण, अच्छाई।
भला० गु० अच्छा, शीलवन्त, चंगा, धर्मी, अद्भुत, सुहला।
भलाई० ना० स्त्री० अच्छापन, चैन, कुशल, सुयश, सुकृत।
भलाचंगा० गु० अच्छा।
भलूक० ना० पु० भालु, रीछ।
भल्ल० ना० पु० भलूक, भालु।
भल्लक० ना० पु० लम्बे, पैने, तेज।
भल्लात०, भल्ली०, भल्लुक० ना० पु० भालु, रीछ।
भल्लू०, भल्लूक० ना० पु० रीछ, भालु, तरकारी।
भल्लूकप्रिय० ना० पु० स्योना वृक्ष।
भव० ना० पु० संसार, शिवजी, कल्याण, भय, जन्म होना।
भवदर्शन० ना० पु० आपका दर्शन।
भवन० ना० पु० घर, मकान।
भवा० ना० स्त्री० पार्वती।
भवानी० ना० स्त्री० पार्वती।
भवापवर्ग० ना० पु० मोक्ष, जीवन्मुक्ति।
भवार्णव० ना० पु० संसारसागर।

भवार्पण० ना० पु० शिवहेतु देना।

भविक० ना० स्त्री० कुशल, क्षेम, कल्याण।

भवितव्य० गु० होनहार, जो होवेगा।

भवितव्यता० ना० स्त्री० प्रारब्ध, होनहार।

भवर० ना० पु० पानी की गांठि, भारा।

भवावर्त्त० ना० पु० ससार का भँवर, जगत् भवर।

भविष्य०
भविष्यत्० } गु० होनहार, जो कुछ होवेगा, आनहारा समय।

भविष्यत्वक्ता०
भविष्यद्वक्ता० } ना० पु० भविष्यत् कहने हारा, आगमज्ञानी।

भवैया० ना० पु० कथक, राधा नर्तक।

भव्य० गु० भाग्यवान्, योग्य, कल्याण, होनी, ना० पु० कमरख वृक्ष।

भष०
भषण० } ना० पु० भोजन, भक्षण, खाना।

भस० ना० पु० राख, खाक।

भसकना० अ० क्रि० गिरना, पड़ना, फाकना।

भसना० अ० क्रि० तैरना, बहना।

भसभसा० गु० पिलपिला।

भसम० ना० पु० भस्म, राख।

भसाना० स० क्रि० बहाना, चलाना।

भस्म० ना० स्त्री० विभूति, राख।

भस्मी० ना० पु० शिवजी, गु० खाकी।

भस्मीभूत० गु० जलगया, भस्महोगया।

भहराना० अ० क्रि० कांपना, लड़खड़ाना, डग मगाना।

भक्त० ना० पु० भोजन, चर्वण।

भक्षक० गु० खानेहारा।

भक्षण० ना० पु० भोजन, चर्वण।

भक्षी० गु० भक्षक।

भक्ष्य० गु० जो खाने के योग्य है, खाद्य।

भा० ना० स्त्री० शोभा, कांति।

भांग० ना० स्त्री० बूटी, विजया, भंग।

भांज० ना० स्त्री० ऐंठ, बल, रस्सी बनानेका काम।

भांजना० स० क्रि० फिराना, घुमाना, ऐंठना, हिलाना, चमकाना।

भांजा० ना० पु० बहनका पुत्र।

भांजी० ना० स्त्री० बहन की कन्या, हरज, नुकसान।

भांट० ना० पु० ओषधि, पौधा विशेष।

भांटा० ना० पु० बैंगन, तरकारी विशेष।

भांड़० ना० पु० हण्डा, बहुरूपिया, स्वांगी।

भांड़ना० स० क्रि० गालीदेना, बिगाड़ना।

भांड़ा० ना० पु० माटीका बड़ा बर्तन, सामग्री, जो रुपया किसी को पृथ्वी में गड़ाहुआ मिले, परुआ, दफीनह।

भांडीर० ना० पु० अञ्जीर का वृक्ष, स्थानविशेष।

भांड़ैती० ना० स्त्री० बहुरूप्य, स्वांग।

भांति० ना० स्त्री० रीति, डौल, ढब, जाति, शोभा, प्रकार।

भांवर०
भांवरि०
भांवरी० } ना० स्त्री० फेर, घुमाना।

भाई० ना० पु० भ्राता, बिरादर।

भाईचारा० ना० पु० मयापा, आपस।

भाईबन्द० ना० पु० जाति के लोग।

भाक्त० ना० पु० परवश, पिछलगा।

भाखना० स० क्रि० बोलना, कहना।

भाग० ना० पु० अंश, प्रारब्ध, कर्म, हिस्सह।

भागजाना० अ० क्रि० टलना, पीठदेना।

भागड़० ना० स्त्री० बराव, देशत्याग, धड़्श।

भागना० अ० क्रि० भागजाना, टलना।

भागमान्० गु० भाग्यवान्।

भागमानी० ना० स्त्री० सुभाग, धनाढ्यता।

भागलपुर० ना० पु० नगरविशेष।

भागवत० ना० पु० पुराणविशेष, भगवद्धर्मी।

भागवती० ना० पु० श्रीमद्भगवान्, भागवतपाठक, ना० स्त्री० स्त्रियाविशेष, सुभागिन।

भागवन्त० } गु० भाग्यवान्।
भागवान्० }
भागाभाग० ना० पु० भागड़, बिन ठहरे चला जाना।
भागनेय० ना० पु० भाजा, बहन का पुत्र।
भागी० ना० पु० साझी, अंशी, बंटैत, गु० भाग्यवान्।
भागीरथ० ना० पु० भगीरथ।
भागीरथी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
भाग्य० ना० पु० प्रारब्ध, कर्म, तकदीर, गु० जो भाग करने के योग्य है।
भाग्यवन्त० } गु० प्रारब्धी, लक्ष्मीवान्, किस्मत
भाग्यवान्० } वर, प्रतापी, धनाढ्य।
भाग्यहीन० गु० मन्दभाग्य, दरिद्री, कम्बख्त।
भाजक० गु० जिसपर बाटाजाय, भागकारी।
भाजन० ना० पु० बासने, बर्तन।
भाजना० अ० क्रि० भागना, स० क्रि० भूनना, तलना।
भाजी० ना० स्त्री० तरकारी, शाक, बथुआ, बैना।
भाज्य० गु० जो भाग किया जावे, विभाग किया जावे।
भाट० ना० पु० बरदैत, कविविशेष, जाति विशेष।
भाटन्० ना० स्त्री० भाटकी स्त्री।
भाठा० ना० पु० धारा समुद्र का उतार, भट्ठा।
भाठियाल० ना० पु० भठियाल।
भाठी० ना० स्त्री भट्ठी, भौंकनी, भठियाल।
भाड़० ना० पु० अन्न भूनने के लिये अग्नियुक्त स्थान।
भाड़ा० ना० पु० किराया।
भाण्ड० ना० पु० बासन, बर्तन।
भाण्डार० ना० पु० भण्डार।
भाण्डारी० ना० पु० भण्डार का अधिपति।
भाण्डीर० ना० पु० मजमें बनविशेष।

भात० ना० पु० ओदन, रान्धेहुये चावल।
भाता० ना० पु० भत्ता।
भाथा० ना० पु० तूण, तरकश।
भाथे० ना० पु० बहुभाथा।
भादवा० }
भादों० }
भाद्र० } ना० पु० छठामहीना, वर्षा का
भाद्रपद० } भाग।
भाद्रमास० }
भान० ना० पु० स्मरण, सूर्य, भानु।
भानजा० ना० पु० बहनका पुत्र।
भानजी० ना० स्त्री० बहनकी पुत्री।
भानना० स० क्रि० हनना, मारना, फाड़ना, ताड़ना, भाजना।
भानमती० ना० स्त्री० नटनी।
भाना० अ० क्रि० भला लगाना, सजना।
भानु० ना० पु० सूर्य।
भानुज० ना० पु० शनैश्चर, सावर्णि और यमराज ना० स्त्री० श्रीयमुनाजी, कान्हे यथा, भानुजसरि प्रणाम करि श्याम, कृष्णस्थल विहार तट जाम्।
भानुमति० गु० सुन्दर, ना० स्त्री० राजा विक्रमादित्य वा राजा दुर्योधनकी रानी का नाम।
भानुरिपु० ना० पु० राहु, केतु।
भानुयोगेदवरी० ना० स्त्री० कश्यपकी पत्नी विशेष।
भाफ० ना० स्त्री० बाष्प, भाफ।
भाफना० स० क्रि० समझना, अटकलना।
भाभी० ना० स्त्री० भौजाई, भाईकी स्त्री।
भाम० ना० पु० श्रीमहादेवजी, यथा, दोहा, गंगाधर हर शूलधर शशिधर शङ्कर वाम। शर्व शम्भु शिव भीम भव भर्ग भाम त्रिपुवाम।
भामरि० ना० स्त्री० भावरी।
भामा० ना० स्त्री० पार्वती, सामान्य स्त्री।
भामिनि० } ना० स्त्री० प्रिय या कर्कशा स्त्री,
भामिनी० } लड़ाका।

भाय० ना० पु० भाव, स्वभाव, भाई।
भायप० ना० पु० भाईबंदी, भाइयों का परस्पर स्नेह।
भायमान्० } भायवन्त० } भायवान्० } गु० सुशोभित, अच्छा, योग्य।
भार० ना० पु० बोझ, भारी, बहंगी, जितना एक मनुष्य लेचलता है।
भारक० ना० पु० गला, उत्त, यथा भारके सुम हारस इति निघण्टु।
भारगी० ना० स्त्री० औषधि विशेष।
भारत० ना० पु० व्यासरचित इतिहास वा पुराण विशेष, कोरव पाडव का समर।
भारतवर्ष० ना० पु० जम्बूद्वीपके नवखडों में से एकका नाम, हिंदुस्तान।
भारतवर्षीय० गु० जो भारतवर्षका सम्बन्धीहो।
भारती० ना० स्त्री० वाग्देवता, सरस्वती।
भारद० गु० भारदाता, परन्तु सतसई ग्रन्थ में भावा अर्थ हुआ और रद फारसीशब्द का अर्थ तोड़ना लियाहै अर्थात् तोडागया, नाशहुआ।
भारद्वाजी० ना० स्त्री० वनकपास, नमा।
भारवाह० ना० पु० गधा, खर।
भारवाहक० गु० जो भार को ले चलताहा, यथा मालिया, कुम्हार।
भारा० ना० पु० भाग, भाड़ा, किराया।
भारी० गु० गरुआ, बड़ा, महंगा, मोटा, गभीर, पादा, टेढ़ा, न० पु० भारिया।
भार्गव० ना० पु० शुक्र, जमदग्नि।
भार्गवी० ना० स्त्री० दूब, घास।
भार्गवेश० ना० पु० परशुराम।
भार्या० ना० स्त्री० पत्नी, जोरू।
भाल० ना० पु० तीर आदिकी नोक, ललाट, टीप।
भाला० ना० पु० बर्छा विशाल।
भालु० } भालू० } ना० पु० रीछ।
भालुनाथ० } भालुपति० } ना० पु० जामवंत, भालुवाला, रीछ पालनेवाला।
भाव० ना० पु० प्रकृति, स्वभाव, सम्मति, मोल, चैतन्य, शाच, नृत्य चोचला, भेद, द्रव्य, उदय, स्वांग भावली, मनकीलहर, जन्तु।
भावक० गु० शोची, मित्र, सज्जन।
भावज० ना० स्त्री० भाई की स्त्री।
भावता० गु० प्रिय, चाहता।
भावती० ना० स्त्री० चाहती, प्रिया।
भावन० ना० पु० सुहावन, दिलनोट।
भावना० ना० स्त्री० वासना, वासना, इच्छा, चिंता, सुहावना, शंका।
भाववाचक० ना० पु० वह शब्द जिससे उसका वा शब्द का धर्म वा भाव जानाजावे।
भावह० ना० स्त्री० छोटे भाई की जोरू।
भावान्तर० ना० पु० प्रकारांतर, दूसरेप्रकार।
भावित० गु० चिंतित, शकित।
भावी० ना० स्त्री० भविष्यत्, होनहार, बदा।
भावुक० ना० पु० भव्य, कल्याण।
भाव्य० वाञ्छित, जो भाव के योग्य हैं, सुंदर।
भाषण० ना० पु० कथन।
भाषा० ना० स्त्री० बोली, वाणी, सरस्वती, जो संस्कृत नहीं है।
भाषित० गु० कथित, कहाहुआ।
भाष्य० ना० पु० व्याकरणादि सूत्र का प्रथम विवरण।
भास० ना० पु० प्रकाश, चमत्कार, दीप्ति।
भासना० अ० क्रि० प्रकट होना, सूझना।
भासित० गु० प्रकाशित, समझायागया।
भासुर० ना० पु० पतिका बड़ाभाई।
भास्कर० ना० पु० सूर्य।
भास्वान्० ना० पु० सूर्य, गु० प्रकाशित।
भास्वर० ना० पु० सूर्य।
भिखारी० ना० पु० याचक, भिक्षुक, फकीर, मंगता, मगन।

भिगाना० } भिगोना० } भिज़ाना० } स० क्रि० गीला वा थोदाकरना।

भिटनी० ना० स्त्री० कुच के ऊपर नोक पुनर्गा।

भिड़ना० अ० क्रि० मिलना, सटना, लड़ना।

भिड़ाना० स० क्रि० भिलाना, सटाना, लड़ाना।

भिण्डपाल० ना० पु० गोफना, धनवासी, जिस में ढेला रखकर घुमाय के चलाते हैं।

भिण्डी० ना० स्त्री० तरकारी विशेष।

भित्ती० ना० स्त्री० भीत, दीवार।

भिनकना० } भिनभिनाना० } स० क्रि० मक्खी उड़नेसे जो शब्द निकले।

भिनसार० ना० पु० तड़का।

भिन्न० गु० पृथक् अलग, वसर।

भिन्नता० ना० स्त्री० अलगाहट।

भिन्नाना० अ० क्रि० शिरघूमजाना, चक्राना।

भिन्सार० ना० पु० भोर, प्रात, तड़का, सवेरा।

भिरना० अ० क्रि० भिड़ना।

भिरत० ना० स्त्री० चरट, लड़ाई।

भिलावां० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष, जो देहमें लगने से छाला पड़जाता है।

भिलौंजी० ना० स्त्री० भिलावाका बीज।

भिषक्० } भिषज० } ना० पु० वैद्य, हकीम, तबीब।

भिक्षा० ना० स्त्री० भीख, खैरात।

भिक्षाटन० ना० पु० भीखमागना वा भीख मागने के लिये फिरना।

भिक्षु० ना० पु० दण्डी, संन्यासी, म्योड़ी पौधा।

भिक्षुक० ना० पु० भिखारी।

भी० अव्य० च, हूं और।

भीख० ना० स्त्री० भिक्षा, मँगनई।

भीगना० } भीजना० } अ० क्रि० गीला वा थोदाहोना, दुःखी होना।

भीजा० गु० गीला, भीगा भरा।

भीठ० ना० स्त्री० ऊंची धरती वा जिस स्थान में पान उत्पन्न होते हैं।

भीड़० ना० स्त्री० मण्डली, ठट, बहुतात, क्लेश।

भीड़ा० ना० पु० सकीर्ण।

भीत० गु० डरा, भययुक्त, ना० स्त्री० दीवार।

भीतर० अव्य० अन्तर, बीचमें।

भीतरिया० ना० पु० भीतर रहनेवाला वा जो मनुष्य देवालयका प्रधानता से कामकरताहै अर्थात् भण्डारी, रसोइया, पुजारी।

भीतरी० ना० पु० भीतरिया, गु० भीतर का।

भीति० ना० स्त्री० भय, शंका, दीवार।

भीम० ना० पु० भय, अमलबेत वृक्ष, युधिष्ठिर का भाई, गु० भयानक, भयंकर।

भीमसेन० ना० पु० पाण्डुका दूसरा पुत्र।

भीमसेनी० ना० पु० कपूरविशेष।

भीर० ना० स्त्री० भीड़।

भीरु० } भीरुक० } गु० कायर, डरपोक।

भील० ना० पु० जातिविशेष।

भीलन० } भीलिन० } ना० स्त्री० भीलकी जोरू।

भीलुक० गु० भीरुक।

भीषण० ना० पु० भय, गु० भयानक, भयंकर।

भीष्म० ना० पु० शिवजी, कौरवों का दादा।

भीष्माष्टमी० ना० स्त्री० माघकी शुक्लाष्टमी।

भुआर० } भुआल० } ना० पु० राजा।

भुक्त० गु० भोगा, भोगी खानेहारा।

भुक्त० गु० जो भोजन किया गया है।

भुक्ति० ना० स्त्री० भोगवस्तु, भोजनादि।

भुगतना० अ० क्रि० सुख या दुःखको भोगना, पुण्य वा पाप का उठाना, व्यतीतहोना।

भुगतमान्० गु० जो भुगतने के योग्यहै।

भुगताना० स० क्रि० भोगकराना, निपटाना।

भुग्गा० गु० सीधा, भोला।

भुच० अनगढ़, मूर्ख, जो छीला नहीं गया।

भुचम्पा० ना० पु० वृक्ष विशेष ।
भुज० ना० स्त्री० बाहु, दण्ड, मेंड, भोजपत्र ।
भुजग० ना० पु० सांप ।
भुजंग०
भुजंगम० } ना० पु० कालासर्प विशेष, गुंडा ।
भुजंगपर्णिनी० ना० स्त्री० नागदौन ।
भुजंगिनि० ना० स्त्री० सर्पिणी ।
भुजा० ना० स्त्री० भुज, बाहु ।
भुजाभूषण० ना० पु० बाजूबन्द ।
भुजाली० ना० स्त्री० तलवार विशेष, बाजूबन्द ।
भुजिया० ना० स्त्री० भाजी ।
भुट्टा० ना० पु० बाली ज्वारकी, बड़ी ज्वार ।
भुण्डली० ना० पु० कीड़ा विशेष ।
भुतना० ना० पु० छोटा भूत, भोक्स ।
भुतनी० ना० स्त्री० भुतनेकी स्त्री ।
भुतवा० ना० पु० भुतना ।
भुताहा० गु० जो भूतके समानहै ।
भुतियाना० अ० क्रि० भुताहा होना ।
भुनि० अव्य० मानो, गोया, सी ।
भुना० अ० क्रि० बहकना, भुनना, पकना ।
भुरभुरा० गु० सूखी बुरबुरी ।
भुरभुराना० स० क्रि० चीनी आदि सूखी वस्तु पर छिड़कना, बुरकाना ।
भुलसना० अ० क्रि० झुलसना, जलजाना ।
भुलाना० स० क्रि० भूलजाना, गुमजाना । बहकाना ।
भुलावा० ना० पु० धोखा, ठगना ।
भुव० ना० पु० स्वर्ग, आकाश, अम्बर, धरती ।
भुवंग०
भुवंगम० } ना० पु० भुजग, सांप ।
भुवन० ना० पु० जगत्, संसार, लोक, मन्दिर, आकाश, पानी, भौन, १४ लोक ।
भुवाल०
भुवालु० } ना० पु० राजाधिराज, बादशाह, राजा, भूमिपाल ।
भुस० ना० पु० चोकर ।
भुशुण्ड० ना० पु० माथा, शिर, सींग ।
भुशुण्डी० ना० स्त्री० तोप, बन्दूक रामायण विशेष ।
भुसूंडा० ना० पु० भुशुण्ड, कमल की जड़ें ।
भुसेरा० ना० पु०
भुसैला० ना० पु०
भुसौरा० ना० पु०
भुसौरी० ना० स्त्री० } स्थान विशेष जिस में भूसा रखते हैं ।
भू० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।
भूईडोल० ना० पु० भूकम्प, हालाचाला ।
भूं०
भूई० } ना० स्त्री० भूमि ।
भूंजा० ना० पु० भड़भूना ।
भूंसना० अ० क्रि० हौं हौं करना ।
भूकम्प० ना० पु० भौंचाल, हालाडोला ।
भूख० ना० स्त्री० क्षुधा ।
भूखा० गु० क्षुधित ।
भूगोल० ना० पु० धरामण्डल ।
भूचर० ना० पु० पृथ्वीपर चलनेहारे जन्तु ।
भूजन० ना० पु० पृथ्वीपर के मनुष्य, भोगना ।
भूड़० ना० स्त्री० रेतली धरती ।
भूत० ना० पु० अतीतकाल, पृथिव्यादि पंचतत्त्व अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, नभ, और प्रेतविशेष, जीव ।
भूतघ्नी० ना० स्त्री० तुलसी
भूतनया० ना० स्त्री० श्रीसीताजी ।
भूतनाथ० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
भूतनाशन० ना० पु० हींग ।
भूतनी० ना० स्त्री० प्रेतनी ।
भूतंदुला० ना० स्त्री० सिंहण ।
भूतपति० ना० पु० भूतनाथ, शिवजी, भैरव ।
भूतमर्द्दी० ना० पु० समुद्रसोन ।
भूतल० ना० पु० पृथ्वी, धरातल ।
भूतवास० ना० पु० बहेड़ा ।
भूतवृक्ष० ना० पु० स्योना ।
भूति० ना० स्त्री० विभूति, सम्पदा, राख, सिद्धि ।

भूतिक० ना० पु० कपूर।
भूतेश० ना० पु० भूतनाथ।
भूदेव० ना० पु० ब्राह्मण।
भूधर ना० पु० पर्वत, राजा, हाथी, मेष, साप, शेष, गौ, सूर्य, कच्छप।
भूधात्री० ना० पु० भूआवला।
भूनना० स० क्रि० पकाना, सहलाना, तलना।
भूनिम्ब० ना० पु० चिरायता।
भूप० } ना० पु० राजा, महीपति।
भूपति० }
भूपपद० ना० पु० राज्य, बादशाहत।
भूपाल० ना० पु० भूपति, राजा, महीपति।
भूभल० ना० पु० गरम राख।
भूभृत्० ना० पु० पर्वत, पहाड़।
भूमण्डली० ना० स्त्री० विल्व, धरामण्डल।
भूमध्यस्थ० ना० पु० जो समुद्र पृथ्वी और अग्निराके मध्यवर्ती है।
भूमि० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन।
भूमिका० ना० स्त्री० दीवाचह, सारांश।
भूमिज० ना० पु० मंगल, भौमासुर, उद्भिज, लता।
भूमिनाग० ना० पु० साधारण साप।
भूमिपति० } ना० पु० राजा, महीपति।
भूमिपाल० }
भूमिया० ना० पु० भूमिका देवता।
भूमीश० ना० पु० भूपाल, राजा।
भूय० अव्य० पुन, फेर।
भूयोभूयः० अव्य० पुन पुन, फिर फिर।
भूर० } ना० स्त्री० दक्षिणा, बाझा, दान, भीख।
भूरसी० }
भूरा० गु० रंग, कपिल, पिंगल।
भूरि० गु० बहुत अधिक।
भूर्ज० ना० प० भोजपत्र।
भूर्जकण्ठ० ना० पु० भोजपत्र वा उसका वृक्ष।
भूर्जपत्र० ना० पु० भोजपत्र।
भूल० ना० स्त्री० विसरण, चूक, धोखा।

भूलना० अ० क्रि० विसरना, चूकना, भटकना, खोजाना, लोपहोना।
भूलाविसरा० } गु० जो भटकगया।
भूलाभटका० }
भूलोक० ना० पु० मनुष्यलोक।
भूषण० ना० पु० आभरण, गहना, शोभा।
भूषित० गु० अलङ्कृत, भूषणयुत, शोभित।
भूसा० ना० पु० गेहूं और जौ आदिका सूखा तृण।
भूसिता० ना० स्त्री० अखरोट।
भूसी० ना० स्त्री० छिलका, धान आदिका चोकर, चूरा।
भूसुता० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।
भूसुर० ना० पु० ब्राह्मण।
भूस्वामी० ना० पु० भूपति।
भृकुटी० ना० स्त्री० भौंह, भ्रू, घुड़की।
भृगु० ना० पु० मुनिविशेष, वासना।
भृगुनन्दन० } ना० पु० परशुराम।
भृगुनाथ० }
भृगुनायक० }
भृगुपति० }
भृगुबन्धु० ना० पु० कुन्दपुष्प।
भृगुसम्भवा० ना० स्त्री० भारगी औषधी।
भृंग० ना० पु० भ्रमर, भौंरा, कीटविशेष।
भृंगराज० ना० पु० झाड़ीविशेष, पक्षीविशेष, भँगरा, बूटी।
भृंगाह्व० ना० पु० भँगरा बूटी।
भृंगारि० ना० पु० झींगुर।
भृंगी० ना० स्त्री० कुम्हारी, कीट, कीडाप्रसिद्ध जो झींगुरको लाकर निजरूप करताहै, शिवगण विशेष।
भृत्य० ना० पु० दास, सेवक, गुलाम।
भृत्यगण० ना० पु० सेवकों का समूह।
भृत्या० ना० स्त्री० दासी, लौंडी।
भेउ० ना० पु० प्रकार, स्वभाव, भेद, मर्म।
भेगा० गु० स्वर्गपाताली, टेरा।

भेंट० ना० स्त्री० भट।
भेंटना० स० क्रि० भटना।
भेक० ना० पु० मेढ़क, मेघा।
भेज० ना० स्त्री० लगान, धरताका पठावा।
भेजना० स० क्रि० पठाना, पहुंचाना।
भेजा० ना० पु० गूदा मस्तकका भीतरी मास।
भेट० ना० स्त्री० दर्शन, मुलाक़ात, सौगात, अर्पण उपायन, उपहार, नज़र।
भेटना० स० क्रि० मिलना, उपायन करना।
भेटा० ना० स्त्री० } बोट, डठा, भेंटना, मि
भेटू० ना० पु० } लेना।
भेड़० ना० स्त्री० मद, मेषकी जाति विशेष।
भेडा० ना० पु० मेढ़ा।
भेड़िया० ना० पु० विक, हुण्डार।
भेड़ियाधसान० ना० पु० गचपच करके मण्डली।
भेड़ी० ना० स्त्री० मेढ़ी, मष।
भेद० ना० पु० भिन्नभाव, वाचविशेष, गुप्त बात, मर्म, छद, अन्तर, फर्क, विषम।
भेदक० गु० भेदकरनेहारा, पाराणभद।
भेदकिया० ना० पु० भेदलगानेहारा, खोजी।
भेदन० ना० पु० भेद करने का काम।
भेदिका० } ना० पु० भेदकरनेहारा, खोजी,
भेदिया० } जासूस, घातिया, मर्म जानने
भेदी० } हारा।
भेदू० ना० पु० भेदरखनेहारा।
भेद्य० गु० भेदके योग्य।
भेना० ना० स्त्री० बहन।
भेर० }
भेरि० } ना० स्त्री० बाजा विशेष, कर्णवेध।
भेरी० }
भेला० ना० पु० भिलावा।
भेली० ना० स्त्री० गुड़का ढला।
भेव० ना० पु० भाव, प्रकृति, स्वभाव, मर्म, भेद।

भेष० ना० पु० रूप, चाल, सूरत।
भेषज० ना० पु० औषधि, दवा।
भेषरज० ना० पु० भगरा।
भैंस० ना० स्त्री० माहषी।
भैंसा० ना० पु० महिष, जामूश।
भैंसिया० ना० स्त्री० छागी भैंस।
भैंसियादाद० ना० पु० दाद रोग विशेष।
भैचक० गु० भयचक।
भैमी० ना० स्त्री० माघ शुक्ल एकादशी, दमयन्ती, नलकी स्त्री।
भैया० ना० पु० भाई।
भैरव० ना० पु० रागविशेष, शिवजी वा उनका सहचर, घृणा, कराल।
भैरवी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, भैरवकी स्त्री, दुर्गा।
भैहू० }
भैहा० } ना० स्त्री० छोट भाई की रनी।
भोंकना० स० क्रि० टोकना, हूलना।
भोंडा० गु० कुडौल, कुरूप।
भोंदू० गु० सीधा, मान्दा।
भोंप० ना० पु० नरसिंहा।
भोई० ना० पु० कहार, क्रि० भिगाई।
भोकस० ना० पु० भ्रामक, मन्ना।
भोक्ता० गु० भोजन में जो निपुण, अच्छा खानेहारा।
भोग० ना० पु० सुख वा दुःखका उठाना वा हर्ष, सुख, खाना, नैवद्य, विहार, विलास।
भोगना० अ० क्रि० सुख दुःखका उठाना वा पाना, सुख, विलास करना।
भोगवती० ना० स्त्री० शेषका निवासस्थान।
भोगा० ना० पु० छल, ठगई, धोखा।
भोगी० गु० भोग करनेवाला, ऋगादी ना० पु० सांप।
भोग्य० गु० जो भोग करने के योग्य है।
भोज० ना० पु० ज्योनार, राजा विशेष, देशविशेष जो पटना और भागलपुर की प्रदेश है।
भोजन० ना० पु० आहार, खाना।

भोजनचार० ना० पु० चारप्रकार का आहार अर्थात् भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य।
भोजपत्र० ना० पु० वृक्षविशेष की छाल।
भोजपुर० ना० पु० नगर विशेष।
भोज्य० ना० पु० जो खाने के योग्य है, सीधा।
भोट० ना० पु० भोट देशके वस्त्र, देश विशेष, जो तिब्बत का एक देशहै।
भोटन्त० ना० पु० देश विशेष जो नैपाल के पूर्व है।
भोटिया० ना० पु० भोट देश के लोग।
भोडर० } ना० पु० अभ्रक, अबरक।
भोडल० }
भोता० गु० जो अस्त्र तेज नहीं है, मन्द।
भोपा० ना० पु० टोनहा, उल्लू, बाजा विशेष।
भोपाल० ना० पु० देश वा नगरविशेष।
भोर० ना० पु० प्रात काल, पौढ़।
भोरा० ना० पु० धोखा, गु० भोला, सीधा, दयालु।
भोरे० गु० धोखे, भूले, रामायणे यथा, का क्षति लाभ जीर्ण धनु तोरे। देखा राम नयेके भोरे।
भोला० गु० छलहीन, सीधा, ना० पु० शिवजी।
भोलानाथ० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
भोली० गु० स्त्री० सीधी।
भौं० ना० स्त्री० भृकुटी, भू, भूमि।
भौंकना० अ० क्रि० हौं हौं करना, मूर्खता से बोलना, कुत्तेका शब्द।
भौंचाल० ना० पु० भूमिकम्प, हालाचाला।
भौंर० ना० पु० भँवर।
भौंरा० ना० पु० भ्रमर, अलि, षट्पद।
भौंरियाना० स० क्रि० फिराना, घुमाना।
भौंरी० ना० स्त्री० घोड़े के दोष विशेष, भौंरकी स्त्री, छडी रोगी, फेरा।
भौंसना० अ० क्रि० भौंकना।
भौ० ना० पु० भय, डर।
भौचक० गु० भयचक।
भौजाई० } ना० स्त्री० बड़े भाई की स्त्री।
भौजी० }
भौनास० ना० पु० बड़ा मूगा जिसमे हाथी बाधत है।
भौतिक० गु० जो भूत करके हाव, शरीरराग।
भौतिकदेह० ना० स्त्री० पञ्चतत्त्वकृतशरीर।
भौम० ना० पु० मगल, उद्भिज, लोन, भौमासुर।
भौमवार० ना० पु० मगलवार।
भौमासुर० ना० पु० दैत्यविशेष जिसको नरकासुर भी कहते है।
भ्रंस० ना० पु० ध्वस।
भ्रम० ना० पु० भूल, चूक, सन्देह, सशय।
भ्रमण० ना० पु० पर्यटन, भावर, फिरना।
भ्रमणा० ना० स्त्री० भ्रम, भूल, सदेह, फिरना।
भ्रमभीर० ना० पु० भूलका समूह वा बोझ।
भ्रमर० ना० पु० भौंरा, अलि।
भ्रमरी० ना० स्त्री० भ्रमरकी स्त्री, भौंरी।
भ्रमरका० ना० स्त्री० बावरी, जल्फें।
भ्रष्ट० गु० पतित, स्वधर्महीन, छुटलेला।
भ्रष्टा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा।
भ्रष्टाचार० ना० पु० अधर्म, स्वधर्महीन, सर्वभक्षी।
भ्राजमान० गु० शोभित, सुशोभित, जैसा।
भ्राता० ना० पु० भाई।
भ्रातृज० ना० पु० भतीजा, भाईका लड़का।
भ्रान्त० गु० जो घुमायागया।
भ्रान्ति० ना० स्त्री० भूल, चूक, भ्रम, मतिभ्रम।
भ्रामक० गु० भ्रमदाता, ठग, धोखा देनेवाला।
भ्रुव० } ना० स्त्री० भौंह, पंक्ति, घुड़कना।
भ्रू० }

भ्रूणहत्या० ना० स्त्री० गर्भपातन वा निनाशन।

भ्रूमङ्ग० ना० पु० भूविक्षेप, घुड़की।

[म]

मडुआ० ना० पु० अन्न विशेष।

मकड़ा० ना० पु० कीट विशेष जो जाला बनाता है।

मकड़ना० अ० क्रि० टेढ़ाचलना, जोतुराना।

मकड़ी० ना० स्त्री० छोटा मकड़ा, सूत्रक।

मकर० ना० पु० दशवीं राशि, मगर, मृग, मच्छ।

मकरध्वज० ना० पु० कामदेव, श्रीबलदेवजी, श्रीहनूमान्जी का पुत्र।

मकरन्द० ना० पु० पुष्पका रस, कोकिला।

मकरन्दी० ना० पु० कमल।

मकराकृत० गु० मछली के डौल।

मकराक्ष० ना० पु० खरासुर का पुत्र।

मकरी० ना० स्त्री० मछली, मक्कर की स्त्री, मकड़ी।

मकुष्ट०
मकुष्टक० } ना० पु० मोठ अन्न।

मकोड़ा० ना० पु० बड़ा चूंटा।

मकोय० ना० पु० फल वा पौधा वा झाड़ी विशेष।

मक्खन० ना० पु० नवनीत, माखन, नैनू, प्रसवह।

मक्खी० ना० स्त्री० माखी, बन्दूक का माखा।

मख० ना० पु० यज्ञ।

मखन० ना० पु० माखन।

मखना० ना० पु० हाथीविशेष जिसके दांत न हों, मुर्गा जिस के लाग न हों।

मखनिया० ना० पु० माखन बनानेहारा।

मखाना० ना० पु० पौधाविशेष।

मखी० ना० स्त्री० मक्खी।

मग० ना० पु० मार्ग, पन्थ, बाट, मगध देश।

मगध० ना० पु० देशविशेष, जिस में गयातीर्थ है या पटनादि नगर हैं।

मगधभाषा० ना० स्त्री० प्राकृत भाषाविशेष जो ब्रह्मा और श्याम में प्रचलित है जिसको वहां पालिक कहते हैं।

मगण० ना० पु० गणविशेष जिस में तीन अक्षर दीर्घ होते हैं।

मगन० गु० मग्न।

मगनता० ना० स्त्री० मग्नता, प्रसन्नता।

मगर०
मगरमच्छ० } मकर, ग्राह, कुम्भीर।

मगरा० गु० ढीठ, घमण्डी, हठीला, मचला।

मगराई० ना० स्त्री० } ढिठाई, घमण्ड, मच-
मगरापन० पु० } लाहट।

मगरेला० ना० पु० कालेरंग का छोटा बीज विशेष।

मगसिर० ना० पु० मगसिर, अगहन महीना।

मगही० गु० मगध देश की वस्तु।

मगहैया० ना० पु० मगध देश के वासी।

मगुरी० ना० स्त्री० मछलीविशेष।

मग्न० गु० डूबा, प्रसन्न, हर्षित, मुदित, गलित।

मग्नता० ना० स्त्री० प्रसन्नता, हर्ष, मुद।

मघवा० ना० पु० इन्द्र।

मघवास्त्र० ना० पु० वज्र।

मघा० ना० स्त्री० दशवां नक्षत्र।

मघोनी० ना० स्त्री० इन्द्राणी।

मंका० ना० पु० जपनी माला, सुमिरन, गुरी।

मंगत०
मंगता० } ना० पु० भिखारी।

मंगन० ना० पु० भिक्षुक, भिखारी, बन्दि।

मंगनी० ना० स्त्री० सगाई, उधार।

मंगरा० गु० बलवान्, ढीठ, मगरा।

मंगल० ना० पु० कुशल, आनन्द, तीसरा ग्रह, तातार देश के लोगों की तीनजाति में से एक और तीसरा वार, रागविशेष जो विवाहादि आनन्द में गायाजाता है।

मंगलकोटी० ना० स्त्री० चटाई विशेष।

मंगलघट० ना० पु० विवाहादि का कलश।

मँगलद्रव्य० ना० पु० मंगलादि।
मँगलवार० ना० पु० तीसरा वार।
मगलसमाचार० ना० पु० शुभ समाचार, अच्छा खबर।
मगला० ना० स्त्री० पार्वती दशाविद्या, म सुगा।
मगलाचार० ना० पु० बधावा, विवाह का गान।
मगलाचरण० ना० पु० शुभ कर्मों में गणेशादि देवताओं की विनय वा पूजा वा नमस्कार करना।
मगलामुखी० ना० स्त्री० बजना, गवैया वेश्या।
मगली० गु० मगलकारक, जयद्रत।
माल्या० ना० स्त्री० सजीवा, मगचना।
मँगवाना० स० क्रि० बुला भेजना।
मगशिर० ना० पु० मार्गशीर्ष, अगहन।
मगाना० स० क्रि० बलाभगना, उगवाना व लवाकरना।
मगूला० ना० पु० घराकन्दा।
मगतर० ना० स्त्री० सगाई।
मचक० ना० स्त्री० गाड़ी की धाड़ा मरमराहट दबक।
मचकना० अ० क्रि० गाड़ी में धाड़ाहाना चरचराना, मरमराना।
मचकाना० स० क्रि० चरचराना, झाड़ना फल कमरना।
मचना० अ० क्रि० लाना, उगना, हाना रचना।
मचमचाना० अ० क्रि० चरचराना, मरमराना।
मचलना० अ० क्रि० हठकरना, मचलाहाना।
मचलपन० ना० पु० हठ, मगरापन, ढिठाई।
मचला० गु० हठीला, मगरा, ढीठ।
मचलाई० ना० स्त्री० मचलापन, मचलाहट।
मचलाना० अ० क्रि० हठ करना, मतलाना, म हाना करना।
मचलाहट० ना० स्त्री० हठ, ढिठाई।
मचला हो० गु० हठीला।
मचान० ना० पु० मच।
मचामच० गु० लदालद।
मचिया० ना० स्त्री० पीढ़ी, चारा, पलगिया।
मचोदना० स० क्रि० निचोड़ना, ऐंठके तोड़ना
मच्छ० ना० पु० मत्स्य, मछला।
मच्छड़० ना० पु० एक छोटा कीट उड़नेहारा।
मच्छी० ना० स्त्री० मछली, मकरा।
मछ० ना० पु० मत्स्य, मछली।
मछन्दर० ना० पु० चूहा, गु० मूर्ख।
मछली० ना० स्त्री० जलशायनी जलचरएं मत्स्य।
मछवा० ना० पु० धामर, कहार, मछीमार।
मछी० ना० स्त्री० मछली।
मछुवा० ना० पु० मछवा धामर।
मजीठ० ना० पु० औषधि विशेष जिससे लालरंग बनता है।
मजीत० गु० ऐसा जो वस्तु काम में लाए जाते और फिर बचाजावे।
मजीरा० ना० पु० मंजीर बाजा विशेष झांझ।
मजूर० ना० पु० कमरा, ठीक शब्द मजदूर है, यह शब्द फारसी का है।
मज्जा० ना० स्त्री० हाड़ के भीतर का गूदा चर्बी।
मझला० गु० मझला, बीचवाला, मध्यवर्ती।
मझार० ना० पु० बीच, माझ।
मझेली० ना० स्त्री० मझाली।
मझोला० गु० जो न बहुत न बड़ा अथवा न अच्छा और न बुरा, अर्थात् मध्यम।
मझोली० ना० स्त्री० छागागाड़ी वा बहल।
मञ्च० ना० पु० मचान, डाली सिंहासन विशेष, खाट, वेदी, मचान, तख्त, तख्तपाश।
मञ्जन० ना० पु० दांत धार का चूर्ण विशेष, माजन, स्नान, नहान।
मञ्जना० अ० क्रि० उजला होना, साफ होना,

मंजरी० ना० स्त्री० फूलोंका गुच्छा फली समूह।
मंजल० ना० पु० अजीरवृक्ष।
मंजा० ना० पु० नये वर्षेपानी का फेन अर्थात् प्रथम आषाढ़ में वर्षनेकापानी मछली को विष होता है, रामायणे यथा, मजा मनहुं मीन कहं व्यापा
मंजार० ना० पु० बिलार, बिलार।
मंजारी० ना० स्त्री० बिल्ली।
मंजित० गु० मजन कियागया वा किये हुये, धोयागया।
मंजिष्ठ० ना० पु० मजीठ।
मजीर० ना० पु० बिछुआ, पांवकाभूषण।
मजीरा० ना० पु० मजीरा।
मजु० गु० सुंदर, मनोहर, चाहता।
मजुघोष० ना० पु० कबूतर, परेवा।
मंजुघोषा० ना० पु० कबूतरी, कोयल, कोकिला।
मंजुल० गु० सुंदर, मनोहर, चाहता, अच्छा।
मंजुला० ना० स्त्री० मजीठ।
मजूषा० ना० स्त्री० टोकरा।
मटक० } ना० स्त्री० चोचला, भावती, अठिलानपन, चमरन।
मटकना० }
मटकना० ना० पु० पुरवा, बधना, मृत्तिकाका छोटापात्र।
मटकना० अ० क्रि० पलक वा भावला मारना, चमकना।
मटका० ना० पु० मठोर मृत्तिकाकाबड़ाबर्तन।
मटकाना० स० क्रि० आंख डुलाना, चमकाना, दूसरेको रिझाना।
मटकी० ना० स्त्री० छोटा मटका, ठुमनी, गुल्ली, छगुनी, भपकी, सेन।
मटकोठा० ना० पु० मिट्टीका घर।
मटर० ना० पु० अन्न विशेष, कैराउ।
मटरा० ना० पु० मटरविशेष, रेशमीवस्त्र विशेष।
मटरी० ना० स्त्री० मटर विशेष।
मटरीला० गु० जिसमें मटर मिलाहो।

मटियाना० स० क्रि० मिट्टीसे माजना, अ० क्रि० सून, सींचना, बात छुपाना, होनेदेना, शिथिल होजाना।
मटियार० ना० पु० एकप्रकारकी धरती विशेष जो रेतली नहीं है।
मटियारा० गु० जो किसी कामका न हो, जोताऊ खेती के योग्य।
मटियाव० ना० पु० आनाकानी, आलछुपाव।
मट्टी० ना० स्त्री० मिट्टी, मृत्तिका।
मट्ठा० ना० पु० छाछ, मठा।
मठ० ना० पु० शिवालय, गोसाइयों का घर, मण्डप।
मठड़ी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।
मठपति० } ना० पु० गोसाई, अतिथि वा जो
मठधर्ती० } मनुष्य शिवार्पितवस्तु लेताहो।
मठा० ना० पु० मट्ठा, गु० ढीला, धीमा, धीरा।
मठोर० ना० पु० मटका।
मढ़ियाना० स० क्रि० चपकाना, मीढ़ीलगाना, जमाना।
मड़ोड़० ना० स्त्री० एंठ, बल, पेच।
मड़ोड़ना० स० क्रि० ऐंठना बलदेना, पेच डालना।
मड़ोड़ा० ना० पु० पेट में की पीड़ा, पचिरा।
मढ़ोटी० ना० स्त्री० मुरा, एंठा, जोड़ा।
मढ़न० ना० पु० मढ़ने वा वस्तु का काम।
मढ़ना० स० क्रि० लेसना, लगाना, चिपटाना।
मढ़ा० गु० जो मढ़ागया, ना० पु० बिवाहका मण्डप, बड़ी मढ़ी।
मढ़िया० ना० स्त्री० छोटी मढ़ी।
मढ़ी० ना० स्त्री० कुटी, झोपड़ी मण्डप।
मणि० ना० स्त्री० भूषण के लिये पाषाण विशेष, हीरा सोना आदि चमत्कार, शिरोमणि जैसे प्रसिद्ध है कि परंतु विशेष सर्प के पास होती है जो रात्रिको प्रकाशित रहती है।

मणिकर्णिका० ना० स्त्री० काशीजी में स्थान विशेष जहां देवीजी के कान की मणि गिरीथी।
मणिका० ना० स्त्री० छोटी मणि, गुरिया।
मणिपूर० ना० पु० चक्र विशेष, देश विशेष, जो बंगाल देश के पूर्व में है।
मणियां० ना० पु० मालाकी गुरिया वा दाना।
मणियार० ना० पु० सर्प विशेष जिसके माथे होती है, जाति विशेष जो चूड़ी बनाता है।
मण्ड० ना० पु० जून, माड़, पीच वा साता जिसमें शोरा भराजाता है।
मण्डन० ना० पु० भूषण विशेष, मिलान।
मण्डप० ना० पु० तृणादि से रचित देवतावासघर, मढ़ा, मढ़वा।
मण्डल० ना० पु० स्थान, देश, गोला, कुण्डल, घावरा, तल।
मण्डला० ना० स्त्री० धौंकुवार।
मण्डलाकार० गु० गोलाकार।
मण्डलाग्र० ना० पु० खड्ग, तलवार।
मण्डलाना० अ० क्रि० फिरना, उड़ना, यथा पक्षी उड़ते हैं।
मण्डलिया० ना० पु० कपोत विशेष।
मण्डली० ना० स्त्री० समूह, सभा, बैठक, घर।
मण्डलीक० ना० पु० राजा, महन्त, चाधरी।
मण्डलेश्वर० ना० पु० राजा, मण्डलपति।
मण्डवा० ना० पु० तुज ना० स्त्री० मड़वी।
मण्डवी० ना० स्त्री० अन्न विशेष।
मण्डा० ना० पु० पेड़ा विशेष।
मंडित० गु० जड़ित, शोभित, भूषित, मढ़ा हुआ।
मण्डियाना० अ० क्रि० कलपदना वा लगाना।
मण्डी० ना० स्त्री० हाट, गोला, गज।
मण्डूक० ना० पु० मेढ़क, भेक।
मण्डना० स० क्रि० मढ़ना।
मत० ना० पु० धर्म दीन, रूलाह, सम्मत रीति ढब, ढंग, अभिप्राय, बुद्धि, अव्य० नि षेधार्थ अर्थात् नहीं, जनि।
मतंग० ना० पु० हाथी, मुनि विशेष।
मतना० ना० पु० ऊख विशेष।
मतभेद० ना० पु० मतान्तर, अभिप्राय का भेद।
मतराना० स० क्रि० मनाना।
मतलाना० अ० क्रि० जी घिनाना, उबकाना।
मतवाला० गु० मत्त, मदमाता।
मतहीन० गु० मतरहित, बुद्धि रहित।
मता० ना० पु० उपदेश, सलाह, परामर्श।
मतानुसार० ना० पु० अभिप्राय के अनुकूल, मजहब के मुवाफ़िक़, सलाह के मुवाफ़िक़।
मतान्तर० ना० पु० द्वितीयमत, मतके विपरीत, दूसरा धर्म।
मतान्तराचार० ना० पु० द्वितीय धर्म का व्यवहार।
मतावलम्बी० ना० पु० मताश्रयी, पन्थी।
मताश्रयी० ना० पु० मत के आश्रित, मतके आधीन, पन्थी।
मति० ना० स्त्री० बुद्धि, सम्मति, रीति, राय।
मतिमान्० } गु० बुद्धिमान्।
मतीर्ऊ }
मतीर० ना० पु० तरबूज, हिन्दुवाना, सहरा तिकाया यथा, गदधर पाइ मतीर ही मानरू है पयोधि।
मतो० ना० पु० मत, सम्मत।
मत्त० गु० मधुमाता, मस्त, मतवालाहाथी।
मत्तवत्० गु० मधुमाता, मधुमाते के समान।
मत्सर० ना० पु० डाह, जलन, ईर्षा, गु० जलनी।
मत्स्य० ना० पु० मछली, देश विशेष।
मत्स्यजी० } ना० स्त्री० बंसिरा, जिससे
मत्स्यवेधन० } मछला मारते हैं।
मत्स्यपित्ता० ना० स्त्री० कुटकी।
मत्स्याक्षी० ना० स्त्री० माछी, श्वेतदूब।
मथन० ना० पु० बिलावन, मथोवन, दूहाव।

मथना० स० क्रि० मदना, बिलोवना, मथोना, ना० पु० मथनी, पात्र विशेष।
मथनियां० ना० स्त्री० मथानी।
मथनी० ना० स्त्री० बिलोरी, मदानी, रई।
मथा० ना० पु० माथा, गु० मथाहुआ।
मथानी० ना० स्त्री० दूधहाड़ी, मटकी, चाटी।
मथित० गु० छाछ, मट्ठा जो मथागया।
मथुरा० ना० पु० नगर विशेष, जहां श्रीकृष्ण चन्द्र जन्मे थे।
मथुरिया० ना० पु० मथुराके ब्राह्मण।
मथुरनी० ना० स्त्री० मथुरिया की जोरू।
मथौट० ना० पु० चन्दा, बिहरी, बाछ।
मथौरा० ना० पु० सूर्यमुखी, छाता, छतुरी।
मद० ना० पु० गर्व, अहङ्कार, कस्तूरी, मादक वस्तु, मदिरा आदि।
मदकल० ना० पु० हाथी।
मदकारिणी० ना० स्त्री० सुरापानी अजवाइन।
मदन० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष, मैनफल, कामदेव, प्रद्युम्नजी, दौना।
मदनांकुश० ना० पु० लिंग।
मदनाह्वा० ना० स्त्री० लिरहटी।
मदनारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
मदमाता० ना० पु० } गु० मतवाला, मतवाली।
मदमाती० ना० स्त्री० }
मदमाल० ना० पु० बिछुआ, पादागद।
मदयन्तिका० ना० स्त्री० मालती।
मदान्ध० गु० अभिमानी, मदिरा में गलित।
मदार० ना० पु० आक, अर्क।
मदारिया० ना० पु० मदारका फूल।
मदारी० ना० पु० लपरा, नटवर, लाजवाला।
मदिष्क० गु० अहङ्कारी, मदान्ध।
मदिरा० ना० स्त्री० शराब, दारू, ना० पु० खद।
मदोत्कट० ना० पु० कपोत, कबूतर।
मदोत्कंठ० ना० पु० हाथी।
मद्गुर० ना० पु० मोगरा, मत्स्य विशेष, मुदगर।
मद्य० ना० स्त्री० सुरा, मदिरा, शराब।
मद्यगन्धा० ना० स्त्री० मौलसिरी।
मद्यप० ना० पु० अधिक मदिरा पीनेवाला।
मद्या० ना० स्त्री० बर्रो।
मधुमाता० गु० मतवाला।
मधुवोषित० ना० पु० कङ्कोल, मिरच।
मधु० ना० पु० मदिरा, पुष्प का रस, शहद, पानी, चैत्रमास, बसन्तऋतु, वृक्ष, दूध, अमृत, दैत्य विशेष।
मधुक० ना० पु० महुआ वृक्ष।
मधुकर० ना० पु० भ्रमर, भौंरा।
मधुकरी० ना० स्त्री० भ्रमरी, भौंरी, रोटीविशेष।
मधुकर्कटिका० ना० स्त्री० मधुककड़ी।
मधुकोप० ना० पु० मधुमाखी का छत्ता।
मधुकोष० ना० पु० महुआ वृक्ष।
मधुग० ना० पु० महुआ भेद।
मधुतृण० ना० पु० ऊख, गन्ना।
मधुदूतिका० ना० स्त्री० कोयल।
मधुद्रुम० ना० पु० मधूकवृक्ष, चैत्रके वृक्ष।
मधुप० ना० पु० भौंरा, भ्रमर।
मधुपर्क० ना० पु० पूजाकी सामग्री, मधु और दही आदि मिलाकर खाना।
मधुपर्णी० ना० स्त्री० दूधिया, पोरा।
मधुपर्ष० ना० पु० पत्ता रसीला पत्र।
मधुपुर० ना० पु० } मथुराजी।
मधुपुरी० ना० स्त्री० }
मधुफला० ना० पु० खजूर, दाख।
मधुमण्ड० ना० पु० मोम।
मधुमक्षी० ना० स्त्री० शहदकी मक्खी, ममाखी।
मधुमाल० ना० पु० रागिनी विशेष।
मधुमास० ना० पु० चैत्रमास।
मधुयष्टी० ना० स्त्री० मुलहटी।
मधुयोनि० ना० पु० खजूर, दाख।
मधुर० गु० मीठा, चाहता, सुन्दर, अच्छा।
मधुरमण्ड० ना० पु० मोम।
मधुरसा० ना० स्त्री० मुरहरी, मूर्वा, दाख।

मधुरा० ना० स्त्री० काकोली ।

मधुरी० गु० स्त्री० मीठी, रसीली ।

मधुरान्न० ना० पु० मीठा भोजन यथा रसावर ।

मधुलिड्० } ना० पु० भौंरा, भ्रमर ।
मधुलिह० }

मधुवन० ना० पु० मथुरा नगर ।

मधुव्रत० ना० पु० मधुकर, भौंरा, भ्रमर ।

मधुशिग्रु० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष ।

मधुश्रवा० ना० स्त्री० गुड़हर, सजीवन बूटी ।

मधुष्ठील० ना० पु० महुआ वृक्ष ।

मधुग्रीव० ना० पु० गुड़हर ।

मधुसूदन० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।

मधूक० ना० पु० महुआ वृक्ष ।

मधूकरी० ना० स्त्री० पचये अन्नकी भिक्षा जो अतिथि को देते हैं, भौंरी, रोटी ।

मधूनका० ना० स्त्री० मुलहटी ।

मधूप० ना० पु० गुड़हर ।

मधोदन्ती० ना० स्त्री० कुम्भी तालाव की ।

मध्य० अव्य० अन्तराल, बीच, विषय ।

मध्यदिवस० ना० पु० दुपहर ।

मध्यदेश० ना० पु० कुरुक्षेत्र बाहर, बीच का देश अर्थात् हिमालय और विन्ध्य और प्रयाग और कुरुवन के मध्यका देश, अवध आदि ।

मध्यभाग० ना० पु० मध्यस्था ।

मध्यम० गु० न भला न बुरा, समासम, धीरे, न्यूनाधिक रहित, रागका स्वर विशेष ।

मध्यमपुरुष० ना० पु० मध्यमार्गीनर, सामनेवाला, मुखातिब, हाज़िर ।

मध्यमा० ना० स्त्री० अनामिका और तर्जनी के बीचकी अंगुली ।

मध्यलोक० ना० पु० मनुष्यलोक ।

मध्यवर्ती० } ना० पु० बिचवैया, बिचवई,
मध्यस्थ० } समानवर्ती ।

मध्यस्थल० } ना० पु० कटि, कमर, बीचका
मध्यस्थान० } स्थान ।

मध्याह्न० ना० पु० ठीकदोपहर, दिनका बीच ।

मद्या० ना० स्त्री० मदिरा, शराब ।

मन० ना० पु० चित्त, हृदय, आत्मा, ४० सेरका ।

मनकामना० ना० स्त्री० मनोयोग ।

मनघटा० ना० पु० कुनाको जगत ।

मनचला० गु० चरफरा, अगमना, सूरमा ।

मनजात० ना० पु० कामदेव ।

मनत० ना० स्त्री० मनौता, स्वीकार ।

मनन० ना० पु० चिन्तन, मनसूबा ।

मनभावन० } गु० भाया, भला, चाहता ।
मनभावना० }

मनमथ० ना० पु० कामदेव ।

मनमारना० स० क्रि० अपनी इच्छाको रोकना ।

मनमोहन० ना० पु० सज्जन, प्यारा, श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम जो मनको मोहलेवे ।

मनस्विनी० ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री ।

मनसा० ना० स्त्री० इच्छा, अर्थ विचार, इरादह ।

मनसिज० ना० पु० कामदेव ।

मनसी० ना० स्त्री० सबलको देनेकी इच्छा ।

मनसेधू० ना० पु० मनुष्य ।

मनस्ताप० ना० पु० मनकी पीड़ा ।

मनहु० अव्य० मानो, जानो ।

मनहारी० गु० मन का हरण करनेहारा ।

मनाना० स० क्रि० अंगीकार करवाना, आदर देना, बहलाना, मनको भाना, कृपालकरना ।

मनावना० स० क्रि० मनाना ।

मनि० ना० स्त्री० मणि ।

मनिका० ना० स्त्री० मणिका, दाना, गुरिया ।

मनिहार० ना० पु० चूड़ीवाल, जाति विशेष ।

मनिहारी० ना० स्त्री० चूड़ी बेचनेवाली ।

मनीषा० ना० स्त्री० बुद्धि ।

मनीषि० ना० गु० बुद्धिमान, चतुर ।

मनु० ना० पु० स्वायंभुव आदि १४ जो प्रत्येक कल्प में होते हैं, स्वायंभुवमनु विरचित स्मृति, ब्रह्मा, ब्रह्मा का पुत्र, प्रथम मनुष्य ।

मनुआ० ना० पु० मन, विचार, ना० स्त्री० रुई विशेष ।

मनुज० ना० पु० मनुष्य, आदमी।

मनुजाद० ना० पु० असुर, दैत्य, राक्षस।

मनुष्य० ना० पु० मानव, मर्त्य, आदमी।

मनुष्यता० स्त्री० } मनुसाई, पुरुषार्थ, भल
मनुष्यत्व० पु० } मनसात।

मनुसाई० ना० स्त्री० पुरुषार्थ, मनुष्यता, भल मनसी।

मनुहार० ना० स्त्री० मोहनी, सुन्दरी।

मनो० अव्य० मानो, जानो।

मनोगुप्ता० ना० स्त्री० मनसिल।

मनोज० ना० पु० कामदेव।

मनोभव० ना० पु० कामदेव।

मनोयोग० ना० पु० मनका योग।

मनोरथ० ना० पु० इच्छा, कामना, वासना, मतलब।

मनोरम० ना० पु० गु० मनोज्ञ, सुन्दर, कुन्द।

मनोहर० गु० मनका हरनेहारा, मनोज्ञ।

मनोज्ञ० गु० सुन्दर, स्वरूप, चाहता, मनभावित, मनको जाननेहारा।

मनौती० ना० स्त्री० जामिनी ना० पु० बिचवई, और मध्यस्थ।

मन्त्र० ना० पु० टोटका, दर्शनरथी, लक्षण, एकान्त वा गुप्त उपदेश, सम्मति, सलाह।

मन्त्रणा० ना० स्त्री० परामर्श, विचार, आदेश।

मन्त्रराज० ना० पु० तारकादि मन्त्र।

मन्त्री० ना० पु० जिसके साथ परामर्श की जाय, वजीर, सम्मति, सलाही, गु० मन्त्रजानने हारा।

मन्थन० ना० पु० मथन।

मन्थरा० ना० स्त्री० केकयी की दासी विशेष।

मन्थित० गु० क्षुब्ध, मट्ठा, मथित।

मन्थी० ना० पु० चन्द्रमा, कामदेव, नक्षत्र, स्व भानु अर्थात् राहु, शनैश्चर।

मन्द० गु० अल्प, धाशा, शिथिल, बुरा, दुष्ट, नीच, अभागी, धीरा, मस्त, ना० पु० पाप, शनैश्चर, अज्ञान।

मन्दतर० गु० अतिमन्द, अतिनीच।

मन्दर० ना० पु० पर्वत विशेष।

मन्दरा० ना० पु० गचगीना, गु० नाटा, ठिगना।

मन्दराचल० ना० पु० मन्दर।

मन्दराज० ना० पु० समुद्र के तट पर नगर विशेष।

मन्दा० गु० धीरा, कोमल, नम्र, सस्ता, हलका।

मन्दाकिनी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी, स्वर्गीय।

मन्दार० ना० पु० कमल, मदार, कल्पवृक्ष।

मन्दिर० ना० पु० घर, देवालय।

मन्दिरा० ना० पु० मजीरा।

मन्दोदरी० ना० स्त्री० रावण की स्त्री, पाँचवीं कन्या।

मन्मथ० ना० पु० कामदेव।

मन्वन्तर० ना० पु० एक मनुका राज्य, अर्थात् इकहत्तरि युगका परिमाण वा दो मनुओं के मध्य का काल।

मपान० ना० पु० नाप, परिमाण।

मपाना० स० क्रि० माप करवाना, नपाना।

मफेनक० ना० पु० अफयून, अफीम।

मम० सर्व० मेरा, मैं, ना० स्त्री० ममता, इर्षा।

ममता० स्त्री० } घमण्ड, दम्भ, मनमौज, माया,
ममत्व० पु० } मोह, दया, प्यार।

ममाखी० ना० स्त्री० मधुमक्खी।

ममियासास० ना० स्त्री० पति वा पत्नी की ममानी।

ममियाससुर० ना० पु० पति वा पत्नी का मामू।

ममेरा० गु० मामूका, यथा, मामूका पुत्र।

ममेराभाई० ना० पु० मामूका पुत्र।

ममोरा० ना० पु० मेरा और तेरा, मेरा तेरी।

मय० ना० पु० कार्य, प्रधान, रूप, दैत्य विशेष, गु० बहुत।

मयकल० ना० पु० पर्वत विशेष।

मयंक० ना० पु० चन्द्रमा।
मयन० ना० पु० कामदेव।
मयना० ना० स्त्री० पार्वती की माता, मैना।
मयसुता० ना० स्त्री० मन्दोदरी।
मया० ना० स्त्री० माता, दया।
मयूर० ना० पु० मोर, पक्षी विशेष हस।
मयूरक० ना० पु० ऊगा।
मयूरग्रीवक० ना० पु० नीलाथोथा, तूतिया।
मयूरचोख० ना० पु० स्योना।
मयूख० ना० पु० किरण।
मरक० ना० पु० सर्वव्यापक रोग महामारी।
मरकत० ना० पु० नीलम, नीलमणि, पनाल।
मरकन्हा० } गु० मारनेहारा।
मरकहा० }
मरगजी० ना० पु० मुरझाया हुआ मरगशब्द फ़ारसीका अर्थात् मौत श्रोर जो जीव अर्थात् मुआ जीव यह शब्द सतसई में है।
मरघट० ना० पु० मृतक के जलाने का स्थान।
मरजाना० अ० क्रि० मरना।
मरजिया० ना० पु० समुद्र से मोती निकालने हारेका नाम।
मरण० ना० पु० प्राणवियोग, मृत्यु।
मरदनिया० ना० पु० मर्दनी।
मरना० अ० क्रि० प्राण निकलना।
मरपच० अ० गु० सरा, गन्दा, जीर्ण।
मरपचना० अ० क्रि० दुःख वा शोकका भोग करना, अत्यन्त उद्यम करना, बहुत परिश्रम अर्थात् मिहनत करना।
मरभूखा० गु० उपासा, लघा, खाऊ, बड़पेटा।
मरमर० ना० पु० पाषाण विशेष, बिल्लौर।
मरमराना० स० क्रि० चरचराना, यथा नई जूती बालती है।
मरवैया० ना० गु० मरनेहारा वा मारनेहारा, मृतक।
मरहट्टा० ना० पु० छन्द विशेष, जाति विशेष।
मरा० गु० मरगया, मृतक।
मराल० ना० पु० हंस, बतक।
मराली० ना० स्त्री० मराल की स्त्री, बाचाल।
मरिच० ना० स्त्री० मिरच, कालीमिरच।
मरीचि० ना० स्त्री० किरण, लहरी, ना० पु० मुनि विशेष।
मरीचिका० ना० स्त्री० मृगतृष्णा, शराब।
मरु० ना० पु० रेता, बालू।
मरुआ० ना० पु० पाधा विशेष, जिसमें सुगंधि होती है।
मरुक० ना० पु० मरुआ।
मरुप्रिय० ना० पु० ऊंट।
मरुद्रवा० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी, जवासा।
मरुभूमि० ना० स्त्री० मारवाड़कीधरती, रेतली।
मरुव० ना० पु० मरुआ।
मरुत्० ना० पु० वायु, पवन।
मरोड़० ना० स्त्री० मरोड़।
मरोड़ना० स० क्रि० मड़ोड़ना।
मरोड़फली० ना० स्त्री० पाधाविशेष की फली।
मरोड़ा० ना० पु० मड़ोड़ा।
मरोड़ी० ना० स्त्री० मड़ोड़ी, ऐंठन, मुरही।
मरोर० ना० स्त्री० मरोड़।
मरोरना० स० क्रि० मरोड़ना।
मरोह० ना० स्त्री० छोह, प्यार, माया, मलम नसार।
मरोही० गु० छोही, मायावन्त, दयाशील।
मर्कट० ना० पु० वानर, कपि।
मर्कटी० ना० स्त्री० कौंचबीज, जाल, मकड़ी, वानरी, गणित मर्कटी जो पिंगल में है।
मर्त्य० ना० पु० मनुष्य।
मर्त्तलोक० } ना० पु० मनुष्यलोक।
मर्त्यलोक० }
मर्दक० ना० पु० पवार पौधा, गु० मलनेहारा।
मर्दन० ना० पु० शरीर का मलना, रगड़ना, घिसाव, नाशन।
मर्दना० स० क्रि० मलना, नाशना, मिटाना।

मर्दनछर्दन० ना० पु० मैनफल।
मर्दनी० गु० मलनेहारा।
मर्दित० गु० जो मलागया, मारागया।
मर्म० ना० पु० भेद, समाचार, ज्ञान, चोर, कठोर हृदयादि अंग।
मर्मर० ना० पु० एक पत्थर का नामहै यह शब्द फारसी का है।
मर्मस्थान० ना० पु० शरीरके जिस स्थान का घाव सघातिक है, भेदका स्थान।
मर्मज्ञ० ना० पु० जो मर्म को जाने, ज्ञानी।
मर्मी० गु० भेदू, भेदज्ञाता, मर्मज्ञ।
मर्य्याद० } ना० स्त्री० महत, पति, सन्मान,
मर्य्यादा० } सीमा, हद, वादा, प्रमाण।
मल० ना० पु० मल० विष्ठा, स्त्री की रज, पाप।
मलक० ना० पु० पानी, आमला, जी मिलाना।
मलकना० अ० क्रि० कहारने समान चलना, जी मिलाना या उबकना।
मलग० ना० पु० पक्षीविशेष।
मलगी० ना० पु० लोटा बनानेहारा।
मलत० ना० पु० रुपया वा पैसा जो घिसगया हो, सिलपट।
मलथ० ना० स्त्री० कहुवरि।
मलन० ना० पु० नाव, लोट, मलने का काम।
मलना० स० क्रि० मर्दना, घिसना, माँजना।
मलया० ना० पु० कूड़ा, मैल, बर्तन विशेष।
मलमल० ना० पु० कपड़ा विशेष।
मलमास० ना० पु० लौंद, अधिमास।
मलमेट० ना० पु० उजाड़, सत्यानाश, होचुका जैसे रवाद।
मलय० ना० पु० पर्वतविशेष, जो दक्षिणमें है।
मलयज० ना० पु० चन्दन।
मलयगिरि० ना० पु० पर्वतविशेष, जहां चन्दन अधिकतासे उपजताहै।
मलया० ना० स्त्री० पद्माक, ना० पु० मलय।
मलयागिरि० ना० पु० चन्दन का रंग।
मलयुत० गु० मैला।
मलवाई० ना० स्त्री० मलवानेका पैसा वा काम।
मलविका० ना० स्त्री० कालानिशोत।
मलवैया० ना० पु० मलनेहारा।
मलाई० ना० स्त्री० साढ़ी, बालाई, मलने का काम वा पैसा।
मलान० ना० पु० दुःख, उदास, दुःखी।
मलाना० स० क्रि० मर्दन कराना, घिसाना, मिलाना।
मलार० ना० पु० रागविशेष।
मलिच्छ० गु० म्लेच्छ।
मलिन० गु० मलीन, मैला, उदास, ना० स्त्री० कालीमिरच।
मलिनता० ना० स्त्री० मालिन्य, अपवित्रता, मैलापन।
मलिनमुख० गु० उदास, कठोर, लिहाड़, दुष्ट।
मलिनी० ना० स्त्री० पुष्पवती, रजस्वला।
मलिन्द० ना० पु० भ्रमर, भौंरा।
मलिया० ना० स्त्री० काष्ठ वा नारियल वा मिट्टी का पात्र, जिसमें तेल रखते हैं, हँड़िया।
मली० गु० मैला।
मलीन० गु० मैला, अपवित्र धूधला, उदास, दुःखित, व्याकुल।
मलीनता० ना० स्त्री० मलिनता।
मलेपअ० गु० घोड़ा जिसकी आयुदशावर्ष से अधिक हुई।
मलेच्छ० गु० म्लेच्छ।
मल० ना० पु० भालू, जो बाहुयुद्ध में निपुण, योद्धा, पहलवान।
मलयुद्ध० ना० पु० बाहुयुद्ध, कुश्ती।
मलार० ना० पु० मलार।
मल्लिक० ना० पु० पर्वत विशेष।
मल्लिका० ना० स्त्री० मालती, चम्बला, पुष्प विशेष।
मल्लूर० ना० पु० बेलु, बिल्व।
मवास० ना० पु० शरण पाना, आसरा।

मशक० ना० पु० मसक, चमड़ारूपी जलपात्र।
मशहरी० ना० स्त्री० मच्छड़ों के निवारणार्थ जो आवरण पलंग के ऊपर रहताहै।
मसृणा० ना० स्त्री० अलसी।
मषी० ना० स्त्री० स्याही, रोशनाई।
मष्ट० गु० चुप, मौन, ना० स्त्री० मौनी।
मष्टता० ना० स्त्री० चुप्पी, मौनता।
मसक० ना० पु० मच्छड़, बिलार, मशा।
मसकना० अ० क्रि० फटना, चिरना, चसना, बोलना।
मसकाना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना, तोड़ना, घुलाना।
मसकी० ना० स्त्री० दबाई, फंकी, बोली।
मसमसाना० अ० क्रि० किसी के डरसे मनकी बात छुपाना, गुमहोजाना।
मसलना० अ० क्रि० कुचलना, मांजना और पीसना।
मसहरी० ना० स्त्री० मशहरी।
मसा० ना० पु० मच्छड़, दशा, शरीर में काला ऊंचा चिह्न विशेष।
मसान० ना० पु० श्मशान, मरघट।
मसानिया० ना० पु० जो मृतक की वस्तु लेय।
मसि० ना० स्त्री० स्याही, रोशनाई।
मसिपात्र० ना० पु० दवायत, दवात।
मसिनिन्दुक० ना० पु० मनता, काजलका टीका जो स्त्रियां बालक के माथे में लगाती हैं।
मसी० ना० स्त्री० मसि, रात, बोली।
मसीन० } ना० पु० दरिद्र।
मसीना० }
मसूड़ा० ना० पु० दांतों के ऊपर का मांस।
मसूर० ना० पु० अन्न विशेष।
मसूरविदला० ना० स्त्री० कालानिसोत।
मसूरिया० ना० स्त्री० माता विशेष, शीतला विशेष।
मसें० ना० पु० छोटी २ मूछें जो नई जवानी में निकलती है।
मसोसना० स० क्रि० मरोड़ना, निचोड़ना।
मसोसा० गु० मरोड़ा, निचोड़ा, ना० पु० दुःख, व्यथा, पछतावा।
मस्तक० ना० पु० माथा, शिर, खोपड़ी।
मस्तूल० ना० पु० खम्भ जो नाव के बीचमें पाल चढ़ाने के लिये गाड़ते हैं।
मस्या० ना० स्त्री० कुटरी, कुटकी।
मस्याधार० ना० पु० दवायत, मसी रखने का पात्र।
महला० ना० पु० मसा।
मह० अव्य० मध्य, में, बीच।
महंगा० गु० बड़ेमोलका, काल, दुर्भिक्ष।
महंगी० ना० स्त्री० काल, दुर्भिक्ष, कहत।
महक० ना० स्त्री० सुगंधि, सुवास।
महकना० अ० क्रि० सुवास निकलना वा उठना
महकाना० स० क्रि० बासना, सोंधाना।
महकीला० गु० सुगन्धित, सोंधा।
महत्० गु० बड़ा, तेजस्वी, श्रेष्ठ, ना० स्त्री० बड़ाई, मर्य्यादा, मान।
महत्मा० ना० पु० महतो।
महति० ना० स्त्री० बड़ी बड़ाई, गु० बड़ी।
महतिया० ना० पु० महतो।
महतो० } ना० पु० जो मनुष्य गांव में प्रधान होता है, मुकद्दम, महतिया।
महतौ० }
महत्फला० ना० स्त्री० बड़ीतुरई।
महत्त्व० ना० पु० श्रेष्ठता, बड़ाई, बड़ापन।
महद्भाग्य० ना० पु० बड़ाभाग्य।
महना० स० क्रि० मथना।
महन्त० ना० पु० सन्तों में का प्रधान।
महन्ताई० ना० स्त्री० महन्तका काम।
महर० ना० पु० प्रधान या उसकी जोरू, नन्द का उपनाम।
महरा० ना० पु० कहार, भोई।

महराई० ना० स्त्री० कहरवे, गोपों का राग विशेष।
महरि० ना० स्त्री० पक्षीविशेष, महरकीस्त्री।
महर्लोक० ना० पु० स्वर्ग विशेष।
महर्षि० ना० पु० महाऋषि, महामुनि।
महा० गु० बड़ा, कुलीन, निपट, अति।
महाउन्नत० ना० पु० कदमवृक्ष, गु० महाऊंचा, महोन्नत।
महाकन्द० ना० पु० लहसुन।
महाकर्त्ता० गु० बड़ाकर्त्ता, निरीक्षकर्त्ता।
महाकाल० ना० पु० श्रीशिवजी का नाम, मूर्त्ति विशेष, जो उज्जैन में है।
महाकुम्भी० ना० पु० कायफल।
महाक्षार० ना० पु० समुद्रका जल जो चौड़े मुख से स्थल में लगा है।
महाघोष० ना० पु० कंकड़ासिंही।
महाजन० ना० पु० उत्तमलोग, साहूकार, सेठ।
महाजनी० ना० स्त्री० महाजन का काम।
महाजम्बू० ना० पु० जामुन, फलेंद।
महाजाल० ना० पु० चानर।
महातम० ना० पु० माहात्म्य, बड़ाअंधकार।
महातरु० ना० पु० सेहुँड।
महातल० ना० पु० पातालविशेष।
महातीर्थ० ना० पु० श्रेष्ठतीर्थ।
महातुम्बी० ना० स्त्री० बड़ी तोमड़ी।
महात्मा० गु० महाशय, अतिशिष्ट।
महात्म्य० ना० पु० महात्म्य, यश, बड़ाई।
महात्यागी० गु० संसार को झूंठ जाननेहारा।
महादेव० ना० पु० देवदेव, श्रीशिवजी।
महाद्रुम० ना० पु० महुआ, ताड़वृक्ष।
महान्० गु० बहुतबड़ा।
महानन्दा० ना० स्त्री० जो श्रीगंगाजीमेंमिलीहै।
महानवमी ना० स्त्री० आश्विनशुक्लनवमी।
महानाग० ना० स्त्री० इन्द्रायणी।
महानिद्रा० ना० स्त्री० बड़ी नींद, मृत्यु।
महापद्मक० ना० पु० सर्प विशेष।
महापातक० ना० पु० ब्रह्महत्यादि, बड़ापाप।
महापातकी० गु० बड़ापापी, हत्यारा, जो ब्रह्महत्या वा गोहत्या करे।
महापुरुष० ना० पु० साधु मनुष्य, सिद्धपरमात्मा, श्रीनारायण, बड़ी धनावर।
महाप्रतापी० गु० बड़ा तेजस्वी, ऐश्वर्यवान्।
महाप्रलय० ना० पु० जगत् का नाश जो प्रति कल्पान्त में होता है वा जिसमें ब्रह्मा सृष्टिसमेत नशता है।
महाफल० ना० पु० नारियल।
महाफला० ना० स्त्री० लौका, कुम्हड़ा।
महाबिल० ना० पु० आकाश।
महाभारत० ना० पु० कौरव और पाण्डव का युद्ध वा उसके वृत्तान्त का एकपुराण।
महाभोगी० गु० बड़ा भोगी, निरिच्छाभोगी।
महामणि० ना० पु० जहरमुहरा।
महामाया० ना० स्त्री० भगवती, जगज्जननी।
महामुण्डी० ना० स्त्री० पौधाविशेष।
महामेदा० ना० स्त्री० मेदा, औषधि।
महामोह० ना० पु० अत्यन्तअज्ञानता, बड़ीभूल।
महारजत० ना० पु० सुवर्ण, कांचन।
महारस० ना० पु० ऊख, गन्ना।
महाराज० ना० पु० राजाधिराज, श्रेष्ठराजा, साधारण बड़ों का सम्बोधन।
महारानी० ना० स्त्री० महाराजकी रानी।
महाराष्ट्र० ना० पु० देशविशेष, जातिविशेष।
महावट० ना० पु० मेघ जो माघ पौष में बर्षता है, वहीउसी द्वार आदि में लगाते है।
महावत० ना० पु० हाथीवान, फीलवान।
महावर० ना० पु० रंग लाखका, लाली।
महावला० ना० स्त्री० सहदेवी बूटी।
महावात० ना० पु० आंधी, महाबात।
महाविषा० ना० स्त्री० गोह।

महावृत्त० ना० पु० मूसली।
महाशय० ना० पु० महात्मा, दाता।
महाशिरा० ना० स्त्री० मछली।
महाश्यामा० ना० स्त्री० विधारा।
महाश्वेता० ना० स्त्री० विदारीकन्द।
महाष्टमी० ना० स्त्री० आश्विनशुक्लाष्टमी।
महासागर० ना० पु० समुद्र।
महासिद्धि० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति।
महास्कन्धा० ना० स्त्री० जामुन, फलेंद।
महि० ना० स्त्री० पृथ्वी।
महिदेव० ना० पु० ब्राह्मण।
महिपाल० ना० पु० राजा, बादशाह।
महिमा० ना० स्त्री० महत्त्व, बड़ाई, श्रेष्ठता। नेकनामी, सिद्धिविशेष।
महिरुह० ना० पु० वृक्ष, वृक्षादि।
महिला० ना० स्त्री० नारि, स्त्री, औरत।
महिष० ना० पु० भैंसा, दैत्यविशेष।
महिषध्वज० ना० पु० यमराज।
महिषासुर० ना० पु० दैत्यविशेष।
महिषाक्ष० ना० पु० गुग्गुल, गूगल।
महिषी० ना० स्त्री० भैंसी, पटरानी, राजरानी।
महिषेश० ना० पु० यमराज।
मही० ना० स्त्री० पृथ्वी, ना० पु० दही, मट्ठा।
महीधर० ना० पु० पर्वत, शेषादि, राजा, गौ, दिग्गज, कच्छप।
महीना० ना० पु० मास, मासिक, दरमाहा।
महीन्द्र० } ना० पु० राजा, पृथ्वीपति।
महीप० }
महीपति० ना० पु० राजा, पृथ्वीपति।
महीपते० क्रि० प्राप्तहोताहै, जाता है।
महीरुह० ना० पु० महिरुह।
महीश० ना० पु० राजा, बादशाह।
महीश्वर० } ना० पु० ब्राह्मण।
महीसुर० }
महुआ० ना० पु० वृक्षविशेष।
महेन्द्र० ना० पु० राजेन्द्र, प्रधान राजा।
महेर० ना० पु० } भोजनविशेष।
महेरी० ना० स्त्री० }
महेला० ना० पु० घोड़े के लिये पकायाहुआ अदौंवा।
महेश० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
महेश्वरी० ना० स्त्री० पार्वती, पीतल धातु।
महैश्वर्य्य० ना० पु० बड़ा ऐश्वर्य्य।
महोष० } ना० पु० पक्षीविशेष।
महोषा० }
महोटिका० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।
महोत्सव० ना० पु० बड़ा उत्सव, अत्यानन्द।
महोदर० ना० पु० निशाचर विशेष, बड़ापेट।
महोसा० ना० पु० जो तरुणावस्था में मुँह में मसूड़े निकलते हैं।
महोक्ष० ना० पु० बड़ा बैल, मूर्ख।
महौजसी० ना० स्त्री० तेज, बल।
महौभयान्धरा० ना० स्त्री० मेदा औषधि।
महौषध० ना० पु० जो औषधि शीघ्र रोगहरै, लहसुन, अतीस।
महौषधि० ना० स्त्री० सोंठि, मृद्धौषध।
मह्यो० ना० पु० मही, छाछ, मट्ठा।
मक्षिका० ना० स्त्री० मक्खी, माखी, माछी।
मा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, माता, सूर्य, मुक्तों, हर्षों।
माई० ना० स्त्री० माता।
माई० ना० स्त्री० ममानी, औषधी विशेष।
मां० अ० म० में भीतर, अन्तर।
मांग० ना० स्त्री० शिरके बालोंके बीचकी लकीर जो कन्या वचनदत्त हुई।
मांगचिड़नी० ना० पु० पक्षीविशेष।
मांगदेना० स० क्रि० किसी के लिये उधारलेना।
मांगना० स० क्रि० चाहना, तलबकरना।
मांगलेना० स० क्रि० उधारलेना, सेंतलेना।
मांगी० ना० स्त्री० उधार, सेंत, वचनदत्त।
मांज० ना० पु० रांद, पीव।
मांजन० स० क्रि० धोना, उज्ज्वल करना।

मांझ० ना० पु० रागिनी विशेष, अव्य० मध्य, बीच।

मांझत० ना० स्त्री० ठाठ।

मांझा० ना० पु० पतगकी डोर में शीशा और भातका लगाना, जड़वट।

मांझी० ना० पु० नाविक, कर्णधार, बिचमानी, मध्यवर्ती।

मांड० ना० पु० पीच, कांजी।

मांडना० स० क्रि० मलना, मींजना, सानना, करना, कलपचढ़ाना।

मांडा० ना० पु० फलीविशेष, रोगविशेष।

मांडी० ना० स्त्री० कलपविशेष जो चावलों को पीसके वा पकाके बनाते हैं।

मांढ़ा० ना० पु० मढ़ा।

मांद० ना० पु० गुफा, मार, गोबर।

मांस० ना० पु० मास, गोश्त, पलिया।

मांसभक्षी०
मांसाद०
मांसाहारी० } ना० पु० गु० मांस खानेहारा।

मांह०
मांहि० } अव्य० मध्य, में अन्तर, भीतर।

माकन्द० ना० पु० आंबका वृक्ष वा फल।

माखड़ा० गु० मूर्ख, निर्बुद्धि, उल्लू।

माखन० ना० पु० मक्खन, नैनू, दही, मलाई।

माखी० ना० स्त्री० मक्खी, शहद।

मागध० ना० पु० भाट, चड़खैत, वंशावर्णन करने हारा पुरुषों का प्रशंसक।

मागधा० ना० स्त्री० नागदौना द, सोंठ।

मागधी० ना० स्त्री० पीपली सोंठ।

माघ० ना० पु० ग्यारहवां महीना, मासविशेष।

माघी० ना० स्त्री० जो माघ में उत्पन्न हो।

माचा० ना० पु० मंच, पलंग।

माचिका० ना० स्त्री० मोई दवा।

माछी० ना० स्त्री० ईंगा लगाना।

माछर० ना० पु० मच्छड़, मशा मशक।

माछी० ना० स्त्री० मक्खी।

माजाई० ना० पु० बेटा वा बेटी जो एकमासे उपजे हों।

माजू० ना० पु० माजूफल।

माझ० ना० पु० माझ।

माझधार० ना० पु० बीचधारा।

माट० ना० पु० बड़ा मटका।

माटी० ना० स्त्री० मृत्तिका, मिट्टी।

माठा० ना० पु० मठा, नटखट, मट्ठा।

माठू० ना० पु० ढंढोल।

माड़ना० स० क्रि० माड़ना।

माड़नि० ना० स्त्री० माड़।

माड़िया० गु० पतला, दुर्बल।

माड़ौ० ना० पु० मण्डप, मड़वा।

माणवक० ना० पु० यज्ञोपवीत के योग्य जो बालक हो वा जिसकी अवस्था सोलह वर्ष से कम हो।

माणिक०
माणिक्य० } ना० पु० देश विशेष, लालमणि सेज, हीरा, लाल, रत्न विशेष।

मात० ना० स्त्री० माता, माता, मतवालापन।

मातंग० ना० पु० हाथी।

मातना० अ० क्रि० मतवाला होना।

मातलि० ना० पु० इन्द्रका रथवान्।

माता० ना० स्त्री० जननी, शीतला, पीड़ाकारि, गु० मत्त, मस्त।

मातामह० ना० पु० नाना, माता का बाप।

मातामही० ना० स्त्री० नानी, माताकी मा।

मातुल० ना० पु० मामू माता का भाई।

मातुलानी० ना० स्त्री० ममानी, मामी।

मातुली० ना० स्त्री० ममानी।

मातुलुंग० ना० पु० बिजौरा।

मातृ० ना० स्त्री० माता, महतारी।

मात्र० गु० अल्प, किंचित्, अव्य० सर्व, केवल।

मात्रा० ना० स्त्री० अक्षर के ऊपरकी रेखा, स्वर, परिमाण।

मात्सर्य० ना० पु० डाह, ईर्षा, जलन, हसद।

माथा० ना० पु० मस्तक, ललाट, खोपड़ी।

माथीलेना० स० क्रि० एकसा बनाना।
माथुर० ना० पु० मथुराका बासी, ब्राह्मण और कायस्थकी जाति विशेष।
मादक० गु० मत्त करनेहारी वस्तु, नशा बढ़ाने वाली चीज।
मादकता० ना० स्त्री० नशा अमल हितं विचारहीन मस्ती, बहाली।
माद्री० ना० स्त्री० सहदेव और नकुलकी माता।
माधव० ना० पु० वैशाखमास, मधूकवृक्ष, श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम।
माधवी० ना० स्त्री० वाराहीकन्द, लता और लताविशेष।
माधुरी० ना० स्त्री० मीठी सुन्दर।
माधुर्य्य० ना० पु० सुन्दरता, मिठास।
माध्वी० ना० स्त्री० मधुआकी मादिरा।
मान० ना० पु० नामपति, मर्य्यादा, घमंड, अहङ्कार परिमाण, अभिमान नाज।
मानकच्चू० ना० पु० कन्दविशेष जो बंगाले में होता है।
मानता० ना० स्त्री० मन्नत, प्रतिज्ञा, पूजा, दान बड़ाई।
मानदा० ना० स्त्री० मानकी दाता, चन्द्रमाकी एक कलाका नाम।
मानव० ना० पु० मनुष्य, आदमी।
मानस० ना० पु० मन, मनसा, मनुष्य, मान सरोवर।
मानसमूल० ना० पु० सरयूनद।
मानसिक० गु० मनकी आशा, मनोवृत्ति, मनस।
मानहु० अव्य० मानो।
मानापमान० ना० पु० मान और अपमान।
मानिक० ना० पु० माणिक्य।
मानिकजोड़० ना० पु० पक्षीविशेष।
मानिनी० ना० स्त्री० अभिमानवती स्त्री।
मानी० गु० गम्भीरचित्त, अभिमानी।
मानुष० } ना० पु० मनुष्य, आदमी।
मानुष्य० }
मानो० अव्य० जानो।
मान्धाता० ना० पु० राजाविशेष।
मानना० स० क्रि० प्रतिरक्षना, पूजना ग्रहणकरना, अङ्गीकार करना, बनालाना।
मान्य० ना० गु० जो पूजने वा मानने के योग्य, पूज्य।
मान्यता० ना० स्त्री० पूजा, बड़ाई।
माप० ना० पु० नाप, पैमाइश।
मापक० गु० नापनवाला, अमीन।
मापना० स० क्रि० नापना, पैमाइश करना।
माबाप० ना० पु० माता पिता।
मामा० ना० पु० मातुल, मामू।
मामी० ना० स्त्री० ममानी माई, मामाकी जोरू।
मामीलेना० स० क्रि० पकड़रना, स्वीकारना।
मामू० ना० पु० मामा सर्प।
माया० ना० स्त्री० कृपा, माह, दया, करुणा, भ्रम, छल, धोखा, सम्पति धन भूल, योगमाया, आत्मशक्ति विद्या इन्द्रजालविद्या।
मायाकृत० ना० पु० सरबुद्ध इन्द्रजाली गु० जो माया से बनाया गया।
मायापति० ना० पु० जो माया का स्वामी हो विशेष परमात्मा।
मायावी० गु० छली कपटी, राक्षसविशेष।
मायिक० ना० पु० बाजीगर, एन्द्रजालिक, ठगहा।
मार० ना० पु० कामदेव, विघ्न, विष, अमृत, ना० स्त्री० प्रहार धक्का, लड़ाई।
मारक० ना० पु० मारनहारा।
मारगा० ना० पु० मार्ग।
मारडालना० स० क्रि० वधकरना।
मारण० ना० पु० वध, हत।
मारना० स० क्रि० पीटना, कूटना, ताड़न, करना वधकरना, बिगाड़ना, ठगना, चरि

याना, डाकना, रोकना, थामना, मर्दनकरना।
मारवा० ना० पु० रागविशेष।
मारवाड़० ना० पु० देश विशेष।
मारवाड़ी० ना० पु० मारवाड़देशका वासी वा उस देशकी वस्तु।
मारा० गु० वधहुआ, जो डूबगया, ना० पु० वारा, शिकार।
माराजाना० अ० क्रि० करजाना, डूबजाना, आघातहोना, वधहोना।
मारी० ना० स्त्री० मरक, महामारी, वबा।
मारीच० ना० पु० कङ्कोल, दैत्यविशेष।
मारीचपत्रक० ना० पु० शालवृक्ष।
मारुत० ना० पु० वायु, पवन।
मारुतसुत०
मारुति० } ना० पु० श्रीहनुमान्जी, भीमसेन।
मारू० ना० पु० वैगनविशेष, रागविशेष, डङ्का, मारनेहारा, मरुदेश।
मारे० अ० य० स, कारण, निमित्त।
मार्कण्डी० ना० स्त्री० मकड़ी।
मार्कण्डेय० ना० पु० चालीन, मुनि विशेष।
मार्कव० ना० पु० भृंगराज, भगरा, पौरा।
मार्ग० ना० पु० सड़क, वाट, राह, अगहन, अजुन।
मार्गण० ना० पु० वाण, तीर।
मार्गशीर्ष० ना० पु० अगहन।
मार्गित० गु० मार्गदेखता, वाटहेरता।
मार्जन० ना० पु० फर्श करने का काम, छगाई, माजना।
मार्जार० ना० पु० बिलार, बिलौरा।
मार्तण्ड० ना० पु० सूर्य्य।
मार्तण्डमण्डन० ना० पु० सूर्य्यमण्डल, सीसका मार्गविशेष।
माल० ना० पु० मल्ल, माला, समूह।
मालकंगनी०
मालकाकुनी० } ना० स्त्री० औषधि, पौधा विशेष।
मालकोश०
मालकौस० } ना० पु० रागविशेष।
मालती० ना० स्त्री० दो तीन जाति के पुष्प, पौधाविशेष।
मालतीजात० ना० पु० सुहागा।
मालतीपत्रिका० ना० स्त्री० जावित्री।
मालद्वीप० ना० पु० सिंहलद्वीप के समीप द्वीप विशेष।
मालपूआ०
मालपूप० } ना० पु० पकवानविशेष।
मालव०
मालवा० } ना० पु० देश विशेष, सजल।
माला० ना० स्त्री० पुष्पादिका हार, पाँती, पङ्क्ति, कण्ठी, तसवीह, रुद्राक्षादिकी।
मालाकार० ना० पु० माली।
मालिन्० ना० स्त्री० मालीकी स्त्री।
मालिनी० ना० स्त्री० छन्दविशेष।
मालिन्य० ना० पु० मलिनता।
माली० ना० पु० बागसींचनेहारा वा लगानेहारा, जाति विशेष मालाधारी।
मालूर० ना० पु० बिल्व, बेल।
माल्य० ना० पु० फूलकी माला।
माल्यवान्० ना० पु० राक्षस विशेष।
मावस० ना० स्त्री० अमावस्या, कृष्णपक्षकी १५।
मावा० ना० पु० आहार, अण्डेकी पिलाई, खोवा, गाढ़ा दूध।
माष० ना० पु० उरद, अन्नविशेष, ईर्षा, दुःख।
माषमात्र० ना० पु० एकउरदभर।
माषा० ना० पु० तोलेकाबारहवाँभाग, ८ रत्ती।
मास० ना० पु० महीना, सत्ती, मास।
मासा० ना० पु० माषा।
मासान्त० ना० पु० महीने का अन्त वा अन्तकी तिथि।
मासिक० गु० महीनेका, माहवारी, दरमहा ना० पु० श्राद्ध जो प्रतिमास कियाजाता है।

मासिकविभाग० ना० पु० नौकरी या वैसा बांटना।
मासिकविभागी० गु० बखशी, नौकरीका रुपया बांटनेहारा।
मासी० ना० स्त्री० मासी, माताकी बहन।
माहं० ना० पु० माघ, अव्य० मध्य, बीच, से।
माहात्म० } ना० पु० सुयश, सुकीर्त्ति, बड़ाई,
माहात्म्य० } बड़प्पन, महातम।
माहीं० अव्य०, बीच,में, ना० स्त्री० माघी।
माहुर० ना० पु० विष, हलाहल।
माहू० ना० पु० कीटविशेष, कातसलाई।
मांत्रिक० ना० स्त्री० सोतामक्खी।
मिचकारना० स० क्रि० खवालना, अनवासना, धोना।
मिचना० अ० क्रि० मूंदना, लगना, बन्द होना।
मिचोलना० स० क्रि० आंखमूंदना।
मिटना० अ० क्रि० बिगड़ना, मलमिट्टहोना।
मिटाना० स० क्रि० बिगाड़ना, मेटना, मल मट करना।
मिटिया० ना० स्त्री० मिट्टी की हंडी विशेष।
मिटियाना० स० क्रि० मिट्टी से मलना।
मिटियामेट० गु० मिटगया, निश्शेषहोगया।
मिटेलना० स० क्रि० मिटाना।
मिटेला० गु० मिटायागया, मिटायाहुआ।
मिट्टी० ना० स्त्री० माटी, मृत्तिका, धूल, भूमि।
मिठरी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।
मिठाई० ना० स्त्री० मिष्ठान, मिष्टान्न, गुड़, शक्कर।
मिठास० गु० मधुरता, मिष्टता।
मितालरा० ना० स्त्री० ग्रन्थ विशेष ना० पु० छन्द विशेष।
मिति० ना० स्त्री० अन्त, मर्याद, बादह,प्रमाण।
मिती० ना० स्त्री० तिथि, तारीख, व्याज, सूद।
मित्र० ना० पु० हितू, बन्धु, दोस्त, सूर्य, अग्नि।
मित्रई० } ना० स्त्री० बन्धुता, हितकार, प्रीति
मित्रता० } दोस्ती, यारी।
मित्रद्रोही० ना० पु० जो मित्रके साथ बैरकरे।
मित्रपोषी० गु० मित्रका पालनेहारा, दोस्तपर्वर।
मिथः० अव्य० परस्पर।
मिथिला० ना० पु० जनकपुर, तिरहुत।
मिथिलापति० } ना० पु० राजा जनक, वा
मिथिलेश० } मिथिलाका राजा।
मिथुन० ना० पु० पुरुष स्त्री, युग्म, दो, और राशि तीसरी।
मिथ्या० अव्य० अयथा। ना० पु० झूठ, वृथा।
मिथ्यादृष्टि० ना० स्त्री० नास्तिकता, कुफर, झूठी नज़र।
मिथ्यामति० ना० स्त्री० भ्रम, भूल।
मिथ्यावाद० ना० पु० झूठ, वृथा वार्त्ता।
मिथ्यावादी० गु० झूठा, वृथावादी।
मिनती० ना० स्त्री० विनती।
मिमियाना० अ० क्रि० बिल्ली या बकरीकाशब्द करना।
मिमियाहट० ना० पु० बिल्ली या बकरीकाशब्द।
मिरा० ना० स्त्री मदिरा, शराब।
मिर्गी० ना० स्त्री० रागरोग विशेष।
मिर्गीहा० गु० जिसको मिर्गीका रोगहोवे।
मिर्च० ना० स्त्री० मरिचे।
मिर्चा० ना० पु० लालमिर्चे।
मिर्दंग० ना० पु० मृदंग।
मिर्दंगिया० } ना० पु० मृदंगबजानेहारा।
मिर्दंगी० }
मिर्दहा० ना० पु० करीड़ा जो गांव में रहताहै।
मिलन० ना० पु० मेल, मुलाक़ात।
मिलनसार० गु० मिलापी, मेली।
मिलना० अ० क्रि० मिश्रित होना, भेंटना, एकट्ठा होना, बैठना, रखना, पाना।
मिलवाना० स० क्रि० मिश्रित करवाना, भेंट करवाना।
मिलान० ना० पु० मिलाप, भेंट।
मिलाना० स० क्रि० मिश्रित करना, जोड़ना,

लगाना, सादर्श करना, मिलाप कराना।
मिलाप० ना० पु० मेल, बनाव, भेंट, एकता।
मिलापी० गु० मिलनसार।
मिलाव० ना० पु० मिलापी मेल।
मिलित० गु० मिला हुआ, समिश्रित।
मिलौनी० ना० स्त्री० मिलाव, मेल।
मिशि० ना० पु० सोया का साग।
मिश्र० गु० मिलाहुआ, मिलित, ब्राह्मणों में जाति विशेष, वैद्य।
मिश्रानी० ना० स्त्री० मिश्र की स्त्री बनइ।
मिश्रित० गु० मिलित, मिलाहुआ।
मिश्री० ना० स्त्री० मिठाई प्रसिद्ध, मिस्री।
मिश्रेय० ना० पु० साया का साग।
मिष० ना० पु० बनाना, पेलना, धावल, धोखा, हीला बहाना।
मिष्ट० ना० पु० मीठा मधुर।
मिष्टा० ना० स्त्री० मिठाई, गुड़।
मिष्टान० } ना० पु० मिठाई मिला अन्न।
मिष्टान्न० }
मिस० ना० पु० मिष।
मिसना० अ० क्रि० पिसना।
मिसर० ना० पु० मिश्र, देश विशेष जो यूनान के दक्षिण में है।
मिसी० ना० स्त्री० मिस्सी।
मिसु० ना० पु० मिष।
मिस्सी० ना० स्त्री० दांतों का मंजन विशेष।
मिहदी० ना० स्त्री० मेंहदी।
मिहना० ना० पु० बोली ठोली।
मिहरा० ना० पु० पुरुष जो स्त्रीका वेषधरता है।
मिहराऊ० }
मिहरिया० } ना० स्त्री० स्त्री, औरत, नारि।
मिहरी० }
मिहाना० अ० क्रि० सीलना, गीला होना।
मिहानी० ना० स्त्री० मथानी, मथनिया, माटी।
मिहिर० ना० पु० सूर्य।

मीजना० स० क्रि० मांजना, मलना, मसलना।
मीच० ना० स्त्री० मृत्यु, मौत।
मीचना० } स० क्रि० मूंदना, बन्द करना।
मीछना० }
मींजना० स० क्रि० मलना, रगड़ना, मसलना।
मींजू० ना० स्त्री० मगुर।
मीठा० गु० मधुर, धीमा, सुस्त, नामर्द, ना० पु० विष विशेष, फल विशेष।
मीठिया० } ना० स्त्री० चूमा, चूमी, मची।
मीठी० }
मीड़ना० स० क्रि० मींजना।
मीड़े० गु० मलेगये, मलेहुए।
मीणा० ना० पु० जाति विशेष।
मीत० ना० पु० मित्र, सज्जन, मीता, दोस्त।
मीतन० ना० स्त्री० सनामीस्त्री, सखी, सहेली।
मीता० ना० पु० सनाम, हमनाम।
मीन० ना० स्त्री० मछली, बारहवीं राशि, ना० पु० श्रीविष्णुजीका प्रथमावतार।
मीनकेतु० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।
मीरहा० ना० पु० बनसी, बडिश, बरवा।
मीना० ना० पु० हिन्दूजाति विशेष जो चोर होते हैं।
मीमांसक० ना० पु० मतवादी, ईश्वरवक्ता।
मीमांसा० ना० स्त्री० हिन्दू का मत विशेष, शास्त्र विशेष।
मीमियाना० अ० क्रि० मिमियाना।
मीसना० स० क्रि० पीसना, मलना, मैंड़ना, मुरेरना, धुरना।
मुकताई० ना० स्त्री० छुट्टी, छुटाई।
मुकरना० स० क्रि० नकार करना, न मानना।
मुकरी० ना० स्त्री० ब्रजभाषा में छन्दविशेष।
मुकुट० ना० पु० मउक, ताज, छत्र।
मुकुन्द० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक नाम, मुक्तिदाता।
मुकुर० ना० पु० दर्पण, आइना।
मुकुल० ना० पु० कली जो खुलजानी है।

मुकुलित० गु० थोड़ी खिलीहुई कली, फूला, मोरयुत, आम आदि बौर समेत।
मुकुन्दक० ना० पु० रिस्तो मता।
मुकेल० ना० स्त्री० नकेल।
मुक्का० ना० पु० } घूसा, गुम्मा।
मुक्की० ना० स्त्री० }
मुक्त० गु० जिसने मुक्तिपाई, अररहित।
मुक्तरमा० ना० स्त्री० रस्ता।
मुक्ता० ना० पु० मोती, गु० बहुत।
मुक्तामणि० ना० पु० मोती।
मुक्तास्फार० ना० पु० सीपी।
मुक्ताहल० ना० पु० मोती, शब्दबीज के यथा, मुक्ताहल लिये चोंच लुभाव, मौनरहे की हरियशगाव।
मुक्ति० ना० स्त्री० मोक्ष, पाप से उद्धार, निस्तार, श्राप छुटकारा, निजात।
मुक्तिदाता० ना० पु० मुक्तिदेनेहारा, उद्धारक।
मुख० } ना० पु० बदन मुँह।
मुखड़ा० }
मुखदूषण० ना० पु० पियाज, पलाड़, प्याज।
मुखमण्डन० ना० पु० तिलकवृक्ष।
मुखर० गु० बकवादी, दुष्ट।
मुखागर० } ना० पु० स्मृत, जबानी याद।
मुखाग्र० }
मुखान० ना० पु० मुखका बहुवचन।
मुखिया० } ना० पु० प्रधान, गु० पहिला, बड़ा,
मुख्य० } खास प्रधान, सरदार।
मुगदर० ना० पु० मोगरा, काठकी मोंगरी विशेष जिससे फिराते हैं।
मुग्ध० गु० अज्ञानी, मूर्ख भंडुआ सुन्दर।
मुग्धा० ना० स्त्री० कुवारी या अज्ञानी स्त्री, गु० भूठी, मूर्ख।
मुचुकुन्द० ना० पु० राजा विशेष जो अयोध्या में हुआ है।
मुजरा० ना० पु० प्रणाम दण्डवत्, भरा।
मुटापा० ना० पु० मोटा, मोटापन।
मुट्ठी० ना० स्त्री० हाथ, चुकटा।
मुठभेर० गु० अति निकट, बहुतपास।
मुठिया० ना० पु० हाथभर, दस्ता, मूठ।
मुठेलिया० ना० पु० मठोलिया, ठठ्ठा।
मुठोली० ना० स्त्री० ठठ्ठा, मखोली।
मुडना० अ० क्रि० ठठ्ठाहोना, बलखाना।
मुड० ना० पु० प्रधान।
मुड़ियाना० अ० क्रि० मुड़ना।
मुण्ड० ना० पु० शिर, मस्तक मुंड।
मुण्डधारी० ना० पु० श्रीमहादेवजी, अघोरी।
मुण्डन० ना० पु० बालकके पहिले बालबनवाने, मुण्डनेका काम।
मुण्डना० अ० क्रि० बालबनाना, ठगजाना।
मुण्डला० गु० मुड़ागया, मुडिया।
मुण्डवाना० स० क्रि० बालबनवाना, ठगाना।
मुण्डा० ना० पु० पतन का शिर, मुंड, गु० जो मुड़ागया चन्दला।
मुण्डाना० स० क्रि० मुडवाना।
मुण्डासा० ना० पु० वुह कपड़ा जो मूड़ में बांधते हैं, अम्मामा।
मुण्डित० गु० मुण्डा, मुड़ागया।
मुण्डिभिक्ष० ना० स्त्री० गोरखमुण्डी।
मुण्डिया० ना० पु० शिर, एकप्रकार के साधू।
मुण्डी० ना० स्त्री० गोरखमुण्डी ना० पु० मुंड़िया, साधू।
मुण्ड्र० ना० पु० संन्यासी, सन्यासी।
मुण्डेर० } ना० स्त्री० छतपर की छोटीभीत,
मुण्डेरी० } भीत का सिरा।
मुतना० गु० बहुत मूतने हारा, रागमुतना।
मुताल० ना० स्त्री० मूतने की इच्छा।
मुतासी० गु० जिसको मूतने की इच्छा है।
मुद० ना० पु० आनन्द, प्रसन्नता, खुशी।
मुदा० ना० स्त्री० मोर, मयूर।
मुदित० गु० हर्षित आनन्दित निहाल।
मुदिर० ना० पु० मेघ, बादल।

मुदिरनाथ० ना० पु० इन्द्र।
मुद्ग० ना० पु० मूग अन्न।
मुद्गर० ना० पु० मुदगर, मोंगरा।
मुद्रा० ना० स्त्री० छाप, सुवर्ण वा चांदी का रुपया वा मोहर, छल्ला, यन्त्र, अंगूठी।
मुद्रांकित० गु० जो छापागया।
मुद्रिका० ना० स्त्री० मुंदरी, अंगूठी।
मुद्रित० गु० अनखिला, मुँदा जो छापा गया, सिक्का जारी कियागया।
मुनमुन० ना० पु० बिल्ली के पुकारने का शब्द वा विशेष।
मुनमुनाना० अ० क्रि० बिल्ली का पुकारना, थोडा बदके सूखजाना।
मुनि० ना० पु० ऋषि, तपेश्वरी, विद्वान्।
मुनिद्रुम० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष।
मुनिपट० ना० पु० बकला, भोजपत्रादिके वस्त्र।
मुनिपति० ना० पु० मुख्य मुनि।
मुनिपद० ना० पु० शातपर्वा, मुनिका पैर।
मुनिया० ना स्त्री० लालपक्षी की स्त्री।
मुनिवल्लभ० ना० पु० चिरौंजी।
मुनीन्द्र० } ना० पु० मुनियों का प्रधान,
मुनीश० } ऋषीश।
मुन्था० ना० स्त्री० ज्योतिष में प्रसिद्ध।
मुन्दना० अ० क्रि० बन्दहोना, मिचना।
मुन्दरी० ना० स्त्री० अंगूठी, छदरी।
मुमाखी० ना० स्त्री० मधुमाखी।
मुमुक्षु० गु० मुक्ति खोजनेवाला।
मुमूर्षु० ना० पु० जो मनुष्य मरने पर है।
मुर० ना० पु० दैत्यविशेष।
मुरई० ना० स्त्री० मूली।
मुरकना० अ० क्रि० ऐंठना, बलपड़ना।
मुरकाना० स० क्रि० एंठना, बलदेना।
मुरकी० ना० स्त्री० कान का भूषणविशेष।
मुरचंग० ना० पु० बाजाविशेष।
मुरझाना० अ० क्रि० सूखजाना, कुम्हलाना।
मुरडाकरना० स० क्रि० जकड़ना, बांधना।
मुरमुरा० ना० पु० चर्वणविशेष।
मुरखा० गु० पोपला, अदांत, ना० पु० मोर।
मुरली० ना० स्त्री० बनसी, वंशी, बांसुरी।
मुरलीधर० ना० पु० वंशीधर, श्रीकृष्णजी।
मुरवा० ना० पु० पांव की कलाई, मोर।
मुरहा० ना० पु० झगड़ू, ऐंठू, मयूर, बिनामातापिताका बालक।
मुरही० ना० स्त्री० ऐंठन, मरोड़।
मुराई० } ना० पु० काछी, तरकारी बेचने
मुराऊ० } वाला वा बोनिहारा, कायरी।
मुरार० ना० स्त्री० कमल कीजड़।
मुरारि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
मुरेला० ना० पु० मोरका बच्चा।
मुर्रा० ना० पु० पेटोला, पेचिश, छछुंदर।
मुसकना० अ० क्रि० मुसकाना।
मुलतान० ना० पु० देश वा नगरविशेष।
मुलतानी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, गु० जो मुलतानका है।
मुलतानीमिट्टी० ना० स्त्री० पीली मिट्टी प्रसिद्ध।
मुलहट्टी० ना० स्त्री० जेठीमधु।
मुलाई० ना० स्त्री० अन्न।
मुलाना० स० क्रि० मोलठहराना, चुकाना।
मुष्क० ना० पु० अण्डकोश।
मुष्टामुष्टि० ना० पु० घूसमघूसा।
मुष्टि० ना० स्त्री० मुट्ठी, घूसा, मुक्का।
मुष्टिक० ना० पु० घूसा, मुक्का।
मुसकाना० अ० क्रि० मुसके हँसना।
मुसकुराई० ना० स्त्री० हंसी।
मुसकुराना० अ० क्रि० मुसकाना।
मुसल० ना० पु० मूसल।
मुसलमान० ना० पु० मुहम्मदका मतावलंबी।
मुसाना० स० क्रि० चोरी करवाना।

मुस्तवारिधर० } मुस्ता० } ना० पु० नागरमोथा।
मुहरा० ना० पु० हरावल, धगाड़ी, दरवाजह।
मुहरी० ना० स्त्री० कोल, छोटापनाला।
मुहाना० ना० पु० नदी का वह स्थान जहाँ समुद्र से मिलती है।
मुहासा० ना० पु० फुनसी, मुँहरसा, महोसा।
मुही० सर्व० मोहि, मुझको।
मुहुर्भाषा० ना० स्त्री० दु खित वाक्य, पुन. कथन।
मुहुर्मुहुः० अव्य० पुन. पुन वारवार।
मुहूर्त्त० ना० पु० दोघड़ी।
मुआ० गु० मरा।
मूंग० ना० पु० अन्नविशेष।
मूंगची० } मूंगरी० } ना० स्त्री० मूगकी बड़ी।
मूंगा० ना० पु० प्रवाल, विद्रुम।
मूंगिया० ना० पु० मूगके रगके तुल्य रग।
मूंछ० ना० स्त्री० मुख होंटके ऊपर के बाल।
मूंज० ना० स्त्री० तृणविशेष जिसकी रस्सी बनाते हैं।
मूड़० ना० पु० मुण्ड, शिर।
मूड़ना० स० क्रि० बाल बनाना, मोड़ना, शिष्य करना, फुसलाके लूटना।
मूड़ला० गु० मुण्डली, जिसका शिर मुड़ागया।
मूड़ी० ना० स्त्री० शिर, सिरमुण्ड।
मूढ़ा० ना० पु० मोढ़ा।
मूंदना० स० क्रि० बन्दकरना, ढाकना, मीचना।
मूंदरी० ना० स्त्री० मुदरी, अँगूठी।
मूह० ना० पु० मुख, वदन।
मूहा० ना० पु० मुखका रोगविशेष।
मूक० गु० गूगा, जो बात चीत न करसके।
मूका० ना० पु० घूसा, मोखा, झरोखा, हार्थ।
मूकी० ना० स्त्री० घूसा, मुक्की।
मूछ० ना० स्त्री० मूछ।
मूछाकड़ा० ना० पु० बड़ी मूंछ।
मूछारा० } मूछैल० } गु० बड़ी मूछवाला।
मूठ० ना० पु० बेंट, दस्ता, कब्जा, हाथ, हाथ भर।
मूठा० ना० पु० बेंट, मुट्ठी।
मूठी० ना० स्त्री० मुट्ठा।
मूढ़० गु० मूर्ख, नादान, अहमक।
मूढ़ता० ना० स्त्री० मूर्खता, उल्लूपन, अहमकी।
मूत० ना० पु० मूत्र, लघुशंका, पेशाब, कारूरह।
मूतना० अ० क्रि० लघुशंका करना, पेशाब करना।
मूत्र० ना० पु० मूत।
मूत्रफला० ना० पु० खीरा।
मूना० अ० क्रि० मरना, देह तजना, शरीर छोड़ना।
मूनू० गु० लघु, छोटा, थोड़ा।
मूर० ना० पु० मूल।
मूरख० गु० मूर्ख।
मूरत० ना० स्त्री० मूर्ति।
मूरि० ना० स्त्री० जड़ी, बूटी, पौधा।
मूरिसजीवन० ना० स्त्री० औषधि, पौधा विशेष।
मूरी० ना० स्त्री० मूली।
मूर्ख० गु० मूढ़, अज्ञानी, बोदला।
मूर्खता० } मूर्खताई० } ना० स्त्री० अज्ञानता, दुर्मति, नादानी, उल्लूपन।
मूर्छना० ना० स्त्री० रागभेद, मूर्च्छावात।
मूर्छा० ना० स्त्री० अचेत होना, तंद्रा, मोह, घश।
मूर्छावस्त० गु० जो मूर्छित होगया।
मूर्छित० गु० जो मूर्च्छामें पड़ाहै, मोहित।
मूर्त्ति० ना० स्त्री० प्रतिमा, आकार, पुतली, तसवीर।
मूर्त्तिपूजक० गु० देवपूजक, चातुर्वर्ण्य लोग।
मूर्त्तिमन्त० गु० आकारवान, शरीरधारी।

मूर्द्धज० ना० पुं० केश, बाल।
मूर्द्धन्य० जिस अक्षरका उच्चारण मूर्द्धा से हो यथा ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष।
मूर्द्धा० ना० पु० मस्तक, तालुसे ऊपर।
मूर्द्धनि० ना० पु० तालु से कुछेक ऊपर।
मूर्वा० ना० स्त्री० मुरहरी।
मूल० ना० पुं० जड़, वंश, कुल, पूंजी, असल, बिना टीका की पुस्तक, उन्नीसवां नक्षत्र, कारण।
मूलक० ना० पु० मूली।
मूलद्वार० ना० पु० गुदा।
मूलवीर० ना० पु० पुहकरमूल।
मूलस्थिति० ना० स्त्री० पहिली स्थिति।
मूलिया० गु० जिसका मूल नक्षत्र में जन्म हुआ।
मूली० ना० स्त्री० तरकारी विशेष, मूल विशेष।
मूल्य० ना० पु० मोल।
मूसल० ना० पु० मुसल।
मूसली० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
मूष०, मूषक०, मूषिक० ना० पु० मूसा, चूहा।
मूषकवाहन० ना० पु० श्रीगणेशजी।
मूसना० स० क्रि० चुराना, झपटलेना।
मूसरा० ना० पु० चूहा।
मूसरी० ना० स्त्री० चुहिया।
मूसल० ना० पु० जिससे अन्नादिक कूटते हैं।
मूसलधर० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
मूसलधार० ना० पु० झड़ी, अति वृष्टि।
मूसली० ना० पु० श्रीबलदेवजी, ना० स्त्री० औषधि।
मृग० ना० पु० हरिण, वनके जीवजन्तु।
मृगछाला० ना० पु० मृगका चमड़ा।
मृगजल० ना० पु० मृगतृष्णा का पानी।
मृगतृष्णा० ना० स्त्री० जेठादि ग्रीष्मकाल में सूर्य की किरणों में जो जल की कांति देख पड़ती है।
मृगदंशक० ना० पु० कुत्ता।
मृगद्विष०, मृगध्वंस० ना० पु० सिंह, व्याघ्र।
मृगनाभि० ना० स्त्री० कस्तूरी, मृगकीनाभि।
मृगनाभिरसा० ना० स्त्री० कस्तूरी, मुश्क।
मृगनयनी०, मृगनैनी० ना० स्त्री० गु० जिस स्त्री की आंखें मृगकी आंखों के सदृश हों।
मृगपति० ना० पु० सिंह, शेर, व्याघ्र।
मृगबन्धनी० ना० स्त्री० वागुरि, जाल, फंदा।
मृगमद० ना० पु० कस्तूरी, मुश्क।
मृगया० ना० स्त्री० आखेट, अहेर, शिकार।
मृगराज० ना० पु० सिंह, व्याघ्र।
मृगशिर०, मृगशिरा० ना० पु० पांचवां नक्षत्र।
मृगांक० ना० पु० चन्द्रमा।
मृगाण्डज० ना० पु० कस्तूरी, मुश्क।
मृगाधीश०, मृगाशन० ना० पु० सिंह, शेर।
मृगाक्षी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
मृगी० ना० स्त्री० रोगविशेष, हरिणी।
मृगेन्द्र० ना० पु० सिंह, मृगपति।
मृड० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
मृडानी० ना० स्त्री० श्रीपार्वती।
मृणाल० ना० पु० हंस, कमलनाल।
मृणालिका० ना० स्त्री० कमल की जड़।
मृणाली० ना० स्त्री० हंसिनी।
मृत्० ना० स्त्री० मिट्टी।
मृत० गु० मरा, मुआ, मुर्दा।
मृतक० ना० पु० शव, लोथ, मुर्दा।
मृतकर्पट० ना० पु० कफन, मुर्देके लिये वस्त्र।
मृत्तिका० ना० स्त्री० मिट्टी।
मृत्यु० ना० स्त्री० मौत, काल, मरण।
मृत्युदेह० ना० पु० मृतक।

मृत्युगण० ना० पु० यमदूत, मलकुलमौत।
मृत्युंजय० ना० पु० श्रीमहादेवजी, और मन्त्र विशेष।
मृत्सा०, मृत्स्ना० ना० स्त्री० मिट्टी, माटी।
मृदंग० ना० पु० बाजाविशेष।
मृदंगिया०, मृदंगी० ना० पु० मृदंग बजानेहारा।
मृदु० ना० पु० गु० नम्र, कुन्द, कोमल, मीठा।
मृदुकन्दक० ना० पु० पियाजंसा।
मृदुका० ना० स्त्री० अंगूर, दाख।
मृदुच्छद० ना० पु० करौंदा।
मृदुपत्रक० ना० पु० ऊख, गन्ना।
मृदुफल० ना० पु० फालसा।
मृदुल० गु० कोमल, द।
मृद्वीका० ना० स्त्री० अंगूर, दाख।
मृषा० अव्य० मिथ्या, वृथा, झूठ।
मैं० सर्व, मुझको, मेरा।
मैं० अव्य, अधिकरण का बोधक।
मेंगनी० ना० स्त्री० लेंड़ी, अजादिकी विष्ठा।
मेंड़० ना० स्त्री० खेतकी सीमा।
मेंड़क० ना० पु० भेक, मढ़क।
मेंड़की० ना० स्त्री० भेकी, मेंढ़की।
मेंड़ा० ना० पु० दुबेला पुरत।
मेंड़ियाया० अ० क्रि० घिरना।
मेंढ़ा० ना० पु० भेड़ा।
मेंह० ना० पु० वृष्टि।
मेहँदी० ना० स्त्री० मिहँदी, पौधाविशेष।
मेख० ना० पु० मणिपुर और बंगाले के बीच एक प्रकार के पर्वतीयलोग, कोल।
मेखला० ना० स्त्री० स्त्रियोंकी कर्धनी, ब्राह्मण का यज्ञोपवीत जो मूंजवाला से बनताहै, तीनवर्ण का यज्ञोपवीत।
मेखली० ना० स्त्री० टाट, पट्टी।
मेघ० ना० पु० घन, बादल, अभ्र, रागविशेष।
मेघडम्बर० ना० पु० रावणका छत्रविशेष।
मेघाध्या० ना० पु० आकाश।
मेघनाद० ना० पु० मेघकी शब्द, मेघगर्जन, रावणका पुत्रविशेष।
मेघनाथ०, मेघराज० ना० पु० इन्द्र, मेघपति।
मेघागम० ना० पु० वर्षाकाल, बरसात।
मेघाम० ना० पु० जामुन, फलेंद।
मेचक० गु० काला, श्याम।
मेटना० स० क्रि० धोडालना, नाशना, मुलमेट, विरोधकरना।
मेटा० गु० मिटायागया।
मेढ़ा० ना० पु० भेड़ा।
मेथिका० ना० स्त्री० मेथी।
मेथी० ना० स्त्री० सागविशेष।
मेद० ना० पु० मेध, चर्बीमोटाई।
मेदनाद० ना० पु० मोर।
मेदा० ना० स्त्री० पौधाविशेष।
मेदिनी० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, मालती।
मेदिनीपुर० ना० पु० नगरविशेष।
मेध० ना० पु० यज्ञ, बलिदान।
मेधा० ना० स्त्री० अनुभव, बूझ, बुद्धि, निपुणता।
मेधाख्या० ना० स्त्री० नागरमोथा।
मेधावती० ना० स्त्री० कश्यप की पत्नीविशेष।
मेधावी० गु० मेधावान्, बुद्धिमान्, निपुण।
मेध्या० ना० स्त्री० शंखाहोली।
मेन० ना० पु० मोम।
मेनका० ना० स्त्री० सुरयधपारा, हिमालय की स्त्री।
मेमना० ना० पु० बकरी का बच्चा।
मेरीकरी० ना० स्त्री० स्वर्गीय, गंगाजी जो विश्वामित्रीय गंगा प्रसिद्ध है, यह शब्द रामत्रिककमें विश्वामित्र का वाक्यहै, द्वितीयपक्ष प्रसिद्ध है।
मेरु० ना० पु० पर्वतविशेष, सुमेरु।
मेल० ना० पु० संयोग, भेंट, मिलाप, संबन्ध

मेलना० स० क्रि० टालना, घुसेड़ना, डालना।
मेला० ना० पु० तीर्थादि पर किसी देवता की पूजाहेतु लहुतजनों का इकट्ठा होना वा किसी प्रकार बहुत मनुष्यों का इकट्ठा होना।
मेली० ना० पु० साथी, गु० मिलापी।
मेव०
मेवड़ा०
मेवाती० } ना० पु० मेवात, पर्वत, के निवासी।
मेष० ना० पु० मेढ़ा, मेषराशि, पर्वतवृक्ष।
मेषवल्ली० ना० स्त्री० मेढ़ासिंही।
मेषला० ना० स्त्री० मेखला।
मेषशृङ्गी० ना० स्त्री० मेढ़ासिंही।
मेह० ना० पु० मेघ, मूत्र व वीर्य में रोगविशेष।
मेहतर० ना० पु० भंगी, प्रधान, चौधरी।
मेहतरानी० ना० स्त्री० भंगिन।
मेहनदा० ना० पु० ठठोली करनेहारा।
मेहना० ना० पु० ठठोली।
मैं० सर्व० सर्वनामवाचक उत्तम पुरुष का एक वचन।
मेकलसुता० ना० स्त्री० नर्मदानदी।
मैका० ना० पु० स्त्री के मा बाप का घर या घराना।
मैत्री० ना० स्त्री० मित्रता, बन्धुता।
मैथिल० ना० पु० तिरहुत के बसने हारे, ब्राह्मण की जाति विशेष।
मैथिली० ना० स्त्री० श्रीसीताजी, मिथिला की भाषा विशेष।
मैथुन० ना० पु० प्रसंग, रति, पुत्रोत्पादनार्थ दम्पति की क्रिया।
मैनफल० ना० पु० औषधि, फल विशेष।
मैना० ना० स्त्री० पक्षी विशेष, पार्वतीकी माता।
मैनाक० ना० पु० पर्वत विशेष।
मैमा० ना० स्त्री० सौतेलीमाता।
मैया० ना० स्त्री० माता, महतारी।
मैल० ना० पु० मल, मुर्चा, म्हाग, गार।
मैला०
मैला कुचैला० } गु० मलीन, अपवित्र।
मैहिका० ना० पु० महिष, भैंसा।
मैहिकी० ना० स्त्री० महिषी, भैंसी।
मो० सर्व, मैं।
मोढ़ा० ना० पु० कंधा, कूबड़, मोढ़ा।
मोकना० स० क्रि० त्यागन, छोड़ना, छोड़भोंकना।
मोखा० ना० पु० रोशनदान, प्याला।
मोगरा० ना० पु० मुद्गर, बड़ी मोगरी, पुष्प विशेष।
मोगरी० ना० स्त्री० कूटने की काष्ठरचित वस्तु विशेष।
मोघ० गु० वृथा, निरर्थ, निष्फल।
मोच० ना० पु० लचक, कचक, झटका।
मोचक० ना० पु० मोचरस, गु० छुड़ानेहारे।
मोचन० ना० पु० चोरी, छोड़ना, त्याग।
मोचना० स० क्रि० त्यागना, छोड़ना, झाड़ना, बुझाना, मिटाना, ना० पु० बाल उखाड़ने के लिये चिमटा।
मोचरस० ना० पु० सेमल वृक्षका गोंद।
मोचस्राव० ना० पु० मोचरस।
मोचा० ना० पु० सेमरवृक्ष, केला वा उसका गामा।
मोची० ना० पु० चर्मकार।
मोट० ना० स्त्री० गठरी, मोट।
मोटक० ना० पु० छन्द विशेष।
मोटकी० ना० स्त्री० कुदारी, मोटी भी।
मोटरा० ना० पु० गठरी।
मोटा० ना० स्त्री० गठरा, गट्ठा, गु० स्थूल, गाढ़ा, बड़ा, भद्दा।
मोटाई० ना० स्त्री०
मोटापा० ना० पु० } पुष्टता, गाढ़ाई, स्थूलता।
मोटिया० ना० पु० मोटा उठानेहारा।
मोठ० ना० स्त्री० गठरा, पोट, कीमा, बरस, पुलन्द, अन्न विशेष।
मोड़० ना० पु० बांक, फेर, बर्ताई, ऐंठन।

मौली० ना० स्त्री० नारा।
मौल्य० ना० पु० मोल, कीमत।
मौसा० ना० पु० माताकी बहन का पति।
मौसी० ना० स्त्री० माताकी बहन।
मौसेरा० गु० जो मौसी का है, यथा,मौसेरा भाई।
म्लान० गु० मैला, मन्द।
म्लेच्छ० ना० पु० जो लोग वेद और शास्त्र से विपरीत चलते हैं।
म्लेच्छदेश० ना० पु० देश जिस में म्लेच्छ बसते हैं।

[य]

यक० गु० एक, १।
यकआंक० अव्य० निश्चय करके।
यजमान० ना० पु० जो दक्षिणादि देके धर्म या कर्म करवावे।
यजु ० ना० पु० द्वितीय वेद, यजुर्वेद।
यतन० ना० पु० यत्न।
यति० ना० पु० यती, संन्यासी, भिखारी या जैनमतका भिखारी।
यत्० अव्य० जो, जब।
यत्किञ्चित्० अव्य० जो कुछ।
यत्न० ना० पु० जतन, उपाय, उद्योग,तदबीर।
यत्नमान० } गु० यत्न करनेहारा।
यत्नी० }
यत्र० अव्य० जहां, जिस जगह।
यत्रतत्र० अव्य० जहां तहां।
यथा० अव्य० जैसा, जिस प्रकार।
यथाकथञ्चित्० अव्य० जिसकिसी प्रकारसे।
यथाकाल० ना० पु० जैसा समय।
यथाक्रम० ना० पु० क्रमसे, परिपाटी से, जैसी रीति, सिलसिलेवार।
यथापि० अव्य० यद्यपि, जोभी, अगचि।
यथायोग० ना० पु० जैसा उचित वा चाहिये, अव्य० जैसा चाहिये वैसा।
यथार्थ० अव्य० ठीक, सच, खरा।
यथावत्० अव्य० सम्पूर्ण।
यथावस्थित० अव्य० ज्योंकात्यों, गु० स्थिर।
यथाशक्ति० ना० स्त्री० जैसा सामर्थ्य।
यथाशास्त्र० अव्य० शास्त्र के अनुसार, शास्त्र सम्मत, ना० पु० जैसा शास्त्र।
यथासम्भव० गु० जैसा होनहार।
यथेच्छा० ना० स्त्री० जैसी इच्छा।
यथोक्त० गु० जैसा कहागया।
यथोचित० गु० यथायोग्य, जैसा, उचितहोवे।
यदवधि० अव्य० जबसे।
यदपि० अव्य० जोभी, अगर्चि।
यदा० अव्य० जब, जहां।
यदि० अव्य० जो, कदाचित्।
यदु० ना० पु० सोमवंशी, पांचवां राजा।
यदुजात० ना० पु० यदुवंशी।

यदुनाथ० }
यदुपति० } ना पु० श्रीकृष्णचन्द्र।
यदुवर० }
यदुराय० }

यदुवंश० ना० पु० राजा यदुकी सन्तान।
यदुवंशी० ना० पु० यदु से जो उत्पन्न भया श्रीकृष्णचन्द्रादि।
यद्यपि० अव्य० जोभी, यदपि, अगर्चि।
यद्वातद्वा० अव्य० ऐसा वैसा, भलाबुरा।
यन्त्र० ना० पु० कल, समाज, बाजा, टोटका, तन्त्रि, ताला।
यन्त्रणा० ना० स्त्री० पीडा, क्लेश।
यंत्रित० गु० यन्त्र कियागया, तालालगायाहुआ, यन्त्रयुक्त।
यंत्री० ना पु० यन्त्रदेनेहारा, तारखींचने का यन्त्र, बजानेहारा कलसाज।
यम० ना० पु० यमराज, यमदूत, साधन वा नियम विशेष, गु० दो।
यमक० ना० पु० छन्दमें अक्षर सगौं वा प्रथम का शब्द, तुक, जोड़िया, जो दो बालक एक साथही उपजहों।

यमयातना० ना० स्त्री० मरणसमयका दुःख।
यमदग्नि० ना० पु० मुनि विशेष, परशुराम के पिता।
यमदूत० ना० पु० यमराजके दूत वा पक्षी विशेष।
यमद्वितीया० ना० स्त्री० कार्तिकशुक्ल दूज २।
यमनी० ना० पु० जो यमन देशका है।
यमराज० } ना०पु० यम, धर्मराज, अन्तक।
यमराट्० }
यमल० गु० दो, जोड़ा युग्म।
यमी० गु० यम करनहारा, यमुनाजी।
यमुना० ना० स्त्री० श्रीयमुनाजी।
यमुनाभेदी० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
यमुनाभ्राता० ना० पु० यमराज।
ययाति० ना० पु० चन्द्रवंशी राजा विशेष।
ययु० ना० पु० घोड़ा, यथा ययुरुच्चाश्वमश्वी जवनस्तुजवाधिक, इत्यमर।
यव० ना० पु० जो अन्न विशेष।
यवन० ना पु० देश विशेष वा यवन देश का निवासी, म्लेच्छ।
यवनपुर० ना० पु० यवनों का देश वा नगर विशेष।
यवनिका० ना० स्त्री० कनात, आड़।
यवशूक० ना० पु० जवाखार।
यवक्षार० ना० पु० शोरा, जवाखार।
यवाग्रज० ना० पु० जवाखार लोन।
यवास० ना० पु० पुष्प विशेष जवासा।
यवासक० } ना० पु० जवासा।
यवासा० }
यश० ना० पु० कीर्ति, ख्याति, पति, सुकृत।
यशस्वति० } गु० कीर्तिमान, प्रतिष्ठित, सुकृती।
यशोवन्त० }
यशस्विनी० ना० स्त्री० जीवन्ती बूटी।
यशस्वी० } गु० यशवन्त, सुकृती, प्रतिष्ठित।
यशी० }
यशोदा० ना० स्त्री० जसोदा, नन्दरानी।
यष्टि० } ना० स्त्री० लाठी।
यष्टिका० }
यष्ट्या० ना० स्त्री० मुलहटी।
यसक० ना० पु० जवासा।
यस्मिन्० सर्व० जिसमें।
यस्य० सर्व० जिसका।
यद्० सर्व० निश्चयवाचक, सर्वनाम।
यहा० अव्य० इस स्थानमें इधर।
यहाँ० अव्य० इस स्थान में।
यक्ष० ना० पु० देवताकी जाति विशेष।
यक्षकर्दम० ना० पु० यक्षोंका अंगमर्दन अर्थात् कस्तूरी, कपूर, अगर, कंकोल की मिलौनी का उबटन।
यक्षधूप० ना० स्त्री० राल।
यक्षपति० } ना० पु० कुबेर।
यक्षराज० }
यक्षिणी० ना० स्त्री० यक्षकी स्त्री।
यक्षेश० ना० पु० कुबेर।
यज्ञ० ना० पु० याग, मख, बलिदान, महाभाग।
यज्ञदत्त० ना० पु० संज्ञा विशेष।
यज्ञपुरुष० ना० पु० श्रीनारायण।
यज्ञभ्राता० ना० स्त्री० सामवल्ली।
यज्ञसूत्र० ना० पु० जनऊ।
यज्ञस्थल० ना० पु० यज्ञका घर।
यज्ञेश्वर० ना० पु० श्रीशिवजी वा श्रीविष्णु।
यज्ञोपवीत० ना० पु० उपनयन, जनेऊ।
या० सर्व, यह।
याग० ना० पु० यज्ञ।
याचक० ना० पु० जाचक, भिक्षुक।
याचना० स० क्रि० चाहना, मांगना, विनय करना, भिक्षा मांगना।
याचित० गु० मांगाहुआ।
याजक० ना० पु० पुरोहित जो ब्राह्मण दक्षिणा लेकर यज्ञादि कर्म करावे।
याजन० ना० पु० याजकका काम।

याज्य० ना० पु० यज्ञादिकर्मकी दक्षिणा।
यातना० ना० स्त्री अत्यन्त पीड़ा, नरकका कष्ट।
यातायात० ना० पु० आवागमन।
यात्रा० ना० स्त्री० तीर्थ, प्रस्थान, कूच, पर्व।
यात्रिक० ना० पु० मल्लाह, राही, पन्थी।
यात्री० ना० पु० तीर्थकर्त्ता, राही, पन्थी।
याथार्थिक० ना० पु० जो ठीक कर्म करे।
याथार्थ्य० ना० पु० यथार्थता, सचाई।
यादव० ना० पु० यदुकी सन्तान, कृष्ण।
यादवपति० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
यान० ना० पु० वाहन, सवारी।
यामिनी० ना० स्त्री० रात, जो यवनकी है।
यामिनीभाषा० ना० स्त्री० यवन लोगोंकी भाषा विशेष।
यावक० ना० पु० लाल।
यावज्जीव० } अव्य० जबतक जीवन है
यावज्जीवन० } वा जीवन कालभर।
यावत्० अव्य० जबतक।
यासा० ना० स्त्री० दुःख, त्रासा।
याज्ञवल्क्य० ना० पु० मुनि विशेष।
याज्ञिक० ना० पु० यज्ञ करने हारा।
युक्त० गु० उचित, योग, लगा, मिलाहुआ।
युक्तायुक्त० गु० योग्यायोग्य।
युक्ति० ना० स्त्री० प्रवीणता, हथौटी, तर्क, गुण, उपाय, तरकीब।
युग० ना० पु० सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि, इन चारों में से एक, युग्म, जोड़ा, गु० दो, २।
युगपत्० अव्य० एकबेर में।
युगल० गु० युग्म, दो, २।
युगान्त० ना० पु० युगका अन्त, प्रलय।
युगलकिशोर० ना० पु० दो पुत्र तरुणताप्राप्त, राम कृष्ण वा रामलक्ष्मण।
युग्म० गु० दो, २, जोड़ा।
युत० गु० युक्त, मिलाहुआ, यथा, धर्मयुत।
यूथ० ना० पु० समूह।
यूथनाथ० ना० पु० सेनानी, सेनापति, हाथी।
यूथप० } ना० पु० यूथनाथ, सेनापति, सरदार, हाथी।
यूथपति० }
यूथी० ना० स्त्री० सेना, फौज।
युद्ध० ना० पु० संग्राम, समर, लड़ाई।
युद्धभूमि० ना० स्त्री० संग्रामस्थल, लड़ाई की भूमि।
युधि० ना० पु० संग्राम, समर, युद्ध।
युधिष्ठिर० ना० पु० पांडुका ज्येष्ठपुत्र।
युवती० ना० स्त्री० यौवनवती स्त्री अर्थात् सोलह वर्ष से तीस वर्षतककी।
युवराज० ना० पु० राजाका प्रधान पुत्र जो राजा के पीछे राजा होवेगा।
युवा० गु० यौवनयुक्त तरुण मनुष्य सोलह वर्ष से सत्तर वर्षतक।
युवावस्था० ना० स्त्री० तरुणता।
यूं० अव्य० इसप्रकार।
यूंही० अव्य इसीप्रकार।
यूका० ना० स्त्री० जूआ।
यूथ० ना० पु० झुण्ड, युथ, समूह, गिरोह।
यूथनाथ० } ना० पु० सेनानी, सेनापति,
यूथप० } हाथी।
यूथिका० ना० स्त्री० सोनजूही।
यूप० ना० पु० यज्ञका स्तम्भ।
यूष० ना० पु० जूस, पेरह, शोरबा।
योग० ना० पु० मेल, लगन, मिलन, भक्तसामर्थ्य, तपस्या विशेष, जोड़, सत्ताईसयोग जो ज्योतिष में प्रचलित हैं।
योगगम्य० गु० योगमार्ग से योगजाता।
योगमाया० ना० स्त्री० वह शक्ति जिससे ईश्वर इच्छानुसार कार्य करता है।
योगशक्ति० ना० स्त्री० योगमाया।
योगसारक० ना० पु० नारंगी।
योगिनी० ना० स्त्री० प्रेतनी विशेष जो दुर्गाकी सहचरी है।

योगी० ना० पु० जो योग साधन करै, तपस्वी, गु० मिलाहुआ।
योगेश्वर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी, श्रीमहादेवजी, तपस्वी।
योग्य० गु० उपयुक्त, सम्भव, उचित।
योग्यता० ना० स्त्री० उचिताई, सम्भवता।
योजन० ना० पु० चारिकोस परिमाण।
योजनगन्धा० ना० स्त्री० वेदव्यासकी माता।
योजना० ना० स्त्री० मेल, मिलाप, जोड़।
योटा० ना० पु० जोड़ा।
योद्धा० ना० पु० बहादुर, युद्धकरनेहारा, सावन्त।
योधन० ना० पु० युद्ध, समर, लड़ाई।
योधापन० ना० पु० वीरता, सावन्ती।
योनि० ना० स्त्री० उत्पत्तिका अंगविशेष, जेरल जिसमें बच्चा रहता है।
योनिज० ना० पु० मनुष्यादि।
यौवन० ना० पु० तरुणता, जवानी।
योषा० योषित० योषिता० } ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री, नारि, दुलहिन।
यौं० अव्य० इसप्रकार।
यौगिक० गु० योगमें बना, योगकारक, सयाना, जो दो आदि शब्दों से बना।
यौतुक० ना० पु० दायजा, दहेज।
यौवन० ना० पु० बाल्यावस्था से ऊपरी वय।

[र]

रई० ना० स्त्री० कथनी विलोनी, कनी, चूरा।
रंहट० ना० पु० कूएसे पानी निकालने का यन्त्र विशेष।
रंहटा० ना० पु० चरखा सूतकातने का।
रंहटी० ना० स्त्री० पानी भरनेका यन्त्र विशेष।
रंस० ना० स्त्री० रश्मि, किरण।
रकत० ना० पु० रक्त।
रक्त० गु० लाल, अरुण, ना० पु० रुधिर, गूर सिंदूर।
रक्तक० ना० पु० पानी, आवला, दुपहरिया पुष्प विशेष।
रक्तकन्दक० ना० पु० रतालू।
रक्तकाष्ठ० ना० पु० पतगवृक्ष।
रक्तकोढ़० ना० पु० कुष्ठ विशेष।
रक्तचन्दन० ना० पु० लालचन्दन।
रक्तदृग्० ना० पु० कोकिला।
रक्तपदानन० ना० पु० शुक्ल हंस।
रक्तयष्टी० ना० पु० मंजीठ।
रक्तपा० ना० स्त्री० जोंक।
रक्तपात० ना० पु० रुधिर का निकालना।
रक्तपादिका० ना० स्त्री० लजालू, पौधा विशेष।
रक्तपादी० ना० स्त्री० हंसपदी, पौधाविशेष।
रक्तपाषाण० ना० पु० गेरू।
रक्तपित्त० ना० पु० रोग विशेष।
रक्तपुष्प० ना० पु० अनार, कचनार, पियाबासा।
रक्तपुष्पिका० ना० स्त्री० सेमल वृक्ष।
रक्तफल० ना० पु० आलू, बरगद, लालफल।
रक्तफला० ना० स्त्री० कदूरीलता, आकारा, बेल, अमरबल।
रक्तमुख० ना० पु० शुक, मछली, लालमुख।
रक्तमूर्द्धा० ना० पु० सारस पक्षी।
रक्तरज० ना० पु० सिंदूर जो स्त्रिया माथे में लगाती हैं।
रक्तवर्णिका० ना० स्त्री० अग्निकी जिह्वा विशेष।
रक्तबीज० ना० पु० अनार, रीठा, दैत्यविशेष।
रक्तसार० ना० पु० लालचन्दन, खैर, कत्था।
रक्तसिन्धिक० ना० पु० लालकमल।
रक्ता० ना० स्त्री० रासना, मजीठ।
रक्ताङ्ग० ना० पु० मजीठ।
रक्तालू० ना० पु० रतालू तरकारी।
रक्तिम० ना० स्त्री० लाली।
रक्तैरण्ड० ना० पु० लाल अरण्ड।

रक्षोदर० ना० पु० मछली।
रखछोड़ना० स० क्रि० धरना, सौंपना, रखना।
रखदेना० स० क्रि० रखना धरना।
रखना० स० क्रि० धरना, त्यागना, बचाना, दाब रखना।
रखलेना० स० क्रि० धरलेना।
रखवाई० ना० स्त्री० धरोहरका व्याज वा भाड़ा, रखवाला, रक्षा।
रखवाना० स० क्रि० धरवाना, सौंपना।
रखवाल० } ना० पु० रक्षक, रखनहार, हाकिम, तथा गडरिया जो भेड़ों का रखताहै।
रखवाला० }
रखवाली० ना० स्त्री० रक्षा, चरानेका काम, बचाने का काम हिफाजत।
रखा० गु० जो बचाया गयाथा, घास रखीहुई।
रखाना० स० क्रि० रखवाना, रक्षाकरना, बचाना।
रखिया० ना० स्त्री० रक्षा, बचाव, रखवाई।
रखैया० ना० पु० रक्षक, धरनहारा।
रग० ना० स्त्री० शिरा, नाड़ी।
रगड़० ना० स्त्री० रगड़ा, विवाद।
रगड़ना० स० क्रि० घिसना, घासना, मलना।
रगड़ा० ना० पु० झगड़ा, अत्यन्तश्रम, विवाद।
रगेद० ना० स्त्री० खेद।
रगेदना० स० क्रि० खदेड़ना, पीछा करना।
रघु० ना० पु० अयोध्याका प्राचीन सूर्यवंशी राजा विशेष।
रघुनन्दन० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी।
रघुनाथ० }
रघुनायक० } ना० पु० रघुवंशियों में राजा विशेष, दशरथ, श्रीरामचन्द्र जी।
रघुपति० }
रघुवर० }
रघुराज० }
रघुवंश० ना० पु० राजा रघु का वंश, काव्य, विशेष।
रघुवंशी० ना० पु० राजा रघुकी सन्तान, राजपूतों में जातिविशेष।

रङ्क० ना० पु० दरिद्री, कंगाल, ग़रीब।
रङ्ग० ना० पु० वर्ण, डौल, रीति, क्रीड़ा, व्योहार, खेल, रंगनेकी वस्तु।
रंगत० } ना० स्त्री० वर्ण।
रंगति० }
रंगना० स० क्रि० रंग चढ़ाना।
रंगपुर० ना० पु० देशविशेष बंगाले के उत्तर।
रंगभंग० ना० पु० क्रीड़ा का विनाश।
रंगभवन० ना० पु० क्रीड़ा का स्थान, विहार स्थल, आनन्दभवन।
रंगभूमि० ना० स्त्री० क्रीड़ाका स्थान, नाचघर, यज्ञस्थल, तमाशे का घर।
रंगमहल० ना० पु० रंगभवन।
रंगमारना० स० क्रि० चौसर के खेलमें जीतना या किसी के रंगडालना।
रंगरस० ना० पु० हर्ष, आनन्द, विहार।
रंगरातना० अ० क्रि० किसीका होरहना, किसी से अधिकजी लगाना।
रंगरूप० ना० पु० वर्ण, आकार।
रंगवैया० ना० पु० रंगनेहारा।
रंगाई० ना० स्त्री० रंगने का भाड़ा।
रंगाना० स० क्रि० रंगदिलवाना।
रंगावट० ना० स्त्री० रंगने का काम।
रंगी० } गु० विलासी, चमकीला, रसीला,
रंगीला० } सुडौल, रंगदार।
रचना० अ० क्रि० व्यापना, मानलगना, किसी काम में लगना, तालसमेत गाना, पैठना, बदना स० क्रि० बनाना, करना, सिरजना, ना० स्त्री० उत्पत्ति, बनावट, सृष्टि, बनाव।
रचाना० स० क्रि० बनाना, कराना, सिरजना, चलाना, आरम्भ करना, लगाना, मिहदी से हाथ पैर रंगना।
रचित० गु० रचाहुआ, विराजित।
रचितग्रन्थ० ना० पु० बनाहुई पुस्तक, रचना।
रच्छक० ना० पु० रक्षक।
रच्छा० ना० स्त्री० रक्षा।

रज० ना० पु० रजोगुण, लाल, ना० स्त्री० धूलि, अग्नि, रस्सी, पराग, निहानी, कपड़े, ना० पु० मनुष्यका दूसरा गुण।

रजक० ना० पु० धोबी।

रजत० ना० पु० चांदी, रूपा।

राजधानी० ना० स्त्री० राजधानी, रामायणे। यथा, राजाराम अवध रजधानी।

रजनक० ना० पु० कपाला ओषधि।

रजनी० ना० स्त्री० रात, हल्दी।

रजनीगन्धा० ना० स्त्री० सुगन्धरा,पुष्पविशेष।

रजवाड़ा० ना० पु० राज्य, देश जो राजा के वशमें है।

रजस्वला० ना० स्त्री० ऋतुमती, कपड़ों से।

रजाई० ना० स्त्री० शीतकालमें ओढ़ने का वस्त्र, राजत्व, आज्ञा।

रजाय० ना० पु० आज्ञा, अनुशासन।

रजायश० ना० पु० आज्ञा वा राजाकी आज्ञा।

रजोगुण० ना० पु० मनुष्य का द्वितीय गुण जिस में क्रोधआदि बसता है।

रजोवती० ना० स्त्री० पुष्पवती, जो स्त्री कपड़ा से होवे।

रज्जु० ना० स्त्री० सूत रस्सी।

रञ्च० } गु० अल्प, थोड़ा बहुतथ्ड़ा।
रञ्चक० }

रञ्जक० ना० पु० जो प्रीतको उपजावे रंग देने हारा, चित्रकार, तापआदि जलाने की वस्तु।

रञ्जन० ना० पु० रंगाव, चित्रकारी, प्रसन्नता, जन्मारना, सुसदना, सुरद।

रञ्जित० गु० रंगाभया, चित्रित, प्रसन्नित, उपजा, सुखी।

रट० ना० स्त्री० दुहराव, बक।

रटना० स० क्रि० दोहराना, तिहराना, बकना लगातार कहना।

रण० ना० पु० समर, युद्ध, लड़ाई।

रणभूमि० ना० स्त्री० समरभूमि, युद्धभूमि।

रणबीभत्स० ना० पु० युद्धमें कुशल, समर प्रवीण, विराट अर्जुन।

रणवास० ना० पु० रानियों के रहनेका स्थान।

रण्ड० ना० पु० अरण्ड, रेंड़।

रण्डा० ना० स्त्री० रांड़, विधवा।

रण्डापा० ना० पु० विधवापन।

रण्डिया० ना० स्त्री० विधवा स्त्री।

रण्डी० ना० स्त्री० नारी, स्त्री, पतुरिया।

रण्डुआ० } ना० पु० निरस्त्री, जिस मनुष्यकी
रण्डूआ० } स्त्री मरगई हो।

रत० ना० पु० मैथुन, रात, प्रीतिमय, लीन, लवलीन।

रतकेल० ना० पु० मैथुन।

रतजगा० ना० पु० उत्सव में रातका जागना।

रतन० ना० पु० रत्न जवाहिरात।

रतनार० ना० स्त्री० लालवर्ण।

रतनिया० ना० पु० चावलविशेष।

रतवाही० ना० स्त्री० धाता, रातका, सुरैतिनुको रात पुरुष पास आती है।

रताना० स० क्रि० कामातुर होना।

रतालू० ना० पु० अलूविशेष।

रति० ना० स्त्री० प्यार, मैथुन, कामदेवकी स्त्री।

रतिनाथ० }
रतिनाह० } ना० पु० कामदेव।
रतिपति० }

रत्ती० ना० स्त्री० आठ जौ का तोल, रत्ती, भाग, थोड़ा।

रत्तीवत० } गु० भाग्यवान्।
रत्तीवन्त० }

रतौंधा० } ना० पु० अधझाई, ना० स्त्री०
रतौंधो० } जिसके कारण से रातको दिखाई नहीं देता है।

रत्ती० ना० स्त्री० आठ यव वा आठ चावल का तोल, भाग्य, भाग।

रत्न० ना० पु० मणि मुक्ताआदि, पुतली।

रत्नगर्भा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
रत्नजोत० ना० स्त्री० पौधा विशेष, श्यालकी श्रोषध, श्रोषधिविशेष।
रत्नमाला० ना० स्त्री० मालाजो रत्नोंसे बनी है।
रत्नसिंहासन० ना० पु० वह सिंहासन जो रत्नों से जड़ित है।
रत्नाकर० ना० पु० समुद्र, रत्नों की खान।
रथ० ना० पु० चारपहियों की गाड़ीविशेष।
रथवान्० ना० पु० सारथी, गाड़ीवान्।
रथवानी० ना० स्त्री० रथवान् का काम।
रथवोढ़ा०, रथसिद्ध० } ना० पु० घोड़ा।
रथांग० ना० पु० चकवा पक्षी, चक्र, पहिया।
रथाग्र० ना० पु० रथ के आगे।
रथी० ना० पु० रथका सवार, टिकटी जिसपर मृतक को श्मशान को लेजाते हैं।
रथ्या० ना० स्त्री० मार्ग, सड़क, वीथी, गली।
रद० ना० पु० दांत।
रदच्छद० ना० पु० श्रोष्ठ, होंठ।
रदन० ना० पु० दांत।
रदनच्छद०, रदपट० } ना० पु० श्रोष्ठ, होंठ।
रद्दा० ना० पु० भीति का परत।
रद्दी० ना० स्त्री० जो कागज किसी कामका नहीं फारसी शब्द।
रन० ना० पु० रण।
रनगढ़० ना० पु० खाईी, सागर।
रनथन० ना० पु० महावन।
रनवास० ना० पु० रनवास, जिसमें राजा की स्त्रियां रहती हैं, अन्तःपुर।
रंतिदेव० ना० पु० राजाविशेष।
रंद० ना० पु० रंध।
रंध० ना० पु० रन्ध्र, छिद्र।
रंधना० अ० क्रि० पकना, सुनना, उबलना।
रंध्र० ना० पु० छिद्र, छेद।
रंध्री० ना० पु० नकछु।

रपट० ना० स्त्री० रेंड़, खिसलाहट, रगेद।
रपटना० अ० क्रि० फिसलना, खिसलना।
रपटाना० स० क्रि० रगेदना, फिसलाना, दौड़ाना।
रबड़० ना० स्त्री० परिश्रम, थकाई, व्यर्थ, दौड़ धूप।
रबड़ना० अ० क्रि० थकना, व्यर्थ दौड़ धूप में पड़ना।
रबड़ा० गु० थका, थकित।
रबड़ाना० स० क्रि० थकाना, व्यर्थ दौड़धूप कराना।
रबड़ी० ना० स्त्री० गाढ़ादूध।
रमचेरा० ना० पु० गुलाम, किंकर, लौंडा।
रमण० ना० पु० भोग, विलास, क्रीड़ा, मैथुन, व्यापक, विराजना, अटन।
रमणक० ना० पु० द्वीपविशेष।
रमणी० ना० स्त्री० उत्तमास्त्री।
रमणीक० गु० सुन्दर, मनभावित।
रमणीय० गु० मनोहर, अच्छा, सुन्दर।
रमना० स० क्रि० भोग करना, मैथुन करना, फिरना, विचरना।
रमा० ना० स्त्री० लक्ष्मी वैष्णवी।
रमाना० स० क्रि० फुसलाना, बहकाना, फिराना, भोगकराना।
रमानाथ०, रमापति०, रमेश० } ना० पु० श्रीविष्णु, नारायण।
रम्भा० ना० स्त्री० गाय, वेश्या, केला और मुख्य अप्सरा।
रम्भाना० अ० क्रि० गौका बोलना।
रम्य० ना० पु० पृथ्वी के नवखण्डों में से एक का नाम गु० सुन्दर, अच्छा।
रम्यक० ना० पु० महानीब।
रम्या० ना० स्त्री० चम्पकपुष्प।
रये०, रयो० } क्रि० रंगे, भिने, भरे, रामचन्द्रिकामें (जनुलिहक्युनदोऊमिलिही श्रीरंगे)।

रटना० स० क्रि० रटना।
रलना० स० क्रि० मिलना, रिसना, मिस्ना।
रलाना० स० क्रि० मीसना, सींचना, मिलाना।
रव० ना० पु० शब्द, ध्वनि।
रवताई० ना० स्त्री० रावतपन, वीरता युद्ध।
रवन० ना० पु० पति, प्रियतम, प्यारा, यार।
रवनी० ना० स्त्री० पत्नी, प्यारी, प्रियतमा।
रवसा० ना० पु० रणवासका सेवक जो स्त्रियों के लिये सौदा लाता है, ख्वाजा।
रवा० ना० पु० चांदी वा सोनेका रेता, या चूर, बालू, धूलि आदिका अणु।
रवि० ना० पु० सूर्य्य।
रविक० ना० पु० नींव वृक्ष।
रविजा० ना० स्त्री० यमुनानदी।
रविजात० ना० पु० शनैश्चर, यमराज, कर्ण, सुग्रीव।
रविनामक० ना० पु० ताव।
रविमणि० ना० स्त्री० सूर्य्यमणि।
रविवार० ना० पु० आदित्यवार, पहिला दिन, विश्रामका दिन, इतवार।
रविलप्रिय० ना० पु० नींवदृक्ष।
रसिक० गु० रसिक।
रश्मि० ना० स्त्री० रश्मि, किरण।
रस० ना० पु० जीभमें जिसका ग्रहणहोवे, यथा, घी, दूध, अमृत, विष, पानी आदि शृंगारादि नव रस वा कटुआदि षट्रस और विषय, स्वाद, राग प्रेम, वीर्य, पारा, या धातु मरहुये की राख, यथा, रूपरस, ताम्ररस।
रसकपूर० ना० पु० रस भस्मविशेष।
रसद० ना० पु० रसदाता अर्थात् ऊख, गन्ना, नायिका, काव्य।
रसधातु० ना० पु० पारा।
रसना० ना० स्त्री० जीभ, जबान।
रसनाग० ना० पु० रासना।
रसप्रभु० ना० पु० पारा।
रसमसाना० अ० क्रि० पसीने वा सुगन्धि वस्तु से भीगजाना।
रसमसीला० गु० जोरसमस यानया, भीगा।
रसमार० ना० पु० विष, हलाहल।
रसभेद० ना० पु० कचनार।
रसरा० ना० पु० दोरा, मोटी रस्सी, बरारा।
रसराज० ना० पु० शृंगाररस, पुस्तकविशेष।
रसरी० ना० स्त्री० डोरी, रस्सी।
रसवत० ना० पु० रसौत।
रसवती० ना० स्त्री० रसीली।
रसचोर० ना० पु० भ्रमर, भौंरा।
रसज्ञ० गु० रसका जानना, यथा, रसिया, कवि, पण्डित, साधु, रसधातु का बनानेहारा।
रसज्ञा० ना० स्त्री० जीभ, जिह्वा।
रसा० ना० स्त्री० पृथिवी, रासना।
रसाग्र० } ना० पु० रसौत।
रसाञ्जन० }
रसातल० ना० पु० पातालविशेष।
रसाना० स० क्रि० जोड़ना, मिलाना।
रसायन० ना० पु० विद्याविशेष, जिसमें ताम्रादि धातुको सुवर्णादि करते हैं कीमिया, विषयदेत चिकित्साविशेष।
रसायनी० गु० रसायनजाना, ना० स्त्री० घी कुवार।
रसाल० ना० पु० रसाल ऊख, गन्ना गु० मीठा, ना० आम।
रसीला० गु० जो रससे पूर्ण, व्यसनी, कामी।
रसीली० गु० स्त्री० यौवनवती, ना० पु० अगूर।
रसिक० गु० रसज्ञ, रसिया।
रसिकाई० ना० स्त्री० श्यामपन, धूर्त्तताई, कामातुरता।
रसिया० ना० पु० कामी, मग्न, लुच्चा।
रसियाना० अ० क्रि० गीला वा रसीला होना, पसीजना, रिसना।
रसे० अव्य० धीरे, हौले।
रसेन्द्रयमि० ना० गु० पारा।

रसोइया० ना० पु० भोजन पकानेहारा।
रसोई० ना० स्त्री० पाक, भोजन, पाकस्थान।
रसोद्भव० } ना० पु० रसौत।
रसोद्भूत० }
रसोनक० ना० पु० वृक्ष विशेष।
रसोत० ना० पु० औषधि विशेष।
रस्सा० ना० पु० जेवड़ा, नरारा, बड़ीरस्सी।
रस्सी० ना० स्त्री० जेवड़ी छोटा रस्सा।
रहकल० } ना० पु० छोटी तोप, छोटीगाड़ी,
रहकला० } छकड़ा।
रहचटे० अव्य० मनोरथ चाह में।
रहचोला० ना० पु० लल्लोपत्तो, मीठी बातें।
रहजाना० अ० क्रि० धीरज करना, सतोष करना, थम्भना, बाट जोहना।
रहट० ना० स्त्री० गरारी।
रहटा० ना० पु० चरखा।
रहटी० ना० स्त्री० चरखी, गरारी।
रहते० अव्य० होते, सामने, आगे।
रहन० ना० स्त्री० रीति, चलन, चाल।
रहना० अ० क्रि० टिकना, ठहरना, बसना, बचजाना।
रहला० ना० पु० चना अन्न।
रहवैया० ना० पु० बसनहारा।
रहस० ना० पु०ठठोलपन, नाच विशेष, ना० स्त्री० लीला, क्रीडा, गु० एकान्त, निर्जन।
रहसना० अ० क्रि० प्रसन्नहोना हुलसना, एकान्त होना, छुपाना।
रहसि० ना० पु० एकान्त।
रहस्य० ना० पु० रहस, गुप्त एकान्त।
रहायस० ना० स्त्री० } टिकाव, ठहराव, कयाम,
रहाव० ना० पु० } रहने का स्थान।
रहित० गु० वर्जित, हीन, विना।
रक्षक० ना० पु० रक्षाकरनेहारा।
रक्षण० ना० पु० } बचाव यत्न, उद्धार,
रक्षा० ना० स्त्री० } राखी, पालन, रखवाली।
रक्षाबन्धन० ना० पु० श्रावणशुक्लपूर्णिमा।
रक्षावीर्य्य० ना० पु० रीठा।
राई० ना० स्त्री० सरसो विशेष, गु० थोड़ा।
रांगा० ना० पु० धातु विशेष।
रांझन० }
रांझना० } ना० पु० सज्जन, प्रियतम।
रांझा० }
रांड़० ना० स्त्री० विधवा बेवह।
रांदपड़ोस० ना०पु० अड़ोस पड़ोस, समापता।
रांधना० स० क्रि० पकाना, रींधना, चुराना।
रांपा० ना० स्त्री० खुरपी० चमारका अस्त्र विशेष।
रांभना० अ० क्रि० मिमियाना, डकारना, गौका बोलना।
राकस० ना० पु० राक्षस।
राका० ना० स्त्री० पूर्णमासी, पूनो।
राकेश० ना० पु० चन्द्रमा।
राख० ना० स्त्री० भस्म, धूलि, खाक।
राखना० स० क्रि० रखना।
राखी० ना० स्त्री० यन्त्र जो श्रावणकी पूर्णिमाको हिन्दूलोग बाहु में बांधते हैं।
राग० ना० पु० गायकों में प्रसिद्ध, जैसे मलार बिहागादि, क्रोध, प्यार, मोह, विषयभोग।
रागना० अ० क्रि० अलापना।
रागमाला० ना० स्त्री० रागकी पुस्तक।
रागसागर० ना० पु० गीत जिस में कई एक राग निकलते हैं।
रागिनी० ना० रागकी स्त्री।
रागी० ना० स्त्री० गायक, प्रिया, गु० मानी, मोही, लालवर्ण।
राघव० ना० पु० समुद्र का मत्स्य विशेष, श्रीरामचन्द्रजी।
राघवेन्द्र० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी।
राचना० अ० क्रि० प्यारमें अटकना या लीन होना।

राचा० गु० प्यारमें अनुरागा।
राछ० ना० पु० कारीगरों का अस्त्र।
राज० ना० पु० राज्य, घरबनानेहारा कारीगर, थवई।
राजअंश० ना० पु० कर, महसूल, राजा का भाग।
राजकर० ना० पु० राजअंश।
राजकर्कटी० ना० स्त्री० कुम्हड़ा, कद्दू।
राजकीय० गु० राजा का, राजाऊ।
राजकुमार० ना० पु० राजा का पुत्र।
राजगृह० ना० पु० राजाकाघर, नगर विशेष।
राजजम्बू० ना० स्त्री० जामन, फलेंद।
राजत्व० ना० पु० राजाका काम।
राजद्वार० ना० पु० राजभवन का फाटक।
राजधर० ना० पु० राजा का मन्त्री।
राजधानी० ना० स्त्री० जिस नगर में राजा रहता है, यथा अवध में लखनऊ।
राजन्० ना० पु० राजा।
राजनय० ना० पु० राजनीति।
राजना० अ० क्रि० चमकना, शोभित होना।
राजनिभ० ना० पु० गोह।
राजनीति० ना० स्त्री० राज्यकरने की चाल, दस्तूर, क़ानून।
राजपति० ना० पु० राजा, हिन्दूलोगों की पदवी।
राजपद० ना० पु० राज्य, प्रभुता, बादशाही।
राजपुताना० } ना० पु० देश विशेष जिसमें
राजपुत्थान० } जयपुर जोधपुर आदि हैं।
राजपुत्र० ना० पु० राजाकापुत्र, जाति विशेष।
राजपुत्रिका० ना० स्त्री० राजाकी कन्या और रायलता और पीसा।
राजपुत्री० ना० स्त्री० राजाकी कन्या, कड़ई तुम्बी।
राजपूत० ना० पु० राजाकापुत्र, जाति विशेष।
राजभवन० ना० पु० राजाका मंदिर।
राजभोग० ना० पु० राजयकाभोग, मध्याह्न में देवता के लिये नैवद्य।
राजमन्दिर० ना० पु० राजभवन।
राजमार्ग० ना० पु० राजपथ, सड़क, पैंड़ा।
राजयोग० ना० पु० जन्मकुण्डली में उच्च ग्रहों का होना यथा बृहस्पति मूर्त्तिमें इत्यादि।
राजयोग्य० गु० जो राजा के योग्य है।
राजराज० ना० पु० यक्षपति, कुबेर, राजाधिराज।
राजराणी० } ना० स्त्री० राजाकी स्त्री।
राजरानी० }
राजरोग० ना० पु० वह रोग जिससे बचने की आशा न हो, यथा क्षयरोग, मृगी।
राजला० ना० स्त्री० मीठीतुम्बी, लौकी।
राजलोक० ना० पु० राजभवन।
राजवंश० ना० पु० राजाकी सन्तान।
राजवंशी० ना० पु० राजाकी सन्तान, राजपूतों म जाति विशेष।
राजवता० ना० स्त्री० मेघपसारा।
राजवल्ली० ना० स्त्री० रायलता।
राजवृक्ष० ना० पु० शिरवाली।
राजशाली० ना० स्त्री० सभा, कचहरी।
राजशासन० ना० पु० राजा की आज्ञा और राज का दण्ड।
राजश्री० ना० स्त्री० राजाकी सम्पत्ति।
राजस० ना० पु० जो काम रजोगुण करके होवे, रजोगुण।
राजसिंहासन० ना० पु० राजा का सिंहासन।
राजसू० } ना० पु० यज्ञ विशेष जिसको
राजसूय० } केवल राजाधिराज करसके हैं।
राजस्व० ना० पु० राजाकाअंश, कर, महसूल।
राजहंस० ना० पु० हंस विशेष, बतक।
राजा० ना० पु० नृपति, देशपति, बादशाह।
राजादन० ना० पु० खिरनी विशेष।
राजाह्वा० ना० स्त्री० खिरनी।

राजाधिराज० ना० पु० राजाओंमें जो बड़ा राजा।

राजिका० ना० स्त्री० पाति, अवली, समूह।

राजिल० ना० पु० साप यथा राजिल डिंडिभो इयमर।

राजी० ना० स्त्री० पंक्ति, पाति।

राजीव० ना० पु० कमल, मछली, पानी, चन्द्रमा, मोती।

राजीवगण० ना० पु० कमलोंका समूह।

राजेश्वर० ना० पु० महीपति, बादशाह।

राज्य० } ना० पु० अधिकार देश, राजकाज, प्रभुताई, बादशाहत।
राज्यपद० }

राटो० ना० स्त्री० चोरकी बाली बुन्देलखण्ड म।

राठेर० ना० पु० शूरसेन देश।

राठौर० ना० पु० राजपूतोंकी जाति विशेष।

राढ़ा० ना० पु० क्षत्रियों में जाति विशेष।

राढ० ना० पु० गोड़देश का एकखंड जो गंगाके पश्चिममें है, बड़ा।

राढी० ना० पु० राढ देश का ब्राह्मण, बड़ी तरकारी।

राणा० ना० पु० राजपूत व। जाति विशेष।

राणी० ना० स्त्री० रानी।

रात० ना० स्त्री० रात्रि निशा।

रातना० स० क्रि० रंगदेना, अ० क्रि० रचना।

राता० गु० रक्त, लाल जो रँगागया, जो राजा।

रात्रि० ना० स्त्री० रजनी, रैनि, निशा।

रात्रिचर० ना० पु० निशाचर, भूत प्रेत, चोर, उलूकादि।

रात्र्यन्ध० गु० जो रात्रि में नहीं देखता है यथा उलूक।

राद० } ना० पु० पीव, मवा।
राध० }

राधा० ना० स्त्री० वृषभानुसुता, नीति, जाति विशेष।

राधानगरी० ना० स्त्री० रेशमीवस्त्र जो राधानगरमें बनता है।

राधिका० ना० स्त्री० वृषभानुसुता, कृष्णप्रिया।

राना० ना० पु० राय।

रानी० ना० स्त्री० राजा की स्त्री, राणी।

राब० ना० स्त्री० जूसी विशेष, वस्तु विशेष जिससे शक्कर बनती है।

राबड़ी० ना० स्त्री० रबड़ी भोजन विशेष।

राम० ना० पु० परशुराम, श्रीरामचन्द्र जी, श्रीबलरामजी, गु० ३।

रामकहानी० ना० स्त्री० रामायण, लम्बा वृत्तांत।

रामकली० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

रामचन्द्र० ना० पु० श्रीराम, दशरथपुत्र।

रामजनी० ना० स्त्री० नोची, बेश्या, वर्ण विशेष।

रामठ० ना० पु० हींग।

रामतुरई० ना० स्त्री० तोरी, तरकारी विशेष।

रामदुहाई० ना० स्त्री० राम की शपथ।

रामदूत० ना० पु० श्रीहनुमान्जी आदि।

रामफल० ना० पु० कमरख।

रामराम० ना० पु० प्रणाम या सलाम विशेष।

रामसर० ना० पु० पौधा विशेष, नरकट विशेष।

रामसेनक० ना० पु० चिरायता।

रामानन्दी० ना० पु० बैरागी, रामानन्द के सेवक।

रामायण० ना० पु० रामधाम, राममार्ग, रामकहानी, ग्रंथ विशेष।

रामावत० ना० पु० बैरागी, जाति विशेष का मत।

राय० ना० पु० राजा, राणा।

रायता० ना० पु० कद्दू या रामतुरई का दही में डाल के जो बनाते हैं।

रायबांस० ना० पु० बांस विशेष।

रायबेलि० ना० स्त्री० पुष्पविशेष।

रायरायान्० ना० पु० राजाधिराज।
रायलता० ना० स्त्री० पुष्प, वृक्ष विशेष।
रारि० ना० स्त्री० विरोध, लड़ाई, झगड़ा।
राल० ना० स्त्री० धूना।
राव० ना० पु० राजकुमार, राजा, राय।
रावचाव० ना० पु० विलास, आनन्द।
रावटी० ना० स्त्री० तम्बू विशेष।
रावण० ना० पु० लंकेश, राक्षसपति विशेष।
रावणारि० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी।
रावणी० गु० जो रावण से सम्बन्ध रखता है, ना० पु० मेघनाद।
रावत० ना० पु० शूर्मा, वीर, सर्दार।
रावरा० } रावरो० } सर्व० तुम्हारा, आपका।
रावी० ना० स्त्री० नदी विशेष जो पंजाब में है।
राशि० ना० स्त्री० ढेर, समूह, मेषादि १२।
राश्यंतर० ना० पु० एकराशि से दूसरी राशि तकका समय।
राष्टकी० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।
राष्ट्र० ना० पु० बसाहुआ देश।
रास० ना० पु० गोपियों के साथ श्रीकृष्णचन्द्रजी की क्रीड़ा पर्वविशेष, राशि ना स्त्री० बाघ सन्दरा लेपाला।
रासचक्र० ना० पु० लग्नमण्डल।
रासधारी० ना० पु० रासकरनेहारे।
रासभ० ना० पु० गधा, खर।
रासभी० ना० स्त्री० गदही, खरकी स्त्री।
रासी० गु० घोड़ा इत्यादि जो न भला हो न बुरा मध्यम, ऐसा वैसा।
रासना० } रास्ना० } ना० स्त्री० जो वृक्षपर जमताहै यथा बादा।
राहना० स० क्रि० चक्की में दांत बनाना।
राहु० ना० पु० आठवां ग्रह, दैत्य विशेष जो चन्द्रमा और सूर्यको ग्रासता है।
राक्षस० ना० पु० असुर विशेष कर्बुर।
राक्षसी० ना० स्त्री० राक्षसकी स्त्री।
राक्षसीवेला० ना० स्त्री० संध्या उपरांत मुहूर्त।
रिक्त० गु० खाली, शून्य।
रिचा० ना० स्त्री० ऋचा, वेदमन्त्रका नाम।
रिझवैया० ना० पु० रीझने हारे।
रिझाना० स० क्रि० प्रसन्न करना, खुशकरना, सताना, दुःखदेना।
रिताना० स० क्रि० रीता कराना, छूछा कराना दुर्गंध दूर कराना।
रितु० ना० स्त्री० ऋतु।
रितुराज० ना० पु० ऋतुराज, वसंत।
रित्तम० ना० पु० मनु विशेष।
रिद्धि० ना० स्त्री० सम्पत्ति, बढ़ती, वृद्धि, ऋद्धि।
रिपु० ना० पु० बैरी, शत्रु, दुश्मन।
रिपुता० ना० स्त्री० शत्रुता, बैर, अदावत।
रिपुंजय० गु० शत्रुजित्, अतिशर्मा।
रिपुपाक० ना० पु० इन्द्र।
रिपुहा० ना० पु० शत्रुघ्न, गु० शत्रुजित्।
रिषि० ना० पु० ऋषि।
रिषिमित्र० ना० पु० ऋषिमित्र।
रिष्ट० ना० पु० खड्ग, गु० जो निकृष्ट है।
रिष्टपुष्ट० गु० मोटा, स्थूल।
रिस० ना० स्त्री० कोप, क्रोध, खिसियाहट।
रिसना० अ० क्रि० धीमें टपकना।
रिसहा० गु० क्रोधी।
रिसाते० गु० क्रोधयुत, क्रोध करते।
रिसाना० } रिसियाना० } अ० क्रि० अप्रसन्न वा क्रोधित होना, चिढ़ना, दुःखित होना।
रिक्ष० ना० पु० ऋक्ष, रीछ।
रिक्षराज० } रिक्षेश० } ना० पु० ऋक्षराज, जाम्बवतादि।
री० अव्य० रे।
रींगना० अ० क्रि० कँटचाल, रेंगना।
रींधना० स० क्रि० पकाना।
रीछ० ना० पु० ऋक्ष, भालु।
रीझ० ना० स्त्री० चाह, इच्छा, हुलस, तृप्ति।

रीझना० अ० क्रि० प्रसन्न वा तृप्तहोना।
रीठा० ना० पु० फल विशेष।
रीठी० ना० स्त्री० छोटा रीठा।
रीढ़० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी।
रीता० गु० खाली, शून्य।
रीति० ना० स्त्री० चाल, चलन, प्रकार, क़ानून, दस्तूरदह।
रीर० ना० रीढ़, रीर।
रिरियाना० अ० क्रि० बालककी रीतिसे रोना, कुड़कुड़ाना, स० क्रि० गिड़गिड़ाना, खुशामद करना।
रीस० ना० स्त्री० क्रोध।
रुक० ना० पु० रोक, उबियाहट।
रुकना० अ० क्रि० अटकना, बन्दहोना, ठहरना।
रुकवैया० ना० पु० अटकाऊ।
रुकाना० स० क्रि० अटकाना, ठहराना, छेकवाना।
रुकाव० ना० पु० } अटकाव, छकाव।
रुकावट० स्त्री० }
रुक्म० ना० पु० सुवर्ण, चांदी, रुक्मिणीका भाई।
रुक्मिणी० ना० स्त्री० श्रीकृष्णचन्द्रजीकी पट रानी विशेष।
रुक्मकेश० ना० पु० रुक्मिणीजीका भाई।
रुख० ना० पु० सङ्केत इशारह, आज्ञा, मुंह।
रुखाई० ना० स्त्री० घुड़की, तिखाई।
रुखान० ना० पु० बढ़ई का अस्त्र विशेष।
रुखाना० अ० क्रि० रूखापन होना, सुखाना, सूखना।
रुखानी० ना० स्त्री० छोटा रुखान, गु० सूखीहुई।
रुग्न० गु० टेढ़ा, रोगी।
रुच० ना० स्त्री० रुचि।
रुचना० अ० क्रि० भावना, अच्छालगना।
रुचि० ना० स्त्री० मनोभिलाष, भोजनमें प्रवृत्ति, चाहत, शौक़, गोरोचना।
रुचिक० ना० पु० खाईरालान, सोंचरलान।

रुज० ना० पु० रोग विकार।
रुट्० ना० पु० क्रोध, गुस्सा।
रुणि० ना० पु० शब्द।
रुणित० गु० गुंजारित, शब्द करता भया।
रुण्ड० ना० पु० शिर रहित शरीर।
रुदन० ना० पु० रोदन, रोना।
रुदित० गु० रोताहुआ।
रुद्ध० गु० छेका, रुका, बँधा।
रुद्र० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
रुद्राणी० ना० स्त्री० पार्वती।
रुद्रावतार० ना० पु० श्रीहनुमान्जी।
रुद्री० ना० स्त्री० ११ बेलपत्र, ११ शीशीम।
रुधिर० ना० पु० रक्त, लोहू, खून।
रुधिरा० ना० स्त्री० केसर, जाफ़रान।
रुपना० अ० क्रि० डटना, अड़ना।
रुपया० ना० पु० रुपैया।
रुपहरा } गु० रूपेका, जो रूपेसे बना है।
रुपहला }
रुपी० गु० डटीहुई, अड़ी।
रुपैया० ना० पु० चांदीकामुद्रा, १६ आनेका।
रुरुक० ना० स्त्री० खुरासानी अजवाइन।
रोखाना० स० क्रि० रोकना, दुखदेना।
रुष्ट० गु० क्रुद्ध, क्रोधित।
रुसना० अ० क्रि० रिसाना।
रुह० ना० पु० उत्पन्न, जन्मित।
रुहा० ना० स्त्री० कुम्भी तालावकी।
रुहा० ना० स्त्री० दूब घास।
रूक्ष० गु० रूखा, रूढ़ा, खरखरा।
रुक्षिगन्धक० ना० पु० सोंचरलोन।
रुइया० ना० पु० रूईका व्योपारी।
रुई० ना० स्त्री० जो कपास से निकलती है।
रूघट० ना० पु० मैल, मल, बाल, रोम।
रूधना० स० क्रि० घेरलेना, अ० क्रि० व्याकुलता।

रूख० ना० पु० वृक्ष, पेड़, बृक्ष।
रूखड़० ना० पु० योगी विशेष।
रूखड़ा० ना० पु० छोटा वृक्ष।
रूखन० ना० पु० पलुआ, रुखान।
रूखा० गु० सूखा, निरा, रुक्ष, स्नेहरहित।
रूखाई० ना० स्त्री० खरखराहट, खराई।
रूखानी० ना० स्त्री० टाकी, छनी।
रूखा० ना० स्त्रा० खाचर, गु० सूखी।
रूखे० गु० सूखे, विनारस, उदास।
रूचना० अ० क्रि० रुचना।
रूच्य० गु० मनभावित, चाहता।
रूक्ष० गु० रुक्ष।
रूज० ना० पु० कीट विशेष।
रूझा० गु० जन्तु वा पक्षी जिसको रुज स ताता है।
रूठना० अ० क्रि० बिगड़ना, झगड़ना, रिसाना, मानकरना।
रूठनी० ना० स्त्री० लजरू, गु० मानवती, झगड़ालू।
रूठा० गु० रिसाना बिगड़ाहुआ।
रूठारूठी० ना० स्त्री० परस्पर बिगाड़।
रूढ़० ना० पु० बड़ा, अरड़ा, कठोर।
रूढ़ि० न० पु० वह सज्ञा जो मिश्रित न हो।
रूप० ना० पु० आकार, मुख, चिन्ह टव, चाल, सुन्दरता, तुल्य, शोभा।
रूपक० ना० पु० सदृश, तुल्य समान।
रूपजस्त० ना० पु० रांगा।
रूपमञ्जरी० ना० स्त्री० अप्सरा, सदा सुहागि ल फूल विशेष।
रूपरई० गु० स्वरूपवश्य
रूपरस० ना० पु० रूपा जो जलायागया, रूप क्षार रस।
रूपराशि० } ना० स्त्री० सुन्दर स्त्री, अयत
रूपवती० } सुन्दरी।
रूपवान्० गु० सुन्दर स्वरूप, सुघड़।
रूपहला० गु० जो रूपा से बना है।
रूपा० ना० पु० चांदी, रजत, ना० स्त्री० वेश्या, रूपवती।
रूपान्तर० ना० पु० दूसरारूप।
रूपी० गु० आकारवान्।
रूमी० ना० पु० रूमदेशीय मनुष्यादि।
रूमीमस्तगी० ना० स्त्री० औषधि विशेष।
रूरा० गु० अच्छा, सुन्दर।
रूसना० अ० क्रि० रासना, रूठना।
रूसी० ना० स्त्री० शिरका मैल, ना० पु० रूस देशीय।
रूक्षक० ना० पु० बासा औषधि विशेष।
रे० अव्य० अरे, हो।
रेंक० ना० स्त्री० गदहे का शब्द।
रेंकना० अ० क्रि० रेंककरना।
रेंगना० अ० क्रि० चलना, धीर चाल।
रेंट० ना० पु० रहट रेंटा।
रेंटा० ना० पु० पोटा, सिनक, नटा।
रेंड़० ना० पु० } एरण्ड वा उसका बीज।
रेंड़ा० ना० स्त्री० }
रेंदा० ना० स्त्री० छोटीककड़ी।
रेंदी० ना० स्त्री० छोटा खरबूजा।
रेख० ना० स्त्रा० लकीर, चिह्न, प्रारब्ध, ललाट।
रेखना० स० क्रि० लकीरकरना, चिह्न बनाना।
रेखा० ना० स्त्री० रस, लकीर।
रेखागणित० ना० पु० गणित विशेष।
रेखागति० ना० स्त्री० कर्मगति, प्रारब्धकी चाल।
रेचक० ना० पु० वह औषधि जिस से दस्त आते हैं, योग में वह क्रिया जिससे पवन को उतारते हैं।
रेचनी० ना० स्त्री० वनस्पती जो दस्त उपजावे।
रेचा० ना० स्त्री० कपाला।
रेट० ना० स्त्री० चिह्न, निशान।
रेणु० ना० स्त्री० धूलि प्रमाण।
रेणुका० ना० स्त्री० परशुराम की माता गङ्गाजीका रेता, धूलि, बालू।

रेणुपित्तहा॰ ना॰ पु॰, पित्तपापड़ा ।
रेत॰ ना॰ पु॰ वीर्य, बीज, बालू, छीलन ।
रेत॰ ना॰ पु॰ वीर्य, कामदेव ।
रेतना॰ स॰ क्रि॰ सोहनकरना, छीलना, घो टना ।
रेतल॰ } गु॰ जहां बहुत रेतहोवे ।
रेतला॰ }
रेता॰ ना॰ पु॰ बालू, रेत, गु॰ छीलाभया ।
रेताई॰ ना॰ स्त्री॰ रेतने का काम वा दाम ।
रेतियाना॰ स॰ क्रि॰ रेतना, चिकना करना ।
रेती॰ ना॰ स्त्री॰ जहां अधिक रेतहो, रेतनेका हथियार ।
रेतीला॰ गु॰ बालूआ, किरकिरा ।
रेतुआ॰ ना॰ पु॰ रेतनेहारा ।
रेफ॰ ना॰ पु॰ रकार के आगे का वर्ण ।
रेर॰ ना॰ पु॰ शोर, हल्ला ।
रेलना॰ स॰ क्रि॰ ठेलना, ढकेलना, पेलना ।
रेलपेल॰ ना॰ स्त्री॰ बहुतात, सरसाई, भीड़ ।
रेला॰ ना॰ पु॰ अहिला, बाढ़, पशुओं की पांति, दकल, पेला, झपट, ठला ।
रेवड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ तिलमिलित मिठाई विशेष ।
रेवत॰ ना॰ पु॰ राजा विशेष, रेवती का बाप ।
रेवती॰ ना॰ स्त्री॰ सत्ताईसवां नक्षत्र, श्रीबल देवजी की पत्नी ।
रेवतीरमण॰ ना॰ पु॰ श्रीबलदेवजी ।
रेवन्चीनी॰ } ना॰ स्त्री॰ औषधि विशेष ।
रेवन्दचीनी॰ }
रेवा॰ ना॰ पु॰ नर्मदानद, ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष ।
रेह॰ ना॰ स्त्री॰ रेह ।
रेहडू॰ ना॰ पु॰ लदिया ।
रेही॰ ना॰ स्त्री॰ रेह ।
रेह॰ ना॰ स्त्री॰ ऊसर भूमिकी मिट्टी ।
रैंकना॰ अ॰ क्रि॰ रेंकना ।
रैन॰ } ना॰ स्त्री॰ रात, निशा ।
रैनि॰ }
रैनिचर॰ ना॰ पु॰ निशाचर ।
रैनिवर्ण॰ गु॰ काला, श्याम ।
रैवत॰ ना॰ पु॰ मनु॰ विशेष ।
रोआई॰ ना॰ स्त्री॰ विलाप, हाहाकार ।
रोआना॰ स॰ क्रि॰ रोलाना, सताना, कुढ़ाना, अ॰ क्रि॰ कुढ़ना, खिसियाना ।
रोआं॰ ना॰ पु॰ रोम ।
रोंगटी॰ ना॰ स्त्री॰ झगड़ा, छल, ठगविद्या ।
रोंदना॰ स॰ क्रि॰ कुचलना ।
रोपना॰ स॰ क्रि॰ लगाना, जमाना, गाड़ना ।
रोक॰ ना॰ स्त्री॰ टोक, अटक, विघ्न, नकद ।
रोकड़॰ ना॰ स्त्री॰ जो रुपया अपने पास जमा है ।
रोकड़िया॰ ना॰ पु॰ रोकड़ रखनेहारा ।
रोकथम॰ ना॰ स्त्री॰ ओट, आड़, छेड़ ।
रोकना॰ स॰ क्रि॰ घेरना, थामना, छेकना, अटकाना, बानवारना ।
रोकू॰ ना॰ पु॰ रोकनेहारा ।
रोग॰ ना॰ पु॰ व्याधि, दुःख, विकार, बीमारी ।
रोगरिपु॰ ना॰ पु॰ वैद्य, धन्वन्तरि, औषधि ।
रोगहा॰ } गु॰ वैद्य, औषधि ।
रोगहारी॰ }
रोगाह्वय॰ ना॰ पु॰ कूट औषधि ।
रोगिया॰ } गु॰ व्याधी, दुःखी, बीमार, मरीज ।
रोगी॰ }
रोच॰ ना॰ पु॰ खुशी ।
रोचक॰ ना॰ पु॰ पाचक, जो रुचि उपजावे ।
रोचन॰ ना॰ पु॰ तिलक, गोरोचन, मनभावन ।
रोचनफल॰ ना॰ पु॰ कपाला ।
रोचना॰ ना॰ पु॰ गोरोचना, तिलक, अ॰ क्रि॰ रुचना, भावना ।
रोचिष॰ ना॰ पु॰ मनु विशेष ।
रोज॰ } ना॰ पु॰ विलाप, रोना ।
रोजड़ा॰ }

रोट० } रोटा० } ना० पु० मोटी रोटी, श्रीहनुमानजी का मोटी रोटीका नैवेद्य।
रोटी० ना० स्त्री० भोजन विशेष।
रोड़ा० ना० पु० बड़ा कंकर।
रोड़ी० ना० स्त्री० छोटा कंकर।
रोदन० ना० पु० रोवाई, आंसू निकलना।
रोदसी० ना० स्त्री० भूमि, आकाश।
रोध० ना० पु० तीर, तट, रोक, घिराव।
रोधी० गु० रोकनेहारा, घेरनेहारा, तटवाला।
रोना० अ० क्रि० आंसूडालना, विलापना, उदासहोना, ना० पु० विलाप, रोदन, शोक।
रोपक० ना० गु० जो रोपणकरे।
रोपण० ना० पु० वृक्षादि का लगाना।
रोपना० स० क्रि० रोपना, रोकना, अटकाना।
रोम० ना० पु० शरीर के बाल, ऊन।
रोमकर्ण० ना० पु० चौगड़ा, खरगोश।
रोमकूप० ना० पु० रोमकी जड़।
रोमपट० } रोमवस्त्र० } ना० पु० रोमीवस्त्र यथा कम्मल, दुशाला इत्यादि।
रोमस० ना० पु० डांस, तमालपत्र, सुअर।
रोमसफला० ना० स्त्री० डांस।
रोमहर्षण० } रोमाञ्च० } ना० पु० रोम खड़े होना, गद्गद।
रोरी० ना० स्त्री० जिसका शिरमें टीका लगाते हैं, रोली।
रोलना० स० क्रि० स्वच्छकरना, चिकनाना, घुमाना।
रोली० ना० स्त्री० रोरी, चावल और हल्दी और फटकरी की मिलौनी जिसका लाल तिलक माथेपरलगाते हैं।
रोवना० अ० क्रि० रोना, गु० रोनेहारा।
रोश० } रोष० } ना० पु० क्रोध, दुःख, गुस्सा।
रोषण० ना० पु० कालसा, पारा, क्रोध।
रोष० ना० पु० रीस।
रोसना० अ० क्रि० रूठना।
रोहट० ना० स्त्री० रोदन।
रोहण० ना० पु० राजा विशेष, रोहिणी का पिता।
रोहिणी० ना० स्त्री० श्रीबलदेवजी की माता, चौथा नक्षत्र, बुधकी माता, हर्रे, कुटकी।
रोहित० ना० पु० मत्स्य विशेष।
रोहिताश्व० ना० पु० राजा हरिश्चन्द्रका पुत्र।
रोहिश्य० ना० पु० मेथी।
रोहिये० स० क्रि० धारण करिये।
रोही० ना० पु० बरगद।
रोहू० ना० पु० मत्स्य विशेष।
रोहेलखण्ड० ना० पु० बांसबरेली के आस पासका देश।
रौंदना० } रौंधना० } स० क्रि० पांवसे खूंदना वा पांव से मींजना वा मसलना वा मलना।
रौताई० ना० स्त्री० लड़ाई, समर, युद्ध।
रौद्र० ना० पु० भांक, क्रोध, धूप, गु० भयानक, कठिन, ना० पु० शृंगारादि नवरस में से एक का नाम।
रौप्य० ना० पु० चांदी, रजत।
रौर० ना० पु० रौला, जस।
रौरव० ना० पु० नरकका खण्ड विशेष।
रौरा० सर्व० तुम्हारा।
रौला० ना० पु० धूम धाम, बखेड़ा, हुल्लड़।
रौच्य० ना० पु० मनु विशेष।
रौहिणीय० } रौहणेय० } ना० पु० श्रीबलदेवजी, बुध।

[ल]

लकड़० ना० पु० काष्ठ, काठ, लठ।
लकड़हारा० ना० पु० लकड़ी बेचनेहारा।
लकड़ा० ना० पु० गिरर, लकड़ीका बड़ाटुकड़ा।
लकड़ी० ना० स्त्री० लाठी, काष्ठ, इन्धन, गु० कड़ा, कठिन।
लकीर० ना० स्त्री० रेखा, धारी, डंडीर।
लकुट० ना० पु० छड़ी, लाठी।
लकुच० ना० पु० बड़हल।

लख० ना० पु० मायाका पसार, गु० जो देखा जावे मौजूदात, लाख।
लखन० ना० पु० लषण, लक्ष्मण।
लखनऊ० ना० पु० अवधदेश की राजधानी।
लखना० स० क्रि० देखना, समझना।
लखपति० } गु० धनी, भाग्यवान्, जिस के पास
लखपती० } लाखों रुपया हो।
लखलुट० गु० उड़ाऊ।
लखा० ना० पु० लाखों।
लखाऊ० गु० जनाऊ, दिखाऊ।
लखिया० ना० पु० देखनहारा।
लखेरा० ना० पु० लहेरा, लाख चढ़ानेहारा।
लखौटा० गु० जिसमें लाख लगाई गई।
लग० अव्य० तक, पर्यंत, समीप, ना० स्त्री० छड़ी।
लगचलना० अ० क्रि० साथ साथ चलना, जल्द चलना।
लगड़० ना० पु० पक्षी विशेष।
लगन० ना० स्त्री० लग्न।
लगना० अ० क्रि० होना, सहना, पचना, स्पर्शहोना, भिड़ना, मिलना, जलना, गु० लगुआ ना० पु० लगार।
लगभग० अव्य० आस पास, निकट।
लगातार० गु० एकपर एक तावड़ताड़।
लगाना० स० क्रि० उतराना, वासकरना, मिलाना, मिलाना, बन्दकरना, खेलना, बाधना, चिपकाना, चुहाखुली करना।
लगाव० ना० पु० सदाव, मेल, सम्बन्ध।
लगावट० ना० स्त्री० मिलाव, गठावट।
लगुड़० ना० पु० लाठी।
लगुआ० } ना० पु० यार, धगड़।
लगूआ० }
लग्गा० ना० पु० स्नेह, माया, बड़ा बांस।
लग्गी० ना० स्त्री० लोगवस, लठी।
लग्न० ना० स्त्री० निमित्त, पल, राशिका उदय काल, प्रेम, मित्रता, विवाह का दिन, मुहूर्त्त।
लग्नेष्ट० ना० पु० लग्नका ठीक।
लग्नेष्टित० गु० लग्न विचारित।
लग्नोत्सव० ना० पु० विवाहका आनन्द।
लघिमा० ना० स्त्री० सिद्धिविशेष।
लघिष्ठ० गु० पास, पासवाला, लगाहुआ।
लघुता० ना० स्त्री० छोटाई, हलकापन और शीघ्रता, जल्दी, रामचन्द्रिकाया यथा (कोटि भातिन पौनते मनते महालघुता लसै, बैठके ध्वज अग्र श्रीहनुमन्त अतक ज्यों हँसै)।
लक० ना० पु० कटि, लका, गु० ढेर, बहुत।
लंकना० ना० पु० लम्बा, चौगड़ा, शशा।
लङ्कनायक० } ना० पु० लङ्काका राजा, राम
लङ्कप० } चन्द्रिकाया यथा (लङ्कनायक को विभीषण देवदूषणको दहै)।
लंका० ना० स्त्री० उपद्वीप विशेष।
लङ्काधि० } ना० पु० रावण, लङ्काकाराजा।
लङ्कापति० }
लङ्किनी० ना० स्त्री० निशाचरी विशेष।
लङ्केश० } ना० पु० रावण, लंका का
लङ्केश्वर० } राजा।
लंग० } गु० पंगु, अपाहज।
लंगड़ा० }
लंगड़ाना० अ० क्रि० लंगकरना।
लंगर० ना० पु० नौकादि के ठहराने के लिये बड़ाभारी लोह, लगड़ा, ढीठ।
लंगरी० ना० स्त्री० थाली।
लंगूचा० ना० पु० खाने की वस्तुविशेष।
लंगूर० ना० पु० वानरविशेष, हनुमान्जी।
लंगोट० } ना० पु० काछ बाधने का छोटा
लंगोटा० } वस्त्र, कौपीन।
लंगोटिया० ना० पु० जो लड़कपनका यार है।
लंगोटी० ना० स्त्री० लंगोट।
लंघन० ना० पु० उपास, फाका, उल्लंघन, न मानना, नाँघना।
लंघना० अ० क्रि० उतरना, फादना, नाँघना।

लघनी० ना० स्त्री० उपाधी, गु० उपामा, भूखा।
लचक० ना० स्त्री० चिमड़ाहट।
लचकना० अ० क्रि० टेढ़ा होना।
लचका० ना० पु० धक्का, झोंक, नारी विशेष।
लचकाना० स० क्रि० टेढ़ीकरना, धक्का देना, झुकाना।
लचना० अ० क्रि० टेढ़ाहोना।
लचलचाना० अ० क्रि० लजलजहोना, चिमड़ा होना।
लचर० ना० पु० अजाड़।
लचाना० स० क्रि० टेढ़ा करना।
लच्छा० ना० पु० फेंटी।
लच्छा० ना० पु० लड़पन।
लजलजा० गु० ढलढला, चिपचपा।
लजलजाना० अ० क्रि० पिलपिला होना।
लजवाना० स० क्रि० सकोच कराना, शरमाना।
लजाना० अ० क्रि० सकोचना लज्जितहोना।
लजारू० } ना० स्त्री० लजावती, पौधा
लजालू० } विशेष, गु० सकोची, लजीला।
लजियाना० अ० क्रि० लजाना।
लजीला० गु० लाजवन्त सकोची।
लज्जा० ना० स्त्री० लाज, सकोच, हया।
लज्जावान्० गु० सकोचित लाजयुक्त।
लज्जित० अ० क्रि० लजायकर।
लज्जिका० ना० स्त्री० लजालू, वश्या।
लज्जित० सकोचित, लाजयुक्त।
लट० ना० स्त्री० केश जो उलझगया है।
लटक० ना० स्त्री० हिलन, कारलाका प्रकार विशेष।
लटकन० ना० पु० गहना विशेष जो नथ में पड़ता है, फल विशेष, पक्षी विशेष, चरांची।
लटकना० अ० क्रि० हिलगना।
लटका० ना० पु० टोना, झाड़फूक, टोटका, चुटकुला।
लटकाना० स० क्रि० हिलगाना, टागना।
लटदार० ना० पु० टगार।
लटपटा० गु० चचल, खिलाड़, पगड़ी जो अनरीति से बाधी है।
लटपटाना० अ० क्रि० लड़खड़ाना, ठोकरखाना।
लटपटी० ना० स्त्री० ठोकरहाई, लड़बड़ी।
लटा० गु० दुर्बल, दुबला, पतला, सूखा, लुच्चा।
लटाई० ना० स्त्री० परेती चर्खी, गु० दुबलापन।
लटापटा० गु० ऐसा वैसा।
लटूरिया० } ना० स्त्री० छाट केश जिन में
लटूरा० } लट पड़जाती है।
लटोरा० ना० पु० पक्षी विशेष।
लट्टू० ना० पु० भौरा, चगी, मोहित।
लट्टूहोना० अ० क्रि० किसीपर मोहित होना।
लठ० ना० पु० सोंटा, लाठी।
लठालठी० ना० स्त्री० परस्परलाठी की लड़ाई।
लठियाना० स० क्रि० लगलगी करना, लाठी से पीटना।
लठ्ठर० ना० पु० गु० ढाला, ठढा।
लड़० ना० स्त्री० पक्ष, पंक्ति, लड़ी, यथा परत।
लड़कपन० ना० पु० शैशव, बालकता, लड़काई।
लड़कबुद्धि० ना० स्त्री० चित्तविभ्रम, लड़के कीसी बुद्धि।
लड़का० ना० पु० बालक, पुत्र, बच्चा।
लड़काई० ना० स्त्री० } लड़कपन, बालकता,
लड़कापन० ना० पु० } शिशुता।
लड़खड़ाना० अ० क्रि० डगमगाना, लड़बड़ाना।
लड़ना० स० क्रि० झगड़ना, युद्धकरना।
लड़बड़ाना० अ० क्रि० लड़खड़ाना।
लड़ाई० ना० स्त्री० युद्ध, समर, झगड़ा।
लड़ाक० } गु० झगड़ालू, युद्धकर्ता, वीर।
लड़ाका० }

लड़ाना० स० क्रि० लड़ाई वा युद्ध करवाना, और लाड़ करना।
लड़ियाना० स० क्रि० पिरोना, गूथना।
लड़ी० ना० स्त्री० मोतियों की सरी।
लड़ैता० गु० दुलार, बहुतप्यारा, ढीठ।
लड्डू० ना० पु० मोदक जो मोठआदिसे बनते हैं, मिठाई विशेष।
लढ़ा० ना० पु० } छकड़ा, लढ्ढू।
लढ़िया० स्त्री० }
लढ़ी० ना० स्त्री० छोटाछकड़ा, लढ़िया।
लण्ठ० ना० पु० मूर्ख।
लण्ड० ना० पु० लिंग, लौंड़ा।
लण्डूरा० गु० लुण्डा बांड़ा, बन्धुहीन, अनाथ।
लत० ना० स्त्री० बुरीचाल, आदत।
लतना० स० क्रि० पाड़ी वा पाड़ेके साथ मसंग होना।
लतरी० ना० स्त्री० पुरानी जूता, दालइन्विशेष।
लता० ना० स्त्री० बल, प्रियंगु, दालका पाधा।
लताड़ना० स० क्रि० दौड़धूप कराना, हलाक करना, तुच्छ करना।
लताना० स० क्रि० पाड़ी से पाड़ेका प्रसंग कराना।
लतिका० ना० स्त्री० लता।
लतिया० गु० जिसको चालचुरी है, कुकर्मी।
लतियाना० स० क्रि० लात से मारना।
लती० गु० लतिया।
लतुआ० ना० पु० पटाकपड़ा।
लत्ता० ना० पु० पुरानाकपड़ा, चीथड़ा, पात, लात, रामचरित्रवाक्य (हनूमत लत्ता दई दड भूल्यो, छुट्या कणनासाहिल इह पूल्यो)।
लत्ती० ना० स्त्री० लटकती डोरी, तरंग में जो लात, घोड़े की लात।
लथड़ना० अ० क्रि० कीचड़ आदि में भीगजाना।
लथेड़ना० स० क्रि० कीचड़ से भिगादेना।
लदना० अ० क्रि० शामिल वा भराहोना।
लदनिया० भा० पु० लादनेहारा, लदनेहारा, लदाव।
लदान० ना० पु० बोझ, भराव, लदाव।
लदाना० स० क्रि० बोझना, भरना, लादना।
लदाव० ना० पु० लदान, बोझ।
लदुआ० ना० पु० जो लादाजाता है।
लप० ना० पु० हल, मुट्ठी, हथेली, पसर।
लपक० ना० स्त्री० चटक, भभक, झलक, भभक।
लपकना० अ० क्रि० लहकना भभकना जैसे वन, झपटना झपकना।
लपका० ना० पु० झपट फुर्ती, बुरीचाल।
लपकाना० स० क्रि० किसी वस्तु के लेने को हाथ बढ़ाना।
लपकी० ना० स्त्री० तपची, टाका, मर्स विशेष।
लपची० ना० स्त्री० मछली विशेष।
लपझप० गु० फुर्तीला, चचल।
लपट० ना० स्त्री० सुगन्ध महक दहक, मिडाव।
लपटना० अ० क्रि० चिपटना एठना, सिमटना, लड़ना।
लपटा० ना० पु० जूसी।
लपटाना० स० क्रि० मिड़ाना, चिपटाना, लपेटना, लगाना बलटना।
लपटी० ना० स्त्री० लुपरा।
लपलप० गु० भपभप।
लपाट० } गु० मिथ्यावादी, महाझूठा।
लपाटिया० }
लपाटी० ना० स्त्री० मिथ्या, झूठ, मूठ।
लपाड़ु० गु० लपाटिया।
लपेट० ना० स्त्री० पर्त लड़, लपटा।
लपेटा० ना० स्त्री० बड़।

लपेटना० स० क्रि० बाँधना, बेठन लगाना, लीपना।
लपेटवा० गु० लपेटागया।
लप्पा० ना० पु० कपड़ा जोबादले से बिना है।
लबड़सबड़० ना० पु० बकझक, झूठ सच।
लबड़ा० ना० पु० झूठा, बकी।
लबनी० ना० स्त्री० मिट्टी का पात्र जिसमें ताड़ी चुआते हैं।
लबलब० ना० पु० पपरी, दलदल, उल्लू।
लबलबा० गु० चिपचिपा, लसलसा।
लबार० ना० पु० बकवादी, झूठा, गप्पी।
लयी० ना० स्त्री० खाड का जलाव जब चीनी बनाने को पकाते हैं।
लबेदा० ना० पु० सोंटा, लठ विशेष।
लबेरा० ना० पु० फल वा वृक्ष विशेष, लभेरा।
लब्ध० गु० प्राप्त, उपार्जित।
लब्धि० गु० प्राप्ति।
लभेरा० ना० पु० वृक्ष वा उसका फल विशेष।
लभ्य० गु० मिलनहारा, मिलने के योग्य।
लमछड़ा० गु० ऊंचा, लम्बा।
लम्पट० गु० झूठा, असत्य, स्वैरण, छुटखेल, परस्त्रीगामी, व्यभिचारी।
लम्ब० ना० पु० अमूद, सूधीरेखा, ऊंचाव।
लम्बकर्ण० ना० पु० शशा, चौगड़ा, खरगोश।
लम्बा० गु० ऊंचा, दीर्घ, बड़ा।
लम्बाई० स्त्री० } ऊंचाई, दीर्घपन।
लम्बान० ना० पु० }
लम्ब ना० स० क्रि० लम्बाकरना, बढ़ाना।
लम्बित० गु० जो लटकायागया।
लम्बियाकरना० अ० क्रि० कलोल करना, कुदकना।
लम्बी० ना० स्त्री० गु० ऊंची, बड़ी।
लम्बीसांसभरना० अ० क्रि० रोना, विलाप करना।
लम्बू० गु० लम्बा।
लम्बोदर० ना० पु० श्रीगणेश जी।
लम्मा० ना० पु० चौगड़ा, शशा।
लय० ना० पु० प्रलय, नाश, देर, ताल, स्वर, विनाश, अत्यन्तस्नेह, ना० स्त्री० चितवन।
लर्रो० ना० पु० फेंगी, आगी।
ललक० ना० स्त्री० लहर, तरंग, नम्रता।
ललकना० अ० क्रि० चढ़ना, धावाकरना, नम्रता करना।
ललकाना० स० क्रि० झगड़ा उठाना, लड़ाना, नम्रकरना।
ललकार० ना० स्त्री० हाक, पुकार।
ललकारना० स० क्रि० पुकारना, हाकना और लड़ाई मागना, प्रचारना।
ललगण्डा० ना० पु० बानर, कपि।
ललचाना० अ० क्रि० तरसना, जीलगारहना, स० क्रि० तरसाना।
ललना० ना० स्त्री० खिलाड़ नारि।
लला० ना० पु० छोकरा, लौंडा।
ललाट० } ना० पु० माथा, कपाल, प्रारब्ध,
ललार० } पेशानी।
ललित० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, गु० सुंदर, अच्छा, लौकता भया।
ललिता० ना० स्त्री० स्त्री, अलबेल, देवी प्रसिद्ध श्रीराधिका की सखी विशेष।
ललिया० ना० स्त्री० लली।
ललियाना० स० क्रि० फुसलाना, बहलाना, अ० क्रि० गिड़गिड़ाना, तमतमाना।
लली० ना० स्त्री० छोकरी, लौंडी, लड़की, गु० ढीला, नपुंसक मनुष्य।
लल्लोपत्तो० ना० पु० चापलोसी, खुशामद।
लव० ना० पु० अंश, लव, श्रीसीताजी का ज्येष्ठ पुत्र विशेष।
लवंग० ना० पु० लौंग, वृक्ष विशेष।
लवण० ना० पु० लोन, नमक।
लवणसिन्धु० ना० पु० खारी समुद्र।
लवणाम्बु० ना० पु० समुद्र, खारीपानी।
लवणासुर० ना० पु० लवनासुर, दैत्यकानामहै।

लवणोद० ना० पु० समुद्र खारीजलका।
लवमात्र० गु० अव्य० थोड़ीदेर, पलभर।
लवा० ना० पु० बटेर पक्षी।
लवाई० ना० स्त्री० थोड़े दिनकी ब्यानीगाय।
लष्टम्पष्टम्० गु० उलटापलटा।
लशुन० ना० पु० लहसुन।
लषज० ना० पु० थीलदमयन्ती।
लषणपुर० ना० पु० लखनऊ नगर विशेष।
लस० ना० स्त्री० चिपचिपाहट।
लसकना० अ० क्रि० लजलजा होजाना, गीला होना।
लसना० अ० क्रि० सोहना, सजना, फबना, चमकना।
लसलसा० गु० चिपचिपा, लसवाला।
लसलसाना० अ० क्रि० लसलसाहोना।
लसित० गु० शोभित, साक्षात्।
लसियाना० अ० क्रि० चिपचिपाहोना, लसलसा होना।
लसी० ना० स्त्री० लस।
लसीला० गु० जिसमें लसहोवे।
लसोढ़ा० ना० पु० फल विशेष जिस में लस होती है।
लस्सी० ना० स्त्री० लसी, दूध और पानी।
लहँगा० ना० पु० घेघरा, फरिया।
लहक० ना० स्त्री० चमक, झलक।
लहकना० अ० क्रि० हिलना, चमकना, भभकना, पिचकारी लगना।
लहकाना० स० क्रि० पिचकारी से मारना, चमकाना, दहकाना, दरकाना।
लहकारना० स० क्रि० पुचकारना, पगुरहाथ करना।
लहकारट० ना० स्त्री० चमकाहट दहकाहट।
लहकीला० गु० चमकीला, भड़कीला।
लहकौर०
लहकौरर० } ना० स्त्री० कौर जो दुलहा दुलहन का है, दही बताशा जो विवाह में खिलाते हैं।
लहना० स० क्रि० पाना, खाना, अ० क्रि० फलना, काम आना, ना० पु० उधार, पर्त्ता, प्रारब्ध।
लहचर० ना० पु० तोता विशेष।
लहचेरा० ना० पु० पौधा विशेष।
लहर० ना० स्त्री० तरंग, हिलोर, सांपके विषकी जो तरंग आती है।
लहरबहर० ना० स्त्री० सुभाग, सम्पत्ति।
लहराना० अ० क्रि० लहराना, हिलकोरना।
लहरालगाना० स० क्रि० टालना, उधार धाई करना।
लहरिया० गु० जो लहरकी रीतिपर होवे।
लहरी० गु० तरंगी, तरल, चोखा।
लहलहा० गु० विकसित, प्रफुल्लित, हरा।
लहलहाना० अ० क्रि० खिलना, फूलना, हराहोना।
लहलोट० गु० जो उधार लेकर फिर न देवे।
लहसुन० ना० पु० कन्द विशेष।
लहसुनिया० ना० पु० रत्न विशेष।
लहाछेह० ना० स्त्री० शीघ्रता, जल्दी।
लहास०
लहासा० } ना० स्त्री० नाव बांधनेकी रस्सी।
लहियत० क्रि० पाता है या पाते हैं।
लहुरा० ना० पु० शीघ्रता, जल्दी।
लहू० ना० पु० लहु, रुधिर, खून।
लहूआ० ना० पु० पौधा विशेष।
लहौर० ना० पु० लाहौर।
लहौरी० गु० जो लाहौर का है।
लक्ष० ना० पु० सौ हजार, १००००० लाख, वह लाख जिसकी बूंद बनती है।
लक्षण० ना० पु० चिह्न, गुण, लखन भी।
लक्षत० क्रि० विलोकत, देखत।
लक्षित० गु० प्रकाशित, जो देख पड़ता है।
लक्ष्मण० ना० पु० रामचन्द्रजीके छोटे भाई।
लक्ष्मणा० ना० स्त्री० सारस पक्षी, श्रीकृष्ण की पटरानी विशेष, दोरी कगोरी।

लक्ष्मी० ना० स्त्री० सम्पत्ति वा धन, कमला, रमा।

लक्ष्मीफल० ना० पु० श्रीफल, बिल्व, बेल।

लक्ष्य० गु० जो देखाजावे, ना० स्त्री० लक्ष्मी, निशाना।

लाई० ना० स्त्री० धान का लावा, क्रि० लगाई।

लांघना० स० क्रि० फांदना, कूदना।

लाकृति० ना० स्त्री० ढंग, आकार, रूप।

लाख० ना० पु० लक्ष, लाह, लाखा जिसकी चूड़ी बनती है।

लाखना० स० क्रि० लाख लगाना।

लाखी० ना० स्त्री० लालरंग जो लाख से निकालते हैं।

लाग० ना० पु० वैर, शत्रुता, द्वेष, स्नेह, छोह, भाव, मोल, नगचारी, खोर, कसूर, भेद।

लागत० ना० स्त्री० दाम, मोल।

लागना० अ० क्रि० लगना।

लागी० ना० स्त्री० चाह, स्नेह, छोह।

लागू० गु० चाहनेहारा, पिछलगा।

लाघव० ना० पु० आरोग्य, क्षेमकुशल, हलकाई, सूक्ष्मता, उसीसमय, जल्दी, शीघ्र।

लांगल० ना० पु० हल।

लांगली० ना० पु० किसान, नारियल, श्रीबलदेव जी।

लांगूल० ना० पु० लोम, पुच्छ, पूंछ।

लांगूली० ना० पु० कौंचबीज, बानर।

लाज० ना० स्त्री० लज्जा, संकोच, हया।

लाजना० अ० क्रि० लाज करना।

लाजवन्त० गु० लजीला, संकोची, कुलवन्त।

लाजा० ना० स्त्री० खील।

लाझा० ना० पु० लस।

लाञ्छन० ना० पु० दोष, पाप, चिह्न, कलङ्क।

लाट०
लाठ० } ना० स्त्री० स्तम्भ, खम्भा।

लाठी० ना० स्त्री० लकड़ी, छड़ी।

लाड़० ना० पु० प्यार, दुलार।

लाड़ला० गु० प्यारा, दुलारा।

लाड़ली० ना० स्त्री० प्यारी, दुलारी।

लाडू० ना० पु० लड्डू।

लात० ना० स्त्री० पांवकी मार, टांग, पांव।

लातिन्० ना० स्त्री० भाषा विशेष।

लाद्० ना० स्त्री० बोझ।

लादना० स० क्रि० बोझना।

लादिया० ना० पु० बोझनेहारा।

लादी० ना० स्त्री० छोटीलाद, धोबी के कपड़ेकी गठरी।

लादू० गु० जो लादने के योग्य वा लादागया।

लाना० स० क्रि० ले आना, जनाना, उपजाना, ब्याना।

लापाक० ना० पु० शृगाल, गीदड़।

लाफना० अ० क्रि० कूदना, उचकना।

लाभ० ना० पु० प्राप्ति, उपार्जन, फल, नफा।

लाय० ना० पु० अग्नि।

लार० ना० स्त्री० थूक, मुखका पानी, राल।

लारी० ना० स्त्री० लार।

लाल० गु० दुलारा, प्रिय, रक्तवर्ण, ना० पु० बालक, रत्न विशेष, पक्षी विशेष।

लालच० ना० पु० लोभ, तृष्णा, अदेख।

लालची० गु० लोभी, लालचकारी।

लालड़ी० ना० स्त्री० माणिक चुन्नी।

लालन० ना० पु० बालक, ना० स्त्री० लालना।

लालबुझक्कड़० ना० पु० मूर्ख जो अपने तईं ज्ञानवान् जानता है।

लालमधु० ना० पु० सहिंजना वृक्ष।

लालसा० ना० स्त्री० इच्छा, चाह, तीक्ष्ण, चौहत।

लाला० ना० पु० वैश्यादिकों की पदवी, कायस्थ विशेष जो बालक पढ़ाता है।

लालादिक० ना० पु० मारब्धाधीन।

लालित्य० ना० पु० मनोहरता, कोमलता, चमक।

लाव० ना० पु० रस्सी, लड़ास।

लावण्य० नाम० पुं० } सुन्दरता, सलोनाई,
लावण्यता० नाम० स्त्री० } बड़ाई।
लाबलाव० ना० पु० लालच, अधीरता।
लाया० ना० पु० खील, फूला।
लासा० ना० पु० चेप, चिपकने द्रव, लिस-लसदार, तिब्बत देशका नाम विशेष।
लाह० ना० पु० कपड़ा विशेष, लाख, लाक्षा, लस, डाली।
लाहा० ना० पु० लाभ।
लाही० ना० स्त्री० पीला विशेष, कीड़े का विशेष।
लाहु० } ना० पु० लाभ, फायदा।
लाहू० }
लाहौर० ना० पु० पंजाबदेश की राजधानी।
लाह्या० ना० स्त्री० लाख, लाह।
लिखत० } ना० पु० पत्र, चिट्ठी, लेख।
लिखतम० }
लिखना० स० क्रि० लेखन, लिखाई करना।
लिखनी० ना० स्त्री० लेखनी, कलम।
लिखनीदास० ना० पु० लेखक, कलमदार।
लिखा० ना० पु० प्रारब्ध, लेख।
लिखाई० ना० स्त्री० लिखने का काम वा पैसा।
लिखाना० स० क्रि० लिखवाना।
लिखाव० ना० पु० } लिखने का काम।
लिखावट० ना० स्त्री० }
लिखिया० पु० ना० लिखनेवाला।
लिंग० ना० पु० पहचान, चिह्न, शिवजी का इन्द्रिय, पुरुष इन्द्रिय, तीन लिंग अर्थात् स्त्री, पुरुष, नपुंसक।
लिंगी० ना० स्त्री० भगेन्द्रिय, योनि।
लिचु० ना० पु० फलविशेष।
लिखड़ी० ना० स्त्री० ईख, लेखी, पतली।
लिट्टी० ना० पु० रोटी आदि भोजन।
लिटाना० स० क्रि० सुलाना, पौढ़ाना।
लिट्टी० ना० स्त्री० टिकिया, अंगाकड़ी, बाटी, मोटी।
लिपटना० अ० क्रि० लपटना।
लिपटाना० स० क्रि० लपेटना।
लिपटना० अ० क्रि० चिपकना, चिपटना, सटना।
लिपटाना० स० क्रि० सटाना, लगाना, चिपटाना।
लिपड़ी० ना० स्त्री० बहुत दिनों की पगड़ी।
लिपवाना० } स० क्रि० गोमय आदि से पोतवाना।
लिपाना० }
लिपि० ना० स्त्री० हस्ताक्षर, लिखावट, लेख, खत।
लिपिकर० ना० पु० लेखक।
लिप्त० गु० लीपायागया, लीन, मग्न।
लिये० अव्य निमित्त, कारण, वास्ते।
लियाना० स० क्रि० ग्रहण करवाना।
लिवाखाना० स० क्रि० लेचलाना, फुसलाना।
लिवैया० ना० पु० लेवैया।
लिसौड़ा० ना० पु० लसोड़ा।
लिहाड़ा० गु० नीच, कुत्सित।
लीक० ना० स्त्री० गाड़ी का मार्ग, पगडंडी, मर्याद, कलंक, लकीर।
लीख० ना० स्त्री० छोटाकपकीट, अर्थात् जूआं।
लीचड़० गु० कृपण, कंजूस, सूम।
लीची० ना० स्त्री० फल विशेष।
लीझी० ना० स्त्री० आदि, तलछट।
लीतरा० ना० पु० पुराने जूता।
लीद० ना० स्त्री० घोड़े की विष्ठा।
लीन० गु० तन्मय, छुपाहुआ, मिलाहुआ, आसक्त, मग्न, योग्य।
लीम० ना० पु० कृमि, मित्र, मिलाप।
लीर० ना० स्त्री० चिथड़ा, पुरानी।
लील० ना० पु० नील, गु० नीला।
लीलना० स० क्रि० निगलना।

लीला॰, ना॰ स्त्री॰ क्रीड़ा, विहार, खेल, चरित्र, गु॰ नीलवर्ण।
लीलाइव॰ } गु॰ ख्यालहीमें लीलाके प्रकार।
लीलावत्॰ }
लीलावती॰ ना॰ स्त्री॰ गणित की पुस्तक विशेष।
लुक॰ ना॰ पु॰ गिरनहारा, तारा, लूक।
लुकना॰ अ॰ क्रि॰ छिपना।
लुका॰ गु॰ गुप्त।
लुकाञ्जन॰ ना॰ पु॰ अञ्जनविशेष जिसके लगाने से मनुष्य अदृश्यहा जाता है।
लुकान॰ गु॰ गुप्तहुआ, छुपा, ना॰ स्त्री॰ छिपाव।
लुकाना॰ अ॰ क्रि॰ छिपना, स॰ क्रि॰ छिपाना, गुप्त करवाना।
लुकावना॰ स॰ क्रि॰ छिपावना, गुप्तकरवाना।
लुगाई॰ ना॰ स्त्री॰ औरत, स्त्री।
लुंगा॰ ना॰ स्त्री॰ मधुककड़ी।
लुगी॰ ना॰ स्त्री॰ धोती विशेष।
लुच॰ गु॰ निरा नग्न।
लुचई॰ ना॰ स्त्री॰ पूरीविशेष।
लुचपर॰ ना॰ पु॰ नष्टता, अधमाई, शुहदपन।
लुच्चई॰ ना॰ स्त्री॰ लुचपन, कुकर्म।
लुच्चा॰ ना॰ पु॰ कुकर्मी, लुचपन करनेहारा।
लुजलुजा॰ गु॰ लजलजा।
लुंज॰ } गु॰ अपाहिज, लूला, हाथोंसे हीन।
लुंजा॰ }
लुटना॰ अ॰ क्रि॰ लूटहोजाना, लूटजाना।
लुटवैया॰ ना॰ पु॰ लुटेरा।
लुटाना॰ स॰ क्रि॰ गमाना, उड़ाना, लूट करवाना।
लुटिया॰ ना॰ स्त्री॰ छोटालोटा।
लुटरा॰ } ना॰ पु॰ लूट करनेहारा, उड़ाऊ।
लुटेरू॰ }
लुटस॰ ना॰ पु॰ लूट, बिगाड़, सत्यानाश।
लुड़का॰ ना॰ पु॰ कानका भूषणविशेष।
लुड़कना॰ } अ॰ क्रि॰ ढलकना, गिरत जाना।
लुढ़कना॰ }
लुढ़ना॰ अ॰ क्रि॰ लुढ़कना।
लुढ़ाना॰ स॰ क्रि॰ गिरादना, उगराना।
लुढ़िया॰ ना॰ स्त्री॰ घास लोद।
लुढ़ियाना॰ स॰ क्रि॰ कपड़े को खड़ा करके दूसरे बार सीना।
लुण्डा॰ गु॰ नाड़ा, पुच्छहीन।
लुतरा॰ ना॰ पु॰ चढ़बढ़िया, उधर की इधर और इधर की उधर करन हारा।
लुपरी॰ ना॰ स्त्री॰ भोजनविशेष।
लुपलुप॰ ना॰ पु॰ चमक चमक।
लुप्त॰ गु॰ गुप्त, लूट, नाश।
लुब्ध॰ गु॰ लालची, लोभी।
लुब्धक॰ ना॰ पु॰ बधिक, लुब्धा, लम्पट।
लुभाना॰ स॰ क्रि॰ ललचाना, जाललगाना।
लुम्पक॰ ना॰ पु॰ राजाविशेष, नाशक।
लुम्पित॰ गु॰ मिटायागया, नाशित।
लुहण्डा॰ ना॰ पु॰ लोहेका पात्रविशेष।
लुहरा॰ ना॰ पु॰ छोग।
लुहांगी॰ ना॰ स्त्री॰ लाठी जिसमें लोहालगा होता है।
लुहार॰ ना॰ पु॰ लोहकार, जातिविशेष।
लुहारिन॰ ना॰ स्त्री॰ लुहार की जोरू।
लू॰ ना॰ स्त्री॰ ज्येष्ठ बैशाख की गरम वायु।
लूआट॰ गु॰ लूकट।
लूक॰ ना॰ पु॰ अग्निकी लुकेठी, पतिततारा।
लूकट॰ गु॰ अधजला।
लूकटी॰ ना॰ स्त्री॰ लुकेलनी, छोगलूक।
लूकनो॰ अ॰ क्रि॰ लू से जलना।
लूकपाई॰ ना॰ स्त्री॰ अगवाही, कहीं २ दी वालीको जलाकर घरके बाहर डालते हैं।
लूका॰ ना॰ पु॰ जलती हुई चिनगारी।
लूख॰ ना॰ स्त्री॰ आंच, लूका।
लूट॰ ना॰ स्त्री॰ वस्तु का बरबस छीनना।

लूटना० स० क्रि० बरबस छीनलना, उड़ाना, गवाना।
लूटालूट० ना० स्त्री० लूट का काम।
लून० ना० पु० लवण, लात, नमक।
लूनिया० ना० पु० लोना बनानेहारा, जाति विशेष पौधाविशेष, गु० लोना।
लूनी० ना० स्त्री० मक्खन, लोना।
लूता० ना० स्त्री० मकड़ी, व्याधिविशेष।
लूम० ना० स्त्री० पुच्छ, पूछ, दुम।
लूला० गु० टुण्डा।
लूह० ना० स्त्री० लू।
लूहर० ना० पु० लुकटा, लूक, पलिताक।
ले० अव्य० से, तक, तलक।
लेई० ना० स्त्री० अहार, जो कपड़ा आदि में लगते हैं।
लेंडी० ना० स्त्री० मेंगनी, बकरी आदि की विष्ठा।
लेंड़ा० ना० पु० गेंदई।
लेख० ना० पु० लिखना, लिखित, तहरीर।
लेखक० ना० पु० लिखिकर, लिखनेहारा।
लेखन० ना० पु० लिपि, लिखाई।
लेखनी० ना० स्त्री० कलम, लिखनी।
लेखर्षभ० ना० पु० इन्द्र, देवराज।
लेखा० ना० पु० देवता, गिनती, हिसाब, दीमक।
लेख्य० ना० पु० पत्र, चिट्ठी, लिखागया, लिखने के योग्य।
लेख्यपत्र० ना० पु० भोजपत्र।
लेजाना० स० क्रि० ढोना, लेभागना, जानना।
लेट० ना० स्त्री० चूनादि वस्तु भीतपर लगाने के लिये।
लेटना० अ० क्रि० पोढ़ना सोना, पड़ना।
लेनदेन० ना० पु० व्यवहार, व्यापार।
लेना० स० क्रि० ग्रहण करना, पकड़ना, छूना।
लेप० ना० पु० लग, उबटन, शरीर में लगाने की औषधिविशेष।
लेपटना० स० क्रि० लपटाना, मैथुन करना, अपने कलङ्क से दूसरे को फँसाना।
लेपना० स० क्रि० पोतना, चुपड़ना।
लेपालक० ना० पु० धर्मका पुत्र, पोष्यपुत्र।
लेपालना० स० क्रि० मोल करके लेना, पोष्य पुत्र करना।
लेमरना० अ० क्रि० कलङ्क लगाना, दागदेना।
लेयमान० गु० जो लेनेवाला है।
लेरू०
लेरुआ० } ना० पु० बछरा।
लेला० ना० पु० भेड़ी का बच्चा।
लेलिह० ना० पु० साप, सर्प।
लेलीतिक० ना० पु० गन्धक।
लेलूट० गु० लेया लूट, लहलूट।
लेलेना० स० क्रि० ग्रहणकरना, छीन लेना।
लेव० ना० पु० भीतकी पपड़ी जो गिरने योग्य है, एक बारका कराव।
लेवा० ना० पु० छोटा पालरा, लेनेहारा, धन, खीरी, रोगी पकाने के बर्तनों पर जो मिट्टी लगाते हैं।
लेवादेई० ना० स्त्री० लेनदेन, कहासुनी।
लेवार० ना० पु० गारामिट्टी जो दीवार में लगाते हैं।
लेवारा० ना० पु० लवा में लोटना।
लेवास० ना० पु० लग।
लेवैया० ना० पु० लेनेहारा।
लेश० गु० थोरा, थोड़ा, ना० स्त्री० छाराई।
लेस० ना० पु० भूसा मिला मिट्टी की भीतमें लगावट, लीप पात।
लेसना० स० क्रि० लीपना, पोतना, सुलगाना, बालना, झगड़ा उठाना।
लेसालेस०
लेसाआ० } ना० पु० लीपालीप।
लेह० ना० स्त्री० शाघ्रता, उतावला, थरथरत।
लेहन० ना० पु० चाटना।
लेहना० ना० पु० चारा।

लेह्य० ना० पु० अमृत, गु० जो चाटने के योग्य।

लैस० गु० सिद्ध, मोलतिया, ना० पु० तुका, सिरकाविशेष।

लोई० ना० स्त्री० औरत, कम्मल, भूषा, सुलक्की कांति, आटेका पेड़ा।

लों० अव्य० तक, तलक।

लोंदा० ना० पु० ढेला, पिंडा।

लोक० ना० पु० लोग, मनुष्य भुवन, ढौर, व्याकरण, यम, यश, नाम, कीर्त्ति, सन्तति आदि।

लोकना० स० क्रि० पकड़ना, गोचना।

लोकनाथ० ना० पु० लोक का स्वामी यथा इन्द्रादिक १०।

लोकप०, लोकपाल० ना० पु० राजा, दिक्पाल, लोक का पालनेहारा।

लोकसंख्या० ना० स्त्री० मनुष्यों की गिनती।

लोकालोक० ना० पु० पर्वतविशेष जो जगत् की सीमा है।

लोकेश० ना० पु० ब्रह्मा, लोकनाथ।

लोखर० ना० पु० हथियार, लोहे का पुराना पात्र।

लोखरी० ना० स्त्री० लामड़ी।

लोखा० ना० पु० प्रातःकाल, ऊषाकाल।

लोग० ना० पु० मनुष्य, जन।

लोगाई० ना० स्त्री० नारी, स्त्री, औरत।

लोचन० ना० पु० नेत्र, आंख।

लोचनता० ना० स्त्री० दृष्टि, नज़र।

लोचना० ना० स्त्री० सुन्दर स्त्री।

लोटन० ना० पु० पटकन, मछलिया, झाड़ विशेष।

लोटना० अ० क्रि० पटकना, तल ऊपर होना, तलफना, छटपटाना।

लोटपोट० ना० गु० जो लोटता, चैनरहित, जो तलफगया।

लोटा० ना० पु० जलपात्र विशेष।

लोढ़ा० ना० पु० सिलपरका बट्टा।

लोढ़िया० ना० स्त्री० छोटा लोढ़ा।

लोथ० ना० स्त्री० मृतशरीर, मृतक, शव।

लोथरा० ना० पु०, लोथरी० ना० स्त्री० मासका टुकड़ा।

लोथा० ना० पु० नोरा, गोर।

लोदी० ना० स्त्री० लोहमढ़ीलाठी, लोहंगी।

लोदी० ना० पु० जातिविशेष।

लोध० ना० पु० जातिविशेष, वृक्षविशेष, औषधिविशेष।

लोधा० ना० पु० जातिविशेष, किसान।

लोधिया० ना० पु० जातिविशेष।

लोन० ना० पु० लवण, नमक।

लोना० गु० खारा, सुन्दर, नमकीन, ना० पु० फलविशेष, पौधाविशेष, लवण जो भीति आदि से गिरता है।

लोनाई० ना० स्त्री० सुन्दरता, लावण्यता, रामायणे यथा (जातसराहत सीयलोनाई)।

लोनार० ना० पु० खारीभूमि, खेलाड़ी, स्थान जिसमें लवणबनाते हैं, जातिविशेष।

लोप० गु० अन्तर्द्धय, चम्पत, अगोचर, गुप, नाश।

लोई० ना० स्त्री० गीली वस्तु का गोंदा, लप विशेष पगड़ा।

लोपी० गु० अदृश्यकर्त्ता, अगोचर करनेहारा, गुप्त हुआ।

लोबा० ना० स्त्री० लामड़ी।

लोबान० ना० पु० सुगन्धि द्रव्यविशेष।

लोबिया० ना० पु० अन्नविशेष जिसकी फली की तरकारी बनाते हैं।

लोभ० ना० पु० लालच, कृपणता, परीक्षा, मोह।

लोभना० अ० क्रि० मोहित होना, लालच करना।

लोभनीया० ना० स्त्री० महासुन्दरी।

लोभी० गु० लालची, मोही, सूम, कृपण, अदाता।

लोम० ना० स्त्री० रोम, धूत।
लोमड़ी० ना० पु० जंगली जंतुविशेष।
लोमश० ना० पु० मुनिविशेष, चिरजीवी।
लोमसी० ना० स्त्री० ककड़ी, वच ओषधि।
लोयन० ना० पु० लोचन, नेत्र, आंख।
लोर० ना० पु० लोलक, आंसू।
लोल० ना० पु० आंसू आंखकापानी, गु० अथिर, चलायमान।
लोलक० ना० पु० कानका भूषणविशेष।
लोलिनी० ना० स्त्री० नटनी, चलायमानस्त्री।
लोलुप० गु० अत्यन्त लोभी, व्यभिचारी।
लोष्ट० ना० पु० ढेला, लाहा।
लोह० ना० पु० लोहा।
लोहकर्षण० ना० पु० चुम्बक।
लोहकार० ना० पु० लोहार, जातिविशेष, जो लोहेका का काम बनाताहै।
लोहचून० } ना० पु० लोहकाचूरण।
लोहचूर०
लोहण्डा० ना० पु० लोहकापात्र, कड़ाह।
लोहण्डी० ना० स्त्री० लोहे की कड़ाही।
लोहपूर० गु० वीरतायुक्त, हथियार बांधे या जंजीर पहने।
लोहसार० ना० पु० लोहे की खानि, मण्डूर।
लोहा० ना० पु० धातुविशेष।
लोहान० गु० लोहूभरा।
लोहानी० ना० पु० पठानों की जातिविशेष।
लोहार० ना० पु० लोहकार।
लोहारिन० ना० स्त्री० लोहारकी जोरू।
लोहित० गु० लालवर्ण, रक्त।
लोहितांग० ना० पु० मंगल तारा।
लोहितरक्त० ना० पु० कपालाख्याधि।
लोहिया० गु० जो लोहे से बनाहै, जो लोहा बेचता है।
लोही० ना० स्त्री० कम्बल, दुशाला, पाट, अरण, रेशमी वस्त्रविशेष।
लोहू० ना० पु० रुधिर, रक्त।

लौं० अव्य० लौं, तक।
लौंग० ना० पु० लवंग।
लौंगी० ना० स्त्री० पालनू कुतियाका नाम।
लौंडा० ना० पु० चेला, छोकड़ा, लिंग।
लौंडिया० } ना० स्त्री० छोकरी, चेली, लड़की।
लौंडी०
लौंद० ना० पु० अधिकमास, मलमास।
लौकना० अ० क्रि० चमकना।
लौका० ना० पु० कुम्हड़ा, बिजली, चमक, कौंधा।
लौकिक० गु० लोकव्यवहार, जो लोकमेंहो।
लौकी० ना० स्त्री० पर्वती लौकी, रामतुरई।
लौटना० अ० क्रि० फिरना, पलटना, घूमना।
लौटाना० स० क्रि० फिराना, पलटाना, घुमाना।
लौड़ा० ना० पु० लिंग, मदनाङ्कुश।
लौह० ना० पु० लोहा।
ल्यारी० ना० पु० भेड़िया, हुण्डार।

[व]

वंश० ना० पु० संतान, घराना, कुल।
वंशकार ना० पु० बांसफोड़, डोम, भंगी।
वंशज० }
वंशरोचन० } ना० पु० वस्तुविशेष जो बांस
वंशलोचन० } में से निकलती है।
वंशक्षीर० }
वंशावली० ना० स्त्री० पीढ़ी, घराकी परिपाटी, शजरह।
वंशी० ना० स्त्री० मुरली, बांसुरी।
वंशीधर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एकनाम।
वंशीवट० ना० पु० जिसस्थानमें श्रीकृष्णचन्द्र वंशी बजाया करते थे।
वक० ना० पु० बगुला, अगस्ति।
वकहंस० ना० पु० पक्षीविशेष।
वकासुर० ना० पु० बगुलारूपी दैत्यविशेष
वकी० ना० स्त्री० बगली बगुला की स्त्री।

वकुल० ना० पु० मौलसिरी वृक्ष।
वक्तव्य० गु० कहने के योग्य।
वक्ता० ना० पु० कहनेहारा।
वक्त्र० ना० पु० मुख, मुंह।
वक्र० गु० टेढ़ा।
वक्रसुत० ना० पु० ऊंट।
वक्रगति० ना० स्त्री० बांकी चाल, टेढ़ीचाल, बांके वा टेढ़ेकी चाल।
वक्रग्रीव० ना० पु० ऊंट।
वक्रता० ना० स्त्री० बांकापन, टेढ़ाई, निर्दया, वधादि कर्म।
वक्रांगी० ना० पु० तारा शुक्र।
वक्री० गु० टेढ़ा चलनेहारा।
वक्रोक्ति० ना० स्त्री० टेढ़ी बात, कटुबात।
वङ्क० ना० पु० बांका, टेढ़ा।
वङ्कता० ना० स्त्री० बांकापन, टेढ़ाई।
वङ्की० ना० स्त्री० छुरी।
वगसेन० ना० पु० अगस्तिवृक्ष।
वच० ना० पु० औषधिविशेष।
वचन० ना० पु० कथन, मुनिवाक्य, कहना, मसार, ध्वनि।
वचक्नु० ना० पु० ब्राह्मण।
वञ्जुल० गु० चञ्चल।
वज्र० ना० पु० बिजली, इन्द्रका अस्त्रविशेष, गु० अतिकठिन।
वज्रकन्द० ना० पु० तिमीकन्द।
वज्रतुण्ड० ना० पु० सेंहुड़वृक्ष।
वज्रद्रुक० ना० पु० सेंहुड़वृक्ष।
वज्रधर० } वज्रपाणि० } ना० पु० इन्द्र, देवराज।
वज्राङ्ग० ना० पु० कठिन तन।
वज्राङ्गी० ना० पु० हनुमान बल, अतिकठोर तनविशेष, हनुमानजी।
वज्रहस्त० } वज्री० } ना० पु० इन्द्र, गेंहुड़।

वञ्चक० ना० पु० शृगाल, प्रतारक, गु० ठग, छली, कपटी।
वञ्चकता० ना० स्त्री० छलकर्म, ठगई, चोरी।
वञ्चन० ना० पु० ठगविद्या, छल, धोखा।
वञ्चना० ना० स्त्री० प्रतारण, ठगाई।
वञ्चित० गु० प्रतारित, छलित, ठगागया।
वञ्ची० गु० प्रतारक, ठग।
वञ्जुल० ना० पु० अशोकवृक्ष।
वट० ना० पु० बरगद, पण्डित, ब्राह्मण।
वटिका० ना० स्त्री० बरा, बटी।
वटु० ना० पु० बालक, ब्रह्मचारी।
वटुक० ना० पु० लाकरा, तरुण, भैरवविशेष।
वडवाग्नि० } वडवानल० } ना० पु० समुद्रकी अग्नि।
वडिश० ना० स्त्री० नर्सा, मच्छ पकड़ने का कांटाविशेष।
वणिक० ना० पु० बनिया, व्यापारी।
वणिज० ना० पु० व्यापार, तिजारत।
वत्० अ०य० जिस शब्दके परे इसका प्रयोग होवे उसका अर्थ सदृश समझाजाता है यथा देववत् अर्थात् देव सदृश।
वत्स० ना० पु० शिशु बछड़ा, वर्ष छाती, हृदय।
वत्सतरी० ना० स्त्री० बछिया।
वत्सर० ना० पु० दाहार, दुलला, वर्ष, साल।
वत्सरीय० गु० वर्षका, बरसौड़ी।
वत्सरायगमन० ना० पु० सूर्य के चारोंओर महीना भ्रमण।
वत्सल० गु० प्रिय, ग्राही, दयावन्त, दयायुत।
वत्सलता० ना० स्त्री० प्यार, दया, मोह।
वत्सादन० ना० पु० गुरच।
वत्सासुर० ना० पु० बछड़ारूपी दैत्यविशेष।
वदन० ना० पु० मुख, रूप।
वदना० ना० स्त्री० मुखी, रूपी।
वदन्ति० क्रि० कहते हैं।
वदरी० ना० पु० भारतखण्डके उत्तर में तीर्थ।
वदरीश्रम० ना० पु० तीर्थविशेष।

बदरीवन० ना० पु० वनविशेष, बदरीके समीप वा जहां बदरीनाथ हैं।
बदरी० ना० स्त्री० बेरीवृक्ष।
बध० ना० पु० हत्या, मारामारी।
बधन० ना० पु० मारण, हनन।
बधदंशा० ना० पु० बहुतेरी हत्या।
बधिक० ना० पु० खेटकी, हत्यारा, शिकारी।
बन० ना० पु० अरण्य, जंगल, पानी, मेघजाल।
बनचर० ना० पु० जो बनमें चरे, यथा बानर मछली आदि।
बनज० ना० पु० कमल।
बनप्रिय० ना० स्त्री० कोयल।
बनमञ्जरी० ना० स्त्री० सँभालू।
बनमानुष० ना०पु० जंगली मनुष्य, बानरजाति विशेष।
बनमाला० ना० स्त्री० बनमाला।
बनमालिका०ना०स्त्री० बाराहीकन्द, बनमाला।
बनमाली० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम, वनमाली।
बनयात्रा० ना० स्त्री० ब्रज के चौरासीवन की यात्रा।
बनवारी० ना० पु० श्रीकृष्णजी, बनमाली।
बनवास० ना० पु० बन में वास।
बनवासी० गु० बनका बसनेहारा।
बनविलासिनी० ना० स्त्री० शराडुली।
बनस्पति० ना० स्त्री० वृक्ष, जिस वृक्ष में फूल बिना फल हो।
बनायुज० ना० पु० घोड़ा।
बनिता० ना० स्त्री० प्यारी, स्त्री, त्रिया।
बनी० ना० स्त्री० छोटा जंगल।
बनौका० गु० बानर।
बन्त० अव्य० जिस शब्द के परे यह आवे उसका अर्थ कर्त्ता वा सूचक होता है, यथा दयावन्त अर्थात् दया कारक।
बन्दन० ना० पु० } स्तुति, नमस्कार, प्र
बन्दना० ना० स्त्री० } णाम।
बन्दनीय० गु० स्तुति के योग्य, नमस्कार के योग्य।
बन्दा० ना० पु० पौधाविशेष, आकाशलता।
बन्दी० } ना० पु० भाट, विरोधी।
बन्दीजन० }
बन्ध० गु० पूज्य, सेवायोग्य, स्तुति के योग्य।
बन्धुजीव० }
बन्धूक० } ना० पु० दुपहरिया का पुष्प वा वृक्ष।
बन्धूप० }
बन्य० गु० जो बनका वा बन में हो बनवासी, बनैला, मूर्ख।
बन्या० गु० स्त्री० बनकी वा जलकी बहुतायत।
बह्नि० ना० पु० अग्नि, आग।
बह्निमुखी० ना०स्त्री० कलिहारी।
बह्निरुचि० ना० स्त्री० मालकगुंनी।
बह्निशिखा० ना० स्त्री० कलिहारी।
बपन० ना० पु० मुण्डन, बीजा बोये।
बपु० }ना० पु० शरीर, देह।
बपुः० }
बपुरा० गु० तुच्छ, नीच।
बपुष० ना० पु० शरीर, देह, तनु।
बप्ता० ना० पु० पिता बीजबोनेहारा।
बभ्रु० ना० पु० नेवला।
बम० ना० पु० महादेवजी की स्तुति बोधक शब्द।
बमन० ना० पु० } छर्दि, उछाल।
बमि० ना० स्त्री० }
बय० ना० पु० विहग, समय, निश्चय, आयु।
बय ० ना० पु० वय, जो आयु बीती हो।
बयसा० ना० स्त्री० सखी, दूती।
बयस्था० ना० स्त्री० गुरुच।
बयस्य० ना० पु० जिनकी आयु समान है, हमजोली।
बर० ना० पु० आशिष, पदार्थ, दूल्हा, कावई वृक्ष, गु० सुन्दर, अभिराम, श्रेष्ठ।
बरपिठका० ना० स्त्री० सेतावर, शतावर।

वरटा० ना० स्त्री० हंसिनी।
वरतिक्त० ना० पु० पित्तपापड़ा।
वरदा० ना० स्त्री० असगन्ध, वरदाता।
वरदान० ना० पु० वाञ्छितदान, विवाह का दान।
वरदाम्बरी० ना० स्त्री० बड़ी सतावर।
वरदायन० ना० स्त्री० वरदान देनेहारी।
वरपीतक० ना० पु० अबरक, अभ्रक।
वरलोक० ना० पु० स्वर्गविशेष।
वरवण्ड० ना० पु० तेजस्वी, बलवान्, जबर दस्त।
वरवर्णिनी० ना० स्त्री० हलदी।
वरवर्णी० ना० स्त्री० सुन्दर, स्त्री, रूपवती।
वरस्त्री० ना० स्त्री० वेश्या, पुश्चली, पतुरिया।
वरह० ना० पु० पत्ता।
वरा० ना० स्त्री० त्रिफला औषधि, ना० पु० व्यञ्जन।
वराक० ना० पु० देवता।
वराकट० ना० पु० कौड़ी, हिन्दी कोषेलिखित।
वराट०, वराटिक०, वराटिका० } ना० स्त्री० कौड़ी।
वराह० ना० पु० शूकर, श्रीविष्णुनारायण का तृतीय अवतार।
वराहकर्णी० ना० स्त्री० असगन्ध।
वराहाख्य० ना० पु० नागरमोथा।
वरिष्ठ० ना० गु० अतिश्रेष्ठ।
वरु० अव्य० चाहो, यद्यपि।
वरुण० ना० पु० वृक्षविशेष, जलका देवता मुख्य, जल का स्वामी सूर्य, जल।
वरुणा० ना० स्त्री० वरुणकी स्त्री।
वरुणावती० ना० स्त्री० वरुणलोक।
वरूथ० ना० पु० समूह, गिरोह, यूथ।
वरूथी० ना० स्त्री० सेना, फौज।
वरे० अव्य० इसपार, इधर, समूह।
वरेची० ना० स्त्री० ककोल।
वरेप्सी० ना० स्त्री० वरठहराना, माँगी वर कन्या का होना।
वरोहक० ना० पु० असगन्ध।
वर्ग० ना० पु० एकजाति का समूह, एकोच्चारण अक्षर, किसी अङ्क को उसी में घात करनेसे जो गुणन फल।
वर्गक्षेत्र० ना० पु० जिस क्षेत्रकी चारों भुजा समान और चारों कोण समकोण हों।
वर्जन० ना० पु० त्याग, निषेध।
वर्जना० स० क्रि० त्यागना, रोकना, रहित करना।
वर्जनीय० गु० जो त्याग के योग्य है, अयोग्य, कुपात्र।
वर्जित० गु० रहित, निषेधित, जो वर्जागया।
वर्ण० ना० पु० रक्त पीत अरुणादि, अक्षर, द्विजादिक चारि, स्तुति।
वर्णन० ना० पु० बखान, कथन, लिखाई, स्तुति, रंग, देन।
वर्णना० ना० स्त्री० स्तुति अ० क्रि० कथना।
वर्णमाला० ना० स्त्री० क्रमसे सब अक्षर, ककहरा, अक्षरों का समूह।
वर्णवती० ना० स्त्री० हलदी।
वर्णसङ्कर०, वर्णसंकर० } ना० पु० जो दावर्णोंसे उत्पन्न हुआ, दो।
वर्णात्मक० ना० पु० जिस शब्दके अक्षर अलग अलग सुनपड़ें।
वर्णि० ना० स्त्री० केसर।
वर्णित० गु० जिसका वर्णन होचुका है, कथित।
वर्तन० ना० पु० जीविका, बासन।
वर्तमान० ना० पु० गु० इसीसमय का काल।
वर्तलोह० ना० पु० पीतल।
वर्ता० ना० पु० पत्रेपर लिखने के लिये काठका कलम
वर्तार० ना० पु० बटरपक्षी।
वर्तिक० ना० पु० बटरपक्षी।
वर्तिका० ना० स्त्री० बत्ती, बटरपक्षी।

वर्ती० गु० वर्तनकरनेहारा।
वर्तुल० गु० गोल, गोलाकार, मटर, वस्त्र।
वर्द्धन० ना० पु० वृद्धि, बढ़ती।
वर्द्धमानक० ना० पु० दोनों अरण्ड।
वर्द्धा० ना० पु० बैल, वृषभ।
वर्द्धित० गु० बढ़ाहुआ, फैलाहुआ, अधिक।
वर्म० ना० स्त्री० बख़्तर, कवच।
वर्म्मा० ना० पु० क्षत्रियों के नाम का उपपद, काठ में छेद करने का हथियार।
वर्य० गु० श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा।
वर्ला० ना० पु० नदीका इसपार।
वर्वर० गु० अधर्म, बकवादी, बावला।
वर्ष० ना० पु० वृष्टि, पृथिवी का खण्डविशेष,साल, बारहमासका समय।
वर्षण० ना० पु० बरसा, बरसात।
वर्षा० ना० स्त्री०
वर्षाऋतु० स्त्री०
वर्षर्त्तु० स्त्री०
वर्षाकाल० पु० } वृष्टि, बरसात, चौमास।
वर्षाकाली० ना० पु० श्यामजीरा, गु० जो वर्षाकालमें हो।
वर्षाभू० ना० पु० भेक, मेंडक।
वर्षाशन०
वर्षासन० } ना० पु० बरसकी जीविका।
वर्हिश्चूड० ना० पु० कुनेरा।
वर्हिण० ना० पु० तगर, मयूर, मोर।
वर्हिर्मुख० ना० पु० देवता।
वर्ही० ना० स्त्री० मयूर, मोर।
वलय०
वलया० } ना० स्त्री० गोल, चूड़ी।
वलयाकार० ना० पु० गोलाकार।
वला० अव्य० वर, ना० स्त्री० सैन्य, धरता, चचला, लक्ष्मी, औषधि।
वलाक० ना० पु० बगुला, रामायण यथा (कामी काक वलाक विचारे)।
वलाका० ना० स्त्री० बगुलों की पांति।
वलाट० ना० पु० मूंग।
वलावा० ना० स्त्री० विरहदी।
वलाहक० ना० पु० मेघ।
वलि० ना० पु० भेंट, बलिदान।
वलित० गु० भरा पूरा संयुक्त।
वलिपुष्ट०
वलिभुक्० } ना० पु० कौआ, काग।
वलिरसा० ना० स्त्री० गन्धक।
वलिष्ठ० गु० बलवान्, पहलवान।
वलून० ना० पु० आकाश में उड़ने की वस्तु, गुब्बारा।
वल्कल० ना० पु० वृक्षकी छाल, भोजपत्रादि बक्कला।
वल्लकी० ना० स्त्री० वीणा, तम्बूरा।
वल्लभ० गु० प्रिय, मुहलगा, स्वामी, दिलबैया।
वल्लभा० ना० स्त्री० प्रिय, प्रियतमा।
वश० ना० पु० आधीन, पराक्रम, इच्छा, चाह, क़ाबू।
वशवर्ती० गु० आधान, काबू में।
वशिर० ना० पु० समुद्रलोन, लालऊंगा।
वशिष्ठ० ना० पु० मुनिविशेष दूत, वकील।
वशीकरण० ना० पु० आधीन करने की रीति, पुस्तकविशेष, सिद्धिविशेष।
वशीभूत० गु० जो वशमें होगया, तावेदार, हिला।
वशरोहा० ना० स्त्री० स्त्री।
वश्य० गु० जो वशमें होगया, तावेदार, हिला पाला।
वसति० ना० स्त्री० बस्ती, बसने का स्थान, ग्राम।
वसतिस्थान० ना० पु० वासस्थान।
वसन० ना० पु० वस्त्र, कपड़ा।
वसन्त० ना० पु० रागविशेष, ना० स्त्री० मदन ऋतु जो चैत्र वैशाख में होती है।
वसन्तजा० ना० स्त्री० वासन्ती।
वसन्तद्रुम० ना० पु० सेंदूर।

वायुजात० } नाः पु० श्रीहनुमान् भीमसेन।
वायुपूत० }

वाय्वग्नि० ना० पु० पवन और अग्नि।

वार० ना० पु० टोकर, धार, इतवार, दिन।

वार, ना० स्त्री० अवसर, विलम्ब, समय, धीरजता।

वारण० ना० पु० वर्जन, निषिद्धता, रोकना, योद्धावर, हाथी।

वारद० ना० पु० कपास।

वारन० स० क्रि० अर्पण, भेट, बलि, हाथी।

वारना० स० क्रि० घेर लेना, अर्पण करना, भेट चढ़ाना।

वारवधू० } ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया, पुंश्चली।
वारस्त्री० }

वारा० ना० पु० सस्ताई, बचाव, निछावर, सुसरता, लाभ।

वारापार० अव्य० इधर से उधर तक।

वाराणसी० ना० स्त्री० काशी, बनारस।

वारि० ना० पु० जल, पानी।

वारिचर० ना० पु० मछली आदि।

वारिचरकेतु० ना० पु० कामदेव, अनिल-देवजी।

वारिज० ना० पु० कमल, समुद्र लवण, गुण जो जल से उत्पन्न हो।

वारिद० ना० पु० मेघ।

वारिदनाद० ना० पु० मेघनाद, रामायणे यथा (वारिदनाद जेठ सुत तासू, भट्महँ प्रथम रेख जग जासू)।

वारिधर० ना० पु० मेघ।

वारिधि० ना० पु० समुद्र।

वारिवल्ली० ना० स्त्री० करेला, तरकारी।

वारिविहंग० ना० पु० जलके पक्षी।

वारिशूकर० ना० पु० कौड़ी।

वारिसम्भव० ना० पु० लाग।

वारीश० ना० पु० समुद्र।

वारुणी० ना० स्त्री० मदिरा विशेष, पश्चिम दिशा, गंगाजीका पर्व विशेष, दूब घास विशेष, हाथीकी चाल, पचीसवां नक्षत्र।

वारे० अव्य० आगे, छोड़े।

वार्ता० ना० स्त्री० वृत्तान्त, बात, बातचीत।

वार्ताकी० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।

वार्तिक० ना० पु० मूलग्रन्थ का पूरणग्रन्थ, जो ग्रन्थोंकि रहित, गत, बातों म।

वार्तिका० ना० स्त्री० भाग, बैगन।

वार्द्धक्य० ना० पु० बुढ़ापा, वृद्धावस्था।

वार्षिक० गु० सनती, वर्षका, जो बरसातमें उत्पन्न होता है, जो बरसात के योग्य है।

वाल्य० ना० पु० बालकपन, बालकता।

वावदूक० ना० पु० बड़ावक्ता, वाग्मक, वाग्मी।

वाष्प० ना० पु० वाफ, भाफ।

वाष्पिका० ना० स्त्री० कालाहीरा।

वास० ना० पु० घर, बसने का स्थान, वास।

वासना० ना० स्त्री० अभिलाषा, इच्छा, अ० क्रि० महकना।

वासन्ती० ना० स्त्री० लता विशेष, चैत्रमास में कामदेवका पर्व विशेष।

वासर० ना० पु० दिन, दिवस।

वासव० ना० पु० इन्द्र, देवराज।

वासांसि० ना० पु० वस्त्र, कपड़े।

वासा० ना० पु० वासा।

वासित० गु० सुगन्धि सयुत, वस्त्रयुत।

वासी० ना० पु० बसनेहारा, रहनेहारा।

वासुकि० ना० पु० मुख्यसर्प, प्रधान सांप।

वासुदेव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।

वास्तव० अव्य० यथार्थ, तात्पर्य, असल।

वास्तव्य० गु० बसने के योग्य।

वास्तिका० ना० स्त्री० मेथीका शाक वा मेथी।

वास्तुक० ना० पु० बथुआ का साग।

वास्तुकाकार० ना० पु० पालक का साग।

वास्तूक० ना० पु० बथुआ का शाक।

वास्तोपति० } नाः० पु० इन्द्र, अमर यथा
वास्तोष्पति० } यथा (वास्तोष्पतिरुरपतिर्वे ज्ञारातिशर्चीपति)।

वाह० ना० पु० घोड़ा, वाजी।

वाहक० ना० पु० घुड़चढ़ा।

वाहन० ना० पु० घोड़ा, जिसपरचढ़के जाया जाव, सवारी।

वाहवैरी० ना० पु० भैंसा।

वाहि० सर्व० उसको।

वाहिनी० ना० स्त्री० वाहिनी, सवारी।

वाहु० } ना० पु० भुज।
वाहू० }

वाहुमुख० ना० पु० हाथ।

वाह्य० गु० बाहर का।

वाह्यालय० ना० पु० मंदिर के बाहर या बाहर का।

वि० अव्य० यह शब्द उपसर्ग है उसका अर्थ कभी निषय कभी भिन्नता कभी विरोध कभी विशेषण कभी हीन इत्यादि होता है।

विकट० गु० विकट।

विकराल० गु० विकराल, भयकर।

विकल० गु० व्याकुल, अधूरा।

विकलित० गु० विकल, व्याकुल।

विकल्प० ना० पु० भूर, संदेह, विचार।

विकशित० } गु० प्रफुल्लित, फूलाहुआ।
विकसित० }

विकार० ना० पु० बदल रंग, स्वभाव की बदल।

विकाल० ना० पु० गोधूलि, सायंकाल।

विकाश० ना० पु० प्रकाश।

विकीरण० ना० पु० मदार वृक्ष, आक।

विकीर्ण० गु० फलाया गया।

विकृत० गु० विरोधी, मलीन, ना० पु० दुखा।

विकृति० ना० स्त्री० विचार या स्वभाव आदि का बदल।

विक्रम० ना० पु० पराक्रम शूरता, वीरता।

विक्रमादित्य० ना० पु० राजाधिराज जिसने संवत् चलाया है।

विक्रय० ना० पु० बिक्री।

विक्रीत० गु० जो बिकगया।

विक्रेता० ना० पु० बचवैया, बेचनहारा।

विख्यात० गु० प्रगट, प्रसिद्ध, प्रकाशित।

विगत० गु० रहित, बिना, बिदून।

विगति० ना० स्त्री० बिगाड़, बुराई, बिराव।

विगन्ध० ना० स्त्री० कुवास, बदबू।

विगुण० ना० पु० औगुण, अवगुण।

विग्रह० ना० पु० शरीर, फैलाव, बैर, युद्ध।

विघट्टन० ना० पु० तोड़न, सम्पूर्ण करण।

विघट्टित० गु० पूराकियागया, मथागया।

विघ्न० ना० पु० अटकाव, रुकाव, भूल, चूक, धोखा, शुभकर्म में जो बाधा।

विघ्नराज० }
विघ्नविदारण० } ना० पु० श्रीगणराज।
विघ्नहरण० }

विचरण० ना० पु० पर्यटन, सैर, विहारण, फिरना।

विचरित० गु० विहारित।

विचल० गु० चलायमान, चचल, तिरिथर।

विचलित० गु० चलायमान, चचल, अस्थिर।

विचक्षण० गु० चतुर, निपुण, प्रवीण, स्याना।

विचार० ना० पु० ध्यान, शोच, बूझ, ज्ञान का ज्ञान।

विचारक० ना० पु० विचार करनेहारा।

विचारित० गु० जो विचारागया, निर्णीत।

विचारी० ना० पु० विचारक।

विचार्य० गु० जो विचारने के योग्य है।

विचिन० गु० रंगारंग, नानाप्रकार का, मनोहर।

विच्छेद० ना० पु० वियोग, जुदाई।

विजय० ना० पु० जय, जीत, फतेह, मजीठ, पाण्डव जिसके जो हिरण्यकश्यप हुआ था।

विजयदशमी० ना० स्त्री० आश्विन शुक्ल १०, वार सुदी १०।
विजयनर० ना० पु० अर्जुन।
विजया० ना० स्त्री० भंग, बूटी।
विजयी० गु० जयवन्त, जीतनेहारा।
विजाति० } गु० भिन्न जातिका, अनजाति।
विजातीय० }
विज्ञान० ना० पु० अजान, अज्ञान, अबूझ, मूढ़।
विट्० ना० पु० नीच।
विट्चर० ना० पु० शूकर, घरैला।
विटप० ना० पु० वृक्ष, पल्लव, पेड़, रामायण यथा (पुन्यपुरुष यों उपगारी, मोह विटप नहि सकत उपारी।)
विडम्ब० ना० पु० दु:ख, क्लेश, छलना।
विडम्बना० ना० स्त्री० दुःखदायक, निन्दा की बात निन्दायुत वचन।
विडम्बित० गु० दुःखित, पतित, निन्दित।
विडाल० ना० पु० मार्जार, बिलार।
वितण्डा० ना० स्त्री० लाएनवाई।
वितन० ना० पु० कामदेव।
वितरण० ना० पु० दान, त्यागना, पार वा उतरना।
वितल० ना० पु० पाताल विशेष।
वितस्ता० ना० स्त्री० व्यासानदी विशेष जो पञ्जाब में है।
वितस्ति० ना० पु० बारहअंगुल, बालिश्त।
वितान० ना० पु० विस्तार, चंदवा, तम्बू, मण्डप।
वितुन्न० ना० पु० धनिया।
वितृष्णा० ना० स्त्री० निराशा, वैराग्य, तृष्णा अरुचि।
वित्त० ना० पु० धन, दौलत, द्रव्य, खजाना।
वित्रस्त० } गु० चकित, घबराया।
विथकित० }
विद्० गु० जाननेहारा।
विदग्ध० ना० पु० लम्पट, गु० चतुर, विचक्षण।
विदग्धा० ना० स्त्री० लम्पट स्त्री, चतुर स्त्री।
विदारण० ना० पु० फाड़न।
विदारना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना।
विदारिका० ना० स्त्री० विदारीकन्द।
विदारिगन्धा० ना० स्त्री० शालपर्णी।
विदिक्० ना० स्त्री० आग्नेयादि कोण, विदिशा।
विदित० गु० प्रकट, जो जानागया, प्रसिद्ध।
विदिशा० } ना० स्त्री० विदिक्।
विदिश० }
विदीर्ण० गु० फाड़ा, चीरा, फटाहुआ।
विदुर० ना० पु० दासीसुत, हरिभक्त विशेष।
विदुष० गु० पण्डित, गुणी।
विदूषक० ना० पु० भांड़, विदूषक।
विदेश० ना० पु० परदेश, परदेश, विलायत।
विदेशी० ना० पु० परदेशी, विलायती।
विदेह० ना० पु० राजा जनक, कामदेव।
विदेहजा० ना० स्त्री० सीताजी।
विदैवत० ना० पु० देवता।
विद्यमान० गु० वर्तमान, प्रस्तुत, मौजूद।
विद्या० ना० स्त्री० शास्त्रका ज्ञान, यथार्थ ज्ञान, इल्म, हुनर, गुण, शिल्पादिक १४।
विद्याधर० ना० पु० देवता विशेष, गु० पण्डित, गुणी, कारीगर।
विद्यावान्० गु० ज्ञानवान् पण्डित, आलिम।
विद्यार्थी० ना० पु० छात्र, शिष्य, गु० पढ़ने हारा।
विद्यालय० ना० पु० पाठशाला, विद्या का घर।
विद्युत्० ना० स्त्री० बिजली, कौंदा।
विद्युत्केश० ना० स्त्री० कलिहारी।
विद्युल्लता० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा।
विद्रुम० ना० पु० मूंगा।
विद्वद्विनोद० ना० पु० शास्त्रार्थ, दूसरे विद्यावी चर्चा पण्डितों में।
विद्वान्० गु० विद्यावान, पण्डित, पढ़ा।

विद्वेष० ना० पु० वैर, विरोध, अदावत।
विद्वेषिनी० ना० स्त्री० विरोधिनी, निन्दक, घोर दुःखदाता।
विद्वेषी० ना० पु० वैरी शत्रु।
विध० ना० स्त्री० प्रकार, रीति।
विधवा० ना० स्त्री० रांड, बेवह।
विधर्म० ना० पु० निज वर्णाश्रमसे विपरीत धर्म।
विधाता० ना० पु० ब्रह्मा।
विधान० ना० पु० शास्त्रोक्त व्यवहार, विधि, आचार।
विधायक० ना० पु० जो विधानकरै, सौंपन हारा।
विधात्री० ना० स्त्री० सरस्वती।
विधि० ना० स्त्री० प्रारब्ध, ना० पु० ब्रह्मा, दयता, कर्म, भाग्य, विधाता, वाह प्रकार, शास्त्रोक्त व्यवहार।
विधिब्रह्माण्ड० ना० पु० ब्रह्माण्ड।
विधिकिंकर० ना० पु० सेवक, भृत्य, गुलाम।
विधिगति० ना० स्त्री० कर्म की चाल, ब्रह्मा की दशा वा लिखनि वा चाल वा कर्तव्य।
विधिपिता० ना० पु० कमल।
विधिवत्० अव्य० यथा योग्य, विहित।
विधु० ना० पु० चन्द्रमा।
विधुन्तुद० ना० पु० राहु, आठवा ग्रह।
विधुवदनी० ना० स्त्री० चन्द्रवदना, अतिसुन्दर, जिसका मुख चन्द्रमा के समान है।
विधुर० ना० पु० वियोग, व्याकुलता।
विधेय० गु० सुभाऊ, सिष, होनहार, समाचारी विशेषयभेद।
विधेयार्थदर्शक० गु० विधान के अर्थ देखने हारा।
विध्वंस० ना० पु० बिगाड़, घृणा, निरादर।
विन० सर्व० उन।
विनत० गु० नम्र, आधीन, झुका, टेढ़ा।
विनता० ना० स्त्री० गरुड़जीकी माता, कश्यप की स्त्री।
विनती० ना० स्त्री० प्रार्थना, निवेदन, खुशामद।
विनय० ना० पु० शिष्टाचार, लाज, नम्रता, आदर, स्वभाव, खुशामद।
विनयी० गु० विनयशील, शिष्टाचारी, नम्र, नीतिज्ञ।
विनष्ट० गु० जिसका विनाश होगया।
विना० अव्य० त्याग के, छोड़, रहित।
विनायक० ना० पु० श्रीगणेशजी।
विनाश० ना० पु० ध्वंस, नाश।
विनिमय० ना० पु० अदलबदल, एवज।
विनीत० गु० विनयी, नम्र, ना० पु० माली।
विनीता० ना० स्त्री० उत्तमा।
विन० अव्य० विना।
विनोद० ना० पु० चाव, आनंद, क्रीड़ा, खेल।
विन्दक० गु० लाभयुत।
विन्दु० ना० पु० बूंद, अनुस्वार, सुना, शून्य, मणि, वीर्य, रेत।
विन्ध्य० ना० पु० विन्ध्याचल।
विन्ध्यगिरि० ना० पु० विन्ध्याचल।
विन्ध्यवासिनी० ना० स्त्री० विन्ध्याचल की देवी विशेष जो मिर्जापुरके समान है।
विन्ध्याचल० ना० पु० पर्वत विशेष जो भरतखण्ड के मध्यमें है।
विन्यास० ना० पु० समूह, और समूह या स्थान।

विपत्० } ना० स्त्री० आपदा, अभाव,
विपत्ति० } दुर्गति, आफत।
विपत्ति० }

विपथ० ना० पु० कुपथ, कुमार्ग।
विपद्० ना० पु० विपत्ति।
विपद्ग्रस्त० गु० अभागी, दुःखी।
विपरीत० ना० पु० उलटा, विरोधी, ना० स्त्री० विरोध, दुर्गति, [illegible]।
विपर्यय० ना० पु० विरुद्धता, विपरीतता।
विपल० ना० पु० पलका साठवां भाग।
विपक्ष० ना० पु० शत्रु, वैरी।

विपक्षता० ना० स्त्री० शत्रुता, वैर, अदावत।
विपक्षी० ना० पु० शत्रु, मुद्दई।
विपाक० ना० पु० प्रारब्ध का हेतु, भोजन वा पकाना।
विपाट० } ना० स्त्री० व्यासानदी पञ्जाब
विपाशा० } की।
विपिन० ना० पु० वन, जंगल।
विपुल० गु० बहुत, बहुतात, विस्तार।
विपुलता० ना० स्त्री० बहुतायत, विस्तारित।
विपुला० ना० स्त्री० धरती, सुमेरुका पश्चिम भाग।
विपुपा० ना० स्त्री० आदूबेर।
विप्र० ना० पु० ब्राह्मण।
विप्रचरण० ना० पु० ब्राह्मण का पाव, विशेष भृगुलता का चिह्न जो श्रीविष्णुनारायण के हृदय में चिह्नित है।
विप्रलाप० ना० पु० अनर्थवाक्य, मृतकगुणकथन, विलाप समय वार्ता।
विफल० गु० निष्फल, व्यर्थ।
विभक्त० गु० जो भागकियागया, पृथक्, अलग।
विभक्ति० ना० स्त्री० अंश, भाग, बाँट, सुबादि और तिङ् आदि और कारक बोधक।
विभक्त्यन्त० ना० पु० जिस शब्द वा सर्वनाम के अंत में विभक्तिका प्रत्यय है।
विभञ्जक० गु० भजन करने हारा, नाशन।
विभञ्जन० ना० पु० मारण, भजन, नाशन।
विभव० ना० पु० द्रव्य, राज्य, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, प्रताप, मुक्ति।
विभाकर० ना० पु० सूर्य।
विभाकरी० ना० स्त्री० रात, रात्रि।
विभाग० ना० पु० अंश, विभक्ति।
विभावसु० ना० पु० सूर्य, अग्नि।
विभिस० ना० पु० सौंफ।
विभीतक० ना० पु० बहेड़ा।
विभीषण० ना० पु० रावणका निमात्र भाई, गु० भयानक।
विभु० ना० पु० स्वामी, श्रीविष्णुजी, श्रीशङ्कर, ब्रह्मा, गु० सर्वव्यापी, सर्वज्ञ।
विभूति० ना० स्त्री० यज्ञकी भस्म, ऐश्वर्य, भस्म, अष्टसिद्धि, प्रभुता।
विभूषण० ना० पु० आभरण, अलङ्कार, शोभा।
विभूषित० गु० शोभित, आभूषित, अलङ्कृत।
विभेद० ना० पु० अन्तर, फूट, विशेषभेद।
विभ्रम० ना० पु० भ्रमावली, चूक, भूल, भोला, सन्देह।
विमति० ना० स्त्री० विरोध बुद्धि, ना० पु० मातृविशेष जो जनक राजाका विरोधी था।
विमल० गु० उजला, निर्मल, स्वच्छ, साफ।
विमलनयन० ना० पु० ज्ञानदृष्टि, दिव्यदृष्टि, निर्मल ज्ञान।
विमला० ना० स्त्री० श्रीपार्वती जी।
विमाता० ना० स्त्री० सौतेली माता, दूसरीमाता।
विमातृ० ना० स्त्री० विमाता, साधारण लोग, इसका उच्चारण विमाविनके स्थान में करते हैं।
विमातृज० ना० पु० सौतेली माताकापुत्र, सौतेला भाई।
विमान० ना० पु० स्वर्ग का सिंहासन, देवनों का यान।
विमुख० गु० विरोधी, प्रतिकूल, जिसका मुख फिरगया है, यह शब्द सम्मुख का विरोधी है।
विमोचन० }
विमोक्षण० } ना० पु० त्याग, तजन।
विम्ब० ना० पु० परछाहीं, प्रतिबिम्ब, कुन्दरू तरकारीविशेष, चन्द्र और सूर्य का मण्डल।
विम्बा० ना० पु० फलविशेष जो आतिकटु होता है और पकने पर अतिलाल वर्ण होजाता।
विम्बोर० ना० पु० कन्दूरी लता, अगर बेल।
विम्बुक० ना० पु० लाल, मधूर।
वियो० गु० दूसरा।
वियोग० ना० पु० विछोह, विछुराहट, विच्छेद, आपदा, जुदाई।

वियोगित० गु० जो बिछुड़ गया, भिन्नभया।
वियोगिनी० ना० स्त्री० भिन्न, बिछुरी, जुदी।
वियोगी० गु० विरही, जुदा, बिछुरा, भिन्न।
विरक्त० गु० वैराग्य, शील, कामजित्, उदासी।
विरचन० ना० पु० बनाना, रचना, पैदा करना।
विरचना० स० क्रि० बनाना, रचना, उपजाना।
विरचित० गु० बना, रचा।
विरजा० ना० स्त्री० पौधाविशेष, तृणविशेष, दूब।
विरञ्चि० ना० पु० ब्रह्मा।
विरज० गु० निर्मल, खुश।
विरत० गु० निवृत्ति, संगहीन।
विरति० ना० स्त्री० निवृत्त, वैराग्य।
विरथ० गु० रथहीन, पदाति।
विरद० ना० पु० विरद, गु० निदन्त।
विरल० गु० सूक्ष्म, ढीला, प्रकट, प्रसिद्ध।
विरलच्छदा० ना० स्त्री० पालक का शाक।
विरला० गु० कोई, अनूठा, अनूप, सूक्ष्म, ढील।
विरस० गु० रसहीन।
विरह० ना० पु० वियोग।
विरहित० गु० वियोगित।
विरहिनी० गु० स्त्री० वियोगिनी।
विरही० गु० वियोगी।
विराग० ना० पु० मन की इच्छा का त्याग, जुदाई, विषय भोग का परित्याग, सुख दुःख हीन।
विरागी० गु० उदासी, मनकी इच्छा मारने हारा।
विराजना० अ० क्रि० विराजना।
विराजमान० } गु० शोभायमान।
विराजित० }
विराट० ना० पु० विराट राजा का नाम है।
विराम० ना० पु० देर, विश्राम, हलका चिह्न, गु० अस्थिर, व्याकुल, बीमार।
विरालिका० ना० स्त्री० बिरालीकन्द।
विरुज० गु० आरोग्य, तन्दुरुस्त।
विरुद्ध० गु० विरोधी, विपरीत, जो रोकागया, वैर, अदावत।
विरुद्धता० ना० स्त्री० विरोध, चिढ़, घिन, शत्रुता।
विरूप० गु० कुरूप, भोंडा।
विरूपाक्ष० ना० पु० श्री महादेवजी, राक्षस विशेष।
विरेक० ना० पु० पैरौसा, दस्त।
विरेचन० ना० पु० पैरौसा होना, दस्तजारी होना।
विरोचन० ना० पु० सूर्य, अग्नि, दैत्य, राजा बलिका पिता, राजाविशेष।
विरोध० ना० पु० वैर, झगड़ा, अदावत।
विरोधी० गु० विरोधकारक, झगड़ालू, वैरी।
विरोधोक्ति० ना० स्त्री० अलंकार, विरोध कथन।
विल० ना० पु० बिल।
विलग० गु० भिन्न, पृथक्।
विलज्ज० गु० निर्लज्ज, बेहया।
विलम्ब० ना० पु० देर अबेर, टालमटोल।
विलम्बना० अ० क्रि० रहना, ठहरना, देर करना।
विलय० ना० पु० प्रलय, जगत् का नाश।
विलक्षण० गु० अनुपम, प्रकारका, अद्भुत।
विलाप० ना० पु० सन्ताप, शोक का वर्णन, रोना।
विलायत० ना० स्त्री० परदेश, अन्यदेश।
विलाश० ना० विलास।
विलासी० गु० भोगी, क्रीडाकारक, ना० पु० सर्प।
विलास० ना० पु० हर्ष, आनन्द, सुरत, क्रीडा, खिलाड़ीपन, भोग, कार्य।
विलिका० ना० स्त्री० विलिंगा औषधि।
विलुप्त० गु० जो नाश को प्राप्तभया, मिटगया।
विलेप० ना० पु० लेप, चन्दन घिसना।

विलेशय० ना० पु० शशा, चौगड़ा, खरगोश ।
विलोकन० ना० स्त्री० दृष्टि, ताक ।
विलोकना० स० क्रि० देखना, ताकना, निरखना ।
विलोचन० ना० पु० नेत्र, नयन, आंख ।
विलोड़ना० स० क्रि० मथना, महना ।
विलोम० ना० पु० उलटा, विपरीत ।
विलोरना० स० क्रि० विलोड़ना ।
विल्व० ना० पु० बेल वृक्ष वा उसका फल ।
विवकिल० ना० पु० विल्व, बेल ।
विवर० ना० पु० छिद्र, छेद, बिल, घर, भुरहरा ।
विवरण० ना० पु० व्याख्या, बखान, विस्तार, टीका, वर्णहीन ।
विवर्ण० ना० पु० नीचजातिकामनुष्य, कुजाति ।
विवर्द्धक० गु० वृद्धिकारक, बढ़ानेहारा ।
विवर्द्धन० ना० पु० बढ़ती, वृद्धि ।
विवर्द्धित० गु० वृद्धिको प्राप्तभया, बढ़ायागया ।
विवश० वशहीन, वशाभूत, वश्य, पराधीन, मृत्युसमय जो घबरा वा अस्थिर हो ।
विवस्त्र० गु० वस्त्रहीन, नंगा ।
विवस्वान्० ना० पु० सूर्य ।
विवत्सा० ना० स्त्री० वाञ्छा, कहनेकी इच्छा ।
विवक्षित० गु० वाञ्छित, इष्ट ।
विवाद० ना० पु० कलह, झगड़ा ।
विवादी० गु० जो विवादकरे ।
विवाह० ना० पु० ब्याह, गठबन्धन ।
विवाहित० गु० जो विवाहागया ।
विवाहिता० ना० स्त्री० जो विवाहीगई ।
विवि० गु० दो, २ ।
विविक्त० ना० पु० एकान्त रहित ।
विविध० गु० नानाप्रकार, अनेक, बहुरूपी ।
विबुध० ना० पु० देवता, पण्डित ।
विबुधवन० ना० पु० स्वर्ग, नन्दनवन ।
विबुधवैद्य० ना० पु० अश्विनीकुमार ।
विबुधारि० ना० पु० राक्षस, दैत्य ।
विवेक० ना० पु० न्यारा, विचार, ज्ञान ।
विवेकी० गु० विचारी, ज्ञानी ।
विवेचक० ना० पु० असत्य और सत्य का विचारी ।
विवेचन० ना० पु० विचार ।
विवेचना० ना० स्त्री० सत्यासत्य का विचार, परखना, जानना ।
विशद० गु० उज्ज्वल, स्वच्छ, साफ, ठीक ।
विशदण्ड० ना० पु० अग्रिमप्रदण्डी, दण्ड की निन्दा, कमलनाल ।
विशदवाणी० ना० स्त्री० उज्ज्वलवाणी, स्वच्छभाषा, साफबात ।
विशल्या० ना० स्त्री० कलिहारी ।
विशाख० ना० पु० पुनर्नवा पौधा ।
विशाखा० ना० स्त्री० स्त्री, सोलहवां नक्षत्र ।
विशार० ना० पु० मछली ।
विशारद० ना० पु० मोलसिरीवृक्ष, गु० चतुर, प्राज्ञ, ज्ञाता ।
विशाल० गु० बड़ा, चौड़ा, सुन्दर, दुःखरहित ।
विशाला० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी ।
विशिख० ना० पु० बाण, तीर ।
विशिखासन० ना० पु० धनुष, कमान ।
विशिष्ट० गु० समुक्त ।
विशुद्ध० गु० पवित्र, पाक, साफ, चक्रविशेष, जो अगमग्रन्थमें वर्णित है ।
विशूचिका० ना० स्त्री० छर्दि, हुलकी, हैजा ।
विशेष० ना० पु० जाति, दव, भेद, गुण, ख़ास कर, गु० बहुत, अधिक, एक ।
विशेषण० गु० जो एकको दूसरे से पृथक् करै, गुणवाचक, तारीफ, सिफत ।
विशेषता० ना० स्त्री० अधिकाई, प्रमुखता ।
विशेष्य० ना० पु० गुण, जिसकी तारीफ की जावै, गु० जो विशेषण के योग्य है, पहिला पढ़ला ।
विशोक० गु० शोकरहित, क्लेशहीन, अदुःख ।
विश्रान्त० गु० जिसने विश्राम किया, ना० पु० मथुरापुरामें स्थानविशेष ।

विश्राम० ना० पु० सुख, चैन, कल।
विश्राविगंधा० ना० स्त्री० आद्रुबेर।
विश्लेष० ना० पु० वियोग।
विश्व० ना० पु० जगत्, देवतोंकी जाति जिसमें दशावसु इत्यादि हैं, सोंठ, सब।
विश्वकर्मा० ना० पु० देवतों का थवई।
विश्वगन्धिका० ना० स्त्री० आद्रुबेर।
विश्वदेवा० ना० पु० गगेरुआ।
विश्वनाथ० ना० पु० काशी में प्रधानशिव।
विश्वभेषज० ना० पु० सोंठ।
विश्वम्भर० ना० पु० परमात्मा, ईश्वर।
विश्वम्भरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
विश्वरूप० ना० पु० सर्वरूप, ईश्वर, विराट तन।
विश्वरूपक० ना० पु० काला अगर।
विश्वविमोहन० ना० पु० कामदेव।
विश्वसर्ग० ना० पु० ब्रह्मा, कर्त्ता, विधाता।
विश्वामित्र० ना० पु० मुनिविशेष, धनुर्वेद कर्त्ता।
विश्वास० ना० पु० प्रतीत, भरोसा, प्रत्यय।
विश्वासघात० ना० पु० विश्वास का हनन।
विश्वासघाती० ना० पु० विश्वास का घात कर्त्ता, जो मित्रतामें छलकरे।
विश्वासी० गु० प्रतीत वा भरोसा रखनेहारा।
विश्वेश्वर० ना० पु० विश्वनाथ, भगवान्।
विश्वौषधि० ना० स्त्री० सोंठ।
विष० ना० पु० गरल, हलाहल।
विषण० ना० पु० ब्रह्मा, सूर्य्य।
विषद० गु० विशद, श्वेत, गोरा, ढेठ।
विषधर० ना० पु० सांप, सर्प, शंखमहादेव।
विषध्वंसी० ना० पु० नागरमोथा।
विषपुष्पक० ना० पु० मैनफल।
विषम० गु० अयुग्म गिनती यथा ३।५।७ जो बराबर न हो, असम, कठिन, भयानक, ना० पु० ज्वरविशेष।
विषमत्रिभुज० ना० पु० जिसकी भुजा तुल्य न हों।
विषमान० ना० पु० औषधि वा विषविशेष।
विषमुष्टक० ना० पु० महानिंब।
विषय० ना० पु० इंद्रिया जिन वस्तुओंको ग्रहण करती हैं यथा स्वाद, रंग, रूप, रस, भोगादि, काम, बात, अर्थ, अव्य० लिये, मध्ये।
विषयक० गु० संसारी जगत् के।
विषयी० गु० जो विषयों में आसक्त।
विषवैद्य० ना० पु० जांगलिक, गारुड़ि जो सर्पादि काटेका विष उतारता है।
विषहा० गु० जो विषसे मरा है।
विषाण० ना० पु० पशुके सींग।
विषाद० ना० पु० थकाई, उदासी, दुःख।
विषादी० गु० उदासी, थका, दुःखी।
विषानिका० ना० स्त्री० मेढ़ासिंही।
विषुव० } ना० पु० जब दिन रात समान
विषुवत्० } होता है उसीका नाम।
विषुवत्काल० ना० पु० जिस समय सूर्य्य विषुवत् रेखापर रहते हैं।
विषुवद्रेखा० ना० स्त्री० रेखा, भूमि के ऊपर मध्य में समान सूत डालने से जो रेखा कल्पित है।
विषे० अव्य० में, बीच, मध्य।
विष्कर० ना० पु० मुर्गा।
विष्ठा० ना० स्त्री० बीट, मल, गूह।
विष्ठाकृमि० ना० पु० विष्ठा का कीड़ा।
विष्टि० ना० स्त्री० भद्रा, कुयोग।
विष्टर० ना० पु० आसनविशेष।
विष्टरश्रवा० ना० पु० विष्णु, नारायण।
विष्णु० ना० पु० साधु, मनुष्य, सूर्य, अग्नि, वसु, श्रीनारायण।
विष्णुकान्ता० ना० स्त्री० पौधाविशेष, कौआठोंठी।
विष्णुपद० ना० पु० आकाश, छन्दविशेष, गीतविशेष।

विलेशय० ना० पु० सांप, चौंगड़ा, खरगोश।
विलोकन० ना० स्त्री० दृष्टि, ताक।
विलोकना० स० क्रि० देखना, ताकना, निरखना।
विलोचन० ना० पु० नेत्र, नयन, आंख।
विलोड़ना० स० क्रि० मथना, मढ़ना।
विलोम० ना० पु० उलटा, विपरीत।
विलोरना० स० क्रि० बिलाड़ना।
विल्व० ना० पु० बेल वृक्ष वा उसका फल।
विल्वकिल० ना० पु० बिल्व, बेल।
विवर० ना० पु० छिद्र, छेद, बिल, घर, भुइहरा।
विवरण० ना० पु० व्याख्या बखान, विस्तार, टीका वर्णखान।
विवर्ण० ना० पु० नीचजातिज्ञानशून्य, कुजाति।
विवर्द्धक० गु० वृद्धिकारक, बढ़ानेहारा।
विवर्द्धन० ना० पु० बढ़ती, वृद्धि।
विवर्द्धित० गु० वृद्धिको प्राप्तभया, बढ़ायागया।
विवश० वशहीन, वशीभूत, वश्य, पराधीन, मृत्युसमय जो घबरा वा अस्थिर हो।
विवस्त्र० गु० वस्त्रहीन, नंगा।
विवस्वान्० ना० पु० सूर्य्य।
विवक्षा० ना० स्त्री० वाञ्छा, कहनेकी इच्छा।
विवक्षित० गु० वाञ्छित।
विवाद० ना० पु० कलह, झगड़ा।
विवादी० गु० जो विवादकरै।
विवाह० ना० पु० व्याह, गठबन्धन।
विवाहित० गु० जो व्याहागया।
विवाहिता० ना० स्त्री० जो व्याहीगई।
विवि० गु० दो, २।
विविक्त० ना० पु० एकान्त रहित।
विविध० गु० नानाप्रकार और बहुरूपी।
विबुध० ना० पु० देवता, पण्डित।
विबुधवन० ना० पु० स्वर्ग, नन्दनवन।
विबुधवैद्य० ना० पु० अश्विनीकुमार।
विबुधारि० ना० पु० राक्षस, दैत्य।
विवेक० ना० पु० ध्यान, विचार, ज्ञान।
विवेकी० गु० विचारी, ज्ञानी।
विवेचक० ना० पु० असत्य और सत्य का विचारी।
विवेचन० ना० पु० विचार।
विवेचना० ना० स्त्री० मध्यस्थ का विचार, परखना, जानना।
विशद० गु० उज्ज्वल, स्वच्छ, साफ, ठीक।
विशदण्ड० ना० पु० अतिनम्रदण्डी, दण्ड की निन्दा, कमलनाल।
विशदवाणी० ना० स्त्री० उज्ज्वलवाणी, स्पष्टभाषा साफवात।
विशल्या० ना० स्त्री० कलिहारी।
विशाख० ना० पु० पुनर्नवा पौधा।
विशाखा० ना० स्त्री० स्त्री, सोलहवां नक्षत्र।
विशार० ना० पु० मछली।
विशारद० ना० पु० मालसिरिवृक्ष, गु० चतुर, प्राज्ञ, ज्ञाता।
विशाल० गु० बड़ा, चौड़ा, सुन्दर, दुःखरहित।
विशाला० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
विशिख० ना० पु० बाण, तीर।
विशिखासन० ना० पु० धनुष, कमान।
विशिष्ट० गु० संयुक्त।
विशुद्ध० गु० पवित्र, पाक, साफ, चक्रविशेष जो अष्टाङ्गयोगमें वर्णित है।
विशूचिका० ना० स्त्री० छर्दि, हूलका, हैजह।
विशेष० ना० पु० जाति, रूप, भेद गुण ज्ञान कर, गु० बहुत, अधिक, एक।
विशेषण० गु० जो एकको दूसरे से पृथक्करे, गुणवाचक नामकी सिफत।
विशेषता० ना० स्त्री० अधिकाई, उत्तमताई।
विशेष्य० ना० पु० गुण, जिसकी तारीफ की जावै, गु० जो विशेषण के योग्य है, मुसिफला।
विशोक० गु० शोकरहित, केशहीन, अशोक।
विश्रान्त० गु० जिसने विश्राम किया, ना० पु० मथुरापुरमें स्थानविशेष।

विश्राम० ना० पु० सुख, चैन, वल।
विश्राविगंधा० ना० स्त्री० आहुलेर।
विश्लेष० ना० पु० वियोग।
विश्व० ना० पु० जगत्, देवतोंकी जाति जिसमें दशावसु इत्यादि हैं, सोंठ, सब।
विश्वकर्मा० ना० पु० देवतों का बढ़ई।
विश्वगन्धिका० ना० स्त्री० आहुलेर।
विश्वदेवा० ना० पु० गंगेरुआ।
विश्वनाथ० ना० पु० काशी में प्रधानशिव।
विश्वभेषज० ना० पु० सोंठ।
विश्वम्भर० ना० पु० परमात्मा, ईश्वर।
विश्वम्भरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
विश्वरूप० ना० पु० सर्वरूप, ईश्वर, विराट तन।
विश्वरूपक० ना० पु० काला अगर।
विश्वविमोहन० ना० पु० कामदेव।
विश्वसर्ग० ना० पु० ब्रह्मा, कर्त्ता, विधाता।
विश्वामित्र० ना० पु० मुनिविशेष, धनुर्वेद कर्त्ता।
विश्वास० ना० पु० प्रतीत, भरोसा, प्रत्यय।
विश्वासघात० ना० पु० विश्वास का हनन।
विश्वासघाती० ना० पु० विश्वास का घात कर्त्ता, जो मित्रतामें छलकरे।
विश्वासी० गु० प्रतीत या भरोसा रखनेहारा।
विश्वेश्वर० ना० पु० विश्वनाथ, भगवान्।
विश्वौषधि० ना० स्त्री० सोंठ।
विष० ना० पु० गरल, हलाहल।
विषण० ना० पु० ब्रह्मा, सूर्य्य।
विषद० गु० विशद, श्वेत, खरा, ठेठ।
विषधर० ना० पु० सांप, सर्प, अमहादेव।
विषघ्नसी० ना० पु० नागरमाथा।
विषपुष्पक० ना० पु० मैनफल।
विषम० गु० अयुग्म गिनती यथा ३।५।७ जो बराबर न हो, असम, कठिन, भयानक, ना० पु० ज्वरविशेष।
विषमत्रिभुज० ना० पु० जिसकी भुजा तुल्य न हों।
विषमान० ना० पु० औषधि या विषविशेष।
विषमुष्टक० ना० पु० महानिंब।
विषय० ना० पु० इन्द्रिया जिन वस्तुओंको ग्रहण करती हैं यथा स्वाद, रंग रूप, रस, भोगादि, काम, बात, अर्थ, अव्य० लिये, मध्ये।
विषयक० गु० संसारी जगत् के।
विषयी० गु० जो विषयों में आसक्त।
विषवैद्य० ना० पु० जांगलिक, गारुड़ि जो सर्पादि काटेका विष उतारता है।
विषहा० गु० जो विषसे मरा है।
विषाण० ना० पु० पशुके सींग।
विषाद० ना० पु० थकाई, उदासी, दुःख।
विषादी० गु० उदासी, थका, दुःखी।
विषानिका० ना० स्त्री० मेढासिंही।
विषुव० } ना० पु० जब दिन रात समान
विषुवत्० } होता है उसीका नाम।
विषुवत्काल० ना० पु० जिस समय सूर्य्य विषुवत् रेखापर रहते हैं।
विषुवद्रेखा० ना० स्त्री० रेखा, भूमि के ऊपर शून्य में समान सूत डालने से जो रेखा कल्पित है।
विषे० अव्य० में, बीच, मध्य।
विष्कर० ना० पु० मुर्गा।
विष्ठा० ना० स्त्री० बीट, मल, गूह।
विष्ठारमि० ना० पु० विष्ठा का कीड़ा।
विष्टि० ना० स्त्री० भद्रा, कुयोग।
विष्टर० ना० पु० आसनविशेष।
विष्टरश्रवा० ना० पु० विष्णु, नारायण।
विष्णु० ना० पु० साधु, मनुष्य, सूर्य, अग्नि, वसु, श्रीनारायण।
विष्णुक्रान्ता० ना० स्त्री० पौधाविशेष, कौआगाड़ी।
विष्णुपद० ना० पु० आकाश, छन्दविशेष, गीतविशेष।

विष्णुपदी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
विष्णुपद्य० ना० पु० विष्णु का भजन।
विष्णुवल्लभा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी।
विस० सर्व० उस।
विसर्ग० ना० पु० दो बिन्दुमात्र, वर्णविशेष अः।
विसर्जन० ना० पु० विदा, त्याग, दान, पूरा।
विसारन० ना० पु० बिसरण।
विसूरति० क्रि० चिन्ता, दुचिता।
विस्तर० } ना० पु० फैलाव, पसराव, प्रचार,
विस्तार० } बढ़त, चौड़ाव, आकार।
विस्तीर्ण० गु० बड़ा, फैलाहुआ, फैला।
विस्तृत० गु० फैलाया, पसारा, विस्तारयुत।
विस्फोटक० ना० पु० फोड़ा, चेचक, माता।
विस्मय० ना० पु० आश्चर्य, अचम्भा, शोक, सन्देह, शक।
विस्मरण० ना० पु० भूल, चूक, भुलाहट।
विस्मित० गु० आश्चर्यित, अचम्भित, चकित, चिंतित।
विस्मृत० ना० स्त्री० भूल भुलाहट।
विस्वादु० गु० स्वादहीन, नीरस।
विहग० ना० पु० पक्षी, विहग, चिड़िया।
विहगेश० ना० पु० गरुड़।
विहङ्ग० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।
विहङ्गपति० ना० पु० गरुड़।
विहङ्गम० ना० पु० पक्षी, विहग।
विहगराज० ना० पु० गरुड़, वैनतेय।
विहण्डन० ना० पु० खण्डन, छेदन, भेदन।
विहरण० ना० पु० गमन।
विहरना० अ० क्रि० फटना, तड़कना।
विहसना० अ० क्रि० हसना, खिलना।
विहाय० अव्य० त्याग, छोड़, सिवाय।
विहायस० ना० पु० आकाश।
विहायसी० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।
विहार० ना० पु० क्रीड़ा, आनन्द, सैर।
विहारस्थली० ना० स्त्री० क्रीडागार।

विहारी० गु० क्रीड़ाकारक, चंचल, चपल।
विहित० गु० उचित।
विहीन० गु० त्यागित, रहित, अविवेकी, निदर।
विह्वल० गु० व्याकुल, घबरा।
विक्षिप्त० गु० उन्मत्त, दुखा।
विक्षेप० ना० पु० व्याकुलता, त्याग, चूक, विघ्न।
विज्ञ० गु० चतुर, निपुण विद्वान्।
विज्ञता० ना० स्त्री० निपुणता, चातुर्य, जानकारी।
विज्ञप्ति० ना० स्त्री० विनती, विनय।
विज्ञान० ना० पु० विशेषज्ञान, अनेकविधि, आश्चर्य रस।
विज्ञाननिधान० ना० पु० महाज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी अध्यात्मज्ञाता, ब्रह्मवादी।
विज्ञानी० गु० परमज्ञानी, अतिचतुर, महापण्डित।
विज्ञापन० ना० पु० जतावना, चिताना।
वीचि० } ना० स्त्री० लहरी, मौज।
वीचिका० }
वीज० ना० पु० मूल, कारण, वीर्य, पानी।
वीणा० ना० स्त्री० तम्बूरह, वाद्यविशेष।
वीतराग० ना० पु० विरागयुक्त, वैरागी।
वीथिका० } ना० स्त्री० गली, मार्ग ना० राह।
वीथी० }
वीय० गु० दो, २।
वीर० ना० पु० शूर, सूर्मा, बहादुर, भाई।
वीरता० ना० स्त्री० } सूरमापन, बहादुरी।
वीरत्व० ना० पु० }
वीरपुष्पा० ना० स्त्री० सहदवी पौधा।
वीरभद्र० ना० पु० शिवगणविशेष।
वीरभाव० ना० पु० सामर्थ्य, वीरता, बहादुरी।
वीरभूमि० ना० स्त्री० युद्धस्थान, ना० पु० बंगालदेश में एक जिलह।

वीररस० ना० पु० काव्यरसविशेष, वीरता।

वीरवृक्ष० ना० पु० भिलावा वृक्ष।

वीरसेन० ना० पु० आडू।

वीरा० ना० पु० केला (कदली वारणी मोचा रम्भांशुमत्फलदा, इति निघण्टे) काकोली, पान।

वीर्य्य० ना० पु० बीज, सामर्थ्य, बल।

वीर्य्यकर० ना० पु० उड़द अन्न।

वुहीं० अव्य० उसी समय वा उसी स्थान में, अभी।

वुरला० } **वुसी०** } ना० स्त्री० मीठी तुम्बी, लौकी, राम तुरई (तुम्बिमिष्टा महातुम्बी राजला वुरला वुसी इति निघण्टे)।

वृक० ना० पु० भेड़िया, हुण्डार, पपीहा पक्षी, दैत्यविशेष।

वृत्त० ना० पु० गोल, गोलाकार, दैत्यविशेष।

वृत्तखण्ड० ना० पु० जो दो त्रिज्याओं और मध्यस्थ चापसे घिरा हो, वृत्तका टुकड़ा।

वृत्तफल० ना० पु० तालऊगा।

वृत्तांश० ना० पु० गोलका अंश।

वृत्तान्त० ना० पु० समाचार, वार्त्ता, कथा, कहानी।

वृत्तार्द्ध० ना० पु० गोलार्द्ध, गोलका आधा।

वृत्ति० ना० स्त्री० आचरण, स्वभाव, धंधा, जीविका, व्यवहार, सूत्रका अर्थ, टीका।

वृथा० अव्य० व्यर्थ, झूठ, निष्फल, बेमतलब।

वृद्ध० गु० बूढ़ा।

वृद्धक० गु० वृद्धकारक, बढ़ानेहारा।

वृद्धतम० गु० बहुतबूढ़ा।

वृद्धता० ना० स्त्री० बुढ़ापा, बूढ़पन।

वृद्धप्रपितामह० ना० पु० प्रपितामह का पिता।

वृद्धप्रपितामही० ना० स्त्री० प्रपितामह की माता।

वृद्धश्रवा० ना० पु० इन्द्र।

वृद्धा० ना० स्त्री० बुढ़िया, बूढ़ी।

वृद्धापन० ना० पु० वृद्धता बुढ़ापा।

वृद्धावस्था० ना० स्त्री० बुढ़ापा, बूढ़ाई।

वृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती, बाढ़, अधिकता।

वृन्तफला० ना० स्त्री० अखरोट।

वृन्ता० } **वृन्ताकी०** } ना० पु० भांटा, बैंगन।

वृन्द० ना० पु० समूह, यूथ, झुण्ड, ढेर।

वृन्दा० ना० स्त्री० तुलसी, देवीविशेष जो वृन्दावन में है।

वृन्दारक० ना० पु० देवता, सुर।

वृन्दावन० ना० पु० तीर्थ वा नगरविशेष।

वृश्चिक० ना० पु० बिच्छू, आठवीं राशि।

वृश्चिकाली० ना० स्त्री० मेढ़ासिंगी।

वृष० ना० पु० बैल, दूसरीराशि, कर्ण का पुत्र, इन्द्र कामदेव, धर्म, बालाभोषा।

वृषकेतु० ना० पु० श्रीमहादेवजी, कर्णका पुत्र।

वृषदंश० } **वृषदंशक०** } ना० पु० बिलावपशु, बिलार, महाभारते भीष्मपर्वणि यथा (वृतावृषवराहस्य वृषदंशस्य चोभयो, रणादयुद्ध ताराश्च राज्ञीयभरतर्षभ)।

वृषभ० ना० पु० बैल, धर्म, दैत्यविशेष।

वृषभध्वज० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

वृषभानु० ना० पु० श्रीराधाजीका पिता है।

वृषमार्त्ती० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।

वृषा० ना० स्त्री० असगन्ध।

वृषादित्य० ना० पु० वृषराशिस्थ सूर्य।

वृष्टि० ना० स्त्री० मेह, वर्षा, बरसात।

वृष्णिरांची० ना० स्त्री० माल कांगनी।

वृष्यगन्धा० ना० स्त्री० विदारी।

वृह० ना० पु० चलना, बढ़ना।

वृहती० ना० स्त्री० बड़ी कटेरी।

वृहत्० गु० बड़ा, चौड़ा।

वृहत्खण्ड० ना० पु० बड़ा टुकड़ा, ...

वृहत्फला० ना० स्त्री० जामुन, कद्दू, ... चचड़ा।

वृहद्दला० ना० स्त्री० सहदेवी ग्रौषा।
वृहद्राज० ना० पु० कसेरू।
वृहद्भानु० ना० पु० सूर्य, अग्नि।
वृहस्पति० ना० पु० पाचवा ग्रह, देवपुरोहित।
वृहस्पतिवार० ना० पु० पाचवावार, विहफ।
वृक्ष० ना० पु० पेड़, तरवर।
वृक्षकन्दा० ना० स्त्री० विदारीकन्द, मूसली।
वृक्षमूल० ना० पु० वृक्षकी जड़।
वृक्षमूलस्थली० ना० स्त्री० थाला, थांवला।
वृक्षवल्ली० ना० स्त्री० विदारीकन्द।
वृक्षसारक० ना० पु० गूमा, पौधाविशेष।
वेग० ना० पु० उतावली, फुर्त्ती, अव्य० शीघ्र।
वेगगामी० } वेगवर्त्ता० } गु० उतावला, शीघ्रगामी, जल्द।
वेगवान्० ना० पु० पवन, वातापशु, गु० वेग गामी।
वेगि० } वेगी० } अव्य० शीघ्र, जल्द।
वेणी० ना० स्त्री० त्रिवेणी अर्थात् प्रयाग मे गंगा यमुना सरस्वती का सगम, स्त्रियों की चोटी।
वेणु० ना० पु० वंशी, मुरली, बास राजाविशेष।
वेणुधर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र, बाजीगर।
वेणुवा० ना० पु० वशरोचन, बाजीगर, ठग, चालाक।
वेतस० ना० पु० उजरत, मिहनताना।
वेतम० ना० पु० अम्लवत।
वेताल० ना० पु० पिशाचविशेष, जिन।
वेत्ता० ना० पु० ज्ञाता, ज्ञानी, जाननेहारा।
वेत्र० ना० पु० बेंत।
वेत्रवती० ना० स्त्री० नदीविशेष।
वेत्रवर्त्ती० ना० स्त्री० नदीविशेष।
वेद० ना० पु० हिन्दूलोगों में धर्मशास्त्रपुस्तक जो चार हैं अर्थात् ऋग, यजु, साम, अथर्वण।
वेदगिरा० ना० स्त्री० वेदवाणी। ना० पु० मुनिविशेष।
वेदत्रयी० ना० पु० त्रिवेद अर्थात् ऋग, यजु, साम।
वेदन० } वेदना० } ना० स्त्री० पीड़ा, दुःख, दर्द।
वेदविद्० गु० वेदवादी, वेदवक्ता और वेद पाठक।
वेदव्यास० ना० पु० मुनिविशेष जिन्होंने वेदका समह किया।
वेदाङ्ग० ना० पु० वेदका अंग अर्थात् शिक्षा १ कल्प २ व्याकरण ३ छंद ४ ज्योतिष ५ निरुक्त ६।
वेदान्त० ना० पु० ईश्वर के विषयमें जो वार्त्ता वेद में निर्णीतहै उसका छःवों उपनिषदों में समह कियागया।
वेदान्तविद्या० ना० स्त्री० जो वेदांत में है, आत्मज्ञान, ब्रह्मविचार।
वेदान्ती० गु० वेदान्त मतका ज्ञाता, आत्मवादी।
वेदिका० } वेदी० } ना० स्त्री० अग्निहोत्र, चौक, वेदी।
वेध० ना० पु० छिद्र।
वेधक० ना० पु० छिदवैया, वेधकार।
वेधना० स० क्रि० छेदना।
वेधमुख्य० ना० स्त्री० कस्तूरी।
वेधी० ना० पु० वर्मा, वेधक।
वेरभयानक० ना० पु० प्रलयरात, मृतकरात।
वेला० ना० स्त्री० समय, सायत, काल।
वेशर० ना० स्त्री० बेसर।
वेश्म० ना० पु० घर, मकान।
वेश्या० ना० स्त्री० गणिका, पतुरिया, छिनाल।
वेष्टकेसी० ना० पु० मोचरस।
वेष्टन० ना० पु० बठन, लपटन।
वेष्टित० गु० जो चारों ओरसे ढका पूरा।
वेष्म० ना० पु० वरम।
वै० अव्य० निश्चय।
वैकल० गु० व्याकुल, विकल।

वैकुण्ठ० ना० पु० विष्णुधाम, थिर, नारायण (विष्णुर्नारायण कृष्णो वैकुण्ठोविष्टरश्रवा । इत्यमर)।
वैकुण्ठनाथ० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण ।
वैगन्ध० ना० पु० गंधक ।
वैचित्रता० ना० स्त्री० चित्रविचित्र, रंगारंग ।
वैजनाथ० ना० पु० वैद्यनाथ ।
वैजयन्तिका० ना० स्त्री० अरणी ।
वैजयन्ती० ना० स्त्री० पताका, झण्डा ।
वैडूर्य्य० ना० पु० नीलमणि, नीलम ।
वैतरणी० ना० स्त्री० यमपुरी की नदी ।
वैताल० ना० पु० वितल, वेताल, पिशाच, भाट, बन्दी ।
वैदिक० ना० पु० वेदपाठी, जो वेदोक्त कर्म करता है ।
वैदेही० ना० स्त्री० पीपरी, श्रीसीताजी ।
वैद्य० ना० पु० चिकित्सक, तबीब, हकीम ।
वैद्यक० ना० पु० वैद्यविद्या की पुस्तक, वैद्यविद्या ।
वैद्यनाथ० ना० पु० धन्वन्तरि, झारखण्ड में श्रीमहादेवजी ।
वैभव० ना० पु० राज्य, विभवता, ऐश्वर्य ।
वैर० ना० पु० शत्रुता, अदावत ।
वैरागी० ना० पु० जो वैराग्य धारण करे ।
वैराग्य० ना० पु० विषय त्याग, उदासपन ।
वैराट्० ना० पु० जगत्रूप सर्वरूप ।
वैरिन्० ना० स्त्री० शत्रु स्त्री, वैरी की स्त्री ।
वैरी० ना० पु० शत्रु, दुश्मन ।
वैलक्षण० ना० पु० विलक्षणता, भावान्तर ।
वैलापत्रक० ना० पु० मुख्य सर्प ।
वैवस्वत० ना० पु० धर्मराज, मन्वन्तर ।
वैशाख० ना० पु० वैशाख, दूसरा महीना ।
वैशाखी० ना० स्त्री० इन्द्रराज, पूर्णा विशाख ।
वैशारद्य० ना० पु० मत्स्य, मछली ।
वैशेषिक० ना० पु० शास्त्रविशेष ।
वैश्य० ना० पु० तृतीय वर्ण, राजपूत, जाति विशेष, वैस ।
वैश्यका० ना० स्त्री० मुट्ठी, बूढ़ी ।
वैश्यनी० ना० स्त्री० वश्यकी स्त्री ।
वैश्रवण० ना० पु० कुबेर, यक्षराज ।
वैषम्य० ना० पु० असमता, विषमता, एकान्त ।
वैखानस० ना० पु० वैरागी, उदासी ।
वैष्णव० ना० पु० विष्णुका उपासक, गु० जो विष्णुका है ।
वैष्णवी० ना० स्त्री० लक्ष्मी जो विष्णुकी है ।
वैसा० गु० उसके समान, उसीप्रकार ।
वैसे० अव्य० सेंत, विनामोल, मुफ्त ।
वैज्ञानिक० ना० पु० विज्ञान, ज्ञाता, परमज्ञानी ।
वोहित० ना० पु० जहाज, बडीनाव ।
व्यक्त० गु० ज्ञात, मालूम, खुला, स्पष्ट, ज्ञानी, पढा, एक ।
व्यक्ति० ना० स्त्री० एकता, पृथग्भाव, ऐकाई, प्रकटता, विभक्ति ।
व्यग्र० गु० भूला, भटका, व्याकुल, घावरा ।
व्यग्रित० गु० चिन्तायुत, विकलित ।
व्यग० ना० पु० लाहा, कुल्हिा ।
व्यगता० ना० स्त्री० कुटिलता ।
व्यजन० ना० पु० पंखा, बेना ।
व्यञ्जक० गु० प्रकाशक ।
व्यञ्जन० ना० पु० स्वररहित समस्त वर्ण, शाक आदि तरकारी, चटनी ।
व्यतिक्रम० ना० पु० उल्लङ्घन, अन्यथा, विरुद्धता ।
व्यतिरिक्त० गु० अलग, भिन्न, अन्य ।
व्यतिरेक० ना० पु० भिन्नता, भेद ।
व्यतीत० गु० जो बीतगया, गुजरगया ।
व्यतीपात० ना० पु० योगविशेष ।
व्यत्यय० ना० पु० उलटाव, विपर्यय, विरुद्धता ।

व्यथा० ना० स्त्री० पीड़ा, बाधा, दुःख, दर्द।
व्यथित० गु० दुःखित, पीड़ित।
व्यभिचार० ना० पु० परस्त्रीगमन, कुकर्म।
व्यभिचारिणी० ना० स्त्री० दुष्टास्त्री, कुलटा, स्वैरिणी, छिनाल।
व्यभिचारी० ना० पु० छिनला, स्वैरप, बदकार, जो व्यभिचार करे।
व्यय० ना० पु० लागत, क्षय, नाश, खर्च।
व्ययक० गु० खर्च करनेहारा, नाशक।
व्यर्थ० गु० वृथा, निकम्मा।
व्यलीक० ना० पु० कपट, छल, झूठ।
व्यवच्छेद० ना० पु० अलग करना।
व्यवधान० ना० पु० आच्छादन, अंतर, बीच, बीचबिचाव।
व्यवधायक० ना० पु० जो व्यवधान करे।
व्यवसाय० ना० पु० उद्योग, परिश्रम, यत्न, उपाय, तदबीर, छल।
व्यवसायी० गु० जो व्यवसाय करे।
व्यवस्था० ना० स्त्री० धर्मशास्त्रकी आज्ञा वा वाक्य, अलग करना, दशा, रीति।
व्यवस्थापक० गु० व्यवस्था का देनेहारा।
व्यवस्थित० गु० जो भिन्न कियागया, जो व्यवस्था कियागया, अचल।
व्यवहार० ना० पु० उद्यम, धंधा, काम, ढंग, व्यापार, अभ्यास, झगड़ा, चाल, रीति, भांति, देनलेन।
व्यवहार्य्य० गु० जो व्यवहार के योग्य है।
व्यवहित० गु० संयुत, ढकाहुआ, छुरा।
व्यसन० ना० पु० जूआआदि कुकर्म।
व्यसनी० गु० जुआरी आदि कुकर्मी।
व्यस्त० गु० व्याकुल, फैला।
व्याकरण० ना० पु० शब्दके साधुत्वका उपयोगी शास्त्र, जिस से पदबोध होवे।
व्याकरणी० ना० पु० व्याकरणज्ञाता।
व्याकुल० गु० घबरा, अस्थिर चित्त, हैरान।
व्याकुलता० ना० स्त्री० घबराहट, हैरानी।
व्याख्या० ना० पु० } अर्थका ब्योरेवार
व्याख्यान० ना० स्त्री० } कहना, दर्शन, बखान।
व्याघात० ना० पु० अटकाव, योगविशेष।
व्याघ्र० ना० पु० बाघ, शेर।
व्याघ्रपाद० ना० पु० फाकर्द, बाघका पांव।
व्याघ्रपुच्छ० ना० पु० दोनों अरण्ड।
व्याघ्री० ना० स्त्री० बाघ वगरी, बघिन।
व्याज० ना० पु० छल, ठगई, मिष, ब्याज, सूद, धाड़ा, बहाना।
व्याजक० गु० छली, ब्याज, ऋण।
व्याजी० ना० पु० ब्याज लेनेहारा, छली।
व्याजू० ना० पु० ब्याजके लिये जो ऋणदा।
व्याध० } ना० पु० आखेटकी, हिंसक, शि-
व्याधा० } कारी जो वनके पशु मारलावे।
व्याधि० ना० स्त्री० रोग, पीड़ा जो ताप आदि से होवे।
व्याधिघात० ना० पु० किरवाली।
व्याधित० } गु० रोगी, पीड़ित, दुःखित।
व्याधी० }
व्यान० ना० पु० समस्त शरीर में व्यापक वायु, प्राणविशेष।
व्याप० ना० पु० रचाव।
व्यापक० गु० फैलाहुआ, विभु।
व्यापकता० ना० स्त्री० फैलाव, विभुता वैभव।
व्यापना० अ० क्रि० सर्वत्र फैलना।
व्यापाद० ना० पु० नास्तिकता, कुफर।
व्यापार० ना० पु० काम धंधा, चाली, धर्म लक्षण, चिह्न।
व्यापारार्थ० गु० जिसका अर्थ ब्योपार है।
व्यापी० गु० विभु, सर्वत्र फैलनेहारा।
व्याप्त० गु० जो फैलगया, सर्वगत।
व्याप्ति० ना० स्त्री० सर्वत्रगति, प्राप्ति लाभ।
व्यामोह० ना० पु० पीड़ा, दुःख।

व्यायाम० ना० पु० परिश्रम, थकाई, मल्ल-कर्म।

व्याल० ना० पु० सांप, सर्प, चीतापशु, हाथी, दिन, क्रूरमनुष्य।

व्यालदंष्ट्रक० ना० पु० गोखुरू।

व्यालपत्री० ना० स्त्री० ककड़ी।

व्याला० ना० पु० फरोखा, घुंघेरा, ना० स्त्री० सांपिन।

व्यालारि० ना० पु० गरुड़, मोर, न्योला, सिंह।

व्याली० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गु० सपेरा।

व्यावहारिक० ना० पु० मंत्री, परामर्शी।

व्यास० ना० पु० कुतर, विस्तार, फैलाव, श्रीवेदव्यास।

व्यासार्द्ध० ना० पु० आधाविस्तार।

व्यासेश्वर० ना० पु० काशीके पार रामनगर में व्यासस्थापित महादेव।

व्युत्क्रम० ना० पु० उलटाक्रम।

व्युत्पत्ति० ना० स्त्री० शास्त्रीय ज्ञान, विद्या, शब्दको भिन्न करने का ज्ञान, उत्पत्ति, दृढता, क्रियाकी।

व्युत्पन्न० ना० पु० व्युत्पत्तिमान्, विद्यावान्।

व्यूह० ना० पु० युद्धहेतु सेनाकी रचनाविशेष, सेनाका कोटविशेष, समूह, झुण्ड।

व्योम० ना० पु० आकाश, आसमान।

व्योमकेश० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

व्योमचर० ना० पु० पक्षी, देवता, सिद्ध, नक्षत्र।

व्योमासुर० ना० पु० दैत्यविशेष।

व्यौरना० सं० क्रि० सुलमाना।

व्रज० ना० पु० देशविशेष।

व्रजन्ति० क्रि० प्राप्त होताहै, पाता है।

व्रजवासी० ना० पु० व्रज के लोग।

व्रजेन्द्र० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र
व्रजेश० }

व्रत० ना० पु० पुण्यकर्मविशेष यथा तपस्या, उपवास।

व्रती० गु० जो व्रतकरे।

व्रात्य० ना० पु० वह ब्राह्मण जिसका यज्ञोपवीत नहीं भया।

व्रीड़ा० ना० स्त्री० लाज, लज्जा, हया।

व्रीहि० ना० पु० अनेक प्रकार का धान्य।

[श]

शक० ना० पु० संवत् चलानेहारा, राजा, यथा शालिवाहन, जातिविशेष, देशविशेष, संवत्, शाक।

शककर्त्ता० } ना० पु० शाका चलानेहारा,
शककारक० } यथा कलियुग में युधिष्ठिर, विक्रमादित्य, शालिवाहन, विजयाभिनन्दन, नागार्जुन, बलि।

शकट० ना० पु० छकड़ा।

शकुन० ना० पु० शुभाशुभ का सूचक चिह्न, पक्षी, सगुन, चिड़िया।

शकुनी० ना० पु० जो मनुष्य शकुनको जानता हो, पक्षी, चिड़िया, कौरवोंका मन्त्री।

शकुन्त० } ना० पु० पक्षी, चिड़िया।
शकुन्ति० }

शकुल० ना० पु० कुड़की, मत्स्यविशेष।

शक्त० गु० सामर्थी, बलवान्।

शक्राह्व० ना० पु० इन्द्रजौ।

शक्ति० ना० स्त्री० सामर्थ्य, बल, बरछी, सांग, देवताका पराक्रम जो अपनी स्त्रीरूपी ठहराया गया, माया, देवी, भगवती।

शक्तिमान्० गु० बलवान्, सामर्थी।

शक्य० गु० होनेके योग्य, करने के योग्य।

शक्यता० ना० स्त्री० होने और करनेकी योग्यता या सम्भव।

शक्र० ना० पु० इन्द्र।

शक्रधनु० } ना० पु० इन्द्रका धनुष जो
शक्रधनुष० } वर्षामें निकलता है या इन्द्रका धनुष।

शक० ना० पु० भय, डर, मुल्यसर्प।

शङ्कर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, कल्याण, गु० सङ्कर, दग, वर्णित, दुरगा जिसमें दूसरा मिलगया।

शङ्करदेव० ना० पु० श्रीशिव, शङ्कराचार्य।

शङ्करा० ना० रागिनीविशेष।

शङ्करचारी० ना० पु० शङ्कराचार्य्य का मता वलम्बी।

शङ्कराचार्य्य० ना० पु० योगेश्वरविशेष जिन्हों ने जैनमतका खण्डन किया।

शङ्कराभरण० ना० पु० रागिनीविशेष।

शङ्करी० ना० स्त्री० पार्वती।

शङ्का० ना० स्त्री० भय, डर, खटका, जानरू, जायजरूर, हुआस।

शङ्कित० गु० भयभीत, डराभया।

शङ्कु० ना० पु० दूठ, मत्स्यविशेष, बर्छी, कील विशेष।

शङ्ख० ना० पु० जलजन्तुविशेष, वा उसका घर, बड़ा घोंघा।

शङ्खचूड़० ना० पु० राक्षसविशेष।

शङ्खनाभी० } ना० स्त्री० शङ्खहोली।
शङ्खपुष्पी० }

शङ्खलिखित० ना० पु० स्मृतिविशेष।

शङ्खासुर० ना० पु० दैत्यविशेष।

शङ्खाहोली० ना० स्त्री० पौधाविशेष।

शङ्खिनी० ना० स्त्री० विशेष लक्षणयुक्त स्त्री स्त्रासविशेष जो गुदा से निकलती है।

शङ्खोद्धार० ना० पु० द्वारिकाजी और काशीजी में तीर्थविशेष।

शचान० ना० पु० बाज, शिकरा।

शटी० ना० पु० कचूर, कचूरमद।

शठ० गु० धूर्त, ठग, छलिया मूर्ख।

शठता० ना० स्त्री० धूर्तता ठगई, मूर्खता।

शण० ना० पु० सन।

शणसूत्र० ना० पु० सुतली, सनका जाल।

शण्ड० ना० पु० सांड़।

शण्डी० ना० स्त्री० साण्डिनी।

शत० ना० पु० सौ, शत, १००।

शतखण्ड० ना० पु० सौटुकड़ा।

शतघ्नी० ना० स्त्री० तोप, बड़ीभुशुण्डी।

शतद्रु० } ना० स्त्री० सतलज नदी जो पञ्जाब
शतद्रू० } में है।

शतधन्वा० ना० पु० यादवविशेष।

शतपत्र० ना० पु० सफेद कमल।

शतपदा० ना० स्त्री० सतावर, छतावर।

शतपञ्च० गु० सात पांच १२ वा ५००।

शतपर्व्विका० ना० स्त्री० दूर्वा, दूबघास।

शतवरा० ना० स्त्री० सतावर, छतावर।

शतपुष्पा० ना० स्त्री० सौंफ।

शतभिषा० ना० स्त्री० पचीसवां नक्षत्र।

शतभेदक० ना० पु० अम्लवेत।

शतमत० ना० पु० सत्यधर्म, सच्चामत।

शतमन्यु० ना० पु० इन्द्र।

शतमूली० ना० स्त्री० लताविशेष।

शतशः अव्य० सैकड़ों।

शता० ना० स्त्री० सौंफ।

शतावरि० ना० स्त्री० शतावर, छतावर।

शत्रु० ना० पु० वैरी, रिपु, दुश्मन।

शत्रुघ्न० ना० पु० सुमित्रासुत, रामचन्द्र के भाई।

शत्रुता० ना० स्त्री० वैर, दुश्मनताई।

शनक० ना० पु० विनयसार, मुनिविशेष।

शनि० ना० पु० सातवां ग्रह, शनैश्चर।

शनिवार० ना० पु० सातवांवार, शनीचर।

शनै शनै ० अव्य० हौले २, सहज २, धीरे २

शनैश्चर० ना० पु० सातवां ग्रह।

शपथ० ना० पु० किरिया सौंह, सौगन्द।

शब्द० ना० पु० ध्वनि, आवाज, शास्त्र वा सभा आदि।

शब्दग्रही० ना० पु० कान, श्रवण।

शम० ना० पु० बाह्य इन्द्रियों का निग्रह अर्थात् त्याग।

शमन० ना० पु० शान्ति, बलिदान, यमराज, कपालों औषधि।

शमी० ना० स्त्री० वृक्षविशेष, फली, छीमी।

शम्याक० ना० पु० किरवाली।

शम्बुक० } ना० पु० कौड़ी, घोंघा, सीपी,
शम्बूक० } शंख।

शम्भु० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

शयन० ना० पु० सोना, नींद, लेटना, बिछौना।

शय्या० ना० स्त्री० जिसपर शयन करते हैं।

शर० ना० पु० बाण, तीर, सरकंडा, जीति, तालाव, गणित में ५।

शरजन्मा० ना० पु० स्वामिकार्तिक।

शरट० ना० पु० गिरगिट, कृकलास।

शरण० ना० पु० घर, जो रक्षाकरै, आश्रय, पनाह।

शरणागत० गु० आश्रित, जो शरणचाहै, जो पनाह मांगै।

शरण्य० ना० पु० शरण, गु० शरणके योग्य।

शरत्० स्त्री० } ऋतुविशेष जिसमें क्वार
शरत्काल० पु० } कार्तिक हैं सामन्य शीतकाल।

शरत्पुष्प० ना० पु० दुपहरीफूल वा उसका वृक्ष।

शरद्० स्त्री० }
शरदृतु० स्त्री० }
शरत्काल० पु० } शरत्काल।
शरदृतु० स्त्री० }

शरपुंखा० ना० पु० शरफोंका पौधाविशेष।

शराटा० ना० पु० शब्द, निनाद, ध्वनि।

शराभ्यास० ना० पु० निशाना, वा चिह्न जिसे बाणादि से बेधते हैं अर्थात् बाणमारना सीखते हैं।

शराव० ना० पु० सकोरा।

शरावती० ना० स्त्री० नदीविशेष।

शरावलि० ना० स्त्री० बाणों की पंक्ति, तीरों का समूह।

शरासन० ना० पु० धनुष, कमान।

शरासुर० ना० पु० बाणासुर।

शरीर० ना० पु० देह, तन।

शरीरी० गु० देही, प्राणी।

शरव्य० ना० पु० बाणोंसे, तीरोंसे, बाणकरके।

शर्करा० ना० स्त्री० खांड़।

शर्मा० ना० पु० ब्राह्मणके नामका उपपद।

शर्वरी० ना० स्त्री० रात।

शलभ० ना० पु० टिड्डी।

शलाका० ना० स्त्री० सलाई, चंदनलेपठी, रूलर।

शलादिली० ना० स्त्री० कुटकी।

शलीत० ना० पु० थैला, बोरा।

शल्य० ना० पु० राजाविशेष, कांटा, बाण, वैद्य क्रियाका एक अंग।

शल्यक० ना० पु० मैनफल।

शव० ना० पु० लाश, लोथ, मृतक।

शवर० ना० पु० भील।

शवरी० ना० स्त्री० भीलनविशेष, भीलनी, भीकुवारि।

शष्प० ना० स्त्री० दूबआदि नवीन घास (शष्पं बालतृणं घास, इत्यमरः)।

शश० }
शशक० } ना० पु० शशा, चौगड़ा।
शशा० }

शशांक० } ना० पु० चन्द्रमा।
शशि० }

शशिवर्ण० गु० श्वेत, चन्द्ररूप, सफेद।

शशिरस० ना० पु० अमृत, पीयूष।

शस्त्र० ना० पु० हथियार जो बिनाफेंके मारते हैं, यथा खड्गादि।

शस्त्रमय० ना० पु० लोहा।

शस्त्री० हथियारबन्द, शस्त्रधारी।

शाक० ना० पु० साग, भाजी, पृथ्वी के सात द्वीपोंमें से एकका नाम।

शाकटुमुखी० ना० स्त्री० भाई औषधि।

शाकबीज० ना० पु० बथुआ।

शाकम्भरी० ना० पु० दुर्गादेवी, नगरविशेष।

शाकल० } ना० पु० तिल जौ चावल घी खांड़ आदि की मिलौनी जो होमते हैं।
शाकल्य० }

शाकवणिक्० ना० पु० मुराऊ, कबड़िया।

शाकश्रेष्ठ० ना० पु० सैजीमनी।

शाका० ना० पु० शक।

शाकिनी० ना० स्त्री० देवीविशेष जो दुर्गा की सहचरी है।

शाक्त० ना० पु० शक्तिका उपासक, देवीपूजक।

शाक्ती० ना० पु० शाक्त, भगवतीकाउपासिका।

शाख० ना० स्त्री० डाली, कुँपकी।

शाखा० ना० स्त्री० डाली, कुँपकी, भेद, तर्क, बहुविचार।

शाखामृग० ना० पु० वानर, बन्दर।

शाखाविलासी० ना० पु० वानर, बन्दर।

शाखाशन० ना० पु० ऊंट।

शाखी० ना० स्त्री० वृक्ष, शाखी।

शांकरी० ना० स्त्री० पार्वती, शांकरी।

शाटिका० } ना० स्त्री० सारी, स्त्रियों के पहरने का वस्त्रविशेष।
शाटी० }

शाठ्य० ना० पु० शठता, ठगई।

शाण० ना० पु० सखसान, जिसपर हथियार, चाकू आदि तेज करते हैं।

शाण्डिल्य० ना० पु० बिल्व, बेल, मुनिविशेष।

शातकुम्भ० ना० पु० सुवर्ण, सोना।

शातातप० ना० पु० धर्मशास्त्र का प्रवर्तक मुनि।

शानपाकी० ना० पु० तिरहटी।

शान्त० गु० स्थिर, मुनि, ठंढा, मृत।

शान्ति० ना० स्त्री० स्थिरता, कल, बड़ाई, सुहृत्, निर्वाह आदि में प्रसिद्ध कर्म।

शाप० ना० पु० सराप, धिक्कार, बद्दुआ।

शाब्दिक० गु० शब्दज्ञाता, व्याकरणी।

शारद० ना० स्त्री० सरस्वती, शारदा, सर्दी।

शारदा० ना० स्त्री० सरस्वती, भैंवरी।

शारदी० गु० जो शरद में उत्पन्न हो।

शार्दूल० ना० पु० शेर, सिंह, कोई कोई मनुष्य कहते हैं कि एक पक्षी होता है जो हाथी को पंजे में दाब लेजाता है।

शाल० ना० पु० शालवृक्ष, चिरौंजी, कोट, मत्स्यविशेष, भेद, शृगाल, शोभा, ऊर्णवस्त्रविशेष, धन।

शालक० गु० दुःखद, छेदनेहारा, ना० पु० शाला।

शालपर्णी० ना० स्त्री० औषधिविशेष।

शाला० ना० स्त्री० स्थान, घर।

शालि० ना० पु० हेमन्तऋतु के धान।

शालिनी० ना० स्त्री० छन्दविशेष, छेदनेहारी, दुःखद।

शालिवाहन० ना० पु० राजाविशेष, शाकाप्रचारक।

शाली० ना० पु० शालि, पूर्णकी बहुत, गुणी, छेदी, वान, वन्त, युक्त, स्वामी।

शालीना० } ना० स्त्री० सोयाका साग।
शालिशृता० }

शालूर० ना० पु० मेंडक (भेके मण्डूकवर्षाभू शालूरप्लवदर्दुराः, इत्यमरः)।

शाल्मल० ना० पु० द्वीपविशेष जो पृथ्वी के सात द्वीपमें से है।

शाल्मलि० } ना० पु० सेमरवृक्ष।
शाल्मली० }

शासन० ना० पु० } आज्ञा, इस्तरारनामा, ग्रन्थ, विदेन, ताड़ना।
शासना० ना० स्त्री० }

शासनीय० गु० आज्ञाके योग्य, ताड़नीय।

शास्ति० ना० स्त्री० आज्ञा, राज्य।

शास्त्र० ना० पु० आज्ञा, हिन्दूलोगों के मतमें आकाशीय पुस्तकविशेष, यथा वेदादिविद्या की पुस्तकें।

शास्त्रविहित० गु० शास्त्रकी विधिसे, जो शास्त्र
वा है।
शास्त्रज्ञ० ना० पु० जो शास्त्र को जानता है।
शास्त्रार्थ० ना० पु० सुवाद, चर्चा, बहस।
शास्त्री० गु० शास्त्रज्ञ, धर्मज्ञ।
शास्त्रीय० गु० शास्त्रसम्बन्धी, जो शास्त्र का है।
शास्य० गु० शासन के योग्य।
शिंशपा० ना० स्त्री० वृक्षविशेष, शीशमवृक्ष।
शिखण्डिज० ना० पु० बृहस्पति।
शिखण्डिनी० ना० स्त्री० जूही।
शिखण्डी० ना० पु० मयूर, मोर, राजा द्रुपद
का पुत्र।
शिखर० ना० पु० पर्वतकी धारका चोटी, शृङ्ग,
लौंग।
शिखरी० ना० पु० पर्वत, किला।
शिखा० ना० स्त्री० चोटी, टपक्का।
शिखाचूड़० ना० पु० केशपाश, जटाजूट।
शिखि० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि।
शिखिवाला० ना० स्त्री० मयूर, मोर।
शिखिवाहन० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
शिखी० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि, गु०
पनला।
शिग्रु० ना० पु० सहिजना वृक्ष।
शिथिल० गु० ढीला, थका, सुस्त, मन्द,
मद।
शिथिलता० ना० स्त्री० ढीलापन, थकन, थकान,
सुस्ती, मादगी।
शिम्बि० } ना० स्त्री० सेम तरकारी।
शिम्बिका० }
शिर० ना० पु० सिर, मस्तक, मूँड़।
शिरा० ना० स्त्री० धोर्मी, नस, नाड़ी जिसके
द्वारा रुधिर सारे शरीर में फिरता है।
शिरीष० ना० पु० वृक्ष विशेष, सिरसावृक्ष।
शिरोधी० ना० स्त्री० गला, गर्दन।
शिरोमणि० ना० पु० मणिजटित, माथे का आभूषण
विशेष, गु० सर्दार, श्रेष्ठ, उत्तम।

शिल० } ना० स्त्री० चट्टान, पत्थरकी चट्टान
शिला० }
शिलागोली० ना० स्त्री० मनशिल।
शिलाजीत० } ना० पु० शिलाजीत, शिला-
शिलाजित० } का रस।
शिलाह्व० ना० पु० शिलाजीत।
शिलायन्त्र० ना० पु० पत्थरका छापा।
शिल्प० ना० पु० चित्रादिकर्म, कारीगरी, थवई
का काम।
शिल्पकार० }
शिल्पी० } ना० पु० थवई, राज, मेमार।
शिल्पीकार० }
शिव० ना० पु० शुभ, कल्याण, ललित, आँवला,
मूआवला, गादड़, श्रीमहादेवजी।
शिवगिरि० ना० पु० कैलासपर्वत।
शिवरात्रि० ना० स्त्री० फागुन कृष्ण चतुर्दशी
का शिवजीकी दिवाली व्रत।
शिववाहन० ना० पु० नन्दीगण।
शिवशैल० ना० पु० कैलास पर्वत।
शिवसुत० ना० पु० श्री गणेशजी, स्वामिकार्त्तिक।
शिवसुतवाहन० ना० पु० मूषक, मयूर।
शिवा० ना० स्त्री० श्रीपार्वतीजी, हड़, शृगाली
स्त्री, सायंका शाक।
शिवालय० } ना० पु० शिवाला, मन्दिर
शिवाला० } वा मठ।
शिवि० ना० पु० राजाविशेष जो अयोध्यामें था।
शिविका० ना० स्त्री० पालकी।
शिवेश० ना० पु० सदाशिवजी, शृगाल।
शिशिर० ना० पु० जाड़ा, पाला, हेमन्त, ऋतु
विशेष जो माघ फागुन में होती है।
शिशु० ना० पु० बालक, बच्चा।
शिशुता० ना० स्त्री० } बालपन, लड़कपन।
शिशुत्व० ना० पु० }
शिशुपाल० ना० पु० राजा विशेष जिसको

पाण्डव के पक्ष में श्रीकृष्णचन्द्रजी ने वध किया था।

शिशुमार० ना० पु० मगरमच्छ।

शिष० ना० पु० शिक्षा, उपदेश, सीख, मन्त्र।

शिष्ट० गु० आधीन, आज्ञाकारी, जो आज्ञानुगई, उत्तम, श्रेष्ठ।

शिष्टता० ना० स्त्री० आधीनता, उत्तमता।

शिष्टाचार० ना० पु० आदर, सत्कार, सम्मान, मिलनसारी, बड़ाई देना।

शिष्टाचारी० गु० सम्मानी, जो शिष्टाचार करे।

शिष्य० ना० पु० चेला, मतावलम्बी, सीखने हारा।

शिक्षक० ना० पु० गुरु, अध्यापक, उपदेशक।

शिक्षा० ना० स्त्री० सीख, उपदेश, मन्त्र।

शिक्षित० गु० जो सिखाया वा पढ़ायागया, जो उपदेश कियागया।

शीकर० ना० पु० झींसी, फुहार।

शीघ्र० अव्य० तुरन्त, द्रुत, उतावल, जल्द।

शीघ्रग० ना० पु० खच्चर, गधा।

शीघ्रगामी० गु० शीघ्र, चलनेहारा।

शीघ्रता० ना० स्त्री० वेगताई, उतावली, सितावी।

शीत० ना० पु० हिम, जाड़ा, ठंढ, पाला, पीलू का वृक्ष।

शीतकटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी के २३½ अंश उत्तर और २३½ अंश दक्षिण का भूमिखण्ड।

शीतकर० ना० पु० चन्द्रमा।

शीतकाल० ना० पु० जाड़े के दिन, हेमन्त।

शीतज्वर० ना० पु० तपलर्जर, विषमज्वर के विपरीत अर्थात् जाड़ा।

शीतभीरु० ना० पु० सम्भलु।

शीतरज० ना० पु० कपूर।

शीतल० गु० ठंढा।

शीतलता० ना० स्त्री० ठंढ, ठंढाई।

शीतांशु० ना० पु० चन्द्रमा, कपूर।

शीतांग० ना० पु० अर्थात् रोगविशेष।

शीतांशिका० ना० स्त्री० तेजवली औषधि।

शीतार्त्त० गु० जो ठठर गया, जो जाड़े से कांपे।

शीतोष्ण० गु० सर्द गरम।

शीर्ण० गु० पतला, क्षीण।

शीर्ष० ना० पु० मस्तक, सिर, चोटी, ऊपर।

शीर्षकोण० ना० पु० ऊपर का कोना।

शीर्षिणी० ना० स्त्री० केशपाश, बालोंकी बेणी।

शील० ना० पु० स्वभाव, सुभाव, सुरत्वृत।

शीलवान्० ना० गु० सुशील, मिलनसार, नम्र।

शीश० ना० पु० सिर, मूड़।

शीशम० ना० पु० वृक्षविशेष।

शुक० ना० पु० तोता, सूआ।

शुकच्छद० ना० पु० थुनेरा।

शुकदेव ना० पु० शुकाचार्य्य, भागवतवक्ता।

शुकप्रिय० ना० पु० अनार।

शुकवर्ण० ना० पु० थुनेरा।

शुकाचार्य्य० ना० पु० मुनिविशेष, व्यासपुत्र।

शुक्त० ना० पु० अम्लवेत।

शुक्तचण्डिका० ना० स्त्री० इमिली वृक्ष।

शुक्ति० ना० स्त्री० सीपी।

शुक्तिज० ना० पु० मोती।

शुक्र० ना० पु० अग्नाग्र, वीर्य्य, अग्नि, ज्येष्ठमास, शुक्रवार, दैत्योंका गुरु।

शुक्रदारु० ना० पु० देवदारु।

शुक्रमाता० ना० स्त्री० काव्या।

शुक्रवार० ना० पु० शुक्रवार।

शुक्ल० गु० श्वेतवर्ण, मत्स्यों में उत्पन्न, विशेष, ना० पु० कुन्द, सफेद जीरा।

शुक्ल० ना० पु० उजेलापाख।

…विहित० गु० शास्त्रकी विधिसे, जो शास्त्र …है।

…० ना० पु० जो शास्त्र को जानताहै।

…र्थ० ना० पु० संवाद, चर्चा, बहस।

…० गु० शास्त्रज्ञ, धर्मज्ञ।

…य० गु० शास्त्रसम्बन्धी, जो शास्त्रका है।

…० गु० शासन के योग्य।

…ा० ना० स्त्री० वृक्षविशेष, शीशमवृक्ष।

…खेडज० ना० पु० वृहस्पति।

…खेडनी० ना० स्त्री० जुही।

…खण्डी० ना० पु० मयूर, मोर, राजा द्रुपद …पुत्र।

…र० ना० पु० पर्वतकी धारवा चोटी, शृङ्ग…ग।

…री० ना० पु० पर्वत, कँगूरा।

…० ना० स्त्री० चोटी, टप, फन।

…चूड० ना० पु० केशपाश, जटाजूट।

…० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि।

…वाला० ना० स्त्री० मयूर, मोर।

…वाहन० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।

…० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि, गु० …सा।

…० ना० पु० सहिंजन वृक्ष।

…थल० गु० ढीला, थका, सुस्त, …न्द।

…थलता० ना० स्त्री० ढीलापन, थकन, सुस्ती, मांदगी।

…म्बः० }
…म्बिका० } ना० स्त्री० सेम तरकारी।

…० ना० पु० सिर, मस्तक, मूंड।

…० ना० स्त्री० योनी, नस, नाड़ी, जिसके …रा रुधिर सारे शरीरमें फिरताहै।

…प० ना० पु० वृक्षविशेष, सिरसावृक्ष।

…धी० ना० स्त्री० गला, गर्दन।

…मणि० ना० पु० शिरोमणि, माथे का भूषण, …रेष्ठ, गु० सर्दार, श्रेष्ठ, उत्तम।

शिल० }
शिला० } ना० स्त्री० चट्टान, पत्थरकी चट्टान।

शिलागोली० ना० स्त्री० मनसिल।

शिलाजीत० }
शिलाजित० } ना० पु० शिलाजीत।

शिलाह्न० ना० पु० शिलाजीत।

शिलायन्त्र० ना० पु० पत्थरका छापा।

शिल्प० ना० पु० चित्रादिकर्म, कारीगरी, बढ़ई का काम।

शिल्पकार० }
शिल्पी० }
शिल्पीकर० } ना० पु० बढ़ई, राज, मेमार।

शिव० ना० पु० शुभ, कल्याण, ललित, आंवला, भूयांवला, गीदड़, श्रीमहादेवजी।

शिवगिरि० ना० पु० कैलासपर्वत।

शिवरात्रि० ना० स्त्री० फागुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवजन्म दिनकी व्रत।

शिववाहन० ना० पु० नन्दीगण।

शिवशैल० ना० पु० कैलास पर्वत।

शिवसुत० ना० पु० श्री गणेशजी, स्वामिकार्त्तिक।

शिवसुतवाहन० ना० पु० मूषक, मयूर।

शिवा० ना० स्त्री० श्रीपार्वतीजी, हड़, शृगालकी स्त्री, सांयावा शाक।

शिवालय० }
शिवाला० } ना० पु० शिवजीका मन्दिर वा मठ।

शिवि० ना० पु० राजाविशेष जो अयोध्यामें था।

शिविका० ना० स्त्री० पालकी।

शिवेश० ना० पु० सदाशिवजी, शृगाल।

शिशिर० ना० पु० जाड़ा, पाला, हेमन्त, ऋतुविशेष जो माघ फागुन में होती है।

शिशु० ना० पु० बालक, बच्चा।

शिशुता० ना० स्त्री० }
शिशुत्व० ना० पु० } बालपन, लड़काई।

शिशुपाल० ना० पु० राजा विशेष, जिसको

शृंग० ना० पु० सींग, शिखर, पहाड़ की चोटी।
शृंगनाम्नी० ना० स्त्री० ककरासिंगी।
शृंगबेर० ना० पु० सोंठ, अदरक।
शृंगाट० ना० पु० सिंघाड़ा।
शृंगार० ना० पु० प्रथम रस, सोलह प्रकार का सिंगार, संवार, सजधज।
शृंगारित० गु० संवारीहुई, संवारायुत।
शृंगिका० ना० स्त्री० मेढासिंगी।
शृंगी० ना० पु० जिस पशुके सींगहों, ककरासिंगी, भैंसा, पर्वतमुनिविशेष।
शृणु० क्रि० सुनो।
शेखर० ना० पु० शिरमें बांधने की फूलों की माला, मस्तकाभरण, शिर।
शेफालिका० ना० स्त्री० हरसिंगार।
शेल० ना० पु० अस्त्र विशेष।
शेली० ना० स्त्री० सांग, बालों की लट।
शेलु० ना० पु० मेथी।
शेलमुख० ना० पु० विल्व, बेल।
शेश० ना० पु० सर्पोंकाराजा, धरणीधर।
शेष० ना० पु० अवशिष्ट, समाप्ति, बाकी, नागराजविशेष, जिसके सहस्र शिर हैं, जिनपर विष्णुनारायण सोते हैं, थोड़ा।
शेषावस्था० ना० स्त्री० वृद्धावस्था, बाकी उमर।
शैखरिक० ना० पु० ऊंगा।
शैत्य० गु० ठंढा।
शैथिल्य० ना० पु० शिथिलता।
शैल० ना० पु० पर्वत, पहाड़।
शैलराज० ना० पु० हिमाचल, पर्वत का राजा।
शैली० ना० स्त्री० रीति, वार्तिक, गुरुपरंपरा।
शैव० ना० पु० शिवका उपासक।
शैवाल० ना० पु० जलका पौधाविशेष, सिवाल।
शैवी० ना० पु० शैव।
शैशव० ना० पु० शिशुता, बालकपन, लड़काई।
शोक० ना० पु० दुःख, क्लेश, सन्ताप, विलाप।
शोकार्णव० ना० पु० दुःखका सागर, महा दुःख।
शोकार्त्त० गु० शोकयुक्त, शोकसे व्याकुल।
शोच० ना० पु० चिन्ता, फिकर, सन्देह।
शोचन० ना० पु० विचारना, मनमें सन्देह, चिन्तन।
शोचना० प० क्रि० विचारना, सन्देहकरना, फिक्रकरना, पश्चात्ताप करना।
शोचनीय० गु० जो शोचने के योग्य है।
शोण० ना० पु० पुष्पविशेष, लालरंग, लाल, मगधदेशका नद।
शोणभद्र० ना० पु० मगधदेश में नदविशेष।
शोणित० ना० पु० रुधिर, लोहू, केसर।
शोथ० ना० पु० सूजन, फुलाव।
शोध० ना० पु० ऋणका भरदेना, पता, खबर, तलाश।
शोधन० ना० पु० दोषका निराकरना अर्थात् शुद्ध करना।
शोधित० गु० जो खोजागया था, ढूंढागया, शुद्ध कियागया।
शोध्य० गु० जो शोधने के योग्य।
शोभन० गु० मनोरम, मनोहर, सुन्दर।
शोभा० ना० स्त्री० सुन्दरता, शृंगार, चमक, कान्ति।
शोभायमान० } गु० विभूषित, चमकीला, भड़कीला।
शोभित० }
शोला० ना० पु० वृक्षविशेष।
शोषक० गु० सूखनेहारा, सुखानेवाला, घटानेहारा।
शोषण० ना० पु० सुखाना, सुखाव, घटाना।
शौच० ना० पु० स्नान, स्नानादि कर्त्तव्यकर्म।
शौचकर्म० ना० पु० स्नानादि, शुचि क्रिया।

शौनक० ना० पु० मुनिविशेष।
शौरि० ना० पु० भगवान, शनैश्चर।
शौरिप्रिय० ना० पु० विजयसार।
शौर्य्य० ना० पु० समीपन, बहादुरी।
श्मशान० ना० पु० मरघट, मृतक जलाने की स्थानविशेष।
श्याम० ना० पु० कोकिला, काम्बोज से पश्चिम देशविशेष, श्रीकृष्णचन्द्रजी, कालावर्ण।
श्यामकर्ण० ना० पु० वह घोड़ा जिसका एक कान श्याम और केश पीत और सर्वशरीर श्वेतवर्ण होवे।
श्यामल० गु० कालावर्णविशेष, गु० पीपरी।
श्यामली० ना० स्त्री० काली, नीली।
श्यामसुन्दर० ना० पु० श्रीकृष्णजी।
श्यामा० ना० स्त्री० श्यामरंग का पक्षी, पांडर, पीपली, श्यामकी, इन्दरसी, अरमली, प्रिय गु० रात, भीति, कालिकादेवी।
श्यामाक० ना० पु० सामाधान्य।
श्यालक० } ना० पु० साला, पत्नी का भाई।
श्याला० }
श्येन० ना० पु० पक्षीविशेष, बाज़।
श्रद्धान० गु० श्रद्धायुक्त।
श्रद्धा० ना० स्त्री० आदर, इच्छा, विश्वास, प्रीति, शुभेच्छा।
श्रद्धालु० गु० श्रद्धासंयुक्त।
श्रम० ना० पु० थकाई, दौड़धूप, उद्यमकष्ट।
श्रमबुन्द० ना० पु० श्रम करने में जो पसीना।
श्रमित० गु० थका, मांदा।
श्रमी० गु० श्रमकरनेहारा, उद्यमी।
श्रव० ना० पु० कान, बहना, चलना।
श्रवण० ना० पु० कान, सुनना और बाईसवां नक्षत्र।
श्रवणशीर्षका० ना० स्त्री० म्योंडी, मुण्डी।
श्रवणा० ना० स्त्री० बाईसवीं नक्षत्र।
श्रवणीय० गु० जो सुनने के योग्य है।
श्रवत० क्रि० चूवत, बहत।

श्रवती० ना० स्त्री० नदी।
श्राचुक० ना० पु० अर्जुन।
श्राद्ध० ना० पु० पितरों को शास्त्र रीति सपिण्ड दान देना, यज्ञ।
श्राद्धदेव० ना० पु० धर्मराज, यमराज।
श्राद्धपक्ष० ना० पु० कनागत, आश्विन कृष्णा।
श्रान्त० गु० सुखित, जो थक गया, श्रमित।
श्रान्ति० ना० स्त्री० श्रम, परिश्रम।
श्राप० ना० पु० शाप, आशीर्वाद से विपरीत, बददुआ।
श्रापित० गु० शापित, शाप दियागया।
श्रावक० ना० पु० जातिविशेष जो नास्तिकों अर्थात् जैनियों के चेले हैं, नास्तिक।
श्रावण० ना० पु० सावन, चौथा महीना।
श्री० ना० स्त्री० संपत्ति, शोभा, सुन्दरता, लक्ष्मी, शब्द के पहले बड़ाईका बोधक।
श्रीकण्ठ० ना० पु० सदाशिव।
श्रीकान्त० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण।
श्रीखण्ड० ना० पु० चन्दन।
श्रीगेह० ना० पु० श्वेतकमल, शोभाका घर, लक्ष्मी का घर, खजाना।
श्रीदामा० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक सखा।
श्रीपति० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण।
श्रीपर्णी० ना० स्त्री० कम्भारी।
श्रीपुष्प० ना० पु० लौंग, लवंग।
श्रीफल० ना० पु० नारियल, बेल, आंवला।
श्रीमत्० गु० भाग्यवान्, धनी, शोभा संयुक्त, धनाढ्य, दौलतवर।
श्रीधर० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण।
श्रीधराचार्य० ना० पु० आचार्यविशेष जिन्हों ने श्रीमद्भागवत का तिलक किया।
श्रीनगर० ना० पु० बद्रीनाथ के मार्ग में पर्वत पर नगरविशेष, कश्मीर में नगरविशेष।
श्रीमन्त० } गु० भाग्यवान्, धनी, शोभायुक्त, धनाढ्य, दौलतवर।
श्रीमान्० }

श्रीयुक्त० } गु० यशवन्त, सम्पत्ती, धनी,
श्रीयुत० } भाग्यवान्, नामी।

श्रीरंग० ना० पु० श्रीनारायण, विष्णुजी।

श्रीरंगपट्टन० ना० पु० महीशूर अर्थात् मैसूर देश की राजधानी।

श्रीराग० ना० पु० रागविशेष, तीसरा राग।

श्रीवणा० } ना० स्त्री० मेथी, मुण्डीरीया।
श्रीवर्णी० }

श्रीवत्स० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण, लक्ष्मी का हृदय में वास।

श्रीहट्ट० ना० पु० सिलहट नगरविशेष जो ढाका के पूर्व है।

श्रीहिंडोल० ना० पु० रागविशेष।

श्रुत० गु० जो सुना गया।

श्रुति० ना० पु० वेद, कर्ण, ज्ञान, समाचार, ना० स्त्री० सुनाहट।

श्रुतिमणि० ना० पु० कुण्डल, कर्णफूल।

श्रुतियुक्ति० ना० स्त्री० वेद की विधि, शास्त्रोक्त।

श्रुतीदग० ना० पु० पीलुवृत।

श्रेणी० ना० स्त्री० पंक्ति, लकीर, कतार, समूह, युक्ति।

श्रेय० ना० पु० कल्याण, कीर्त्ति।

श्रेयसी० ना० स्त्री० हड़, गजपीपर, रासना।

श्रेष्ठ० गु० उत्तम, अच्छा, सबसे भला, प्रधान।

श्रेष्ठता० ना० स्त्री० उत्तमता, प्रधानता, भलाई।

श्रोण० ना० पु० रुधिर, रक्त, लोहू, खून।

श्रोणतिलका० ना० स्त्री० कश्यप की पत्नी।

श्रोणि० ना० स्त्री० कटि, कमर।

श्रोणित० ना० पु० रुधिर, रक्त, लहू।

श्रोत० ना० पु० कान, कर्ण, नदी की धारा, झरना, सोता।

श्रोतव्य० गु० जो सुनने के योग्य।

श्रोतस्वती० ना० स्त्री० नदी।

श्रोता० ना० स्त्री० नदी गु० सुननेहारा।

श्रोत्र० ना० पु० कान, रोमरन्ध्र, सुननेहारा।

श्लाघनीय० गु० बड़ाई के योग्य, मर्य्यादिक।

श्लाघा० ना० स्त्री० स्तुति, मर्य्यादा, विनती।

श्लाघ्य० ना० पु० श्लाघनीय।

श्लीपद० ना० पु० शरभ, पीलपाया।

श्लेष० ना० पु० जिसपद के दो अर्थ वा अधिक हों।

श्लेषा० ना० स्त्री० नवां नक्षत्र, अश्लेषा।

श्लेष्मा० ना० स्त्री० कफ, नाकटपकना, जुकाम।

श्लोक० ना० पु० पद्य, छन्द।

श्वशुर० ना० पु० पत्नी वा पति का पिता, ससुर।

श्वश्रू० ना० स्त्री० सास, पत्नी वा पति की माता।

श्वसन० ना० पु० पवन, वायु, यथा (प्रचेताः वरुणःपाशी यादसांपतिरप्पतिः। श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वासदागतिः॥ इत्यमरः)।

श्वसनक० ना० पु० दमा रोग।

श्वान० ना० पु० कुत्ता।

श्वास० ना० पु० मायवायु, दम।

श्वेत० गु० शुक्ल, धौला, सफेद।

श्वेतता० ना० स्त्री० शुक्लता, उज्ज्वलता, सफेदी।

श्वेतदंडी० ना० स्त्री० दूब, घास।

श्वेतपुष्पा० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी, कनैर वृक्ष।

श्वेतफला० आहूरर।

श्वेतमूली० ना० स्त्री० पुनर्नवा।

श्वेतराजी० ना० स्त्री० पचैड़ा तरकारी।

श्वेतसर्षप० ना० पु० सफेद सरसों।

श्वेता० ना० स्त्री० दूब घास।

श्वेतिका० ना० स्त्री० सौंफ।

[ष]

षट्० ना० गु० छः ६।

षट्कोण० ना० पु० इन्द्र का वज्र, छः कोनेका।

षट्चक्र० ना० पु० छः चक्र अर्थात् आधार, स्वा-

षिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, अज्ञा।
षट्पद० ना० पु० भौंरा, मधुमाखी, छन्द-विशेष।
षट्पदी० ना० स्त्री० भ्रमरी।
षट्शास्त्र० ना० पु० छः शास्त्र अर्थात् न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, पातंजल, सांख्य, वेदान्त।
षड्ग्रन्थि० ना० स्त्री० पीपरामूल।
षड्ऋतु० ना० पु० छः ऋतु अर्थात् वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर।
षड्ऊर्मी० ना० स्त्री० छः ऊर्मी अर्थात् शीत, उष्ण, दुःख, सुख, मान, अपमान।
षड्लोक० ना० पु० छः लोक अर्थात् भू, अन्तरिक्ष, स्वर्ग, पितृ, सूर्य, ब्रह्मलोक।
षड्गुण० ना० पु० छः गुण अर्थात् निर्भेद, निर्मात्सर्य, निर्मोह, निर्लोभ, निष्क्रोध, निष्काम।
षड्रस० ना० पु० छः रस अर्थात् कड़ुआ, खट्टा, मीठा, चर्परा, कसैला, खारा।
षड्ग्रन्था० ना० स्त्री० कचूर भेद।
षड्राग० ना० पु० छः राग अर्थात् मेघ, भैरव, मलार, दीपक, श्रीहिंडोल, मालकोश और झगड़ा बखेड़ा।
षड्वदन० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।
षड्विकार० ना० पु० छः विकार अर्थात् उत्पत्ति, शरीरवृद्धि, बालकता, प्रौढ़ता, वृद्धता, मृत्यु।
षडङ्ग० ना० पु० शरीर के छः अंग अर्थात् हाथ, पांव, कटि, शिर, वेदके छः अंग अर्थात् ज्योतिष, व्याकरणादि, गोखुरू।
षड्भुजा० ना० स्त्री० बच औषधि।
षण्नेत्रिका० ना० स्त्री० करपर्णी पर्णी।
षड्विंशति० गु० छब्बीस, २६।
षड्विंशतितम० गु० छब्बीसवां।
षड्विधि० ना० स्त्री० छः प्रकार।
षडङ्गवेद० ना० पु० वेदके छः अंग अर्थात् शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्ति, ज्योतिष, छन्दःप्रबन्ध।
षडङ्गसमाधि० ना० स्त्री० समाधि के छः अंग अर्थात् शम, दम, उपराम, विषय, सुख, दुःख, समान, वेद आचार्य का आज्ञाकारी होना, एकाग्रचित्त।
षडानन० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।
षण्ढ० ना० पु० नपुंसक।
षण्मास० ना० पु० छः मास।
षण्मुख० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।
षष्ठ० गु० छः, ६, छठवां।
षष्टि० गु० साठ, ६०।
षष्ठी० ना० स्त्री० दुर्गाजी, छठी तिथि, कारक।
षष्ठ्यन्त० गु० जिसके अन्त में षष्ठीका प्रत्यय है।
षोडश० गु० सोलह, १६।
षोडशचन्द्रकला० ना० स्त्री० चन्द्रमा की १६ कला अर्थात् अमृता, मानदा, पूषा, पुष्टि, तुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, जोत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूरणा, पूर्ण अमृता १६।
षोडशविधपूजा० ना० स्त्री० सोलह प्रकार से पूजा अर्थात् आवाहन, स्थापन, पाद्य, सिंहासन, अर्घ, आचमन, स्नान, चन्दन, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा, नमस्कार, आरती १६।
षोडशशृङ्गार० ना० पु० सोलह शृङ्गार अर्थात् शुचि, स्नान, निर्मलपट, महावर, वेणीबंधन, मांगसिन्दूर, भालखौरि, तिलकपोल, केसरमर्दन, मेहँदीरंग, कुसुमाभरण, छुद्रघंटिका, लवंगादि आभरण, दांतोंमें मिस्सी, ताम्बूल, आंखों में सुरमा १६।
षोडशी० ना० स्त्री० मृतकका कर्म विशेष।

[स]

स० अव्य० जिसशब्द के आदि में इसका

प्रयोग होने उसका अर्थ सहित, समान, से होता है।

संई० ना० स्त्री० नदी विशेष।

सं० अव्य० सम, सहित, से।

संक्रन्दन० ना० पु० शक्र, इन्द्र।

संयम० ना० पु० योगादि नियम, बांधन, परहेज।

संयमनी० ना० स्त्री० यमपुरी।

संयमनीपति० ना० पु० यमराज।

संयमी० गु० नियमी, मध्यम।

संयुक्त० गु० मिलाहुआ, संलग्न, लगा, जुड़ा।

संयुग० ना० पु० युद्ध, समर, रण, संग्राम।

संयुत० गु० संयुक्त।

संयोग० ना० पु० मिलान, अथवा मेल, संगत, देवागत इत्तिफाक।

संयोगी० ना० पु० मिलित, मिलनसार, संगी।

संरक्त० गु० अरुण, लालरंग।

संरंभ० ना० पु० कोप, क्रोध, अहङ्कार।

संलग्न० गु० संयुक्त, संगत।

संलग्नी० गु० मिलित, लगाहुआ, संगी, संयोगी।

संलाप० ना० पु० परस्पर बातचीत।

संवत० ना० पु० वर्ष, शाका, साल, सन्।

संवत्सर० ना० पु० वर्ष, साल।

संवत्सरी० ना० पु० वर्षका व्यवहार।

संवरण० ना० पु० आवरण, आच्छादन।

संवरना० अ० क्रि० सजना, शोभित होना, बनना।

संवर्त्त० ना० पु० स्मृति ग्रन्थविशेष।

संवर्त्तक० ना० पु० बेड़ा।

संवल० ना० पु० दैत्यविशेष, जाना मार्गका।

संबलारि० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।

संवह० ना० पु० मुख्यपवन।

संवाद० ना० पु० बातचीत, प्रश्नोत्तर, चर्चा।

संबाधा० ना० स्त्री० विपत्ति, क्लेश, आपत्ति।

संवार० ना० स्त्री० सजाव, बनाव, शोभा।

संवारना० स० क्रि० सजाना, बनाना, शृङ्गार करना।

संशय० ना० पु० चिन्ता, सन्देह, भय।

संशयापन्न० गु० सन्देही, चिन्तायुक्त, भयभीत।

संसक्त० गु० समीप, मिला, युक्त।

संसर्ग० ना० पु० संगति, भेद, दर्शन, मेल, पड़ोस, समीप।

संसर्गी० गु० मिलनसार, विहारी, पड़ोसी, संगती।

संसया० ना० स्त्री० शर्वरी।

संसार० ना० पु० जगत्, गृहाश्रम, दुनिया।

संसारी० गु० लौकिक, जो संसारका है।

संसृत० गु० संसारी, दुनियवी।

संस्कार० ना० पु० स्मरण का हेतु, व्यवहार यथा गर्भाधानादि १० पवित्रता।

संस्कृत० ना० पु० देववाणी।

संस्कृतानुयायी० गु० देववाणी के अनुसार।

संस्कृताभिज्ञ० गु० संस्कृत भाषा जाननेवाले लोग।

संस्थान० ना० पु० ढब, रूप, बनावट, चतुष्पथ।

संस्पर्श० ना० पु० छुआछूत, सत, लगाव।

संहत० गु० ठोस, इकट्ठा।

संहति० ना० स्त्री० समूह, ढेर।

संहरण० ना० पु० वध, हनन, मारण, हरन।

संहरना० अ० क्रि० वधहोना, हतहोना, मारा जाना।

संहार० ना० पु० मारा, वध, हत्या, गु० मारा, वधा।

संहारक० गु० नाशक, वधिक।

संहारना० स० क्रि० वधना, नाश करना।

संक्षेप० ना० पु० सार, विशेष कथन, गु० थोड़ा, साराश, चुनाहुआ, मुख्तसर।

संक्षिप्त० गु० छिपा, अप्रकट।

संज्ञक० ना० पु० नामी, नामक।

संज्ञा० ना० स्त्री० नाम, शब्द, बुद्धि, ज्ञान।

सकट० ना० पु० छकड़, लेढ़ा, गणेशजी का जन्मोत्सव दिन।

सकटाख्य० ना० पु० धववृक्ष।

सकटासुर० ना० पु० दैत्यविशेष जिसको श्री कृष्णजी ने मारा था।

सकटी० ना० स्री० लढ़ी, गाड़ी।

सकत० ना० पु० शक्ति।

सकना० अ० क्रि० सामार्थ्य होना।

सकरा० गु० संकेत, छोटा, तंग।

सकराई० ना० स्री० सकेती, तंगी, छोटाई।

सकराना० स० क्रि० संकेत करना, सकारना, स्वीकार करना, कबूल करना।

सकरुणा० गु० दयायुत, दीनता से।

सकर्मक० गु० कर्म सहित क्रिया।

सकल० गु० सारा, समस्त, सब, सगरा।

सकाना० अ० क्रि० उदासहोना, थकना, दबना।

सकानी० गु० स्री० उदास होगई, लज्जित, दबगई।

सकाम० ना० पु० काम वा कामना सहित।

सकारना० स० क्रि० हुण्डी को लेलेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना, कबूलना।

सकारे० ना० पु० प्रातःकाल, सबेरे।

सकिलना० अ० क्रि० सिमिटना, हटना।

सकिलाना० स० क्रि० सिमिटाना, हटाना।

सकुचना० अ० क्रि० डरना, संशयकरना, लजाना।

सकुचाना० स० क्रि० लजाना, डराना।

सकुचित० गु० लज्जित।

सकुल० ना० पु० पक्षी, कुलसमेत, इकट्ठा।

सकुलादानी० ना० स्री० गेंदड़ी।

सकेत० गु० सकरा, तंग, छोटा, ना० स्री० दुःख, आपदा, दुर्भिक्ष।

सकेतना० स० क्रि० सकेतना, संकेत करना।

सकेलना० स० क्रि० इकट्ठा करना, बटोरना।

सकेला० ना० पु० [illegible]।

सकोच० ना० पु० आदर सन्मान।

सकोरना० स० क्रि० समेटना, संकोचना, तंग करना।

सकोरा० ना० पु० कटोरा, मिट्टी वा काठ की छोटा बर्त्तन।

सकोरी० ना० स्री० थाली, [illegible]।

सक्रोध० गु० क्रोधसमेत।

सखर० गु० अधिक, खरयुत।

सखा० ना० पु० मित्र, बन्धु, प्रियतम।

सखी० ना० स्री० मित्रणी, सहेली, संगिन।

सख्य० ना० स्री० मित्रता, प्रीति।

सगड़० ना० पु० शकट, शकट।

सगर० ना० पु० अयोध्या का राजा [illegible]।

सगरे० गु० सब, समस्त।

सगर्भ० गु० गर्भिणी, [illegible]।

सगपहिता० ना० पु० [illegible]।

सगा० गु० [illegible]।

सगाई० ना० स्री० [illegible], मंगनी [illegible] इत्यादि रिश्ते।

सगुन० ना० पु० [illegible]।

[illegible] ना० पु० [illegible]।

[illegible] ना० स्री० मांस।

[illegible] गु० निरादरे, लज्जित।

सघन० गु० घना, बहुतायत, गुंजान।

सध्रीची० ना० स्री० सखी, सहेली।

संकट० ना० पु० विपत्ति, दुःख, भीड़, सांकरा।

संकटा० ना० स्री० [illegible] दशाविशेष, काशी की मे देवीविशेष।

संकर० ना० पु० [illegible]।

संकर्षण० ना० पु० श्रीबलदेवजी, [illegible]।

संकल० ना० पु० संग्रह, ढेर, सांकर, जंजीर।

संकलन० ना० पु० जोड़, जोड़ती, योग, सांकरी [illegible]।

संकलित० गु० [illegible]।

[illegible] ना० पु० गणित।

संकल्प० ना० पु० मनर्थ इच्छा, विचार, शा०

स्वीय कर्म में प्रतिज्ञाविशेष, दान करना।
संकल्पना० स० क्रि० दानदेना, नियम व प्रतिज्ञा करना।
संकाश० ना० पु० तुल्य, प्रकाशयुत व०।
संकीर्ण० गु० मचामच, घना।
संकीर्त्तन० ना० पु० गुणोंका गान।
संकुचित० गु० सकुचाया, लज्जित।
संकुल० गु० मचामच, घना, भराहुआ, पूरा।
संकुलित० गु० भरा, युक्त।
संकेत० ना० पु० वचन, अवधि, सैन, इंगित, सलाह, इशारह, एकान्त।
संकोच० ना० पु० खान, सकना, केसर, कानि, चिलगोजा, सिमट।
संकोचन० ना० पु० खेंच, सिमटाहट।
संकोचना० स० क्रि० बटोरना, समेटना, लजाना, कानिकरना।
संकोची० गु० लजीला, लाजवन्त।
संक्रम० ना० पु० सचार, गमन।
संक्रान्त० गु० जो बीतगया, जो एकसे दूसरे को सौंपागया।
संक्रान्ति० स्त्री० एक राशि से दूसरी राशि में सूर्यका जाना।
संक्रिया० ना० स्त्री० विधिविशेष।
संख्या० ना० स्त्री० एकदो आदिगिन्ती, शुमार।
संग० ना० पु० सयोग, मेल, लीलायोधा, अव्य० साथ, सहित।
संगपिष्ठ० ना० पु० मीचरस।
संगति० ना० स्त्री० मैथुन, भेंट, मेल, मिलाप।
संगम० ना० पु० मेल, मिलाप, मैथुन।
संगर० ना० पु० युद्ध, लड़ाई, आपदा, प्रण, छावनी, लश्कर।
संगसी० ना० स्त्री० सँड़सी।
संगी० ना० पु० साथी, हमराही, मिलापी।
संगीत० ना० पु० रागभेद, गान, गानेकी विद्या।
संगीतदर्पण० ना० पु० रागविद्या का ग्रन्थविशेष।
संगोपन० ना० पु० छिपाव, गोपन।
संग्रह० ना० पु० बटोर, संक्षेपन, सारांश लेना।
संग्रहण० ना० पु० स्वीकार करना, लेलेना।
संग्रहणी० ना० स्त्री० अतीसाररोगविशेष।
संगृहीत० गु० जो संग्रह कियागया जो इकट्ठा कियागया।
संग्राम० ना० युद्ध, समर, रण।
संघ० ना० पु० झुण्ड, समूह, मेला, ढेर, संग।
संघट० ना० पु० सयोग, मिलान, रगड़।
संघट्टन० ना० पु० रगड़न, घिसन।
संघात० ना० पु० मारना, समूह, नरकविशेष।
संघार० ना० पु० सधार।
संघारक० ना० पु० संघारक, काल, भैरव।
संघारना० स० क्रि० सहारना।
सच० गु० सत्य, साँच, अव्य० हां, ठीक।
सचमुच० अव्य० सचवर।
सचल० ना० पु० चलनेकी शक्ति, समेत, गु० जो चल फिरसके यथा मनुष्य, पशु, पक्षी।
सचाई० ना० स्त्री० सत्यता।
सचिव० ना० पु० मन्त्री, वज़ीर।
सचिवज० ना० पु० मन्त्रीका पुत्र, वज़ीरज़ादह।
सचु० ना० पु० आनन्द, सत्य, साँच।
सचेत०
सचेतन० } गु० सचेत, चौकस, चैतन्य, चुस्त।
सचेष्ट० गु० चेष्टायुत, उद्युक्त।
सचौटी० ना० स्त्री० सच्चाई, सचकहनेकीचाल।
सच्च०
सच्चा० } गु० सत्य, ठीक, सीधा।
सच्चाई० ना० स्त्री० सचाई।
सच्चिदानन्द० ना० पु० ब्रह्म, ईश्वर।
सच्छास्त्र० ना० पु० अध्यात्मशास्त्र।
सज० ना० स्त्री० डौल, ढब, सिंगार, शोभा, रूप।
सजकल्पना पु० गुपाना।
सजग० गु० होशियार, ख़बरदार, उजागर, चौकस, चैतन्य।

सजधज॰ ना॰ स्त्री॰ बनावट, रूप, ठाम।
सजन॰ ना॰ पु॰ पति, प्रियतम।
सजना॰ अ॰ क्रि॰ बनना, फबना, साहना, परिरना, सुधरना, ना॰ पु॰ सज्जन, सैज्जन।
सजनी॰ ना॰ स्त्री॰ सखी, सहेली।
सजल॰ गु॰ जो जल से भरा।
सजता॰ ना॰ पु॰ सभिला भाई, चारभाइयों में से जो तीसरा भाई हो उसका उपनाम।
सजाई॰ ना॰ स्त्री॰ बनवाई, बनावट, समाप, रामायणे यथा तौ विधिदेइहि माहिं सजाई।
सजातीय॰ गु॰ समान सम जातिका, एक जाति का।
सजाना॰ स॰ क्रि॰ बनाना, रचाना।
सजावट॰ ना॰ स्त्री॰ बनावट रचावट।
सजीला॰ गु॰ सुडौल सुढब, सुन्दर।
सजीव॰ गु॰ जीवन, जीवधारी, जान समेत, आबाद में।
सजीवनि॰ ना॰ स्त्री॰ बूटाविशेष।
सजोयल॰ गु॰ बख्तर समेत, हथियारबन्द।
सज्जन॰ गु॰ कुलवन्त, आदरी, साधु, और अच्छा मनुष्य ना॰ पु॰ प्रियतम, प्यारा।
सज्जना॰ अ॰ क्रि॰ सजना।
सज्जी॰ ना॰ स्त्री॰ क्षारविशेष।
सझिया॰ ना॰ स्त्री॰ साझेदार इत्यादि।
सझियार॰ ना॰ पु॰ साझी, शरीक।
सझियारा॰ ना॰ पु॰ साझा, शराकत।
सचय॰ ना॰ पु॰ संग्रह, ढेर, समूह।
सचयी॰ गु॰ सचय करनेहारा।
सचार॰ ना॰ पु॰ संक्रमण, गूढता से जो चलन, मार्ग, राह, बाट, चलन, निशान।
सचारिका॰ ना॰ स्त्री॰ कुटनी।
सचारिणी॰ गु॰ स्त्री॰ चलानेवाली।
सञ्चित॰ गु॰ जो बटोरा गया, पुरस्कृत धर्म अधर्म।
सचेत॰ गु॰ सचेत।
सछिद्र॰ गु॰ छिपा, गुप्त।

सजात॰ क्रि॰ उत्पन्न पैदा।
सकट॰ ना॰ पु॰ लचीली छड़ी, भगाना, मेल मान इकारी नय।
सटकना॰ अ॰ क्रि॰ भागजाना, छिपना, अलग होना।
सटकाई॰ ना॰ स्त्री॰ उतार चढ़ाव।
सटकाना॰ स॰ क्रि॰ निरस करना, छिपाना, भगाना, बाहलाना।
सटना॰ अ॰ क्रि॰ मिलना, जुड़ना, चिपकना।
सटपटाना॰ अ॰ क्रि॰ घबड़ाना, टलना।
सटा॰ ना॰ स्त्री॰ गलक बाल, जटा।
सटाना॰ स॰ क्रि॰ चिपकाना, जोड़ना, लगाना।
सटासट॰ ना॰ स्त्री॰ लगालग।
सटिया॰ ना॰ स्त्री॰ छड़ी।
सटीक॰ गु॰ टीकासमेत, तिलकसंयुक्त।
सठियाना॰ अ॰ क्रि॰ साठ वर्ष की आयुसे अधिक होना बुद्धिबल घटना।
सट्टा॰ ना॰ पु॰ पुष्ट निशान जो दस्तूर का दिया जाता है।
सड़क॰ ना॰ स्त्री॰ राजमार्ग पथ, पैंड़ा।
सड़न॰ ना॰ स्त्री॰ सन्धि, गलन।
सड़ना॰ अ॰ क्रि॰ गलना, उबलना।
सड़ा॰ गु॰ गला, उबसा।
सड़ाँध॰ ना॰ स्त्री॰ सड़ने की दुर्गंध।
सड़ाना॰ स॰ क्रि॰ गलाना, सड़ाना।
सड़ियल॰ गु॰ निकम्मा, सड़ाहुआ।
सड़ैंधा॰ गु॰ सड़िहन।
सँड़सी॰ ना॰ स्त्री॰ गहना, सगभी सासी।
सडा॰ गु॰ पोढ़ा मारा।
सँडास॰ ना॰ पु॰ पायखाना, छागभी।
सड़ासा॰ ना॰ पु॰ बड़ी सन्सी।
सड़ासी॰ ना॰ स्त्री॰ संड़सी।
सत्॰ गु॰ सत्य, ना॰ पु॰ सार, जीव, सत्व मक्खन, रस, कीर्ति, सच्चा।
सतमासा॰ ना॰ पु॰ ...

की पूजा विशेष वा ज्योनार ।
सतमी० ना० स्त्री० सप्तमी ।
सतर० ना० स्त्री० तिर्छी, टेढ़ी ।
सतराना० ध० क्रि० क्रोधित होना, कुढ़ना ।
सतरौहीं० ना० स्त्री० टेढ़ी, तिर्छी ।
सतर्क० गु० सावधान ।
सतलज० ना० स्त्री० पञ्जाबकी नदी विशेष ।
सतलड़ा० गु० सतगुना, जिसमें सातलड है ।
सतसठ० गु० साठि और सात, ६७ ।
सतसैया० ना० स्त्री० विहारीलाल कविकृत ग्रन्थ विशेष ।
सतहत्तर० गु० सत्तर और सात, ७७ ।
सताना० स० क्रि० दुःख देना, छेड़ना ।
सती० ना० स्त्री जो स्त्री पति के साथ अग्नि में जलती है, पतिव्रता, दक्षसुता ।
सतीमठ० ना० पु० स्थान जहां सती के अरिथ आदिस्थापन करते हैं ।
सतीर्थ० ना० पु० जिन्होंने एक गुरु से अध्ययन किया है, गुरुभाई, सहपाठी, एक साथ के पढ़नेहारे ।
सतीला० गु० पराक्रमी ।
सतीवाड़० ना० पु० स्थान जिसमें सतीहुई है ।
सतुवा० } ना० पु० सतू ।
सतुआ० }
सत्कर्म० ना० पु० भलाकर्म, ठीक कार्य ।
सत्कार० ना० पु० सम्मान, खोतका जलाना ।
सत्कारी० ना० पु० मुर्देका जलानवाला, सम्मान वा आदर करनेहारा ।
सत्क्रिया० ना० स्त्री० मृतककी सुगति, उत्तम कर्म, आत्मगति ।
सत्तम० गु० श्रेष्ठ, बड़ा, मर्य्यादिक, साधुओं में जो सब से अच्छा ।
सत्तर० गु० सात्तदहाई, ७० ।
सत्तरह० गु० दश और सात, १७ ।
सत्ता० ना० स्त्री० बल पराक्रम, गञ्जीफा में जो सात, आकार, मैचद ।
सत्ताईस० गु० बीस और सात, २७ ।
सत्तानवे० गु० नब्बे और सात, ९७ ।
सत्तावन० गु० पचास और सात, ५७ ।
सत्तासी० गु० अस्सी और सात, ८७ ।
सत्तु० ना० पु० भूनेयव आदिका चूर्ण ।
सत्पथ० ना० पु० सुमार्ग, अच्छामार्ग ।
सत्पुत्र० ना० पु० सुपूत, भलापुत्र ।
सत्य० गु० यथार्थ, ठीक, निश्चय, सांच ।
सत्यकेतु० ना० पु० राजाविशेष, सत्यकी पताका ।
सत्यता० ना० स्त्री० भलाई, सचाई ।
सत्ययुग० ना० पु० प्रथमयुग जो सत्रह लाख अट्ठाईस सहस्रवर्ष का प्रमाण है ।
सत्यभामा० ना० स्त्री० श्रीकृष्णकी स्त्री विशेष ।
सत्यभाव० ना० पु० सीधा स्वभाव ।
सत्यलोक० ना० पु० ब्रह्मलोक स्वर्गविशेष ।
सत्यवचन० ना० पु० यथार्थ कहना, ठीक ।
सत्यवती० ना० स्त्री० वेदव्यास की माता, पतिव्रता स्त्री ।
सत्यवाद० ना० पु० सत्यवचन, ठीकवार्त्ता ।
सत्यवादी० गु० सच्चा, सच कहनेहारा ।
सत्यसिन्धु० गु० बड़ासच्चा ।
सत्यानाश० ना० पु० सम्पूर्णनाश, बिगड़ना ।
सत्यानाशी० ना० स्त्री० कटीला पौधाविशेष, गु० जो बिगड़गया, नष्ट ।
सत्यानृत० ना० पु० वाणिज्य, व्यापार ।
सत्ययुग० ना० पु० सतयुग, सतयुग ।
सत्व० } ना० पु० भलाई वा गुण ।
सत्वगुण० }
सत्वन्ता० गु० भला कीर्तिमान् ।
सत्वर० अव्य० तुरन्त, शीघ्र, जल्द ।
सथराव० ना० पु० युद्धमें जो मारेगये उनके ढेर ।
सथिया० ना० पु० अस्त्र वैद्य, जर्राह, चिह्न विशेष जो महाजन लोग सातिके प्रथमपत्र में करते हैं ।

सद० अव्य० सद्य, तत्क्षण गु० श्रेष्ठ।
सदन० ना० पु० स्थान, घर, मकान।
सदय० गु० दयायुत, दयासहित।
सदया० ना० स्त्री० श्रमदवत्, पक्षी की स्त्री।
सदस्य० ना० पु० कर्म करों में जो न्यूनाधिक का विचार करे वा सुधारे, देखवैया।
सदा० **सदाई०** } अव्य० सर्वदा, नित्य, हमेशह।
सदाकार० ना० पु० आव का वृक्ष या अम्र।
सदागति० ना० पु० पवन, वायु।
सदाचार० ना० पु० सर्वदाकाल आचार करना, श्रेष्ठाचार, पवन, वायु, हवा।
सदानन्द० ना० पु० सर्वत्र वा सर्वदाकाल प्रसन्न, आगुरु।
सदापुष्प० ना० पु० मंदारवृक्ष, कुन्दवृक्ष, वृक्ष, जिसमें सर्वदाकाल फूल लगते हों।
सदाफल० ना० पु० नारियलवृक्ष, बेलवृक्ष गूलरवृक्ष, कटहल, गु० वृक्ष जिसमें सदाफल मिलत हो।
सदाव्रत० ना० पु० अतिथी और सन्तादि को नित्य भोजनदान।
सदाशिव० ना० पु० श्रीशिवजी का एकनाम।
सदासुहागन० ना० स्त्री० पक्षीविशेष, फूल विशेष, फ़कीर वा भिक्षुक, जा स्त्री का भेष करता है।
सदेह० गु० देहसमेत।
सदृश० बराबर, तुल्य, समान।
सदेश० गु० समीप, पास।
सदैव० अव्य० सदा० सर्वदा।
सदैविक० गु० सबदिनका, नित्यक।
सदोष० गु० दोषसमेत।
सद्गति० ना० स्त्री० निस्तार, मुक्ति, त्राण।
सगन्द० ना० स्त्री० सुगन्ध।
सद्दल० ना० पु० समूह, गिरोह।
सद्म० ना० पु० घर, स्थान, मकान।
सद्य० **सद्य०** } अव्य० तुरंत, तत्क्षण।
सद्वक्ता० गु० सत्य कहनेहारा।
सद्विवेक० ना० पु० सत्यविवेक, उत्तमज्ञान।
सद्विवेचक० ना० पु० जो यथार्थ का विचारे।
सधन० ना० पु० धन समेत।
सधना० अ० क्रि० बनना, हिलना, ठहरना, थंभना।
सधवा० ना० स्त्री० सुहागिन, पतिवती स्त्री।
सधाना० स० क्रि० मिलाना, बनाना, हिलाना, पूराकरना, ठहराना, थभाना।
सधी० गु० बुद्धिमसेत, अभ्यासमेत, हिली, ठहरीहुई, सीखीहुई।
सन० ना० पु० पौधाविशेष जिसकी छिलाको रस्सी बनाते हैं, अव्य० से।
सनकार० ना० पु० सेन, इशारह।
सनकारना० स० क्रि० सैनदेना इशारह करना।
सनकारा० गु० इशारहकिया गया, जा सैन दिया हुआ।
सनत० ना० पु० मुनि विशेष।
सनत्कुमार० ना० पु० ब्रह्मा के चार पुत्रों में से एक जो आदि पुरुषथा।
सनना० अ० क्रि० गर्भिणी होना, भरना, मलना, गुंधना।
सन्निपात० ना० पु० रोगविशेष, जो कफ पित्त वात के बिगड़ने से होता है।
सना० ना० पु० स्त्री० औषधि विशेष, सनाय।
सनाढ्य० ना० पु० ब्राह्मणजाति विशेष।
सनातन० गु० जिसका आरम्भ और अन्तनहीं है जो नित्य रहेगा।
सनाथ० गु० नाथ सहित, निहाल, कृतार्थ।
सनाह० ना० पु० बख्तर, गु० पतिसमेत।
सनिया० ना० पु० टसरका वस्त्र विशेष।
सनीचर० ना० पु० शनैश्चर।
सनीचरा० गु० अभागा, अपयशी, ना० पु०

ग्वालियर के निकट पर्वत विशेष जिसपर सनीचर की मूर्त्ति है।

सनेह० ना० पु० तेल, गु० स्नेह।

सन्त० ना० पु० साधुविशेष, ईश्वरसेवक, गु० श्रद्धावान्, भला।

सन्तत० अ० निरन्तर, निरंतर।

सन्तति० ना० स्त्री० सन्तान, वंश, पुत्रादि श्री लाद।

सन्तप्त० गु० पीड़ित, दुःखित, सताया गया, सन्तापसहित।

सन्तरण० ना० पु० तरना, पारहोना।

सन्ता० गु० बिगड़ा।

सन्तान० ना० पु० वंश, लड़केबाले कल्पवृक्ष।

सन्ताप० ना० पु० शोक, पीड़ा, दुःख।

सन्तापित० गु० सन्तप्त, सताया गया, पीड़ित।

सन्तापी० गु० शोकसंयुक्त, उदास, दुःखी।

सन्ती० ना० पु० बदला, अव्य० बदल, पलटे, लिये।

सन्तुष्ट० गु० धीरजी सन्तोषी, तृप्त, मनभरा हर्षित।

सन्तोष० ना० पु० आनन्द, धीरज, हर्ष, सुख।

सन्तोषी० गु० धीरजवान् आनन्दी, हर्षित।

सन्या० ना० स्त्री० पल सवई।

सन्दंश० ना० स्त्री० सण्डसी, संसा।

सन्दर्शन० ना० पु० साक्षात्कार।

सन्दान० ना० पु० दावना, रस्सी जो घोड़े आदिके पांवमें बांधते हैं, सुनारों का हथियार विशेष।

सन्दिग्ध० गु० सन्देहयुक्त, भरमीला।

सन्दिग्धभूत० ना० पु० जिसके बीतने में सन्देह हो।

सन्देश०
सन्देशा०
सन्देस०
सन्देसा०
} ना० पु० समाचार, पैगाम, खबर।

सन्देसी० ना० पु० दूत, पैगम्बर।

सन्देह० ना० पु० संशय, शङ्का, चिन्ता, शक।

सन्देहिक० गु० जिसमें सन्देह हो।

सन्देही० ना० पु० शङ्की, चिन्तायुक्त।

सन्दोह० ना० पु० समूह, बहुतायत।

सन्धान० ना० पु० अन्वेषण, खोज, फांक, लगान, लगाव, मिलान।

सन्धानना० स० क्रि० जोड़ना, लगाना, ठीकना।

सन्धाना० ना० पु० अचार।

सन्धि० ना० स्त्री० मेल, संयोग मिलाप, छिद्र, दरार, मिलाप।

सन्ध्या० ना० स्त्री० सन्धिकाल, गोधूलि, सांझ, त्रिकाल में उपासना समयका नाम, यथा सूर्योदय, मध्याह्न, सूर्यास्त।

सन्नाटा० ना० पु० जलकी लहरोंका जो शब्द, वायु या झड़ी, से जो शब्द होताहै।

सन्निकर्ष० ना० पु०
सन्निधान० ना० पु०
सन्निधि० ना० स्त्री०
} समीप समीपी, निकटता, समीपहोना।

सन्निपात० ना० पु० रोगविशेष, सरसाम।

सन्निहित० गु० निकट, समीप, पास।

सन्मान० ना० पु० आदर, सत्कार, मर्य्यादा।

सन्मानार्थ० गु० जिस शब्द से प्रतिष्ठा पाई जाती है।

सन्मानी० गु० शिष्टाचारी, आदरी, सत्कारी।

सन्मुद० ना० पु० हर्ष, प्रीति, आनन्द, खुशी।

सन्न्यास० ना० पु० चौथा आश्रम, दिगम्बर।

सन्न्यासी० ना० पु० चौथा आश्रमी, दिगम्बरी।

सपदि० अव्य० तत्क्षण, तुरन्त, अभी।

सपना० ना० पु० स्वप्न।

सपल्लव० गु० सहित पल्लव, पत्तेसहित।

सपक्ष० ना० पु० सहायक, संगी, गु० पक्ष समेत।

सपीतक० ना० पु० पानातुरई।

सपुत्र० ना० पु० लड़के सहित।

सपुष्पा० ना० स्त्री० तरोई।

सपूत० ना० पु० सुपूत।

सपूताई० } ना० स्त्री० सत्पुत्रता, सपूती।
सपूती० }

सपेला० ना० पु० } सापकाबच्चा, छोटा
सपोला० ना० पु० } साप, जन्मता साप
सपोलिया० ना० स्त्री० } का बच्चा।

सप्त० गु० सात ७।

सप्तईति० ना० स्त्री० सातईति अर्थात् अनावृष्टि १ अतिवृष्टि २ टीडी ३ मूषक ४ शुक ५ स्वसैन्य ६ परसैन्य ७।

सप्तऋषि० ना० पु० सातऋषि अर्थात् कश्यप १ अत्रि २ भरद्वाज ३ विश्वामित्र ४ गौतम ५ जमदग्नि ६ वशिष्ठ ७।

सप्तजिह्वाग्नि० ना० पु० अग्निकी सातजिह्वा अर्थात् काली १ कराली २ जयवती ३ रक्तव धिका ४ ज्वलनी ५ धूम्रपुष्पा ६ धूम्रशीर्षा ७।

सप्तति० गु० सत्तर ७०।

सप्तदश० गु० सत्तरह १७।

सप्तदेवपुरी० ना० स्त्री० सात देवपुरी अर्थात् विष्णुपुरी १ शिवपुरी २ ब्रह्मपुरी ३ अमरावती ४ अलकावती ५ वरुणावती ६ और यमपुरी ७।

सप्तद्वीप० ना० पु० सातद्वीप अर्थात् जम्बू १ सक्ष २ कुश ३ क्रौंच ४ शाक ५ शाल्मलि ६ पुष्कर ७।

सप्तपाताल० ना० पु० सात पाताल अर्थात् अतल, वितल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल, सुतल, ७।

सप्तपुरी० ना० स्त्री० अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काञ्ची, अवन्तिका, द्वारका ७।

सप्तम० गु० सातवां।

सप्तमी० ना० स्त्री० सतवींतिथि, अधिकरण।

सप्तम्यन्त० गु० जिसके अन्तमें, सप्तमी का प्रत्यय है।

सप्तमुख्यअप्सरा० ना० स्त्री० घृताची १ मेनका २ रम्भा ३ उर्वशी ४ तिलोत्तमा ५ सुकेशी ६ मञ्जुघोषा ७।

सप्तमुख्यवायु० ना० पु० सातमुख्यपवन अर्थात् आवाह, प्रवाह, अनुवह, संवह, विवह, परावह, परिवाह ७।

सप्तयुद्ध० ना० पु० सात प्रकारका समर अर्थात् धनुष, चक्र, कुन्त, खड्ग, गदा, छुरिका, मल्ल ७।

सप्तराज्यांग० ना० पु० राज्य के सात अंग अर्थात् स्वामी, मन्त्री, देश, कोश, मित्र, गढ़, सैन्य, ७।

सप्तविंशति० गु० सत्ताईस २७।

सप्तविंशतितम० गु० सत्ताईसवां।

सप्तसिंधु० ना० पु० सात समुद्र अर्थात् लवणोद, रसोद, सुरानिधि, घृतनिधि, दधिनिधि, क्षीरनिधि, जलनिधि ७।

सप्तस्वर० ना० पु० सातस्वर अर्थात् षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, धैवत, निषाद, पञ्चम ७।

सप्तस्वर्ग० ना० पु० सातस्वर्ग अर्थात् भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक, सत्यलोक ७।

सप्ताश्व० ना० पु० सूर्य।

सप्ताह० ना० पु० अठवारा, हफ़तह।

सप्ति० ना० पु० घोड़ा, यथा वाजिवाहार्वगन्धर्व यह सेंधव सप्तय इत्यमर।

सफरी० ना० स्त्री० मत्स्य, मछली।

सब० गु० सर्व, सारा, ना० स्त्री० रात।

सबरस० ना० पु० जल, पानी।

सबल० गु० बलवान्, प्रौढ़, पहलवान।

सबलता० } ना० स्त्री० बल, प्रौढ़ता, पहलवानी।
सबलाई० }

सबेर० गु० समय से पहले, ठीक वा अच्छा समय।

सबेरा० ना० पु० भोर, प्रात काल, तड़का।

सबेरे० अव्य० तड़के, भोरहे।

सरोतर० गु० सरस।
सभय० गु० भयसमेत, भयभीत।
सभव० ना० पु० जन्म, गु० उभव सुमत्।
सभा० ना० स्त्री० कचहरी, मण्डली।
सभासद० ना० पु० दरबारी, सभा में बैठनेहारा या विचारकरनेहारा।
सभीत० गु० डराभया, भययुत।
सभ्य० ना० पु० सभा के कार्य्य में जो सहायक है, गु० जो सभा के योग्य है
सभ्रम० ना० पु० भूत, गु० भूत से भ्रम सहित।
सम० गु० तुल्य सब, बराबर, व सर्वां मिलिहुये।
समकटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी का वह भाग जो शीतकटिबन्ध और मकरेखा कर्करेखा के बीच ४६ है अंश है।
समग्र० गु० समस्त, सारा।
समग्रता० ना० स्त्री० सम्पूर्णता।
समगा० ना० स्त्री० खिरहरा।
समगी० ना० स्त्री० मजीठ लजालू।
समझ० ना० स्त्री० बूझ ज्ञान, विचार।
समझना० अ० क्रि० बूझना, विचारना।
समझवार० गु० विचारवार, ध्यानी ज्ञानी।
समझाना० स० क्रि० बुझाना, जताना बताना।
समझाती० } ना० स्त्री० समझान का दाम।
समझावा० }
समञ्जस० ना० पु० योग्यता, उचितता गु० यथार्थ।
समता० ना० स्त्री० समभाव एकता बराबरी।
समदर्शी० गु० मध्यभागी तुल्यदर्श, सबको समजाने।
समद्विबाहु० गु० जिसकी दो भुजा तुल्य हों।
समधिन० ना० स्त्री० अपने पुत्र वा पुत्री की सास।
समधियाना० ना० पु० समधी का घर घराना।
समधी० ना० पु० अपने पुत्र व पुत्री का ससुर, गु० समबुद्धि।
समन्त० ना० पु० सेंहुड़वृक्ष।
समन्वय० ना० पु० आपस में बहुतों का मेल।
समन्वित० गु० आपस में मिलित, संयुक्त।
समभाव० ना० पु० समता, बराबरी।
समय० ना० पु० काल, ऋतु, अवसर, वृत्त, सारवास, अच्छेदिन।
समर० ना० पु० युद्ध, लड़ाई, रण, कामदेव।
समररस० ना० पु० वीरता, बहादुरी।
समर्थ० गु० बलवान, योग्य, हिम्मतवर।
समर्थी० गु० सामर्थी, ताकतवर।
समर्पण० ना० पु० सौंपना, अर्पण, त्याग, देना
समर्पित० गु० सौंपागया, अर्पित, त्यागित।
समल० गु० पापी, मैला।
समवाय० ना० पु० झाड, समूह, न्यायशास्त्र का सम्बन्धविशेष।
समशील० गु० तुल्यभाव, समभाव, समता।
समसूत्र० गु० सीधासूत।
समसूत्रपात० ना० पु० सीधासूतका पड़ना या डालना।
समस्त० गु० सकल, सारा, सब।
समस्या० ना० स्त्री० समासार्थ, श्लोक का पूर्वार्द्ध एकदशका कहना।
समक्ष० गु० साक्षात्, साम्हने।
समत्रिबाहु० गु० जिस त्रिभुज की तीनों भुजायें समान हों।
समा० ना० पु० समय, बहुतात, दिशा, मिलाप।
समाई० ना० स्त्री० संतोष, धैर्य्य, शक्ति।
समाहृत० ना० पु० पिरतामया।
समागत० ना० पु० संयोग, भवाई, पहुँच।
समागम० ना० पु० संयोग, मिलाप, अवाई।
समाचार० ना० पु० सन्देश, वृत्तान्त, चर्चा।
समाचारपत्र० ना० पु० चिट्ठी, अखबार।

सम्पन्न० गु० परिपूर्ण, जो पूरा होचुका, भाग्यवान्, भराहुआ।

सम्पर्क० ना० पु० सम्बन्ध, मिलाव, संयोग, मैथुन

सम्पात० ना० पु० झुकावट, गिरना, स्पर्श।

स०ाति० ना० पु० गिद्धविशेष।

सम्पादक० ना० पु० सम्पादन करने हारा।

सम्पादन० ना० पु० प्राप्ति।

सम्पादित० गु० प्राप्त।

सम्पुट० ना० पु० डब्बा, जुड़ाव, बचाव।

सम्पूरण०, सम्पूर्ण० } परिपूर्ण, सारा, समस्त।

सम्प्रति० अव्य० अभी।

सम्प्रदान० ना० पु० चतुर्थी, कारकविशेष जिसके लिये कर्त्ता क्रिया सिद्धकरे।

सम्प्रदाय० ना० पु० परम्परा का धर्म।

सम्फुल्ल० गु० फूला विकसा।

सम्बद्ध० गु० संयुत, जो बांधागया, जो घेरा गया।

सम्बन्ध० ना० पु० सम्पर्क, नाता, लगाव, तुक, इशारह, कारकविशेष, षष्ठी।

सम्बन्धी० गु० नातेदार, रिश्तेदार, ना० पु० गोत्री, समधी।

सम्बर० ना० पु० दैत्यविशेष, सम्बल, पानीमेल।

सम्बरारि० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।

सम्बल० ना० पु० जानना मार्ग का, दैत्य विशेष।

सम्बुक०, सम्बूक० } ना० पु० घोंघा, कौड़ी, शंख।

सम्बोधन० ना० पु० सन्मुख करने के लिये जो शब्द कहा है, सो, धीरजकरना।

सम्भलना० अ० क्रि० थमना, सुधरना, खड़ा होना।

सम्भव० ना० पु० योग्यता होनहार उद्भव, गु० होने के योग्य।

सम्भवा० ना० स्त्री० गोरोचन।

सम्भार०, सम्भाल० } ना० पु० थभार, सुधार, रक्षा।

सम्भालना० स० क्रि० थामना, सुधारना, रक्षा करना।

सम्भावना० ना० स्त्री० होने की योग्यता, क्रिया के शक्यर्थ नियमका अभिप्राय, इच्छा।

सम्भावनीय० गु० होनहार।

सम्भावित० गु० बड़ामान्य।

सम्भाषण० ना० पु० बोलचाल, बातचीत।

सम्भूत० ना० पु० उत्पन्न, पैदा।

सम्भोग० ना० पु० सुख, हर्ष, स्त्री प्रसंग।

सम्भ्रम० ना० पु० आदर, सन्मान, उतावली, डर, घबड़ाहट।

सम्मत०, सम्मति० } ना० स्त्री० इच्छा, स्वीकार, विचार, समानता, सलाह, राय।

सम्मीक० ना० पु० समर, युद्ध, रण।

सम्यक्० अव्य० सब, योग्यता से, ठीक रीतिसे, अच्छीतरह।

सयन० ना० पु० शयन, इशारह, संकेत।

सयान० ना० पु० चतुराई, प्रवीणता, छल।

सयाना० गु० चतुर, प्रवीण, छली, पक्का।

सर० ना० पु० ताल, कुण्ड, शर।

सरकण्डा० ना० पु० नरकटविशेष।

सरकना० अ० क्रि० हटना, भागना।

सरकाना० स० क्रि० खिसकाना, भगाना।

सरयू० ना० स्त्री० नदीविशेष।

सरट० ना० पु० गिरगिट, गिरगिदाना।

सरद० ना० पु० शरद ऋतु।

सरदा० ना० पु० फलविशेष।

सरन० ना० स्त्री० शरण।

सरना० अ० क्रि० बनना, चलना, निकलना, सड़ना शरण।

सरनागत० ना० पु० शरणागत।

सरणागतवत्सल० गु० शरणागतों पर जो दयाल अर्थात् ईश्वर।
सरपट० ना० पु० बगट्टुट।
सरपत० ना० पु० पतलो, पतावर, सैंठा, मरुडा।
सरभ० ना० पु० बन्दर विशेष, अव्य० शीघ्रता।
सरल० गु० सीधा, साफा, साधारण, वासन्ती पौधा विशेष।
सरला० गु० सीधा, ऊचा, दीर्घ।
सरलाखिता० ना० स्त्री० निसोत।
सरवरि० ना० स्त्री० बराबरी।
सरस० गु० श्रेष्ठ, अधिक, बहुत, रससमेत।
सरसई० ना० स्त्री० सरस्वती नदी।
सरसाई० ना० स्त्री० अधिकाई, बहुतात।
सरसाना० अ० क्रि० बढ़ना, अधिकहोना।
सरसी० ना० स्त्री० तालाब।
सरसों० ना० स्त्री० सर्षप, राई विशेष।
सरस्वती० ना० स्त्री० नदी विशेष, वाणी की देवता और राग और विद्या की प्रतिपालक, संस्कृत भाषा की बनाने हारी।
सरा० ना० पु० शराब, चिता।
सराई० ना० स्त्री० सींगसरा।
सराप० ना० पु० शाप, श्राप।
सरापना० स० क्रि० शापदना।
सरारक० ना० पु० जाति विशेष, जर्नी।
सरावन० ना० पु० हेंगा, पटेला, जिसको फिराकर खेत क ढले तोड़त हैं।
सराह० ना० स्त्री० स्तुति बड़ाई, महिमा।
सराहना० स० क्रि० स्तुति करना, बड़ाईकरना।
सरिगम० ना० पु० गान विद्या में स्वर बनाने के लिये पहिलापद।
सरिणी० ना० स्त्री० गन्धपसारन।
सरित० ना० स्त्री० नदी।
सरिता० ना० स्त्री० नदी।
सरित्पति० ना० पु० समुद्र।
सरिस० गु० बराबर, तुल्य।
सरी० ना० स्त्री० विनाफलका शर, सरकण्डा जिससे तीर बनात हैं।
सरीखा० गु० सदृश, समान, तुल्य।
सरुज० गु० रोगी, मरीज।
सरुट० } सरुष० } गु० क्रोधयुत, क्रोधसमेत।
सरूप० ना० पु० स्वरूप।
सरूप्य० ना० पु० सारूप्य।
सरेखा० ना० स्त्री० श्लेषा।
सरेश० न० पु० काठ आदि जोड़ने क लिये लासा।
सरोज० ना० पु० कमल।
सरोता० ना० पु० सुपारी काटने का हथियार।
सरोवर० ना० पु० तालाब, तड़ाग।
सरोष० गु० क्रोधयुत, रोष सहित।
सरोही० ना० स्त्री० खड्ग विशेष।
सर्करा० ना० स्त्री० खाड़, शकर, बालू, धूलि।
सर्ग० ना० पु० स्वभाव, मोक्ष, उत्पत्ति।
सर्ज्ज० } सर्ज्जरस० } ना० पु० राल।
सर्ज्जिका० ना० स्त्री० सज्जी।
सर्प० ना० पु० साप।
सर्पदंष्ट्रा० ना० स्त्री० मढासिंगी।
सर्पपति० } सर्पराज० } ना० पु० शिवजी नागराज।
सर्पारि० ना० पु० मोला, गरुड़, मयूर।
सर्व० गु० सब, समस्त ना० पु० वृक्ष विराग।
सर्वकाल० ना० पु० नित्य, सदा, हमेशह।
सर्वगत० गु० सर्वत्र, व्याप्त, सबजगह मौजूद।
सर्वतोभद्र० ना० पु० नींबवृक्ष, मण्डल विशेष। चारों कोण का मन्दिर या राजघर जिस में चार द्वार हों।
सर्वत्र० अव्य० सबठार, सबजगह।
सर्वथा० अ० य० सब विधि, सब प्रकार से।

सर्वदा॰ अव्य॰ सदा, हमेशह, नित्य।

सर्वनाम॰ ना॰ पु॰ सर्व विश्वआदि पैंतीस शब्द, वह शब्द जो संज्ञाका आदेशहो।

सर्वनाश॰ ना॰ पु॰ सत्यानाश।

सर्वनाशक॰ गु॰ सबका नाश करनेहारा।

सर्वभक्षक॰ } ना॰ पु॰ सब कुछ खानेवाला
सर्वभक्षी॰ } सर्वांगी, धर्म्महीन, भ्रष्ट।

सर्वभक्षा॰ ना॰ स्त्री॰ बकरी।

सर्वमंगला॰ ना॰ स्त्री॰ भवानी, पार्वती, दुर्गा।

सर्वमय॰ गु॰ जो सर्वत्रफैलगयाहो, सम्पूर्ण।

सर्वव्यापक॰ } गु॰ सर्वत्र पहुंचनहारा।
सर्वव्यापी॰ }

सर्वस॰ }
सर्वसु॰ } ना॰ पु॰ सम्पूर्णद्रव्य, सर्वसम्पदा।
सर्वस्व॰ }

सर्वज्ञ॰ } ना॰ पु॰ श्रीविष्णुनारायण,
सर्वज्ञानी॰ } श्रीशिवजी, गु॰ सबका जानने हारा।

सर्वाङ्ग॰ ना॰ पु॰ सारा शरीर, मत विशेष, सब मनोज्ञ सारार्थ धर्म।

सर्वाङ्गी॰ गु॰ सर्वांग का ज्ञाता वा धारक।

सर्वाणी॰ ना॰ स्त्री॰ श्रीपार्वती।

सर्वाभीष्ट॰ ना॰ पु॰ सब मनोवृत्ति और सकल इच्छा।

सर्वोपरि॰ अव्य॰ सब के ऊपर।

सर्वौषध॰ ना॰ स्त्री॰ जटामासी, मुरा इत्यादि दश औषध।

सर्षप॰ ना॰ पु॰ सरसों।

सलकी॰ ना॰ स्त्री॰ कमलकी जड़।

सलज्ज॰ गु॰ लाजयुक्त, लज्जासहित।

सलना॰ ना॰ पु॰ मोनी, वाइनाइकी धिमी, अ॰ क्रि॰ छिदना, गड़ना।

सलभ॰ ना॰ पु॰ पतंगा, टीड़ी, टिड्डी, शलभ।

सलसलाना॰ अ॰ क्रि॰ सरसराना।

सलाई॰ } ना॰ स्त्री॰ शलाका।
सलाका॰ }

सलिल॰ ना॰ पु॰ जल, पानी।

सलूनो॰ ना॰ स्त्री॰ सावन की पूनो जिस में राखी बांधते हैं।

सलूप॰ ना॰ पु॰ थोड़ासा।

सलूपी॰ ना॰ पु॰ बिल्व, बेल।

सलोन॰ गु॰ लोन सहित, कटीला, देशखण्ड विशेष, नमकीन।

सलोना॰ गु॰ खारा, सांवला, स्वादिष्ट।

सलोनी॰ गु॰ रुचक, स्वादिष्ट, सुंदर।

सल्लकी॰ ना॰ स्त्री॰ पशु विशेष जिसके सारे शरीर में कांटे होते हैं, साही, सेही।

सल्लभ॰ ना॰ पु॰ मोटा कपड़ा विशेष।

सल्लू॰ ना॰ पु॰ चमड़े का टुकड़ा जिससे जूता आदि सीते हैं, सर्प विशेष।

सवत्सा॰ गु॰ स्त्री॰ बछड़ा की।

सवति॰ ना॰ स्त्री॰ एक मनुष्यकी दो स्त्रियों में से एक दूसर की सवति कहाती है।

सवर॰ ना॰ पु॰ भील, कोल।

सवरस॰ ना॰ पु॰ जल, पानी।

सवरी॰ ना॰ स्त्री॰ भीलिनी विशेष जिस के फल रामचन्द्रने खाए थे।

सवर्ण॰ गु॰ एक जातिका, एकरंगका, सादृश्य, समानवर्ण।

सवल॰ गु॰ सबल।

सवा॰ गु॰ जिस गिनती के प्रथम में संयुक्त होवे उसमें चौथाईबढ़ावे यथा सवादो, २¼।

सवाई॰ ना॰ पु॰ जयपुरके राजाकी पदवी।

सवाचना॰ स॰ क्रि॰ जांचना, परखना।

सवाया॰ गु॰ एक और एककी चौथाई।

सवार॰ ना॰ पु॰ अश्ववार, घुड़चढ़ा।

सवारी॰ ना॰ स्त्री॰ चढ़ती, वाहन।

सविकार॰ गु॰ जिसमें कुछ बदल हुई।

सविता॰ ना॰ पु॰ सूर्य।

सवीर्य॰ गु॰ बीज समेत।

सवैया॰ गु॰ सवाया, ना॰ पु॰ छन्द विशेष, बाट जो एकसेर और पावभर का होता है।

सव्य० गु० माया।
सशंक० गु० सभय।
सशब्दयोगि० गु० शब्दयोगी अव्यय सहित।
सशोक० गु० दुखित भयभीत।
ससक० ना० पु० खरगोश, चौगड़ा।
ससता० गु० जो महगा नहीं है।
ससताई० ना० स्त्री० ससतापन।
ससा० ना० पु० शश, चौगड़ा, खरगोश।
ससापत्री० ना० स्त्री० लुजालू।
ससुर० ना० पु० श्वशुर।
ससुराल० ना० स्त्री० श्वशुरका घर।
ससुराली० गु० जो श्वशुरका है, जो ससुराल का है।
सस्य० ना० पु० फल, अन्न, धान।
सह० अव्य० साथ, सहित, गु० जो सहने के योग्य है।
सहकार० ना० पु० आम्रविशेष, सहायता।
सहकारी० गु० सहायक।
सहगामिनी० ना० स्त्री० सती स्त्री।
सहचर० ना० पु० पियावासा, साथी, संगी।
सहचरी० ना० स्त्री० सखी, सहेली, अनुगामिनी।
सहज० गु० सामान्य, निश्चल, स्पष्ट, सुगम।
सहजना० ना० पु० वृक्ष विशेष।
सहदेवी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, शहतरह।
सहन० ना० पु० कपड़ा विशेष, सहनेकी शक्ति।
सहनहार० गु० सहनेवाला, सहवैया।
सहना० स० क्रि० निबाहकरना, सन्तोषकरना, सुनलेना, बरदाश्त करना।
सहमना० अ० क्रि० डरना, भयभीत होना।
सहमरण० ना० पु० मृतकपतिके साथ जलना।
सहराना० अ० क्रि० थर्थराना, सहलाना।
सहरावन० ना० स्त्री० गुदगुदी, सुरसुरी।
सहरी० ना० स्त्री० बांसकी दूधरी, मछली, विशेष, भूर मछली।
सहरोर० गु० शोर सहित, जोर से।
सहलाना० स० क्रि० गुदगुदाना, सुलसुलाना।
सहलाहट० ना० स्त्री० गुदगुदाहट, सुलसुलाहट।
सहवास० ना० पु० पड़ोस।
सहवासी० गु० पड़ोसी।
सहवैया० गु० सहनेहार।
सहस० गु० सहस्र, हजार, १०००।
सहसकर० ना० पु० सूर्य, बाणासुर, नागार्जुन।
सहसबदन० ना० पु० शेषजी, सहस्रवदन।
सहसबाहु० ना० पु० सहस्रबाहु, राजाविशेष।
सहसनयन० ना० पु० सहस्रनयन, इन्द्र।
सहसा० अव्य० बिनाविचार किये, उतावली से।
सहसांखी० ना० पु० सहस्रआंखी, इन्द्र।
सहसाखी० गु० गवाहसमेत, साखीसहित।
सहस्रानन० ना० पु० शेषजी।
सहस्र० गु० हजार, १०००।
सहस्रनयन० ना० पु० इन्द्र।
सहस्रमुखी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
सहस्रवदन० ना० पु० शेषजी।
सहस्रबाहु० ना० पु० बाणासुर, नागार्जुन।
सहस्रवीर्य० ना० पु० बड़ी सतावर।
सहस्रशिर० ना० पु० राक्षस विशेष जिसको श्रीसीताजीने वधकिया था।
सहस्रा०, सहस्रांगी० } ना० स्त्री० पीलूवृक्ष।
सहाई० ना० स्त्री० सहाय, मदद, ना० पु० सहायक।
सहाऊ० गु० जो सहने के योग्य है।
सहाना० ना० पु० रागविशेष, स० क्रि० निबाहकराना, सन्तोषकराना, बरदाश्त कराना।
सहाय० ना० स्त्री० सहारा, सैन, मदद, साथ।
सहायक० ना० पु० मित्र, सहाय करनेहारा।
सहायता० ना० स्त्री०, सहारा० ना० पु० } उपकार, उपकार, मदद।

सहित० अव्य० संग, साथ, समेत, गु० हित समेत।
सही० ना० स्त्री० खानाविशेष, सही, अव्य० निश्चयबोधक।
सहेजना० स० क्रि० जाचना, परखना, सैतना, बनाना, बनावा, ठहरा, रखना।
सहेली० ना० स्त्री० सखी, आली, सगकी स्त्री।
सहोदर० गु० जो एक माता से उत्पन्न भया, यथा सगाभाई।
सहोदरभाई० } ना० पु० सगाभाई।
सहोदरभ्राता० }
सहौटी० ना० स्त्री० सहोटी, चौखट, विशेष।
सह्य० गु० सहने के योग्य।
सक्षत० गु० क्षतयुक्त, घावयुक्त।
सा० अव्य० सादृश्यबोधक यथा छोटासा, पीलासा।
साऊ० गु० सीखनहार, शिष्ट।
साऊंगी० ना० स्त्री० सागी।
सांई० ना० पु० स्वामी, भगवान्।
सांक० ना० स्त्री० शंका, वासस्थान।
सांकर० ना० स्त्री० सांकल, गु० गाढ़, विपत्ति, कठिनता।
सांकरी० } ना० स्त्री० सकल, सिकली, भूषण।
सांकल० } विशेष, जंजीर।
सांखू० } ना० पुल, सेत, वाध, काठ
सांखो० } विशेष।
सांगी० ना० स्त्री० गाड़ी में स्थान विशेष जिस में गठरी आदि रखते हैं, बर्छी।
सांगूस० ना० स्त्री० मछली विशेष, शक।
सांघर० ना० पु० अगिलेपतिका पुत्र।
सांच० गु० सत्य, सच, सच्चा।
सांचा० ना० पु० ढालने वा भरने का घर, प्रणी, गु० सच्चा, सत्यवक्ता।
सांझ० ना० स्त्री० सन्ध्या, सायकाल।
सांझा० ना० पु० } झांकी जो पितृपक्ष में
सांझी० ना० स्त्री० } बनाते हैं पुतलियां जो लड़के पितृपक्ष में बनाते हैं।
सांटा० ना० पु० कोड़ा, ऐंड़, छप्परकी कमरका बांस।
सांटी० ना० स्त्री० छड़ी, लग।
सांटो० ना० पु० बदला, पलग रामचंद्रिकाया (यहसांटोलयकृष्णावतार, तब हैंही तुम ससारपार)।
सांठ० ना० स्त्री० योग, संयोग, गुप्त, अन्न पी टने के लिये लम्बा लबेदा।
सांठगांठ० ना० पु० सांट बांट, मेल संयोग।
सांठना० स० क्रि० सटाना, लगाना, जटाना।
सांड़० ना० पु० शण्ड।
सांड़नी० ना० स्त्री० ऊँटनी, शण्डकी स्त्री।
सांड़ा० ना० पु० छिपकली के तुल्यजन्तुविशेष।
सांती० अव्य० साती।
सांप० ना० पु० सर्प।
सांपन० ना० स्त्री० सांप की स्त्री।
सांभर० ना० पु० लवणविशेष, नगरविशेष, झीलविशेष जो जयपुर और जोधपुर के मध्य में है।
सांवला० गु० कृष्ण सदृश जो वर्ण।
सांवा० ना० पु० अन्नविशेष।
सांशयिक० गु० संदेहयुत, चिन्तायुत।
सांस० ना० स्त्री० श्वास, दम।
सांसना० स० क्रि० डाटना, कुदृष्टि देखना।
सांसभरना० अ० क्रि० आहभरना।
सांसा० ना० पु० संशय।
सांसारिक० गु० जो संसारका है।
साक० ना० पु० शाक, साग।
साकयणिक० ना० पु० सुराऊ, पक्वदिया।
साका० ना० पु० शाका।
साकार० अव्य० आकार सहित।
साकल्य० ना० पु० शाकल्य, शाकल।
साकेयन्ध० ना० पु० राजा जिसने शाका बांधा है।

साख० } ना० स्त्री० धाक, भरम, नाम,
साखि० } मर्याद, प्रीति, प्रतीति, पुरुषार्थ।

साखी० ना० स्त्री० साक्षी, गवाही ना० पु० वृक्षगवाह।

साखोच्चार० ना० पु० वंशवर्णन।

साखोटक० ना० पु० सहोरावृक्ष।

सास्य० ना० पु० साक्षात्।

साग० } ना० पु० शाक।
सागपात० }

सागर० ना० पु० समुद्र, महातालाव, भरत खण्डका नगरविशेष।

सागरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।

सागून० ना० पु० काष्ठविशेष या उसीकावृक्ष।

साँख्य० ना० पु० शास्त्रविशेष।

साँग० गु० समास, सहितअंग।

साँगोपाँग० गु० सम्पूर्ण, समस्त, ज्यौंका त्यौं।

साज० ना० पु० अश्वादि के पहरने की सामग्री, समर्थ, सजाव, सलाह।

साजन० ना० पु० सज्जन पति, स्वामी।

साजना० स० क्रि० पाहराना, सँवारना, सजाना, सारना।

साजी० ना० सा०जा पूरी हुई नहीं है।

साझा० ना० पु० व्यापारादि में भाग, मनुष्यका मल, शराकत।

साझी० ना० पु० साथी, भागी, शरीक।

साठ० गु० दश दहाई ६०।

साठी० ना० पु० धान वा चावलविशेष।

साढ़साती० गु० शनैश्चर जो साढ़ेसात वर्ष तक रहता है।

साढ़ा० गु० साढ़ा।

साढ़ू० ना० पु० जोरू की बहन का पति।

साढ़े० गु० जिस गिनती वा आदि में यह लगाते हैं उससे एकका आधा अधिक गिनिन हो जाते, २॥

सात० सप्त, ७।

सात्यकि० ना० पु० मनविशेष, सारथिविशेष।

सात्त्विक० गु० सतोगुणी, उत्तमदान।

साथ० अव्य० सङ्ग।

साथरी० ना० स्त्री० आसनी, बिछौना।

साथी० गु० सङ्गी, सङ्गवाला।

सादर० गु० आदरसमेत।

सादरा० ना० पु० गीतविशेष।

सादृश्य० ना० पु० समानता, उपमा, तुल्यता, दृष्टान्त।

साध० ना० स्त्री० इच्छा, चाह, चोप गु० साधु, अच्छामनुष्य।

साधक० ना० पु० तपस्वी, साधु, साधन करने हारा।

साधन० ना० पु० अभ्यास, चिन्तन, परमार्थ का अनुष्ठान, बनावट, उपाय, नित्यक्रिया।

साधनक्रिया० ना० स्त्री० रूपबनानेका काम।

साधना० स० क्रि० हिलाना, सिखलाना, सीखना, सुधारना, अभ्यास करना, साजना, निबाहना, ना० स्त्री० अभ्यास, निबाह, बनावट, उपाय, नित्यक्रिया, तदबीर।

साधनिका० ना० स्त्री० साधना, उपाय, तदबीर।

साधस० ना० पु० डर, भय, त्रास।

साधारण० गु० सामान्य, सीधा।

साधी० गु० सीधीहुई, ठहराई गई।

साधु० गु० जिसका व्यवहार उत्तम है, धन्य, सुन्दर ना० पु० सन्त, साहूकार।

साधुता० ना० स्त्री० साधुका कर्म वा चाल।

साधुमत० ना० पु० शिष्टाचार, आदर, गु० श्रेष्ठसम्मत।

साधुसाधु० गु० धन्य धन्य।

साधू० ना० पु० सन्त गु० उपकारी, निष्पाप, सज्जन।

साध्य० गु० जानने जाने योग्य, साधना के योग्य, रोगी, जो औषध के योग्य है।

साध्वी० ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री।

सान० ना० पु० सान, धार।

सानना० स० क्रि० मिलाना, मिलाना, गूंधना।
सानन्द० गु० आनन्द सहित।
सानपुकाना० स० क्रि० सैन से समझाना।
सानी० ना० स्त्री० भूसा खलीकी मिलौनी।
सानुकूल० गु० प्रसन्न, राजी, कृपालु।
सान्त्वन० ना० पु० मिलाप।
सान्निध्य० ना० पु० सामीप्य, समीपता।
सापन० ना० पु० रोगविशेष जिससे बालकम क्रम से गिरजाते हैं।
सापराध० गु० जो दण्ड के योग्य कामकरे।
साबर० ना० पु० बारहसिंगा वा उसका चर्म,सिद्धमन्त्र, चोरोंका हथियार जिससे सेंध लगाते हैं, शिवकृत मन्त्रराज।
साबरमन्त्र० ना० पु० भाषा में मन्त्रविशेष।
साम० ना० पु० तीसरा वेद, जो मूसल वा लाठी या बेत आदि के अन्त में पीतल आदि लगाते हैं।
सामग्री० ना० स्त्री० वस्तु, सामान।
सामञ्ज० ना० पु० समय, काल।
सामध० ना० पु० समधाना, समधियों का मिलना।
सामर० ना० पु० लवणविशेष।
सामर्थी० गु० बलवान्, शक्तिमान्।
सामर्थ्य० ना० स्त्री० सामर्थ, ताकत, शक्ति।
सामा० ना० स्त्री० नानाप्रकार का भाजन, सामग्री।
सामाजिक० ना० पु० सभाआदि के काम में जो चतुर व दिखैया वा सहायक।
सामान्य० गु० साधारण, जातिवाचक।
सामान्यता० ना० स्त्री० सामान्यपन।
सामी० ना० पु० साम, सामने, सामवेदी।
सामीप्य० ना० पु० पास के योग्य, मुक्तिविशेष जिसमें इष्टदेव के पास बसता है।
सामुद्रि० ना० पु० समुद्रलोन।
सामुद्रिक० ना० स्त्री० विद्याविशेष, अङ्गरी विद्या जिसमें हस्तादि रेखा विचारते हैं।
सामुहे० अव्य० सामने, समुहे।
साम्राज० ना० पु० सम्राट।
साम्हे० अव्य० सन्मुख, आगे।
साम्हना० अव्य० सामना।
सायक० ना० पु० बाण, तीर।
सायंकाल० ना० पु० सन्ध्यासमय।
सायुज्य० ना० पु० मुक्तिविशेष जिसमें ईश्वर लीन होता है।
सार० ना० पु० खाद, लोहा, गूदा, हीर, मोल, सर, वीर्य, धीरज, धर्म, वज्र, घर, अन, पाठका सार।
सारक० ना० पु० मांस, मैनापक्षी।
सारंग० ना० पु० रागविशेष, मयूर, मेघ, सर्प, मोर वा शब्द, मृग, सूर्य, घोड़ा, चन्द्रमा, हाथी, आकाश, पर्वत, सिंह, भुज, पपीहा, मेढक, दीपक, ज्योति, कोयल, चामर, बाल, हंस, पुष्प, खञ्जन, कमल, कामदेव, धरती, तालाब, छन्दर, पक्षी, पानी, विष्णु का धनुष, कपड़ा, रात्रि, स्त्री, भ्रमर, मधुमाखी, देशविशेष।
सारंगिया० ना० पु० सारंगी बजानेहारा।
सारंगी० ना० स्त्री० बाजाविशेष, किंगरी।
सारथी० ना० पु० रथवान्।
सारदा० ना० स्त्री० शारदा, सरस्वती, वाग्देवता।
सारना० स० क्रि० करना, निबाहना, बिगड़ना, सुधारना, पालना, पूराकरना।
सारस० ना० पु० पक्षीविशेष, कमल।
सारसजात० ना० पु० ब्रह्मा।
सारस्वत० ना० पु० देशविशेष, ब्राह्मण जातिविशेष।
सारा० गु० सम्पूर्ण, समस्त, साला।
साराय० ना० पु० संक्षेप।
सारासार० गु० सत्यासत्य, सारभूत।
सारिका० ना० स्त्री० मैनापक्षी।
सारी० ना० स्त्री० मसारि, मैना, पक्षी, साड़ी,

जोरू की बहन।
साऊ॰ ना॰ पु॰ पक्षीविशेष।
सारूप्य॰ ना॰ पु॰ इष्ट का रूप बनजाना, मुक्ति विशेष।
सार्थ॰ गु॰ जिसमें अर्थ पाया जावे, जो अर्थ समझते।
सार्थक॰ गु॰ सफल, अर्थवाला।
सार्वभौम॰ ना॰ पु॰ सर्वपृथ्वी का राजा, कुबेर का हस्तीविशेष।
साल॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष, कांटा, छेद, शाला, सियार।
सालतीसुत॰ ना॰ पु॰ जायफल।
सालन॰ ना॰ पु॰ तरकारी, छेदन।
सालनिर्यास॰ ना॰ पु॰ राल, गुग्गुल।
सालना॰ स॰ क्रि॰ छेदना, बेधना, अ॰ क्रि॰ दु:खना, पीड़ित होना।
सालसा॰ ना॰ पु॰ औषधविशेष।
साला॰ ना॰ पु॰ पत्नीका भाई, शाला, ना॰ स्त्री॰ पिप्पली।
सालिग्राम॰ ना॰ पु॰ विष्णुरूपी पाषाणविशेष।
साली॰ ना॰ स्त्री॰ बीबीकी बहन।
सालू॰ ना॰ पु॰ लालवर्ण वस्त्रविशेष।
सालूक॰ ना॰ पु॰ जायफल।
सालोक्य॰ ना॰ पु॰ मुक्तिविशेष, इष्टदेव के लोक में वास पाना।
सालोतरी॰ ना॰ पु॰ घोड़ों का वैद्य।
सावक॰ ना॰ पु॰ बालक, बच्चा।
सावकाश॰ } ना॰ पु॰ अवकाश, [illegible],
सावकास॰ } थान, अन्तर, छुट्टी, फुरसत।
सावज॰ गु॰ बनैला, जंगलीजीव, मृग, ना॰ पु॰ अहेर।
सावधान॰ गु॰ चौकस, सजग, [illegible]।
सावधानी॰ ना॰ स्त्री॰ चौकसाई, [illegible]।
सावन॰ ना॰ पु॰ श्रावण।
सावन्त॰ गु॰ शूर, योधा, वीर।
सावन्ती॰ ना॰ स्त्री॰ [illegible], [illegible], [illegible]।

सावयव॰ गु॰ साङ्ग, अवयव सहित।
सावर॰ ना॰ पु॰ साबर।
सावर्णि॰ ना॰ पु॰ दूसरामनुविशेष।
सावित्री॰ ना॰ स्त्री॰ माता, महतारी।
सास॰ ना॰ स्त्री॰ पत्नी वा पतिकी माता।
सासन॰ ना॰ पु॰ शासना।
सासना॰ स॰ क्रि॰ ताड़ना, डाटना।
सासु॰ ना॰ स्त्री॰ सास।
साहु॰ ना॰ पु॰ बनिया, महाजन, साधु।
साहचर्य्य॰ ना॰ पु॰ सङ्गति, साथ।
साहन॰ ना॰ स्त्री॰ साहकी स्त्री।
साहनी॰ ना॰ स्त्री॰ सेना, फौज।
साहस॰ ना॰ पु॰ बरबस, बलात्कार, दौरात्म्य, ढाढ़स, बिनाविचार।
साहसी॰ गु॰ बरबसिया, निडर, वीर।
साहाय्य॰ ना॰ पु॰ मित्रता, [illegible]।
साहित्य॰ ना॰ पु॰ सङ्गता, [illegible]।
साही॰ ना॰ पु॰ जन्तुविशेष। [illegible] में कांटा होते हैं।
साहू॰ } ना॰ पु॰ [illegible]।
साहूकार॰ }
साहूकारी॰ [illegible], [illegible]।
साक्षात्॰ [illegible], [illegible]।
[illegible] ना॰ पु॰ [illegible]।
[illegible] ना॰ स्त्री॰ गगरी, [illegible], ना॰ पु॰ [illegible]।
सिन्दल॰ ना॰ पु॰ [illegible]।
सिंचित्रिका॰ ना॰ स्त्री॰ [illegible]।
सिंहुआ॰ ना॰ पु॰ [illegible]।
सिंह॰ ना॰ पु॰ [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]।
सिंहल॰ ना॰ पु॰ [illegible], [illegible]।
सिंहनाद॰ ना॰ पु॰ [illegible]

शब्द, सिंहका शब्द।

सिंहनी॰ ना॰ स्त्री॰ सिंहकी स्त्री।

सिंहपौर॰ } सिंहपौरि॰ } सिंहपौल॰ } ना॰ स्त्री॰ सिंहद्वार, ड्योढ़ी।

सिंहमुखी॰ ना॰ पु॰ बाम।

सिंहल॰ ना॰ पु॰ सिंहलद्वीप।

सिंहलक॰ ना॰ पु॰ पीतल।

सिंहलद्वीप॰ ना॰ पु॰ भारतखण्ड के दक्षिण में उपद्वीपविशेष।

सिंहासन॰ ना॰ पु॰ देवतों और राजाओं का आसन, पाट, श्रेष्ठासन, तख्तशाही।

सिंहिका॰ ना॰ स्त्री॰ निशाचरीविशेष।

सिकटा॰ ना॰ पु॰ ठिकरा।

सिकता॰ ना॰ स्त्री॰ सिक्ता, बालू, रेत।

सिकरा॰ } सिकली॰ } ना॰ स्त्री॰ कुण्डली, सकत।

सिख॰ ना॰ पु॰ शिष्य, नानकशाही, ना॰ स्त्री॰ सीख।

सिखनारद॰ ना॰ स्त्री॰ शिक्षा, सिखावट।

सिखर॰ ना॰ पु॰ चोटी, शिखर।

सिखरन॰ ना॰ पु॰ दही और शक्कर मिलौनी।

सिखलाना॰ स॰ क्रि॰ पढ़ाना, दिखलाना, डाटना, ताड़नकरना।

सिखा॰ ना॰ स्त्री॰ चोटी।

सिखाना॰ } सिखवना॰ } स॰ क्रि॰ सिखलाना।

सिखिकण्ठ॰ ना॰ पु॰ नालाथोथा।

सिगरो॰ गु॰ सब, सारा, सकल।

सिंगरौर॰ ना॰ पु॰ शृङ्गवेरपुर।

सिंगा॰ ना॰ पु॰ तुरही।

सिंगार॰ ना॰ पु॰ शोभा, सजावट, आभरण, शृंगार।

सिंगारना॰ स॰ क्रि॰ सजाना, शृंगार कराना।

सिंगारिया गु॰ देवता का शृंगारकरनेहारा।

सिंगौटी॰ ना॰ स्त्री॰ सींगमें बनाइया पैंटना, बैलके सींगपर भूषणविशेष।

सिंघाड़ा॰ ना॰ पु॰ पौधा जो जल में होताहै वा उसीका फल, भूषणविशेष।

सिंघाण॰ ना॰ पु॰ नाकका मैल।

सिंघी॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ी कगई।

सिझाना॰ स॰ क्रि॰ पकाना।

सिट॰ ना॰ स्त्री॰ बौखाहट, बौड़ापन।

सिटन॰ ना॰ स्त्री॰ पागली, बौरही।

सिटपन॰ ना॰ पु॰ बौरहापन।

सिटा॰ } सिटी॰ } गु॰ पागल, बौरहा।

सित॰ गु॰ श्वेत, सफेद, उजला।

सितकण्ठ॰ ना॰ पु॰ महादेवजी।

सितरी॰ ना॰ स्त्री॰ स्वेद, पसीना।

सिताम्भोज॰ ना॰ पु॰ सफेदकमल, श्वेतकमल।

सिद्ध॰ ना॰ पु॰ देवतानविशेष जो उच्च लोक में बसते हैं, साधु अर्थात् जो अष्टसिद्धि के वशों हैं गु॰ महात्मा, श्रेष्ठमना, कृतार्थ, पक्व, बना, लब्ध, पूर्ण, कामिल, कारी।

सिद्धरूप॰ ना॰ पु॰ प्रथमही से जिसका रूप बनाहै, जो दूसरे से नहीं बना।

सिद्धान्त॰ ना॰ पु॰ वादी प्रतिवादी से निर्णीत जो अर्थ, कोईदोविशेष।

सिद्धान्तशिरोमणि॰ ना॰ स्त्री॰ ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।

सिद्धान्ती॰ ना॰ पु॰ मीमांसक, मतावलम्बी।

सिद्धि॰ ना॰ स्त्री॰ वाञ्छितार्थ की प्राप्ति, देवतों की पूजा वा तपस्या का फल, मन्त्रादि जपने से जो पराक्रम, शक्ति, शुद्धता, अणिमादिक अष्ट, फल, कीर्ति, करामात।

सिद्धिदा॰ ना॰ स्त्री॰ भगवती, गु॰ सिद्धिदाता।

सिद्धिदाता॰ ना॰ पु॰ श्रीगणेशजी, गु॰ सिद्धि देनेहारा।

सिद्धिरूपी॰ गु॰ जो आपही सिद्धि होवे।

सिधाना० अ० क्रि० दौड़ना, जाना, चला जाना।
सिधारना० } अ० क्रि० चलाजाना, उठजाना,
सिधार्नो० } स० क्रि० सुधारना, ठीक करना।
सिनक० ना० पु० रेंट, पोंग, नेटा।
सिनकना० स० क्रि० नाक झाड़ना।
सिन्दुक० ना० पु० सम्हालू पौधा।
सिन्दुवारक० ना० पु० सम्हालूपौधा।
सिन्दूरक० ना० पु० वृक्ष विशेष।
सिन्दूर० ना० पु० लालवर्ण चूर्णविशेष जो स्त्रियां मांगमें लगाती हैं।
सिन्धु० ना० पु० समुद्र देश विशेष, नदी विशेष।
सिन्धुज० ना० पु० सेंधनलोन, १४ रत्न।
सिन्धुर० ना० पु० हाथी।
सिन्धुरगामी० गु० गजगामी।
सिपाह० ना० स्त्री० सेना, यह शब्द फ़ारसी का है।
सिपाहसालार० ना० पु० सेनापति, फ़ारसी शब्द।
सिपाही० ना० पु० पैदल, चपरासी, यह भी शब्द फ़ारसी का है।
सिम० ना० पु० मछली।
सिमट० ना० स्त्री० सकोच, सिकोर।
सिमटजाना० } अ० क्रि० सिकुरना, बटुरना।
सिमटना० }
सिमाना० ना० पु० सिवाना, धूरा।
सिम्बल० ना० पु० सम्हालू।
सिय० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।
सियनि० ना० स्त्री० सीयनी।
सियनिन्दक० ना० पु० रजक विशेष जो श्रयोध्यापुरी में बसता था और श्रीसीताजी को लाञ्छन लगाया था।
सियरा० गु० ठंढा, कच्चा।
सियरी० ना० स्त्री० ठंढी, कच्ची।
सिया० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।
सियार० } ना० पु० शृगाल, गीदड़।
सियाल० }
सिर० ना० पु० शिर मस्तक।
सिरका० ना० पु० खट्टीवस्तु विशेष जो मीठे से बनती है।
सिरकी० ना० स्त्री० सरकण्डाविशेष, सेंठाका ऊपरी भाग या उसीकी बनीवस्तु जो पानी रोकने के लिये होती है।
सिरखप० गु० मनचला।
सिरखपी० ना० स्त्री० जोखिम, दादरा।
सिरजन० ना० पु० रचाव, उत्पत्ति, बनाव।
सिरजनहार० ना० पु० ईश्वर, रचनेहारा, उपजानेहारा।
सिरजना० स० क्रि० रचना, उत्पन्न करना, बनाना।
सिरजा० गु० बनाया हुआ, उपजाया गया।
सिरजोर० गु० मुंहजोर, हठीला।
सिरहाना० ना० पु० तकिया, खाटका सिर सिराहो।
सिरात० गु० ठंढा, बीता।
सिराना० स० क्रि० ठंढाना, बढ़ाना, पठाना, व्यतीत करना।
सिरानी० गु० स्त्री० बीतगई, ठंढी भई।
सिरिस० ना० पु० वृक्षविशेष, शिरीष।
सिरोधी० ना० पु० कंठ, गला, गर्दन।
सिल० ना० पु० शिला।
सिलपट० गु० चौपट।
सिलपट्टा० ना० पु० सिलका पट्टा।
सिलवाना० स० क्रि० सिलाना।
सिला० ना० स्त्री० शिला, पाषाण विशेष जिस पर मसाला पीसते हैं।
सिलाई० ना० स्त्री० सिलाने का काम या पेशा।
सिलाजीत० ना० पु० असमन, औषध विशेष।

शब्द, सिंहका शब्द।
सिंहनी० ना० स्त्री० सिंहकी स्त्री।
सिंहपौर०
सिंहपौरि०
सिंहपौर० } ना० स्त्री० सिंहद्वार, ड्योढ़ा।
सिंहमुखी० ना० पु० वास।
सिंहल० ना० पु० सिंहलद्वीप।
सिंहलक० ना० पु० पीतल।
सिंहलद्वीप० ना० पु० भरतखण्ड के दक्षिण में उपद्वीपविशेष।
सिंहासन० ना० पु० देवतों और राजाओं का आसन, पाट, भद्रासन, तख्तशाही।
सिंहिका० ना० स्त्री० निशाचरीविशेष।
सिकटा० ना० पु० ठिकरा।
सिकता० ना० स्त्री० सिका, बालू, रेत।
सिकरा०
सिकली० } ना० स्त्री० कुरकुना, सकल।
सिख० ना० पु० शिष्य, नानकपन्थी ना० स्त्री० सीख।
सिखनारक० ना० स्त्री० शिक्षा, सिखावट।
सिखर० ना० पु० चोटी, शिखर।
सिखरन० ना० पु० दही और गुड़का मिलौना।
सिखलाना० स० क्रि० पढ़ाना दिखलाना, सूझना, ताड़नकरना।
सिखा० ना० स्त्री० चोटी।
सिखाना०
सिखवना० } स० क्रि० सिखलाना।
सिखिकण्ठ० ना० पु० नाल थोथा।
सिगरो० गु० सब, सारा, समस्त।
सिंगरौर० ना० पु० शृङ्गवेरपुर।
सिगा० ना० पु० तुरही।
सिंगार० ना० पु० शोभा, सजावट, आभरण, शृंगार।
सिंगारना० स० क्रि० सवारना, शृंगार कराना।
सिंगारिया गु० देवता का शृङ्गारकरनेहारा।
सिंगौटी० ना० स्त्री० सींगका बना,या पैंठा, बैलके सींगपर भूषणविशेष।
सिंघाड़ा० ना० पु० पौधा जो जल में होता है वा उसीका फल, भूषणविशेष।
सिंघाण० ना० पु० नाकका मैल।
सिंघी० ना० स्त्री० बड़ी कर्ण।
सिझाना० स० क्रि० पकाना।
सिड़० ना० स्त्री० बौराहट, बौराना।
सिड़न० ना० स्त्री० बावली, बौड़ही।
सिड़पन० ना० पु० बैरहापन।
सिड़ा०
सिड़ी० } गु० बावला बौदहा।
सित० गु० श्वेत, सफेद, उजला।
सितकण्ठ० ना० पु० मद दरामा।
सितरी० ना० स्त्री० स्वेद, पसीना।
सिताम्भोज० ना० पु० शुक्लकमल, श्वेत कंज।
सिद्ध० ना० पु० देवतानविशेष जो दूर लाल में वरते हैं, साधु अर्थात् जो अष्टसिद्धि को वरो हैं गु० महात्मा, अच्छा, कृतार्थ, पक, बना, लस, पूर्ण, कामिल, कार्मी।
सिद्धरूप० ना० पु० प्रथमही से जिसका रूप बना है, जो दूसर से नहा बना।
सिद्धान्त० ना० पु० बादी प्रतिवादी से निर्णीत जो अर्थ, कोई विशेष।
सिद्धान्तशिरोमणि० ना० स्त्री० ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।
सिद्धान्ती० ना० पु० मीमांसा मतावलम्बी।
सिद्धि० ना० स्त्री० वाञ्छितार्थ की प्राप्ति, देवतों की पूजा वा तपस्या का फल, मन्त्रादि जपने से जो पराक्रम, मुक्त, शुद्धता, अणिमादिक अष्ट, फल कारित, करामात।
सिद्धिदा० ना० स्त्री० भगवती, गु० सिद्धि दाता।
सिद्धिदाता० ना० पु० श्रीगणेशजी, गु० सिद्धि देनेहारा।
सिद्धिरूपी० गु० जो अपनी सिद्धि होवे।

सिधाना० अ० क्रि० दौड़ना, जाना, चला जाना।

सिधारना०
सिधारनो० } अ० क्रि० चलाजाना, उठजाना, स० क्रि० सुधारना, ठीक करना।

सिनक० ना० पु० रेंठ, पोंग, नेटा।

सिनकना० स० क्रि० नाक झाड़ना।

सिन्दुक० ना० पु० सभालू पौधा।

सिन्दुवारक० ना० पु० सभालूपौधा।

सिन्दूरक० ना० पु० वृक्ष विशेष।

सिन्दूर० ना० पु० लालरङ्ग चूर्णविशेष जो स्त्रिया मांगमें लगाती हैं।

सिन्धु० ना० पु० समुद्र देश विशेष, नदी विशेष।

सिन्धुज० ना० पु० सेंधानोन, १४ रत्न।

सिन्धुर० ना० पु० हाथी।

सिन्धुरगामी० गु० गजगामी।

सिपाह० ना० स्त्री० सेना, यह शब्द फ़ारसी का है।

सिपाहसालार० ना० पु० सेनापति, फ़ारसी शब्द।

सिपाही० ना० पु० पदग, चपरासी, यह भी शब्द फ़ारसी का है।

सिम० ना० पु० मछली।

सिमट० ना० स्त्री० सकोच, सिकोर।

सिमटजाना०
सिमटना० } अ० क्रि० सिकुरना, बटरना।

सिमाना० ना० पु० सिवाना, धुरा।

सिम्यत० ना० पु० समावृत्त।

सिय० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।

सियनि० ना० स्त्री० सीवनि।

सियनिन्दक० ना० पु० रजक विशेष जो अयोध्यापुरी में बसता था और श्रीसीताजी को लाञ्छन लगाया था।

सियरा० गु० ठढा, कच्चा।

सियरी० ना० स्त्री० ठढी, कच्ची।

सिया० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।

सियार०
सियाल० } ना० पु० शृगाल, गीदड़।

सिर० ना० पु० शिर मस्तक।

सिरका० ना० पु० खट्टीवस्तु विशेष जो माठे से बनती है।

सिरकी० ना० स्त्री० सरकण्डाविशेष, सेंठाका ऊपरी भाग या उसकी बनीवस्तु जो पानी रोकने के लिये होती है।

सिरखप० गु० मनचला।

सिरखपी० ना० स्त्री० जोखिम, दादस।

सिरजन० ना० पु० रचाव, उपजि, बनाव।

सिरजनहार० ना० पु० ईश्वर, रचनेहारा, उपजानेहारा।

सिरजना० स० क्रि० रचना, उपजा करना, बनाना।

सिरजा० गु० बनाया हुआ, उपजाया गया।

सिरताज० गु० गुणकरनेहारा, दयैत।

सिरहाना० ना० पु० तकिया, खाटका जिधर सिराहो।

सिरात० गु० ठढा, बीता।

सिराना० स० क्रि० ठगाना, बहाना पठाना, व्यतीत करना।

सिरानी० गु० स्त्री० बीतगई, रानी भई।

सिरिस० ना० पु० वृक्षविशेष, शिरीष।

सिरोधी० ना० पु० कठ, गला, गर्दन।

सिल० ना० पु० शिला।

सिलपट० गु० चौपट।

सिलबट्टा० ना० पु० सिलवा बट्टा।

सिलवाना० स० क्रि० सिलाना।

सिला० ना० स्त्री० शिला, पाषाण विशेष जिस पर मसाला पीसते हैं।

सिलाई० ना० स्त्री० सिलाने का काम या पैसा।

सिलाजीत० ना० पु० अश्मज, धौत शिलाजीत।

सीपी के समान होती है, सीपी।
सीपसुत० ना० पु० मोती।
सीपी० ना० स्त्री० जलजन्तुविशेष।
सीमती० } ना० स्त्री० स्त्री, बाला।
सीमन्ती० }
सीमा० ना० स्त्री० हद्द, डाड़ा, धूरा, मर्य्याद, सिवाना, अवधि।
सिय० } ना० स्त्री० श्रीजानकी जी।
सिया० }
सीर० ना० पु० हल, खेती जिनकी।
सीरपाणि० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
सीरा० गु० शीतल, ना० पु० मोहनभोग, शीरा।
सील० ना० पु० शील।
सीला० गु० गीला, शीतल, ना० पु० अन्न का बीनना।
सीव० ना० पु० सींव, मर्य्याद, सीम।
सीवली० ना० पु० जातिविशेष।
सीस० ना० पु० शीर्ष, शिर, शिला।
सीसक० } ना० पु० धातुविशेष।
सीसा० }
सीसों० ना० पु० शीशम वृक्षविशेष।
सु० अव्य० इसका प्रयाग जिस शब्द क प्रथम में हो उसके अर्थ में अधिकाई वा भलाई वा उत्तमता समझी जाती है यथा सुबुद्धि सुकर्म आदि, और स यथा जासु अर्थात् जिस से, सो।
सुंघाना० स० क्रि० महकाना।
सुंघावट० ना० पु० महक, गन्धि, बास।
सुअञ्जन० ना० पु० अच्छा अजन, सिद्धात।
सुअर० ना० पु० सूअर।
सुआर० ना० पु० रसोइया, बावर्ची, रसोई करनेहारा।
सुआसिन० ना० स्त्री० माय, नानहारकी स्त्री।
सुकचाना० अ० क्रि० डरना, सकोचितहोना।
सुकड़ा० गु० पतला, दुबला।
सुकड़ी० गु० स्त्री० दुर्बल, दुबली, सूखी।
सुकड़ना० अ० क्रि० सिकुड़ना, बटुरना, समिटना।
सुकण्टक० ना० पु० पिण्डखजूर।
सुकंठ० ना० पु० सुग्रीव, गु० अच्छागला।
सुकनास० ना० पु० स्योनावृक्ष।
सुकर० गु० सहज, करने क योग्य।
सुकचार० गु० कोमल, निर्मल।
सुकसारण० ना० पु० रावण क दूत।
सुकाल० ना० पु० अच्छीऋतु, बहुतात, अच्छा समय हर।
सुकांडक० ना० पु० करेला तरकारी।
सुकुचना० अ० क्रि सकुचाना।
सुकुमार० गु० सुकवार, नर्म्म, कमसिहत, ना० पु० चम्पा, केला, गन्ना, बालक।
सुकृत० ना० पु० भलाई, पुण्य, कीर्ति, सवाब, गु० अच्छी रीति स किया गया, अच्छा कर्म।
सुकृती० गु० पुण्यवान्, भाग्यवान्, धर्मात्मा, दाता।
सुकेत० ना० पु० दक्षजातिका देवताविशेष।
सुकेतसुता० ना० स्त्री० ताड़का निशाचरी।
सुकेशी० ना० स्त्री० अप्सराविशेष।
सुख० ना० पु० चैन, कल, सन्तोष, आनन्द।
सुखचैन० ना० पु० विश्राम, सावकाश।
सुखतला० ना० पु० जूत म दूसरातला।
सुखद० गु० सुखदायक, अच्छा।
सुखदर्शन० ना० पु० पाषाणविशेष जिसको रस्सी म पीड़ा क समय डालते हैं।
सुखदाता० गु० सुख दनहारा।
सुखदान० ना० पु० सुखका दान।
सुखदानी० } गु० सुखका दनहारा।
सुखदायक० }
सुखदास० ना० पु० धानकी एक जाति।
सुखदेव० ना० पु० दासका सुख।
सुखपाल० ना० पु० पालकी विशेष।
सुखपूर्वक० अव्य० सुख स।
सुखमा० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति, चमक।

सिलाना० स० क्रि० सिलवाना, लगाना।
सिलारस० ना० पु० शिलाजीत।
सिली० ना० स्त्री० पथरी, शाण।
सिलीमुख० ना० पु० बाण, भ्रमर।
सिवाना० ना० पु० सीमा, डाड़ा, धूरा, हद।
सिविका० ना० स्त्री० पालकी विशेष।
सिष्ट० गु० बुद्धिमान्, अच्छा।
सिसकना० अ० क्रि० बिसुरना।
सिसकी० ना० स्त्री० वृक्ष।
सिस्न० ना० पु० लिंग, मदनाङ्कुश।
सिहरा० ना० पु० मौर।
सिहराऊ० गु० थराऊ, उचाट।
सिहराना० स० क्रि० थरेना, उचाट करना, सहलाना।
सिहर्नी० अ० क्रि० कांपना।
सिहाना० अ० क्रि० प्रसन्नहोना, खुशहोना।
सींक० ना० स्त्री० तृणविशेष जिसका झाड़ बनती है।
सींकर० ना० पु० सींकका फूल।
सींका० ना० पु० घर, छींका।
सींकिया० गु० डण्डीदार, धारीदार, लहरिया, डोरिया।
सींग० ना० पु० शृङ्ग।
सींगड़ा० ना० पु० बारूद रखने का सींग।
सींगा० ना० पु० नरसिंगा।
सींगिया० ना० पु० विष विशेष।
सींगी० ना० स्त्री० छोटानरसिंगा, मछली विशेष, तोमड़ी।
सींच० ना० स्त्री० पानी की बाढ़।
सींचना० स० क्रि० सींचना, पाटना, पानीदेना।
सींचाई० ना० स्त्री० सींचने का पैसा वा काम।
सींची० ना० स्त्री० सींचने का समय।
सींव० ना० पु० सीमा, मर्य्यादा।
सीकर० ना० पु० क दविशष।
सीख० ना० स्त्री० शिक्षा, पाठ, विद्या, ताड़ना, सिखाना।
सीखना० स० क्रि० विद्या उपार्जन करना, पाना।
सींचना० स० क्रि० सींचना, पानीदेना।
सीझ० ना० पु० पौधाविशेष।
सीजना० अ० क्रि० रिसना, निकलना, उबलना, उबलना।
सीटी० ना० स्त्री० मुख से बजावट।
सीठ० ना० स्त्री० फोंग, मूद, छानन।
सीठना० ना० पु० } विवाह में गाली समत गीत
सीठनी० ना० स्त्री० } स्त्रियां गाती हैं।
सीठा० गु० नीरस, रसहीन, फीका, असार, रोगहा।
सीठी० ना० स्त्री० सीठ, सीगी।
सीढ़ी० ना० स्त्री० नसेनी, सोपान, आरोहण, जीना।
सीत० ना० पु० शीत, ओस।
सीतरस० ना० पु० मुहपटका रोग।
सीतलचीनी० ना० स्त्री० औषधविशेष।
सीतलपाटी० ना० स्त्री० चटाईविशेष।
सीतला० ना० स्त्री० माता, गोटी, चेचक।
सीता० ना० स्त्री० निधि, क्षमा, गगा, श्रीजानकी जी।
सीताकुण्ड० ना० पु० मुंगेर के पास तीर्थ विशेष।
सीतांग० ना० पु० शीतांग, सङ्कुचा।
सीताफल० ना० पु० आता, लौका, कद्दू।
सीताश्रम० ना० पु० सीताका आश्रय।
सीदना० अ० क्रि० दुःखी होना, दुःखपाना।
सीधा० गु० सोझा, निश्चल, भोला, खरा, सूधा, ना० पु० भोजन की सामग्री।
सीधाई० ना० स्त्री० सोझ, भोलापन, खराई, सुधाई।
सीना० स० क्रि० तगना, तागना, टाकना, तुरपना।
सीप० ना० स्त्री० आब विशेष जिसकी मुक्ती-

सीपी के समान होती है, सीपी।
सीपसुत० ना० पु० मोती।
सीपी० ना० स्त्री० जलजन्तुविशेष।
सीमता० } ना० स्त्री० स्त्री, बाला।
सीमन्ती० }
सीमा० ना० स्त्री० हद, डांड़ा, धूरा, मर्य्याद, सिवाना, अवधि।
सिय० } ना० स्त्री० श्रीजानकी जी।
सिया० }
सीर० ना० पु० हल, खेती निजकी।
सीरपाणि० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
सीरा० गु० शीतल, ना० पु० मोहनभोग, सीरा।
सील० ना० पु० शील।
सीला० गु० गीला, शीतल, ना० पु० अन्न का बीनना।
सीव० ना० पु० सींव, मर्य्याद, सीम।
सीवली० ना० पु० जातिविशेष।
सीस० ना० पु० शीर्ष, शिर, शिशा।
सीसक० } ना० पु० धातुविशेष।
सीसा० }
सीसों० ना० पु० शीशम वृक्षविशेष।
सु० अव्य० इसका प्रयोग जिस शब्द के प्रथम में हो उसके अर्थ में अधिकाई या भलाई वा उत्तमता समझी जाती है यथा सुबुद्धि सुकर्म आदि, और से यथा जासु अर्थात् जिस से, सो।
सुंघाना० स० क्रि० महकाना।
सुंघावट० ना० पु० महक, गन्धि, बास।
सुअञ्जन० ना० पु० अच्छा अंजन, सिद्धान्त।
सुअर० ना० पु० शूकर।
सुआर० ना० पु० रसोइयां, बावर्ची, रोटी करनेहारा।
सुआसिन० ना० स्त्री० मान्य, नातेदारकी स्त्री।
सुकचाना० अ० क्रि० डरना, संकोचितहोना।
सुकटा० गु० सूखा, दुबला।
सुकटी० गु० स्त्री० दुर्बल, दुबली, सूखी।
सुकड़ना० अ० क्रि० सिकुड़ना, बटुरना, समिटना।
सुकण्टक० ना० पु० पिण्डखजूर।
सुकण्ठ० ना० पु० सुग्रीव, गु० अच्छागला।
सुकनाश० ना० पु० स्योनावृक्ष।
सुकर० गु० सहज, करने के योग्य।
सुकवार० गु० कोमल, निर्मल।
सुकसारण० ना० पु० रावण के दूत।
सुकाल० ना० पु० अच्छीऋतु, बहुवात, अच्छा समय देर।
सुकांटक० ना० पु० करेला तरकारी।
सुकुचना० अ० क्रि सुकचाना।
सुकुमार० गु० सुकवार, नर्म्म, कममिहनत, ना० पु० चम्पा, केला, गन्ना, बालक।
सुकृत० ना० पु० भलाई, पुण्य, कीर्ति, सवाब, गु० अच्छी रीति से किया गया, अच्छा काम।
सुकृती० गु० पुण्यवान्, भाग्यवान्, धर्मात्मा, दाता।
सुकेत० ना० पु० दक्षजातिका देवताविशेष।
सुकेतसुता० ना० स्त्री० ताड़का निशाचरी।
सुकेशी० ना० स्त्री० अप्सराविशेष।
सुख० ना० पु० चैन, कल, सन्तोष, आनन्द।
सुखचैन० ना० पु० विश्राम, सावकाश।
सुखतला० ना० पु० जूते में दूसरातला।
सुखद० गु० सुखदायक, अच्छा।
सुखदर्शन० ना० पु० पौधाविशेष जिसका कान में पीड़ा के समय डालते हैं।
सुखदाता० गु० सुख देनेहारा।
सुखदान० ना० पु० सुखका दान।
सुखदानी० } गु० सुखका देनेहारा।
सुखदायक० }
सुखदास० ना० पु० धानकी एक जाति।
सुखदेव० ना० पु० देवताका सुख।
सुखपाल० ना० पु० पालकी विशेष।
सुखपूर्वक० अव्य० सुख से।
सुखमा० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति, चमक।

सुखलाना० स० क्रि० सुलाना, जलाना
सुखवक्ता० गु० मुखदेखी कहनेहारा।
सुखाना० स० क्रि० सुखलाना।
सुखारि० गु० आनन्द, सुख, आनन्दित।
सुखाला० गु० सहज।
सुखासन० ना० पु० सुखपाल।
सुखित० गु० आनंदित, चैन से युक्त।
सुखिया० } गु० आनंदित, चैनी, सुखी,
सुखी० } सतोषी।
सुखेन० ना० पु० सुख से, वैद्यविशेष जो राजा में धन्वन्तरिका पुत्रथा।
सुखेनी० ना० स्त्री० काला निसोत और बड़ा करौंदा।
सुगज० ना० पु० वानर विशेष जो रामदल में था, गु० अच्छाहाथी।
सुगन्धक० ना० पु० पुष्करमूल।
सुगन्धबन्धु० ना० पु० होम, यज्ञ।
सुगन्धि० ना० स्त्री० भली बास महक, गु० महकीला।
सुगन्धिक० ना० पु० कालाजीरा।
सुगम० गु० जाने के योग्य, चढ़न के योग्य, सहल, सहज, करने के योग्य, भला।
सुगरई० ना० स्त्री० रागिनीविशेष।
सुगाना० अ० क्रि० शक्करना, चित्तदाझना, स० क्रि० लगाना।
सुग्रीव० ना० पु० बानरोंका राजाविशेष, श्रीकृष्ण के रथका एकघोड़ा विशेष, गु० अच्छा कण्ठ।
सुघटित० गु० अच्छा बनायागया, पूराभया।
सुघड़० गु० सुडौल, सुशाल, सुन्दर।
सुघड़ई० ना० स्त्री० सुशीलता, सुन्दरता।
सुघाट० ना० पु० भलाघाट, अच्छाडौल, गरूर।
सुच० गु० शुच, पवित्र, निर्मल।
सुचक्र० गु० साची, सुचता, चौकस।
सुचरित्रा० ना० स्त्री० पतिव्रता।
सुचिन्त० } गु० चौकस, चिन्तारहित, भयसे
सुचित० } रहित, थिर, निश्चिन्त।

सुचिन्तित० गु० अति विचार, अच्छा मगवह।
सुचेत० गु० सुर्ती, चौकस, होशियार।
सुजन० गु० सज्जन, भला, आदरी, साधु।
सुजसी० गु० प्रतिष्ठित, कीर्तिमन्त।
सुजान० गु० प्रवीण, ज्ञानी, चतुर, बुद्धिमान्।
सुजाना० स० क्रि० फुलाना।
सुझाना० स० क्रि० दिखलाना, समझाना।
सुटकुन० ना० स्त्री० छड़, छड़ी।
सुठाम० गु० अच्छाठामवाला।
सुठि० ना० स्त्री० सोंठि, अव्य० अति, निहायत, बहुत, अधिक।
सुड़की० ना० स्त्री० गुड्डी की डोरी, अचानक से ढीलना।
सुडप० ना० स्त्री० सुड़की, घोंट।
सुडपना० अ० क्रि० सुड़कना, चाटना, चूसना।
सुड़ुकना० स० क्रि० सुड़कना, सींचना।
सुडौल० }
सुढब० } गु० सुन्दर, सुघरा।
सुढाल० }
सुण्ड० ना० स्त्री० हाथी की सूड़, सूड़।
सुण्डी० ना० स्त्री० पिप्पली, पिपरी।
सुत० ना० पु० लड़का, बेग।
सुतरा० ना० पु० कड़ा जो हाथ में पहनते हैं।
सुता० ना० स्त्री० बेटी, पुत्री।
सुतान० ना० पु० सुतका बहुवचन।
सुतार० ना० पु० बढ़ई, समय, घात, दार।
सुतारी० ना० स्त्री० सूजा, सूआ।
सुतीक्ष्ण० ना० पु० मुनिविशेष।
सुतुष्टि० ना० स्त्री० कला चन्द्रमाकी विशेष।
सुत्राम० ना० पु० इन्द्र।
सुथन० ना० पु० तम्बान, पायजामा।
सुथनी० ना० स्त्री० कन्दविशेष।
सुथरा० गु० अच्छा, सुन्दर, अनूठा, ना० पु० बाबानानक का एक शिष्य।
सुथराई० ना० स्त्री० सुन्दरता, भलाई।
सुथरासाही० ना० पु० भिक्षुकविशेष।

सुथल० } नाः पुः अच्छा स्थान, खुशमकान।
सुथान० }

सुदती० } नाः स्त्रीः वह स्त्री जिस के दांत
सुदन्ती० } अच्छे होवें, अच्छा हाथी।

सुदर्शन० नाः पुः श्री विष्णु के चक्र का नाम, वृक्षविशेष जिसको गुलाबजामुन कहते हैं, नाम एक चूर्ण का है, गुः दिखनौट।

सुदक्षिणा० नाः स्त्रीः राजादिलीपकी स्त्री का नाम, अच्छी अपूर्वदक्षिणा वा दान।

सुदामा० नाः पुः श्रीकृष्णचन्द्र का गुरुबन्धु।

सुदी० नाः स्त्रीः उजियाला पाख।

सुदुर्लभ० गुः अत्यन्त दुर्लभ।

सुदृश्य० गुः सुंदर, दिखनौट।

सुदृष्टि० नाः स्त्रीः अच्छीदृष्टि नाः पुः गिद्ध पक्षी, गुः विज्ञानी।

सुदेश० नाः पुः अच्छादेश, गुः अंग, सुन्दर, नेक।

सुध० नाः स्त्रीः स्मरण, चेत, सुधि, गुः शुद्ध।

सुधबुध० नाः स्त्रीः चेत, पहिचान, बूझ।

सुधरना० अः क्रिः बनना, सम्भलना, सजना।

सुधर्म० नाः पुः सत्यधर्म, अच्छाधर्म।

सुधर्मा० नाः स्त्रीः देवसभा, सुरसमाज।

सुधा० नाः स्त्रीः अमृत, जल।

सुधा० अव्यः समेत, सहित।

सुधांशु० }
सुधाकर० } नाः पुः चन्द्रमा।
सुधाधर० }

सुधाना० सः क्रिः चिताना, स्मरण देना।

सुधारना० सः क्रिः सवारना, बनाना, सतना।

सुधावास० नाः पुः चन्द्रमा, खीरफल।

सुधि० नाः स्त्रीः स्मरण, चेत, याद, खबर।

सुधी० गुः सुबुद्धि, पण्डित।

सुन० गुः शून्य।

सुनकातर० नाः पुः सर्पविशेष।

सुनबहरी० नाः स्त्रीः रोगविशेष।

सुनयना० गुः अच्छी आंखोंवाली नाः स्त्रीः श्रीजानकीजीकी माता।

सुनसर० नाः पुः भूषणविशेष।

सुनसान० गुः चुपचाप, उजाड़।

सुनहरा० गुः सुनहला, सोनैला।

सुनाना० सः क्रिः जताना, बतलाना, कहना, समझाना।

सुनाहट० नाः स्त्रीः सुनाहट, मौन।

सुनार० नाः पुः स्वर्णकार, सोनार।

सुनारिन्० नाः स्त्रीः सुनार की स्त्री।

सुनारी० नाः स्त्रीः सोनार का काम, रूपवती, गुः प्रवीण, चतुर।

सुनावनि० } नाः स्त्रीः विदेश में मरे का
सुनावनी० } समाचार।

सुनिर्यास० नाः पुः जिगनावृक्ष।

सुनीति० नाः स्त्रीः भली रीति, शिष्टाचार।

सुन्दर० गुः सुरूप, सुडौल, अच्छा, भला।

सुन्दरता० नाः स्त्रीः सुघराई, भलाई।

सुन्दरी० नाः स्त्रीः स्त्री, सुन्दर स्त्री, अच्छी।

सुन्ना० सः क्रिः कान धरना, श्रवण करना।

सुपच्च० गुः जो अच्छी विधि से पचजावे।

सुपट० नाः पुः अच्छा वस्त्र।

सुपंथ० नाः पुः अच्छामार्ग।

सुपर्व० नाः पुः गंगादि का नहान।

सुपक्ष० नाः पुः सच्चापक्ष, शुक्लपक्ष।

सुपक्षी० गुः अच्छा पक्ष करनेहारा, सत्सहायक।

सुपात्र० गुः योग्य, भलामानस।

सुपारी० नाः स्त्रीः पूगीफल, डली।

सुपास० नाः पुः आराम, सुबीता, सुख।

सुपुत्र० } गुः योग्य पुत्र, भला पुत्र, पुत्र,
सुपूत० } आज्ञाकारी पुत्र।

सुप्त० नाः पुः निद्रा, गुः सूता, निद्रित।

सुप्तोत्थित० गुः नींद से भड़भड़ायकर उठा।

सुप्रभा० नाः स्त्रीः पद्माक।

सुप्रलाप० नाः पुः सुवचन, अच्छीबातचीत।

सुफल० गु० जो अच्छाफल देता है, काम का उपार्जनी, पूरा, ना० पु० अच्छाफल, सिद्धि।
सुफला० ना० स्त्री० पिण्डतज्ञर।
सुबट० ना० पु० सड़क, अच्छा मार्ग।
सुभग० गु० सुंदर, अच्छा भाग्य।
सुभगा० ना० स्त्री० जिस स्त्री का पति बहुत प्रेमकरै, जो स्त्री बहुत पुत्र न मरै, सुहागिन।
सुभट० } सुभट्ट० } ना० पु० योधा, वीर, बहादुर, बलवान्, शूर।
सुभार्गी० गु० भाग्यवान्, नेकनसीब।
सुभाग्य० ना० पु० अच्छाभाग, नेकवख़्ती।
सुभीता० ना० पु० सुबीता, सावकाश।
सुभुज० ना० पु० सुबाहु, दैत्यविशेष।
सुमति० ना० स्त्री० भलमनसी, सत्त्वगुण, सुन्दर बुद्धि, ना० पु० बन्दीविशेष, राजा जनकका दिसौंधी।
सुमन० ना० पु० गेहूअन, धतूरा, पुष्पविशेष गु० जिसका मन शुद्धहो, शीलवान्।
सुमनस० ना० पु० देवता, फूल, वसन्त।
सुमना० ना० स्त्री० मालती, मुदिता, स्त्री, रति, अनेकार्थ यथा (सुमना कहिये मालती सुमना मुदिता तीय)
सुमनासुत० ना० पु० फुलेल आदि उबटन।
सुमन्त० ना० पु० राजादशरथका मन्त्रीविशेष।
सुमन्त्र० ना० पु० अच्छामन्त्र, नेकसलाह, अच्छा मता।
सुमरना० स० क्रि० स्मरण करना, नामलेना।
सुमरन० ना० पु० स्मरण, चेत, सुधि, समझौनी, सुमरनी।
सुमित्र० ना० पु० सूर्य, अच्छामित्र।
सुमित्रा० ना० स्त्री० लक्ष्मणजी की माता।
सुमिल० गु० चिकनी, चिकन।
सुमृति० ना० स्त्री० स्मृति।
सुमेरु० ना० पु० देवताओं के बसने का पर्वत विशेष ज्योतिष में उत्तर ध्रुव।
सुमेल० गु० योग्यमिलापगर, अच्छामेल।
सुयश० } सुयशः० } ना० पु० सुख्याति, नेकनामी।
सुयोग० गु० अच्छा योग।
सुर० ना० पु० देवता, स्वर।
सुरआपगा० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी, रामचन्द्रिका यथा (उपरीन उज्ज्वलशोभिनै उर देखियोमलसबै, सुरआपगानपसिन्धु मैं जन श्वेत श्रीदशग्रब)
सुरऋषि० ना० पु० सुरर्षि, नारदजी।
सुरकना० स० क्रि० सुड़कना।
सुरकुरू० ना० पु० माणिक।
सुरगन्धज० ना० पु० पनग वृक्ष।
सुरगन्धर्नी० ना० स्त्री० स्वर्णकेतकी।
सुरगुरु० ना० पु० बृहस्पति।
सुरंग० ना० पु० सेंध, छद, ईंगुर, अच्छारंग।
सुरचाप० ना० पु० इन्द्रधनुष जो मेघकी बूंदों पर सूर्यकी किरणें पड़ने से प्रकटता है।
सुरत० ना० स्त्री० सुधि, स्मृति, मैथुन।
सुरता० गु० सुरतीला।
सुरती० ना० स्त्री० तमाकू खाने की।
सुरतीला० गु० विचारवान्, ध्यानी, चौकस।
सुरंग० ना० पु० रागविशेष, अच्छारंग।
सुरद्रुम० ना० पु० देवदारु, कल्पवृक्ष।
सुरपति० ना० पु० इन्द्र।
सुरभि० ना० स्त्री० सुगंधि, महक, वसन्तऋतु, गाय, ना० पु० जायफल, मृग, बेल, केला।
सुरभोग० ना० पु० अमृत।
सुरमणि० ना० पु० चिंतामणि, इन्द्र।
सुरमा० ना० पु० अंजन, यहशब्दफ़ारसीका है।
सुरमुनि० ना० पु० नारदमुनि।
सुरमृत्तिका० ना० स्त्री० फटकरी।
सुरराज० ना० पु० इन्द्र।
सुररूख० ना० पु० मदारवृक्ष, कल्पवृक्ष।
सुरर्षि० ना० पु० नारदजी।
सुरवीथी० ना० स्त्री० देवमार्ग।

सुरसर० ना० पु० मानसरोवर।
सुरसरि०, सुरसरिता० } ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
सुरश्रेष्ठ० ना० पु० ब्रह्मा, इन्द्र।
सुरस० गु० सुस्वाद।
सुरसी० ना० स्त्री० तुलसी पौधा।
सुरसुराना० अ० क्रि० सरसराना, गुदगुदाना।
सुरसुराहट० ना० स्त्री० सरसराहट, गुदगुदी।
सुरसुरी० ना० स्त्री० गुदगुदी, चींटीविशेष।
सुरसेनप० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
सुरा० ना० स्त्री० मदिरा, दारू, शराब।
सुराई० ना० स्त्री० बहादुरी।
सुराह्व० ना० पु० देवदारु।
सुराह्वा० ना० स्त्री० क्षीरकाकोली।
सुरापान० ना० पु० मदिरा पीना।
सुरारि० ना० पु० दैत्य, राक्षस।
सुरालय० ना० पु० सुमेरु, स्वर्ग, देवालय, सुरभवन।
सुराष्ट्र० ना० पु० गुजरात के समीप देश विशेष।
सुरुकना० स० क्रि० सुड़कना।
सुरूप० गु० सुन्दर, दिव्यांग, अच्छारूप।
सुरेन्द्र० ना० पु० सूरण, जिमींकन्द, इन्द्र।
सुरेश० ना० पु० इन्द्र।
सुरैत०, सुरैतिन० } ना० स्त्री० अविवाहिता, उढ़ली, रखनी, घरबैठी, उढ़री।
सुलगना० अ० क्रि० बरना, जलना, आंच उठना, धीरे धीरे जलना।
सुलगाना० स० क्रि० बारना, लूकालगाना, जलाना, परचाना।
सुलझना० अ० क्रि० खुलना, निबड़ना।
सुलझाना० स० क्रि० उधेड़ना, उकेलना, खोलना।
सुलभ० गु० सहजसे जो पाया जावे, साधारण।
सुलक्षण० ना० पु० शुभ के सूचक चिह्न, सुन्दरता।

सुलाना० स० क्रि० शयन कराना, पौढ़ाना, वध करना।
सुलोक० ना० पु० नेकनामी, सुयश, अच्छा लोक, अच्छा मनुष्य।
सुलोचना० ना० स्त्री० चकोरपक्षी, मेघनाद की स्त्री, अच्छी आंखोंवाली।
सुलोमश० ना० स्त्री० काक जंघा बूटी।
सुवक्ता० गु० भला कहनेहारा, अच्छापाठक।
सुवचन० ना० पु० विशदवाणी, अच्छीवार्ता।
सुवन० ना० पु० पुत्र, लड़का।
सुवर्चि०, सुवर्चिका० } ना० स्त्री० सज्जी लवण।
सुवर्ण० ना० पु० कनक, सोना, सुजाति, सुरंग।
सुवर्णद्रुमा० ना० स्त्री० किरवाली।
सुवर्त्त० ना० पु० आकाश, नाममालायां (अम्बर पुष्कर वहतनभ अन्तरिक्ष धनवास, व्योम अनन्त विहायसी खं सुवर्त्त आकास)
सुवल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक सखा।
सुवाना० स० क्रि० सुलाना।
सुवार० ना० पु० रसोइया, बावर्ची, रामायणे यथा (विविध भांति बैठी ज्यवनारा, लगे परोसन चतुर सुवारा)
सुवाहु० ना० पु० दैत्यविशेष।
सुविस्तरा० ना० स्त्री० गन्धप्रसारन।
सुवेल० ना० पु० समुद्रतट पर्वतविशेष।
सुवेला० ना० स्त्री० अच्छीसायत, अच्छाकाल।
सुवैया० ना० पु० सोनेहार।
सुशिक्षा० ना० स्त्री० भली शिक्षा, अच्छी सीख।
सुशिक्षित० गु० प्रवीण, अच्छी शिक्षापाये हुये।
सुशील० गु० जिसका शील अच्छा है, सुस्वभाव, साधु, शिष्टाचारी।
सुशीलता० ना० स्त्री० शिष्टाचार, स्वभाव में नम्रता।
सुश्री० ना० स्त्री० शोभा।
सुश्रूषा० ना० स्त्री० सेवा, आदर, खिदमत।

सुश्रेणी० ना० स्त्री० मार्ग, बाट, राह।
सुषुप्ति० ना० स्त्री० सुखनींद, अवस्थाविशेष।
सुसकारना० अ० क्रि० सनसनाना।
सुसताना० अ० क्रि० विश्राम करना, दम लेना।
सुसमय० ना० पु० अच्छा समय, बढ़ती का समय।
सुसम्बद्ध० गु० जिसकी अच्छे प्रकार रचना की गई है।
सुसर० } ना० पु० ससुर।
सुसरा० }
सुसराल० ना० स्त्री० ससुराल।
सुस्थ० गु० अरोगी, भला, चंगा।
सुस्थिर० गु० निश्चल, अटल।
सुस्मृति० ना० स्त्री० चैतन्यता, अच्छीस्मृति।
सुस्तचा० ना० स्त्री० सलोनी।
सुस्वाद० गु० सुरस, रसीला।
सुहाग० ना० पु० सौभाग्य, भलाभाग्य, पतिका प्यार, स्त्री का भूषणविशेष, जो पति के जीने का चिह्न, अहिवात।
सुहागन० ना० स्त्री० विवाहिता स्त्री, जिस स्त्री का पति जीता हो।
सुहागा० ना० पु० औषधिविशेष, जिससे सुवर्ण आदि गलता है।
सुहाता० गु० सोहना, चाहता, भला।
सुहाना० } गु० भावित, अच्छा, सोहना,
सुहावना० } चाहता, अ० क्रि० अच्छा लगना, रुचना, भावना।
सुहाल० ना० पु० } पक्वानविशेष।
सुहाली० ना० स्त्री० }
सुहौटी० ना० स्त्री० जो पटरी चौखट या छज्जे के ऊपर लगाते हैं।
सुहृद० ना० पु० मित्र, प्रियतम।
सूअर० ना० पु० } शूकर, वराह।
सूअरी० ना० स्त्री० }
सूआ० ना० पु० तोता, सुआ।

सूई० ना० स्त्री० वस्त्र सीने की वस्तुविशेष।
सूंगरा० ना० पु० भैंसका बच्चा, पड़वा।
सूंगा० ना० पु० टांगा, ठीहा।
सूंघ० ना० स्त्री० गन्ध, बास।
सूंघन० ना० स्त्री० सूंघने की वस्तु।
सूंघना० स० क्रि० बासलेना, गन्धग्रहना।
सूंघनी० ना० स्त्री० नास, हुलास।
सूंट० ना० स्त्री० चुप्पी, मौन।
सूंड़० ना० स्त्री० हाथी की नाक।
सूंड़ा० ना० पु० कृमिविशेष, कीड़ा।
सूंडी० ना० स्त्री० कलार, कलवार।
सूंतनी० } स० क्रि० कांड़ना, खैंचना, टहनी
सूंथना० } से पत्ती को निकालना या भिन्न करना।
सूंम० ना० पु० सूम।
सूकटा० गु० दुबला, निर्बल, सूखा।
सूकर० ना० पु० शूकर।
सूकच० ना० पु० किमारी, शुक्र।
सूकवार० ना० पु० शुक्रवार।
सूका० ना० पु० } चौअन्नी।
सूकी० ना० स्त्री० }
सूक्ष्मवाक्य० ना० पु० जवाखार।
सूक्ष्मदृष्टि० ना० स्त्री० रोगयोग, सर्वीदशी।
सूखना० अ० क्रि० सूखा होना, गलना, सिकुड़ना, मुरझाना।
सूखा० गु० शुष्क, रसहीन।
सूग० ना० स्त्री० दुविधा, चिन्ता, शंक।
सूगा० ना० पु० तोता।
सूचक० गु० ज्ञापक, बोधक, शिक्षक, प्रकाशक।
सूचना० ना० स्त्री० जनावना।
सूचनिका० ना० स्त्री० बीजक, फेहरिस्त।
सूचिका० ना० स्त्री० केतकी।
सूचित० गु० बोधित, सूचना कियागया।
सूचिमुखी० ना० स्त्री० मोटि दना।
सूची० ना० स्त्री० सूई, दर्जी।
सूचीपत्र० ना० पु० पत्र जिसमें पुस्तक के अ

ध्याय वा प्रकरण लिखेजाते हैं।

सूच्याकार० ना० पु० सूई के डौल।

सूज० } ना० पु० फुलाव, शोथ।
सूजन०

सूजना० अ० क्रि० फूलना।

सूजा० ना० पु० बर्मा, बेधी, सुतारी।

सूजी० ना० पु० सीनेहारा, दर्जी, दरदराआटा, सूई।

सूझ० ना० स्त्री० दृष्टि।

सूझना० अ० क्रि० गोचरहोना, देखपड़ना।

सूत० ना० पु० धागा, तागा, रथवान्, भाट, बढ़ई, पाराशिर, व्यासजी का शिष्य जो नैमिषारण्य में शौनकादिकन को पुराण सुनाता था, पारा, व्यवहार, रीति, प्रीति।

सूतक० ना० पु० अशौच, अपवित्रता जो प्रसव वा मृत्यु के दिन से दश दिनतक मानते हैं उसके दो नाम हैं वृद्धिसूतक, मृत्युसूतक।

सूतना० अ० क्रि० सोना, नींदलेना, स० क्रि० तानना, उपायकरना, सूतलगाना, ताड़ना।

सूतली० ना० स्त्री० डोरी, पतली रस्सी।

सूतिका० ना० स्त्री० जच्चा, प्रसूतिका, प्रसूता।

सूती० गु० जो सूत से बना, सूतिका [illegible] सोतीहुई।

सूतू० गु० नींद।

सूत्र० ना० पु० तागा संक्षेपसे अनेकार्थ का सूचक वा बोधक भाषा।

सूत्रधार० ना० पु० नट, बढ़ई।

सूत्रनाभि० } ना० स्त्री० मकड़ी।
सूत्रा०

सूथन० ना० पु० [illegible], पायजामा।

सूथनी० ना० स्त्री० [illegible], पायजामा, सुथनी।

सूध० } गु० सीधा, सूधा, [illegible], गाढ़ा,
सूधा० } [illegible]।

सूधाई० ना० स्त्री० सिधाई, भोलापन।

सून० गु० सून।

सूना० गु० छूछा, उजाड़, जहां कोई न हो।

सूनु० ना० पु० पुत्र, बेटा।

सूनो० गु० शून्य।

सूप० ना० पु० सूर्य, छाज।

सूपकार० ना० पु० रोटी करनेहारा, बावर्ची।

सूपारेना० ना० पु० पक्षीविशेष।

सूपार० ना० पु० सुपारा।

सूपियारी० ना० स्त्री० सुपारी।

सूम० ना० पु० शम, कृपण, कंजूस।

सूर० ना० पु० वीर, इगात, सूर्य, सूरदास, गु० अंधा।

सूरज० ना० पु० सूर्य सुग्रीव, शनैश्चर, शनैश्चर, यमराज।

सूरजगहन० ना० पु० सूर्यग्रहण।

सूरजमुखी० ना० स्त्री० सूर्यमुखी।

सूरजवल्लभ० ना० पु० [illegible]।

सूरजिका० ना० स्त्री० [illegible]।

सूरण० ना० पु० [illegible]।

सूरता० ना० स्त्री० वीरता, बड़ाई।

सूरदास० ना० पु० कविविशेष, सूरसागर के कर्ता।

सूरबीर० ना० पु० वीर, मानव, सावंत।

सूरनार० ना० पु० रागिनीविशेष।

सूरमा० गु० वीर, सावंत, मनचला।

सूरमापन० ना० पु० वीरता, सावंती, बहादुरी।

सूरसुत० ना० पु० सुग्रीव, शनैश्चर, कर्ण, यमराज।

सूरा० ना० पु० सावंत, बलवान्, वीर।

सूरी० ना० स्त्री० सूरनी, रानी।

सूर्प० ना० पु० सूप, सूप।

सूर्पनखा० ना० स्त्री० शूर्पणखा, रावण की बहन।

सूर्य० ना० पु० सुवर्णधातु, दिनमणि, रवि, सूरज।

सूर्यक० ना० पु० नागवृक्ष।

सूर्य्यकान्ति० ना० स्त्री० सूर्य्यमणि।
सूर्य्यग्रहण० ना० पु० सूर्य्य का ग्रहण।
सूर्य्यमणि० ना० स्त्री० मणिविशेष।
सूर्य्यमुखी० ना० स्त्री० पुष्पविशेष।
सूर्य्यप्रिय० ना० पु० ताम्रधातु।
सूर्य्यवंशी० ना० पु० सूर्य्य वंश का क्षत्री।
सूर्य्यवल्लभ० ना० पु० भृगराज, भगरा पोधा।
सूर्य्यात्मय० ना० पु० सूर्य्यमणि।
सूर्य्याह्वय० ना० पु० मदारवृक्ष।
सूर्य्यास्त० ना० पु० सन्ध्या, साझ, सूर्य्य का अस्त अर्थात् छुपना।
सूर्य्येन्दुसंगमा० ना० पु० अमावस।
सूर्य्योदय० ना० पु० सूर्य्य का उदय, तड़का, सवेरा।
सूल० ना० पु० शूल, फुरफुरी, भालाकी सुनि, काग, अस्त्रविशेष।
सूली० ना० पु० शूली, ना० स्त्री० फांसी।
सूवा० न० पु० तोता, मोटी सूई।
सूस० } ना० पु० जल जन्तुविशेष।
सूसमार० }
सूसी० ना० स्त्री० वस्त्रविशेष।
सूहा० गु० लाल, अरुण, ना० पु० रागविशेष।
सूक्ष्म० ना० पु० जो वस्तु अस्थूल अर्थात् हलकी पतली बारीक हो।
सूक्ष्मता० ना० स्त्री० हलकापन, पतलाई, बारीकी।
सूक्ष्मदर्शी० गु० चतुर, सुर्त्ता, प्रवीण, ज्ञानी।
सूक्ष्मपत्र० ना० पु० करौंदा।
सृजना० स० क्रि० सिरजना।
सृजित० गु० जो सिरजागया।
सृष्टि० ना० स्त्री० उत्पत्ति, जगत्, वृद्धि।
सृष्टिकर्त्ता० ना० पु० ब्रह्मा, परमात्मा।
से० अव्य० अपादान कारक वा करण का बोधक चिह्न, साथ, सग।
सेंक० ना० पु० सेंकने का काम, कसार।
सेंकड़ा० गु० सौ, शत, १००।
सेंकना० स० क्रि० तताना, गर्माना।
सेंगरी० ना० स्त्री० फली, छेमी।
सेंठा० ना० पु० } सरकण्डा जिससे मोढा
सेंठी० ना० स्त्री० } बनाते हैं, सरपत, पतली मूजका पौधा।
सेंत० अव्य० विनामोल, मुफ्त, सेंतमेंत।
सेंतना० स० क्रि० सुधारना, बनाना, स्वच्छ करना।
सेंद० ना० पु० खीराविशेष।
सेंदुर० ना० पु० ईंगुर।
सेंध० ना० पु० चोरी करने के लिये चोरलोग जो भीत में छेद करते हैं सुरंग।
सेंधना० स० क्रि० खोदना, ढाना।
सेंधा० ना० पु० लवणविशेष जिसको लाहौरी लोन कहते हैं।
सेंधिया० ना० पु० विष, जातिविशेष, चोर जो सेंध में पैठता है।
सेंधी० ना० स्त्री० खजूरका रस, ताड़ीविशेष।
सेंहुआं० ना० पु० दादविशेष, दिनाई।
सेगुन० ना० पु० काष्ठविशेष जो पेगू देश से आता है।
सेचन० ना० पु० छिड़काव।
सेज० ना० स्त्री० शय्या, बिस्तर, पलंग, मजा।
सेजबन्द० ना० पु० सेजपर बिछौना बांधने के लिये डोरीविशेष।
सेठ० ना० पु० बड़ा साहूकार।
सेठन्० ना० स्त्री० सेठकी स्त्री।
सेत० ना० पु० पुल, सेतु, गु० श्वेत।
सेतना० स० क्रि० जुगवना, सैंतना।
सेतु० ना० पु० पुल, बांध, मर्य्यादा।
सेतुबन्ध० ना० पु० तीर्थविशेष, पुल जो लंका और भरतखण्ड के मध्य समुद्र में हनुमान् आदिकनने बनाया था।
सेदना० स० क्रि० सेंकना, ततारना।
सेन० ना० स्त्री० } कटक, फौज, नाम एक
सेना० ना० पु० } भक्त नाईका है।

सेनानी० } ना० पु० चमूपाल, दलपति,
सेनापति० } स्वामिकार्त्तिक।
सेव० ना० पु० फलविशेष।
सेम० ना० स्त्री० तरकारी विशेष का पोधा वा उसकी फली।
सेमर० ना० पु० सेमल वृक्ष विशेष वा उसकी रुई।
सेर० ना० पु० तोल विशेष १६ छटांकको।
सेराना० अ० क्रि० ठंढा होना, स० क्रि० ठंढा करना, बहाना, भसाना।
सेल० ना० पु० बर्छा।
सेलखड़ी० ना० स्त्री० पर्वतकी मिट्टीविशेष।
सेला० ना० पु० वस्त्र विशेष, बाघ विशेष।
सेलिया० ना० पु० मार्जार, सेलीवाला।
सेली० ना० स्त्री० बर्छी, रामायणे यथा (तुरत विभीषण पाछे मेली, सन्मुख सही राम सो सेली) सूतकी बनी माला जो उदासी पहनते हैं, जालबर्दी।
सेव० ना० पु० पकवानविशेष, सेवा ना० स्त्री० सेवा, सुश्रूषा।
सेवई० ना० स्त्री० खानेकी वस्तु विशेष।
सेवक० ना० पु० नौकर चाकर, सेवा करनेहारा, खिदमतगार।
सेवकाई० ना० स्त्री० नोकरी, पूजा, भक्ति, टहल, खिदमतगारी।
सेवटि० ना० स्त्री० नदीका रेत, दलदल।
सेवड़ा० ना० पु० जैनमतका भिक्षुक।
सेवती० ना० स्त्री० पुष्प विशेष वा उनका पौधा।
सेवन० ना० पु० पालन, पोषण, सेवा करना।
सेवना० स० क्रि० नौकरी करना, पूजना, पक्षी का अंडेपर बैठना।
सेवा० ना० स्त्री० नौकरी, टहल, पूजा, खिदमतगारी।
सेव्यवीर० ना० पु० खसखस।
सेस० ना० पु० शेष।
सेसर० ना० पु० ताश में खेल विशेष।

सै० गु० सौ० ना० स्त्री० भागवानी, बरकत, लहर बहर।
सैंकड़ा० गु० सौ, शत।
सैंगर० ना० स्त्री० शमीवृक्ष की फली, बबूल की फली।
सैंतालीस० गु० चालीस और सात ४७।
सैंतीस० गु० तीस और सात ३७।
सैंहिकेय० ना० पु० राहु, केतु।
सैन० ना० स्त्री० सेना, फौज, संकेत, शयन, चिह्न, इशारह, नेत्र का कटाक्ष।
सैनप० ना० पु० सेनापति, सेनानी, स्वामिकार्त्तिक।
सैना० ना० स्त्री० सेन, दल, फौज।
सैनापति० } ना० पु० सेनापति, सिपहसालार।
सैनापत्य० }
सैनाबैनी० ना० स्त्री० परस्पर सैनकरना।
सैन्धव० ना० पु० सिन्धुदेश का घोड़ा या लोन, सेंधा।
सैन्य० ना० स्त्री० सेना, दल, कटक।
सैरन्ध्र० ना० पु० सेवक।
सैसाँझ० अव्य० सांझ के आरम्भ में।
सैहगन० ना० स्त्री० सगाई।
सैहरनी० गु० सहवैया।
सो० सर्व० तथ्यवाचक, सर्वनाम।
सोअर० ना० पु० कोठरी जिसमें प्रसूती रहती है।
सोआ० ना० पु० घासविशेष।
सोई० सर्व० वह, वही।
सों० अव्य० से।
सोंटा० ना० पु० डण्डा, असा, छोटीलाठी।
सोंठ० ना० स्त्री० सूखी अदरक।
सोंधना० स० क्रि० बाल के धोने को सौंधी मिट्टी से कपड़ा मलना, भरना, सुगाना।
सोंधा० ना० पु० बालों का मसाला, नई मृत्तिका पर मिट्टी से जो गन्ध, सुगन्धित।
सोंधाहट० ना० स्त्री० सुगन्ध, सुवास।
सोंह० ना० स्त्री० किरिया, शपथ।

सोंहिं० अव्य० सामने, सम्मुख।
सोखना० स० क्रि० सोखना, चूसना, पीलेना।
सोच० ना० पु० ध्यान, बूझ, शोच।
सोचना० स० क्रि० ध्यानकरना, बूझना, शोचना।
सोज० ना० पु० सूझ।
सोझ० ना० स्त्री० सीधाई।
सोझा० गु० सीधा।
सोत० } ना० पु० भूर, उगड, जलका निकास,
सोता० } छेद, धारा, झरना, समुद्रका खाल।
सोत्साह० गु० उत्साह समेत, आनन्दयुक्त।
सोथ० ना० स्त्री० सूज।
सोदर० ना० पु० सहोदर, सगाभाई।
सोदरा० ना० स्त्री० सगीबहिन, रामचन्द्रिकाया (सुभा सोदरा यद्यपि आप, सबहीते अनिरुद्ध प्रताप)।
सोध० ना० स्त्री० शोध, खोज।
सोधना० स० क्रि० शोधन करना, श्रम करना, मिलना, निर्मल करना, शुद्ध करना।
सोन० ना० पु० शोण, सुवर्ण पुष्पविशेष।
सोनहरा } गु० सोने का, सोने का सा
सोनहला० } रंग।
सोना० ना० पु० स्वर्ण, कनक लिंग, अ० क्रि० नींदलेना, मरना।
सोनार० ना० पु० जातिविशेष, स्वर्णकार।
सोनिया० ना० पु० रास से सोना भिन्न करने हारा, न्यारिया, छागलिंग बालक का।
सोपान० ना० पु० सीढ़ी, जीना।
सोफालिका० ना० स्त्री० सम्भालूपौधा।
सोभना० अ० क्रि० सोहना, सजना।
सोभा० ना० स्त्री शोभा।
सोम० ना० पु० चन्द्रमा।
सोमनाथ० ना० पु० महादेव जो गुजरातमें है।
सोमपादप० ना० पु० वायफल।
सोमरजन० ना० पु० लालचन्दन।
सोमराज० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष।
सोमराजी० ना० स्त्री० बाकुची।
सोमवल्क० ना० पु० वायफल।
सोमवल्ली० ना० स्त्री० बाकुची।
सोमवार० ना० पु० चन्द्रवार, दूसरा दिन।
सोमवारी० ना० स्त्री० सोमवारकी अमावस।
सोमक्षीरी० ना० स्त्री० सोमराजी।
सोरठ० ना० स्त्री० रागिनीविशेष।
सोरठा० ना० स्त्री० छन्दविशेष।
सोह० ना० स्त्री० शोभा।
सोहं० ना० पु० मन्त्रविशेष।
सोहन० गु० शोभादेनेहारा, प्यारा, चाहता, ना० पु० सज्जन, रेती, ना० स्त्री० मिठाई विशेष।
सोहना० अ० क्रि० सजना, शोभादेना।
सोहागा० ना० पु० सुहागा।
सोहिल० ना० पु० रागविशेष।
सोहीं० अव्य० सोहीं, सम्मुख।
सौ० गु० शत, १००।
सौं० ना० पु० शपथ, सौंह, सौगन्द, अव्य० से।
सौंकरी० ना० स्त्री० वाराहीकन्द।
सौंचना० अ० क्रि० शरीरशौच जल से गुदा धोना।
सौंप० ना० स्त्री० धरोहर, थाती, सुपुर्दगी।
सौंपना० स० क्रि० पहुंचाना, सुपुर्द करना, धरना, रखना।
सौंफ० ना० स्त्री० औषधिविशेष।
सौंरा० ना० पु० कालस, काजल गु० सांवला।
सौंर० ना० पु० मछलीविशेष।
सौंरि० ना० स्त्री० वृद्धिसूतक।
सौंरी० ना० स्त्री० जच्चा, प्रसूती।
सौंह० ना० स्त्री० किरिया, शपथ, सौगन्द।
सौख्य० ना० पु० सुख, आराम।
सौगन्द० ना० स्त्री० शपथ, किरिया, सौंह, यह शब्द फ़ारसी का है भाषा में प्रचलित है।

सौच० ना० पु० सौच, जो क्रिया करने से पवित्र हो।

सौचेती० ना० स्त्री० रक्षा, बचाव।

सौजन्य० ना० पु० सुजनता।

सौत०
सौतन०
सौति०
सौतिन० — ना० स्त्री० एक मनुष्य की दो स्त्रियां आपस में एक दूसरे की सौत कहलाती हैं।

सौतिया० ना० स्त्री० सौति।

सौतियादाह० ना० पु० सौति का दाह।

सौतेला० गु० जो सौति का जाया है।

सौध० ना० पु० महल, ऊंचा मकान।

सौन्दर्य्य० ना० पु० सुन्दरता।

सौभाग्य० ना० पु० सुभाग, भाग्यमानी, सुहाग।

सौभाग्यवती० ना० स्त्री० सुहागिन।

सौमित्र० ना० पु० सुमित्रा सुत, लक्ष्मणजी।

सौम्य० ना० पु० बुधग्रह, बुधवार, चन्द्रपुत्र, गु० उजला, सुन्दर।

सौम्या० ना० स्त्री० शालपर्णी।

सौर० ना० पु० शनैश्चर, सूर्य सम्बन्धी ना० स्त्री० मछली विशेष।

सौरभ० ना० पु० केसर, सुगन्ध, खुशबू।

सौरमास० ना० पु० सूर्य का एक राशि में रहन का काल, एक संक्रांति से दूसरी तक।

सौरवर्ष० ना० पु० बारह संक्रांतों का समय।

सौरि० ना० पु० शनैश्चर, सहिता विशेष।

सौरेय०
सौरेयक० — ना० पु० पियाबासा।

सौहार्द० ना० पु० मित्रत्व, मित्रता।

स्कन्द० ना० पु० स्वामिकार्तिक।

स्कन्ध० ना० पु० कन्धा, कांड।

स्खलन० ना० पु० पतन।

स्तन० ना० पु० कुच, उरोज, थन।

स्तब्ध० गु० रुका।

स्तम्भ० ना० पु० खम्भा, खम्भ, थम्भ।

स्तम्भन० ना० पु० रुकाव, थंभाव, रोक, टेक।

स्तम्भित० गु० जो रोका वा थामागया।

स्तव० ना० पु० स्तुति, विनयकी पोथी।

स्तावक० ना० पु० स्तुति करनेहारा।

स्तुति० ना० स्त्री० सराह, बड़ाई, मनाव, विनय।

स्तुतिपाठक० ना० पु० सूत, बन्दीजन।

स्तेन० ना० पु० चोर।

स्तेय० ना० पु० चोरी।

स्तोत्र० ना० पु० स्तव, स्तुति।

स्त्री० ना० स्त्री० नारी, लुगाई, औरत।

स्त्रैण० ना० स्त्री० के वश या स्त्री के स्वभावपर।

स्थ० गु० स्थिर, ठहरा, कायम।

स्थगित० गु० ढका, धरा।

स्थल० ना० पु० स्थान, भूमि, जगह, घर, भूमि जो सूखी है जिसपर मनुष्यादि बसते हैं।

स्थाणु० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

स्थान० ना० पु० ठौर ठिकाना, घर, ग्राम।

स्थानापन्न० गु० जगहपर, उसके बदले, किसी के स्थानपर प्रतिष्ठित होना।

स्थानी० गु० घरवाला, मुकामी।

स्थापन० ना० पु० रखना, धरना, बैठाना।

स्थापना० ना० स्त्री० प्रतिष्ठा, स्थापकरना।

स्थापित० गु० प्रतिष्ठित, रक्खागया, निर्णय, स्थिर, अचल, जो स्थापन कियागया।

स्थाली० ना० स्त्री० थाली, ढकनी।

स्थावर० गु० अचल यथा वृक्षादि, नग।

स्थित० गु० ठहराहुआ।

स्थिति० ना० स्त्री० ठिकाना, ठहराव।

स्थिर० गु० अडोल, अचल, शान्त।

स्थिरता० ना० स्त्री० शान्ति, धीमापना।

स्थूल० गु० मोटा, भारी, बड़ा, [illegible]।

स्थूलदर्शी० ना० पु० मूढ़, [illegible], [illegible]।

स्थूलवल्ला० ना० स्त्री० [illegible]।

स्थूलैला० ना० स्त्री० बड़ी इलायची।
स्थैर्य्य० ना० पु० स्थिरता।
स्थौल्य० ना० पु० मोटापा, मोटाई।
स्नान० ना० पु० नहान।
स्नानीय० ना० पु० जल जो नहाने के योग्य है।
स्नुही० ना० पु० सेंहुड़।
स्नेह० ना० पु० प्रेम प्रीति, प्यार, तेल।
स्नेहवृक्ष० ना० पु० देवदारु।
स्पर्द्धा० ना० स्त्री० द्वेष, दाह, अपरे अपमान करनेकी इच्छा।
स्पर्श० ना० पु० छुआवट, छूने का काम।
स्पर्शेन्द्रिय० ना० स्त्री० त्वचा, चर्म।
स्पष्ट० ना० पु० खुला, सहज, ठीक, दुरुस्त।
स्पष्टीकरणार्थ० अव्य० स्पष्ट करने के लिये।
स्पिरा० ना० स्त्री० शालपर्णी।
स्पृश्य० गु० स्पर्श करने के योग्य।
स्पृष्ट० गु० छुआगया।
स्पृहा० ना० स्त्री० इच्छा, चाह।
स्फटक० } ना० पु० स्वच्छ पाषाणविशेष,
स्फटिक० } बिलार पत्थर, चन्द्रकान्तमणि, और कपूर।
स्फटिकाश्रा० ना० स्त्री० फटकरी।
स्फटिकोपल० ना० पु० चन्द्रकान्तमणि, बिल्लौर।
स्फुट० गु० खिला, खुला, व्यक्त, प्रकट।
स्फुरत्० अ० क्रि० प्रकाशित, शोभित, डोलत।
स्फूर्त्ति ना० स्त्री० टीस धड़धड़ाहट, डोल, हिलाव।
स्फोटक० ना० पु० फोड़ा।
स्मय० ना० पु० अभिमान, अहङ्कार, गरूर।
स्मर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, कामदेव।
स्मरण० ना० पु० सुधि, चेत, स्मृति, याद, ध्यान।
स्मारक० गु० जो स्मरण करावे।
स्मार्त्त० ना० पु० स्मृतिका ज्ञाता।
स्मृति० ना० स्त्री० शास्त्र विशेष, स्मरण, चेत, याद।
स्मृतीहिता० ना० स्त्री० शतावरी।
स्मृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती, अधिक, चाहना।
स्यन्दन० ना० पु० रथ, पानी, चित्तरग, वेंदूवृक्ष।
स्यान० } ना० पु० चतुराई, चालाकी।
स्यानपन० }
स्याना० गु० चतुर, चालाक।
स्यार० ना० पु० शृगाल, गीदड़।
स्योना० } ना० पु० वृक्षविशेष।
स्योनाक० }
स्निग्धच्छदा० ना० स्त्री० बेरीवृक्ष।
स्निग्धपर्णी० ना० स्त्री० मुरहरी।
स्रुव० ना० पु० श्रुवा।
स्रोत० ना० पु० सोत, सोता।
स्रोत.० ना० पु० सोता।
स्रोतस्वती० ना० स्त्री० नदी।
स्व० सर्व० अपना, निजका बोधक, ना० पु० धन, आत्म।
स्व.० ना० पु० स्वर्ग।
स्वकीय० ना० पु० अपना, सगा।
स्वकीया० ना० स्त्री० निजस्त्री, अपनी।
स्वच्छ० गु० निर्मल, साफ, पवित्र।
स्वच्छता० ना० स्त्री० निर्मलता, पवित्रता, सफाई।
स्वच्छन्द० गु० अपनी इच्छा के अनुसार, स्वैरी स्वाधीन, ना० पु० ईश्वर।
स्वच्छन्दचारी० ना० पु० संयासी, भगवान्।
स्वच्छफल० ना० पु० नारियल।
स्वजन० ना० पु० अपनेलोग, नैतैत।
स्वजातीय० गु० एकवर्णका, निजगाती।
स्वतः० अव्य० आपसे।
स्वतन्त्र० गु० स्वाधीन, निजवश।
स्वतन्त्रता० ना० स्त्री० स्वाधीनता।
स्वधर्म० ना० पु० अपना धर्म।
स्वप्न० ना० पु० निद्रावस्था, द्वितीयावस्था, नींद में

जो कुछ दिखाई देता है।
स्वप्नकथा॰ ना॰ स्त्री॰ स्वप्नका वृत्तांत, ससार सुख।
स्वप्नफल॰ ना॰ पु॰ ताबीर ख्वाब, स्वप्नकाधर्म वा फल।
स्वप्रबलकला॰ ना॰ स्त्री॰ तेजबल।
स्वप्रकाश॰ गु॰ जो आपही प्रकाश वा प्रका शित है।
स्वभाव॰ ना॰ पु॰ चरित्र, प्रकृति, आदत।
स्वयंसिद्ध॰ ना॰ स्त्री॰ सिद्धरूपी, जो आपही सिद्ध।
स्वयम्बर॰ ना॰ पु॰ स्त्रीका निज इच्छानुसार वर करलेना, समाज विशेष जहां कन्या निजवर ढूढती है।
स्वयम्भू॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा।
स्वर॰ ना॰ पु॰ शब्द, धुनि, स्वास और अका रादि १६ वर्ण।
स्वरपर्णिनी॰ ना॰ स्त्री॰ गोभी, पौधा।
स्वराह्वया॰ ना॰ स्त्री॰ अजमोद।
स्वरूप॰ ना॰ पु॰ अपनारूप, समानता, व्यक्ति।
स्वर्गपताली॰ ना॰ पु॰ भेंगा, ढेरा।
स्वर्गीय॰ } गु॰ स्वर्ग का है।
स्वर्ग्य॰ }
स्वर्ण॰ ना॰ पु॰ सुवर्ण, कनक, सोना।
स्वर्णपर्णी॰ ना॰ स्त्री॰ निरवाली।
स्वर्णमुद्रा॰ ना॰ पु॰ अशरफी, मुहर।
स्वर्णवर्ण॰ ना॰ पु॰ गेरू।
स्वर्णवर्णा॰ ना॰ स्त्री॰ दारुहल्दी।
स्वर्णखे॰ } ना॰ स्त्री॰ निरवाली।
स्वर्णस्थल्या॰ }
स्वल्प॰ गु॰ अत्यंत छोटा, थोड़ा, ना॰ पु॰ गीदड़।
स्वल्पकन्द॰ ना॰ पु॰ कसेरू।
स्वल्पाहार॰ ना॰ पु॰ थोड़ा आहार, कमखाना।
स्ववर्ग॰ ना॰ पु॰ अपनावर्ग।
स्ववर्गीय॰ गु॰ अपनेवर्गका कथितस्थान।
स्ववर्ण॰ ना॰ पु॰ निजगोत्र, अपनावर्ण।
स्ववर्णी॰ गु॰ निजगोती, एक जातिका।
स्ववश॰ ना॰ पु॰ स्वाधीन, स्वतंत्र, निजवश।
स्वसेवक॰ ना॰ पु॰ अपना सेवक।
स्वसेव्य॰ गु॰ आत्मपूजक।
स्वस्ति॰ अव्य॰ मंगल, कल्याण, तथास्तु।
स्वस्तिवाचन॰ ना॰ पु॰ शास्त्रोक्त धर्मकेआदि में व्यवहार विशेष।
स्वस्वामिभाव॰ गु॰ स्वामी और उसकी वस्तु का सम्बन्ध।
स्वाई॰ } ना॰ पु॰ स्वामी, मालिक।
स्वाई॰ }
स्वांग॰ ना॰ पु॰ भाडैती, तमाशा।
स्वांगी॰ ना॰ पु॰ स्वांग बनानेहारा।
स्वागत॰ ना॰ पु॰ कुशल, क्षेम, मिजाजपूछना,
स्वाति॰ } ना॰ स्त्री॰ पन्द्रहवां नक्षत्र।
स्वाती॰ }
स्वाद॰ ना॰ पु॰ सवाद, रस, मजह, मधुक-कड़ी।
स्वादट्ट॰ ना॰ पु॰ गोखुरू।
स्वादक॰ } गु॰ जिस में स्वाद हो, मीठा स्वाद।
स्वादिष्ट॰ }
स्वादी॰ गु॰ स्वाद करनेहारा, जिसमें स्वादहो। ना॰ पु॰ अंगूर।
स्वादु॰ गु॰ मीठा स्वादिष्ट, स्वादि।
स्वादुकण्टक॰ ना॰ पु॰ गोखुरू।
स्वादुपुष्पिका॰ ना॰ स्त्री॰ दुद्धी पौधा।
स्वादुमा॰ ना॰ स्त्री॰ काकोली।
स्वाधिष्ठान॰ ना॰ पु॰ चक्र विशेष।
स्वाधीन॰ गु॰ स्वतंत्र, निजवश, खुद मुख-तार।
स्वाधीनता॰ } ना॰ स्त्री॰ स्वतन्त्रता।
स्वाधीनी॰ }
स्वाभाविक॰ गु॰ जो स्वभाव से हो, प्रकृती जन्मी।
स्वामिकार्त्तिक॰ ना॰ पु॰ शिवजीके पुत्रविशेष।

स्वामित्व० ना० पु० अधिकार, प्रभुता, मालिकी।
स्वामी० ना० पु० प्रभु, राजा, मालिक, गुरुदेव, पति।
स्वाराम० ना० पु० निज, उपवन, अपनीबाग।
स्वार्थ० ना० पु० संसारिक काम, संसार की इच्छा, निज अर्थ वा लाभ, आत्मपालन।
स्वार्थिक० गु० जो अपने को पूराकरे, काम वा कृतार्थ।
स्वार्थी० गु० आत्मपालक, अपनामतलबी।
स्वास० } स्वासा० } ना० स्त्री० श्वास।
स्वाहा० ना० स्त्री० अग्निदेवकी स्त्री, जोहवनादि में मन्त्र पूरे होने के पीछे बोलते हैं।
स्वीकार० } स्वीकृत० } ना० पु० अंगीकार, कबूल, मंजूर।
स्वेच्छक० गु० स्वाधीन, हठीला।
स्वेच्छा० ना० स्त्री० स्वाधीनता, हठ, निजेच्छा।
स्वेच्छाचारी० गु० स्वाधीनकर्त्ता, निजइच्छा समान कारक।
स्वेत० गु० स्वेत, सफेद।
स्वेद० ना० पु० प्रस्वेद, पसीना, ताप।
स्वेदज० ना० पु० जो पसीना से उपजे यथा जूआ, चीलरादि।
स्वैरण० ना० गु० स्वाधीन, परदारिक।
स्वैरिणी० ना० स्त्री० कुलटा, छिनाल।
स्वैरी० गु० स्वाधीन, स्वैरिन, खुदमुख्तार।
स्वोपकारी० गु० निज उपकारी, स्वार्थी।

[ह]

हंकाना० स० क्रि० निकालना, हाकना, चलाना।
हकार० ना० पु० हांक, पुकार, चिल्लाहट।
हकारना० स० क्रि० हांकना, पुकारना, पाल चढ़ाना।
हंकैरा० गु० हांकनेहारा।
हंस० ना० पु० पक्षी विशेष, आत्मा जीव, राजा, धर्म, घोड़ा, सूरज, परमहंस।
हंसक० ना० पु० बिछुआ, जो स्त्रियां पांव में पहनती हैं।
हंसध्वज० ना० पु० ब्रह्मा, राजा विशेष, गु० जिसकी ध्वजा में हंस बना हो।
हंसना० स० क्रि० हास्य करना, ठट्ठामारना।
हंसपद० ना० पु० हंसका चरण, चिह्न विशेष, जो लेखक लोग भूलके स्थान पर लगाते हैं।
हंसपदी० } हंसपादी० } ना० स्त्री० पौधा विशेष।
हंसमुख० गु० आनन्दी, मगन, हंसोड़।
हंसा० ना० पु० हास्य।
हंसाई० ना० स्त्री० हँसी, ठठोली।
हंसाना० स० क्रि० हास्यकराना, रिझाना।
हंसिनी० ना० स्त्री० हंसकी स्त्री।
हंसिया० ना० पु० हंसुआ।
हंसी० ना० स्त्री० हास्य, ठठोली।
हंसुआ० ना० पु० अन्नादिकाटने का हथियार।
हंसेश० ना० पु० ब्रह्मा।
हंसोड़० गु० ठठोल, हँसमुख।
हंसोड़पन० ना० पु० ठठोली।
हकबकाना० अ० क्रि० घबड़ाना, व्याकुल होना।
हकला० गु० जो गल से अटकके बोले, जिसकी जीभ जल्दी न चले।
हकलाना० अ० क्रि० जीभ का हकबकाना बात का अटकना।
हकलाहा० गु० लड़बड़ाहा।
हकारना० स० क्रि० बैलादि का घुमाना।
हकाबका० गु० घबड़ा, व्याकुल।
हगना० अ० क्रि० गुहकरना, जंगल फिरना झाड़े जाना।
हगनेटी० } हगनौटी० } ना० स्त्री० हगने की इन्द्रिय नि शान, गुदा, गांड़।
हगभरना० अ० क्रि० गुहकरना, बिगाकर रहना।

[हट]ाना० स० क्रि० नीटकराना, ग्रहकराना।
[हट]ास० ना० स्त्री० हगने की इच्छा, शूल।
[हच]कोला० ना० पु० धक्का, झोंक।
[ह]ट० ना० स्त्री० हठ।
हटकना० } अ० क्रि० अटकाना, रोकना, मने
हटकाना० } करना, रोकना, मनेकरना।
हटना० अ० क्रि० अलगहोना, चलेजाना, टलना, पीछे वा आगे को बढ़ना।
हटवा० ना० पु० अन्नादि मापने के लिये हाटमें बैठनेहारा।
हटवाई० ना० स्त्री० हाटका काम।
हटाना० स० क्रि० टालदेना, रोकदेना, भाड़-काना।
हट खु० ना० स्त्री० अधेर के कारण दूकानबन्द करना।
हटिया० } ना० स्त्री० हाट।
हट्ट० }
हट्टाकट्टा० गु० पोढ़ा, चर्फरा, अच्छा।
हठ० ना० पु० मगराई, रारि, मचलाई, अड़।
हठना० अ० क्रि० हठीला वा मचला वा टेढ़ाहोना, जिदकरना।
हठात्० अव्य० अकस्मात्।
हठी० } गु० हट करनेहारा, मचला,
हठीला० } मगरा।
हड़० ना० स्त्री० फलविशेष ना० पु० बाट।
हड़कत० ना० पु० पौधाविशेष।
हड़गोला० ना० पु० पक्षाविशेष।
हड़जोड़ा० ना० पु० पौधाविशेष।
हड़फूटन० ना० पु० हड्डी में पीड़ा।
हड़बड़ाना० अ० क्रि० घबराना, व्याकुलहोना, हलवलाना।
हड़बड़िया० गु० चिड़चिड़ा।
हड़बड़ी० ना० स्त्री० खलबली, हुलड़।
हड़हड़ाना० अ० क्रि० थर्थराना, कांपना, धड़-धड़ाना, खड़खड़ाना।
हड़हड़ाहट० ना० स्त्री० कड़ाका, चटाका।
हड़हड़ी० ना० स्त्री० टंकार।
हड़ा० ना० पु० मानावान् इत्यादि इस शब्द को कहकर चिड़िया उड़ाते हैं।
हड़ाना० स० क्रि० चिड़िया उड़ाना।
हड़ाहड़ी० ना० स्त्री० हड़हड़ी।
हड्डा० ना० पु० मोंगाहाड़, बिर्नी, भोंपरा।
हड्डी० ना० स्त्री० अस्थि, हाड़।
हड्डीला० गु० अस्थिवान्।
हण्डनी० ना० स्त्री० कुचला वा कुलटा स्त्री।
हण्डा० ना० पु० तांबे वा पीतल वा मिट्टी का बड़ाबर्तन।
हंडाना० स० क्रि० देश वा नगरसे निकालदेना, मुंह कालाकरके गधेपर चढ़ाकर घुमाना।
हंडिका० } ना० स्त्री० हांडी।
हंडी० }
हत्० अव्य० दुत्, नाश।
हतन० ना० पु० मारण, वधन।
हतना० स० क्रि० वधकरना, मारडालना।
हतादर० ना० पु० सन्मानहीन, निरादर।
हती० अव्य० थी, रही, ना० स्त्री० मारीगई।
हतथ० ना० पु० हाथ।
हत्था० ना० पु० हाथा।
हत्या० ना० स्त्री० वध, हिंसा, वधदोष।
हत्यारा० ना० पु० हिंसक, वधिक, वधदोषी।
हत्यारिन० } ना० स्त्री० हिंसक स्त्री।
हत्यारी० }
हथ० ना० पु० हाथ।
हथकड़ा० ना० पु० पकड़, हाथ से पकड़ने की वस्तु।
हथकड़ी० ना० स्त्री० हाथ में डालने की बेड़ी।
हथकंडा० } ना० पु० टेव, ढब, रीत।
हथखेडा० }
हथचपुआ० ना० पु० भाड़ा, अर्थ।
हथछुट० } ना० पु० पीटनेहारा, लड़ाका।
हथलूट० }
हथनाल० ना० स्त्री० हाथी परकी तोपछोटी।

हथनी० ना० स्त्री० हस्तिनी।
हथफेर० ना० पु० रुपया परखने में ठगविद्या, उधारलेना।
हथरस० ना० पु०
हथरसी० स्त्री० } चूमाचाटी, मठोली।
हथरी० ना० स्त्री० छोटा हथकड़ा।
हथल०
हथवास० } ना० पु० पीतलका हथकड़ा।
हथा० ना० पु० चकौरा हथकड़ा।
हथिया० ना० स्त्री० हस्त नक्षत्र, वर्षाकालका अन्त, हथकड़ा।
हथियाना० स० क्रि० पकड़ना, ग्रहणकरना।
हथियार० ना० पु० लाहहार, कलकाम, अस्त्र।
हथी० ना० स्त्री० घोड़के मलने की वस्तु बालों की बनी।
हथेला० ना० पु० चोर।
हथेली० ना० स्त्री० हाथ के बीचका स्थान।
हथौटी० ना० स्त्री० वचत, विद्या, प्रवीणता।
हथौड़ी० ना० स्त्री० छोटा घन।
हदियाना० अ० क्रि० आगापीछा, व पाचकरना, घबराना, स० क्रि० हुलसाना, फुसलाना, चाप दिलाना, जाचना, बरबस कराना।
हदियाहट० ना० स्त्री० भोलापन, मुहचोरी, घबराहट, बरबसात, जचाव, चाप।
हदियाहा० गु० भोला, मुहचोर, स देही।
हनन० ना० पु० वध, हत्या।
हनना० स० क्रि० वधकरना, मारडालना, मारना, जकड़ना।
हना० गु० मारीगई, दबागई।
हनु० ना० पु० ठुड्डी, हनुमान्जी।
हनुमत्०
हनुमन्त०
हनुमान्० } ना० पु० वायुपुत्र, रुद्रअवतार, श्रीरामसेवक, महावीर।
हन्तक०
हन्ता० } ना० पु० वधकारी, मारनेहारा।
हन्ती० ना० स्त्री० नाशक वा वधकारी स्त्री।
हप० ना० पु० झपटसे मुह में डाल के निगलना।
हपझप० गु० फुर्तीला, चर्बरा, अव्य० झपझप
हफहफाना० अ० क्रि० हांफना।
हबड़ा० गु० फूहड़, ढीला।
हबिला० गु० जिसके आगे के दांत बड़े २ हों।
हमारा०
हमारो० } सर्व० उत्तम पुरुष बहुवाक्यसंबंध बोधक शब्द।
हमेव० ना० पु० अहंकार, अहंभाव।
हय० ना० पु० घोड़ा।
हयमेघ० ना० पु० अश्वमेध।
हयशाला० ना० स्त्री० घुड़साल, तबेला।
हयहय० ना० पु० नागार्जुन।
हये० क्रि० नाशे, मारे, मिटाये।
हर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, हल, सीर, अव्य० यह जिस शब्दके अंतमें हो उसका अर्थ हरण का माना जावे यथा, पापहर, तापहर।
हरगिरि० ना० पु० कैलास।
हरण० ना० पु० बरबस वा चोरी से किसी की वस्तुका लेना, चोरी, लूट, नशावना, हरिण।
हरता० ना० पु० चोर, लुटेरा नाशक।
हरद० ना० पु० हल्दी।
हरदत्त० गु० जो शिवजी का दियाहुआ है।
हरना० स० क्रि० बरबस लेलेना, चोरी करना, लूटना, उठालेना, हरिण।
हरनौट० ना० पु० हरिणका बच्चा।
हरफारेवड़ी० ना० पु० फलविशेष।
हरबराना० अ० क्रि० हड़बड़ाना, घबड़ाना।
हरसिंघाड़०
हरसिंगार० } ना० पु० वृक्ष वा उसका फूल विशेष, गैना विशेष।
हरबीय० ना० पु० पारा।
हरहार० ना० पु० सर्प, शिरकी माला।
हरा० गु० वर्णविशेष, यथा घासकी रङ्गत।
हराई० ना० स्त्री० हरियाली।
हराना० स० क्रि० अंतलेना, थकाना।

हरावल॰ ना॰ पु॰ दलके अगाड़ी चलनेवाला।
हरि॰ ना॰ पु॰ ईश्वर, पानी, अग्नि, वायु मार्ग, हाथी, पर्वत, सर्प, सिंह, इन्द्र, वानर, सूर्य्य, धन, आकाश मनु, हरिण, पपाहा कोयल, प्राण, मोती, भ्रमर, अमृत, चन्द्रमा, कमल, सुवर्ण, कामदेव, खड्ग, घोड़ा।
हरिजन॰ ना॰ पु॰ साधु भक्त, सन्त।
हरित॰ गु॰ हरा, डहडहा, चोरायागया।
हरिताल॰ ना॰ पु॰ उपधातुविशेष।
हरितालिका॰ ना॰ स्त्री॰ भादों सुदी तीज का व्रत।
हरिद्रा॰ ना॰ स्त्री॰ हल्दी।
हरिद्वार॰ ना॰ पु॰ तीर्थविशेष।
हरिन्मणि॰ ना॰ पु॰ पन्ना।
हरिप्रिया॰ ना॰ स्त्री॰ लक्ष्मी, तुलसी।
हरिभक्त॰ ना॰ पु॰ विष्णुका उपासक, वैष्णव।
हरिभजन॰ ना॰ पु॰ भगवान् का भजन वा ध्यान करना।
हरिमद्रक॰ ना॰ पु॰ कूट।
हरियल॰ ना॰ पु॰ पक्षविशेष कपोतविशेष।
हरियाण॰ ना॰ पु॰ दिल्ली से पश्चिम देश विशेष।
हरियान॰ ना॰ पु॰ गरुड़।
हरियाना॰ अ॰ क्रि॰ जमना, बढ़ना, डहडहा होना, शाख निकलना।
हरियाला॰ गु॰ हरा, सब्ज़ी।
हरियाली॰ ना॰ स्त्री॰ हराई।
हरियलुक॰ ना॰ पु॰ एलुवा, मुसब्बर।
हरिवास॰ ना॰ पु॰ पीपलवृक्ष।
हरिवासर॰ ना॰ पु॰ एकादशी, जन्माष्टमी।
हरिश्चन्द्र॰ ना॰ पु॰ राजा विशेष जो अयोध्या में महादानी हुआ है।
हरीत॰ } ना॰ स्त्री॰ हर्र, हड़।
हरीतकी॰ }
हरीरा॰ } गु॰ हरा, भगाड़ा ना॰ पु॰ भोजन
हरीता॰ } जो जचाको प्रथम खिलते हैं।

हरीना॰ ना॰ पु॰ तोताविशेष।
हरु॰ गु॰ हलका।
हरुये॰ अ॰ य॰ धीरे धीरे, हाले व्रजविलास यथा, दोहा, लै पौढ़ाय सेजपर हरुय यशुमति माय, अति विरुझानो आजु हरि यह कहिं कहि पछिताय।
हरुव॰ गु॰ हलका, रामायण यथा, निजजड़ता लोगन पर डारी, होहु हरुव रघुपतिहि निहारी।
हरेरा॰ गु॰ हरा।
हरौटी॰ ना॰ स्त्री॰ छड़ा बत, हलचलने का समय।
हर्ष॰ ना॰ पु॰ आनन्द, सुख, आह्लाद, खुशी।
हर्षण॰ ना॰ पु॰ योग, विशेष, सुखमार।
हर्षना॰ अ॰ क्रि॰ फूलना, खिलना, आनन्द होना।
हर्षित॰ गु॰ आनन्दित, प्रसन्न, मग्न।
हल॰ ना॰ पु॰ लांगल, खेत जोतने का यन्त्र, अर्द्धाक्षर वा उसका चिह्न।
हलका॰ गु॰ फुलका, नीच, छिछोरा, ओछा, पोला, सस्ता, अगुरु।
हलकाई॰ ना॰ स्त्री॰ हलकापन, निर्मलता।
हलकाना॰ स॰ क्रि॰ सहायदेना, सहारा करना।
हलकोरना॰ स॰ क्रि॰ बगेरना, समटना, हिलाना।
हलचल॰ ना॰ पु॰ हलबली, घबराहट, रौला, अधर।
हलदिया॰ ना॰ पु॰ विषविशेष, अम्मल रोग, गु॰ पीला।
हलधर॰ ना॰ पु॰ बलदेव, किसान।
हलन्त॰ गु॰ जिस शब्दके अन्तमें हल का चिह्न है।
हलरना॰ अ॰ क्रि॰ लोटपोट होना।
हलफल॰ ना॰ स्त्री॰ शिष्टाचार।
हलरा॰ ना॰ पु॰ तरंग, लहर, हिलकोर।

हलरावना० स० क्रि० बहलाना, खेलाना, हिलाना।
हलवर्ण० ना० पु० व्यञ्जन, स्वररहित अक्षर।
हलवाहा० ना० पु० जोतहा, किसान।
हलाहल० ना० पु० हलाहल।
हलहलाहट० ना० पु० ज्वर वा डरसे कम्पनी।
हलहलाना० अ० क्रि० ज्वरादि से कांपना, स० क्रि० हिलाना, कंपाना।
हलहलिया० ना० पु० विष।
हलहली० ना० स्त्री० रोग, व्याधि, जूड़ी।
हला० स्त्री० ना० मदिरा, शराब।
हलाई० ना० स्त्री० जोताई।
हलायुध० ना० पु० श्रीबलरामजी।
हलावाहु० ना० स्त्री० नदीविशेष।
हलाहल० ना० पु० महाविष।
हलिया० ना० पु० बैलोंका झुण्ड।
हलियाना० अ० क्रि० जीमतलाना।
हली० ना० पु० श्रीबलदेवजी, गु० किसान।
हलोरना० स० क्रि० बटोरना।
हलक० ना० पु० लालकमल, यथा सोगंधि कतुकहार हलक रक्तसंधिकम् इत्यमर।
हल्ला० ना० पु० रोला, हुल्लड़, धावा, यह शब्द फारसी का है।
हवन० ना० पु० होम, अग्नि प्रतिष्ठकरना।
हवि० ना० स्त्री० यज्ञविशेष, खीरयज्ञकी।
हवि० ना० पु० होमकी सामग्री।
हविपाठी० ना० पु० चीता।
हविष्य० ना० पु० घृत, घासमिलित भात।
हवुषा० ना० स्त्री० आहुवर।
हव्य० ना० पु० देवताओं के हेतु अन्न, हवि।
हव्यवाहन० ना० पु० अग्नि।
हस्त० ना० पु० हाथ, तेरहवां नक्षत्र सूंड़।
हस्तकरण० ना० पु० करण्ड दानों।
हस्ताक्षर० ना० पु० हाथका लिखा, दस्तख़त।
हस्तिघोषा० ना० स्त्री० बड़ीतुरई।
हस्तिदन्तक० ना० पु० मूली, मलीनतरकारी।
हस्तिनापुर० ना० पु० प्राचीनदिल्ली, कौरवों की राजधानी।
हस्तिनी० ना० स्त्री० हथिनी, स्त्री, स्त्रीविशेष।
हस्तिपाल० ना० पु० हाथीवान, पीलवान।
हस्तिमागधी० ना० स्त्री० गजपीपर।
हस्ती० ना० पु० हाथी।
हसली० ना० स्त्री० गले के पासकी एक हड्डी, गले का गहनाविशेष।
हहरना० अ० क्रि० घबराना।
हहराना० अ० क्रि० पवन प्रचण्ड का शब्द।
हा० अव्य० दुःखका सूचकशब्द।
हाऊ० ना० पु० ओरतें बालक के डराने को पश्चिममें बोलतीहैं, मनविलासमें यथा, कहत आउ बनहाऊआयो।
हां० अव्य० स्वीकारका सूचक शब्द।
हांक० ना० स्त्री० पुकार, निकाल, टेर।
हांकना० स० क्रि० निकालना, पुकारना, चलाना।
हांकी० ना० स्त्री० पत्र जिसपर सेमई बनाते हैं
हांगर० ना० पु० समुद्रकी मछलीविशेष।
हांडना० अ० क्रि० भटका फिरना।
हांड़ी० ना० स्त्री० मिट्टीका पात्रविशेष।
हांपना०, हांफना० अ० क्रि० हफहफाना और हांफना।
हांस० ना० पु० हंस, हंसी।
हांसी० ना० स्त्री० हास्य।
हांही० अव्य० हांसही।
हाजालिनी० ना० स्त्री० छोटोली।
हाट० ना० स्त्री० दुकान, क्रयविक्रयका स्थान चौक, कटरा, पैंठ, सुवर्ण।
हाटक० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
हाटू० ना० पु० जो हाट में क्रयविक्रय करे।
हाड़० ना० पु० हड्डी।
हात०, हाथ० ना० पु० कर, हस्त, मापविशेष, वरा।

हाथखैंचना० अ० क्रि० अप्रसन्नता में मुंह फेरना वा छोड़देना।
हाथचाटना० स० क्रि० स्वादिष्ट भोजन को बहुत प्रसन्नतासे खाना।
हाथजोड़ना० स० क्रि० विनती करना, गिड़गिड़ाना, दोनों हाथ मिलाना।
हाथडालना० स० क्रि० किसी काम में घुसना वा पैठना, अपनाना।
हाथपसारना० स० क्रि० किसी से कुछ मांगना।
हाथफेरना० स० क्रि० प्यारकरना, कृपाकरना, फुसलाना।
हाथमलना० अ० क्रि० पश्चात्ताप करना, विलाप करना।
हाथमारना० स० क्रि० वचन देना, लूटना, खड्ग से घायलकरना।
हाथा० ना० पु० हाथ मुठिया पानी का यन्त्र।
हाथी० ना० पु० गज, मतंग।
हाथीवान० ना० पु० फीलवान, महावत।
हान० } ना० स्त्री० टोटा, घटी, बिगाड़,
हानि० } अन्धेर।
हाय० } अव्य० दुःख वा शोक का सूचक
हायहाय० } शब्द, ना० स्त्री० त्रास।
हायन० ना० पु० वर्ष।
हार० ना० पु० मुक्ता आदिकी माला, गमन, वालोंका झुण्ड, चरी, चराऊ खेत, जंगल, अजय।
हारक० ना० पु० जिससे हरिये, हरनेहारा।
हारजीत० ना० पु० जूआ, द्यूत।
हारना० अ० क्रि० पराजित होना, असृतार्थ होना, थकना, स० क्रि० हराना, हारजाना युद्ध वस्तु।
हारमानना० स० क्रि० निराश होके छोड़ना, विवाद को छोड़ना।
हारा० अव्य० यहशब्द दूसरे शब्द के अन्त में आकर कर्त्ता का वा वालाका सूचक है।
हारीत० ना० पु० स्मृतिविशेष।
हारू० ना० पु० हरवैया।
हार्द० ना० पु० स्नेह, छोह, माया।
हार्य० गु० हरण करने के योग्य, ना० पु० बहेड़ा।
हाल० गु० उतावला, फुर्तीला।
हालना० अ० क्रि० हिलना।
हाला० ना० स्त्री० मदिरा, मद्य, शराब।
हालाडोला० ना० पु० हिलाव, डगमगाव, भूचाल, भूकम्प।
हालि० ना० स्त्री० पतवार।
हाव० ना० पु० स्त्री लोगांकी भंगीविलास, भावना।
हावभाव० ना० पु० आकर्ष, खिंचाव, आदर भाव, श्रृंगार, मान सन्मान, बनावट।
हास्य० ना० पु० आनंदमय, हरारी एक अवस्था, हँसी, रसविशेष।
हाहा० अव्य० हायहाय, आर्त्तवाणी।
हाहाकार० ना० पु० युद्धमें जो शब्द, घबराहट, दुःखयुत, पुकार, शोर।
हाहाखाना० अ० क्रि० गिड़गिड़ाना, घिघियाना।
हि० अव्य० ही।
हिंडोला० ना० पु० पालना, भूला, गीतविशेष।
हिंसक० ना० पु० वधिक गु० जो हिंसाकरे घृना, अपकारी, दुर्जन, कठोर।
हिंसा० ना० स्त्री० हत्या, वध, बुराकरना वा चिंता, अपकार, गाली, दुर्जनता, मार।
हिंस्र० गु० हिंसक।
हिक्का० ना० स्त्री० छींक, हिचकी।
हिङ्गु० ना० स्त्री० हींग।
हिचकना० अ० क्रि० हटना, दबना, आगा पीछा करना।
हिचकाना० स० क्रि० धकादेना, भोकना, दबाना।
हिचकिचाना० अ० क्रि० सन्देह में होना, डगमगाना, हड़बड़ाना।

हिचकिची॰ ना॰ स्त्री॰ दुविधा, चिन्ता, शङ्का।
हिडम्ब॰ ना॰ पु॰ सिलहट से टेक पूर्वदेश, राक्षसविशेष।
हित॰ ना॰ पु॰ प्रेम, मित्रता, माया, उपकार, अव्य॰ निमित्त, अर्थ, कारण, लिये, गु॰ उचित, योग्य, मित्र, माफ़िक़ त।
हितकार॰ ना॰ पु॰ मित्र, उपकारी, सज्जन।
हितकारी॰ ना॰ पु॰ मित्र, उपकारी।
हितु॰ हितू॰ } ना॰ पु॰ मित्र, यार, सहायक।
हितैषी॰ ना॰ पु॰ जिसकी भलाई की इच्छा जिसको होवे, हितकारी।
हितोपदेश॰ ना॰ पु॰ योग्य वा उचित उपदेश, नीतिका एक ग्रन्थविशेष।
हिनहिनाना॰ अ॰ क्रि॰ घुड़कना घोड़ेका।
हिनौती॰ ना॰ स्त्री॰ विनती, आधीनता।
हिन्ताल॰ ना॰ पु॰ खजूरविशेष।
हिन्दी॰ ना॰ स्त्री॰ हिंदुस्तान की बोली या अक्षर।
हिन्दू॰ ना॰ पु॰ लोग जो वेदादि शास्त्रानुसार चलते हैं, चातुर्वर्ण्यलोग।
हिन्दूस्थान॰ ना॰ पु॰ देश विशेष जो उत्तर के अंश से पैंतीस अक्षांशतक और पूर्व पश्चिम में ६७ अक्षांश से ९१ तक फैला है, भरतखण्ड।
हिम॰ ना॰ पु॰ पाला, शीत, तुषार, ऋतु विशेष।
हिमउपल॰ ना॰ पु॰ ओला, पत्थर, रामायणे यथा, जिमि हिम उपल कृषीदलि गरहीं, पर अकाज लगि तनु परिहरहीं।
हिमकर॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा, कपूर।
हिमरोम॰ हिमांशु॰ } ना॰ पु॰ चन्द्रमा, विधु, चांद।
हिमाचल॰ हिमाचल॰ } ना॰ पु॰ हिमालय पर्वत।
हिमाह्वय॰ ना॰ पु॰ कपूर, कर्पूर, काफूर।
हिमालय॰ ना॰ पु॰ पर्वत विशेष, पाखानाधर।
हिमोपम॰ ना॰ पु॰ कपूर, कर्पूर।
हिमोपल॰ ना॰ पु॰ ओला, पाथर।
हिय॰ हिया॰ } ना॰ पु॰ हृदय।
हियाव॰ ना॰ पु॰ शूरमापन, वीरता, आदि।
हियो॰ हियो॰ } ना॰ पु॰ गाय भैंस बुलाने या रोकने का शब्द, हृदय।
हिरण्मय॰ हिरण्यमय॰ } गु॰ जो सोने से बना, ना॰ पु॰ ब्रह्मा।
हिरण्य॰ ना॰ पु॰ कनक, सुवर्ण, नवलक्षपुरी में कुबेर का नाम।
हिरण्यबाहु॰ ना॰ पु॰ सोनभद्र नदी।
हिरण्याक्ष॰ ना॰ पु॰ प्रह्लाद का चचा।
हिरद॰ ना॰ पु॰ हृदय।
हिरन॰ ना॰ पु॰ हरिण, मृग।
हिरनौटा॰ ना॰ पु॰ हरिणका बच्चा।
हिराना॰ स॰ क्रि॰ खोना, रसकर भूलजाना, अ॰ क्रि॰ खोजाना, गुमहोना।
हिर्की॰ ना॰ स्त्री॰ धारी, बाखली।
हिलकना॰ अ॰ क्रि॰ ऐंठना, मरोड़ना।
हिलकोर॰ ना॰ स्त्री॰ हिलाव, लहरार, हिलोर।
हिलकोरना॰ स॰ क्रि॰ लहराना, हिलाना, अ॰ क्रि॰ हिलना, थरथराना।
हिलकोरा॰ ना॰ पु॰ लहर, तरङ्ग।
हिलगना॰ अ॰ क्रि॰ लटकना, उलझना, चिपकना, अटकना।
हिलगाना॰ स॰ क्रि॰ लटकाना, उलझाना, चिपकाना, अटकाना।
हिलना॰ अ॰ क्रि॰ डोलना, टलना।
हिलमिल॰ अव्य॰ मिलकर।
हिलमिलजाना॰ अ॰ क्रि॰ मिश्रित होना, मिलाजुला रहना।
हिलमोचिका॰ ना॰ पु॰ शाकविशेष।
हिलसा॰ ना॰ स्त्री॰ मछलीविशेष।

हिला० गु० पाला, पोसवां।
हिलाना० स० क्रि० डोलाना, अपने बश में करना।
हिलोरना० अ० क्रि० लहराना।
हिलोरा० ना० पु० तरंग, लहर।
हिलोरामारना० अ० क्रि० लहर मारना।
हिश्त० अव्य० चुपचुप, द्रुत।
हिसका० ना० पु० उतराहट, अनुकार, रिस, कद।
हिसकाहिसकी० ना० स्त्री० परस्पर, हिसका करना।
हिसाब० ना० पु० गणित, लेखा, यह शब्द अरबीकी भाषा में अतिप्रचलित है।
ही० अव्य० निश्चय करनेका बोधक, ना० पु० हृदय।
हीं० अव्य० निश्चय करने का बोधक।
हींग० ना० स्त्री० औषधविशेष।
हींगहगना० अ० क्रि० इच्छारहित हगना और दुःख भोगना।
हींसना० अ० क्रि० हिनहिनाना।
हीक० ना० स्त्री० उबकाई, मतलाई, घृणा, अटकल, दुर्गंधि।
हीजड़ा० ना० पु० हिजड़ा।
हीन० गु० रहित, बिना, छोटा, नीच।
हीनजाति० ना० स्त्री० नीचजाति।
हीनता० ना० स्त्री० न्यूनता, घटी।
हीननिमेष० ना० पु० एकटक।
हीना० गु० नीचा, छोटा, नीच।
हीर० ना० पु० रांभा, सार, गूदा, गु० चोखा।
हीरक० ना० पु० हीरा।
हीरशुक्लिका० ना० स्त्री० काकोली।
हीरा० ना० पु० रत्नविशेष, कम्भारी।
हीरामन० ना० पु० तोताविशेष, छोटासर्पविशेष।
हीरावल० } ना० पु० दम्पत्, जो योगी बोले हैं।
हीरावलि० }
हील० } ना० स्त्री० चहला, कीचड़।
हीला० }
हुंकार० } ना० पु० पुकार, डरवाने के लिये हुं शब्दका पुकारना।
हुंकारा० }
हुड़दंगा० गु० दंगैत।
हुड़दंगी० ना० स्त्री० दंगा दंगैत।
हुड़हुड़ाना० अ० क्रि० टंकोरना।
हुड़हुड़ी० ना० स्त्री० टंकोर।
हुडुक० ना० पु० बाजाविशेष।
हुंडवी० ना० स्त्री० हुंडी।
हुंडाभाड़ा० ना० पु० किराया।
हुंडार० ना० पु० भेड़ियाविशेष।
हुंडावन० ना० पु० हुण्डीका बट्टा।
हुंडी० ना० स्त्री० जिसपत्र में परदेश से रुपया लिखआवे उसका नाम।
हुंडीवाल० ना० पु० साहूकार, जो हुण्डीलिखे
हुत० गु० जो होम कियागया।
हुतना० स० क्रि० होमकरना, होममें जलाना।
हुतभुक्० } ना० पु० अग्नि।
हुताशन० }
हुति० अव्य० पलटे, बदले, औरसे।
हुती० स्त्री० }
हुतो० पु० } क्रि० हुआ, अव्य० थी, था, रहे
हुते० पु० }
हुमकना० अ० क्रि० कूदना, मारने के लिये हुकारना।
हुमे० क्रि० जलाये।
हुरगुंडा० ना० पु० तरकारीविशेष।
हुरमई० ना० स्त्री० नृत्यभेद।
हुरहुर० } ना० पु० पौधाविशेष।
हुरहुरा० }
हुरुकनी० ना० स्त्री० कंचनी, वेश्या।
हुर्रा० ना० पु० फूट, फटक, रिवेश।
हुर्सा० ना० पु० चन्दन घिसनेका पात्रविशेष जो पाटासा होता है।
हुलकारना० स० क्रि० उभाड़ना, हुँकाना, लड़ाना।

हुलसना० अ० क्रि० आनन्दित होना, मुदित होना।
हुलसाना० स० क्रि० रिझाना, प्रसन्नकरना।
हुलास० ना० पु० सुंघनी, आनन्द, विलास।
हुलहड़० ना० पु० रौला, बखेड़ा।
हूँ० अव्य० हां, भी, हो।
हूक० ना० स्त्री० शब्द विशेष।
हूँकरना० स० क्रि० क्रोध से वा भय से या झाड़ फूँक से हू शब्द बोलना।
हूंठ० ना० पु० साढ़ेतीन ३॥।
हूठा० ना० पु० साढ़ेतीन का पहाड़ा।
हूहा० ना० पु० धूमधाम, गोलमोल उत्तरदेना।
हूक० ना० स्त्री० पीड़ा, टसक, कसक।
हूचना० स० क्रि० चूकना, भूलना।
हूठना० स० क्रि० धक्का देना।
हूड़० } हूड़ाहूड़ी० } ना० स्त्री० खेंचाखेंची।
हूण० ना० पु० कठोर मनुष्य।
हून० ना० पु० मन्दराजी, मुद्राविशेष।
हूल० ना० स्त्री० भोंक, खोंचा।
हूलना० स० क्रि० भोंकना, खोंसना।
हूहा० ना० पु० चर्चा, आंधी, धूमधाम, धूमधाम।
हृदय० ना० पु० वक्षस्थल, छाती, अन्तःकरण, मन।
हृदयनिकेत० ना० पु० कामदेव।
हृषीक० ना० पु० इन्द्रिय।
हृषीकेश० ना० पु० इन्द्रियपतिविशेष, श्री कृष्णचन्द्रका एक नाम।
हृष्ट० गु० हर्षित, प्रसन्न।
हे० अव्य० सम्बोधनका सूचक, यथा हे भगवन्, हे नारायण।
हेंगा० ना० पु० सरावन, पटेला, हेंगा।
हेठ० अव्य० नीचे स्त्री० फांच जो गुदा में निकसती है।
हेठा० गु० ओछा, नीच, डरपोकना।
हेठापन० ना० पु० नपुंसकता, नीचता, निचाई।
हेत० } हेतु० } ना० पु० अर्थ, कारण, प्रकरण, प्रयोजन, निमित्त, प्रीति, प्रेम।
हेति० अव्य० हानि।
हेम० ना० पु० स्वर्ण, धतूरा, सोना।
हेमनिधि० ना० पु० पारा, स्वर्णकी खानि।
हेमन्त० ना० पु० ऋतुविशेष, जिसमें अगहन और पौषमास गिनाजाता है।
हेमपुष्पा० } हेमपुष्पिका० } ना० स्त्री० चम्पावृक्ष।
हेमलता० ना० स्त्री० सोनजुही।
हेमवती० ना० स्त्री० हर्र, हड़।
हेमप्रभा० ना० स्त्री० वच औषध।
हेमाचल० } हेमाद्रि० } ना० पु० सुमेरु पर्वत।
हेरना० स० क्रि० निरेखना, देखना, ढूंढ़ना, खोदना खदेड़ना।
हेरम्ब० ना० पु० श्रीगणेशजी।
हेरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, जो अहीरगातेहैं।
हेल० ना० स्त्री० बोझ, भार, टोकरामरगावर।
हेलना० अ० क्रि० पैरना, तिरना, स० क्रि० धक्कादेना, हटाना।
हेला० ना० स्त्री० अवज्ञा, प्रवाह, रेला, क्रीड़ा संग, सहज।
हेलमारना० स० क्रि० ढकेलना, ठेलना।
हैक० ना० पु० हय।
हैहैराज० ना० पु० हयहय, सहस्रबाहु।
हो० अव्य० सम्बोधन का चिह्न।
होआना० अ० क्रि० होकर आना।
होंकना० अ० क्रि० हांफना।
होठ० ना० पु० ओष्ठ, लब।
होंठा० ना० स्त्री० संग्राम, दहाना।
होदे० अव्य० द्वारा, से।
होचुकना अ० क्रि० सम्पूर्ण होना, निपटना।

होजाना० अ० क्रि० होना, पड़ना।
होठ० ना० पु० होंठ।
होड़० ना० स्त्री० प्रण, वचन, दाव, शर्त।
होड़ल० ना० पु० अभ्रक, अबरक।
होड़ाचक्र० ना० पु० जिसके द्वारा ज्योतिषी लोग राशि विचारते हैं।
होत० ना० स्त्री० वश, शक्ति।
होतव० ना० पु० बदा, प्रारब्ध।
होतव्य० ना० पु० भवितव्य, होनहार।
होतव्यता० ना० स्त्री० भवितव्यता, होनहार।
होता० ना० पु० होमकरनहारा।
होते० अव्य० रहते, में।
होतेहोते० अव्य० क्रम क्रम से
होत्र० ना० पु० पूजन, हुतन।
होत्री० गु० पूजक।
होनहार० ना० गु० जो होसके, सम्भव।
होना० अ० क्रि० रहना, बनना, जो कुछहोगा।
होम० ना० पु० अग्यारी, घृतादि अग्नि में होमना।
होमना० स० क्रि० होमका यज्ञकरना, जलाना।
होला० ना० पु० नाजविशेष, बूट, भूनीफली।
होलाष्टक० ना० पु० होला का समय।
होलिका० ना० स्त्री० होली।
होलिहा० ना० पु० होली खेलनेहार।
होली० ना० स्त्री० फाल्गुन की पूर्णमासी का उत्सव।
हौआ० ना० पु० हाऊ, हौवा।
हौ० क्रि० हैं, सर्व० मैं, हम।
हौंस० ना० स्त्री० इच्छा, चाह।
हौका० ना०पु० लोभ, लालच, बापुसमेतमझली।
हौले० अव्य० धीमे धारे।
हौलेहौले० अव्य० धीरधीरे।
हौवा० ना० पु० भोकस, भूत।
हृद० ना० पु० निराशेदा, बड़ातालाब, तालाब, झील, अगाधता।
ह्रस्व० गु० अदीर्घ, छोटा, एक मात्रिकाचर।
ह्रस्वमूल० ना० पु० ऊख, गन्ना, गांडा।
ह्रदिनी० ना० स्त्री० नदी।
ह्री० ना० स्त्री० लज्जा, हया।
ह्रीण० } गु० लज्जित, शरमायाहुआ।
ह्रीत० }
ह्वै० क्रि० होकर।
ह्वैहै० क्रि० होगा।

[क्ष]

क्षई० ना० स्त्री० क्षयरोग जिसमें कफ और रक्त मुखसे गिरता है और खांसी भी आती है।
क्षण० ना० पु० तीस कलाका एकक्षण होताहै, थोड़ीदेर, तिल।
क्षणक० ना० पु० क्षण, पल।
क्षणप्रति० अव्य० बारबार।
क्षणदीप्ति० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा।
क्षणिक० गु० अस्थिर, क्षणनाशी।
क्षणेक० अव्य० थोड़ेकाल में।
क्षत० ना० पु० फोड़ा, घाव।
क्षतज० ना० पु० रुधिर, लोहू, रक्त।
क्षति० ना० स्त्री० हानि, घटी।
क्षत्र० ना० पु० मुकुट, ताज, छाता, छतुरी, क्षत्रियवश।
क्षत्रक० ना० पु० कुकुरमुत्ता, जिसे कुकुरमुत्ता कहते हैं।
क्षत्रधारी० ना० पु० राजा, नृपति, महीपति।
क्षत्रबन्धु० ना० पु० जो क्षत्रियों में नीचहो।
क्षत्रिय० ना० पु० द्वितीयवर्ण, खित्री।
क्षपा० ना० स्त्री० रात।
क्षपाकर० } ना० पु० चन्द्रमा।
क्षपानाथ० }
क्षम० ना० पु० योग्यता, गु० समर्थ, योग्य।
क्षमता० ना० स्त्री० योग्यता।
क्षमना० स० क्रि० क्षमाकरना, छोड़ना।
क्षमा० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, मोचन, छुटकी, दया, धरती।

हुलसना० अ० क्रि० आनन्दित होना, मुदित होना।
हुलसाना० स० क्रि० रिझाना, प्रसन्नकरना।
हुलास० ना० पु० सुंघनी, आनन्द, विलास।
हुलहुड़० ना० पु० दीला, बखेड़ा।
हुँ० अव्य० हां, जी, हो।
हूक० ना० स्त्री० शब्द विशेष।
हूँकरना० स० क्रि० क्रोध से या भय से या झाड़ फूंक से हूं शब्द बोलना।
हूँठ० ना० पु० साढ़ेतीन ३॥।
हूँठा० ना० पु० साढ़ेतीन का पहाड़ा।
हूँहाँ० ना० पु० धूमधाम, गोलमोल उत्तरदेना।
हूक० ना० स्त्री० पीड़ा, टसक, कसक।
हूचना० स० क्रि० चूकना, भूलना।
हूठना० स० क्रि० धक्का देना।
हूड़० } हूड़ाहूड़ी० } ना० स्त्री० खेंचाखेंची।
हूण० ना० पु० कठोर मनुष्य।
हून० ना० पु० मन्दरानी, मुद्राविशेष।
हूल० ना० स्त्री० भोंक, खोंचा।
हूलना० स० क्रि० भोंकना, खोंसना।
हूहा० ना० पु० चर्चा, आंधी, धूमधाम, टीमटाम।
हृदय० ना० पु० वक्षस्थल, छाती, अन्तःकरण, मन।
हृदयनिकेत० ना० पु० कामदेव।
हृषीक० ना० पु० इन्द्रिय।
हृषीकेश० ना० पु० इन्द्रियपतिविशेष, श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम।
हृष्ट० गु० हर्षित, प्रसन्न।
हे० अव्य० सम्बोधनका सूचक, यथा हे भगवन्, हे नारायण।
हेंगा० ना० पु० सरावा, पटेला, हेंगा।
हेठ० अव्य० नीचे स्त्री० काच जो मुद्रा में निकली है।
हेठा० गु० थावरी, नीच, डरपोकना।
हेठापन० ना० पु० नपुंसकता, नीचता, निचाई।
हेत० } हेतु० } ना० पु० अर्थ, कारण, प्रकरण, प्रयोजन, निमित्त, प्रीति, प्रेम।
हेति० अव्य० इति।
हेम० ना० पु० स्वर्ण, पत्थर, सोना।
हेमनिधि० ना० पु० पारा, स्वर्णकी खानि।
हेमन्त० ना० पु० ऋतुविशेष, जिसमें अगहन और पौषमास गिनाजाता है।
हेमपुष्पा० } हेमपुष्पिका० } ना० स्त्री० चम्पावृक्ष।
हेमलष्टा० ना० स्त्री० सोनहड़ी।
हेमवती० ना० स्त्री० हर्र, हड़।
हेमवता० ना० स्त्री० बच औषध।
हेमाचल० } हेमाद्रि० } ना० पु० सुमेरु पर्वत।
हेरना० स० क्रि० निरेखना, देखना, ढूंढना, खोदना, खदेड़ना।
हेरम्ब० ना० पु० श्रीगणेशजी।
हेरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, जो अहीरगातेहैं।
हेल० ना० स्त्री० बोझ, भार, ढोकरामरगोबर।
हेलना० अ० क्रि० पैरना, तिरना, स० क्रि० धक्कादेना, हटाना।
हेला० ना० स्त्री० अवज्ञा, मवाद, रेला, क्रीड़ा, संगा, सहज।
हेलमारना० स० क्रि० ढकेलना, ठेलना।
हैक० ना० पु० हय।
हैहैराज० ना० पु० हयहय, सहस्रबाहु।
हो० अव्य० सम्बोधन का चिह्न।
होआना० अ० क्रि० होकर आना।
होंकना० अ० क्रि० हांफना।
होंठ० ना० पु० ओष्ठ, लब।
होंठा० ना० स्त्री० लगाम, दहाना।
होकै० अव्य० द्वारा, से।
होचुकना अ० क्रि० सम्पूर्ण होना, निपटना।

होजाना० अ० क्रि० होना, पड़ना।
होठ० ना० पु० होंठ।
होड़० ना० स्त्री० प्रण, वचन, दांव, शर्त।
होड़ल० ना० पु० थमक, थरक।
होड़ाचक्र० ना० पु० जिसके द्वारा ज्योतिषी लोग राशि विचारते हैं।
होत० ना० स्त्री० धरा, शक्ति।
होतव० ना० पु० बदा, प्रारब्धी।
होतव्य० ना० पु० भवितव्य, होनहार।
होतव्यता० ना० स्त्री० भवितव्यता, होनहार।
होता० ना० पु० होमकरनेहारा।
होते० अव्य० रहते, में।
होतेहोते० अव्य० क्रम क्रम से
होत्र० ना० पु० पूजन, हुतन।
होत्री० गु० पूजक।
होनहार० ना० गु० जो होसके, सम्भव।
होना० अ० क्रि० रहना, बनना, जो कुछहोगा।
होम० ना० पु० अग्यारी, घृतादि अग्नि में होमना।
होमना० स० क्रि० होमका यज्ञकरना, जलाना।
होला० ना० पु० नावविशेष, बूट, मूंगफली।
होलाष्टक० ना० पु० होली का समय।
होलिका० ना० स्त्री० होली।
होलिहा० ना० पु० होली खेलनेहारे।
होली० ना० स्त्री० फाल्गुन की पूर्णमासी का उत्सव।
हौआ० ना० पु० हाऊ, हौवा।
हौं० क्रि० हूं, सर्व० मैं, हम।
हौस० ना० स्त्री० इच्छा, चाह।
हौका० ना० पु० लोभ, लालच, वायुसमेतभड़ी।
हौले० अव्य० धीमें धीरे।
हौलेहौले० अव्य० धीरेधीरे।
हौवा० ना० पु० भोकस, भुतना।
हृद० ना० पु० बिनाखोदा, बड़ाजलाशय, तालाव, झील, अगाधता।
ह्रस्व० गु० पदार्थ, छोटा, एक मात्रिकाक्षर।
ह्रस्वमूल० ना० पु० ऊख, गन्ना, गांडा।
ह्रदिनी० ना० स्त्री० नदी।
ह्री० ना० स्त्री० लज्जा, हया।
ह्रीण० } गु० लज्जित, शरमायाहुआ।
ह्रीत० }
ह्वै० क्रि० होकर।
ह्वैहै० क्रि० होगा।

[क्ष]

क्षई० ना० स्त्री० क्षयरोग जिसमें कफ और रक्त मुखसे गिरता है और खांसी भी आती है।
क्षण० ना० पु० तीस कलाका एकक्षण होताहै, थोड़ीदेर, तिल।
क्षणक० ना० पु० क्षण, पल।
क्षणप्रति० अव्य० वारंवार।
क्षणरुचि० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा।
क्षणिक० गु० अस्थिर, सत्यानाशी।
क्षणैक० अव्य० थोड़ेकाल में।
क्षत० ना० पु० फोड़ा, घाव।
क्षतज० ना० पु० रुधिर, लोहू, रक्त।
क्षति० ना० स्त्री० हानि, घटी।
क्षत्र० ना० पु० मुकुट, ताज, छाता, छतुरी, क्षत्रियवंश।
क्षत्रक० ना० पु० भुइंफोड़ा, जिसे कुकुरमुत्ता कहते हैं।
क्षत्रधारी० ना० पु० राजा, नृपति, महीपति।
क्षत्रबन्धु० ना० पु० जो क्षत्रियों में नीचहो।
क्षत्रिय० ना० पु० द्वितीयवर्ण, खित्री।
क्षपा० ना० स्त्री० रात।
क्षपाकर० } ना० पु० चन्द्रमा।
क्षपानाथ० }
क्षम० ना० पु० योग्यता, गु० समर्थ, योग्य।
क्षमता० ना० स्त्री० योग्यता।
क्षमना० स० क्रि० क्षमाकरना, छोड़ना।
क्षमा० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, मोचन, प्रवली, दया, धरती।

हुलसना० अ० क्रि० आनन्दित होना, मुदित होना।
हुलसाना० स० क्रि० रिझाना, प्रसन्नकरना।
हुलास० ना० पु० सुंघनी, आनन्द, विलास।
हुलहड़० ना० पु० क्रीड़ा, बखेड़ा।
हूँ० अव्य० हां, भी, हां।
हूक० ना० स्त्री० शब्द विशेष।
हूँकरना० स० क्रि० क्रोध से या भय से या झाड़ फूंक से हूं शब्द बोलना।
हूँठ० ना० पु० साढ़ेतीन ३॥।
हूठा० ना० पु० साढ़तीन का पहाड़ा।
हूहा० ना० पु० धूमधाम, गालमोल उत्तरदना।
हूक० ना० स्त्री० पीड़ा, टसक, कसक।
हूचना० स० क्रि० चूकना, भूलना।
हूठना० स० क्रि० धक्का देना।
हूड़० }
हूड़ाहूड़ी० } ना० स्त्री० खेंचाखेंची।
हूण० ना० पु० कठोर मनुष्य।
हून० ना० पु० मन्दराजी, मुद्राविशेष।
हूल० ना० स्त्री० भोंक, खोंचा।
हूलना० स० क्रि० भोंकना, खोंसना।
हूहा० ना० पु० चर्चा, आंधी, धूमधाम, धौमधाम।
हृदय० ना० पु० वक्ष स्थल, छाती, अन्तःकरण, मन।
हृदयनिकेत० ना० पु० कामदेव।
हृषीक० ना० पु० इन्द्रिया।
हृषीकेश० ना० पु० इन्द्रियपतिविशेष, श्री कृष्णचन्द्रका एक नाम।
हृष्ट० गु० हर्षित, प्रसन्न।
हे० अव्य० सम्बोधनका सूचक, यथा हे भगवन्, हे नारायण।
हेंगा० ना० पु० सरावन, पटेला, हेंगा।
हेठ० अव्य० नीचे स्त्री० काच जो गुदा में निकसती है।
हेठा० गु० आलसी, नीच, डरपोकना।
हेठापन० ना० पु० नपुंसकता, नीचता, निधाई।
हेत० }
हेतु० } ना० पु० अर्थ, कारण, प्रकरण, प्रयोजन, निमित्त, प्रीति, प्रेम।
हेति० अव्य० हानि।
हेम० ना० पु० स्वर्ण, कंचन, सोना।
हेमनिधि० ना० पु० पारा, स्वर्णकी खानि।
हेमन्त० ना० पु० ऋतुविशेष, जिसमें अगहन और पौषमास गिनाजाता है।
हेमपुष्पा० }
हेमपुष्पिका० } ना० स्त्री० चम्पावृक्ष।
हेमलता० ना० स्त्री० सोनजही।
हेमवती० ना० स्त्री० हर्रे, हड़।
हेमवता० ना० स्त्री० बच औषध।
हेमाचल० }
हेमाद्रि० } ना० पु० सुमेरु पर्वत।
हेरना० स० क्रि० निरेखना, देखना, ढूंढना, रगेदना खदेड़ना।
हेरम्ब० ना० पु० श्रीगणेशजी।
हेरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, जो अहीरगाते हैं।
हेल० ना० स्त्री० बोझ, भार, टोकरामरगोबर।
हेलना० अ० क्रि० पैरना, तिरना, स० क्रि० धक्कादेना, हटाना।
हेला० ना० स्त्री० आज्ञा, प्रवाह, रेला, क्रीड़ा खेल, सहज।
हेलमारना० स० क्रि० ढकेलना, ठेलना।
हैक० ना० पु० हय।
हैहैराज० ना० पु० हयहय, सहस्रबाहु।
हो० अव्य० सम्बोधन का चिह्न।
होआना० अ० क्रि० होकर आना।
होंकना० अ० क्रि० हांफना।
होंठ० ना० पु० ओष्ठ, लब।
होंठा० ना० स्त्री० लगाम, दहाना।
होपै० अव्य० द्वारा, से।
होचुकना० अ० क्रि० सम्पूर्ण होना, निपटना।

होजाना० अ० क्रि० होना, पड़ना।
होठ० ना० पु० होंठ।
होड़० ना० स्त्री० प्रण, वचन, दाम, शर्त।
होड़ल० ना० पु० अभ्रक, अबरक।
होड़ाचक्र० ना० पु० जिसके द्वारा ज्योतिषी लोग राशि विचारते हैं।
होत० ना० स्त्री० वश, शक्ति।
होतव० ना० पु० बदा, प्रारब्धी।
होतव्य० ना० पु०, भवितव्य, होनहार।
होतव्यता० ना० स्त्री० भवितव्यता, होनहार।
होता० ना० पु० होमकरनहार।
होते० अव्य० रहते, में।
होतेहोते० अव्य० क्रम क्रम से
होत्र० ना० पु० पूजन, हुतन।
होत्री० गु० पूजक।
होनहार० ना० गु० जो होसके, सम्भव।
होना० अ० क्रि० रहना, बनना, जो कुछहोगा।
होम० ना० पु० अग्यारी, घृतादि अग्नि में होमना।
होमना० स० क्रि० होमकर यज्ञकरना, जलाना।
होला० ना० पु० नामविशेष, धूप, भूनीफली।
होलाष्टक० ना० पु० होली का समय।
होलिका० ना० स्त्री० होली।
होलिहा० ना० पु० होली खलनेहार।
होली० ना० स्त्री० फाल्गुन की पूर्णमासी का उत्सव।
हौआ० ना० पु० हाऊ, हौवा।
हौ० क्रि० हु, सर्व० मैं, हम।
हौंस० ना० स्त्री० इच्छा, चाह।
हौका० ना० पु० लोभ, लालच, वायुमण्डलमें।
हौले० अव्य० धीमे धीरे।
हौलेहौले० अव्य० धीरधीरे।
हौवा० ना० पु० भोकस, भुतना।
ह्रद० ना० पु० निर्मलोदक, बड़ाजलाशय, तालाव, झील, अगाधता।
ह्रस्व० गु० अदीर्घ, छोटा, एक मात्रिकाक्षर।
ह्रस्वमूल० ना० पु० ऊख, गन्ना, गांडा।
ह्रदिनी० ना० स्त्री० नदी।
ह्री० ना० स्त्री० लज्जा, हया।
ह्रीण०, ह्रीत० } गु० लज्जित, शरमायाहुआ।
ह्वै० क्रि० हाकर।
ह्वैहै० क्रि० होगा।

[क्ष]

क्षई० ना० स्त्री० क्षयरोग जिसमें कफ और रक्त मुखसे गिरता है और खासी भी आती है।
क्षण० ना० पु० तीस कलाका एकक्षण होताहै, थोड़ीदेर, तिल।
क्षणक० ना० पु० क्षण, पल।
क्षणप्रति० अव्य० बारबार।
क्षणरुचि० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा।
क्षणिक० गु० अस्थिर, क्षणनाशी।
क्षणेक० अव्य० थोड़ेकाल में।
क्षत० ना० पु० फोड़ा, घाव।
क्षतज० ना० पु० रुधिर, लोहू, रक्त।
क्षति० ना० स्त्री० हानि, घटी।
क्षत्र० ना० पु० मुकुट, ताज, छाता, छतुरी, क्षत्रियवर्ण।
क्षत्रक० ना० पु० भुइंफोड़ा, जिसे कुकुरमुत्ता कहते हैं।
क्षत्रधारी० ना० पु० राजा, नृपति, महीपति।
क्षत्रबन्धु० ना० पु० जो क्षत्रियों में नीचहो।
क्षत्रिय० ना० पु० क्षत्रियवर्ण, खित्री।
क्षपा० ना० स्त्री० रात।
क्षपाकर०, क्षपानाथ० } ना० पु० चन्द्रमा।
क्षम० ना० पु० योग्यता, गु० समर्थ, योग्य।
क्षमता० ना० स्त्री० योग्यता।
क्षमना० स० क्रि० क्षमाकरना, छोड़ना।
क्षमा० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, मोचन, अलसी, दया, धरती।

क्षमापन० ना० पु० क्षमा दरनेका स्वभाव।
क्षमायोग्य० गु० जो क्षमा के योग्य होवे।
क्षमिय० क्रि० क्षमाकीजिये।
क्षमित० गु० क्षमा कियागया।
क्षय० ना० पु० क्षयरोग, विनाश, प्रलय।
क्षयमास० ना० पु० जिस चान्द्रमास में सूर्यका दो राशि में सञ्चारहो।
क्षयरोग० ना० पु० सूखा, शोष, क्षयी।
क्षर० ना० पु० भारी, स्थूल।
क्षान्त० ना० पु० सन्तोषी, धैर्य्यवान्।
क्षान्ति० ना० स्त्री० सन्तोष, धीरज।
क्षार० ना० पु० खार, राख, भस्म, धूलि।
क्षारपत्र० ना० पु० बथुआ, भाजीविशेष।
क्षारश्रेष्ठ० ना० पु० ढाकवृक्ष।
क्षारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
क्षिणवर्त० ना० पु० मेढ़ासिंगी।
क्षिति० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
क्षितिज० ना० पु० भौमासुर, मङ्गल।
क्षितिनाथ० } ना० पु० राजा, महीपति।
क्षितिपाल० }
क्षितिमण्डन० ना० पु० ब्रह्मा।
क्षितीश० ना० पु० राजा, महीश।
क्षिप्र० गु० शीघ्र, उतावल।
क्षीण० गु० दुबला, पतला, ना० पु० प्रमेहरोग।
क्षीर० ना० पु० दूध, खीर, पानी, खारीलोन।
क्षीरगन्धा० ना० स्त्री० विदारीकन्द।
क्षीरद० ना० पु० मेघ, गाय।
क्षीरपत्रा० ना० स्त्री० जामन, फलेंद।
क्षीरवृक्ष० ना० पु० पीपलवृक्ष, गूलरवृक्ष।
क्षीराई ना० स्त्री० सदी।
क्षीरिणी० ना० स्त्री० दुद्धी, दूधी।
क्षीरी० ना० पु० वरोचन, खिरनी, क्षीर, थर।
क्षीरोद० ना० पु० समुद्रविशेष।
क्षुत्पिपास० ना० स्त्री० भूख, प्यास।
क्षुद्र० गु० छोटा, नीच, कमीना, ना० पु० नकछिकनी पौधा।
क्षुद्रजम्बू० ना० पु० जामन, फलेंद।
क्षुद्रतन्डुला० ना० स्त्री० विडङ्ग।
क्षुद्रता० ना० स्त्री० नीचता, नीचपन।
क्षुद्रपनस० ना० पु० बड़हल।
क्षुद्रफला० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी, जामन।
क्षुद्रवर्षा० ना० स्त्री० लालपुनर्नवा, थोड़ी बरसात।
क्षुद्रा० } ना० स्त्री० छोटी कटाई।
क्षुद्री० }
क्षुधा० ना० स्त्री० भूख।
क्षुधालु० } गु० भूखा, बहुत भूखा।
क्षुधावन्त० }
क्षुधित० गु० भूखा।
क्षुर० ना० पु० छुरा, उस्तरा, मूज।
क्षुरक० ना० पु० गोखुरू, तिलकवृक्ष।
क्षुल्लक० ना० पु० कौड़ी।
क्षेत्र० ना० पु० भूमिपुण्य, खेत, तीर्थ शरीर।
क्षेत्रज० ना० पु० जो क्षेत्रमें उत्पन्नहो।
क्षेत्रज्ञ० ना० पु० आत्मा, जीव, गु० किसान मात्र।
क्षेत्रफल० ना० पु० खेतका फल, अर्थात् विगहदी।
क्षेत्राजीव० ना० पु० किसान, खेतीवाला।
क्षेम० ना० स्त्री० कुशल।
क्षेमकरी० ना० स्त्री० पक्षीविशेष।
क्षेमकुशल० ना० स्त्री० आरोग्य, भलाई, कल्याण, कुशलता, खैरआफियत।
क्षोणिज० ना० पु० क्षितिज, महलादि।
क्षोणिप० ना० पु० राजा, महीपति।
क्षोणिदेव० ना० पु० ब्राह्मण।
क्षोणी० ना० स्त्री० क्षिति, पृथ्वी, धरनी।
क्षोम० ना० पु० छीट, कोठा, सभायु, अधिमा।
क्षौद्र० ना० पु० मधु, शहद।
क्षौर० ना० पु० मुण्डन, नाई का कर्म।
क्षौरक० ना० पु० छुरा वा नाई

क्षमा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, भूमि ।
क्षमापति० ना० पु० राजा, भूपाल ।

[ज्ञ]

ज्ञ० अव्य० शब्दान्तमें कर्त्ता या कारक का चिह्न, यथा, धर्मज्ञ, कृतज्ञ ।
ज्ञाता० गु० जाननेहारा, शास्त्रवक्ता ।
ज्ञाति० ना० स्त्री० पिता, असपिण्ड, वर्णजाति।
ज्ञान० ना० पु० समझ, बुद्धि, व्यक्त और धर्मकी वृद्धि जिसकरके आत्मा आवागमन से रहित होता है ।
ज्ञानत ० ना० पु० समझ, ठीकबुद्धि ।
ज्ञानवान्० } गु० बुद्धिमान्, पण्डित, समझ-
ज्ञानी० } दार ।
ज्ञापक० गु० जाननेहारा ।
ज्ञापन० ना० पु० जताना ।
ज्ञेय० गु० जो जाने के योग्य ।
ज्ञेया० ना० स्त्री० मदा ।

दो० । श्रीपरमात्मा जगतगुरु कृपालानिधिप्रभु एक । जासुदयापूरणभयो मङ्गलकोष विवेक १ ॥
विविधदेशभाषामिलित भाषासम्पतिमाहि । यथासंस्कृतफारसी आदिकपदअवगाहि २ ॥
अर्थलिखेनिजबुद्धिसम विपुलग्रन्थमतधारि । कोषकारमिमूढ़ता तजिबुधपदैविचारि ३ ॥
शब्द समूह समुद्रवत नौका कोषप्रमान । पारजाहिंचढ़िबालबुधि बिनसंदेहसुजान ४ ॥
षर्षोऋतु गुरु रेवती भाद्रअसिततिथिवारि । ग्रहचषनगमहिंसहितशुभसंवतविक्रमधारि ५ ॥
कोष भयो पूरण तबै पैतेपुर शुचि ठाम । कोषकार सानन्दलिखे कोषसमङ्गलनाम ६ ॥
जोगुणगाहक सुजनजन विद्याशील प्रवीन । ते लखि कोष सराहिहैं हँसिहैं बुद्धिमलीन ७ ॥

इति ॥